कशफुल

महजूब

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

दीबाचा

अज़ अदीबे शहीर हज़रत शम्स बरैलवी मुतर्जिम गुनीयतुत्तालिबीन मुसन्निफ़ औरंगज़ेब ख़ुतूत के आईने में

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह तआ़ला अ़लैहिम अजमईन ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत और हम-नशीनी से जो शर्फ़ हासिल किया था और जिस क़दर शर्फ़ अन्दोज़ हुए थे और तज़कियए नफ़्स की जिस मंज़िल पर पहुंचे थे उसकी बशारत ख़ुद क़ुरआने पाक ने दी और हम-नशीनी -ए-रसूले ख़ुदा के फ़ैज़ान को इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया।

किताब व हिकमत ही की तालीम का यह असर था कि ख़ुलफ़ाए राशेदीन और दीगर हज़राते सहाबा में से हर मुतनफ़्फ़िस और हर हस्ती पाकीज़ा किरदार और आला अख़लाक़ से मुत्तसिफ़ थी और उन में से हर एक कमालाते इंसानी के मुन्तहा को पहुंच गया था, असहाबे सुफ़्फ़ा में से हर एक पाक दीदा व पाक बीं, तवक्कुल व रज़ा का पैकर और सिद्क़ व सफ़ा का एक मुरक़्क़अ़ था, तारीख़े इस्लाम में उन्हीं नुफ़ूसे क़ुदसिया को सूफ़ियाए किराम का पहला गिरोह कहा जाता है। यानी तसव्वुफ़े इस्लाम का पहला दौर इन्हीं हज़रात पर मुश्तमिल था। तसव्वुफ़ के बुनियादी उसूल या अरकाने तसव्वुफ़, इस्तिग़राक़े इबादत (यादे हक़) तौबा, ज़ुहद, वरअ़, फ़क्र, तवक्कुल और रज़ा शरीअ़त में भी उसी अहमियत के हामिल हैं जिस तरह तरीक़त में थे और तसव्वुफ़ के इब्तेदाई दौर में रहे।

सहाबा किराम और असहाबे सुफ़्फ़ा में से हर हस्ती इन्हीं औसाफ़े हमीदा और फ़ज़ाइल की आईनादार थी, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का ईसार तारीख़े इस्लाम आज भी फ़ख्र से पेश करती है कि घर में जिस क़दर असासा था वह तमाम व कमाल रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया। और जब रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ सिद्दीक़ अहल व अ़याल के लिए क्या छोड़ा? तो जवाब दिया उनके लिए अल्लाह और उसका रसूल काफ़ी है! इसी का नाम कमाले ईसार और कमाले तवक्कुल है आपके ज़ुहद व तक़वा और ख़ौफ़ व रजाअ का यह

नहीं रहती, हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु गुनीयतुत्तालेबीन में सूरह अलफ़ की इन आयात की तफ़्सीर इरशाद फ़रमाते हैं कि यह आयात हज़रात अशरए मुबश्शिरा की शान में नाज़िल हुई हैं और से मुराद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु की ज़ात वाला है।

ख़ुलफ़ाए राशेदीन और अशरए मुबश्शिरा के बाद असहाबे सुफ़्फ़ा उन सिफ़ाते सतूदा का मज़हरे कामिल थे यह वह ग़रीब व नादार हज़रात थे जो महज़ अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत में मक्का से अपना घर-बार छोड़कर दयारे रसूल में आ गए थे, रहने का कहीं ठिकाना न था रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी के क़रीब एक चबूतरा (सुफ़्फ़ा) तामीर करवा दिया था उस चबूतरे पर इन हज़रात के शब व रोज़ तंगदस्ती और उसरत में बसर होते थे और यह हज़रात इबादत, ज़िक्रे इलाही और मुजाहिदए नफ़्स में अपने शब व रोज़ बसर फ़रमाते थे। क़ुरआन पाक और हदीस शरीफ़ में इनका ज़िक्र बड़ी तफ़्सील से आया है। यही हज़रात दौरे अव्वल या दौरे रिसालत व ख़िलाफ़ते राशिदा के अरबाबे तसव्वुफ़ हैं। ख़ासतौर पर असहाबे सुफ़्फ़ा की ज़िन्दगी तो सूफ़ियाए किराम की ज़िन्दगी और उनके सूफ़ियाना ख़साइल की सही तस्वीर थी। यही सूफ़ियाना ख़साइल व किरदार बाद के अरबाबे हाल और असहाबे तसव्वुफ़ के लिए नमूनए तक़लीद बन गए। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हालात का मुशाहिदा फ़रमाने के बाद इस तरह उनको ख़ुश-ख़बरी और बशारत दी।

"ऐ असहाबे सुफ़्फ़ा! तुम्हें बशारत हो! पस मेरी उम्मत में से जो लोग इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होंगे जिनसे तुम मुत्तसिफ़ हो और उन पर रज़ामन्दी से क़ाइम रहेंगे तो वह बेशक जन्नत में मेरे हम-नशीन होंगे।"

सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यही बशारत और हज़रत वाला का यही इरशाद तसव्वुफ़ की अमली ज़िन्दगी का बुनियादी नुक़्ता है। तसव्वुफ़ के दौरे उरूज तक सूफ़ियाए किराम की पाकीज़ा ज़िन्दगियां और उनके पाकीज़ा नुफ़ूस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशादे गिरामी को मुन्तहाए मक़सूद बनाए रहे और यही बेसरो सामानी उनका सरमाय-ए-ज़िन्दगानी था और फ़क़्र फ़ख़री उनका ताजे शाहाना।

दौरे ताबईन रिज़वानुल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन

तसव्वुफ़ के दौरे अव्वल के सिलसिले में मुख़्तसरन अर्ज़ कर चुका तसव्वुफ़

का दूसरा दौर ताबईन का दौर है। यह दौर तक़रीबन एक सौ साल की मुद्दत पर फैला हुआ है यानी ३४ हि० से १५० हिजरी तक, इस दौरे ताबईन में असहाबे तसव्वुफ़ में दो बुज़ुर्ग हस्तियां बहुत नुमायां हैं एक हज़रत अवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु (जिनसे सुलूक में नज़रिय-ए-अवैसी की बुनियाद पड़ी) और दूसरी बुज़ुर्ग हस्ती हज़रत हस्न बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु की है। हज़रत अवैस क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क़रन के रहने वाले थे और अहदे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में ब-हयात थे लेकिन शर्फ़े दीदार हासिल न कर सके, मुहब्बते रसूल का यह आलम था कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सलाम पुर। अज़मत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज के मौक़ा पर आपको पहुंचाया। आपके मुतअल्लिक़ बहुत से वाक़िआत तारीखे तसव्वुफ़ में मौजूद हैं। मुहब्बते रसूल और यादे इलाही में आपकी वारफ़्तगी का यह आलम था कि आप जंगलों और वीरानों में फिरते रहते थे जब लोग रोते थे तब आप हंसते थे और जब यह लोग हंसते थे तो आप रोने लगते थे। आप मुद्दतों तक बादिया गर्दी करने के बाद कूफ़ा चले गए और वहां हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज में शामिल हो गए। ३७ हिजरी में जंगे सिफ़्फ़ीन में जामे शहादत नोश किया। (२) हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु का सही साले पैदाइश तो तहक़ीक़ नहीं हो सका अलबत्ता आपका साले वफ़ात ११० हिजरी मुताबिक़ ७३८ ई० है आप मशहूर ताबईन से हैं आपको भी बकसरत सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन का फ़ैज़े मुहब्बत हासिल हुआ। ज़ुहद, दरअ़, सब्र और ख़िश्ते इलाही आपके ख़ास औसाफ़ थे। ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ का यह आलम था कि आप फ़रमाते थे जिस नमाज़ में दिल हाज़िर न हो वह नमाज़ अज़ाब से ज़्यादा क़रीब है ताबईन में आपके अलावा और भी सूफ़ियाए किराम मौजूद थे लेकिन तारीख़ी ऐतबार से मज़कूरा हज़रात ज़्यादा नुमायां शख़्सियत के मालिक हैं, तसव्वुफ़ के बहुत से सलासिल आपसे शुरू होते हैं।

दौरे तबअ़ ताबईन

तबअ़ ताबईन में जो सूफ़ियाए किराम गुज़रे हैं उनका दौर १५१ हिजरी मुताबिक़ ७६८ ई० से ३५० हिजरी मुताबिक़ ९६१ ई० तक मुतअ़य्यन किया गया है। इस दो सद-साला दौर में इस्लामी तसव्वुफ़ को बहुत फ़रोग़ हासिल हुआ। यहां तफ़सील की गुंजाइश नहीं मुख़्तसरन यह कि यह दौरे तसव्वुफ़ का दौरे

ज़रीं कहलाता है, इस दौर की नुमायां ख़ुसूसियत यह है कि ज़ुह्हाद, अब्बाद और नस्साक हज़रात को सूफ़ी के लक़ब से याद किया जाने लगा। लफ़्ज़ सूफ़ी का सबसे पहले इस्तेमाल (सूफ़ी) अबुल हाशिम रहमतुल्लाह अलैह (मुतवफ़्फ़ा १५१ हिजरी मुताबिक़ ७६८ ई०) से हुआ वह दुनियाए तसव्वुफ़ में सब से पहले सूफ़ी से मुख़ातब किए गए। हज़रत अबू हाशिम रहमतुल्लाह अलैह कूफ़ा के रहने वाले थे लेकिन उनका इन्तेक़ाल शाम में हुआ।

मस्जिदें उस दौर में ख़ूनरेज़ी और सफ़्फ़ाकी की आमाजगाह बन गई थीं सुकूने क़ल्ब और ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ के साथ उन मस्जिदों में ज़िक्रे इलाही मुम्किन न था। इस लिए अबुल हाशिम कूफ़ी ने शाम के मक़ाम ''रमला'' में ईसाईयों के सौमअः की तरह रूहानी तरबियत और ज़िक्रे इलाही के लिए सबसे पहले ख़ानक़ाह तामीर कराई। दुनिया-ए तसव्वुफ़ में यह सबसे पहली ख़ानक़ाह है। तबअ़ ताबईन के दौर में नज़री और अ़मली तसव्वुफ़ में बहुत सी तबदीलियां वजूद में आईं। तर्के दुनिया का मफ़हूम अहदे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में सिर्फ़ इस क़दर था कि-

लेकिन इस के साथ यह हुक्म भी मौजूद था कि यानी दुनिया आख़िरत की खेती है गोया दस्ते बकार व दिल बः-यार!! लेकिन तबअ़ ताबईन के दौर में तर्के दुनिया का मफ़हूम यकसर बदल गया। बादिया पैमाई, सहरा नशीनी और तर्के तअ़ल्लुक़ात का नाम तर्के दुनिया रखा गया और इसका सबब वही मुल्की इन्तेशार और सियासी अबतरी था।

हुब्बे इलाही का नज़रिया पलहे बिलवास्ता था यानी इत्तेबाअ़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुब्बे इलाही के हुसूल का ज़रिया समझा जाता था जैसा कि इरशादे रब्बानी है -

(आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखना चाहते हो तो तुम मेरी इत्तेबाअ़ और पैरवी करो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा।) अब यह नज़रिया बिला वास्ता हो गया। अब बज़रिये-ए-ज़िक्र व मुराक़बा अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की जाने लगी। हज़रत राबेआ अ़दविया (मुतवफ़्फ़ा ८५ हिजरी मुताबिक़ ८०१ ई०) से यह नज़रिया वजूद में आया। यह मोहतरमा भी बसरा की रहने वाली थीं। हज़रत ज़ुन्नून मिस्त्री रहमतुल्लाह अलैह (मुतवफ़्फ़ा २४५ हिजरी मुताबिक़ ८५९ ई०) ने नज़रिया वहदतुल वजूद को पेश किया। हज़रत बायज़ीद बुस्तामी (मुतवफ़्फ़ा २६१ हिजरी मुताबिक़ ८७५ ई०) तबअ़ ताबईन के दौर के

मशाइख़ एज़ाम में शुमार होते हैं। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह (मुतवफ़्फ़ा २९७ हिजरी मुताबिक़ ९१० ई०) तबअ़ ताबईन में बड़े पाया के बुज़ुर्ग थे। हज़रत दाता गंज बख़्श उनको शैख़ुल मशाइख़ तरीक़त में और इमामुल अइम्मा शरीअ़त में तस्लीम करते हैं, आप भी नज़रिय-ए वहदतुल वजूद के ज़बरदस्त हमनवा थे। हुसैन बिन मनसूर हल्लाज (मुतवफ़्फ़ा ३०९ हिजरी मुताबिक़ ९३६ ई०) यह फ़ारस के शहर बैज़ा के रहने वाले थे। मुद्दतों मुर्शिद की तलाश में सर-गरदां रहे आख़िरकार फिरते-फिराते बग़दाद पहुंचे और हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए, नज़रिय-ए वहदतुल वजूद में तवग़ुल और इन्तेहा पसन्दी की बदौलत उनको ९३६ई० में सूली पर चढ़ा दिया गया। हज़रत अबू बकर शिबली (मुतवफ़्फ़ा ३३४ हिजरी मुताबिक़ ९४९ ई०) तबअ़ ताबईन के दौर के मशहूर सूफ़ी और सरख़ैल सलासिले तरीक़त हैं। आप भी हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे और नज़रिय-ए वहदतुल-वजूद के ज़बरदस्त और अ़ज़ीम दाअ़ी थे। दौरे तबअ़ ताबईन में इन मशाहीर सूफ़ियाए किराम के इलावा और दीगर हज़रात और उन हज़रात के मुरीदीन अतराफ़ व अकनाफ़ मुमालिके इस्लामिया में फैले हुए तालीमे तरीक़त और उसकी इशाअ़त में मसरूफ़ थे।

दौरे मुतअख़्ख़ेरीन

तबअ़ ताबईन में अमली तसव्वुफ़ ने इल्मी तसव्वुफ़ की शक्ल भी इख़्तियार कर ली थी दौरे मुतअख़्ख़ेरीन में भी चन्द अकाबेरीने सूफ़िया ऐसे पैदा हुए जिन्होंने अपने मुर्शिदीन व असलाफ़ किराम की तरह तसव्वुफ़ के मुश्किल और अहम नज़रियात की इल्मी तशरीह की तरफ़ ख़ास तौर पर तवज्जेह फ़रमाई और उन इल्मी तशरीहात की बदौलत (जिनको तसव्वुफ़ में उनकी तसानीफ़ कहना चाहिए) उनके नाम तारीख़े तसव्वुफ में ताबिन्दा पाइन्दा हैं. दौरे मुतअख़्ख़ेरीन के ऐसे अकाबिर सूफ़िया में हज़रत शैख़ अली बिन उसमान जुलाबी हिजवेरी (मुतवफ़्फ़ा ४६५ हिजरी मुताबिक़ १०७३ ई०) हज़रत इमाम ग़ज़ाली (मुतवफ़्फ़ा ५०५ हिजरी मुताबिक़ ११११ ई०) हज़रज शैख़ मुहीयुद्दीन इब्ने अकबर (मुतवफ़्फ़ा ६३८ हिजरी मुताबिक़ १०७३ ई०) और हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी (मुतवफ़्फ़ा ६७२ हिजरी) ख़ास तौर पर बहुत नुमायां हैं और उनके इल्मी कारनामे दुनियाए तसव्वुफ़ ही में नहीं बल्कि दुनिया-ए इस्लाम में हमेशा यादगार रहेंगे यहां मैं हज़रत शैख़ अली बिन उसमान हिजवेरी मअ़रूफ़ बिहि दातागंज बख़्श के

सिलसिले में कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं, बाकी हज़रात के सिलसिले में इन्शा अल्लाह किसी और मौका पर तफ्सील से लिखूंगा इन चन्द सफहात में हज़रत अली बिन उसमान जुलावी हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह का तज़किरा आपके नज़रियात और आपके इल्मी शाहकार **कश्फुल महजूब**, के बारे में कुछ अर्ज़ करना ही इस दीबाचा की निगारिश का असल मकसूद है।

हज़रत शैख़ अली हिजवेरी
मअ़रूफ़ बिहि दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहू

आपका इस्मे गिरामी ख़ुद आपकी तहरीर के मुताबिक़ "अली बिन उसमान जुलाबी या अली बिन उसमान बिन अलअलजुलावी अलग़ज़नवी है" आप ग़ज़नीं (ग़ज़नी) के क़रीबहाए जुलाब व हिजवेर के रहने वाले थे उसी मुनासबत से कभी आप ख़ुद को जुलाबी और कभी हिजवेरी तहरीर फ़रमाते हैं आपने **"कश्फुल महजूब"** में मुतअ़द्दिद जगह अपना नामे नामी तहरीर फ़रमाया है (और उसकी तौजीह भी फ़रमाई है, कारेईन तर्जमा में उसकी तौजीह मुलाहज़ा फ़रमायें) अब बरें सग़ीर पाक व हिन्द में दाता गंज बख़्श के लक़ब से मशहूर व मअ़रूफ़ हैं। गंज बख़्श का लक़ब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने मज़ार फ़ाइज़ुल अनवार पर चिल्लाकशी के बाद बवक़्ते रुख़सत एक अलविदाई मनक़बत में पेश किया था।

आपका सिलसिल-ए-नस्ब

आपका सिलसिल-ए-नस्ब जिस पर आपके अक्सर सवानेह निगारों ने इत्तेफ़ाक़ किया है यह है। हज़रत अली हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह बिन उसमान रहमतुल्लाह अलैह बिन सय्यद अली रहमतुल्लाह अलैह बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह बिन शुजाअ़ रहमतुल्लाह अलैह बिन अबुल हसन अ़ली रहमतुल्लाह अलैह बिन हसन असग़र रहमतुल्लाह अलैह बिन ज़ैद बिन हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिन अबी तालिब इस तरह आप हाशमी सय्यद हैं और आपका सिलसिलए नस्ब आठवीं पुश्त में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू से मिलता है।

साले विलादत और वतन

काश दाता साहब रहमतुल्लाह अलैह ने **'कश्फुल महजूब'** में जिस तरह अपना मौलिद व मस्कन अपना और अपने वालिद व जद्दे गिरामी के नाम बयान फ़रमाये हैं और उन हज़रात के बाज़ अहवाले ज़िन्दगी भी ज़िमनन बयान फ़रमा

दिये हैं इसी तरह अपना साले विलादत भी जो आप तक रिवायतन यक़ीनन पहुंचा होगा बयान फ़रमा देते तो आपकी साले विलादत के तअ़य्युन में जो इख़्तिलाफ़ पाया जाता है वह ख़त्म हो जाता। मुस्तशरेक़ीन का हमेशा से दस्तूर रहा है कि वह इस सिलसिले में भी तहक़ीक़ का कोई मौक़ा ज़ाया नहीं करते और तजस्सुस का कोई पहलू फ़रो गुज़ाश्त नहीं करते लेकिन इस सिलसिले में वह भी नाकाम रहे हैं। आम तौर पर आपका साले विलादत सन ४०० हिजरी तस्लीम किया गया है, आपके मौलूदे वतन के सिलसिले में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है तमाम सवानेह निगार इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि जुलाब व हिजवेर जो ग़ज़नी के क़रिये या मुहल्ले थे आपका मौलूद व मस्कन रहे हैं। कुछ अ़र्सा आप जुलाब में रहे और कुछ मुद्दत हिजवेर में। **कश्फुल महजूब** में आपने अपने इस्मे गिरामी के साथ वतन की सराहत इस तरह फ़रमाई है। "अ़ली बिन उसमान बिन अली अलजुलाबी अलग़ज़नवी सुम्म अल हिजवेरी।"

जुलाब व हिजवेर के सिलसिले में साहबे सेग़तुल औलिया ने इस तरह तशरीह की है कि "जुलाब व हिजवेर" ग़ज़नी के दो मुहल्ले थे आप पहले जुलाब में मुक़ीम थे फिर हिजवेर मुन्तक़िल हो गए।

हज़रत हिजवेरी क़ुद्दिस सिर्रुहू के असातेज़ा

हज़रत दाता गंज बख़्श क़ुद्दिस सिर्रुहू के असातेज़ा किराम के सिलसिले में मशरिक़ी सवानेह निगाराने क़दीम ने किसी ख़ास तवज्जेह से काम नहीं लिया। हज़रत दाता गंज बख़्श क़ुद्दिस सिर्रुहू ने ख़ुद **"कश्फुल महजूब"** में हज़रत अबुल अ़ब्बास मुहम्मद शक़ानी रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्र किया है तो बड़े अदब से उनका नाम लिया है और उनकी मेहरबानियों और इनायतों को याद फ़रमाते हुए आप से इक्तेसाबे इल्म का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया है कि "दर बाज़े उलूमे उस्ताद मन बूद" उलूमे इस्लामी यानी तफ़्सीर व हदीस व फ़िक़्ह पर आपको जो कामिल दस्तगाह थी और जिसका इज़हार **'कश्फुल महजूब'** के बुलन्द पाया इल्मी मक़ालात और मबाहिस से होता है वह इस अमर के शाहिद हैं कि आपने अपने वक़्त के बाज़ दूसरे साहिबाने इल्म व फ़ज़्ल से भी इस्तेफ़ादा किया होगा इस लिए कि आप सिर्फ़ आ़रिफ़े कामिल ही नहीं बल्कि एक बुलन्द पाया आ़रिफ़ व आ़लिम भी हैं। **'कश्फुल महजूब'** में आप जिस तरह तरीक़त व शरीअ़त के मबाहिस पर बहस फ़रमाते हैं और इस्तेदलाल लाते हैं और क़ुरआन व हदीस व ख़बर से जिस तरह सनद पेश करते हैं उससे साफ़ ज़ाहिर

होता है कि आपको उलूमे मुतदाविला पर दस्तगाहे कामिल हासिल थी और आप उलूमे शरीअ़त के भी शनावर नहीं बल्कि ग़व्वास भी थे और इल्मे तफ़्सीर व हदीस पर आपको उबूर हासिल था और आप उन उलूम पर भी गहरी नज़र रखते थे और यह सब कुछ फ़ैज़ान था आपके मुर्शिद कामिल का। हज़रत दाता कुद्दिस सिर्रुहु खुद अपने मुर्शिद वाला के बारे में फ़रमाते हैं कि मेरे मुर्शिद शैख़ अबुल फ़ज़्ल मुहम्मद बिन हसन ख़तली रहमतुल्लाह अलैह हैं जो इल्मे तफ़्सीर व रिवायात (हदीस) के।

पस जहां इन शैख़े तरीक़त की नज़रे कीमिया असर ने आपको तरीक़त में उस बुलन्दी पर पहुंचाया वह अगर उलूमे दीनी यानी तफ़्सीर व हदीस में भी आपको ऐसी बसीरत अ़ता करदें जो अक़रान व अमसाल से मुमताज़ बना दे तो क्या तअ़ज्जुब! हज़रत अबुल फ़ज़्ल हसन ख़तली रहमतुल्लाह अलैह के उलूए मर्तबत के सिलसिले में हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहु फ़रमाते हैं कि "वह सूफ़ियाए मुतअख़्ख़ेरीन में ज़ीनते औताद और शैख़ अ़ब्बाद हैं।

तरीक़त में मेरी इक़्तेदा (बैअ़त) उन ही से है तसव्वुफ़ में हज़रत जुनेद रहमतुल्लाह अलैह का मज़हब रखते थे, हज़रत शैख़ हुसरी के राज़दार मुरीद थे।"

अपने मुर्शिदे गिरामी से जो तअ़ल्लुक़े ख़ातिर हज़रत अली हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह को था उसका अन्दाज़ा इस अमर से होता है कि हज़रत अबुल फ़ज़्ल अलख़तली रहमतुल्लाह अलैह का जब विसाल हुआ तो उनका सर हज़रत हिजवेरी कुद्दिस सिर्रुहु की गोद में था। इससे यह ज़ाहिर होता है कि मुर्शिद को भी अपने मुरीदे ख़ास से किस दर्जा मुहब्बत थी।

हज़रत दाता गंज बख़्श का शजर-ए तरीक़त

आपका शजरए तरीक़त इस तरह है, शैख़ अली हिजवेरी मुरीद हज़रत शैख़ अबुल फ़ज़्ल अलख़तली रहमतुल्लाह अलैह मुरीद हज़रत शैख़ हुसरी रहमतुल्लाह अलैह मुरीद शैख़ अबू बकर शिबली रहमतुल्लाह अलैह मुरीद हज़रत जुनेद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह मुरीद हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाह अलैह मुरीद हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह अलैह मुरीद हबीब अ़जमी मुरीद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु।

हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहु ने भी उम्र का बड़ा हिस्सा सहरानवरदी और बादिया पैमाई में बसर किया इराक़, शाम, लबनान, आज़र, वाईजान, ख़ुरासान व किरमान, ख़ुज़िस्तान, तिब्रिस्तान, तुर्किस्तान और मावरा अन्नहर के शहरों और क़रियों में तलाशे हक़ के लिए सरगरदां रहे तब कहीं दामने मक़सूद हाथ आया मगर यह वज़ाहत कहीं नहीं मिलती कि आप अपने मुर्शिदे वाला मर्तबत के साथ कितने अर्से रहे और उनकी सोहबत में किन-किन मक़ामात की सैर की।

हज़रत दाता गंज बख़्श के हमअस्र मशाइख़

अरबाबे हक़ीक़त व तरीक़त अपने दिल की लगी बुझाने और तिश्नगीए बातिन को दूर करने के लिए शहरों और क़रिया ब क़रिया फिरा करते थे। इसका एक अज़ीम मक़सद यह भी होता था कि अरबाबे हाल की सोहबतों में पहुंचकर ज़िन्दगी के कुछ दिन बसर करें कि उनकी सोहबतें कीमिया असर भी फ़ैज़ से ख़ाली नहीं होती। हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैह ने भी इस सैर व सैयाहत में अपने मुआसिरीन किराम और सूफ़ियाए एज़ाम की सोहबतों से इस्तेफ़ादा किया, उन मुआसिरीन में हज़रत अबुल क़ासिम बिन अली बिन अब्दुल्लाह गरगानी, हज़रत इमाम अबुल क़ासिम क़शीरी साहबे रिसाला अल-क़शीरिया कुदस सिर्रहु हज़रत शैख़ अहमद हम्मारी सरख़सी कुदस सिर्रहु हज़रत मुहम्मद बिन मिस्बाह हज़रत अबू सईद अबुलख़ैर रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अबू अहमदुल मुज़फ़्फ़र बिन अहमद रहमतुल्लाह अलैह और दीगर अकाबेरीन शामिल हैं। इन मुआसिरीन में से आप हज़रत अबुल क़ासिम बिन अली गरगानी रहमतुल्लाह अलैह और जनाब इमाम अबुल क़ासिम अल-क़शीरी का ज़िक्र बड़े एहतेमाम से करते हैं और उनसे इस्तेफ़ादा का भी ऐतराफ़ फ़रमाते हैं।

हज़रत दाता गंज बख़्श का मस्लके तरीक़त

हज़रत दाता साहब रहमतुल्लाह अलैह ने जिस तरह अपने पीरे तरीक़त के मस्लके तसव्वुफ़ के सिलसिले में लिखा है कि वह तसव्वुफ़ में हज़रत जुनैद कुदस सिर्रहू का मज़हब रखते थे चुनान्चे हज़रत दाता साहब तसव्वुफ़ व तरीक़त में जुनैदी मस्लक के मुत्तबेअ थे इसी तरह वह शरीअत में सुन्नी हनफ़ीयुल-मज़हब थे। चुनान्चे जहां-जहां वह हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का नामे नामी

लेते हैं वहां कमाले एहतेराम को मलहूज़ रखते हैं। **कश्फुल महजूब** में एक जगह इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र इस तरह करते हैं। "इमामे इमामां, मुक़्दताए सुन्नियां, शर्फ़े फुक़हा, अइज़्ज़े उलमा अबू हनीफ़ा नोअ़मान बिन साबित अल-ख़र्राज़ रज़ियल्लाहु अन्हु" (कश्फ़ुल महजूब)

हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहु की इज़्देवाजी ज़िन्दगी

हज़रत की इज़्देवाजी ज़िन्दगी के सिलसिले में '**कश्फुल महजूब**' या किसी और तज़किरे में कोई सराहत नहीं है। कश्फुल महजूब से सिर्फ़ इस क़दर ज़ाहिर होता है कि आपने एक शादी की और जब कुछ मुद्दत के बाद उनसे मुफ़ारक़त हो गई तो फिर आपने ताज़ीस्त दूसरी शादी नहीं की।

लाहौर में वुरूदे मसऊद और इसके पाकीज़ा असरात

हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहु की उम्र का काफ़ी हिस्सा सैर व सैयाहत में बसर हुआ। आपका तजर्रुद और तवक्कुल इस सैयाहत में आपका ममद्द व मुआविन था। चुनान्चे इसी सैयाहत के दौरान अपने मुर्शिद के इशारे पर या अपनी तबीअ़त के इक़्तेज़ा से आपने लाहौर का क़स्द फ़रमाया, इस सिलसिले में बहुत सी दिल-आवेज़ हिकायतें हैं जिनकी तरदीद की बहुत गुंजाइश है इस सिलसिले में बस इतना कहा जाता है कि आपने जब लाहौर में वुरूद फ़रमाया तो सुल्तान मसऊद बिन सुल्तान महमूद ग़ज़नवी सन् ४३१ हिजरी लाहौर का हाकिम था लेकिन साले वुरूद का तअ़य्युन दुशवार है। आपके वुरूदे मसऊद ने लाहौर के क़ालिब में एक नई जान डाल दी, आपके क़ियाम के दौरान हज़ारों गुम गश्तगाने बादिया ज़लालत व गुमरही ने आप से हिदायत पाई और हज़ारों मुशरिकों के दिलों से कलिमए तौहीद पढ़ाकर ज़ंगे कुफ़्र व शिर्क को दूर फ़रमाया। हज़रत दाता कुद्दिस सिर्रुहु ने लाहौर में वुरूद फ़रमाने के बाद अपना तमाम वक़्त तबलीग़े इस्लाम और तस्नीफ़ व तालीफ़ में सर्फ़ फ़रमाया। दरबारे शाही से आपका किसी क़िस्म का तअ़ल्लुक़ नहीं था। तबलीग़े इस्लाम का जो काम आपने शुरू फ़रमाया था उसको बाद में आने वाले अकाबिरीने सूफ़िया ने अपने पाकीज़ा और आला किरदार से इस्लाम की सच्ची और पाकीज़ा तस्वीर पेश करके पायए तकमील को पहुंचाया।

हज़रत दाता गंज बख़्श के इल्मी कारनामे

हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रुहु जिस तरह बहरे तरीक़त के शनावर थे उसी तरह आप कुरआन व हदीस और फ़िक़ह पर भी कामिल दस्तगाह रखते थे और रमूज़ व असरारे शरीअ़त से भी उसी तरह आगाह थे. जैसा कि मैं इससे क़बल अ़र्ज़ कर चुका हूं इस्लामी तसव्वुफ़ के दौरे तबअ़ ताबईन में नज़री तसव्वुफ़ ने इल्मी तसव्वुफ़ की शक्ल इख़्तियार कर ली थी। तसव्वुफ़ ने जब इल्म की दुनिया में क़दम रखा तो रमूज़ तरीक़त और असरारे हक़ीक़त पर भी क़लम उठाया गया लेकिन उस दौर में इस मौज़ूअ़ पर जो कुछ लिखा गया वह अ़रबी ज़बान में था। हज़रत दाता गंज बख़्श कुदस सिर्रहू के मुआ़सिरीन में से इमाम अबुल क़ासिम क़शीरी ने तसव्वुफ़ के रमूज़ पर जो रिसाला क़शीरिया मुरत्तब किया उसकी ज़बान भी अ़रबी थी। फ़ारसी मफ़्तूहीन ने जब तस्नीफ़ की दुनिया में क़दम रखा तो उन्होंने भी उसी अरबी को इख़्तियार किया जिसकी तक़दीस का कुरआन व अहादीस की ज़बान से अन्दाज़ा हो सकता है। मज़हबियात में अ़रबी के सिवा किसी और ज़बान का इस्तेमाल करना तक़दीस के मनाफ़ी ख़्याल किया जाता था। फ़ारसी नज़ाद उलमा व फुज़लाए इस्लाम की गिरां बहा तसानीफ़ मेरे इस दावे पर शाहिद हैं। हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैह की मादरी ज़बान भी फ़ारसी थी अगरचे आपको अरबी ज़बान पर भी कामिल उबूर हासिल था लेकिन कश्फुल महजूब अवाम के इफ़ादा के लिए आपने फ़ारसी ज़बान में तस्नीफ़ फ़रमाई। मैं नहीं कह सकता कि आपकी बाक़ी तसानीफ़ यानी- (१) किताबे फ़ना व बक़ा (२) असरारुल ख़र्क़ वल मोनात (३) अर्रिआ़यत बहुक़ूक़ुल्लाह तआ़ला (४) किताबुल बयान लि अहलिल अ़यान (५) नहवुल क़ुलूब (६) मिन्हाजुद्दीन (७) ईमान (८) शरह कलामे मन्सूर हल्लाज और (९) दीवाने अशआ़र, किस ज़बान में थीं आज इन तसानीफ़ में से किसी का वजूद नहीं है सिर्फ़ कश्फुल महजूब की बदौलत यह नाम बाक़ी रह गए। कश्फुल महजूब ज़माने की दस्तबुर्द से महफ़ूज़ है और इसके मुतअ़द्दिद क़लमी नुस्ख़े कुतुब ख़ानों में मौजूद हैं और बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में मताबेअ़ के वजूद में आने के बाद इसके हज़ारों मतबूआ़ नुस्ख़े दिलदाद-गाने शरीअ़त व तरीक़त के लिए नज़र फ़रोज़ हैं। कश्फुल महजूब कहां लिखी गई लाहौर में या हिजवेर में और कब लिखी गई यानी साले तस्नीफ़ क्या है इसकी निशान देही भी मुहाल

है अलबत्ता कहा जा सकता है कि यह बड़े पुरसुकून माहौल में लिखी गई है और कश्फुल महजूब की एक वज़ाहत की बिना पर यह कहा जा सकता है इस का तकमिला लाहौर में हुआ। यह तअ़य्युन करना भी दुशवार है कि आपके रफ़ीक़ व मुआसिर हमवतन अबू सईद हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह ने कब और कहां आपसे यह सवालात किये थे जिनके जवाबात बसूरते कश्फुल महजूब आपने दिये। इन सवालात के सिलसिले में हज़रत दाता गंज साहब कुद्दिस सिर्रुहु सिर्फ़ इतना फ़रमाते हैं "क़ालल साइल व हुव अबू सईदुल हिजवेरी बयान कुन मुरा अन्दर तहक़ीक़े तरीक़त व तसव्वुफ़ व अरबाबे तसव्वुफ़ व कैफ़ियते मक़ामात ईशां व बयाने मज़ाहिब व मक़ालाते आं व इज़हारे रमूज़ व इशारात ईशां"

शेख़ मुहम्मद इकराम मरहूम बड़े वसूक़ के साथ तारीख़े मिल्ली में अली हिजवेरी लाहौरी के तहत उनवान लिखते हैं कि "फ़ारसी नसर की सब से पहली मज़हबी किताब जो बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में पायए तकमील को पहुंचीं 'कश्फुल महजूब' है और हज़रत दातागंज बख़्श अली हिजवेरी कुद्दिस सिर्रहू ने क़बत्ता इस्लाम लाहौर में मुकम्मल किया" (तारीख़े मिल्ली सफ़हा ७) बहरहाल कश्फुल महजूब अपने मौज़ूअ़ और मबाहिस के ऐतबार से जिस क़दर बुलन्द पाया किताब है वह तारीफ़ व तौसीफ़ से मुस्तग़ना है। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया कुद्दिस सिर्रहू का इरशादे गिरामी इस सिलसिले में मुलाहज़ा फ़रमाईये, फ़रमाते हैं "अगर किसी का पीर न हो तो ऐसा शख़्स जब इस किताब का मुताला करेगा तो उसको पीर मिल जाएगा। मैंने इस किताब का मुकम्मल मुताला किया" (तर्जमा) और यह हक़ीक़त भी है कि कश्फ़ुल महजूब आपका एक ऐसा शाहकार है जिसकी बदौलत बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में सही इस्लामी तसव्वुफ़ ने फ़रोग़ पाया और इस वस्फ़े ख़ास की बदौलत आज भी कश्फ़ुल महजूब की क़दर व मंज़िलत इतनी है जितनी आज से नौ सौ बरस पहले थी। कश्फ़ुल महजूब के सिलसिले में इस्लामी सक़ाफ़त के मशहूर मुवर्रिख़ शेख़ मुहम्मद इकराम मरहूम कहते हैं कि-

"यह किताब आपने अपने रफ़ीक़ अबू सईद हिजवेरी की ख़्वाहिश पर जो आपके साथ ग़ज़नी छोड़कर लाहौर आये थे, लिखी और इसमें तसव्वुफ़ के तरीक़े की तहक़ीक़, अहले तसव्वुफ़ के मक़ामात की कैफ़ियत, उन अक़वाल

और सूफ़ियाना फ़िरक़ों का बयान मुआसिर सूफ़ियों के रमूज़ व इशारात और मुतअल्लिक़ा मबाहिस बयान किये हैं, अहले तरीक़त में इस किताब को बड़ा मर्तबा हासिल है। 'आबे कौसर' 'कश्फ़ुल महजूब' पर प्रोफ़ेसर ख़लीक़ निज़ामी इन अल्फ़ाज़ में तबसेरा करते हैं"

"शैख़ हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह की किताब ने एक तरफ़ तो तसव्वुफ़ से मुतअल्लिक़ अवाम की ग़लत फ़हमियों को दूर किया और दूसरी तरफ़ इस की तरक़्क़ी की राहें खोल दीं" (तारीख़ मशाइख़े चिश्त)

कश्फ़ुल महजूब की क़बूलियत का अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि सूफ़ियाए किराम के मशहूर तज़किरा निगारों मसलन ख़्वाजा फ़रीद अत्तार रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मौलाना जामी क़ुद्दिस सिर्रहू साहबे नफ़हातुल इन्स, हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद पारसा साहब फ़सलुल ख़िताब और ख़्वाजा बन्दा नवाज़ गेसू दराज़ रहमतुल्लाह अलैह ने अपने तज़किरों में और तसानीफ़ में कश्फुल महजूब से इस्तेफ़ादा किया है और मशाइख़े तसव्वुफ़ के हालात इससे अख़ज़ किये हैं। आपके मक़ूलों और आपकी तहक़ीक़ को बतौरे सनद पेश किया है।

कश्फुल महजूब में जो रमूज़े तरीक़त और जिन हक़ाइक़े मअरफ़त को मुनकशफ़ किया गया है उनकी बुनियाद हज़रत दाता साहब क़ुद्दिस सिर्रहू ने अपने मुकाशिफ़ात पर नहीं रखी है बल्कि उनका माख़ज़ क़ुरआन व सुन्नत को क़रार दिया है या दुनियाए इरफ़ान की मुस्तनद किताबें हैं जिनका ज़िक्र "कश्फ़ुल महजूब" में दाता साहब क़ुद्दिस सिर्रहू ने अपनी किताब तस्नीफ़ लतीफ़ में किया है और यही उसकी क़बूलियत का राज़ है कि आपके बाद बुज़ुर्गाने तरीक़त और अरबाबे तसव्वुफ़ के लिए वह हमेशा माख़ज़ का काम देती रही है। साहबे कश्फुल महजूब जिस मसला या रमज़े तरीक़त पर क़लम उठाते हैं अव्वलन वह क़ुरआने हकीम और इरशादे नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इसकी सनद लाते हैं फिर इस का इस्तिदलाल आसार व अख़बार से करते हैं अगर वह इस इस्तिदलाल में कामयाब नहीं होते तो अकाबेरीने अरबाबे तसव्वुफ़ के यहां इसकी सनद तलाश करते हैं, आप कश्फ़ुल महजूब का तर्जमा मुलाहज़ा फ़रमायें आपको ख़ुद मुसन्निफ़ क़ुद्दिस सिर्रहू की जानिब से इन मुनाबेअ़ और मआख़ज़ की निशानदेही मिलेगी।

कश्फुल महजूब की ज़बान और उसलूब

कश्फ़ुल महजूब के मज़कूरा बाला इन चन्द पहलूओं पर बहस करने के बाद यह भी ज़रूरी था कि इसकी ज़बान और इसके उसलूबे बयान पर भी कुछ लिखा जाता लेकिन यह मुक़द्दमा या दीबाचा उसके उर्दू तर्जमे के साथ पेश किया जा रहा है इस मौक़ा पर कश्फुल महजूब की फ़ारसी ज़बान और उसके उसलूब को बयान करना बे-महल सी बात होगी मुख़्तसरन सिर्फ़ इतना कहा जा सकता है कि हज़रत दाता गंज बख़्श क़ुदस सिर्रहू ने कश्फ़ुल महजूब को तकल्लुफ़ और तसन्नुअ़ से बरी, निहायत आसान और रोज़ मर्रा की फ़ारसी में तहरीर किया है, अन्दाज़े बयान ऐसा साफ़ और वाज़ेह है कि मफ़हूम व मअ़नी के समझने में कहीं दिक़्क़त पैदा नहीं हुई, अफ़सोस कि अब फ़ारसी ज़बान अवाम के लिए एक ग़ैर और बेगाना ज़बान बन गई है यही सबब है कि अस्ल मतन को शाया करने के बजाये उसका उर्दू के बाद हिन्दी रस्मुल ख़त में तर्जमा शाया किया जा रहा है ताकि अवाम इससे इस्तेफ़ादा कर सकें।

कश्फुल महजूब और उसके उर्दू तराजुम

कश्फुल महजूब की बुलन्द पाइगी का अन्दाज़ा इस अमर से बख़ूबी हो सकता है कि सूफ़ियाए एज़ाम ने इसको अपनी तसानीफ़ में मआख़ज़ क़रार दिया, तेरहवीं सदी के वस्त तक फ़ारसी ज़बान अवाम की ज़बान थी, तहरीर की ज़बान भी फ़ारसी थी इस लिए उस वक़्त तक कश्फ़ुल महजूब के उर्दू तर्जमे की ज़रूरत ही महसूस नहीं की गई। तेरहवीं सदी के अवाख़िर और चौदहवीं सदी के अवाइल में जब फ़ारसी ज़बान का इन्हेतात बहद्दे कमाल पहुंच गया और उर्दू अवाम की ज़बान क़रार पाई तो उस वक़्त से फ़ारसी ज़बान की बहुत सी बुलन्द पाया कुतुब के उर्दू में तराजुम होने लगे चुनान्चे इस ज़रूरत के तहत 'कश्फुल महजूब' जैसी बुलन्द पाया और गिरां माया किताब के मुतअ़द्दिद उर्दू तराजुम हुए जो अपने-अपने वक़्त पर शाया होकर उस अहद और उस वक़्त की ज़रूरत को पूरा करते रहे इस वक़्त तक बीस से ज़्यादा उर्दू तराजुम इस अज़ीम किताब के शाया हो चुके हैं अव्वलीन तराजिम का अन्दाज़ बिल्कुल आमियाना है और ज़बान अपने अहद की तर्जुमान है। फिर कुछ-कुछ तबवीब, तज़हीब का एहतेमाम होने लगा लेकिन सवानेह मुसन्निफ़ पर कोई ख़ास तवज्जेह नहीं दी गई।

इस सिलसिले में अज़ीम मुस्तशर्रक़ प्रोफ़ेसर निकिल्सन (मुसन्निफ़ तारीखे अदबियाते अरब) को दाद न देना ना इंसाफ़ी होगी कि जब उन्होंने सन् १९११ ई० में कश्फुल महजूब का अंग्रेज़ी तर्जमा शाया किया तो वह हमारे उर्दू तराजुम से बहुत बुलन्द, बहुत वक़ीअ और जामेअ था। उन्होंने सवानेह निगारी में तहक़ीक़ का हक़ अदा किया और हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रहू की सवानेह हयात के हर पहलू पर मुहक़्क़िक़ाना बहस की। कश्फुल महजूब के मनाबेअ और मआख़ज़ का पता चलाया, उनके असातेज़ा किराम, उनके मुआसिरीन एज़ाम और उनसे मुतअल्लिक़ तारीखों की जुस्तजू और सेहत की तहक़ीक़ की। मुख़्तसरन यह कि कश्फुल महजूब के मौज़ूअ और मबाहिस पर सैर हासिल तबसेरा करके कश्फुल महजूब के सही मक़ाम से दुनियाए अदब को मुतआरिफ़ कराया। प्रोफ़ेसर निकिल्सन की तहक़ीक़ात ने 'कश्फुल महजूब' के उर्दू मुतरजिमीन को बहुत से नये रास्तों से आशना किया उन्होंने इस अज़ीम मुस्तशर्रक़ की तहक़ीक़ात से पूरा-पूरा फ़ाइदा उठाया।

प्रोफ़ेसर निकिल्सन के बाद एक रूसी अदीब प्रोफ़ेसर ज़ोको फिसकी ने बड़ी काविश और दिक़्क़ते नज़र से कश्फुल महजूब के एक क़दीम नुस्खा की तसहीह की और उस को अपने एक मुहक़्क़िक़ाना मुक़द्दमा (बज़बाने रूसी) के साथ लैनिन ग्राड से शाया किया कुछ मुद्दत बाद एक ईरानी अदीब ने इस रूसी मुक़द्दमा को फ़ारसी (जदीद फ़ारसी) में मुन्तक़िल किया और अपना मुतरजमा मुक़द्दमा इस मुसह मतन के साथ शाया करके इस रूसी अदीब की काविशों से ईरानियों और दूसरे दिल दादगाने कश्फुल महजूब को रूशनास कराया। प्रोफ़ेसर निकिल्सन के तर्जमे और रूसी अदीब के मुक़दमा और तसहीह ने कश्फुल महजूब के उर्दू तराजुम में एक नई जान डाल दी और हज़रत दाता गंज बख़्श कुद्दिस सिर्रहू की सवानेह हयात के बहुत से पहलू पहली मर्तबा अवाम के सामने आये, इस मुख़्तसर दीबाचा या मुक़द्दमा में भी इन मालूमात से इस्तेफ़ादा किया गया है।

हज़रत दाता गंज बख़्श की वफ़ात और आपका मज़ार

निहायत अफ़सोस के साथ यह कहना पड़ता है कि जिस तरह हज़रत कुद्दिस सिर्रहू की तारीखे विलादत पर आपके तज़किरा निगारों का इत्तेफ़ाक़ नहीं उसी तरह आप की तारीखे वफ़ात भी मुत्तफ़िक़ अलैह नहीं है। रूसी मुक़द्दमा और

प्रोफ़ेसर निकिल्सन भी तारीख़े विलादत की तरह तारीख़े वफ़ात के सिलसिले में भी किसी एक साल का तअय्युन नहीं कर सके। प्रोफ़ेसर निकिल्सन सन् ४५६ हिजरी ता ४६५ हिजरी का कोई दर्मियानी साल आपका साले वफ़ात बताते हैं। दारा शिकोह भी सफ़ीनतुल औलिया में तज़बज़ुब का शिकार हैं। बाज़ तज़किरा निगारों ने सन् ४६५ हिजरी को सही साले वफ़ात तस्लीम करके लफ़्ज़ 'सरदार' से तारीख़े वफ़ात निकाली है यानी "साले वसलश बर आमद अज़ सरदार" शैख़ मुहम्मद इकराम मरहूम भी आबे कौसर में कोई एक साल मुतअय्यन नहीं कर सके और कहते हैं कि आपकी वफ़ात सन् ४६५ हिजरी मुताबिक़ सन् १०७२ ई० के क़रीब वाक़ेअ़ हुई। डाक्टर नुरुद्दीन अपने मुहक़्क़िक़ाना मक़ाला "तसव्वुफ़ और इक़बाल" में आपका साले वफ़ात वसूक़ के साथ सन् ४६५ हिजरी ही क़रार देते हैं और इसी पर अक्सर तज़किरा निगारों का इत्तेफ़ाक़ है।

मज़ारे पुर अनवार

आपका मज़ारे पुर-अनवार लाहौर में है इसी निस्बत से लाहौर को दाता की नगरी भी कहते हैं, लाहौर की सर-ज़मीन इस पर जितना भी फ़ख़्र करे वह कम है कि एक ऐसी बरगुज़ीदा और बुलन्द पाया हस्ती यहां आराम फ़रमा है जिसकी आमद ने हिन्द के इस अज़ीम ख़ित्ता में शमअ़े ईमान फ़रोज़ां की, यही वह क़ुदसी बारगाह है जहां ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह भी इक्तसाबे फ़ैज़ के लिए मुक़ीम रहे। यहां की ख़ाक अकाबेरीने सूफ़िया के लिए सुर्मए बसीरत और ताजे इज़्ज़त है। यही वह मक़ाम है जो आज तक क़िब्लए अहले सफ़ा बना हुआ है और जहां अनवारे इलाही हर वक़्त बरसते हैं। यहां अवाम भी हाज़िर होते हैं, सूफ़ी और आलिम भी, हर एक यकसां अ़क़ीदत के साथ आता है। यहां की फ़ज़ा में हर वक़्त और हर लमहा ज़िक्रे ख़ुदा और ज़िक्रे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जारी व सारी रहता है और दाता रहमतुल्लाह अलैह के फ़ैज़ से झोलियां भरने वालों का हर वक़्त हुजूम रहता है। बक़ौल शायरे मशरिक़ अल्लामा इक़बाल रहमतुल्लाह अलैह-

ख़ाके पंजाब अज़ दमे ऊ ज़िन्दा गश्त
सुबह मा अज़ महरे ऊ ताबिन्दा गश्त

शम्स बरैलवी
एयर पोर्ट, कराची

अस्सुलूक इलल-महबूब
फ़ी तर्जमते
कश्फ़ुल महजूब

ऐ हमारे रब! अपनी बारगाह से हम पर रहमतें नाज़िल फ़रमा और हमारे मुआमले में हमें राहे रास्त की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ही हर ख़ूबी का सज़ावार है जिसने अपने औलिया पर अपनी बादशाहत के असरार खोले और अपने असफ़िया के लिए अपनी ख़शियत व जबरूत के राज़ मुनकशफ़ फ़रमाए और अपनी शमशीरे अ़ज़मत व जलाल से महबूबों का ख़ून बहाया और आ़रिफ़ीन को अपने विसाल की चाशनी का मज़ा चखाया वही अपनी बेनियाज़ी और किब्रियाई के अनवार के इदराक से मुर्दा दिलों को ज़िन्दगानी अता फ़रमाता है और अपने असमा की महक के साथ मअ़रफ़ते इलाही की ख़ुशबू से उन्हें लुत्फ़ अन्दोज़ होने के मवाक़ेअ़ फ़राहम करता है। अल्लाह तआ़ला के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी आल व असहाब और अज़्वाजे मुतह्हरात पर हमेशा-हमेशा दुरूद व सलाम नाज़िल हो।

इब्तेदाइया :

ऐ तालिबे राहे हक़ीक़त! अल्लाह तआ़ला दोनों जहान की सआ़दतमन्दी नसीब फ़रमाए। जब तुमने मुझे अपने सवाल के ज़रीअ़े इस किताब की दरख़्वास्त की तो मैंने इस्तेख़ारा किया और ख़ुद को दिली वारदात और बातिनी इलक़ा के हवाले कर दिया (जब इस्तेख़ारा में इज़्ने इलाही हासिल हो गया) तो मैंने तुम्हारी मक़सद बर-आरी की ख़ातिर इस किताब के लिखने का अ़ज़्मे समीम कर लिया। और इस नविश्ता का नाम "कश्फुल महजूब" रखा। उम्मीद है कि अरबाबे फ़हम व बसीरत इस किताब में अपने सवालात का जवाब अ़ला वजहिल कमाल पाएंगे।

बादहु अल्लाह तआ़ला से इस्तेआ़नते तौफ़ीक़ की इस्तेदआ़ है कि वह इस नविश्ता को तमाम व कमाल करने में मदद फ़रमाए। इज़्हार व बयान और नविश्त में अपनी क़ुव्वत व ताक़त पर ऐतमाद पर भरोसा करना दुरुस्त नहीं है। व बिल्लाहि तौफ़ीक़।

अपना नाम तहरीर करने की वजह

शुरू में जो अपना नाम तहरीर किया है उसकी दो वजह हैं एक वजह ख़ास हज़रात के लिए है और दूसरी वजह आम लोगों के लिए। लेकिन जो वजह आम लोगों के लिए है कि जब इस इल्म से बेबहरा व नावाक़िफ़ कोई ऐसी नई किताब देखते हैं और उसमें मुसन्निफ़ का नाम किसी जगह नज़र नहीं आता तो वह किताब को अपनी तरफ़ मनसूब कर लेते हैं (यानी यह किताब मेरी तस्नीफ़ है) जिससे मुसन्निफ़ का मक़सद नाकाम हो जाता है। हालांकि मुसन्निफ़ की तालीफ़ व तस्नीफ़ का मक़सद यही होता है कि इस किताब के ज़रीए उसका नाम ज़िन्दा व पाइन्दा रहे और पढ़ने वाले तालिबाने हक़, मुसन्निफ़ को दुआए ख़ैर से याद करते रहें। ऐसा हादसा मेरे साथ दो मर्तबा पेश आ चुका है।

पहला हादसा: - यह हुआ कि एक साहब मेरे अशआर का दीवान मुस्तआर ले गए फिर उन्होंने वापस नहीं किया मेरे पास उस नुस्ख़ा के सिवा और कोई नुस्ख़ा नहीं था उन साहब ने मेरे नाम को हज़्फ़ करके अपने नाम से उस दीवान को मशहूर कर दिया। इस तरह मेरी मेहनत उन्होंने ज़ाया कर दी। अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़रमाए।

दूसरा हादसा यह पेश आया कि मैंने इल्मे तसव्वुफ़ में एक किताब लिखी थी जिसका नाम "मिन्हाजुद्दीन" रखा था। एक कमीना ख़सलत, चर्ब ज़बान शख़्स ने जिसका नाम मैं ज़ाहिर करना नहीं चाहता उसने शुरू से मेरा नाम छील कर अपना नाम दर्ज करके आम लोगों में कहना शुरू कर दिया कि यह मेरी तस्नीफ़ है। हालांकि उसकी इल्मियत और क़ाबिलियत के जानने वाले हज़रात उस पर हंसते थे। बिल-आख़िर अल्लाह तआला ने उस शख़्स पर बे बरकती मुसल्लत कर दी और अपनी बारगाह के तालिबों की फ़ेहरिस्त से उसका नाम ख़ारिज कर दिया।

दूसरी वह वजह ख़ास हज़रात के लिए यह है कि जब वह किसी किताब को अपने इल्म के मुताबिक़ इस नज़र से मुलाहज़ा फ़रमाते हैं कि उसका मुसन्निफ़ मुअल्लिफ़ न सिर्फ़ यह कि इस इल्म का दाना है बल्कि वह इस फ़न का माहिर व मुहक्किक़ है तो उस किताब की क़द्र करते और उसे पढ़कर याद करने की पूरी कोशिश करते हैं। इस तरह वह अपना गौहरे मक़सूद उस किताब से हासिल कर लेते हैं। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

इस्तेख़ारा करने की वजह

इस तस्नीफ़ को शुरू करने से पहले इस्तेख़ारा की तरफ़ इस लिए मुतवज्जेह हुआ कि हक़ तआ़ला के हुक़ूक़ और उसके आदाब की हिफ़ाज़त पर अमल किया जाए चूंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आपके दोस्तों के लिए इसका हुक्म फ़रमाया है। इरशादे बारी तआ़ला है-

और जब तुम कुरआने करीम पढ़ो तो शैतान मर्दूद की फ़रेब कारियों से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगो। (पारा १६)

इस्तेआ़ज़ा, इस्तेख़ारा और इस्तेआ़नत सब के एक ही मफ़हूम व माना हैं। मतलब यह कि अपने तमाम काम अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द व हवाला करके हर क़िस्म की आफ़तों से महफ़ूज़ रहने के लिए उससे मदद हासिल करो।

सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अ़लैहिम अजमईन फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ने हमें इस्तेख़ारा करना उसी तरह सिखाया जिस तरह कुरआने करीम की तालीम दी है, बन्दा को जब उस पर कामिल यक़ीन हो जाता है कि तमाम कामों की भलाई कसब व तदबीर पर मौक़ूफ़ नहीं है बल्कि हक़ तआ़ला की मशीयत व रज़ा पर मौक़ूफ़ है और हर नेक व बद और ख़ैर व शर उसी की जानिब से मुक़द्दर हुआ है और बन्दे को बजुज़ तस्लीम व रज़ा कोई चारा-ए-कार नहीं है तो ला-मुहाला बन्दा अपने तमाम काम उसके सिपुर्द करके उसी की मदद चाहता है ताकि तमाम अफ़आ़ल व अहवाल में नफ़्स की शरारतों और शैतान की दख़ल-अन्दाज़ियों से महफ़ूज़ रहे और उसके तमाम काम ख़ैर व ख़ूबी और रास्त-रवी से अंजाम पायें। इस लिए बन्दा के लिए यही ज़रूरी व मुनासिब है कि तमाम कामों में इस्तेख़ारा करे ताकि अल्लाह तआ़ला उसके कामों को हर ज़ियान व नुक़सान और ख़लल व आफ़त से महफ़ूज़ रखे। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़।

बातिनी इलक़ा के हवाले करने की वजह

अब रहा मेरा यह कहना कि "मैंने ख़ुद को दिली वारदात और बातिनी इलक़ा के हवाले कर दिया" इसका मतलब यह है कि जिस काम में नफ़्सानी अग़राज़ शामिल होती हैं तो उस काम से बरकत जाती रहती है और सिराते मुस्तक़ीम से दिल हट कर कजरवी इख़्तियार कर लेता है और अंजाम बख़ैर नहीं होता।

नफ़सानी अग़राज़ की शक्लें

नफ़्सानी अग़राज़ की दो ही सूरतें मुम्किन हैं या तो उसकी ग़र्ज़ पूरी होगी

या न होगी (१) अगर उसकी ग़र्ज़ पूरी हो गई तो समझ लो कि वह हलाकत में पड़ गया इस लिए कि नफ़्सानी अग़राज़ का हासिल होना दोज़ख़ की कुंजी है। (२) और अगर उसकी नफ़्सानी ग़र्ज़ पूरी न हुई तो अल्लाह तआला पहले ही उसके दिल को नफ़्सानी ग़र्ज़ से बेपरवाह कर देगा और ऐसी ख़्वाहिश को दिल से दूर कर देगा क्योंकि उसमें उसकी नजात मुज़मर थी और यही जन्नत के दरवाज़े की कुंजी भी है जैसा कि इरशादे हक़ तआला है कि-

और बन्दे ने नफ़्स को ख़्वाहिशात से बाज़ रखा तो जन्नत ही उसका मस्कन है।

किसी काम में नफ़्सानी दख़ल यह है कि बन्दा अपने काम में हक़ तआला की ख़ुशनूदी को मलहूज़ न रखे और वह उसमें नफ़्स के फ़ितनों से नजात पाने की तलब न करे। क्योंकि नफ़्स के फ़ितनों की कोई हद व ग़ायत नहीं है और न उसकी हवसकारियों का कोई शुमार है। इसका तफ़्सीली ज़िक्र मुनासिब मक़ाम पर आएगा। इन्शाअल्लाह तआला।

जवाब के लिए अ़ज़्मे समीम की वजह

मुद्दआए निगारिश यह है कि "तुम्हारी मक़सद बर-आरी की ख़ातिर इस किताब की नविश्त का अ़ज़्मे समीम कर लिया" तो इसका मतलब यह हुआ कि तुमने चूंकि मुझसे सवाल करके मुझे इसका अहल और साहबे इल्म व बसीरत जाना और अपने मक़सूद बर-आरी के लिए रुजूअ़ करके ऐसे जवाब की इस्तेदअ़ की जिससे पूरा-पूरा फ़ाइदा हासिल हो सके इस लिए मुझ पर लाज़िम हो गया कि मैं तुम्हारे सवाल का हक़ अदा करूं जब इस्तेख़ारा के ज़रीए तुम्हारे सवाल और इस्तेदआ़ का हक़ होना ज़ाहिर हो गया तो मैंने अ़ज़्मे समीम और हुस्ने नीयत के साथ कामिल तौर पर जवाब देने का इरादा कर लिया ताकि शुरू से आख़िर तक तकमीले जवाब में हुस्ने नीयत और अ़ज़्म व इरादा शामिल रहे। बन्दा जब किसी काम का इरादा करता है तो इब्तेदाए अ़मल से ही नीयत शामिल होती है। अगरचे दौराने अमल उसे कोई ख़लल ही वाक़ेअ़ क्यों न हो? लेकिन बन्दा इसमें मअ़ज़ूर मुतसव्वर होता है क्योंकि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है। (मोमिन की नीयत उसके अमल से बेहतर है) लिहाज़ा इब्तेदाए अ़मल में नीयत करना उससे बेहतर है कि बग़ैर नीयत किए अ़मल शुरू किया जाए। क्योंकि तमाम कामों में नीयत को अ़ज़ीम मर्तबा और बुरहाने सादिक़ हासिल है। नीयत में जिस क़दर ख़ुलूस होगा उस अमल का अज्र व सवाब

उतना ही ज़्यादा होगा इसलिए कि बन्दा नीयत ही के ज़रीये एक हुक्म से दूसरे हुक्म की तरफ़ मुन्तक़िल होता है हालांकि ज़ाहिरी अ़मल में नीयत का असर कोई ज़ाहिर नहीं होता इसे यूं समझो कि एक शख़्स ने दिन भर फ़ाक़ा किया लेकिन वह उस फ़ाक़ा से किसी सवाब का मुस्तहिक़ न बना, लेकिन अगर उसने रोज़ा की नीयत करली तो वह सवाब का भी मुस्तहिक़ बन गया हालांकि ज़ाहिर अ़मल में नीयत का कोई असर नज़र नहीं आता। इसी तरह अगर कोई मुसाफ़िर किसी शहर में अर्सए दराज़ तक बूद व बाश रखे तो भी वह वहां का बाशिन्दा न कहलाएगा और बदस्तूर मुसाफ़िर ही रहेगा लेकिन अगर उसने (कम से कम पन्द्रह दिन की) इक़ामत की नीयत करली तो अब मुक़ीम समझा जाएगा। शरीअ़ते मुतहहरा में इस क़िस्म की बेशुमार मिसालें मौजूद हैं। ख़ुलासा यह कि हर अ़मल की इब्तेदा में नेक नीयत करना ज़रूरी है वल्लाहु तआ़ला आलम।

वजहे तस्मीयह

अब रहा मेरा यह कहना कि इस नविश्ता का नाम ''कश्फुल महजूब'' (उर्दू तर्जमा का नाम अस्सुलूक इलल महबूब) रखा" तो इससे मेरी मुराद यह है कि किताब के नाम से ही मालूम हो जाए कि किताब के अन्दर किस क़िस्म के मज़ामीन हैं। ख़ुसूसियत के साथ जब अहले इल्म व बसीरत किताब का नाम सुनेंगे तो समझ लेंगे कि इससे क्या मुराद है और इसमें कैसे मज़ामीन हैं।

कश्फ़े हिजाब की तहक़ीक़

ऐ तालिबाने हक़! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि औलिया अल्लाह और महबूबाने बारगाहे ईज़दी के सिवा सारा आलम लतीफ़ए तहक़ीक़ से महजूब व मस्तूर है। चूंकि यह किताब राहे हक़ के बयान, कलेमाते तहक़ीक़ की शरह और हिजाबे बशरियत के कश्फ़ में है लामुहाला इस किताब के लिए इसके सिवा और कोई नाम मौज़ूं व सही हो सकता ही नहीं। चूंकि हक़ीक़त का मुनकशिफ़ होना दर-पर्दा और मस्तूर अशया के फ़ना व नापैद होने का मूजिब होता है जिस तरह मौजूद व हाज़िर के लिए पर्दा व हिजाब में होना मूजिबे हलाकत होता है। यानी नज़दीक व क़ुर्ब जिस तरह दूरी की ताक़त नहीं रखता उसी तरह दूरी भी नज़दीक व क़ुर्ब की बर्दाश्त नहीं रखती। इसे इसी तरह समझो कि वह कीड़े जो सिर्का में पैदा होते है अगर उन्हें सिर्का में से निकाल कर किसी और चीज़ में डाल दिये जायें तो वह मर जाते हैं या वह कीड़े जो कहीं और पैदा हुए हों अगर उनको सिर्का में डाल दिया जाये तो वह मर जायेंगे। इसी तरह हक़ाइके

अशया के मआ़नी व मतालिब उसी पर खुलते और मुनकशिफ़ होते हैं जिसको ख़ास इसी लिए पैदा किया गया हो इनके मा-सिवा के लिए यह मुमकिन नहीं है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है

यानी हर मख़लूक़ के लिए वही चीज़ है जिसके लिए उसे पैदा किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने हर मख़लूक़ को जिस चीज़ के लिए पैदा किया है उसके हुसूल की राह उस पर आसान कर दी गई है।

हिजाबाते रैनी व ग़ैनी

इंसान के लिए वह पर्दे जो राहे हक़ में उस पर मानेअ़ और हाइल होते हैं दो क़िस्म के हैं। एक का नाम हिजाबे रैनी है जो किसी हालत में और कभी नहीं उठता और दूसरे का नाम हिजाबे ग़ैनी है और यह हिजाब जल्दतर उठ जाता है। इनकी तफ़्सील यह है कि कुछ बन्दे ऐसे होते हैं जिनके लिए अपनी ज़ात ही राहे हक़ में पर्दा व हिजाब बन जाती है। यहां तक कि उनके नज़दीक हक़ व बातिल दोनों यकसां और बराबर हो जाते हैं और कुछ बन्दे ऐसे होते हैं जिनके लिए उनकी अपनी सिफ़तें राहे हक़ में पर्दा व हिजाब होती हैं और वह हमेशा अपनी तबअ़ व सरिश्त में हक़ के मुतलाशी और बातिल से गुरेज़ां रहते हैं। ज़ाती हिजाब का नाम रैन जो कभी ज़ाइल नहीं होता।

हिजाबे रैन के मअ़ना

रैन जिस के मअ़ना ज़ंग-आलूद होने और ख़तम जिसके मअ़ना मुहर लगने और तबअ़ जिसके मअ़ना ठप्पा लगने के हैं। यह तीनों लफ़्ज़ हम-मअ़ना और हम-मतलब हैं। जैसा कि हक़ तआ़ला ने फ़रमाया है-

यह लोग हरगिज़ राहे हक़ क़बूल न करेंगे बल्कि उनके दिलों पर रैन यानी हिजाबे ज़ाती है जो कुछ भी वह करते हैं।

इसके बाद हक़ तआ़ला उनका हाल ज़ाहिर करते हुए फ़रमाता है।

बेशक वह लोग जिन्होंने कुफ्र किया उन पर बराबर है ख़्वाह आप उन्हें डरायें या न डरायें वह ईमान लाने वाले नहीं हैं।

फिर ज़ाहिरे हाल बयान करने के बाद हक़ तआ़ला अ़दमे क़बूले हक़ की इल्लत बयान फ़रमाता है कि-

अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है।

हिजाबे ग़ैन के मअ़ना

ग़ैन जिसके मअ़ना ओट और हल्के पर्दे के हैं यह वस्फ़ी हिजाब हैं किसी वक़्त इसका पाया जाना और किसी वक़्त इसका ज़ाइल होना दोनों जाइज़ व मुम्किन हैं। इस लिए कि ज़ात में तबदीली शाज़ व नादिर बल्कि नामुम्किन व मुहाल है और ग़ैन यानी सिफ़ात में तबदीली जाइज़ व मुम्किन है।

मशाइखे़ तरीक़त रहमहुमुल्लाहु जाइज़ और मुम्किनुल इरतेफ़ाअ़ सिफ़ात यानी हिजाबे ग़ैनी के बारे में और मुहाल व नामुम्किनुल इरतेफ़ाअ़ हिजाब यानी हिजाबे रैनी जो कि ज़ाती है, के बारे मे लतीफ़ इशारात बयान करते हैं। चुनान्चे सय्यदुल ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि-

रैन वतनात के क़बील से है और ग़ैन ख़तरात के क़बील से।

वतनात, वतन की जमा है जिसके माना क़ाइम और पाइदार रहने के हैं और ख़तरात, ख़तर की जमा है जिसके माना आ़रज़ी और नापाइदारी के हैं। इसे इस तरह समझो कि पत्थर कभी आईना नहीं बन सकता अगरचे उसे कितना ही सैक़ल और साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ करने की कोशिश की जाए। लेकिन अगर आईना ज़ंग आलूद हो जाए तो थोड़ा सा साफ़ करने से वह मुजल्ला और मुसफ़्फ़ा हो जाएगा। इसकी वजह यह है कि पत्थर के अन्दर तारीकी और आईने के अन्दर चमक उसकी ज़ाती और असली ख़ूबी है चूंकि ज़ात व असल क़ाइम व पाइदार रहने वाली चीज़ होती है इस लिए वह किसी तरह ज़ाइल नहीं हो सकती और सिफ़त चूंकि आ़रज़ी व नापाइदार होती है और वह क़ाइम और बाक़ी रहने वाली चीज़ नहीं होती इस लिए वह जल्द ही ज़ाइल हो जाती है।

मैंने यह किताब उन लोगों के ज़ंगे कदूरत दूर करने के लिए लिखी है जो हिजाबे ग़ैनी यानी पर्दए सिफ़ाती में गिरिफ़्तार हैं और उनके दिलों में नूरे हक़ का ख़ज़ाना मौजूद है। ताकि इस किताब के पढ़ने की बरकत से वह हिजाब उठ जाए और हक़ीक़ी माना की तरफ़ उन्हें राह मिल जाए। लेकिन वह लोग जिनकी सरिश्त व आ़दत ही इन्कारे हक़ हो और बातिल पर क़ाइम व बरक़रार रहना ही जिनका शेआ़र हो वह मुशाहिदए हक़ की राह से हमेशा महरूम रहेंगे। ऐसे लोगों के लिए यह किताब कुछ फ़ाइदामन्द न होगी।

मुजीब का फ़र्ज़

मैंने जो इब्तेदा में यह कहा है कि 'इस नविश्ता में अपने सवाल का जवाब अ़ला वजहिल कमाल पाओगे' तो इसका मतलब यह है कि मैंने तुम्हारे सवाल

का मक़सद और उसकी ग़र्ज़ व ग़ायत को जान लिया है। इस लिए कि मुजीब को जब तक साइल के सवाल का मक़सद और उसकी ग़र्ज़ व ग़ायत मालूम न होगी उस वक़्त तक वह अपने जवाब में साइल की तसल्ली व तशफ़्फ़ी कैसे कर सकता है? क्योंकि मुश्किल दर पेश आने पर ही सवाल किया जाता है और जवाब में उस मुश्किल का हल पेश किया जाता है। अगर जवाब में उसी अश्काल को हल न किया जाए तो ऐसा जवाब साइल को क्या फ़ाइदा पहुंचाएगा और अश्काल का हल, बग़ैर मअ़रफ़ते अश्काल नामुम्किन है।

और मेरा यह कहना कि 'अपने सवाल का जवाब अ़ला वजहिल कमाल पाओगे' तो इसका मतलब यह है कि इजमाली सवाल के लिए इजमाली जवाब होता है और जामेअ़ सवाल के लिए जामेअ़ जवाब। लेकिन जब साइल अपने इजमाली सवाल और उसके मरातिब व दर्जात से बाख़बर होता है या यह कि मुब्तदी के लिए तफ़्सील की हाजत होती है तो मुजीब का फ़र्ज़ है कि जवाब में उसका पास व लिहाज़ रखे। अल्लाह तआ़ला तुम्हें सआ़दत अ़ता फ़रमाए। चूंकि तुम्हारी ग़र्ज़ यही थी कि मैं तफ़्सील के साथ तरीक़त के हुदूद व अक़्साम बयान करूं जो हर शख़्स के लिए फ़ाइदामन्द साबित हों ख़्वाह वह मुब्तदी हो या मुतवस्सित व आ़ला। इस लिए मैंने तफ़्सील को इख़्तियार करके सवाल के जवाब में यह किताब मुरत्तब की है। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़।

इस्तेआ़नत व तौफ़ीक़ की हक़ीक़त

मैंने जो यह कहा है कि 'अल्लाह तआ़ला से इस्तेआ़नत करता हूं और उससे तौफ़ीक़ की इस्तेदआ़ करता हूं कि वह इस नविश्ता को मुकम्मल करने में मेरी मदद फ़रमाए' तो इससे मेरी मुराद यह है कि बन्दे के लिए अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नासिर व मददगार नहीं है वही हर नेकी व भलाई का मुईन व मददगार है और ज़्यादा से ज़्यादा तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाता है।

हक़ीक़ी तौफ़ीक़ यह है कि अल्लाह तआ़ला बन्दे के हर अ़मल में बिलफ़ेल अपनी ताईद फ़रमाए और उस अमल पर उसे अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ बनाए। तौफ़ीक़ की सेहत व दुरुस्तगी पर किताब व सुन्नत और इजमाअ़े उम्मत शाहिद व नातिक़ है। अलबत्ता फ़िर्क़ए मुअ़तज़ेला और क़दरिया ने इसका इन्कार किया है। यह लोग लफ़्ज़े तौफ़ीक़ को तमाम मानी से ख़ाली कहते हैं। गोया वह इस लफ़्ज़ को बेमानी और मुहमल तसव्वुर करते हैं।

मशाइख़े तरीक़त की एक जमाअ़त कहती है कि तौफ़ीक़ उस

कुदरत का नाम है जो बवक्ते इस्तेमाल नेकियों पर हासिल होती है। मतलब यह है कि बन्दा जब अल्लाह तआ़ला का फ़रमांबरदार हो जाता है तो हक़ तआ़ला हर हाल में उसे नेकियों की बेश्तर तौफ़ीक़ व कुव्वत इनायत फ़रमाता है जो उससे क़बल उसे हासिल न थी। बावजूद यह कि आ़लमे वजूद में बन्दे की हर हरकत व सुकून उसी के फ़ेअ़ल व ख़लक़ से वाक़ेअ़ होते हैं। यहां सिर्फ़ इतना समझना चाहिए कि बन्दा जो ख़ुदा की अ़ता की हुई कुव्वत से ताअ़त व नेकी बजा लाता है उसको तौफ़ीक़ कहते हैं। क्योंकि यह किताब इस मसला की तफ़्सील बयान करने का मौज़ूअ़ नहीं है कि बताया जा सके कि कौन-कौन सी ख़ास हालत व कुव्वत मुराद है। लिहाज़ा इसी पर इक्तेफ़ा कर के तुम्हारे सवाल के जवाब की तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं। क़बल इसके कि मैं जवाब में अपना कलाम व बयान शुरू करूं तुम्हारे सवाल को बेऐनेही नक़ल कर दूं और इस सवाल से अपनी किताब की इब्तेदा करूं। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़!

सूरते सवाल

हज़रत अबू सईद ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह ने यह सवाल किया है कि- "मुझे तहक़ीक़ी तौर पर बयान फ़रमाईये कि तरीक़त व तसव्वुफ़ और उनके मक़ामात की कैफ़ियत और उनके मज़ाहिब व अक़वाल और रमूज़ व इशारात क्या-क्या हैं? और यह कि अहले तरीक़त व तसव्वुफ़, अल्लाह तआ़ला से किस तरह मुहब्बत करते और उनके दिलों पर तजल्लियाते रब्बानी के इज़हार की कैफ़ियत क्या होती है? और यह कि उसकी माहिय्यत की कुनह के इदराक से अक़्लें हिजाब में क्यों हैं और नफ़ूसे इंसानिया उसकी हक़ीक़त से क्यों मुनफ़रिद हैं? और सूफ़ियाए किराम की अरवाह को उसकी मअ़रफ़त से कैसे राहत व आराम मिलता है नीज़ इस ज़िम्न में जिन बातों का जानना ज़रूरी है वह भी बयान फ़रमाईये?

अलजवाब बेऔनिल-मलिकुलवह्हाब

ऐ तालिबे हक़! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हमारे ज़माने में ख़ास कर इस इलाक़े के लोग दर हक़ीक़त इल्मे तरीक़त से दूर होकर हवा व हवस में गिरिफ़्तार हो चुके हैं। रज़ाए इलाही से किनारा-कश होकर उलमाए हक़ के तरीक़े से भटक चुके हैं आज जो लोग तरीक़त व तसव्वुफ़ के मुद्दई नज़र भी आते हैं तो वह दर हक़ीक़त असल तरीक़त के बर-ख़िलाफ़ अ़मल करते और तरीक़त को बदनाम करते हैं। लिहाज़ा ऐसी इस्तेअ़दाद व सलाहियत पैदा करने की ज़रूरत

है कि उस मक़ाम तक रिसाई हासिल हो जाए जहां तक अहले ज़माना की दस्तरस नहीं है। और उस मक़ाम पर वही हज़रात फ़ाइज़ हुए हैं जो ख़ासाने बारगाहे हक़ हैं और तमाम इरादतमन्दों की वही मक़सूद व मुराद रही है और वह उसके हुसूल की ख़ातिर हर चीज़ से किनाराकश रहे हैं। जिस तरह कि अहले मअ़रेफ़त, वजूदे हक़ की मअ़रेफ़त हमह ख़ास व आम मख़लूक़ से बे-नियाज़ रहे थे। इस के बर-अक्स इन ज़ाहिरी मुद्दईयाने तसव्वुफ़ ने सिर्फ़ ज़ाहिरी इबारतों पर इक्तेफ़ा कर रखा है और दिल व जान से हिजाब के ख़रीदार बनकर और तहक़ीक़ की राह छोड़कर अन्धी तक़लीद के ख़ूगर बन गए हैं। यही वजह है कि तहक़ीक़ ने भी अपना चेहरा इन मुद्दईयाने ज़ाहिरी से छुपा लिया है और अवाम अपनी मौजूदा हालत में मगन रहकर कह रहे हैं कि हमने हक़ को पहचान लिया है और ख़्वास इसी में ख़ुश हैं कि हमारे दिल में उसकी तमन्ना मौजूद है और हमारे नफ़्स में उसकी एहतियाज और सीनों में उसकी मुहब्बत पाई जाती है। अपने-अपने मशाग़िल में मुनहमिक रहते हुए कहते हैं कि यह सब रूयते इलाही के शौक़ में है और दिल में जो अच्छी ख़्वाहिशात उभरती हैं वह मुहब्बते इलाही की तपिश है। इसी तरह मुद्दईयाने सुलूक अपने इद्देआ़ के सबब कुल्लियतन महरूम हो गए हैं, इरादतमन्दों ने रियाज़त व मुजाहिदे से हाथ खींच लिया है और अपने फ़ासिद ख़्यालात का नाम मुशाहिदा रख लिया है।

हुज़ूर सय्यदना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने इल्मे तसव्वुफ़ में इससे क़बल बकसरत किताबें लिखी हैं लेकिन वह सबकी सब ज़ाया हो चुकी हैं और झूटे दावेदारों ने उनकी बाज़ बातों को मख़लूके ख़ुदा का शिकार करने की ख़ातिर चुन लिया है और बाक़ी सबको गुम कर के उनका नाम व निशान तक मिटा दिया है। चूंकि हासिदों का हमेशा यही शेवा रहा है। उन्होंने सरमायए हसद व इन्कार को ही नेअ़मते ख़ुदावन्दी जान रखा है। चुनान्चे उनमें से कुछ लोग तो ऐसे हैं जिन्होंने पढ़ तो लिया मगर मानी व मतलब से बे-बहरा हैं उन्होंने सिर्फ़ लफ़्ज़ व इबारत को पसन्द किया और उसी को लिखते और याद करते रहे। वह कहते हैं कि हम इल्मे तसव्वुफ़ व मअ़रेफ़त में बातें कर रहे हैं। हालांकि यह लोग इन्तिहाई बद-नसीबी और महरूमी में गिरिफ़्तार रहे हैं। तबक़ात का यह तफ़ावुत इस बिना पर है कि इल्मे तसव्वुफ़ और मअ़रेफ़ते इलाही किब्रियते अहमर (ताँबे को सोना बनाने वाली सुर्ख़ इक्सीर) की मानिन्द है जो सबको अज़ीज़ व मरग़ूब है। किब्रियते अहमर यानी सुर्ख़ गन्धक जब मिल जाती है तो

वह कीमिया होती है जिसकी एक चुटकी (कख) बहुत से ताँबे को ख़ालिस सोना बना देती है। ग़र्ज़ कि हर शख़्स ऐसी दवा का ख़्वाहिशमन्द होता है जो उसके दर्द का दरमां बन सके। इसके सिवा उसकी और कोई ख़्वाहिश नहीं होती इसी मफ़हूम में एक बुज़ुर्ग का शेअ़र है।

हर वह शख़्स जिसके दिल में दर्द है वही चाहता है जो दर्द के मुवाफ़िक़ है

जिसकी बीमारी की दवा कोई हक़ीर तरीन चीज़ हो वह मरवारीद व मरजान की जुस्तजू में सरगरदां क्यों फिरे? और जवाहिरात की मअ़जून या दवाउलमिस्क बनाने की कोशिश क्यों करे? इल्मे तरीक़त व हक़ीक़त तो इससे कहीं ज़्यादा बरतर है। हर केह व मेह (छोटे व बड़े) को यह कैसे हासिल हो सकता है। इससे क़बल बकसरत जुह्हाल ने भी मशाइख़े तरीक़त की इल्मी किताबों के साथ ऐसा ही सुलूक किया है। असरारे इलाही के ख़ज़ाने उनके हाथों में पड़े तो वह चूंकि इसकी हक़ीक़त से बे-बहरा थे गोया कुलाहदोज़ जाहिलों और नापाक व कमीना जिल्दसाज़ों की मानिन्द उनके हाथ लग गया उन्होंने टोपियों के अस्तर और अबू नवास के शेअ़रों के दीवान और फ़ुज़ूल व लग़्व अफ़सानों और कहानियों के मानिन्द असरारे इलाही के ख़ज़ानों के साथ सुलूक किया। बिला शुबहा जब बादशाह का बाज़ किसी बूढ़ी औरत के झोंपड़े पर उतरेगा तो वह अपने बाल व पर ही उखड़वाएगा।

अहले ज़माना का शिकवा

अल्लाह तआ़ला ने हमें ऐसे ज़माने में पैदा फ़रमाया है कि लोगों ने अपनी ख़्वाहिशात का नाम शरीअ़त, हुब्बे जाह का नाम इज़्ज़त, तकब्बुर का नाम इल्म और रियाकारी का नाम तक़वा रख लिया है और दिल में कीना को छुपाने का नाम हिल्म, मुजादिला का नाम मुनाज़रा, मुहारबा व बेवकूफ़ी का नाम अ़ज़मत, निफ़ाक़ का नाम वफ़ाक़, आरज़ू व तमन्ना का नाम ज़ुहद, हिज़याने तबअ़ का नाम मअ़रफ़त, नफ़्सानीयत का नाम मुहब्बत, इलहाद का नाम फ़क़्र, इन्कारे वजूद का नाम सुफ़ूत, बे-दीनी व ज़न्देक़ा का नाम फ़ना और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअ़त को तर्क करने का नाम तरीक़त रख लिया है और अहले दुनिया की आफ़तों को मुआ़मला कहने लगे हैं। इसी बिना पर अरबाबे मआ़नी और आ़रिफ़ाने हक़ीक़त ने उन लोगों से किनारा-कशी इख़्तियार कर रखी है और गोशए ख़िलवत में रहना पसन्द कर लिया है। इन झूटे मुद्दईयाने जहान का ऐसा ग़लबा हो गया है जिस तरह ख़िलाफ़ते राशिदा के

इख़्तेताम के बाद अहले बैते अतहार रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन पर आले मरवान का ग़लबा हो गया था। इस हक़ीक़त का इन्केशाफ़ शहनशाहे अहले हक़ाइक़, बुरहाने तहक़ीक़ व दक़ाइक़ हज़रत अबू बकर दासती रहमतुल्लाह अलैह ने क्या ख़ूब कहा है। वह फ़रमाते हैं कि-

हम ऐसे दौर में फंस गए जिसमें न तो इस्लाम के आदाब हैं और न जाहिलीयत के अख़लाक़ हैं और न आम इंसानी शराफ़त के तौर व तरीक़।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि अरब के शायर मुतनब्बी का यह शेअ़र ज़मानए हाल के लोगों की बिल्कुल सही तस्वीर है।

अल्लाह से दुनियादारों की तमन्ना ऊँट सवार की मंज़िल है
तो जो भी ग़म से दूर है वही आख़िरत में अज़ाब पाने वाला है

दुनिया मक़ामे असरारे इलाही है

ऐ तालिबे हक़! अल्लाह तआ़ला तुम्हें कुव्वत अता फ़रमाए ख़ूब समझ लो कि मैंने इस जहान को असरारे इलाही का महल और काइनाते आलम को उसका मक़ाम और आयाने साबिता को लताइफ़ व असरार की रिहाइश पाया है जिसे अल्लाह तआ़ला के औलिया व मुहिब्बीन ही ख़ूब जानते हैं। यह अग़राज़ व जवाहिर, अनासिर व अजराम और तमाम अजसाम व तबाअ़ उन असरारे इलाही के हिजाबात हैं। मक़ामे तौहीद में उनका अस्बात शिर्क है। यह भी याद रखो कि अल्लाह तआ़ला ने इस जहां को महले हिजाब बनाया है ताकि अपने-अपने आलम में हर तबीअ़त हक़ तआ़ला के फ़रमान से सुकून व क़रार हासिल कर सके और अपने वजूद को उसकी तौहीद में गुम कर दे। चूंकि इस जहान में रूहें अपने जिस्मों के हाथ मुलहिक़ होकर मक़ामे इख़्लास से हट कर ऐसी मग़रूर हो गई हैं कि उनकी अक़्लें असरारे इलाही के इदराक से आजिज़ और वह रूहें क़ुर्बे हक़ से मस्तूर व महजूब हो गई हैं। जिसका अंजाम यह हुआ कि आदमी अपनी हस्ती के सबब ग़फ़लत की तारीकी में ग़र्क़ हो गया और मक़ामे ख़ुसूसियत में अपनी हस्ती के हिजाब के सबब ऐबदार बन गया। अल्लाह तआ़ला ने अपने इरशाद में इसी हक़ीक़त का इज़हार फ़रमाया है-

क़सम है ज़माना की, बिला शुबहा इन्सान यक़ीनी घाटे में है।

और फ़रमाया-

बेशक इन्सान ज़ालिम व नादान है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "अल्लाह तआ़ला

ने मख़लूक़ को तारीकी में पैदा फ़रमाया फिर उस पर रौशनी डाली।" तो
हिजाब इस जहान में उसके लिए इख़्तियारे तबअ़ बन गई क्योंकि उसने अप
तबीअ़त और अपनी अ़क्ल से इसमें तसर्रुफ़ किया। हत्ता कि उसने न सि
जहल व नादानी को पसन्द किया बल्कि इन हिजाबात का वह दिल व ज
से ख़रीदार व मतवाला बन गया। यही वजह है कि वह जमाले कश्फ़ से बेख़
और असरारे इलाही की तहक़ीक़ से बे-परवाह बन गया और वह आ़रज़ी मस्
में ख़ुश रहकर अपनी फ़लाह व नजात से ग़ाफ़िल होगया। इस तरह वह तौ
बारी से बे-इल्म, जमाले अहदियत से बेख़बर और ज़ाइक़ए तौहीद से ना-आश
हो गया है। रूह व जिस्म के तरकब से मुशाहिदए हक़ की तहक़ीक़ से महर
है और दुनियावी हिर्स व तमअ़ में मुबतला होकर हक़ की तरफ़ रुजूअ़ व अना
से बे-बहरा हो गया और नफ़्से हैवानी ने जो हयाते हक़ीक़ी के सिवा है उस
नातेक़ा को मजबूर कर दिया यहां तक तमाम हरकात व ख़्वाहिशात नफ़्से हैव
के ताबेअ़ होकर रह गई। फिर यह हालत हो गई कि सिवाए खाने, पीने, सोने अ
शहवानी ख़्वाहिशात के किसी चीज़ का होश न रहा। अल्लाह तआ़ला ने अ
महबूब औलिया को इन तमाम बातों से बचने का हुक्म फ़रमाया। इरशाद

अहले दुनिया को छोड़ दो ताकि वह खायें नफ़ा उठायें और तमन्नाओ
मगन रहें अनक़रीब पता चल जाएगा।

इस लिए कि उनकी ख़ू बू और आदत व तीनत ही यह है कि उन पर अस
इलाही मख़फ़ी रहें और हक़ तआ़ला की तौफ़ीक़ व इनायत से महरूम रह
हमेशा ज़लील व ख़्वार रहें यहां तक कि वह इस नफ़्से अम्मारा के जो हमे
बुराई का हुक्म देता है, मतीअ़ व ताबेअ़ हो जायें। याद रखो यह बहुत बड़ा हि
है और यही हर बुराई व शर का मम्बअ़ और सरचश्मा है। हक़ तआ़ला
इरशाद है-

बेशक नफ़्स हर बुराई का ज़बरदस्त हुक्म करने वाला है।

इस तमहीदी नसीहत के बाद तुम्हारे सवाल में जो मक़ासिद हैं उनका ब
शुरू करता हूं और जो मक़ामात व हिजाबात हैं उनका बयान लतीफ़ पै
में मुरत्तब करता हूं और अहले इल्म व इरफ़ान की इबारतों को शरह के स
और बक़द्रे ज़रूरत अक़वाले मशाइख़ को शामिल करता हूं नीज़ अ़जीब व ग़
हिकायतों को बयान करके फ़हमे मक़ासिद में तुम्हारी मदद करता हूं। त
तुम्हारी मक़सद बर-आरी हो जाए और ज़ाहिरी उलूम के उलमा को भी मा

हो जाए कि तरीक़ए तसव्वुफ़ की जड़ मज़बूत और उसकी शाख़ें मेवादार हैं और वह इस हक़ीक़त से रू-शनास हो जाएं कि तरीक़त के तमाम मशाइख़ साहबाने इल्म व मअ़रेफ़त थे और वह अपने मुरीदों को इस इल्म के सीखने का शौक़ दिलाते थे और इस पर क़ाइम रहने का ज़ौक़ पैदा करते थे। वह किसी हालत लह्व व लग़्व का इत्तबाअ़ न करते थे और कभी भी यह हज़राते कुद्स किसी वाही तबाही में नहीं पड़े बकसरत मशाइख़े तरीक़त और उलमाए मअ़रेफ़त ने तसव्वुफ़ व तरीक़त में किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं और असरारे रब्बानी को दलील व बुरहान के साथ लतीफ़ इबारतों से साबित किया है व बिल्लाहित्तौफ़ीक़।

तहसीले इल्म की फ़र्ज़ियत और उसकी अहमियत

अल्लाह तआ़ला ने उलमाए रब्बानी की सिफ़त में इरशाद फ़रमाया है-

दर हक़ीक़त बन्दगाने ख़ुदा में से उलमा ही ख़ुदा का ख़ौफ़ रखते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है "कि हर मुसलमान मर्द व औरत पर तहसीले इल्म फ़र्ज़ है नीज़ फ़रमाया "इल्म हासिल करो अगरचे (दूर दराज़ मक़ाम) चीन में ही क्यों न हो।"

ऐ तालिबे हक़! तुम्हें इल्म होना चाहिए कि इल्म की कोई हद व ग़ायत नहीं है और हमारी ज़िन्दगानी महदूद व मुख़्तसर है। बिना बरीं हर शख़्स पर तमाम उलूम का हुसूल फ़र्ज़ क़रार नहीं दिया गया जैसे इल्मे नुजूम, इल्मे हिसाब और नादिर व अ़जीब सनाअ़े वग़ैरह। लेकिन इनमें से इस क़दर सीखना जितना शरीअ़त से मुतअ़ल्लिक़ है ज़रूरी है। मसलन इल्मे नुजूम से इतना सीखना जिससे दिन व रात के औक़ात (जिनसे नमाज़ व रोज़े की अदाएगी दुरुस्त तरीक़ा पर हो सके) लाज़िम है। इसी तरह इल्मे तिब से इतना जिससे अय्याम व इद्दत जान सके और इल्मे हिसाब से इस क़दर, जिससे फ़राइज़ यानी मीरास वग़ैरह की तक़सीम हो सके। ग़र्ज़ कि अ़मल के लिए जिस क़दर इल्म की ज़रूरत है उसका हासिल करना फ़र्ज़ व लाज़िम है। लेकिन ऐसे उलूम जो किसी को नफ़ा न पहुंचा सकें अल्लाह तआ़ला ने ऐसे उलूम के तहसील की मज़म्मत फ़रमाई है। इरशाद है-

वह उन बातों को सीखते हैं जो उनको ज़रर पहुंचाए और उन्हें कोई फ़ाइदा न पहुंचाए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ऐसे बे-मनफ़अ़त इल्म से पनाह

मांगी है। आप का इरशाद है-

ऐ ख़ुदा मैं पनाह मांगता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़ा न पहुंचाए।

याद रखो! इल्म के साथ अ़मल भी ज़रूरी है। थोड़े से इल्म के लिए भी बहुत ज़्यादा अ़मल दरकार है। इल्म व अ़मल दोनों बाहम लाज़िम व मलज़ूम हैं लिहाज़ा इल्म के साथ अ़मल हमेशा पैवस्त रहना चाहिए। इसी तरह बग़ैर इल्म के अ़मल राइगां है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है-

बे इल्म इबादत गुज़ार उस गधे की मानिन्द है जो आटे की चक्की से बंधा है।

चक्की से बंधा हुआ गधा अगरचे दौड़ता, भागता और चलता है लेकिन वह अपने ही मेहवर में घूमता रहता है और कोई मसाफ़त तय नहीं कर पाता। मैंने आम लोगों के एक गिरोह को देखा है कि वह इल्म को अ़मल पर फ़ज़ीलत देते हैं और एक गिरोह ऐसा भी देखा कि वह अ़मल को इल्म पर फ़ौक़ियत देता है हालांकि उन दोनों गिरोहों के नज़रीये बातिल हैं। इस लिए कि बग़ैर इल्म के अ़मल को हक़ीक़त में अ़मल कहा ही नहीं जा सकता क्योंकि आ़मिल जभी अ़मल करता है जबकि पहले उसे उसका इल्म होता है मतलब यह कि बन्दा को इल्म होता है कि इस अ़मल के करने का ख़ुदा ने उसे हुक्म दिया है इस इल्म के बाद बन्दा उस पर अमल करता है जिससे वह अ़मल करने के ज़रीया अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ क़रार पाता। समझना यूं चाहिए कि नमाज़ एक अ़मल है जब तक बन्दे को पहले तहारत के अरकान का इल्म न हो उसी तरह पानी की शनाख़्त का इल्म, सम्ते क़िब्ला का इल्म, कैफ़ियते नीयत का इल्म, वक़्ते नमाज़ का इल्म और अरकाने नमाज़ का इल्म पहले से न हो वह नमाज़ सही कैसे हो सकती है? लिहाज़ा जब बग़ैर इल्म के अ़मल से बन्दा बे-इल्म हो जाता है तो जाहिल को उससे कैसे जुदा कर सकते हैं, इसी तरह उस गिरोह का हाल है जो इल्म को अ़मल पर फ़ज़ीलत देता है। यह नज़रिया भी बातिल मुहाल है क्योंकि अ़मल के बग़ैर इल्म कुछ काम न आएगा। इरशाद है-

अहले किताब के एक गरोह ने अल्लाह की किताब को पसे-पुश्त डाल दिया (यानी वह किताब पर अमल करते) गोया वह लोग जानते ही नहीं बे-इल्म हैं।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयतं करीमा में आलिम बे अ़मल को उलमा के ज़ुमरे में शमूलियत की नफ़ी फ़रमाई है। इसलिए कि सीखना, याद करना,

महफ़ूज़ करना यह सब भी तो अ़मल ही के कबील से हैं और इसी अ़मल के ज़रीये ही तो बन्दा मुस्तहिके़ सवाब होता है। अगर आ़लिम का अ़मल उसके अपने कसब व फे़अ़ल से न हो तो भला वह किसी सवाब का कैसे हक़दार हो सकता है।

ऐसी बातें वही लोग बनाते हैं जो मख़लूक़ में दीनवी इ़ज़्ज़त व मंज़िलत और जाह व हशमत की ख़ातिर इल्म हासिल करते हैं। नफ़्से इल्म से उन्हें कोई लगाव और सरोकार नहीं होता। ऐसे लोग यक़ीनन इल्म से बे-बहरा हैं क्योंकि अमल को इल्म से जुदा करते हैं। वह न तो इल्म की क़दर ही जानते हैं और न अ़मल से वाक़िफ़ हैं। बाज़ जाहिल तो यहां तक कह देते हैं कि यह तो क़ाल है यानी इल्म की बातें हैं हमें इल्म नहीं चाहिए बल्कि हाल यानी अ़मल चाहिए और कोई नादान यूं कह गुज़रता है कि अ़मल की क्या ज़रूरत है? सिर्फ़ इल्म ही काफ़ी है हालांकि जिस तरह अ़मल के बग़ैर इल्म फ़ाइदा नहीं पहुंचाता उसी तरह इल्म के बग़ैर अमल सूदमन्द नहीं है। यह दोनों नज़रिये बातिल हैं दर-हक़ीक़त इल्म व अ़मल दोनों ही लाज़िम व मल्ज़ूम हैं।

इल्म बे-अमल की मिसाल

हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मैंने रास्ता में एक पत्थर पड़ा देखा उस पर लिखा था कि मुझे पलट कर देखो जब मैंने पलट कर देखा तो लिखा था-

जब तुम अपने इल्म पर अ़मल नहीं करते तो उसकी तलाश क्यों करते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मतलब यह है कि जब तुम इल्म पर अमल नहीं कर सके तो अब यह मुहाल है कि जिन बातों का अभी इल्म नहीं उनको तुम तलब कर सको। लिहाज़ा पहले अपने इल्म पर अमल करो ताकि उसके बाद उसकी बरकत से दीगर उलूम की राहें तुम पर खुल जायें। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि "उलमा की हिम्मत देरायत यानी ग़ौर व ख़ौज़ करने में है और नासमझों की हिम्मत रिवायत करने यानी नक़ल करने में है।"

लेकिन वह शख़्स जो इल्म को दुनियाबी इ़ज़्ज़त व जाह की ग़र्ज़ से हासिल करता है दर-हक़ीक़त वह आ़लिम कहलाने का ही मुस्तहिक़ नहीं है क्योंकि दुनियावी इ़ज़्ज़त व जाह की ख़्वाहिश करना बजाए ख़ुद अज़ क़बीले जहालत है। इस लिए कि इल्म बज़ाते ख़ुद बुलन्द-तर मर्तबा है। इससे बढ़ कर और कोई मर्तबा है ही नहीं। जब वह इस ज़ाहिरी इल्म के मर्तबा से ही नादान है तो भला

वह रब्बानी लताइफ़ व असरार को कैसे जान सकेगा?

इल्म के अक्साम

ऐ तालिबे हक़! याद रखो कि इल्म दो क़िस्म के हैं। एक इल्म अल्लाह तआ़ला का है और दूसरा इल्म मख़लूक़ का है।

अल्लाह तआ़ला का इल्म, उसकी सिफ़त है जो उसके साथ क़ाइम है और उसके किसी सिफ़त की कोई हद व इन्तिहा नहीं है उसका इल्म मौजूदा व मअ़दूम सब पर हावी है और हमारा इल्म यानी मख़लूक़ का इल्म, हमारी सिफ़त हैं जो ख़ुदा की अ़ता की हुई है और हमारे साथ क़ाइम है। मख़लूक़ की तमाम सिफ़तें मतनाही और महदूद हैं। मख़लूक़ का ब-मुक़ाबलए इल्मे इलाही कोई हक़ीक़त व निस्बत ही नहीं रखता। क्योंकि हक़ तआ़ला फ़रमाता है-

जिस क़दर तुम्हें इल्म का हिस्सा दिया गया है दर-हक़ीक़त वह बुहत थोड़ा है।

ग़र्ज कि इल्म औसाफ़े मदह में से है और उसकी तारीफ़, मालूम को घेरना और मालूम का इज़हार व बयान है। लेकिन सबसे बेहतरीन तारीफ़ यह है कि-

इल्म ऐसी सिफ़त है जिसके ज़रीए जाहिल, आलिम बन जाता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है

अल्लाह का इल्म काफ़िरों को घेरे हुए है नीज़ इरशाद है

और अल्लाह हर शय को जानने वाला है। अल्लाह तआ़ला का इल्म, उसकी ज़ाती सिफ़त है। वह हर मअ़दूम व मौजूद को जानता है। उसमें न कोई मख़लूक़ शरीक है और न उसका इल्म मुतजुज़ी व मुनक़सिम हो सकता है और न उससे मुनफ़क व जुदा हो सकता है। उसके इल्म पर दलील उसके फ़ेअ़्ल का मुरत्तब होना है यानी ब-हुक्मे इल्मे फ़ाइल, फ़ेअ़्ल का इक़्तेज़ा करना है। उसका इल्म असरार के साथ लाहक़ और इज़हार के साथ मुहीत है। तालिबे हक़ को चाहिए कि ख़ुदा के मुशाहिदे में अ़मल करे मतलब यह कि बन्दा ऐतक़ाद रखे कि वह ख़ुदा के इल्म में है और वह उसके अफ़आ़ल को मुलाहज़ा फ़रमा रहा है।

मुआ़इनए इलाही की मिसाल

बसरा में एक रईस था। एक दिन वह अपने बाग़ में गया तो बाग़बान की बीवी के हुस्न व जमाल पर उसकी नज़र पड़ गई। रईस ने उसके शौहर को किसी बहाने से बाहर भेज दिया और औरत से कहा दरवाज़े बन्द कर दो। औरत ने आकर

कहा मैंने मकान के तमाम दरवाज़े तो बन्द कर दिए हैं लेकिन एक दरवाज़ा मैं बन्द नहीं कर सकती हूं। रईस ने पूछा वह कौन-सा दरवाज़ा है? औरत ने कहा वह दरवाज़ा हमारे और खुदा के दर्मियान का है। रईस शर्मिन्दा और पशेमान होकर तौबा व इस्तिग़फ़ार करने लगा।

चार सबक़ आमोज़ बातें

हातिमुल-असम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि जब से मुझे चार बातों का इल्म हासिल हुआ है मैं आलम के तमाम उलूम से बे-परवा हो गया हूं। लोगों ने दरयाफ़्त किया वह कौन-सी चार बातों का इल्म है? उन्होंने फ़रमाया एक यह कि मैंने जान लिया है कि मेरा रिज़्क़ मुक़द्दर हो चुका है जिसमें न कमी हो सकती है न ज़्यादती। लिहाज़ा ज़्यादा की ख़्वाहिश से बे-नियाज़ हूं। और दूसरी यह कि मैंने जान लिया है कि खुदा का मुझ पर हक़ है जिसे मेरे सिवा कोई दूसरा अदा नहीं कर सकता लिहाज़ा मैं उसकी अदाएगी में मशगूल हूं। और तीसरी यह कि मेरा कोई तालिब है यानी मौत मेरी ख़्वास्तगार है जिससे मैं राहे फ़रार इख़्तियार कर नहीं सकता। लिहाज़ा मैंने उसे पहचान लिया है और चौथी यह कि मैंने जान लिया है कि मेरा कोई मालिक है जो हमा वक़्त मुझे देख रहा है मैं उससे शर्म करता हूं और नाफ़रमानियों से बाज़ रहता हूं। बन्दा जब इससे बाख़बर हो जाता है कि अल्लाह तआ़ला उसे देख रहा है तो वह कोई काम ऐसा नहीं करता जिसकी वजह से क़ियामत के दिन उसे शरमसार होना पड़े।

फ़र्ज़े उलूम

हर शख़्स पर लाज़िम है कि अहकामे इलाही और मअ़रेफ़ते रब्बानी के इल्म के हुसूल में मशगूल रहे। बन्दे का इल्म वक़्त के साथ फ़र्ज़ किया गया है यानी जिस वक़्त पर जिस इल्म की ज़रूरत हो ख़्वाह वह ज़ाहिर में हो या बातिन में उसका हासिल करना फ़र्ज़ किया गया है। इस इल्म के दो हिस्से हैं। एक का नाम इल्मे उसूल है और दूसरे का नाम इल्मे फ़रूअ। ज़ाहिर इल्मे उसूल में कलिमा-ए-शहादत यानी-

और बातिन इल्मे उसूल में तहकीके मअ़रेफ़त यानी हक तआ़ला की मअ़रफ़त में कोशिश करना है। और ज़ाहिर इल्मे फ़रूअ़ में लोगों से हुसने मुआ़मिला और बातिन इल्मे फ़रूअ़ में नीयत का सही व दुरुस्त रखना है। इनमें से हर एक का क़याम, बग़ैर दूसरे के मुहाल व नामुम्किन है। इस लिए कि ज़ाहिरे हाल, बातिनी हक़ीक़त के बग़ैर नेफ़ाक़ है इसी तरह बातिन बग़ैर ज़ाहिर के ज़न्देक़ा

और बे-दीनी है। ज़ाहिरे शरीअ़त, बग़ैर बातिन के नाक़िस व नामुकम्मल है। और बातिन बग़ैर ज़ाहिर के हवा व हवस।

इल्मे हक़ीक़त के अरकान:- इल्मे हक़ीक़त यानी बातिने इल्मे उसूल के तीन रुक्न हैं।

(१) ज़ाते बारी तआ़ला और उसकी वहदानीयत और उसके ग़ैर से मुशाबेहत की तन्ज़ीह व नफ़ी का इल्म।

(२) सिफ़ाते बारी तआ़ला और उसके अहकाम का इल्म।

(३) अफ़आ़ले बारी तआ़ला यानी तक़दीरे इलाही उसकी हिकमत का इल्म

इल्मे शरीअ़त के अरकान:- इल्मे शरीअ़त यानी ज़ाहिर इल्मे उसूल के भी तीन रुक्न हैं।

(१) किताब यानी कुरआने करीम (२) इत्तबाओ़ रसूल यानी सुन्नत (३) इजमाओ़ उम्मत।

दलाइल व बराहीन:- अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात और उसके अफ़आ़ल के इस्बात के इल्म में खुद उसी का इरशाद, दलील व बुरहान है फ़रमाता है-

जान लो! यक़ीनन अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं।

इरशाद है:

जान लो! यक़ीनन अल्लाह ही तुम्हारा मौला और कारसाज़ है।

फ़रमान है :

क्या तुमने अपने रब की कुदरत की तरफ़ नज़र नहीं की कि उसने साया को कैसा दराज़ किया।

फ़रमाता है:

क्या ऊँट की तरफ़ नज़र नहीं करते कि कैसा पैदा किया गया।

इस क़िस्म की बकसरत आयाते कुरआनिया हैं जिनमें अल्लाह तआ़ला के अफ़आ़ल पर ग़ौर करने से उसके सिफ़ाते फ़ाओलिया की मअ़रेफ़त हासिल होती है।

हुज़ूरे अकरम सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं-

जिस ने जान लिया कि अल्लाह तआ़ला ही उसका रब है और यह कि मैं उसी का नबी हूं तो अल्लाह तआ़ला ने उसके गोश्त और उसके ख़ून को आग पर हराम कर दिया है।

इल्म ज़ाते बारी के शराइतः- ज़ाते बारी तआ़ला के इल्म की शर्त यह है कि हर आ़क़िल व बालिग़ यह एतेक़ाद रखे कि हक़ तआ़ला मौजूद, अपनी ज़ात में क़दीम बे हद व हुदूद है और उसका कोई मकान और जेहत नहीं है। उसकी ज़ात के लिए न तग़य्युर व तबद्दुल है और न किसी आफ़त का सुदूर है। कोई मख़लूक़ उसकी मानिन्द नहीं है और न उसके बीवी बच्चे हैं। तुम्हारी अ़क़्ल व ख़्याल में जो सूरत व शबीह आये वह उसकी पैदा करदा है सबका वही ख़ालिक़ है वही बाक़ी है। इरशाद है-

कोई शय उस की मिसाल नहीं वही सुनने देखने वाला है।

इल्म सिफ़ाते बारी के शराइतः- सिफ़ाते बारी तआ़ला के इल्म की शर्त यह है कि आ़क़िल व बालिग़ यह एतेक़ाद रखे कि उसकी तमाम सिफ़तें उसी के साथ हैं मतलब यह कि उसकी सिफ़तें न तो उसकी ज़ात हैं और न उस का ग़ैर। वह अपनी ही सिफ़ात के साथ दाइम है। जैसे इल्म, क़ुदरत, इरादा, समअ़, बसर, कलाम और बक़ा वग़ैरह चुनांचेह फ़रमाता है :-

बेशक वही सीनों के भेदों को जानने वाला है।

और अल्लाह हर शय पर क़ादिर है।

वही सुनने देखने वाला है।

जो चाहता है करता है।

वही ज़िन्दा व बाक़ी है उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं।

उसका कलाम सच्चा है और उसी का मुल्क है।

अफ़आ़ले बारी तआ़ला का इल्मः- इल्मे अफ़आ़ले बारी तआ़ला के इस्बात में यह है कि बन्दा एतेक़ाद रखे कि तमाम मख़लूक़ और जो कुछ इस कायनात में है सब का पैदा करने वाला और उसकी तदबीर फ़रमाने वाला वही है। इरशादे हक़ है :-

अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और उन सबको जिसे तुम अमली जामा पहनाते हो।

यह जहान नापैद व मअ़दूम था उसी की तख़लीक़ से वजूद में आया। उसी ने हर ख़ैरो शर, नेक व बद की तक़दीर फ़रमाई और वही हर नफ़ा व नुक़सान का पैदा करने वाला है जैसा कि फ़रमाया "

" अल्लाह हर शय का ख़ालिक़ है।

अहकामे शरीअ़त का इस्बातः- अहकामे शरीअ़त के इस्बात की दलील

यह है कि बन्दा एतेक़ाद रखे कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हमारी जानिब मुअ़जज़ात और ख़्वारिक़े आदात के साथ ख़ुदा के बकसरत रसूल मबऊस हुए हैं और हमारे रसूल अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा अ़लैहि तहिय्यतु वस्सना ख़ुदा के बरहक़ रसूल हैं। आपके मुअ़जज़ात बहुत हैं और आपने जो भी ग़ैब व ज़ाहिर की बातें बयान फ़रमाईं सब हक़ हैं।

शरीअ़ते इस्लामिया का पहला रुक्न कलाम मजीद है इसके बारे में हक़ तआ़ला फ़रमाता है-

इसमें महकम आयतें हैं जो किताब की असल हैं।

और दूसरा रुक्न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत है। इस बारे में हक़ तआ़ला फ़रमाता है-

यह रसूल जो तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे रोकें बाज़ रहो।

और तीसरा रुक्न इजमाअ़े उम्मत है इस बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है-

मेरी उम्मत गुमराही पर कभी जमा न होगी। तुम बड़ी जमाअ़त के साथ रहो।

इसी तरह हक़ीक़त के अहकाम भी बकसरत हैं। अगर उन सबको कोई यकजा करके लिखना चाहें तो नामुम्किन है इस लिए अल्लाह तआ़ला के लताइफ़ व असरार की कोई इन्तिहा नहीं है।

मुल्हिद और बे दीनों की मज़म्मत

याद रहना चाहिए कि मुल्हिद और बे-दीनों का एक गरोह सो फ़स्ताइया है (अल्लाह की लअ़नत उन पर) उनका मज़हब यह है कि किसी क़िस्म का इल्म दुरुस्त नहीं है और इल्म बजाए ख़ुद कोई शय नहीं है। "इसके जवाब में हम उनसे दरयाफ़्त करते हैं कि बताओ यह जो तुमने जाना है कि किसी चीज़ का इल्म दुरुस्त नहीं है यह बात भी अपनी जगह सही है या नहीं? अगर यह जवाब दो कि यह बात सही है तो तुमने ख़ुद इल्म का इक़रार कर लिया और अगर यह कहो कि यह भी सही नहीं है तो जो चीज़ बजाए ख़ुद सही व दुरुस्त न हो उससे मुहासेबा करना मुहाल है ऐसे शख़्स से बात करना भी दानाई नहीं है बे-दीनों का वह गरोह जो इस नज़रिया पर बातें करता और ख़्याल रखता है कि हमारा इल्म किसी चीज़ में सही नहीं है लिहाज़ा हर चीज़ के इल्म को तर्क करना उसके साबित करने से ज़्यादा कामिल है।" तो उनका यह नज़रिया व ख़्याल उनकी हमाक़त व जहालत पर मबनी है इस लिए कि इल्म का तर्क करना दो बातों से

ख़ाली नहीं या तो वह (१) किसी इल्म से होगा या वह (२) जहल व नांदानी से। अगर किसी अ़मल से तर्क किया जाए तो इल्म न किसी इल्म की नफ़ी करता है और न ज़िद व मुक़ाबला में आता है लिहाज़ा इल्म के ज़रीए इल्म की नफ़ी व तर्क मुहाल है। लामुहाला किसी इल्म का तर्क जहल व नादानी ही से होगा। अगर यह सही है तो उससे इल्म की नफ़ी सरापा जहल है और उसका तर्क करना सरासर हिमाक़त व जहालत है। क्योंकि जहालत क़ाबिले मज़म्मत और क़बीहे सिफ़त है और यह कि जहल क़रीनाए कुफ़्र व बातिल है। हक़ को जहल से कोई इलाक़ा नहीं है। यह बात तमाम मशाइख़े तरीक़त के बर-ख़िलाफ़ है जब अ़वाम उसकी अहमक़ाना बातें सुनेंगे तो उनको यह कहने की जुरअ़त होगी कि तमाम अहले तसव्वुफ़ का मज़हब यही है और यह ही उनका अ़क़ीदा है। इस तरह अ़वाम का एतेक़ाद मुतज़लज़ल और परागन्दा हो जाएगा और हक़ व बातिल में तमीज़ की सलाहियत जाती रहेगी। लिहाज़ा उनकी बातों को ख़ुदा के हवाले करते हैं ताकि मुलहिद व बे-दीन अपनी गुमराही में भटकते रहें। अगर दीने हक़ उन्हें क़ाबू में लेकर उनकी गर्दन पकड़ता तो उनकी हालत इस से बेहतर होती। और दीन की रिआ़यत के हुक्म को हाथ से न छोड़ते महबूबाने ख़ुदा को नापसन्द व मकरूह न कहते और अपनी हालत को बेहतर बनाने की कोशिश करते।

मुलहिदों का यह गरोह जो ज़िद व इसरार में मुबतला है अगर दीन के हुस्नो जमाल के ज़रीए अपनी आफ़तों से रुस्तगारी पाता और इज़्ज़त व मन्ज़ेलत के साया में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता और अहले हक़ के साथ मुकाबरा व मुजादेला से पेश न आता और उनकी इज़्ज़त व करामत को पायमाल न करता तो उसके लिए यह कितना अच्छा होता।

सय्यदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मुझे एक ऐसे शख़्स से बहस का इत्तफ़ाक़ हुआ जिसे लोग इल्म से मनसूब करके अहले इल्म ख़्याल करते थे हालांकि वह रुऊनत व तकब्बुर की कुलाह का नाम इल्म और नफ़्सानी पैरवी का नाम सुन्नत और शैतान की मुवाफ़क़त का नाम अइम्मा की सीरत रखे हुए था। असनाए बहस में उसने कहा। मुलहेदीन के बारह गरोह हैं। उनमें से एक गरोह सूफ़ियों का है। मैंने जवाब में कहा अगर एक गुरोह अहले तसव्वुफ़ का है तो बाक़ी ग्यारह गरोह तुम में से होंगे। मगर एक गरोह ख़ुद को तुम में के ग्यारह गरोहों के मुक़ाबला में ख़ूब अच्छे तरीक़ा से महफ़ूज़ रख सकता है।

यह तमाम आफ़त व फ़साद मौजूदा ज़माना की ख़राबी का नतीजा और पैदावार है। बिलाशको शुबहा अल्लाह तआ़ला ने हमेशा अपने औलिया और दोस्तों की एक जमाअ़त को मख़लूक़ से छुपा कर रखा है और ख़ल्क़ को उनकी ख़ातिर उनसे जुदा रखा है। शैख़ुल मशाइख़ हज़रत अली इब्न बन्दार सीरफ़ी रहमतुल्लाह अलैह ने क्या ख़ूब फ़रमाया है-

दिलों का फ़साद ज़माना और अहले ज़माना के फ़साद के एतेबार पर है।

अब हम मशाइख़े तरीक़त के फ़ैसला-कुन अक़वाल पेश करते हैं ताकि तुम्हें मालूम हो जाए कि सूफ़ियाए किराम पर अल्लाह की कैसी सादिक़ और सच्ची इनायतें रही हैं और उनके मुन्करीन कैसे ख़ाइब व ख़ासिर हुए हैं। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़०

इस्बाते इल्म में अक़वाले मशाइख़

(१) हज़रत मुहम्मद बिन फ़ज़ल अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि इल्म तीन तरह के हैं।

(१) इल्म मिनल्लाह (२) इल्म मअ़ल्लाह (३) इल्म बिल्लाह इसी को इल्मे मअ़रेफ़त कहते हैं क्योंकि तमाम अम्बिया व औलिया ने इसी से अल्लाह तआ़ला की मअ़रेफ़त पाई है। जब तक उन्हें इसकी मअ़रफ़त न हुई मंज़िले इरफ़ान हासिल न हुई। इस लिए कि महज़ कोशिश व मेहनत के ज़रीए हुसूले मअ़रेफ़त व ज़ाते हक़ के इरफ़ान के लिए मुनक़तअ़ है क्योंकि बन्दा का इल्म, मअ़रेफ़ते ज़ाते हक़ की इल्लत नहीं बन सकता। दर-हक़ीक़त मअ़रेफ़ते इलाही की इल्लत, अल्लाह तआ़ला ही की हिदायत और उसकी इनायत है।

इल्म मिनल्लाह का नाम इल्मे शरीअ़त है। क्योंकि हक़ तआ़ला ने हमारी तरफ़ अहकाम नाज़िल कर के उसकी अदाई हम पर लाज़िम क़रार दी है।

इल्म मअ़ल्लाह का नाम, इल्मे मक़ामात, इल्मे तरीक़े हक़ और औलियाए किराम के दरजात का बयान है लिहाज़ा उसकी मअ़रेफ़त शरीअ़त की पैरवी के बग़ैर सही नहीं होती। इसी तरह शरीअ़त की पैरवी इज़हारे मक़ामात के बग़ैर दुरुस्त नहीं है।

(२) हज़रत अबू अली सक़फ़ी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं-

जहालत और तारीकी के मुक़ाबले में इल्म दिल की ज़िन्दगी और आँखों का नूर है।

मतलब यह कि जहालत के ख़ातमे से दिल की हयात और कुफ़्र की तारीकी

दूर होने से आँख की रौशनी यक़ीनी है जिसको मअ़रेफ़त का इल्म नहीं उसका दिल जहल से मुर्दा है और जिसको शरीअ़त का इल्म नहीं उसका दिल नादानी का मरीज़ है। पस काफ़िरों के दिल मुर्दा हैं क्योंकि वह ख़ुदा की मअ़रेफ़त से बे-बहरा हैं। अहले ग़फ़लत का दिल बीमार है क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमान से बहुत दूर हैं।

(३) हज़रत अबू दर्राक़ रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि-

"जिसने सिर्फ़ इल्मे कलाम पर इकतफ़ा किया और ज़ुहद न किया वह ज़िन्दीक़ है और जिसने इल्मे फ़िक़ह पर क़नाअ़त की और तक़्वा इख़्तियार न किया तो वह फ़ासिक़ है।"

इनका मफ़हूम यह है कि जिसने सिर्फ़ तौहीद की इबारतों का ही इल्म इख़्तियार किया और ज़ुहद न किया वह ज़िनदीक़ बन जाता है और जिसने बग़ैर परहेज़गारी के इल्मे फ़िक़ह व शरीअ़त को पसन्द किया वह फ़ासिक़ व फ़ाजिर बन जाता है। मतलब यह है कि बग़ैर दुरुस्तगीए मुआ़मिला व मुजाहिदा मुजर्रदे तौहीद जब्र है। ऐसा मुवह्हिद क़ौल में जबरी और फ़ेअ़ल में क़दरी कहलाएगा जब तक क़दर व जब्र के दरमियान सही राह इख़्तियार न किया जाए।

यह क़ौल भी हक़ीक़तन इन्हीं बुज़ुर्ग का है जिसे एक और जगह बयान फ़रमाया है कि तौहीद का मक़ाम जब्र से पस्त और क़दर से ऊंचा है। लिहाज़ा जिसने इल्मे तौहीद को दुरुस्तगीए मुआ़मिला के बग़ैर महज़ उसकी इबारतों को इख़्तियार किया और उसके ज़िद व नफ़ी की तरफ़ मुतवज्जेह न हुआ ज़ुहद की रविश पर न चला वह ज़िन्दीक़ हो जाता है।

इल्मे फ़िक़ह यानी शरीअ़त की एहतियात का नाम तक़्वा है जो इसे बग़ैर वरअ़ व तक़्वा के पसन्द करता है और रुख़सत व तावील और तअ़ल्लुक़ व शुबहात के दर-पय होकर मुजतहेदीन इज़ाम के मज़हब से निकल जाता है वह जल्द ही ब- आसानी फ़िस्क़ के गढ़े में गिर पड़ता है। इन बातों का ज़ुहूर बर बिनाए ग़फ़लत होता है।

(४) शेख़ुल मशाइख़ हज़रत यहया बिन मआ़ज़ राज़ी रहमतुल्लाह अ़लैह ने क्या ख़ूब फ़रमाया है-

"तीन क़िस्म के लोगों की सोहबत से बचो एक ग़ाफ़िल उलमा से दूसरे मुदाहनत करने वाले फ़ुक़रा से तीसरे जाहिल सूफ़िया से।"

ग़ाफ़िल उलमा वह हैं जिन्होंने दुनिया को अपने दिल का क़िबला बना रखा

है और शरीअ़त में आसानी के मुतलाशी रहते हैं बादशाहों की परसतिश करते ज़ालिमों का दामन पकड़ते हैं, उनके दरवाज़ों का तवाफ़ करते हैं, ख़ल्क़ में इज़्ज़त व जाह को अपनी मेहराब गरदानते हैं, अपन् गुरूर व तकब्बुर और अपनी ख़ुद पसन्दी पर फ़रेफ़ता होते हैं, दानिस्ता अपनी बातों में रिक़्क़त व सोज़ पैदा करते हैं। अइम्मा व पेशवाओं के बारे में ज़बानें तअ़न दराज़ करते हैं बुज़ुर्गाने दीन की तहक़ीर करते हैं और उन पर ज़्यादती करते हैं अगर उनके तराजू के पलड़े में दोनों जहान की नेअ़मतें रख दो तब भी वह अपनी मज़मूम हरकतों से बाज़ न आएंगे। कीना व हसद को उन्होंने अपना शेआ़रे मज़हब क़रार दे लिया है भला इन बातों का इल्म से क्या तअ़ल्लुक़? इल्म तो ऐसी सिफ़त है जिससे जहल व नादानी की बातें, अरबाबे इल्म के दिलों से फ़ना हो जाती हैं।

और मुदाहनत करने वाले फुक़रा वह हैं जो हर काम अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ करते हैं। अगरचेह वह बातिल ही क्यों न हो वह उसकी तारीफ़ व मदह करते रहेंगे और जब कोई काम उनकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ होता है वह हक़ ही क्यों न हो उसकी मज़म्मत करते हैं और मख़लूक़ से ऐसा सुलूक करते हैं जिसमें जाह व मर्तबा की तमअ़ होती है और अमले बातिल पर ख़ल्क़ से मुदाहनत करते हैं।

जाहिल सूफ़िया वह हैं जिनका कोई शैख़ व मुर्शिद न हो और किसी बुज़ुर्ग से उन्होंने तालीम व अदब हासिल न किया हो। मख़लूक़े ख़ुदा के दरमियान बिन बुलाए मेहमान की तरह ख़ुद-ब-ख़ुद कूद कर पहुंच गए हों। उन्होंने ज़माने की मलामत का मज़ा तक नहीं चखा। अंधे-पन से बुज़ुर्ग के कपड़े पहन लिए और बे हुरमती से ख़ूशी के रस्ता पड़ कर उनकी सोहबत इख़्तियार कर ली ग़र्ज़ वह ख़ुद-सताई में मुबतला होकर हक़ व बातिल की राह में क़ुव्वते इम्तियाज़ से बेगाना हैं।

यह तीन गरोह हैं जिनको शैख़ कामिल हमेशा याद रखे और अपने मुरीदों को उनकी सुहबत से बचने की तलक़ीन करे क्योंकि यह तीनों गरोह अपने दावे में झूटे हैं और उनकी रविश नाक़िस व नामुकम्मल और गुमराह करने वाली है।

(५) हज़रत अबू यज़ीद बस्तामी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं-

"मैंने तीस साल तक मुजाहिदा किया मगर मुझे इल्म और उसकी पैरवी से ज़्यादा मुश्किल कोई और चीज़ नज़र नहीं आई।"

उनके फ़रमाने का मतलब यह है कि तबीअ़त के नज़दीक इल्म के मुताबिक़

अमल करने के मुक़ाबले में आग पर पाँव रखना ज़्यादा आसान है और जाहिल के दिल पर हज़ार बार पुल-सिरात से गुज़रना उससे ज़्यादा आसान है कि एक इल्मी मसअला सीखे। फ़ासिक़ के लिए जहन्नम में ख़ेमा नसब करना इससे ज़्यादा महबूब है वह किसी एक इल्मी मसअला पर अमलपैरा हो।

ऐ तालिबे राहे हक़! तुम्हें लाज़िम है कि इल्म हासिल कर के उसमें कमाल हासिल करो। बन्दा कितना ही कामिल इल्म हासिल करले इल्मे इलाही के मुक़ाबले में वह जाहिल ही है। इस लिए उसे चाहिए कि वह हमेशा यही समझे कि मैं कुछ नहीं जानता क्योंकि बन्दा, बन्दगी के इल्म के सिवा कुछ नहीं सीख सकता और बन्दगी राहे ख़ुदा में बहुत बड़ा हिजाब हैं इसी मफ़हूम में शेअ़र है।

इल्म के इदराक से आ़जिज़ रहना ही इल्मो इदराक है
नेकियों की राह से हट जाना शिर्क के बराबर है।

जो शख़्स तहसीले इल्म की कोशिश नहीं करता और अपने जहल पर मुसिर रहता है हमेशा मुशरिक रहता है और जो सीखता है और अपने कमाले इल्म में उसे यह मअ़ना ज़ाहिर हों और उसकी इल्मियत उसे यह नसीहत करे कि उसका इल्म अपने नतीजए-कार में बजुज़ आजज़ी के कुछ नहीं है और इल्मे इलाही पर मालूमात का कोई असर ही नहीं पड़ता। अगर उसमें इज्ज़ की ख़ूबी पैदा हो गई तो दर-हक़ीक़त इल्म की तह तक उसकी रसाई हो सकती है।

फ़क्र व दरवेशी

जानना चाहिए कि राहे हक़ में दरवेशी का अज़ीम मर्तबा है और दरवेशों को बड़े ख़तरात का सामना करना पड़ता है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है-

"उन फ़क़ीरों के लिए जो राहे ख़ुदा में रोके गए हैं ज़मीन पर चल नहीं सकते। नादान उन्हें बचने के सबब तवंगर समझते हैं।" पारा ३, रुकूअ ५।

"अल्लाह ने एक कहावत बयान फ़रमाई एक बन्दा है दूसरे के मुल्क, आप कुछ मक़दरत नहीं रखता।" पारा १४, रुकूअ १४।

"उनकी करवटें ख़्वाबगाहों से जुदा होती हैं और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते हुए।" पारा २१, रुकूअ १५।

नबी करीम अ़लैहि तहिय्यतु वत्तस्लीम ने भी फ़क्रो तवक्कुल को पसन्द व इख़्तियार फ़रमाया चुनांचेह इरशाद है-

"ऐ ख़ुदा मुझे मिस्कीनी ज़िन्दगी अता फ़रमा और मिस्कीनी में वफ़ात दे और मिस्कीनों के ज़ुमरे में उठा।"

सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा।

''मेरे महबूबों को मेरे क़रीब लाओ। फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कौन तेरे महबूब हैं अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा वह मिस्कीन फ़ुक़रा हैं।''

इस क़िस्म की बकसरत आयात व अहादीस हैं जो हद्दे शोहरत को पहुंची हुई हैं। उनके इस्बात की हाजत नहीं और न दलाइले सेहत की ज़रूरत क्योंकि एक वक़्त ऐसा भी गुज़रा हैकि ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़ुक़रा व मुहाजेरी न में जलवा अफ़रोज़ थे।

सहाबा-ए-किराम की एक जमाअ़त ऐसी भी थी जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की इबादत और बन्दगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहने के लिए सबसे किनारा-कश होकर मुआ़मलात से यकसूई हासिल कर ली और अपना रिज़्क़ अल्लाह तआ़ला की अता पर छोड़ कर मस्जिदे नबवी शरीफ़ में इक़ामत इख़्तियार कर ली। यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उन सहाबा के साथ सुहबत व क़ियाम पर मअ़मूर फ़रमाया जैसा कि हक़ तआ़ला फ़रमाता है-

''जो सहाबा सुबह व शाम अपने रब की इबादत करते और उसकी रज़ा चाहते हैं उन्हें न छोड़िए।'' पारा ७, रुकूअ १२।

और फ़रमाया

''तुम्हारी आँखें दुनियावी हयात की ज़ीनत की ख़ातिर उन्हें छोड़ कर किसी और पर न पड़ें।'' पारा १५, रुकूअ १६।

इसके बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मामूल रहा कि उन सहाबा में से किसी एक को जहां कहीं भी देखते तो आप फ़रमाते: यह वह हज़रात हैं जिनके लिए अल्लाह तआ़ला ने मुझे ताकीद फ़रमाई है।

फ़ुक़रा का दर्जा:- बारगाहे अहदियत में फ़ुक़रा का बड़ा मक़ाम व दर्जा है। ख़ुदा ने उनको ख़ास मंज़िलत व मरहमत से नवाज़ा है। यह वह लोग हैं जो असबाबे ज़ाहिरी व बातिनी से तर्के तअ़ल्लुक़ करके मुकम्मल तौर पर मुसब्बबुल असबाब पर क़नाअ़त करके रह गए हैं और अपने आपको ख़ुदा की मुलाज़मत और उसकी बन्दगी के लिए वक़्फ़ कर दिया है। उनका यह फ़क़्र उनके लिए मूजिबे फ़ख़्र बन गया है और फ़क़्र की दूरी पर आहो ज़ारी और उसकी आमद पर ख़ुशी व मुसर्रत का इज़हार करते हैं। यह हज़रात फ़क़्रो मिस्कीनी ही से

हम-किनार रहते हैं और उसके सिवा हर चीज़ को ज़लील व ख़्वार जानते हैं। फ़क्रो मिस्कीनी की निराली शान है और इसकी रस्म अजीब है। हक़ीक़ी रस्म व इज़्तेरार है उसकी हक़ीक़ते इक़बाल इख़्तियारी यानी ब-ख़न्दा पेशानी इफ़लास व इज़्तेरार को क़बूल करता है जिसने इस मस्लक व तरीक़ को देखा और समझा उसने इससे आराम पाया। जब मुराद पाई तो हक़ीक़त से हम-किनार हो गए और जो हक़ीक़त से हम-किनार हो गया वह मौजूदात से दस्त-कश हो गया। रूयते कुल में फ़नाए कुल्ली हासिल करके बक़ाए कुल्ली से सरफ़राज़ हो गया।

जिसने इसे रस्म के सिवा कुछ न जाना उसने उसके नाम व इस्म के सिवा कुछ न सुना।

फ़क़ीर व दरवेश वह है कि उसके पास कुछ न हो और कोई चीज़ उसे ख़लल अन्दाज़ न करे न वह असबाबे दुनिया की मौजूदगी से ग़नी हो और न उसके न होने से मुहताज हो। असबाब का होना और न होना दोनों उसके फ़क़र में यकसां हैं। बल्कि असबाब की ग़ैर-मौजूदगी में ज़्यादा ख़ुश व ख़ुर्रम रहता हो। जवाज़ की एक हालत यह है उसके लिए मशाइख़ ने फ़रमाया है कि दरवेश जिस क़दर तंगदस्त होगा उसका हाल उतना ही कुशादा होगा। क्योंकि दरवेश के नज़दीक असबाबे दुनिया का ज़ाहिरी वजूद भी तंगदिली का मूजिब होता है। हत्ता कि वह किसी चीज़ का दरवाज़ा बन्द नहीं करता अगर बन्द करे तो उतना ही उसका दरवाज़ा बन्द हो जाता है। लिहाज़ा हक़ तआला के औलिया और उसके महबूबों की ज़िन्दगियां अल्ताफ़े ख़फ़ी में छुपी होती हैं। और हक़ तआला के साथ रौशन असरार बेहतर होते हैं न कि दुनियाए ग़द्दार की मुसाहबत। चूंकि यह दुनिया नाफ़रमानों की जगह है इसके असबाब से तअल्लुक़ रखना सही नहीं हो सकता है। इसी लिए यह हज़रात रज़ाए इलाही की राह में दुनियावी साज़ो सामान से किनारा-कशी की तालीम देते हैं।

हिकायतः- किसी बादशाह से एक दरवेश की मुलाक़ात हुई बादशाह ने कहा अगर तुम्हें कोई हाजत हो तो बयान करो। उसने जवाब दिया कि मैं अपने गुलामों के गुलाम से कुछ नहीं मांगता। बादशाह ने पूछा यह किस तरह? दरवेश ने कहा मेरे दो गुलाम हैं और यह दोनों तेरे आक़ा हैं एक हिर्स दूसरे उम्मीद व तमन्ना।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

(फ़क्र उसके अहल के लिए मूजिबे इज़्ज़त है) इस लिए जो चीज़ अहल के लिए मूजिबे इज़्ज़त होती है वह ना-अहल के लिए बाइसे ज़िल्लत बन जाती है। फ़क़ीर की इज़्ज़त इसमें है कि वह अपने आपको ज़लील हरकतों से बचाए और अपने हाल को ख़लल से महफ़ूज़ रखे। न बदन मअ़सियत व ज़िल्लत में मुबतला हो और न जान पर ख़लल व आफ़त का गुज़र हो। दरवेश की ज़ाहिरी हालत, ज़ाहिरी नेअ़मतों में मुस्तग़रिक़ और बातिनी हालत, बातिनी नेअ़मतों से आरास्ता होती है, ताकि उसका जिस्म रूहानीयत और उसका दिल रब्बानी अनवार का ममबअ़ बन जाए न ख़ल्क़ से उसका तअ़ल्लुक़ हो और न आदमियत से उसकी निस्बते बातिनी। यहां तक कि वह ख़ल्क़ से तअ़ल्लुक़ और आदमियत की निस्बत से बे-नियाज़ हो जाए और इस जहान की मिल्कीयत और आख़ेरत में दरजात की ख़्वाहिश से दिल को तवंगरी हासिल न हो और यह जाने कि उसके फ़क्र की तराज़ू के पलड़े में दोनों जहां मच्छर के पर के बराबर भी वज़न नहीं रखते। दरवेश की ऐसी हालत के बाद उसका एक सांस भी दोनों जहान में न समा सकेगा।

फ़क्रो ग़ेना की अफ़ज़लियत में बहसः- मशाइख़े तरीक़त रहमहुमुल्लाह तआ़ला का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि सिफ़ाते ख़ल्क़ में फ़क्रो ग़ेना में से कौन सी ख़ूबी अफ़ज़ल है क्योंकि अल्लाह तआ़ला की एक सिफ़त ग़नी है। और तमाम सिफ़ात में कामिल होना इसका ख़ासा है चुनांचेह मुतक़द्दीने मशाइख़ में से हज़रत यहया बिन मआ़ज़ राज़ी, अहमद बिन अबी अलहवारी, हारिसुल मुहासबी, अबुल अब्बास बिन अ़ता, अबुल हसन बिन शमऊन और मुतअख़्ख़ेरीन में से शैख़ुल मशाइख़ अबू सईद फ़ज़लुल्लाह बिन मुहम्मद अलमहयनी रहमहुमुल्लाह का मज़हब यह है कि फ़क्र से ग़ेना अफ़ज़ल है। इन तमाम मशाइख़ की दलील यह है कि ग़ेना हक़ तआ़ला की सिफ़त है इसके लिए फ़क्र की निस्बत जाइज़ नहीं है। लिहाज़ा ऐसा महबूब व दोस्त जिसमें ऐसी सिफ़त मुशतरक हो जो बन्दे और मअ़बूद में पाई जाए वह महबूब व दोस्त ऐसी सिफ़त के मुक़ाबला में जिसकी निस्बत मअ़बूद की निस्बत जाइज़ न हो कामिल होता है। इसके जवाब में हम कहते हैं कि यह इशतेराक सिर्फ़ लफ़्ज़ी और इस्मी है न कि मअ़नवी और हक़ीक़ी। हालांकि मअ़ना में मुमासलत व इशतेराक दरकार है (और यह मुहाल है क्योंकि) अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात क़दीम हैं और मख़लूक़ की हादिस लिहाज़ा यह इस्तेदलाल बातिल है। लेकिन मैं अली बिन उसमान जुलाबी

(सय्यदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अ़लैह) कहता हूं कि यह एक बेकार बहस है। ग़नी ख़ुदा की सिफ़त है और वही इसका सज़ावार है। मख़लूक़ात दर-हक़ीक़त इस नाम की मुस्तहिक़ नहीं हो सकतीं इंसान तो मुहताज व फ़क़ीर पैदा ही हुआ है। इसके लिए फ़क़्र का नाम ही ज़ेब देता है। मजाज़ी एतबार से ख़ुदा के मा-सिवा किसी को ग़नी कहलाया जाए तो जाइज़ है। अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात से ग़नी है वह मुसब्बबुल असबाब है उसके ग़ेना के लिए न कोई सबब है और न उसके लिए किसी सबब की ज़रूरत है। बन्दे को जो ग़ेना हासिल होता है वह ख़ुदा का अता करदा और असबाब का रहीने मिन्नत है। दोनों में इशतेराक व मुमासलत की यकसानीयत बातिल है। नीज़ अ़ैन ज़ाते हक़ में शिरकत जाइज़ नहीं है तो किसी को उसकी किसी सिफ़त में भी शिरकत जाइज़ नहीं है लिहाज़ा जब सिफ़त में इशतेराक जाइज़ नहीं तो इस्म में भी जाइज़ नहीं हो सकती।

अब रहा लफ़्ज़ी और इस्मी इतलाक़! तो नाम रखना निशान व तअ़य्युन के लिए होता है चूंकि ख़ुदा और मख़लूक़ के दरमियान एक हद्दे फ़ासिल (हुदूस व क़दम की) इस लिए हक़ तआ़ला का ग़ेना यह है कि उसे किसी की परवाह नहीं है वह जो चाहता है करता है। न तो कोई उसके इरादा को रोक सकता है और न कोई उसकी क़ुदरत में मानेअ़ हो सकता है। वह आयान यानी मौजूदात को पलटने और मुख़्तलिफ़ चीज़ों के पैदा करने पर क़ादिर है वह हमेशा से इस सिफ़त का हामिल रहा और हमेशा रहेगा।

मख़लूक़ का ग़ेना यह है कि उसकी ज़िन्दगी हर आफ़त से महफ़ूज़ ऐशो आराम और ख़ुशी व मुसर्रत के साथ गुज़रे। या मुशाहिदाए इलाही में सरशार होकर चैन व राहत में गुज़रे। इन तमाम बातों में हुदूस व तग़य्युर और मुशक़्क़त व हसरत का सरमाया और इज्ज़ व तज़ल्लुल का मक़ाम कार-फ़रमा है। लिहाज़ा लफ़्ज़ तमन्ना का इस्तेमाल बन्दों के लिए बतौरे मजाज़ है और अल्लाह तआ़ला के लिए हक़ीक़ी. अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

ऐ लोगो तुम ख़ुदा के मुहताज हो और अल्लाह ही ख़ूबियों वाला और सरापा ग़नी है।

और अल्लाह ही ग़नी है और तुम मुहताज व फ़क़ीर।

अ़वाम का एक गरोह कहता हैकि हम तवंगर को दरवेश पर फ़ज़ीलत देते हैं इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने तवंगर को दोनों जहान में सईद पैदा किया

है और तवंगरी का उस पर एहसान किया है। उन लोगों ने इस जगह ग़ेना से दुनिया की कसरत, इंसानी आरज़ूओं का बर आना और ब-आसानी ख़्वाहिशों का मिल जाना मुराद लिया है। वह दलील में कहते हैं कि चूँकि ख़ुदा ने तवंगरी पर शुक्र गुज़ारी और मुफ़लिसी पर सब्र व क़नाअ़त का हुक्म दिया है। और यह कि इबतेला में सब्र व क़नाअ़त की तलक़ीन की है और नेअ़मतों में शुक्र का हुक्म दिया लिहाज़ा मुसीबतों से नेअ़मतें अफ़ज़ल हैं।"

इसके जवाब में हम कहते हैं कि नेअ़मत पर शुक्र गुज़ारी का हुक्म दिया और शुक्र को ज़्यादतीए नेअ़मत की इल्लत गरदाना और फ़क्र पर सब्र का हुक्म दिया और सब्र को ज़्यादतीए ग़ुरबत की इल्लत गरदाना है। चुनांचेह इरशाद है-

अगर तुमने शुक्र किया तो तुमको और ज़्यादा दूंगा।

और सब्र के लिए फ़रमाया-

बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

मतलब यह है कि हर वह नेअ़मत जिसकी असल ग़फ़लत है जब शुक्र बजा लाता है तो हम ग़फ़लत को उसकी ग़फ़लत पर और ज़्यादा कर देते हैं और हर वह फ़क्र जिसकी असल इबतेला है जब सब्र करता है तो हम क़ुरबत को उसकी क़ुरबत पर और ज़्यादा कर देते हैं।

अहले तरीक़त के नज़दीक ग़ेना का मतलब:- मशाइख़े तरीक़त जिस ग़ेना को फ़क्र पर अफ़ज़ल कहते हैं उससे अवाम की तवंगरी मुराद नहीं है। क्योंकि अवाम तो उसे ग़नी व तवंगर कहते हैं जिसे दुनियावी नेअ़मतें हासिल हों। लेकिन मशाइख़ का ग़ेना से मुराद मुनअ़म यानी नेअ़मत देने वाले ख़ुदाए क़ुद्दूस को पाना है। विसाले इलाही हासिल होना और चीज़ है और ग़फ़लत का पाना और चीज़ है।

शैख़ अबू सईद रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि "फ़क़ीर वही है जो अल्लाह के साथ ग़नी हो" इससे मुराद अबदी कश्फ़ है जिसे हम मुशाहिदा-ए-हक़ कहते हैं मुकाशफ़ा मुम्किनुल हिजाब है अगर ऐसे मुकाशफ़ा वाले को महजूब गरदानें तो वह मुशाहिदात का मुहताज होगा या नहीं? अगर यह कहो कि मुहताज न होगा तो यह मुहाल है और अगर कहो कि मुहताज होगा तो जब एहतियात पैदा हो गई तो ग़ेना का नाम जाता रहेगा।

नीज़ ग़ेना बिल्लाह उस शख़्स को होता है जो क़ाइमुस्सिफ़ात और साबितुलमुराद हो और बशरीयत में इक़ामते मुराद और इस्बाते सिफ़ात के साथ ग़ेना सही नहीं हो सकता इस लिए कि ज़ाते बशरीयत बजाए ख़ुद ग़ेना के लाइक़ नहीं है। लिहाज़ा

(ग़नी वह है जिसे अल्लाह ग़नी करे) में ग़नी बिल्लाह फ़ाएल है और मफ़ऊल है क्योंकि फ़ाएल अज़ ख़ुद काइम होता है और मफ़ऊल का क़ियाम फ़ाएल के ज़रीए। नतीजा बर-आमद हुआ कि इक़ामत ब-ख़ुद, सिफ़ते बशरीयत है और इक़ामत बिल्लाह फ़नाए सिफ़त है।

लेकिन मैं अली बिन उसमान जुलाबी (सय्यदुना दाता गंज बख़्श रहमहुल्लाह) कहता हूं कि जब बन्दगी की हालत में यह दुरुस्त है कि बक़ाए सिफ़ते बशरीयत पर ग़नाए हक़ीक़ी का इतलाक़ नहीं हो सकता क्योंकि बक़ाए सिफ़त, महले इल्लत और मूजिबे आफ़त है चूंकि मज़कूरा दलाइल से साबित हो चुका है कि अपनी सिफ़त की फ़ना से ग़ेना बाक़ी नहीं रहता इस लिए कि जो चीज़ बज़ाते ख़ुद बाक़ी न रहे उसका नाम नहीं होता। लिहाज़ा फ़नाए सिफ़त का नाम ग़ेना रखना चाहिए और जबकि ख़ुद सिफ़त ही फ़ानी है तो इस्म ही मक़ाम न रहा। ऐसे शख़्स पर न इस्मे फ़क़्र बोला जा सकता है और न इस्मे ग़ेना। हिलाज़ा सिफ़ते ग़ेना हज़रत हक़ जल्ल मजदहु के सिवा किसी के लिए जाइज़ नहीं और सिफ़ते फ़क़्र बन्दे के साथ ख़ास है।

फिर यह कि तमाम मशाइख़े तरीक़त और अकसर अवाम फ़क़्र को ग़ेना से अफ़ज़ल मानते हैं क्योंकि क़ुरआन व सुन्नत इसकी फ़ज़ीलत पर शाहिद व नातिक़ हैं और उम्मते मुस्लेमा की अकसरियत का इस पर इजमाअ़ है।

हिकायतः- एक रोज़ हज़रत जुनैद बग़दादी व इब्ने अता रहमहुमल्लाह के दरमियान इस मसअला में बहस हुई। हज़रत इब्ने अता ने फ़रमाया कि अग़निया अफ़ज़ल हैं क्योंकि रोज़े क़ियामत नेअ़मतों का हिसाब लिया जाएगा और हिसाब देने के लिए बे वास्ते रब के कलाम का सुनना होगा चूंकि यह महले एताब है और एताब, दोस्त का दोस्त के साथ होता है। हज़रत जुनैद बग़दादी ने जवाब दिया कि अगर अग़निया से हिसाब होगा तो फ़ुक़रा और दरवेशों से उज़रख़्वाही होगी और हिसाब से उज़र अफ़ज़ल है।

इस जगह एक लतीफ़ा बयान करता हूं। वह यह कि मुहब्बत की तहक़ीक़ में उज़र बेगानगी है और एताब यगानगी की ज़िद है। हालांकि ख़ुदा के दोस्त तो ऐसे मक़ाम पर फ़ाइज़ होते हैं जहां यह दोनों चीज़ें उनके लिए आफ़त ज़ाहिर करती हैं इसलिए कि उज़र ख़्वाही तो किसी ऐसी कोताही पर होती है जो दोस्त के बारे में उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ किया गया हो, जब दोस्त अपने हक़ को इससे तलब करता है तो यह इससे अज़्र ख़्वाही करता है। और एताब दोस्त के

फ़रमान में किसी कुसूर के सबब होता है ऐसी सूरत में दोस्त उस कुसूर के सबब उस पर एताब नाज़िल करता है। खुदा के दोस्तों के लिए यह दोनों बातें मुहाल हैं। ग़र्ज़ कि अहले तरीक़ फ़क्र को हर हालत में सब्र और ग़ेना की हालत में शुक्र बजा लाते हैं। एक बात यह भी है कि दोस्ती का इक़्तेज़ा तो यह है कि दोस्त अपने दोस्त से किसी चीज़ का मुतालबा न करे और न दोस्त, दोस्त के फ़रमान को राइगां करे। लिहाज़ा :

उसने जुल्म किया जिसने आदमी का नाम अमीर रखा हालांकि उसके रब ने उसका नाम फ़क़ीर रखा है क्योंकि हक़ तआला की तरफ़ से उसका नाम फ़क़ीर है अगरचेह बज़ाहिर वह अमीर व तवंगर है लेकिन हक़ीक़त में वह फ़क़ीर ही है। वह शख़्स हलाक हो गया जिसने खुद पर गुमान किया कि वह अमीर है अगरचहे वह शख़्स तख़्ते हुकूमत पर मौजूद है इस लिए कि अमीर व ग़नी साहिबे सदक़ा हैं और फ़ुक़रा साहिबे सिदक़। और साहिबे सिदक़, साहिबे सदक़ा नहीं हो सकता।

इल्मे हक़ीक़त में हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के अना की मानिंद है, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की पुख़्तगी सब्र पर फ़रमाया है। (क्या ही अच्छा बन्दा है) और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से उनकी हुकूमत के वक़्त फ़रमाया (क्या ही अच्छा बन्दा है) जब अल्लाह की रज़ा हासिल हो गई तो अब फ़क्रे अय्यूब, ग़ेना सुलैमान अलैहिस्सलाम के मानिंद बन गया।

हिकायत:- मुसन्निफ़ फ़रमाते हैं कि उस्ताद अबू क़ासिम क़शीरी रहमतुल्लाह अलैहि से मैं ने सुना वह फ़रमाते हैं कि लोग फ़क्र व ग़ेना में बहस करते हैं और खुद को मुख़्तार ख़्याल करते हैं। लेकिन मेरा तरीक़ व मसलक यह है कि जो हक़ तआला मेरे लिए इख़्तियार फ़रमाए और उसी की मैं हिफ़ाज़त करता हूं अगर वह मुझे तवंगर रखे तो ग़ाफ़िल नहीं होता अगर वह मुफ़लिस फ़क़ीर बनाए तो हरीस व मुअतरिज़ नहीं होता।

खुलासा यह कि ग़ेना नेअमत है लेकिन इसमें ग़फ़लत बरतना आफ़त है और फ़क्र भी नेअमत है लेकिन इसमें हिर्स व तमअ का दाख़िल करना आफ़त है मुआनी के एतबार से तमाम एतेबारात उम्दा हैं लेकिन सुलूक व रविश के लिहाज़ से मुआमिला मुख़तलिफ़ है। मासिवा अल्लाह से दिल को फ़ारिग़ रखने का नाम फ़क्र है और ग़ैर में मशगूल रहने का नाम ग़ेना है। जब दिल फ़ारिग़ हो तो उस

वक़्त फ़क़्रे ग़ेना से अफ़ज़ल है और ग़ेना फ़क़्र से। साज़ो–सामान की कसरत का नाम ग़ेना नहीं है। और न उसके न होने का नाम फ़क़्र है। साज़ो-सामान तो खुदा की तरफ़ से है जब तालिब साज़ो–सामान की मिल्कियत से जुदा हो गया शिरकत जाती रही और वह दोनों नामों से फ़ारिग़ हो गया न अब फ़क़्र है न ग़ेना।

फ़क़्र व ग़ेना में चन्द रमूज़ व किनायात:- मशाइख़े तरीक़त रहमहुमुल्लाह से फ़क़र व ग़ेना हस्बे मक़दिरत उनके अक़वाल दर्जे किताब करता हूं।

(१) मशाइख़े मुतअख़्ख़ेरीन में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि

"फ़क़ीर वह नहीं जो साज़ो-सामान से ख़ाली हो बल्कि फ़क़ीर वह है जिसका दिल आरज़ू तमन्ना से ख़ाली हो।"

अगर अल्लाह तआ़ला उसे माल व दौलत दे तो अगर वह माल की हिफ़ाज़त की ख़्वाहिश रखे तो ग़नी कह लाएगा और अगर माल को तर्क करने की ख़्वाहिश करे तो भी ग़नी कहलाएगा इसलिए कि यह दोनों हालतें मुल्के ग़ैर में तसर्रुफ़ करने के बराबर हैं। हालांकि तरके हिफ़्ज़ व तसर्रुफ़ का नाम फ़क़्र है।

(२) हज़रत यहया बिन मआ़ज़ राज़ी फ़रमाते हैं कि

"फ़क़्र की अ़लामत फ़क़्र से डरना है।"

मतलब यह है कि सिफ़ते फ़क़्र की अ़लामत यह है कि बन्दा कमाले वलायत, क़ियामे मुशाहिदा और फ़नाए सिफ़त में ज़वाल और क़तअ़ से डरता रहे इस हाल का कमाल इस हद तक पहुंच जाए कि वह क़तअ़ से भी डरे।

(३) हज़रत साएम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

"फ़क़ीर की तारीफ़ यह है वह अपने असरार की हिफ़ाज़त करे और अपने नफ़्स को बचाए और उसके फ़रीज़ा को अदा करे।"

मतलब यह है कि फ़क़ीर अपने असरारे बातिनी का अग़राज़े दुनयावी से बचाए और अपने नफ़्स को (हिर्स व तमन्ना में) आफ़त से महफ़ूज़ रखे और उस पर शरीअ़त के अहकाम व फ़राइज़ को जारी करे। ग़र्ज़ कि जो कुछ असरार पर गुज़रे उसे इज़्हार में मशग़ूल न करे और जो इज़्हार पर हालत हो उसे असरार में मशग़ूल न करे। इन अहवाल के ग़ल्बा के वक़्त अवामर व नवाही की अदाएगी में पसो पेश न करे। यह अ़लामत सिफ़ाते बशरी के ज़ाइल होने की होती है और बन्दा मुकम्मल तौर पर ज़ाते बारी तआ़ला में जज़्ब हो जाता है। यह माना भी हक़ तआ़ला ही की जानिब से होते हैं।

(४) हज़रत बशर हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है कि

सबसे अफ़ज़ल मकाम यह है कि फ़क्र पर सब्र को मज़बूती से थामे। फ़क्र पर सब्र व एतेक़ाद रखना बन्दे के मक़ामात में सबसे अफ़ज़ल मक़ाम है। और फ़क्र फ़नाए मक़ामात का नाम है फ़क्र पर सब्र व एतेक़ाद करने की अलामत यह है कि दरवेश आमाल व अफ़आल और औसाफ़ के फ़ना के रुख़ को मलहूज़ रखे। लेकिन इस क़ौल में ज़ाहिरे मअ़नी ग़ेना पर फ़क्र की फ़ज़ीलत व एतेक़ाद रखने में हैं कि किसी हाल में राहे फ़क्र से मूंह न मोड़े।

(५) हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

"फ़कीर वह हैं जो अल्लाह के सिवा किसी चीज़ में राहत न पाए"

इस लिए दरवेश ख़ुदा के सिवा किसी से कोई वास्ता व इलाक़ा नहीं रखता इस क़ौल का ज़ाहिर मफ़हूम यह है कि दरवेश हक़ तआला के सिवा ग़ेना व तवंगरी पाएगा ही नहीं। जब उसे पा लेगा तो तवंगर हो जाएगा। लिहाज़ा तुम्हारा वजूद उसके लिए ग़ैर है। और जब तवंगरी तरके ग़ैर के बग़ैर हासिल होना मुम्किन नहीं तो तवंगरी हिजाब बन गई। जब तुम उस राह पर गामज़न होगे तो तवंगर कैसे रहोगे? यह मअ़नी बहुत लतीफ़ व अ़मीक़ हैं। अहले हक़ीक़त के नज़दीक मज़कूरा जुमला का मफ़हूम यह निकला कि-

फ़कीर वह है जिसे कभी ग़ेना न हो यह वह मअ़नी है जिसे शैख़े तरीक़त हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमारा ग़म तो दाइमी है किसी हाल में न तो हम अपनी हिम्मत से मक़सूद हासिल कर सकते हैं। और न कामिल तौर पर दुनिया व आख़िरत में इससे नाबूद हो सकते हैं। इस लिए कि हुसूले शय के लिए मुजानसत ज़रूरी हैं और वह जिन्स नहीं है और मौजूद से एराज़ के लिए ग़फ़लत दरकार है लेकिन दरवेश ग़ाफ़िल नहीं होता क्योंकि पेश आमदह राह दुशवार व मुश्किल है। और वह दोस्त ऐसा है कि रियाज़त व मुजाहदे के ज़रीए उसका दीदार हासिल नहीं हो सकता और न उसका दीदार, मख़लूक़ की क़ुदरत वाली जिन्स की क़बील से है और फ़ना पर तबदीली सूरत नहीं और बक़ा पर तग़य्युर जाइज़ नहीं। और न फ़ानी कभी बाक़ी है जिसे हक़ का विसाल नसीब होगा और न बाक़ी कभी फ़ानी है कि उसका क़ुर्ब व नज़दीकी हासिल होगी। लिहाज़ा उसके दोस्त तो सरासर मुश्किल ही में पड़े हुए हैं। दिल की तसल्ली के लिए हसीन इबारतें बना दी गई हैं और तस्कीने रूह के लिए मक़ामात व मनाज़िल और तरीक़ ज़ाहिर कर दिए हैं। उनकी इबारतें अपनी

वजूद में मुज़य्यन और उनके मक़ामात अपनी जिन्सियत में परागन्दा हक़ तआ़ला मख़लूक़ के औसाफ़ व अहवाल से पाक व मुनज़्ज़ा हैं)

(६) हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि :

"फ़क़ीर की तारीफ़ यह है कि न होने के वक़्त ख़ामूश रहे और जब हो तो सब कुछ ख़र्च करदे और यह भी फ़रमाया कि मौजूदगी के वक़्त मुज़तरिब रहे।"

मतलब यह है कि जब माल नहीं होता तो वह ख़ामूश रहता है और जब माल होता है जो वह अपने से ज़्यादा दूसरे को बेहतर जान कर उस पर ख़र्च करता है। लिहाज़ा वह शख़्स जो एक लुक़्मा की हाजत रखता है जब उसकी हाजत पूरी न हो तो उसका दिल साकिन रहता है और जब लुक़्मा मिल जाता है तो अपने मुक़ाबले में दूसरे को बेहतर जान कर उसे दे देता है। यह अज़ीम कारनामा है।

इस क़ौल में दो इशारे हैं एक यह कि वह न होने की हालत में ख़ामोश और राज़ी बरेज़ा रहता है और मौजूद होने की सूरत में पसन्द करता है कि दूसरे पर ख़र्च करदे क्योंकि राज़ी होना हुसूले ख़िलअ़त के लाइक़ बनाता है यही ख़िलअ़त, कुर्ब व नज़दीकी की अ़लामत है और मुहिब व तालिब, तारिके ख़िलअ़त है क्योंकि ख़िलअ़त में फ़ुरक़त का निशान है। और दूसरा इशारा यह है कि वह साकिन होता है यानी न होने की हालत में मौजूद होने के इन्तेज़ार में ख़ामोश रहता है फिर जब मौजूद हो जाता है तो उसका वजूद चूंकि ख़ुदा का ग़ैर है वह ग़ैर से राहत नहीं पाता है तो उसे अपने से जुदा कर देता है। यही मफ़हूम शैख़ुल मशाइख़ अबुल क़ासिम जुनैद बिन मुहम्मद बिन जुनैद रहमहुल्लाह के अक़वाल का है फ़रमाते हैं

तमाम शक्लों से दिल का ख़ाली करना फ़क़्र है। दिल में जब शक्ल होती है तो शक्ल चूंकि ग़ैर है तो बजुज़ निकाल फेंकने के चारा-ए-कार नहीं।

(७) हज़रत शिबली रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि

फ़क़्र इबतेला का समुन्दर है और उसकी तमाम बलायें इज़्ज़त हैं और इज़्ज़त नसीबे ग़ैर है इस लिए कि मुबतला तो अ़ैन बला में है उसे ग़ैर से क्या सरोकार। उस वक़्त तो वह इबतेला से भी मैलान नहीं रखता। उस वक़्त उसकी बिल एहतेमेही इज़्ज़त होती है और उसकी इज़्ज़त हमा वक़्त और उसका वक़्त, सब मुहब्बत में, और उसकी मुहब्बत तमाम मुशाहिदे में मरकूज़

होती है ताकि मतलूब व तालिब का पूरा दिमाग़ ग़लबाए ख़्याल से महले दीदार बन जाए। यहां तक कि बग़ैर आँख के देखने वाला, बग़ैर कान के सुनने वाला हो जाता है तो ऐसा बन्दा साहिबे इज़्ज़त है कि उसने इबतेला का बोझ उठा रखा है। क्योंकि हक़ीक़त में इबतेला इज़्ज़त की चीज़ है और दुनियावी नेअ़मतें ज़िल्लत की चीज़। इस लिए हक़ीक़ी इज़्ज़त वही है जिससे बन्दा की बारगाहे हक़ में हुज़ूरी हो और ज़लील व हक़ीर वह शय है जिससे बन्दा हक़ से दूर हो और फ़क्र की बलायें हुज़ूरी की अ़लामत हैं। और ग़ेना व तवंगरी की राहत दूरी व ग़ीबत का निशान है। हाज़िर बहक़ साहिबे इज़्ज़त है और ग़ायब अज़ हक़ ज़लील व ख़्वार। जिस इबतेला के मअ़नी मुशाहिदा और उसके दीदार से उन्स हो उससे जिस तरह भी तअ़ल्लुक़ हो ग़नीमत है।

(८) सय्यदुल ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

'ऐ गरोहे फ़ुक़रा! तुम लोगों में अल्लाह वालों की हैसियत से जाने जाते हो और अल्लाह तआ़ला से तअ़ल्लुक़ रखने की वजह से ही तुम्हारी तअ़ज़ीम की जाती है जब तुम अल्लाह तआ़ला के साथ तन्हाई में हो तो अपना जाइज़ा कर लिया करो कि फ़िल वाक़ेअ तअ़ल्लुक़ का क्या हाल है।'

मतलब यह है कि जब ख़ल्क़े ख़ुदा तुम को दरवेश कहकर पुकारे और वह तुम्हारा हक़ अदा करे तो तुम अपनी दरवेशी के हक़ का जाइज़ा लिया करो कि यह हक़ किस तरह अदा हो रहा है और अगर ख़ल्क़े ख़ुदा तुमको तुम्हारे दावे के ख़िलाफ़ किसी और नाम से पुकारे तो तुम उनकी यह बातें पसन्द न करो। तुम भी अपने दावे के साथ इन्साफ़ व रासती से काम लो। क्योंकि लोगों में वह शख़्स इन्तेहाई पस्त और ज़लील है कि लोग उसे दरवेश जानें और वह ख़ुद ऐसा न हो! वह शख़्स बहुत अच्छा है जिसे लोग दरवेश न कहें वह दरवेश हो। जिस तरह कि वह शख़्स बुरा है जिसे लोग बा-ख़ुदा दरवेश कहें हालांकि वह ऐसा न हो। इसकी मिसाल ऐसी है कि कोई दावा करे कि मैं तबीब हूं और वह बीमारों का इलाज करने लगे हालांकि वह इल्मे तिब में कुछ दरक न रखता हो लोगों को और ज़्यादा बीमार कर दे। जब ख़ुद बीमार हो तो अपना इलाज करने से आजिज़ रहे और दूसरे तबीब को अपने इलाज के लिए तलाश करे। ऐसा दरवेश जिसे लोग बा-ख़ुदा कहें और वह बा-ख़ुदा हो वह ऐसे तबीब के मानिन्द है जो बीमारों का इलाज कर सके और जब ख़ुद बीमार हो किसी दूसरे तबीब की

उसे हाजत न हो बल्कि खुद ही अपना इलाज कर ले। ऐसा दरवेश जिसे लोग बा-खुदा दरवेश न जानें हालांकि वह बा-खुदा दरवेश हो वह इस मर्दे तबीब के मानिन्द है जो लोगों को अपने तबीब होने की खबर न करे और उनके रुजूआत से फ़ारिग़ हो लेकिन खुद मुवाफ़िक़ ग़िज़ाओं मुफ़र्रेह शरबतों और उम्दा व मोअ़तदिल हवाओं का लिहाज़ रखे ताकि बीमार न हो जाए। ऐसा दरवेश चश्मे ख़लाइक़ से पोशीदा रहता है।

(९) बाज़ मशाइख़े मुतअख़्ख़ीन फ़रमाते हैं कि :

बग़ैर वजूद के अ़दम का नाम फ़क्र है।

इस कौल की इबारत ना-तमाम व नाक़िस है इसका मफ़हूम लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता क्योंकि कोई शय मअ़दूम नहीं होती। और शय के वजूद के बग़ैर बयान नहीं किया जा सकता इस इबारत से मतलब यह निकलता है कि फ़क्र कोई चीज़ नहीं है और यह कि मज़कूरा अक़वाल मशाइख़ और तमाम औलिया अल्लाह का इजमाअ़ व इत्तेफ़ाक़ बे-असल है क्योंकि वह खुद अपनी ज़ात में फ़ानी व मअ़दूम हैं और इस इबारत से अ़ैन का अ़दम मुराद नहीं बल्कि अ़ैने आफ़त मुराद है हालांकि आदमी की तमाम सिफ़तें आफ़त हैं। जब आफ़त की नफ़ी हो गई तो वह सिफ़त का फ़ना होना है और फ़नाए सिफ़त वसूल व अ़दमे वसूल के वास्ता को उनके सामने से हटाता है और ज़ात से उनके हाल को मअ़दूम करना ज़ात की नफ़ी मुराद पाना है और इसमें उसे हलाक कर देना है।

(१०) मुसन्निफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मैंने मुतकल्लेमीन की एक जमाअ़त को देखा जिन्हें फ़क्र की हकीक़त की ख़बर थी और वह इस इबारत पर हंसते थे और कहते थे कि यह कैसी नामाकूल बात है। और मैंने मुद्दईयाने काज़िब की एक जमाअ़त देखी जो इस नामाकूल बात को तस्लीम करते और उस पर एतेक़ाद व एतेमाद करते थे और असल क़िस्सा का उन्हें इल्म ही न था। वह बर-मला कहते थे कि बग़ैर वजूद के अ़दम का नाम फ़क्र है। हालांकि यह दोनों ग़लती पर हैं। एक बर बेनाए अ़दमे इल्म हक़ का मुनकिर हुआ और दूसरे ने जहल व नादानी को अपना लिया और ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ में उलझ कर रह गया।

मशाइख़े तरीक़त की इबारतों में अ़दम व फ़ना का मतलब मज़मूम हरकात और ना-पसन्दीदा सिफ़ात से दूर रह कर पसन्दीदा और महमूदा सिफ़ात की जुस्तजू करना है आलाते तलब व जुस्तजू में मअ़दूम व नापैद होना मुराद नहीं है।

ग़र्ज़ कि दरवेश को तमाम मुआ़नी फ़क्र में ख़ाली होना और हर सबब से

बेगाना होना चाहिए। अब रही यह बात कि असरारे रब्बानी में सैर करना उसी से अपने उमूर हासिल करना अपने फ़ेअ़ल को उससे मुनसलिक करना और मुआ़नी व मक़ासिद का उससे असनाद करना, तो जब उसके उमूर, कसब व मेहनत की बन्दिश से रिहाई पा जाऐंगे तो फ़ेअ़ल की निस्बत उससे जुदा हो जाएगी। उस वक़्त उस पर जो हाल गुज़रता है वह गुज़र जाएगा। उस हाल में किसी चीज़ को न तो अज़ ख़ुद अपनी तरफ़ लाता है और न अपने से दूर करता है। सब कुछ मिनजानिबिल्लाह समझता है और जो कुछ उस पर बीत जाता है वह उसे अ़ैन व हक़ समझता है।

(११) हज़रत मुसन्निफ़ रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैंने ज़बान दराज़ मुद्दईयान (काज़िब) के एक गरोह को देखा जो क़फ़से फ़क़र में नफ़ी वजूद के क़ज़िया के इदराक से उनके कमाल की नफ़ी का इज़हार कर रहा था यह बात बज़ाते ख़ुद सख़्त अ़ज़ीज़ है और मैंने देखा कि वह लोग हक़ीक़ते फ़क़र से नफ़ी करने से मुराद अ़ैन फ़क़र में नफ़ी सिफ़त ज़ाहिर कर रहे थे और देखा कि वह तलबे हक़ व हक़ीक़त की नफ़ी को फ़क़र व सिफ़त कह रहे थे और देखा कि अपनी हवा व हवस को साबित व बरक़रार रख कर नफ़ीए कुल ज़ाहिर कर रहे थे और वह लोग हुज्जते फ़क़र के हर दर्जा में पसमांदा थे इस लिए कि आदमी के लिए इस बात का इदराक कमाले विलायत की अ़लामत और इस बात के समझने के दरपै होना ग़ायत दर्जा की हिम्मत है और अ़ैन मअ़ना से मुहब्बत करना महले कमाल है। लिहाज़ा तालिबे फ़क़र व तसव्वुफ़ के लिए इसके सिवा कोई चाराए कार नहीं कि उनकी राह पर चले और उनके मक़ामात को तय करे और उसकी इबारात पर ग़ौर और फ़िक्र करके समझने की कोशिश करे ताकि महले ख़ास तारीकी में न रहे इस लिए कि तमाम उसूल, उसूल से और तमाम फ़रोअ़, फ़रोअ़ से निकलते हैं। अगर कोई रहगुज़र फ़रोअ़ से रह जाए तो उसूल से निस्बत बाक़ी रहती है लेकिन जब उसूल ही रह जाए तो वह किसी जगह बैठने के लाइक़ नहीं रहता और किसी से निस्बत नहीं रहती। और यह तमाम बातें वाज़ेह तौर पर इस लिए बयान की हैं कि तुम उन्हें ग़ौरो फ़िक्र करके राहे हक़ के आदाब की रिआ़यत मलहूज़ रखो। अब मैं मशाइख़े तरीक़त के कुछ उसूल व रुमूज़ और उनके वह इशारात जो तसव्वुफ़ के सिलसिले में फ़रमाए हैं बयान करता हूं उसके बाद मर्दाने ख़ुदा के अस्माए गिरामी और

मशाइख़े तरीक़त के मज़ाहिब का इख़्तेलाफ़ बयान करूंगा। बाद अज़ां हक़ाइक़ व मआ़रिफ़ और अहकामे शराअ़ बयान करके उनके मक़ामात के रुमूज़ व आदाब हत्तुल-इमकान बयान करूंगा ताकि तुम पर और हर उस शख़्स पर जो इस किताब को पढ़े हक़ीक़त वाज़ेह हो जाए व बिल्लाहित्तौफ़ीक़०

तसव्वुफ़

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है-

रहमान के वही बन्दे हैं जो ज़मीन पर अख़्लाक़ व इंकेसार से चलते हैं। और जब जाहिल लोग उन्हें पुकारते हैं तो वह सलाम करते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है-

जो सूफ़िया की आवाज़ सुने और उनकी दुआ पर आमीन न कहे तो वह अल्लाह के नज़दीक ग़ाफ़िलों में शुमार होगा।

अहले इल्म हज़रात ने इस्मे तसव्वुफ़ की तहक़ीक़ में बहुत कुछ कहा है और किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं चुनांचेह अहले अ़मल की एक जमाअ़त कहती है कि सूफ़ी को इस लिए सूफ़ी कहा जाता है कि वह सूफ़ (पशमीना) के कपड़े पहनते हैं और बाज़ यह कहते हैं कि वह अव्वल सफ़ में होते हैं और एक जमाअ़त यह कहती है कि यह असहाबे सफ़ा की नेयाबत करते हैं। बाज़ ने कहा कि यह नाम सफ़ा से माख़ूज़ है ग़र्ज़ कि हर वजहे तस्मीया में तरीक़त के बकसरत लताइफ़ हैं लेकिन अगर लुग़वी मानी का एतेबार किया जाए तो मानी बईद अज़ मफ़हूम हो जाता है चूंकि हर हालत में ज़ाहिर व बातिन की सफ़ाई महमूद व पसन्दीदा है और उसकी ज़िद, कदूरत से इजतेनाब करना मक़सूद है जैसा कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है :-

"(दुनिया की पाकीज़गी जाती रही और उसकी कदूरत बाक़ी रह गई) गोया सूफ़ी में लतीफ़ व पाकीज़ा चीज़ों के नाम से उसकी सफ़ाई मुराद है चूंकि सूफ़िया किराम अपने अख़्लाक़ व मुआ़मलात को मुहज़्ज़ब व पाकीज़ा बना कर तबई आफ़तों से नफ़रत करते हैं इस बिना पर उन्हें सूफ़ी कहा जाता है। सूफ़िया की जमाअ़त के लिए यह नाम अस्मा एलाम यानी मख़सूस व मुअ़ैयन नामों में से है। इस लिए कि उनके ख़तरात उनके उन मुआ़मलात के मुक़ाबले में जिसे वह मख़फ़ी रखते हैं बहुत बड़े हैं ताकि उन का नाम उसी से माख़ूज़ समझा जाए।

मौजूदा ज़माने में हक़ तआ़ला ने तसव्वुफ़ और सूफ़ियाए किराम की मुक़द्दस हस्तियों को अकसर पर्दे में रखा है। और तसव्वुफ़ के लताइफ़ को उनके दिलों

से पोशीदा किया है ताकि कोई तो यह समझे कि यह लोग ज़ाहिरी इस्लाह के लिए रियाज़तें करते हैं और बातिनी मुशाहिदात से ख़ाली हैं और कोई यह समझे कि असल व हक़ीक़त बग़ैर यह एक रस्म है हत्ता कि वह इसका इन्कार पर उतर आते हैं। चुनांचे मसख़रे और ज़ाहिर में उलमा जो कुल्ली तौर पर इसके मुन्किर हों. तसव्वुफ़ के हिजाब में खुश रहते हैं। उनकी देखा देखी अवाम भी उनकी हां में हां मिलाने लगे हैं और उन्होंने बातिन की सफ़ाई की जुस्तजू व तलब को दिल से महव करके सलफ़ सालेहीन और सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम के मसलक व मज़हब को भूला दिया है।

हक़ व सदाक़त की राह में अगर तुम सूफ़ी बनना चाहो तो जान लो कि सूफ़ी होना हज़रत सिद्दीक़ की सिफ़त है।

सफ़ाए बातिन के लिए कुछ उसूल और फ़रूअ़ हैं। एक उसूल तो यह है कि दिल को ग़ैर से ख़ाली करे। और फ़रोअ़ यह हैकि मकर व फ़रेब से भरपूर दुनिया को दिल से ख़ाली कर दे। यह दोनों सिफ़तें सय्यदुना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हैं। इसी लिए आप तरीक़त के रहनुमाओं के इमाम हैं। आपका क़ल्बे मुबारक अग़यार से ख़ाली था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के विसाल के बाद जब तमाम सहाबा किराम बारगाहे मुअल्ला में दिल शिकस्ता हो कर जमा हुए तो सय्यदुना फ़ारूक़े आज़म उमर बिन ख़ताब रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार सोंत कर खड़े हो गए और फ़रमाने लगे कि जिसने भी यह कहा कि अल्लाह के रसूल का इन्तेक़ाल हो गया है मैं उसका सर क़लम कर दूंगा। उस वक़्त सय्यदुना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और बलन्द आवाज़ से खुत्बा दिया कि

ख़बरदार! जो हुज़ूर की परस्तिश करता था वह जान ले कि हुज़ूर का विसाल हो चुका है और जो हूज़ूर के रब की इबादत करता है तो आगाह हो कि वह ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं है उसके बाद यह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई।

और हुज़ूर तो अल्लाह के रसूल ही हैं बेशक आप से पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं तो क्या अब हुज़ूर इन्तेक़ाल फ़रमा जायें या शहीद कर दिए जायें तो अपनी एड़ियों के बल पलट जाओगे?

मतलब यह था कि अगर कोई यह समझे बैठे था कि हुज़ूर मअ़बूद थे तो जान ले कि हुज़ूर का विसाल हो चुका है और अगर वह हुज़ूर के रब की इबादत करता था तो वह ज़िन्दा है हरगिज़ उस पर मौत नहीं आनी है। यानी जिसके

दिल फ़ानी से पैवस्ता होता है तो वह फ़ानी तो फ़ना होता है और उसका रंज बाक़ी रह जाता है लेकिन जिसका दिल हज़रत हक़ सुब्हानहु से लगा हुआ हो तो जब नफ़्स फ़ना हो जाता है तो वह बक़ाए बाक़ी दिल के साथ बाक़ी रहता है। हक़ीक़त यह है कि जिसने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बशीयत की आँख से देखा (और आपको अपना जैसा बशर समझा) तो जब आप दुनिया से तशरीफ़ ले जाएंगे तो आपकी वह ताज़ीम जो उसके दिल में है जाती रहेगी और जिसने आपको हक़ीक़त की आँख से देखा तो उसके लिए आपका तशरीफ़ ले जाना मौजूद रहना दोनों बराबर हैं इस लिए कि उसने आपकी मौजूदगी और हालते बक़ा का हक़ तआ़ला की बक़ा के साथ और आपके तशरीफ़ ले जाने को हक़ तआ़ला से वासिल व फ़ना होने और पलटने और फ़ना होने वाली चीज़ों से रूगरदां हो कर पलटाने और फ़ना करने वाली ज़ात की तरफ़ मुतवज्जेह होने को देखा हक़ तबारक तआ़ला की जिस तरह ताज़ीम व तकरीम की जाती है उसी तरह उसने वजूद व असल की ताज़ीम और तौक़ीर की। लिहाज़ा दिल की राहें किसी मख़लूक़ के लिए न खोले और अपनी नज़रें किसी ग़ैर की तरफ़ न फैलाए क्योंकि -

जिसने मख़लूक़ पर नज़र डाली वह हलाक हुआ और जिसने हक़ की तरफ़ रुजूअ़ किया वह मालिक हुआ।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की दूसरी शान कि आपका क़ल्बे मुबारक दुनियाए ग़द्दार से ख़ाली था इसकी कैफ़ियत यह है कि आपके पास जितना माल व मनाल और गुलाम व बरदे वग़ैरह थे सब को राहे खुदा में देकर एक कम्बल ओढ़कर बागाहे रिसालत में हाज़िर हो गए। उस वक़्त हूज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया।

ऐ सिद्दीक़ तुमने अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ा? फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल।

यानी हुज़ूर ने दर्याफ़्त किया तुमने अपने माल में से अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ा उन्होंने अर्ज़ किया बहुत बड़ा ख़ज़ाना और बेहद व ग़ायत माल व मनाल छोड़ा है। फ़रमाया वह क्या? अर्ज़ किया एक तो अल्लाह की मुहब्बत और दूसरे उसके रसूल की मुताबअ़त।

जब बन्दह का दिल दुनियावी सिफ़ात से आज़ाद हो जाता है तो अल्ला तआ़ला दुनियावी कुदरतों से उसे पाक व साफ़ कर देता है यह तमाम सिफ़तें

सूफ़ी सादिक़ की हैं। उनका इन्कार दरहक़ीक़त हक़ का इन्कार और उससे खुला मुकाबरा व एनाद है।

मैं कहता हूं कि सफ़ा, कदूरत की ज़िद है और कदूरत सिफ़ाते बशरी में से है। हक़ीक़तन सूफ़ी वह है जो बशरी कदूरतों से गुज़र जाए जैसा कि मिस्र की औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का जब मुशाहिदा किया और आपके हुस्न व जमाल के लताइफ़ में ग़र्क़ हुई तो उन पर बशरीयत ग़ालिब आ गई फिर जब वह मुनअक़िस हो कर वापस आए और उसकी इन्तिहा हदे कमाल तक पहुंची और उससे गुज़र कर बशरीयत के फ़ना पर नज़र पड़ी तो कहने लगीं: " " (यह तो बशर है ही नहीं) हालांकि उन्होंने अपने कलाम का निशाना बज़ाहिर उन्हें बनाया लेकिन उन्होंने इस तरह अपना हाल ज़ाहिर किया था। इसी लिए मशाइख़े तरीक़त फ़रमाते हैं कि :-

हालते सफ़ा, बशरी सिफ़ात में से नहीं है इस लिए कि बशर तो एक मिट्टी का तो वह है और मिट्टी का तो वह कदूरत से ख़ाली नहीं होता।

लिहाज़ा बशरी हालत में बरक़रार रह कर कदूरत से नजात पाना मुम्किन नहीं इस लिए सफ़ा की मिसाल, अफ़आल से न होगी आऔर महज़ रियाज़त व मुजाहदा से बशरीयत ज़ाइल न होगी क्योंकि सिफ़ते सफ़ा अफ़आल व अहवाल से मनसूब नहीं है और न नाम व अल्क़ाब से इसको कोई इलाक़ा है इस लिए कि :

सफ़ा तो महबूबों की शान है वह तो आफ़ताबे ताबां हैं जिस पर कोई अब्र नहीं।

मतलब यह कि सफ़ा दोस्तों की सिफ़त है यह दोस्त वह हैं जो अपनी सिफ़त फ़ना कर के अपने दोस्त, हक़ तआला की सिफ़त के साथ बाक़ी हो गए हैं अरबाबे हाल के नज़दीक दोस्त वही होता है जिसके अहवाल मिस्ले आफ़ताब के ज़ाहिर हों चुनांचेह हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा अलैहि तहिय्यतु वस्सना से सहाबा किराम ने हज़रत हारिसा के बारे में दरयाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया "वह ऐसा बन्दा है जिसके दिल को अल्लाह तआला ने ईमान से मुनव्वर फ़रमाया है यहां तक कि उसका चेहरा उसकी तासीर से ताबां और नूरे रब्बानी से दरख़्शां है। किसी बुज़ुर्ग ने क्या खूब फ़रमाया है।

जब आफ़ताब व माहताब के नूर बाहम मिल जाते हैं तो उसकी मिसाल मुहब्बत व तौहीद की सफ़ाई है जब कि यह दोनों पैवस्त हो जाएं।

हक़ तआला की तौहीद व मुहब्बत जिस जगह ऐसे मक़ाम पर मिल जा

कि एक की निस्बत दूसरे की तरफ़ होने लगे तो आफ़ताब व माहताब के नूर की हैसियत वहां क्या है? चूंकि दुनिया में उन दोनों के नूर से ज़्यादा रौशन कोई शै नहीं जो वसफ़े कमाल और नूरी बुरहान में उससे बढ़कर हो क्योंकि आँखें आफ़ताब व माहताब के नूर को देखने से आजिज़ रहती हैं अलबत्ता उन दोनों के नूर के ग़ल्बा से आसमान को देख लेते हैं। इसी तरह क़ल्बे मोमिन व मुख़लिस, मअरेफ़त व तौहीद और मुहब्बत के नूर से अर्शे इलाही को देख लेता है और दुनिया में उक़बा के हालात से बाख़बर हो जाता है।

तमाम मशाइख़े तरीकत का इस पर इज़्माअ़ है कि बन्दा जब मुक़ामात की बन्दिशों से आज़ाद हो जाता है और अहवाल की कदूरतों से ख़ाली हो कर तग़ैय्युर हो जाता है और वह तमाम बशरी सिफ़ात की कदूरतों से निजात पा जाता है, यानी बंदा जब दिल में अपनी कमी तारीफ़ व तौसीफ़ से न लुत्फ़ अंदोज़ होता है और न अपने ही किसी सिफ़त व तलव्वुन के हुदूद से निकल जाता है तो वह तमाम अहवाले महमूद से मुत्तसिफ़ को देख कर मुतअ़ज्जिब होता है ऐसे बन्दों के अहवाल को आ़म अ़क़लें समझने से क़ासिर हैं और वहम व गुमान के तसर्रुफ़ से उनकी ज़िन्दगी पाक व साफ़ होती है। न उनके हुजूर को ज़वाल है और न उनके वजूद के लिए असबाब की हाजत।

इस लिए कि सफ़ा के लिए बिला ज़वाल हुजूर और बिला सबब वजूद ज़रूरी है।

लेकिन अगर ग़ैबत का इस पर ग़लबा हो जाए तो हुजूर नहीं रह सकता। इसी तरह अगर उसके वजूद के लिए सबब व इल्लत हो तो वह वजदानी हो जाएगा। वाजिद न रहेगा। और जिन अहकामे रब्बानी की हिफ़ाज़त दुशवार होती है वह आसान हो जाती हैं। चूनांचेह हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो उनसे हुजूरे अकरम ने दरयाफ़्त फ़रमाया "ऐ हारिस किस हाल में तुमने सुबह की?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की हक़्क़ानीयत पर ईमान रखते हुए रात कटी। हुजूर ने फ़रमाया ऐ हारिस तुम ग़ौर करो क्या कह रहे हो? क्योंकि हर शै की एक हक़ीक़त होती है तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त व बुरहान क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया मैं ने अपने आपको दुनिया से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ कर के अपने रब को पहचाना है इसकी अ़लामत यह है कि अब पत्थर, सोना चाँदी और मिट्टी मेरे नज़दीक सब बराबर हैं क्योंकि दुनिया से बेज़ार हो कर उक़बा से लौ लगा रखी है। मेरा हाल यह है कि रात को बेदार रहता हूं और

दिन को भूका प्यासा (यानी रोज़ा रखता हूं) अब मेरी कैफ़ियत यह हो गई कि गोया मैं अपने रब के अर्श को वाज़ेह तौर पर देख रहा हूं, (एक रिवायत यह है कि मुलाक़ात करते जन्नत में देख रहा हूं और यह कि जहन्नमियों को आग में एक दूसरे से कश्ती करते भी देख रहा हूं, (एक रिवायत में यह है कि शरमसार देख रहा हूं) इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ हारिस तुमने ईमान की हक़ीक़त पाली अब इस पर क़ाइम रहो। आप ने इसे तीन मर्तबा फ़रमाया।

औलिया कामेलीन का नाम:- औलिया कामेलीन और अरफ़ा मुहक़्क़ेक़ीन का नाम सूफ़ी है। यह गरोह बा सफ़ा इसी नाम से पुकारा जाता है। एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया है कि :-

जिसकी मुहब्बत पाक व साफ़ है वह साफ़ी है और जो दोस्त में मुस्तग़रक़ हो कर उसके ग़ैर से बरी हो वह सूफ़ी है।

लिहाज़ा बा-एतेबारे लोग़त इसके मआनी मुश्तक़ात किसी चीज़ के साथ सही नहीं बनते क्योंकि इस लफ़्ज़ के यह मानी लुग़वी तारीफ़ से बहुत बुलन्द व अरफ़अ हैं। इस मानी की कोई जिन्स नहीं है जिससे इसको माख़ूज़ क़रार दिया जाए इस लिए कि किसी चीज़ का किसी चीज़ से माख़ूज़ व मुश्तक़ होना जिन्सियत का मुतक़ाज़ी होता है और जिसमें कदूरत हो वह साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ की ज़िद होती है और किसी चीज़ को ज़िद से मुशतक़ नहीं करते। लिहाज़ा उरफ़ा के नज़दीक यह मानी अज़हर मिनश-शम्स हैं इसके लिए न सिकी तअ़बीर की ज़रूरत है न किसी इशारा की।"

इसलिए कि सूफ़ी के मानी के लिए इबारत व इशारा की मुमानिअ़त है।

मुहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक जब यह बात साबित हो गई कि सूफ़ी की तारीफ़ इबारात से करना ममनूअ़ है और आलम की हर शै इसकी ताबीरात हैं ख़्वाह उन्हें इसका इल्म हो या न हो। लिहाज़ा हुसूले मानी के लिए इस नाम के लफ़्ज़ में तारीफ़ की मुतलक़ हाजत नहीं है। (फ़हम व इदराक के लिए इतना जान लो कि) मशाइख़े तरीक़त और आरिफ़ाने हक़ीक़त को सूफ़ी कहते हैं और मुरीदीन व मुतअ़ल्लेक़ीन और सालेकीन को मुतवस्सिफ़।

तसव्वुफ़ की तारीफ़:- कलिमा-ए-तसव्वुफ़ बाबे तफ़अ़उल से है जिसका ख़ासा है कि बतकल्लुफ़ फ़ेअ़ल का मुतक़ाज़ी हो और यह असल की फ़रअ़ है लुग़वी हुक्म और ज़ाहिरी मानी में इस लफ़्ज़ की तारीफ़ का फ़र्क़ मौ

है।

सफ़ा विलायत की मंज़िल है और उसकी निशानियां हैं और तसव्वुफ़ सफ़ा की ऐसी हिकायत व तअ़बीर है जिसमें शिकवह व शिकायत न हो।

सफ़ा के ज़ाहिरी मानी ताबां हैं और तसव्वुफ़ इस मानी व मफ़हूम की तअ़बीर व हिकायत है।

सूफ़ी की क़िस्में:- तसव्वुफ़ के मानने वालों और उस पर अमल करने वालों की तीन क़िस्में हैं एक को सूफ़ी, दूसरे को मुतसव्विफ़, और तीसरे को मुस्तसव्विफ़ कहते हैं।

(१) सूफ़ी वह है जो ख़ुद को फ़ना करके हक़ के साथ मिल जाए और ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया को मार कर हक़ीक़त से पैवस्ता हो जाए।

(२) मुतसव्विफ़ वह है जो रियाज़त व मुजाहदे के ज़रीअ़ इस मक़ाम को तलब करे और वह इस मक़ाम की तलब व हुसूल में सादिक़ व रास्तबाज़ रहे।

(३) मुस्तसव्विफ़ वह है जो दुनियावी इ़ज़्ज़त व मंज़िलत और मालो-दौलत की ख़ातिर ख़ुद को ऐसा बना ले और उसे मज़कूरा मनाज़िल व मक़ामात की कुछ ख़बर न हो। ऐसे नक़ली सूफ़ियों के लिए उरफ़ा का मक़ूला है कि-

सूफ़िया-ए-किराम के नज़दीक नक़ली सूफ़ी मक्खी की मानिन्द ज़लील व ख़्वार है वह जो करता है महज़ ख़्वाहिशे नफ़्स के लिए करता है और दूसरों के नज़दीक भेड़िये की मानिन्द है। जिस तरह भेड़िया अपनी तमाम क़ूव्वत व ताक़त मुरदार के हासिल करने में सर्फ़ करता है यही हाल उस नक़ली सूफ़ी का है। गोया सूफ़ी साहबे उसूल है और मुतसव्विफ़ साहबे उसूल और मुस्तसव्विफ़ साहबे नक़ूल और फ़ुज़ूल।

जिसे वस्ल नसीब हो गया वह मकसूद को पाने और मुराद को हासिल करने में अपने नफ़्सानी क़सदो इरादा से बे नियाज़ हो गया और जो मंज़िले उसूल का नसीबावर हो गया वह अहवाले तरीक़त पर फ़ाइज़ और लताइफ़े मअ़रेफ़त पर मुश्तमिल हो गया और जिसके नसीब में नुज़ूल है और वह नक़ली होती है वह हक़ीक़त व मारेफ़त की मंज़िल से महरूम रह कर महज़ रस्मो-रिवाज की चौखट पर बैठ गया है इसके लिए यही ज़ाहिरी रस्मो-रिवाज और तौरो-तरीक़

मानी व कुना से महजूब व मस्तूर बन गया है क्योंकि वस्ले वासिल से हिजाब में रहना मअ़यूब है। इसी सिलसिले में मशाइख़े तरीक़त के बहुत रमज़ो रुमूज़ हैं इस जगह उनका तमाम व कमाल का बयान करना दुश्वार है अलबत्ता कुछ रमज़ो किनाए बयान करता हूं व बिल्लाहित्तौफ़ीक़

सूफ़िया-ए-किराम के औसाफ़े हमीदा

(१) हज़रत जून्नून मिस्री रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

सूफ़ी वह है कि जब बात करे तो उसका बयान अपने हाल के हक़ाइक़ के इज़हार में हो। मतलब यह कि वह कोई ऐसी बात नहीं कहता जो खुद उसमें मौजूद न हो। और जब ख़ामूश रहे तो उसका मुआ़मला और सुलूक उसके हाल को ज़ाहिर करे। और अ़लाइक़ से किनारा कशी उसके हाल पर नातिक़ हो। यानी उसका बोलना बवक़्ते कलाम उसूले तरीक़त पर सही हो और उसका किरदार बवक़्ते सुकूत मुजर्रद महज़ है और यह दोनों हालतें दुरुस्त हों। जब बोले तो उसकी हर बात हक़ हो और जब ख़ामूश रहे तो उसका हर फ़ेअ़ल फ़क़्र हो।

(२)हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तसव्वुफ़ ऐसी खूबी है जिसमें बन्दे को क़ाइम किया गया है किसी ने पूछा यह हक़ की सिफ़त है या बन्दे की? आपने फ़रमाया उसकी हक़ीक़त, हक़ की सिफ़त है और उसकी ज़ाहिरी रस्म व हालत बन्दे की। मतलब यह है कि उसकी हक़ीक़त बन्दगी की सिफ़त की फ़ना चाहता है और सिफ़ते बन्दगी की फ़ना, हक़ के साथ बक़ा की सिफ़त है और यह सिफ़ते हक़ है और उसकी ज़ाहिरी रस्म व हालत बन्दे की दाइमी रियाज़त व मुजाहदे की मुक़तज़ी है और दाइमी मुजाहदा यह बन्दे की सिफ़त है और जब दूसरे मानी में देखना चाहो तो यूं समझो कि तौहीद की हक़ीक़त किसी बन्दे की सिफ़त में सही नहीं हो सकती और इस लिए कि बन्दे की सिफ़ात में हमेशगी व दवाम नहीं। और ख़ल्क़ की सिफ़त बजुज़ रस्म व ज़ाहिर के कुछ नहीं। क्योंकि ख़ल्क़ की सिफ़त में बक़ा नहीं है बल्कि वह हक़ीक़तन हक़ का फ़ेअ़ल है लिहाज़ा इन सिफ़ात की हक़ीक़त हक़ के साथ होगी। इस मफ़हूम को यूं समझो कि हक़ तआ़ला ने बन्दे को रोज़ा रखने को फ़रमाया। रोज़ा रखने की वजह से बन्दा रोज़ेदार कहलाया। यह रोज़ा अज़ रूए रस्म ज़ाहिरी बन्दा की सिफ़त होगी। लेकिन अज़रूए हक़ीक़त रोज़े की हक़ीक़त हक़ तआ़ला के साथ है चुनांचेह हक़ तआ़ला ने अपने हबीब

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़रीअ़े हमें ख़बर दी कि -

रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा दूंगा। मतलब यह है कि रोज़ा मेरी वजह से है और जो कुछ उनके मफ़ऊलात से है वह सब उसकी मिल्कियत है। लेकिन तमाम इबादतों और चीज़ों की निस्बत बन्दे की निस्बत बतरीक़े रस्म व मजाज़ होगी न कि हक़ीक़तन।

(३) हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

तसव्वुफ़ तमाम नफ़सानी लज़्ज़ात व हज़ूज़ से दस्तकशी का नाम है" इसकी दो क़िस्में हैं एक रस्म यानी मजाज़ दूसरे हक़ीक़त। इसका मफ़हूम यह है कि बन्दा अगर नफ़्सानी लज़्ज़तों को छोड़ चुका है तो तरके लज़्ज़त भी तो एक लज़्ज़त है इसी को रस्म व मजाज़ कहा जाता है अगर वह इसका भी तारिक है तो यह फ़नाए लज़्ज़त व हिज़ कहलाती है इस मानी का तअ़ल्लुक़ हक़ीक़त व मशाहिदे से है। लिहाज़ा तरके हिज़ व लज़्ज़त बन्दा का फ़ेअ़ल है और फ़नाए हिज़ व लज़्ज़त, हक़ तआ़ला का फ़ेअ़ल है लिहाज़ा बन्दे के फ़ेअ़ल का रस्म व मजाज़ और हक़ के फ़ेअ़ल को हक़ीक़त कहा जाएगा। इस क़ौल से वह पहला क़ौल जो हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अ़लैहि का है खूब वाज़ेह हो जाता है।

(४) हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि का क़ौल है कि-

सूफ़िया-ए-किराम का गरोह वह है जिनकी ज़िन्दगियां कदूरते बशरी से आज़ाद और आफ़ते नफ़्सानिया से पाक व साफ़ हो कर आरज़ू और तमन्नाओं से बेनियाज़ हो गए हैं। यहां तक कि हक़ तआ़ला के हुज़ूर बुलन्द दर्जे और सफ़े अव्वल में आराम गस्तर हैं और मा सिवा अल्लाह के सबसे क़तअन किनारा कश हो चुके हैं।

(५) वह यह भी फ़रमाते हैं- सूफ़ी वह है जिसके क़ब्ज़ा में कुछ न हो और न खुद किसी के क़ब्ज़े में हो। यह इबारत अ़ैने फ़ना की है कि फ़ानीयुल सिफ़त न मालिक होता है न ममलूक क्योंकि सेहत मुल्क मौजूदात पर दुरुस्त आती है। इस क़ौल शरीफ़ का मतलब यह है कि सूफ़ी दुनियावी साज़ो सामान और उख़रवी ज़ेब व ज़ीनत में से किसी चीज़ का मालिक नही होता क्योंकि वह खुद भी तो किसी की मिल्कियत में है। वह अपने नफ़्स के हुक्म का पाबन्द नहीं होता है इस लिए कि ग़ैर की ख़्वाहिश व इरादा के ग़लबा से वह खुद को घुला चुका होता है हत्ताकि वह ग़ैर को भी बन्दगी की तमअ़ से फ़ना कर चुका होता है यह क़ौले मुबारक दक़ीक़ व लतीफ़ है इस मंज़िल को गरोहे सूफ़िया

'फ़िनाए कुल' से तअ़बीर करते हैं। हम उनके ग़लत मक़ामात की इस किताब में इन्शा अल्लाह निशानदेही करेंगे।

(६) हज़रत इब्ने जलाली दमिश्क़ी अ़लैहिर्रहमह फ़रमाते हैं कि तसव्वुफ़ सरापा हक़ीक़त है जिसमें रस्म व मजाज़ का दख़ल नहीं है क्योंकि मुआ़मिलात व अफ़आ़ल में रस्म व मजाज़ का दख़ल है और इसकी हक़ीक़त हक़ तआ़ला के साथ ख़ास है। जब कि तसव्वुफ़ ख़ल्क़ से किनारा कशी का नाम है तो इस लिए रस्म व मजाज़ का दख़ल मुम्किन ही नहीं।

(७) हज़रत अबू उमर दमिश्क़ी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि -

जहां को नक़्स व अ़ैब की आँख से देखने का नहीं बल्कि दुनिया से मुंह फेर लेने का नाम तसव्वुफ़ है। मतलब यह है कि जहां को अ़ैब न नक़्स से भरा देखो क्योंकि यह दलील फ़नाए सिफ़त की है इस लिए कि जब काइनात पर नज़र होगी तो हदे नज़र के बाद नज़र की मंज़िल भी ख़त्म हो जाएगी और दुनिया से आँखें बन्द कर लेने में रब्बानी बसीरत की बक़ा है यानी जो शख़्स अपने से नाबीना होगा वह हक़ को देख सकेगा क्योंकि हस्ती का तालिब भी तालिब ही होता है और उसका काम उससे उसी की तरफ़ हो जाता है। हत्ता कि अपनी हस्ती से बाहर निकलने की उसे कोई राह नहीं मिलती। अलग़र्ज़ एक वह होता है जो खुद को तो देखता है लेकिन उसे नाक़िस नज़र आता है और दूसरा वह है जो अपनी तरफ़ से नज़र को बन्द कर लेता है उसे नहीं देखता तो वह शख़्स जो खुद को देख लेता है अगरचेह खुद में उसे नक़्स व अ़ैब नज़र आते हैं मगर यही नज़ारा एक हिजाब है। और जो देखता है वह नज़र में दर पर्दा रहता है और जो अपनी हस्ती को देखता ही नहीं वह नाबीनाई में महजूब नहीं होता। अहले मुआ़नी और उरफ़ा के नज़दीक यह मफ़हूम व मुराद, अस्ले क़वी है। मगर यह क़ियाम उसकी शरह का नहीं है।

(८) हज़रत अबू बकर शिब्ली अलैहिर्रहमह फ़रमाते हैं कि-

तसव्वुफ़ में शिर्क है इस लिए कि दिल को ग़ैर की रुवायत से बचाना हालांकि ग़ैर का वजूद ही नहीं हैं। मतलब यह कि इस्बाते तौहीद में ग़ैर की रुवायत शिर्क है। जब दिल में ग़ैर की कोई क़दरो-क़ीमत नहीं है तो दिल को ग़ैर के ज़िक्र से बचाना मुहाल है।

(९) हज़रत हुसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि -

दिल को हक़ तआ़ला की मुखालिफ़त की कदूरत से पाक व साफ़ रखे

का नाम तसव्वुफ़ है मतलब यह कि बातिन को हक़ तआला की मुख़ालिफ़त से महफ़ूज़ रखो क्योंकि दोस्ती मुवाफ़िक़त का नाम है और मुवाफ़िक़त मुख़ालिफ़त की ज़िद है। दोस्त को लाज़िम है कि सारे जहां में दोस्त के अहकाम की हिफ़ाज़त करेऔर जब मतलूब व मुराद एक हो तो मुख़ालिफ़त की गुंज़ाइश नहीं है।

अख़्लाक़ (१०) हज़रत मुहम्मद बिन अली बिन इमाम हुसैन बिन अ़ली मुर्तज़ा सलामल्लाहु तआ़ला अ़लैहिम अजमईन फ़रमाते हैं कि-

पाकीज़ा अख़्लाक़ का नाम तसव्वुफ़ है। जिसके जितने पाकीज़ा अख़्लाक़ होंगे उतना ही ज़्यादा वह सूफ़ी होगा।

पाकीज़ा अख़्लाक़ की दो क़िस्में हैं। एक हक़ तआ़ला के साथ दूसरे ख़ल्क़ के साथ। हक़ तआ़ला के साथ नेक ख़ूई यह है कि उसकी क़ज़ा व क़दर पर राज़ी रहे और ख़ल्क़ के साथ नेक ख़ूई यह है कि हक़ तआ़ला की रज़ा की ख़ातिर मख़लूक़ की सुहबत का बार बरदाश्त करे। यह दोनों क़िस्में तालिब ही की तरफ़ राजेअ़ होती हैं क्योंकि हक़ की सिफ़त इस्तेग़ना यानी वह तालिब की नाराज़गी व रज़ा दोनों से बे नियाज़ है। यह दोनों वस्फ़े नज़ारा तौहीद से वाबस्ता हैं।

(११) हज़रत अबू मुहम्मद मुरतइश रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

यानी सूफ़ी वह है कि उसका बातिन उसके क़दम के साथ बराबर हो। मतलब यह कि मुकम्मल तौर पर हाज़िर रहे।

यानी दिल वहां हो जहां क़दम हो और क़दम वहां हो जहां दिल हो। एक क़ौल यह है कि क़दम वहां हो जहां क़ौल हो। यह हुज़ूरी की अ़लामत बग़ैर गुयूबत के है। इसके बरख़िलाफ़ कुछ लोग यह हकते हैं कि ख़ूदी से ग़ाइब हो कर हक़ के साथ ज़ाहिर हो। हालांकि यह कहना चाहिए था कि हक़ के साथ ज़ाहिर हो कर ख़ूदी से हाज़िर हो। यह जमाउलजमा के क़बील की इबारत है क्योंकि जिस वक़्त ख़ुद बख़ुद रुयत होगी तो ख़ुदी से ग़ैबत न रहेगी। जब रुयत उठ जाएगी तो हुज़ूरी बे ग़ैबत के होगी इस मानी का तअ़ल्लुक़ हज़रत शिब्ली अलैहिर्रहमतु के इस क़ौल से है कि।

(१२) सूफ़ी वह है जो दोनों जहां में बजुज़ ज़ाते इलाही के कुछ न देखे।

क्योंकि बन्दे की पूरी हस्ती ग़ैर है और जब वह ग़ैर को न देखेगा तो ख़ुद को भी न देखेगा। और अपनी नफ़ी और इस्बात के वक़्त वह ख़ुद से मुकम्मल तौर पर फ़ारिग़ होगा।

तसव्वुफ़ की बुनियादी खसलतें। (१३) हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्ला अलैहि फ़रमाते हैं कि तसव्वुफ़ की बुनियादी आठ हिस्सों पर है सख़ावत, र सब्र इशारा, गुरबत, गुदड़ी, सियाहत और फ़क्र। यह आठ ख़सलतें आठ नबि की इक़्तेदा में हैं, सख़ावत हज़रत ख़लील अ़लैहिस्सलाम से क्योंकि अ फ़रज़न्द को फिदा किया। और रज़ा हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम से। क्यों बवक़्ते ज़बह अपनी रज़ा दी और अपनी जान अज़ीज़ को बारगाहे खुदाव में पेश कर दिया सब्र हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से कि आपने बेहद व ग़ मसाइब पर सब्र फ़रमाया और खुदा की फ़िरिस्तादह इबतेला व आज़माइश साबित क़दम रहे और इशारा हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम से कि हक़ तआ ने फ़रमाया-

आपने तीन दिन लोगों से इशारा के सिवा कलाम न फ़रमाया और इ सिलसिले में इरशाद है कि-

उन्होंने अपने रब को आहिस्ता पुकारा। और गुरबत हज़रत यहया अ़लैहिस्सल से कि वह अपने वतन में मुसाफ़िरों के मानिन्द रहे और ख़ानदान में रहते अपनों से बेगाना रहे। और सियाहत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कि आ यका व तन्हा ज़र्रद ज़िन्दगी गुज़ारी है और बजुज़ एक प्याला व कंघी के पास न रखा। जब उन्होंने देखा कि किसी ने अपने दोनों हाथों को मिलाकर प पिया है तो उन्होंने प्याला भी तोड़ दिया और जब किसी को देखा कि उंगलि से बालों में कंघी कर रहा है तो कंघी भी तोड़ दी। और गुदड़ी यानी सूफ़ लिबास हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कि उन्होंने पशमीनी कपड़े पहने। अ फ़क्र सय्यदि आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से है कि जिन्हें रूए ज़मी के तमाम ख़ज़ानों की कुंजियां इनायत फ़रमा दी गई थीं और इरशाद हुआ आप खुद को मुशक्क़त में न डालें बल्कि आप इन ख़ज़ानों को इस्तेमाल आराइश इख़्तियार फ़रमायें लेकिन बारगाहे इलाही में आपने अर्ज़ किया। ऐ खु मुझे इसकी हाजत नहीं है। मेरी ख़्वाहिश तो यह है कि एक रोज़ शिकम सेर हो तो दो रोज़ फ़ाक़ह करूं तसव्वुफ़ की यह आठ उसूली ख़साइल हैं जो अफ़आ व किरदार में महमूद हैं।

(१४) हज़रत हसरी अ़लैहिर्रिमह फ़रमाते हैं कि-

सूफ़ी मअ़दूम होने के बाद हस्ती की तमन्ना नहीं करता है और मौजूद ह के बाद मअ़दूम होने की ख़्वाहिश नहीं करता। मतलब यह है कि वह जो

भी पाता है उसे किसी हाल में ग़म नहीं करता और जो चीज़ गुम हो जाए उसको किसी हाल में भी हासिल करने की कोशिश नहीं करता। इसके दूसरे मानी यह हैं कि इसकी याफ़्त किसी तरह ना याफ़्त न होगी और इसकी ना याफ़्त किसी तरह याफ़्त न होगी। ताकि इस्बात बे नफ़ी और नफ़ी बग़ैर इस्बात के हो जाए इस क़ौल का मक़सद यह है कि सूफ़ी की बशरीयत कामिल तौर पर फ़ना हो कर उसके जिस्मानी शवाहिद उसके हक़ से जाते रहें और उसकी निस्बत सबसे मुनक़तअ़ हो जाए ताकि बशरीयत का भेद किसी के हक़ में ज़ाहिर न हो। यहां तक कि यह फ़र्क़ अपने अ़ैन में जमा हो कर अपने आप क़ियाम पा जाएं। यह सूरते हाल दो नबियों मे ज़ाहिर हुई है एक हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम में कि जिनके वजूद में अदम नहीं था यहां तक कि दुआ की -

मेरे रब मुझे शरहे सदर अता फ़रमा और मेरा मुआ़मिला मुझ पर आसान कर दे, और दूसरी ज़ाते मुबारक हमारे रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु अ़लैहिस्सलाम की है कि आप के अदम में वजूद न था जैसा कि इरशाद हुआ है -

क्या हमने आपके लिए शरहे सदर न फ़रमाया।

एक नबी ने आराइश व ज़ीनत की दरख़्वास्त की और दूसरे को हक़ तआ़ला ने खुद आराइश व ज़ीनत से मुज़ैन फ़रमाया और उन्होंने उसकी दुआ नहीं की।

(१५) हज़रत अली बिन पिन्दार सीरफ़ी नीशापूरी रहमतुल्लाह अ़लैहि ने फ़रमाया-

तसव्वुफ़ यह है कि सूफ़ी अपने ज़ाहिर व बातिन में हक़ की ख़ातिर खुद को न देखे चुनांचेह जब तुम ज़ाहिर पर नज़र डालोगे तो ज़ाहिर में तौफ़ीक़ का निशान पाओगे और जब तुम ग़ौर करोगे तो ज़ाहिरी मुआ़मिलात को तौफ़ीक़े हक़ के मुकाबला में देखोगे तो मच्छर के पर के बराबर वज़न न दोगे और ज़ाहिरी देखना छोड़ दोगे और जब बातिन पर नज़र डालोगे तो बातिन में ताईदे हक़ के निशान पाओगे फिर जब ग़ौर करोगे तो बातिनी मुआ़मिलात को ताईदे हक़ के पहलू में देख कर ज़रा भर वज़न न दोगे लिहाज़ा बातिन के देखने को भी तर्क कर के सरासर हक़ का मुशाहिदा करोगे। जब हक़ का मुशाहिदा करोगे तो खुद को भी देख सकोगे।

(१६) हज़रत मुहम्मद उमर बिन अहमद मक़री रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हक़ तआ़ला के साथ अहवाल की इस्तेक़ामत का नाम तसव्वुफ़ है मतलब यह कि सूफ़ी के अहवाल किसी और हाल से न बदलेंगे और वह किसी कजरवी

में मुबतला न होगा। इस लिए कि जिसका दिल गर्दिशे अहवाल से महफ़ूज़ है वह दर्जाए इस्तेक़ामत से नहीं गिरता और न वह हक़ तआला से दूर रहता है।

सूफ़िया के मुआमलातः- (१) हज़रत अबू हफ़स हद्दाद नीशापूरी रहमतुल्लाह अ़लैहि सूफ़िया-ए-किराम के मुआमला के सिलसिले में फ़रमाते हैं कि-

तसव्वुफ़ सरासर अदब है हर वक़्त हर मक़ाम और हर हाल के लिए मुतअय्यन आदाब व अहकाम हैं। जिसने इन आदाब की पाबन्दी को उनके औक़ात में लाज़िम रखा वह मर्दाने खुदा के दर्जा पर फ़ाइज़ हो गए और जिसने इन आदाब की पाबन्दी को मलहूज़े ख़ातिर न रखा और उसे राईगां कर दिया वह कुर्बे हक़ के ख़्याल और क़बूले हक़ के गुमान से महरूम रह कर मरदूद बन गया। इसी मानी में।

(२) हज़रत अबुल हसन रहमतुल्लाह अ़लैहि का इरशाद है कि-

रस्म व इल्म का नाम तसव्वुफ़ नहीं है बल्कि वस्फ़ व अख़्लाक़ का नाम है मतलब यह है कि अगर रस्म का नाम तसव्वुफ़ होता तो रियाज़त व मुजाहदे से हासिल हो जाता। और अगर इल्म का नाम तसव्वुफ़ होता तो तालीम की जा सकती मगर यह तो सरापा अख़्लाक़ है। हत्ता कि अगर उसके हुक्म अपनी हस्ती मे जारी न करो और उसके मुआमलात को अपने वजूद मे नाफ़िज़ न करो और उसके इन्साफ़ को अपने ऊपर न इस्तेमाल करो तो हरगिज़ तसव्वुफ़ हासिल न होगा।

रस्म व अख़्लाक़ का फ़र्क़ः- रुसूम व अख़्लाक़ के दरमियान फ़र्क़ यह है कि रस्म ऐसा फ़ेअ़ल है जो तकलीफ़ व मेहनत और असबाबे ज़राए से हासिल हो जाता है। मसलन ऐसा अमल जो बातिन के बर ख़िलाफ़ ज़ाहिरी तौर पर किया जाए और वह फ़ेअ़ल व अमल बातिन मानी से ख़ाली हो। और अख़्लाक़ ऐसा फ़ेअ़ले महमूद है जो बे तकलीफ़ व मेहनत और बग़ैर असबाब व ज़राए के बातिन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर में किया जाए और वह दावे से ख़ाली हो।

नेक ख़साइलः- (३) हज़रत मुरतइश रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि नेक ख़साइल का नाम तसव्वुफ़ है इसकी तीन क़िस्में हैं।

(१) यह हक़ तआला के अवामिरो-नवाही को बग़ैर सुमा व रिया के अदा किया जाए।

(२) यह कि बड़ों की इज़्ज़त व तअज़ीम और छोटों पर शफ़क़त व मेहरबानी और बराबर वालों से हक़ व इन्साफ़ पर क़ाइम रहते हुए किसी एवज़ व बदले

का तालिब न हो।

(३) यह तीसरी क़िस्म अपनी ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ है वह यह कि वह नफ़्स व शैतान की मुताबअ़त न करे।

जिसने अपनी ज़ात को इन तीनों ख़सलतों से मुज़य्यन कर लिया वह तमाम नेक ख़सलतों का ख़ूगर बन गया। यह ख़साइल इस हदीस से माख़ूज़ हैं जो हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रदियल्लालु अन्हा से मरवी है। उनसे किसी ने अर्ज़ किया कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़्लाक़े शरीफ़ा की तालीम फ़रमाइये। आपने फ़रमाया क़ुरआने करीम पढ़ो अल्लाह तआ़ला ने उसमें आपके अख़्लाक़े हमीदा बयान फ़रमाए हैं। यह दलील पहली क़िस्म की है लेकिन दूसरी और तीसरी क़िस्म की दलील यह है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

दरगुज़र को इख़्तियार करो और नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से दूर रहो।

हज़रत मुरतइ फ़रमाते हैं कि-

यह निखरी हुई तसव्वुफ़ की राह है इसमें बिल्कुल आमेज़िश न करो और नक़ली सूफ़ियों के मुआ़मलात को न मिलाओ और रुसूम के पाबन्द लोगों से इजतनाब करो।

जब ज़माने के दुनियादार लोगों ने देखा कि नक़ली सूफ़ी पावों पर थिरकते, गाना सुनते और बादशाहों के दरबार में जा कर उन से माल व मनाल के हुसूल में हिर्स व लालच का मुज़ाहिरा करते हैं। दरबारी देखते हैं तो वह उनसे नफ़रत करते और तमाम सूफ़ियों को ऐसा ही समझ कर सब को बुरा कहने लगते हैं कि उनके सही तौर व तरीक़ होते हैं और पिछले सूफ़ियों का हाल भी ऐसा ही था हालांकि वह हज़रात ऐसी लग़वियतों से पाक व साफ़ थे वह इस पर ग़ौर व तफ़हहुस नहीं करते यह ज़माना दीन में सुस्ती व ग़फ़लत का है।

बिला शक व शुबहा जब बादशाह व हुक्काम पर हिर्स का ग़लबा होता है तो वह इसे जुल्मो-सितम पर आमादा कर देता है और अहले ज़माना तमअ़ व नाफ़रमानीऔर ज़ना व फ़िस्क़ में मुबतला हो जाते हैं। रियाकारी ज़ाहिद को निफ़ाक़ में झोंक देती है और हवाए नफ़्सानी सूफ़ी को पावों पर कुदाती है और गाना सुनने पर उभारती है। ख़बरदार होशियार! तरीक़त के झूटे मद्दुअ़ी ही तबाह होते हैं न कि असले तरीक़त। खूब याद रखो कि अगर मसख़रों की जमाअ़त अपनी मसख़रगी को बुज़ुर्गों की रियाज़त व मुजाहिदे के अन्दर हज़ार बार पोशीदा रखे तो बुज़ुर्गों की रियाज़त व मुजाहदा मसख़रगी नहीं बन सकती।

(४) हज़रत अबू अली क़ज़मीनी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

पसन्दीदा और महमूदा अफ़आ़ल व अख़्लाक़ का नाम तसव्वुफ़ है यानी बन्दा हर हाल में अल्लाह तआ़ला से राज़ी व ख़ूश रहे। रज़िया और रज़ी के मानी राज़ी व ख़ूश होने के हैं।

(५) हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

यानी नफ़्स और हिर्स व हवा की गुलामी से आज़ादी पाने बातिल के मुक़ाबले में जुरअत व मर्दानगी दिखाने, दुनियवी तकल्लुफ़ात को तर्क कर देने, अपने माल को दूसरों पर सर्फ़ कर देने, और दुनिया को दूसरों के लिए छोड़ देने का नाम तसव्वुफ़ है।

फ़ुतूव्वत यह है कि अपनी जवां मर्दी व मर्दानगी के देखने से आज़ाद हो। तरक तकल्लुफ़ यह है कि मुतअ़ल्लेक़ीन के साथ हुस्ने सुलूक करे और तक़दीर से राज़ी रहे। और सख़ावत यह है कि दुनिया को दुनियादारों के लिए छोड़ दे।

(६) हज़रत अबुल हसन क़ौशुन्जा रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि-

आज बे हक़ीक़त चीज़ का नाम तसव्वुफ़ समझ लिया गया है वरना इसके क़बल बग़ैर नाम एक हक़ीक़त थी। मतलब यह है कि सहाबा किराम और सलफ़े सालेहीन के ज़माने में यह नाम तो न था मगर इसके मानी मौजूद थे। अब नाम तो है मगर मानी का वजूद नहीं। यानी मुआ़मलात व किरदार तो मअ़रूफ़ थे लेकिन दअ़वा मजहूल था। अब दअ़वा मअ़रूफ़ है लेकिन मुआ़मलात मजहूल हैं।

तसव्वुफ़ के मुआ़मलात, मुआ़नी व हक़ाइक़ के इज़हार व बयान में मशाइख़े तरीक़त के मज़कूरा इरशादात तालिबे हक़ की रहनुमाई के लिए काफ़ी हैं। लेकिन जो तसव्वुफ़ के मुन्किर हैं उनसे दर्याफ़्त किया जाए कि तसव्वुफ़ के इन्कार से तुम्हारी क्या मुराद है और अगर महज़ इसके नाम से इन्कार है तो कुछ मुज़ाइक़ा नहीं है। लेकिन इस तरह इस के मुआ़नी व हक़ाइक़ से इन्कार लाज़िम नहीं आता। फिर भी अगर इसके मुआ़नी व हक़ाइक़ से इन्कार है तो यह इन्कार कुल शरीअ़ते इस्लामिया का इन्कार बन जाएगा यही नहीं बल्कि यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़्लाक़े हमीदा और ख़साइले जमीला और उसवा-ए-हसना का इन्कार भी कहलाएगा। और इस इन्कार के बाद पूरा दीन रियाकारी बन जाता है मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें ऐसा फ़रमां बरदार और सईद बनाए जिस तरह अपने दोस्तों को बनाया है। और मैं वसीयत करता हूं कि ख़ुदा

के उन दोस्तों, वलियों और हक़ नेयूश सूफ़ियों के साथ हक़ व इन्साफ़ को हमेशा मलहूज़ रखना। दअवा कम करना और अहलुल्लाह से हुस्ने एतेक़ाद रखना वल्लाहुत्तोफ़ीक़।

सूफ़िया-ए-किराम का लिबास यानी गुदड़ी

पशम और ऊन व सूफ़ का मख़सूस वज़्अ़े क़तअ़ का लिबास जिसे गुदड़ी कहते हैं सूफ़ियाए किराम का शेआ़र है। और यह लिबास सुन्नत के मुवाफ़िक़ है क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

पशमीनी लिबास इख़्तियार करो क्योंकि इससे अपने दिलों में ईमान की शीरी पाओगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक सहाबी का इरशाद है कि आप सूफ़ी (पशमीन) का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते और दराज़गोश (गधे) पर सवारी फ़रमाया करते थे। नीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया-

कपड़े को ज़ाए न करो जब तक कि पेवन्द लगने की गुनज़ाइश हो। सय्यदुना फ़ारूक़े आ़ज़म उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बारे में मरवी है कि आपके पास एक गुदड़ी ऐसी थी कि जिसमें तीस पेवन्द लगे थे। नीज़ मनकूल है कि सबसे बेहतर लिबास वह है जिसमें आसानी से मेहनत की जा सके।

सय्यदुना अमीरुल मोमेनीन अली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहहु के पास एक पैरहन ऐसा था जिसकी आस्तीनें उंगलियों तक आती थीं अगर किसी पैरहन की आस्तीनें उंगलियों से बढ़ जाती थीं तो ज़ाइद हिस्से को तरशवा दिया करते थे क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म दिया-

आप अपने लिबास को तरशवा कर मौंज़ूं ज़ेबेतन फ़रमाएं।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैंने सात बदरी सहाबियों को देखा है जो पशमीना का लिबास पहनते थे। सैयदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़िलवत में सूफ़ का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते थे। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को एक गुदड़ी पेवन्द लगी पहने देखा है। सय्यदुना अमीरुल मोमेनीन उमर बिन ख़त्ताब, सय्यदुना अमीरुल मोमेनीन अ़ली मुर्तज़ा

और हरम बिन हयान रज़ियल्लाहु अन्हुम बयान फ़रमाते है कि हमने हज़... ओवेस क़रनी रहमतुल्लाह अ़लैहि को पशमीना का लिबास पहने देखा जिस... पेवन्द लगे हुए थे।

हज़रत हसन बसरी, मालिक बिन दीनार और हज़रत सुफ़यान स... रहमतुल्लाह यह सब गुदड़ी ज़ेबे तन किया करते थे। इमामे आज़म सय्यद... अबुहनीफ़ा कूफ़ी रहमतुल्लाह अ़लैहि के बारे में मुहम्मद बिन अ़ली हकी... तिर्मिज़ी किताब तारीखे़ मशाइख़ में नक़ल फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़... ने इबतेदा में गुदड़ी पहनकर ख़िलवत नशीनी का इरादा फ़रमाया उस वक़्... आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ख़्वाब में दीदार हु... हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम्हें लोगों के दरमियान रहना चाहिए यानी ख़िलव... नशीनी के इरादे को छोड़ कर ख़ल्कुल्लाह के सामने आ जाओ क्योंकि तुम्हा... ज़रीअ़े से मेरी सुन्नतें ज़िन्दा होंगी। चुनांचेह आपने ख़िलवत का इरादा त... फ़रमा दिया और क़ीमती लिबास कभी न पहना।

हज़रत दाऊद तायी रहमतुल्लाह अ़लैहि जो मुहक़्क़ेक़ीने सूफ़िया में से... हमेशा गुदड़ी पहना करते थे। एक मर्तबा हज़रत इब्राहीम अदहम गुदड़ी प... हज़रत इमामे आ़ज़म की मजलिस में आए तो लोगों ने उनको बनज़रे हिक़ा... देखा इमामे आ़ज़म ने फ़रमाया यह इब्राहीम अदहम हमारे सरदार हैं जो तशरी... लाए हैं। लोगों ने अर्ज़ किया ऐ इमामे आ़ली मरतबत! आपकी ज़बान क... लग़वियात से आलूदा नहीं हुई यह सयादत व सरदारी के कैसे मुस्तहिक़ ब... गए? इमाम साहब ने फ़रमाया इन्होंने ख़िदमत कर के सयादत पाई है। यह ह... वक़्त अल्लाह तआ़ला की ख़िदमत व इबादत में मशग़ूल रहते हैं। और हम अप... नफ़्स परवरी में मसरूफ़ रहते हैं इस लिए यह हमारे सरदार हैं। आज कुछ लो... गुदड़ी पहन कर जाह व इज़्ज़त हासिल कर लेते हैं मगर उनके दिल ज़ाहिर... मुताबिक़ नहीं हैं तो क्या मुज़ाइक़ा हर लशकर में बहादुर शुजाअ़ चन्द ही हो... हैं इज़दहाम में मुहक़्क़िक़ कम होते हैं। लेकिन सबकी निस्बत उनकी तरफ़ क... दी जाती है। क्योंकि सूफ़िया का यह मसलक मज़कूरा अमली मिसालों औ... नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मज़कूरा इरशादात के इला... आपके इस इरशाद पर भी मबनी है कि-

जिसकी मुशाबेहत जो इख़्तियार करे ख़्वाह वह मुशाबेहत क़ौल व फ़ेअ़... में हो या एतेक़ाद में वह उसी क़ौम का फ़र्द शुमार किया जाता है।

सूफ़िया-ए-किराम के देखने वालों के तबक़ात मुख़्तलिफ़ हैं। (१) कोई तो उनके ज़ाहिरी मुआमलात और उनकी ख़सलतों पर नज़र डालता है (२) और कोई उनकी बातिनी सफ़ाई दिल की जिला-ए-खुफ़िया असरार, तबअ़ी लताफ़त, एतेदाल मिज़ाज और दीदारे रब्बानी के असरार में सेहते मुशाहिदा को देखता है ताकि मुहक़्क़ेक़ीन का कुर्ब और उनकी रफ़अ़ते कुबरा को देखे और उनसे शरफ़े नियाज़मन्दी बजाला कर उनके मक़ाम से वाबस्ता हो जाए। और तअ़ल्लुक़े ख़ातिर पैदा कर के बसीरत हासिल करे क्योंकि उनके हाल की इबतेदा कश्फ़े अहवाल और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और उसकी लज़्ज़तों से एराज़ व किराना कशी पर मबनी होती है।

(३) एक तबक़ा ऐसा है जो जिस्म की दुरुस्तगी, दिल की पाकीज़गी और क़ल्ब की सुकून व सलामती को उनके ज़ाहिरी हाल में देखना चाहता है ताकि वह शरीअ़त पर अमल करने और उसके मुस्तहिबात व आदाब की हिफ़ाज़त और बाहम मुआ़मलात में हुस्ने अमल को देख सके और उनकी सुहबत इख़्तियार कर के इसलाहे हाल कर सके। इस तबक़ा के हाल की इबतदा रियाज़त व मुजाहदा और हुस्ने मुआ़मला पर मबनी है।

(४) एक तबक़ा ऐसा है जो इंसानी अख़्लाक़ व मरव्वत व बरताओ, तरीक़े सुहबत व मजालिसत और उनके अफ़आ़ल में हुसने सीरत की जुस्तुजू करता हैं ताकि उनकी ज़ाहिरी ज़िन्दगानी में मरव्वत बरताओ की खूबी, बड़ों की तअ़ज़ीम, छोटों पर शफ़क़त व मेहरबानी और अज़ीज़ों और हमसरों के साथ हुस्ने सुलूक रवादारी को देख कर उनकी क़नाअ़त का अन्दाज़ा लगाए और उनकी तलब व बेनियाज़ी से कुरबत हासिल कर के उनकी सुहबत इख़्तियार करले और आसान ज़िन्दगी बसर करे और खुद को बन्दगाने सालेहीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दे।

(५) एक तबक़ा ऐसा है जिसे तबीअ़त की काहिली, नफ़्स की बुराई, जाह तलबी और बग़ैर फ़ज़ीलत के अलुवे मक़ाम की ख़्वाहिश और बे इल्म होने के बावजूद अहले इल्म के ख़साइस की जुस्तजू ने रसगरदां कर रखा है। वह खूब जानते हैं कि उनमें इस ज़ाहिरी दिखावे के सिवा कुछ भी नहीं है। वह महज़ ज़ाहिरी तमअ़ में उनकी सुहबत इख़्तियार करते हैं और मदाहनत के तरीक़ा पर उनके सथ अख़्लाक़ व करम का मुज़ाहिरा करते हैं और "सुलह कुल्ली" बन कर उनके साथ ज़िन्दगानी बसर करते हैं इसी बेना पर उनके दिलों पर हक़्क़ानी

बातों का कुछ असर नहीं होता और उनके जिस्मों पर हुसूले तरीक़त के मुजाहिदों की कोई अ़लामत पैदा नहीं होती। बावजूद कि वह ख़्वाहिशमन्द होते हैं कि महक़्क़िक़ों की मानिन्द लोग उनकी तअ़ज़ीम व तकरीम करें और उनसे वैसे ही ख़ौफ़ खायें जैसे अल्लाह तआ़ला के मख़सूस औलिया-ए-किराम से अ़वाम ख़ाइफ़ रहते हैं वह चाहते हैं उनकी अपनी आफ़तें उनकी सलाह में पोशीदा रहें ऐसे लोग उन सूफ़िया-ए-किराम जैसे वज़अ़ व क़तअ़ इख़्तियार करते हैं हालांकि उनका लिबास उनके मुआ़मला की दुरुस्तगी के बग़ैर उनके मकर व फ़रेब का पर्दा चाक करता है। ऐसे मकर व फ़रेब का लिबास, रोज़े क़ियामत हसरत व नदामत का मुवज्जिब होगा। ऐसे ही लोगों के बारे में हक़ तआ़ला का इरशाद है :-

उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने तौरात पर अमल नहीं किया उस गधे की मानिन्द है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो कितनी बड़ी मिसाल है उस क़ौम की जिसने अल्लाह की आयतों को झुटलाया। अल्लाह तआ़ला ज़ालिम क़ौम पर हिदायत के दरवाज़े बन्द कर देता है।

मौजूदा ज़माने में इस क़िस्म के लोग बकसरत हैं लिहाज़ा जहां तक हो सके ऐसों से बचने की कोशिश करो और उनकी तरफ़ क़तअ़न तवज्जो न दो इस लिए कि ऐसे नक़ली सूफ़ियों से अगर तुमने हज़ार बार सुलूक व तरीक़त हासिल करने की कोशिश की तो एक लम्हा के लिए भी तरीक़त का दामन तुम्हारे हाथ से आएगा। यह राह महज़ गुदड़ी पहनने से तै नहीं होती बल्कि यह मंज़िल रियाज़त व मेहनत से मिलती है। जो शख़्स तरीक़त से आशना और उससे वाक़िफ़ हो गया उसके लिए तोंगड़ी वाला लिबास भी फ़क़ीराना अबा है और जो इससे बेगाना व नाआशना है तो उसके लिये फ़क़ीराना गुदड़ी नहूसत वद्दबार की निशानी है। और आख़िरत में बाअ़से बद बख़्ती व शेक़ावत है। एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ है कि उन्होंने किसी से दरयाफ़्त किया कि-

"आप गुदड़ी क्यों नहीं पहनते? उन्होंने फ़रमाया निफ़ाक़ के डर से। इस लिए कि मर्दाने ख़ुदा का लिबास पहनना और उनका बोझ न उठाना कज़ब व निफ़ाक़ है।

और अगर यह लिबासे फुक़रा तुम इस लिए पहनते हो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें पहचाने कि तुम उसके ख़ास बन्दे हो तो वह बग़ैर लिबास के भी जानता है और अगर इस लिए पहनते हो कि लोग तुम्हें पहचानें कि तुम ख़ुदा के ख़ास

बन्दे हो अगर वाक़ई तुम ऐसे हो तब भी यह रियाकारी होगी।

हक़ीक़त यह है कि यह राह बहुत दुश्वार और पुरख़तर है और अहले हक़ इससे बरतर हैं कि वह कोई ख़ास लिबास इख़्तियार करें।

तज़किया-ए-नफ़्स और बातिनी सफ़ाई और अल्लाह तआला की जानिब से बन्दे पर फ़ज़्ल व करम है वरना सूफ़ यानी ऊन तो चौपावों का लिबास है।

लिबास तो एक हीला व बहाना है एक तबक़ा ने तो लिबास ही को क़ुर्बे इख़्तेसास का ज़रीआ जान रखा है और वह उसको पहनकर अपने ज़ाहिर को आरास्ता करते हैं और तवक़्क़ो रखते हैं कि वह उन्हीं में से हो जाएंगे इस तबक़ा के सूफ़िया अपने मुरीदों को ऐसा लिबास पहनने और गुदड़ी के इस्तेमाल की ताकीद कारते हैं और खुद भी सैर व सियाहत करते रहते हैं ताकि वह मशहूर व मारूफ़ हो जाएं। इस तरह मख़लूक़े खुदा (उनके फ़रेब में आकर) उनकी निगहबान और मुहाफ़िज़ बन जाती है। जब भी उनसे कोई ऐसी हरकत सरज़द होती है जो शरीअ़त व तरीक़त के ख़िलाफ़ है तो लोग उन पर तअ़न व तशनीअ़ शुरूअ़ कर देते हैं। अगर वह चाहें कि यह लिबास पहनकर मुर्तकिबे गुनाह हों तो ख़ल्क़ से शरम महसूस करते हैं।

बहरहाल गुदड़ी औलियाउल्लाह की ज़ीनत है अ़वाम इससे इज़्ज़त हासिल करते और ख़्वास इससे कमतरी का एहसास दिलाते हैं। अ़वाम तो यूं इज़्ज़त हासिल करते हैं कि जब वह इस लिबास को पहनते हैं तो मख़लूक़े खुदा उनकी इज़्ज़त करती है और ख़्वास इस तरह कमतरी का एहसास दिलाते हैं कि जब वह गुदड़ी पहनते हैं तो लोग उन्हें अ़वामुन्नास में से जानकर उन्हें मलामत करते हैं। लिहाज़ा यह लिबास अ़वाम के लिए नेअ़मत है और ख़्वास के लए पैरहने इबतेला क्योंकि अकसर अ़वाम हक़ीक़त की पहचान में सरगरदां रहते हैं चूंकि यह मक़ाम व दर्जा उनकी दस्तरस और उनके फ़हम से बालातर है और वह इसके हुसूल का सामान भी नहीं रखते जिससे वह रईस बन जाएं महज़ इसी सबब को जमा नेअ़मत का ज़रीआ ख़्याल करते हैं लेकिन ख़्वास रिया व नुमूद और रियासत को छोड़ कर इज़्ज़त पर ज़िल्लत को नेअ़मत पर इबतला को, इस लिए तरजीह देते हैं कि ज़ाहिरी नेअ़मतें अ़वाम के लिए ही मुजिबे इज़्ज़त हैं मगर वह अपने लिए बला व मुसीबत को बाअ़से इफ़्तेख़ार जानते हैं।

हक़ीक़त यह है कि सूफ़िया के लिए गुदड़ी वफ़ा का लिबास है और मग़रूरों के लिए खुशी का पोशाक। इस लिए कि सूफ़िया उसे पहन कर दोनों जहान से

किनारा कश हो जाते हैं और तबअ़ी मरगूबात को छोड़ कर उनसे तर्क तअ़ल्लुक़ इख़्तियार कर लेते हैं। लेकिन मग़रूर लोग इस लिबास के सबब हक़ से महजूब होकर अहवाल की दुरुस्तगी से महरूम रहते हैं। बहरहाल यह लिबास हर एक के लिए फ़लाह का मुजिब है और हर एक को इससे अपनी मुराद हासिल हो जाती है किसी को मर्तबा-ए-सफ़ा मिलता है तो किसी को बख़्शिश व अ़ता। किसी के लिए हिजाब व पर्दा है तो किसी के लिए पाएमाली और पसपाई। किसी के किए रज़ा है तो किसी के लिए रंज व तअ़ब। मैं उम्मीद रखता हूं कि बाहमी मुहब्बत और हुस्ने सुहबत से सब के सब नजात पा जाएंगे क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है-

जो जिस गरोह से मुहब्बत रखेगा वह उन्हीं में से होगा। क़ियामत के दिन हर गरोह के दोस्तों को उन्हीं के साथ उठाया जाएगा और वह उन्हीं के जुमरे में शामिल होंगे लेकिन यह लाज़मी है कि अपने बातिन को हक़ीक़त की तलब में सरगरम रखे और दिखावे की रुसूम से इजतनाब करे इस लिए कि जो शख़्स ज़ाहिरी चीज़ों को पसन्द करता है वह हक़ीक़त तक कभी नहीं पहुंच सकता और यह भी वाज़ेह है कि वजूदे आदमियत, क़ुर्बे रुबूबियत के लिए हिजाब है और इस हिजाब को अहवाल की गर्दिशों और मक़ामात की रियाज़त व मुजाहिदा ही फ़ना वमअ़दूम करते हैं। वजूदे आदमियत की सफ़ाई और हिजाबात बशरी को दूर करने का नाम फ़ना है और जो फ़ानी सिफ़ात हो जाए वह लिबास इख़्तियार नहीं करता और ज़ेब व ज़ीनत में उलझकर क़ुर्बे हक़ और फ़नाए बशरियत का हुसूल ना मुम्किन है जो आदमी फ़ानी सिफ़त हो गया और उससे फ़नाए बशरियत की आफ़तें दूर हो गईं। आप उसे ख़्वाह सूफ़ी कह कर पुकारें या किसी और नाम से याद करें उसके नज़दीक सब यकसां है।

गुदड़ी पहनने के शराइत:- दरवेश के लिए गुदड़ी पहनने के कुछ शराइत हैं जो यह हैं कि वह उसे आसानी व फ़राग़त के ख़्याल से तैयार करे सालिम रहे उसमें पेवन्द न लगाए और जब कहीं से फट जाए तो उस पर पेवन्द लगाता जाए। पेवन्द लगाने के सिलसिले में मशाइख़े तरीक़त के दो क़ौल हैं। एक यह कि पेवन्द लगाने में तरतीब और आराइश का ख़्याल न रखना चाहिए बल्कि जहां से भी सूई निकले सीता चला जाए इसमें तकल्लुफ़ न करे और दूसरा क़ौल यह है कि पेवन्द लगाने में तरतीब और दुरुस्ती का ख़्याल रखना शर्त है ताकि मुनासिबत बरक़रार है और उसे बेतकल्लुफ़ दुरुस्त करना भी फ़क्र के मुआ़मलात

से तअ़ल्लुक़ रखता है और मुआमलात सही रखना सिहते असल की दलील है।

सय्यदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते हैं कि कि मैंने हज़रत शैख़ुल मशाइख़ अबुल क़ासिम गरगानी रहमतुल्लाह से मक़ाम तूस में दरयाफ़्त किया कि दरवेश के लिए कम से कम कौन सी चीज़ दरकार है जो फ़क्र के लाइक़ व मुनासिब हो? उन्होंने फ़रमाया तीन चीज़ें दरवेशी के लिए ज़रूरी हैं इनसे कम पर नामे फ़क्र ज़ेबा नहीं। एक यह कि गुदड़ी में पेवन्द की दुरुस्त सिलाई करे दूसरी यह कि सच्ची बात सुनना पसन्द करे और तीसरी यह कि ज़मीन पर पावं ठीक रखे (यानी तफ़ाख़ुर व तकब्बुर और इतराने की चाल न चले) जिस वक़्त उनसे यह बातें मअ़लूम हुई तो सूफ़िया की एक जमाअ़त उनके पास बैठी थी उन सबकी मौजूदगी में उन्होंने यह बातें बयान फ़रमाईं। जब हम उनकी महफ़िले मुबारक से बाहर निकले तो हर एक ने बहस व मुबाहिसा शुरूअ़ कर दिया और जाहिलों के एक तबक़े को इन बातों में लज़्ज़त व शीरनी महसूस होने गली वह कहने लगे कि बस इन्हीं तीन बातों का नाम फ़क्र है। चुनांचेह बहुतों ने बहुत से पेवन्द लगाए और ज़मीन पर दाहिना पावों मारने को मशग़ला बना लिया हर एक यह ख़्याल करने लगा कि हम तरीक़त की बातं अच्छी रतह समझते हैं चूंकि मुझे हज़रत शैख़ की बातों से लगाओ था मुझे उनकी बातों का इस तरह ज़ाए व बरबाद होना गवारा न हुआ मैंने उनसे कहा आओ और हम सब मिलकर इन बातों पर तबादेला-ए-ख़्यालात करें और हर एक अपनी-अपनी फ़हम व अक़्ल के मुताबिक़ उनकी तशरीह व वज़ाहत करे। चुनांचेह जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा कि गुदड़ी में दुरुस्त पेवन्द लगाने का मतलब यह है कि फ़क्र के लिए पेवन्द लगाया जाए न कि ज़ेब व ज़ीनत की ख़ातिर। जब फ़क्र के लिए पेवन्द लगा होगा तो वह पेवन्द अगरचेह बज़ाहिर दुरुस्त न हो तब भी फ़क्र में दुरुस्त होगा और सच्ची बात सुनने का खूगर होने का मतलब यह है कि वह हाल के लिए हों न कि अपने वजूद व मर्तबा के लिए और वजद की ख़ातिर इसमें तसर्रुफ़ करे न कि खेल-कूद और अ़ैश पसन्दगी के लिए और ज़मीन पर ठीक पावों रखने का मतलब यह है कि वजद की ख़ातिर ज़मीन पर पावों रखे न कि खेल-कूद लहव व लइब के लिए।

कुछ लोगों ने मेरी यह तशरीह व तौज़ीह हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम रहमतुल्लाह से नक़ल कर दी इस पर आपने फ़रमाया-

अली यानी दाता गंज बख़्श ने सही व दुरुस्त बात कही अल्लाह तआ़ला

उसे पसन्द फ़रमाए।

दरअसल सूफ़िया-ए-किराम का गुदड़ी पहनने से मक़सद यह है कि दुनियावी मुहब्बत व मुशक़्क़त में कमी हो और अल्लाह तआ़ला से फ़क्र व इहतियाज में सिदक़ व इख़्लास पैदा हो, अहादीस सहीहा में मनकूल है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास एक गुदड़ी थी जिसे वह अपने साथ आसमान पर ले गए। एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा है कि उनकी गुदड़ी के हर पेवन्द से नूर दरख़शां था। मैंने अर्ज़ किया ऐ हज़रत मसीह! आपकी गुदड़ी से यह अनवार कैसे दरख़शां हैं? फ़रमाया यह मेरे इज़्तरार और परीशानी के अनवार हैं। क्योंकि मैंने हर पेवन्द को इन्तिहाई ज़रूरत व इहतियाज के वक़्त सिया थां अल्लाह तआ़ला ने मेरे हर रंज व कुल्फ़त के बदले मुझे एक नूर अता फ़रमाया।

नीज़ मैंने मावराउल नहर में मलामती गरोह के एक आदमी को देखा कि इंसान जो चीज़ खाता और पहनता है वह आदमी उनमें से कुछ नहीं खाता और न पहनता था वह सिर्फ़ वही चीज़ें खाता था जिसे लोग फेंक देते थे। मसलन ख़राब कंकड़ी, कड़वा कद्दू बेकार गाजर वग़ैरह और वह ऐसी गुदड़ी पहनता था जिसके चीथड़े रास्ते में इकट्ठा कर के पाक किए जाते थे और फिर उनसे वह गुदड़ी बनाई जाती थी।

मैंने सुना है कि शहर मुरादअर्रदू में एक बुजुर्ग ऐसे थे जिनका शुमार मुतअख़्ख़ेरीन अरबाबे मुआ़नी में था जिनका हाल उम्दा और ख़सलत नेक थी। उनकी गुदड़ी और जाए नमाज़ में बे तरतीब पेवन्द लगे हुए थे और बिच्छुओं ने उसमें बच्चे दे रखे थे।

मेरे पीर व मुर्शिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इक्यावन साल तक एक ही गुदड़ी ज़ेबे तन रखी। वह इसमें बे तरतीब पेवन्द लगाते रहते थे।

अहले ईराक़ की एक हिकायत में पढ़ा है कि दो दरवेश थे जिनमें एक तो साहिबे मुशाहदा था और दूसरा साहिबे मुजाहदा। वह दरवेश जो साहिबे मुशाहदा था उसने अपनी तमाम उमर ऐसी फटी गुदड़ी पहनी जैसी कि बवक़्ते समाअ फटी गुदड़ी दरवेश पहनते हैं। और वह दरवेश जो साहबे मुजाहदा था उसने तमाम उमर ऐसी दरीदा गुदड़ी पहनी जैसी कि इस्तिग़फ़ा व आमेज़िश की हालत में होती है और इस हाल मे अपने लिबास को बोसीदा कर लिया करता था ताकि उसकी ज़ाहिरी हालत उसकी बातिनी कैफ़ियात के मुंताबिक़ हो जाए। यह

कैफ़ियत अपने हाल की हिफ़ाज़त के लिए होती थी।

हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ रहमतुल्लाह ने बीस साल तक इन्तिहाई सख़्त व दुरुश्त टाट पहना। वह हर साल चार चिल्ला करते और हर चालीस दिन में उलूम व हक़ाइक़ की बारीकियों पर एक किताब तस्नीफ़ फ़रमाते थे। उनके ज़माने में मुहम्मद बिन ज़करिया जो तरीक़त व हक़ीक़त के उलमा में अपना मक़ाम रखते हैं उनकी हालत यह थी कि वह चीते की खाल पर बैठते और कभी गुदड़ी तक न पहनते थे।

हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ से लोगों ने पूछा कि गुदड़ी पहनने के शराइत क्या हैं? और उसकी हिफ़ाज़त किस पर लाज़िम है? उन्होंने जवाब दिया गुदड़ी पहनने की शर्त यह है कि मुहम्मद बिन ज़करिया जैसे बुज़ुर्ग अपने उम्दा सफ़ेद लिबास की जगह गुदड़ी पहनें। और उन जैसे बुज़ुर्ग उस लिबास की हिफ़ाज़त फ़रमायें।

सूफ़िया के लिबास में मसलके एतेदाल : सूफ़ियाए किराम में तर्के आदात का तरीक़ा उनके शरायते में से नहीं है मौजूदा ज़माना में जो ऊनी लिबास कमतर पहनते हैं इसकी दो वजह हैं एक यह कि आजकल ऊन गंदी और ख़राब मिलती है क्योंकि जानवर पाक और गंदी जगहों पर उठते बैठते हैं। दूसरी यह कि अहले बिदअत व हआ और नक़ली सूफ़िया ने अदना लिबास को अपना शेआर बना लिया है मुबतदेई के शेआर के ख़िलाफ़ अमल करना अगरचे वह सुन्नत ही क्यों न हो दुरुस्त है।

लेकिन गुदड़ी के पहनने में तकल्लुफ़ को इस बिना पर जायज़ रख गया है कि उनका मर्तबा लोगों में बुलंद व बरतर है और हर शख़्स सूफ़िया की मुशाबहत इख़्तेयार करने की कोशिश करता है और उनसे ख़िलाफ़े शरीअत व तरीक़त हरकात का सुदूर होता है ऐसे ना अहल लोगों की सोहबत से उनको रंज होता है इसलिये उन्होंने ऐसे लिबास को इख़्तेयार कर लिया है जिसमें बजुज़ उनके और कोई इस तरह के पेवंद नहीं लगा सकता। ऐसी गुदड़ी को अपने और ग़ैरों के दर्मियान इम्तेयाज़ी निशान बना रखा है। एक दरवेश किसी बुज़ुर्ग के पास हाज़िर हुआ उसने जो पेवंद लगा रखे थे वह कुछ कुशादा थे। उस बुज़ुर्ग ने उसको अपने पास से दूर कर दिया और उसकी गुदड़ी उधेड़ डाली। इसलिये कि सफ़ा का मतलब तो यह है कि असल तबअ को नर्म और मिज़ाज को लतीफ़ बना दिया जाये। बिला शुबह तबअ की दुरुश्ती अच्छी नहीं है जिस तरह कि ग़ैर

मौजूं और शेअर तबीयत पर गिरा गुज़रता है इस तरह ना मौज़ों फ़ेअल तबीयत पर गिरां होता है।

एक तबक़ा ऐसा भी है जिसने लिबास के होने या न होने में तकल्लुफ़ नहीं किया अगर अल्लाह ने इन्हें गुदड़ी दी तो ज़ेब तन कर ली अगर क़बा दी तो भी पहन लिया और अगर बरहना रखा तो बरहंगी में भी सब्र व शुक्र किया।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने इसी मसलक एतेदाल को इख़्तेयार कर रखा है और लिबास के पहनने में इसी तरीक़ा को पसंद करता हूं।

हज़रत अहमद बिन ख़िज़्र रहमतुल्लाह अलैहि जिस वक़्त हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि की ज़ेयारत को आये तो वह क़बा ज़ेब तन किये हुए थे। और जब हज़रत शाह शुजअ अबू हफ़्स मुलाक़ात करने आये तो वह भी क़बा पहने हुए थे। मुक़र्ररा लिबास उनके जिस्म पर न था क्योंकि वह अक्सर औक़ात गुदड़ी पहना करते थे और बसा औक़ात वह पेरहन या सफ़ेद क़मीस पहन लिया करते थे। ग़र्ज़ कि जो लिबास भी मुयस्सर आ जाता उसी को ज़ेब तन फ़रमाते थे चूंकि आदमी का नफ़्स आदी और ख़ुद पसंद होता है। जैसी ख़ू और आदत डाली जाये वह उसी का गुलाम हो जाता है। जब नफ़्स को कोई आदत पड़ जाती है तो यह हिजाब बन जाता है इसी बिना पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया खैरुल सयाम सोम अख़ी दाऊद अलैहिस्सलाम बेहतरीन रोज़े मेरे भाई हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के थे। सहाबए किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वह कैसे रोज़े रखा करते थे? आप ने फ़रमाया वह एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन इफ़तार से रहा करते थे कि नफ़्स को रोज़ा रखने या न रखने की आदत न पड़ जाये और वह हिजाब न बने।

यही आदत हज़रत अबू हामिद दोस्तां मरूज़ी की थी कि उनको जो लिबास भी मुरीदीन पहना दिया करते थे वही पहन लेते थे फिर जब किसी को उस कपड़े की ज़रूरत होती तो उतारकर उसे दे दिया करते थे। हज़रत अबू हामिद पहनाने वाले से कुछ दर्याफ़्त न फ़रमाते थे क्यों पहनाया और क्यों उतारा। हमारे ज़माने में भी ऐसे बुज़ुर्ग ग़ज़नी में मौज़ूद हैं जिनका लक़ब मुईयिद है जो अपने लिये लिबास में पसंदीदगी और अदमे पसंदीदगी को मलहूज़ नहीं रखते इस लिहाज़ से यह तरीक़ा दुरुस्त है।

लिबास में रंगों की मसलेहत : अक्सर सलफ़े सालेहीन सूफ़िया किराम का लिबास बईं वजह नीलगों रहता था कि वह अक्सर सैर व सेयाहत में रहते थे चूंकि सफ़ेद लिबास हालते सफ़र में गर्द व गुबार वग़ैरह से जल्द मैला हो जाता है और उसका धोना भी दुश्वार होता है इस वजह को ख़ास तौर पर मलहूज़ रखते थे। दूसरी वजह यह है कि नीलगों रंग मुसीबत ज़दा और ग़मज़दों का शेआर है यह दुनिया चूंकि मसाइब व आलाम का घर और ग़म व अंदोह की ख़ंदक और ग़मख़ानए फ़िराक़ और इब्तेला का गहवारा है जब अहले इरादत ने देखा कि इस दुनिया में मक़सूद बरआरी मुमकिन नहीं तो उन्होंने यह लिबास पहनना शुरू कर दिया और वस्ल के ग़म में सोगवार बन गये।

सूफ़िया का एक तबक़ा ऐसा भी है कि जब उन्हें मामलाते तसव्वुफ़ में क़ुसूर और कोताही और दिल में ख़राबी के सिवा कुछ नज़र न आया और दुनिया में ज़ियाअे वक़्त के सिवा कुछ न पाया तो सोगवारी इख़्तेयार कर ली। इसलिये कि वक़्त ज़ाया करना किसी की मौत से ज़्यादा सख़्त है। किसी ने अपने किसी अज़ीज़ की वफ़ात पर सोग बनाया और किसी ने मक़सूद के फ़ौत होने पर सोगवारी की।

किसी मूद्दई-ए-इल्म ने किसी दरवेश से पूछा यह सोगवारी क्यों इख़्तेयार कर रखी है? उन्होंने जवाब दिया चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन चीज़ें छोड़ी हैं एक फ़क़्र, दूसरा इल्म, तीसरी तलवार। तलवार तो बादशाहों ने ले ली। मगर उन्होंने उसे बे महल इस्तेमाल किया। और इल्म उलमा ने इख़्तेयार किया लेकिन उन्होंने इसको सिर्फ़ पढ़ने पढ़ाने तक महदूद रखा। और फ़क़्र को फ़ुक़रा के गरोह ने इख़्तेयार कर लिया मगर उन्होंने उसे तवंगरी और मालदारी का नअमुल बदल बना लिया। मैंने इन तीनों मुसीबतों पर सोगवारी का यह लिबास इख़्तेयार कर रखा है।

हज़रत मुरतइश रहमतुल्लाह अलैहि से मंक़ूल है कि वह एक दिन बग़दाद के एक मुहल्ला से गुज़र रहे थे कि उन्हें प्यास लगी एक दरवाज़ा पर जाकर दस्तक दी और पानी मांगा एक औरत पानी का बर्तन लेकर हाज़िर हुई उन्होंने पानी लेकर पिया जब पानी पिलाने वाली पर नज़र पड़ी तो उनका दिल उस के हुस्न व जमाल पर फ़रीफ़्ता हो गया और वह वहीं बैठ गये यहां तक कि साहबे ख़ाना बाहर आया उससे हज़रत मुरतइश ने कहा ऐ ख़्वाजा! मेरा दिल एक घूंट पानी का प्यासा था तुम्हारे घर से जो औरत पानी लेकर आयी और मुझे पानी पिलाया,

वह मेरा दिल ले गयी है। साहबे ख़ाना ने कहा वह मेरी बेटी है, मैंने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया। इसके बाद मुरतइश दिल तलब की ख़ातिर घर के अंदर चले गये और उससे निकाह कर लिया। यह साहबे ख़ाना अमीर आदमी था उसने उन्हें हमाम भेजा और उम्दा लिबास पहनाकर गुदड़ी उतरवा दी। जब रात हुई तो हज़रत मरतइश नमाज़ में मश्गूल हो गये और ख़िलवत में जाकर दुरूद व वज़ीफ़ा पढ़ने लगे। उसी असना में उन्होंने आवाज़ दी मेरी गुदड़ी लाओ, लोगों ने पूछा क्या हुआ? उन्होंने फ़रमाया एक ग़ैबी आवाज ने मुझसे कहा कि ऐ मुरतइश! तुम ने एक नज़र हमारे ग़ैर पर डाली तो हमने उसकी सज़ा में सलाहियत का लिबास और ज़ाहिर से गुदड़ी उतार ली अब अगर तुम दूसरी बार निगाह डालोगे तो हम तुम्हारे बातिन से कुर्ब व मआरेफ़त का वह लिबास भी उतार लेंगे जिसके पहनने से अल्लाह तआला की रज़ा और उसके महबूबों और औलिया की मुहब्बत हासिल होती है और जिन पर बरक़रार रहना मुबारक होता है। अगर तुम हक़ तआला के साथ ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार सकते हो तो करो वरना तुम्हें अपने दीन की हिफ़ाज़त करनी चाहिये और औलिया किराम के लिबास में ख़ेयानत न करनी चाहिये ताकि तुम हक़ीक़ी और सच्चे मुसलमान बन सको और कोई दावा न करो यह इससे बेहतर है कि झूट परदिल को माइल किया जाये। यह गुदड़ी उन्हें ज़ैब देती है जो तारिकुल दुनिया या सालिके राहे हक़ हैं।

तर्बियते मुरीद का तरीक़ा : मशाइख़े तरीक़त की आदत है कि जब कोई तालिब व मुरीद तारिकुल दुनिया होकर उनसे वाबस्ता होता है वह उसे तीन साल तक तीन माने में मोअद्दब और खूगर बनाते हैं अगर वह इस में क़ायम व मुस्तहकम रहा तो बेहतर है वरना इससे कहते हैं कि मसलके तरीक़त में तुम्हारी गुंजाईश नहीं है। एक साल तक तो उसे ख़िदमते ख़ल्क़ में मसरूफ़ रखते हैं और दूसरे साल से हक़ तआला की ख़िदमत यानी रियाज़त व मुजाहदा कराते हैं और तीसरे साल अपने दिल की हिफ़ाज़त कराते हैं ख़ल्क़ की ख़िदमत इस तरह करायी जाती है कि वह खुद को सबका ख़ादिम और उनको अपने मख़दूम की मानिंद समझे मतलब यह कि बिला इस्तेसना सबको अपने बेहतर जाने और उनकी ख़िदमत को अपने ऊपर वाजिब जाने। इस सूरत की किसी तरह गुंजाईश नहीं है कि लोगों की ख़िदमत करते करते अपने आपको उनसे बेहतर व बालातर समझने लगो। ऐसी हालत बादशाहों और तवंगरों की होती है जो दरहक़ीक़त

आफ़ते ज़मानी है।

इसी तरह हक़ तआला का हक़ उस वक़्त अदा कर सकता है जब वह दुनिया व आख़िरत की तमाम ख़्वाहिशों से ख़ुद को महफ़ूज़ रखे और सब से क़तअ तअल्लुक़ करके यकसू होकर उसकी इबादत में मुनहमिक रहे क्योंकि जब तक हक़ तआला की इबादत किसी और शैय के लिये करता है तो वह गोया अपनी परस्तिश करता है न कि ख़ुदा की। और दिल की हिफ़ाज़त उस वक़्त कर सकता है जबकि अपने दिल को मज़बूत करके पूरी दिलजम और तमाम ग़म व अफ़्कार से पाक व साफ़ करके ग़फ़लत के वक़्त हुज़ूरे क़ल्ब के साथ मशग़ूल हो जब मुरीदे हक़ कोश में यह तीनों ख़सलतें पैदा हो जाती हैं तब उसके लिये गुदड़ी का पहनना ज़रूरी होता है।

लेकिन जब शैख़े कामिल अपने किसी मुरीद को गुदड़ी पहनने की इजाज़त मरहमत फ़रमाने लगे तो उस वक़्त शैख़ को लाज़िम है कि वह मुरीद में यह देखे कि वह अब मुस्तक़ीमुल हाल होकर तरीक़त के तमाम नशीब व फ़राज़ से गुज़र चुका है या नहीं? और यह कि उसने अहवाल की लज़्ज़त और आमाल के घूंट की चाशनी चखकर क़हरे जलाल और लुत्फ़ जमाल से आशना हुआ है या नहीं? नीज़ शैख़े तरीक़त यह भी मुलाहज़ा फ़रमाये कि यह मुरीद अहवाल की किस मंज़िल तक रसाई हासिल कर सकेगा और यह कि वापस होने वालों में से होगा या वाक़ेय होने वालों या कामिलों में से होगा? अब अगर उस मुरीद के वापस होने का ख़तरा हो तो उसे शुरू ही से मुरीद न करे। और अगर दर्मियान में रह जाने का अंदेशा हो तो उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करे और अगर कामयाबी होने की उम्मीद हो तो उसकी तर्बियत करे क्योंकि मशाइख़ तरीक़त दिलों के तबीब होते हैं जब तबीब को बीमार की बीमारी की ख़बर नहीं होतो ऐसा तबीब बीमार को हलाक कर देगा क्योंकि वह उसके मुआलजा को नहीं जानता। ख़तरे के मवाक़े को नहीं पहचानता। और मर्ज़ के ख़िलाफ़ ग़िज़ा और दवा का इस्तेमाल कराता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है अपनी क़ौम में शैख़ ऐसा होता है जैसे कि अपनी उम्मत में नबी। अंबियाए अलैहिमुस्सलाम ने जो अपनी क़ौम को दावत व तबलीग़ फ़रमाई वह उम्मत के हालात से वाक़िफ़ होकर फ़रमाई और उनको बिल्कुल उनके मिज़ाज के मुवाफ़िक़ दवा दी ताकि दावत का मक़सद पूरा हो जाये लिहाज़ा वेलायते रब्बानी में कमाल के लिये इन तीन साल के रियाज़त व मुजाहदे के बाद शैख़े

तरीक़त उसकी आगे तर्बियत फ़रमाये। ऐसी रियाज़त में जब कामिल हो जाये तो उस वक़्त गुदड़ी पहनने की इजाज़त देना मुनासिब होगा।

गुदड़ी पहनने की शर्त बिल्कुल कफ़न पहनने की शर्त की मानिंद है जिस तरह कि मुर्दा ज़िन्दगानी की लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है और हयाते दुनियावी की खुशियों से किनाराकशी इख़्तेयार कर लेता है उसी तरह जब मुरीद गुदड़ी पहन लेता है तो वह अपनी तमाम ज़िन्दगी को हक़ तआला के हुक़ूक़ की अदायगी और उसकी ख़िदमत में अपनी तमाम ज़िन्दगी वक़्फ़ कर देता है नफ़सानी ख़्वाहिशों से किनाराकश हो जाना ज़रूरी हो जाता है जब मुरीद में यह कैफ़ियात पैदा हो जाती हैं तब शैख़े तरीक़त गुदड़ी पहनने की इजाज़त देता है ताकि वह उसका हक़ अदा कर सके और किसी क़िस्म की ख़्वाहिश दिल में न ला सके।

ख़ुलासा यह कि गुदड़ी पहनने के सिलसिले में मशाइख़े तरीक़त ने बकसरत हिदायात व इशारात फ़रमाये हैं चुनांचे हज़रत अबू उमर असफ़हानी रहमतुल्लाह ने इस बाब में एक किताब मुस्तक़िल तसनीफ़ फ़रमाई है लेकिन बनावटी सूफ़ियों को गुदड़ी पहनने में बहुत इसरार और ग़ुलू है चूंकि इस किताब का मक़सद मशायख़े तरीक़त के अक़वाल का तहरीर करना नहीं है बल्कि सलूक व मअरेफ़त की उक़दा कुशाई और मुश्किलात का हल बयान करना है बई मुरक़्क़ा पोशी में सबसे बेहतर इशारा है कि अगर बयान सब्र का हो, दोनों आस्तीनें ख़ौफ़ व उम्मीद की, दोनों दामन क़ब्ज़ व बस्त के कमर नफ़्स के ख़िलाफ़ करने और दो कुरसी सेहते यक़ीन और फ़राख़ी-ए-इख़लास से मुरक्कब हो।

इससे ज़्यादा उम्दा इशारा यह है कि गुदड़ी का अगर बयान मुहब्बत की कबा से दोनों आस्तीनें हिफ़ाज़त व इसमत से दोनों दामन फ़क्र व सफ़ा से, कमर मुशाहदे में क़ायम रहने से, कुरसी बारगाहे इलाही में मामून रहने से और कुशादगी मुक़ामे वस्ल में क़रार पाने से मुरक्कब हो। जब तुमने बातिन के लिये ऐसी गुदड़ी तैयार कर ली तो ज़ाहिर के लिये भी ऐसी ही गुदड़ी बना सकते हो। इस बाब में मेरी एक मुस्तक़िल किताब है जिसका नाम असरारुल ख़िरक़ व लमूनात है तालिबे राहे हक़ के लिये उस किताब का पढ़ना ज़रूरी है।

लेकिन जब मुरीद ने इस गुदड़ी को न पहना और सुल्ताने वक़्त के क़हर जलाल और ग़ल्बए हाल से डरकर उसने गुदड़ी को चाक कर दिया तो उसे मजबूर व माज़ूर समझना चाहिये और जब बा इख़्तेयार व तमीज़ उसने गुदड़ी

को चाक किया तो तरीक़त के शराइत में से है कि फिर उसके लिये वाजिब हो गया कि वह गुदड़ी न रखे और न उसे पहने। अगर उसने गुदड़ी रखी तो गोया वह ऐसा है जैसा कि ज़माना साज़ सूफ़ी ज़ाहिरदारी में बग़ैर सफ़ाए बातिन गुदड़ी पहनते हैं। गुदड़ी चाक करने की हक़ीक़त यह है कि जब सालिके तरीक़त का एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की तरफ़ इंतेक़ाल होता है तो वह इज़हारे शुक्र में लिबास से बाहर आ जाता है। उस मक़ाम के लिये और कपड़े होते हैं लेकिन गुदड़ी तरीक़त और फ़क्र व सफ़ा के हर मक़ाम में एक जामेअ और मुकम्मल लिबास है और सबसे बाहर आने का मतलब यह है कि वह हर एक से किनाराकश हो गया है यह जगह इस मसले के बयान करने की नहीं है क्योंकि यह ख़िरक़ा और कश्फ़ में बयान करना चाहिये था ताहम मैंने इस जगह ही इशारा कर दिया ताकि ख़ल्ते मबहस न हो जाये यह मसला अपनी जगह तफ़सील से आयेगा।

यह भी मंकूल है कि गुदड़ी पहनाने वाले शैख़ को तरीक़त में इतना तसर्रुफ़ व इख़्तेयार हासिल हो कि जब किसी ग़ैर को पहनाए तो शफ़क़त व मेहरबानी के साथ उसको आशनाए मारेफ़त कर दे और जब किसी गुनाहगार को पहनाए तो उसे औलिया अल्लाह के गरोह में शामिल कर ले।

एक मर्तबा मैं अपने शैख़ के साथ आज़र बायजान गया तो ख़िरमने गन्दुम में दो तीन गुदड़ी पोशों को खड़े देखा जो गुदड़ी के दामन को फैलाए हुए थे। मज़ारअ ने गन्दुम के थोड़े से दाने उनकी झोली में डाल दिये। शैख़ ने उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होकर यह आयत करीमा पढ़ी-

यही वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी तो उन्हें उनकी तिजारत ने नफ़ा न दिया। और वह हिदायत याफ़ता न हुए।

मैंने अर्ज़ किया कि ऐ शैख़! यह लोग किस बिना पर इस बे इज़्ज़ती में मुब्तला हैं कि बर सरे आम ज़लील व ख़्वार होते हैं? शैख़ ने फ़रमाया उनके पैरों को मुरीदों के जमा करने का लालच है और उन मुरीदों को दुनियावी माल जमा करने की हवस है। किसी की हिर्स दूसरे की हिर्स से बेहतर नहीं है। और बग़ैर अमर हक़ दावत देना ख़्वाहिशात की परवरिश करना है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने बाबुल तलक़ के बाज़ार में एक आतिश परस्त को देखा जो निहायत हसीन व ख़ूबसूरत था मैंने बारगाहे इलाही में मुनाजात की कि ख़ुदाया इसे मेरी तरफ़ फेर दे। तूने इसे कितना

ख़ूबसूरत पैदा किया है कुछ अर्सा बाद वह आतिश परस्त मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा ऐ शैख़! मुझे कलिमए शहादत पढ़ाइये और मुसलमान करके दर्जए विलायत पर फ़ायज़ कीजिये।

हज़रत शैख़ अबू अली सबाह से किसी शख़्स ने दर्याफ़्त किया कि गुदड़ी पहनना किसे दुरुस्त है? उन्होंने जवाब दिया उस शख़्स के लिये जो ख़ुदा की सारी ममलुकत में मुशर्रफ़ होते हुए भी सारे जहान के कोई हुक्म और किसी हालत से बे ख़बर न हो।

गुदड़ी सालेहीन की निशानी, नेकों की अलामत और फ़ुक़रा व सूफ़िया का लिबास है और फ़क्र व सफ़ाई की हक़ीक़त का बयान पहले गुज़र चुका है अब अगर कोई औलियाए किराम के लिबास को दुनिया जमा करने का ज़रिया बनाये और उस लिबास को अपनी मासियत का सबब बनाये तो उस लिबास के ज़वाहिल हैं उनका कोई ज़्यादा नुक़्सान नहीं होता। हिदायत के लिये इसी क़दर काफ़ी है।

फ़क़रो सफ़वत के मायने में इख़्तेलाफ़ मशाइख़ इज़्ज़ाम

तरीक़त के अहले इल्म मशायख़ का फ़क्र व सफ़वत की तफ़सील में इख़्तेलाफ़ है। एक जमाअत फ़रमाती है कि ब-निसबत सफ़वत के फ़क्र ज़्यादा कामिल है और एक जमाअत कहती है कि ब-निसबत फ़क्र के सफ़वत ज़्यादा कामिल है। अव्वल जमाअत का इस्तदलाल यह है कि फ़क्र चूंकि फ़नाए कुल और इंक़तअे असरार का नाम है और सफ़वत इसके मक़ामात में से एक मक़ाम है जब फ़नाए कुल हासिल हो जाता है तो तमाम सफ़वत नापैद हो जाते हैं यह मसलए फ़क्र व फ़ना की तरफ़ रुजू करता है। पहले इसका बयान किया जा चुका है और दूसरी जमाअत का इस्तेदलाल यह है चूंकि फ़क्र एक शय मौजूद है जिसका नाम भी है और सफ़वत इस हालत का नाम है जो तमाम मौजूदात से पाक व साफ़वत हो, और यह कि सफ़ा ऐने फ़ना है और फ़क़र ऐन बक़ा लिहाज़ा फ़क्र इसके मक़ामात में से एक मकाम का नाम है और सफ़वत इसके कमालात में से एक कमाल का नाम। इस मसले में तवील बहस है मौजूदा ज़माने में हर शख़्स ताज्जुब ख़ेज़ बातें करता है और एक से एक बढ़कर हैरत अंगेज़ गुफ़्तगू करता है हालांकि फ़क्र व सफ़वत की तफ़सील व तक़दीम में इख़्तेलाफ़ है। महज़ बातें ही बनाना ब-इत्तेफ़ाक़ न फ़क्र है न सफ़वत। बाज़ ने बयान को मज़हब बनाकर उस पर तबअ आराई और नुक्ता संजी शुरू कर दी और

इदराक मुआनी से तर्बायत को ख़ाली करके हक़ बात को छोड़ दिया और ख़्वाहिशात की नफ़ी को ऐन नफ़ी और इसबात मुराद को ऐने इसबात करने लगे हैं यही वजह है कि वह अपनी ख़्वाहिशाते नफ़सानी के क़ियाम में मौजूद व मफ़कूद और मनफ़ी व मुसबत में महव होकर रह गये हैं हालांकि इन मुद्दईयों की तरीक़त लग़वियात से पाक व साफ़ है।

अलग़र्ज़ औलियाए किराम इस मक़ाम तक फ़ायेज़ होते हैं जहां कोई मक़ाम नहीं रहता और दरजात व मक़ामात सबके सब फ़ना हो जाते हैं और इन मुआनी को अलफ़ाज़ का जामा हरगिज़ नहीं पहनाया जा सकता। चुनांचे उस वक़्त न पीना रहता है न लज़्ज़त, न क़मअ न क़हर न होश व बेहोशी हर शख़्स इस कैफ़ियते मुआनी को ऐसे नामों से ताबीर करने की कोशिश करता है जो इसके नज़दीक बुज़ुर्ग तर हों। इस बुनियाद पर तक़दीम व ताख़ीर करना और आला अदना कहना जायज़ नहीं है क्योंकि तक़दीम व ताख़ीर और आला व अदना तो मुसम्मियात व मौजूदात के लिये है लिहाज़ा किसी जमाअत को इस्मे फ़क्र, मुक़द्दम व अफ़ज़ल मालूम हुआ और उनके नज़दीक यही नाम बुज़ुर्ग तर और मुशर्रफ़ मालूम हुआ क्योंकि उसने मंसूब करना शिकस्तगी व तवाज़ो का मुक़तज़ी है और किसी जमाअत को सफ़वत मुक़द्दम व अफ़ज़ल मालूम हुआ इन्हें यही नाम अच्छा लगा क्योंकि इससे इलाक़ा रख कर कदूरतें दूर होती हैं और फ़ना व आफ़ात क़रीब हो जाते हैं और चूंकि उनकी मुराद व मक़सूद का इज़हार इन ही दोनों नामों से हो सकता था (इसलिये हर एक ने एक एक नाम मुन्तख़ब कर लिया वरना) इन मुआनी के निशान व अलामात इन ताबीरात से जुदा थीं। यह नाम इख़्तेयार करने की इस लिये ज़रूरत पेश आयी कि बाहम इन इशारात में बात कर सकें! और अपनी कश्फ़े ज़ाती को इन नामों के ज़रिये बयान कर सकें इस तबक़ा से कोई इख़्तेलाफ़ नहीं है कि ख़्वाह इस मुआनी को फ़क्र से ताबीर करें या सफ़वत से। दूसरे यह कि ताबीर करने वाले साहबे ज़ुबान लोग चूंकि इनके मुआनी से ना आशना और बे ख़बर होते हैं इसलिये वह लफ़्ज़ी बहसों में उलझ कर रह गये किसी ने किसी को मुक़द्दम व अफ़ज़ल जाना और किसी ने किसी को हालांकि यह दोनों ताबीरात हैं न कि असल व हक़ीक़त। लिहाज़ा अहले हक़ को मुआनी की तहक़ीक़ और हक़ीक़त व मारेफ़त की तलाश में मुनहकिम रहे और यह लोग ताबीरात की तारीकियों में फंस कर रह गये। ख़ुलासा यह कि जब किसी को मुआनी हासिल हो जायें और वह उसे दिल का क़िब्ला बना ले तो ऐसे दरवेश को ख़्वाह फ़क़ीर कहो ख़्वाह सूफ़ी।

दोनों नाम इज़तेरारी हैं अहले मारेफ़त नामों के चक्कर में नहीं पड़ते।

यह इख़्तेलाफ़ हज़रत अबुल हसन समनून बाज रहमतुल्लाह अलैहि के वक़्त से चला आ रहा है क्योंकि वह जब ऐसे कश्फ़ में होते जो बक़ा से तअल्लुक़ रखता है तो फ़क्र को सफ़वत पर मुक़द्दम व अफ़ज़ल करते थे जिसे उस वक़्त के अरबाब मुआनी व अहले मारेफ़त जो समझते थे उन्होंने उनसे दर्याफ़्त किया कि ऐसा क्यों है? तो उन्होंने जवाब दिया कि जब तबीयत को फ़ना व निगूंसारी में लुत्फ़े ताम हासिल होता है और बक़ाव अलवी में भी तो उस वक़्त जब ऐसे मक़ाम में होता हूं जो फ़ना से ताल्लुक़ रखता है तो सफ़वत को फ़क्र पर अफ़ज़ल कहता हूं और जब ऐसे मुक़ाम पर होता हूं जिसका ताल्लुक़ बक़ा व उलूम से हो तो फ़क्र को सफ़वत पर मुक़द्दम व अफ़ज़ल कहता हूं क्योंकि फ़क्र बका ही का नाम है और सफवत फ़नाए कुल का। इस तरह ख़ुद से बक़ा की रोइयत को फ़ना करता हूं और फ़ना में ख़ुद से फ़ना की रोइयत को फ़ना कर देता हूं ताकि अपनी तबीयत फ़ना से भी फ़ानी हो जाये और बक़ा से भी फ़ानी।

यह रोमूज़ लफ़ज़ी एतेबार से उम्दा हैं लेकिन फ़ना को फ़ना नहीं होता और बक़ा को भी फ़ना नहीं है क्योंकि वह बाक़ी जो फ़ानी हो वह ताअज़ ख़ुद फ़ानी होता है। और जो फ़ानी के बाक़ी हो वह अज़ ख़ुद बाक़ी होता है और फ़ना नाम ही उस हालत का है जिसमें मुबालग़ा मुहाल व ममतनअ हो यह इसलिये है कि कोई यह न कह सके कि फ़ना हो गया क्योंकि यह कहना इस मानी के असरे वजूद की नफ़ी से मुबालग़ा करना होगा कि फ़ना में कोई असरे वजूद रह गया है जो अभी फ़ना नहीं हुआ। हालांकि जब फ़ना हासिल हो गयी तो फ़ना की फ़ना कुछ न होगी। ऐसा कहना बजुज़ इबारत में बे मायने तअज्जुब खेज़ी के और कुछ नहीं है।

अहले जुबान की यह लगवियतें हैं जो मफ़हूम व मुराद की ताबीर के वक़्त पैदा होती जाती हैं और हमारा बक़ा व फ़ना लिखना कलाम की इसी जिन्स से तअल्लुक़ रखता है जो बचपने की ख़्वाहिश और अहवाल की तेज़ी के वक़्त होता है जिसका एहतियातन हमने कुछ तज़किरा कर दिया है।

फ़क्र व सफ़वत के दर्मियान मानवी फ़क्र है लेकिन मामलात के एतेबार से फ़क्र व सफ़वत दुनिया से किनारा कशी का नाम है और यह किनारा कशी बजाए ख़ुद एक चीज़ है और उसकी हक़ीक़त फ़क्र व मिस्कीनी में मुज़मर है

फ़क्र व मिस्कीनी का फ़र्क़

मशाइख़ की एक जमाअत कहती है कि मिस्कीनी से फ़कीरी अफ़ज़ल है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

यह उन फुक़रा के लिये है जो राहे ख़ुदा में रोके गये और वह ज़मीन में फिरने की ताक़त नहीं रखते।

यह अफ़ज़लियत इसलिये है कि मिस्कीन साहिबे माल होता है और फ़क़ीर तारिके माल और यह कि फ़क़ीर अज़ीज़ होता है और मिस्कीनत हक़ीर और यह कि तरीक़त में साहिबे माल ज़लील होता है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है ''दिरहम व दीनार और नये पुराने कपड़े वालों को कमीना समझ'' इसलिये माल व दौलत से किनाराकशी करने वाले अज़ीज़ हैं क्योंकि तवंगर को माल पर एतेमाद होता है और तही दस्त को ख़ुदा पर तवक्कुल होता है।

मशाइख़े तरीक़त की एक जमाअत का नज़रिया मिस्कीनी है इसलिये कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दुआ में इसकी मुनाजात की है।

ऐ ख़ुदा मुझे मिस्कीन ज़िन्दा रख और मिस्कीनी की मौत दे और मिस्कीनों में हश्र फ़रमा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब फ़क्र को याद फ़रमाया तो इस तरह इरशाद फ़रमाया-

बसा औक़ात फ़क़ीरी कुफ़्र में मुब्तला कर देती है।

यह फ़र्क़ इसलिये है कि फ़क़ीर वह है जो सबब से तअ़ल्लुक़ रखता है और मिस्कीन वह होता है जो असबाब से तर्के तअ़ल्लुक़ करे। शरीअत में फुक़हा की एक जमाअत के नज़दीक फ़क़ीर वह है जो एक वक़्त का खाना रखता हो और मिस्कीन वह है जो यह भी न रखे। और एक जमाअत के नज़दीक मिस्कीन वह है जो साहिबे तोशा हो और फ़क़ीर वह है जो यह भी न रखे। इसी लिहाज़ से अहले तरीक़त मिस्कीन को सूफ़ी कहते हैं यह इख़्तेलाफ़ फुक़हा के इख़्तेलाफ़ के मुताबिक़ है जिनके नज़दीक फक़ीर वह है जो कुछ न रखे और मिस्कीन वह है जो एक वक़्त का तोशा रखे उनके नज़दीक सफ़वत से फ़क्र अफ़ज़ल है सफ़वत व फ़क्र के इख़्तेलाफ़ का बयान बर सबीले इख़्तेसार है।

मलामती तबका

मशाइख़े तरीक़त की एक जमाअत ने मलामत का तरीक़ा पसंद फ़रमाया है क्योंकि मलामत में ख़ुलूस व मुहब्बत की बहुत बड़ी तासीर और लज़्ज़ते कामिल पोशीदा है। और अहले हक़ मख़लूक़ की मलामत के लिये महख़सूस हैं। ख़ास कर बुज़ुर्गाने मिल्लत और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि आप अहले हक़ के मुक़तदा व इमाम हैं। आपसे पहले भी तमाम महबूबाने ख़ुदा पर जब तक बुरहाने हक़ नाज़िल नहीं हुई और उनको वही से सरफ़राज़ नहीं किया गया था उस वक़्त मख़लूक़े ख़ुदा में वह नेक नाम और बुज़ुर्ग समझे जाते थे मगर जब उनके फ़र्क़ मुबारक पर दोस्ती की ख़िलअत रखी गयी तो ख़ल्क़ ने उनके हक़ में ज़ुबाने मलामत दराज़ कर दी चुनांचे किसी ने काहिन, किसी ने शायर किसी ने मजनूं और किसी ने काज़िब तक कहा।

अल्लाह तआला ने अहले हक़ और मोमिनीन की तारीफ़ में फ़रमाया है-

बफ़ज़्ले ख़ुदा यह ज़ुबान दराज़ों की मलामत से नहीं डरते, वह जिसे चाहे अता फ़रमाए और अल्लाह का इल्म वसीअ़ है।

हक़ तआला का दस्तूर ऐसा ही है कि जिसने हक़ की बात मुंह से निकाली सारे जहान ने मलामत की क्योंकि ऐसे बंदे के असरार, मलामत में मशग़ूल होने के बाइस मख़फ़ी रहते हैं यह हक़ तआला की ग़ैरत है कि वह अपने दोस्तों को दूसरों के देखने से महफ़ूज़ रखता है ताकि हर शख़्स की आंख इसके दोस्त के हाल के जमाल पर न पड़े। और बंदे को इससे भी महफ़ूज़ रखता है कि वह उसे देखने की कोशिश करे और वह ख़ुद भी अपना जमाल न देख सके क्योंकि वह ग़ुरूर और तकब्बुर की मुसीबत में मुब्तला हो जायेगा। इसी वजह से ख़ल्क़ को उन पर मलामत के लिये मुक़र्रर फ़रमाया और नफ़से लव्वामा (मलामत करने वाली ख़सलत) को उनके अंदर पिनहां कर दिया ताकि वह जो भी करे उस पर मलामत करता रहे। अगर वह बदी करे तो उसे बदी पर मलामत करे और अगर नेकी करे तो कोताही पर। राहे ख़ुदा में यही वह असल क़ौल है जिसमें कोई आफ़त और हिजाब नहीं है। और तरीक़त में जो दुश्वार तर है इसलिये के बंदा अपने आप किसी ग़ुरूर में न फंस जाये।

अजब व गुरूर की बुनियाद

अजब व गुरूर दर असल दो चीज़ों से पैदा होता है। १ ख़ल्क़ की इज़्ज़त अफ़ज़ाई और उनकी मदह व सताइश से और दूसरा यह कि अपने ही अफ़आल पर ख़ुश होने से। अव्वल सूरत में लोग चूंकि बंदे के अफ़आल को पसंद करने लगते हैं और उस पर इसकी मदह व सताइश करते हैं इसलिये इंसान में गुरूर पैदा हो जाता है दूसरे इंसान को अपनी बुराईयों में भी हुस्न नज़र आता है इसलिये वह ग़ुरूर व ख़ुद परस्ती में मुब्तला हो जाता है।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से अपने दोस्तों पर उन दरवाज़ों को बंद कर देता है ताकि उनके मामलात अगरचे नेक हों फिर भी इसको अपनी ताक़त व कुव्वत के मुक़ाबला में हेच ही नज़र आता है और वह उसे पसंद नहीं करता। जिसकी बिना पर ग़रूर से महफ़ूज़ रहता है। लिहाज़ा हर शख़्स जो पसंदीदए हक़ होगा ख़ल्क़ उसे पसंद नहीं करेगी और जो अपने जिस्म को रियाज़त व मुजाहदे के ज़रिये मुशक़्क़त में मशगूल रखेगा हक़ तआला उसे तकलीफ़ नहीं देगा। चुनांचे शैतान को बावजूद यह कि लोगों ने पसंद किया और फ़रिश्तों ने भी माना और उसने ख़ुद भी अपने आपको पसंद किया मगर चूंकि हक़ तआला ने उसे पसंद नहीं फ़रमाया इसलिये यह सब कुछ इसके लिये लानत का सबब बन गया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को न फ़रिश्तों ने पसंद किया न इबलीस ने और न उन्होंने ख़ुद ही अपने आपको पसंद किया मगर अल्लाह तआला ने उनको पसंद फ़रमाया। फ़रिश्तों ने ना पसंदीदगी का इज़हार करते हुए कहा- ऐ ख़ुदा क्या तू ज़मीन में ऐसे को ख़लीफ़ा बनाता है जो उसमें फ़साद करेगा और ख़ूंरेज़ी करेगा। इबलीस ने कहा - मैं आदम से बेहतर हूं तूने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में कहा- ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर जुल्म किया है लेकिन जब हक़ तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पसंद फ़रमाया तो उनके हक़ में फ़रमाया- तो उनसे भूल हो गयी हमने उनकी तरफ़ से इरादतन ना फ़रमानी न पायी। इस तरह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ख़ल्क़ की नापसंदीदगी का समरा ख़ुदा की रहमत की शक्ल में मिल गया ताकि कायनात ही की मख़लूक़ जान ले कि हमारा मक़बूल ख़ल्क़ का महजू होता है और जो ख़ल्क़ का मक़बूल हो वह हमारा महजूर होता है। और यक़ीनी तौर पर सब को पता चल जायेगा कि ख़ुदा के दोस्तों की ग़िज़ा ख़ल्क़ की मलामत होती है क्योंकि इसमें क़बूलियत के

आसार हैं औलिया अल्लाह का मज़हब है कि मलामत ही कुर्ब व इख़्तेसास की निशानी है जिस तरह लोग क़बूल ख़लाइक़ से ख़ुश होते हैं उसी तरह वह मलामत से भी ख़ुश रहते हैं।

हदीसे क़ुदसी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बवास्ता हज़रत जिब्राईल अल्लाह तआला का इरशाद नक़ल फ़रमाया है कि-

मेरे औलिया मेरी रहमत की चादर में होते है। जिन्हें मेरे साथ मेरे औलिया ही पहचानते हैं।

मलामत की क़िस्में

मलामत की तीन क़िस्में हैं एक यह कि वह सीधा चले। दूसरे यह कि वह क़स्द करे तीसरे यह कि वह तर्क करे। पहली क़िस्म की सूरत यह है कि एक शख़्स काम करता है और उमूरे दुनिया में कामिल एहतियात बरतता है और मामलात में मराआत से काम लेता है मगर ख़ल्क़ फिर भी इस पर मलामत करती है क्योंकि लोगों की यह आम आदत है मगर वह शख़्स किसी की परवाह नहीं करता। दूसरे यह कि कोई शख़्स लोगों में साहबे इज़्ज़त व शर्फ़ होने के साथ इनमें मशहूर भी हो औरउसका दिल इज़्ज़त की तरफ़ मायल भी हो उसके बावजूद यह चाहे कि उनसे जुदा होकर यादे इलाही में महव हो जाए और क़सदन ऐसी राह इख़्तेयार करे जिससे मख़लूक़ उस पर मलामत करे और ऐसे अमल से शरीयत में भी ख़लल न वाक़ेय हो मगर लोग उससे नफ़रत करने लगें और उससे मुतनफ़्फ़िर होकर जुदा हो जायें। और तीसरी क़िस्म यह है कि दिल में तो कुफ्र व ज़लालत से तबई नफ़रत भरी हो। बज़ाहिर शरीअत की मुतालबात न करे और ख़्याल करे कि मलामती तरीक़ा पर ऐसा कर रहा हूं और यह मलामत का तरीक़ा इसकी आदत बन जाये। इसके बावजूद वह दीन में मज़बूत और रासख़ हो। लेकिन ज़ाहिर तौर पर बगर्ज़ मलामत, निफ़ाक़ व रिया के तौर व तरीक़ पर दीन के ख़िलाफ़वरज़ी करे। और मख़लूक़ की मलामत से बे ख़ौफ़ हो वह हर हाल में अपने काम रखे ख़्वाह लोग उसे जिस नाम से चाहें पुकारें।

हिकायत

हज़रत शेख़ अबू ताहिर हराक़ी रहमतुल्लाह अलैहि एक दिन गधे पर सवार बाज़ार से गुज़र रहे थे कि एक मुरीद लगाम थामे हुए साथ था। किसी ने पुकारा देखो यह पीरे ज़िंदीक़ आ रहा है। जब मुरीद ने यह बात सुनी तो उसकी इरादत

व ग़ैरत ने जोश मारा और उसे मारने के लिये दौड़ा बाज़ार वाले जोश में आ गये हज़रत शैख़ ने मुरीद को आवाज़ दी और फ़रमाया अगर तुमने ख़ामोशी इख़्तेयार की तो एक नसीहत आमोज़ चीज़ दिखाऊंगा ताकि तुम इस सख़्ती से बाज़ रहो। मुरीद ख़ामोश हो गया जब क़ियामगाह पर वापस आये तो मुरीद से फ़रमाया फलां संदूक उठा लाओ। वह लाया इसमें बकसरत ख़ुतूत थे जिनको लोगों ने हज़रत शैख़ के नाम लिखे थे। उन्होंने उनको निकाला और मुरीद के आगे रख कर फ़रमाया पढ़ो क्या लिखा है जिन लोगों ने ख़ुतूत भेजे थे उन्होंने उनमें हर नाम पर अलक़ाब में किसी ने शैख़ुल इस्लाम, किसी ने ज़की, किसी ने शैख़ ज़ाहिद किसी ने शैख़ुल हरमैन वग़ैरह लिखा था। शैख़ ने फ़रमाया यह सब अलक़ाब व ख़िताब हैं मेरा नाम नहीं है। हालांकि मैं कुछ भी नहीं हूं हर शख़्स ने अपने एतेक़ाद के बमूजिब मुझे मुख़ातब किया है अगर उस बेचारे ने अपने एतेक़ाद के बमूजिब कोई बात कह दी और कोई अलक़ाब दिये तो बिगड़ने या नाराज़ होने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस तरह अगर मलामत में क़सदन कोई ऐसा तरीक़ा इख़्तेयार करना चाहे और इज़्ज़त व मंज़िलत और उस जा व हश्म के छोड़ने का इरादा करे जिसके वह लायक़ है तो उसकी सूरत यह है कि–

हिकायत

एक दिन अमीरुल मोमिनीन सैयदुना उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु खजूरों के बाग़ से इस हाल में तशरीफ़ ला रहे थे कि लकड़ियों का गट्ठा आप के सरे मुबारक पर रखा हुआ था हालांकि आप चार सौ गुलाम रखते थे किसी ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन यह क्या हाल है? आपने फ़रमाया मैंने चाहा कि अपने नफ़्स का तजरुबा करूं अगरचे यह काम मेरे गुलाम भी कर सकते थे मगर मैंने चाहा कि अपने नफ़्स की आज़माईश करूं ताकि लोगों में जो रुत्बा है उसकी वजह से यह नफ़्स किसी काम से मुझे बाज़ न रखे।

यह असरे सहाबा इसबाते मलामत में वाज़ेह और सहीह है इस माने में एक और वाक़िया है कि जो हज़रत इमाम आज़म सैयदुना अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मंसूब है इसका तज़किरा इमाम आज़म रहमतुल्लाह के बयान में आयेगा इंशाअल्लाह तआला।

हज़रत अबू यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह का वाक़िया है कि वह हज करके वापस आ रहे थे किसी शहर में ग़लग़ला बुलंद हुआ कि हज़रत बा यज़ीद आ

रहे हैं उस शहर के तमाम लोग इस्तिक़बाल के लिये निकल आये कि एज़ाज़ व एकराम के साथ अपने शहर में लायें हज़रत बा यज़ीद ने जब लोगों की ख़ातिर व मदारात को मुलाहज़ा फ़रमाया तो उनका दिल भी मशगूल हो गया और वह यादे हक़ से बाज़ रहने में परेशान ख़ातिर हो गये। जब बाज़ार में आये तो क़बा की आस्तीन से एक रोटी निकाल कर वहीं खाने लगे। यह देखकर तमाम लोग उनसे बरगश्ता हो गये और उन्हें तन्हा छोड़कर चले गये। चूंकि यह वाक़िया रमज़ानुल मुबारक में हुआ था और ख़ुद चूंकि मुसाफ़िर थे (और मुसाफ़िर को रोज़ा न रखने की इजाज़त है) उस वक़्त अपने हमराही मुरीद से फ़रमाया देखा शरीअत के एक मसले में लोगों ने मुझे कार बंद न देखा तो सब छोड़कर चले गये।

सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि उस ज़माने में मलामत की रविश इख़्तेयार करने के लिये किसी ज़बों अमल करने की ज़रूरत होती थी। और ऐसी बात ज़ाहिर करनी पड़ती थी जो अवाम के मंशा व मिज़ाज के ख़िलाफ़ हो। लेनिक आज अगर कोई चाहे कि उसे मलामत की जाये तो दो रकअत नफ़ल शुरू करके उसे ख़ूब तूल दे दे या पूरे दीन की मुकम्मल पैरवी शुरू कर दे ताकि तमाम लोग उसे रियाकार और मुनाफ़िक़ कहने लगें।

लेकिन जो तर्क के तरीक़े पर मलामत इख़्तेयार करे। और कोई काम ख़िलाफ़े शरीअत करके यह कहे कि यह अमल मैंने हुसूले मलामत के लिये किया है तो यह खुली हुई ज़लालत व गुमराही है। ज़ाहिरी आफ़त और सच्ची हवस परस्ती है क्योंकि आज कल ऐसे लोग बकसरत हैं जो रद्दे ख़ल्क़ की सूरत में क़ुबूले ख़ल्क़ के ख़्वास्तगार हैं। इसलिये इसकी ज़रूरत है कि वह पहले ख़ल्क़ में मक़बूल हों फिर अपने किसी फ़ेअल से उसकी नफ़ी कर दें ताकि लोग उन्हें मरदूद क़रार दें। ना मक़बूल शख़्स के लिये रद्द करने का क़स्द करना क़बूलियत के लिये एक बहाना होता है।

हज़रत मुसन्निफ़ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझे मुद्दईयाने बातिल की मजलिस में बैठने का इत्तेफ़ाक़ हुआ उनमें से एक आदमी से कोई नाज़ेबा हरकत सरज़द हो गयी मगर उसने यह उज़्र किया कि मेरा यह अमल मलामत के लिये था। उस पर किसी ने कहा यह उज़्र व बहाना बेहूदा है मैंने उसे देखा कि ग़ैज़ व ग़ज़ब से उसका सांस फूल गया है तब मैंने उससे कहा ऐ शख़्स! अगर मलामत में तेरा दावा दुरुस्त था तो उस आदमी के एतेराज़ पर चीं बजबी होना क्या माने? यह तो तेरे मज़हब को मज़बूत करता है। जब

वह तेरे साथ तेरी राह में मवाफ़िक़त करता है तो तेरा उससे झगड़ा ही क्या? तुझे क्यों गुस्सा आता है? और जो शख़्स अमरे हक़ की दावत दे उसके लिये दलील व हुज्जत दरकार है और वह दलील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की हिफ़ाज़त है जब मैं ज़ाहिर में तुझे फ़रायज़ का तारिक देखता हूं हालांकि तू लोगों को उसकी तरफ़ बुलाना चाहता है तो तेरा यह अमल तुझे इस्लाम के दायरे से बाहर कर देता है।

लतायफ़े दर मलामत

वाज़ेह रहना चाहिये कि तरीक़त में मलामती मज़हब को शैख़े ज़माना हज़रत अबू हमदून क़सा रहमतुल्लाह ने फैलाया है मलामत के सिलसिले में उनसे बकसरत लतीफ़े मंसूब हैं चुनांचे उनका एक क़ौल है कि सलामती से किनारा कशी इख़्तेयार करने का नाम मलामत है जब कोई शख़्स क़सदन सलामती के तर्क का दावा करता और बलाओं में खुद को मुब्तला करके ऐश व राहत और खुश ज़ायक़ा चीज़ों को छूता है तो उसकी ग़र्ज़ यह होती है कि जलालत का ज़ुहूर हो और उसकी उम्मीद बरआए और लोग उसकी आदत से बेज़ार होकर उससे दूर हो जायें और उसकी तबीयत लोगों की मुहब्बत से ख़ाली हो जाये। इस हाल में जिस क़द्र वह खुद को घुलायेगा इतना ही वह हक़ से वासिल होगा। और जिस सलामती की तरफ़ लोग रग़बत करते और उसकी तरफ़ मायल होते हैं यह उस सलामती से इतना ही नफ़रत व बेज़ारी करता है। इस तरह एक दूसरे के अज़ायम में तज़ाद व तक़ाबुल पैदा हो जाते है और वह अपनी सिफ़तों में कामयाब हो जाता है।

अहमद बिन फ़ातिक हुसैन बिन मंसूर से रिवायत करते हैं कि किसी ने उनसे पूछा सूफ़ी कौन हैं? उन्होंने फ़रमाया यानी वह लोग हैं जिन्होंने ज़ाते बारी तआला को पा लिया।

नीज़ हज़रत अबू हमदून से किसी ने दर्याफ़त किया तो आपने यह फ़रमाया यह रास्ता आम लोगों के लिये बहुत दुश्वार और तंग है लेकिन इतना बताये देता हूं कि मरजिय्यों की उम्मीद और कदरिय्यों का ख़ौफ़ मलामतियों की सिफ़त है।

याद रखना चाहिये कि मलामतियों की तबीयत अल्लाह तआला की चीज़ से इतनी नफ़रत नहीं करती जितनी लोगों में इज़्ज़त व मंज़िलत पाने से उन्हें नफ़रत होती है यह उन लोगों की ख़सलत है कि वह लोगों की तारीफ़ व तौसीफ़

से बहुत ज़्यादा खुश होता है और फूला नहीं समाता। इसी बिना पर वह कुर्बे इलाही से दूर तर ही हो जाता है। खौफ़े खुदा रखने वाला शख़्स हमेशा यही कोशिश करेगा कि ख़तरे की जगह से दूर रहे क्योंकि उसमें उसके लिये दो ख़तरे लाहक़ होते हैं। एक यह कि वह हक़ तआला से हिजाब में न आ जाये। दूसरा यह कि वह ऐसा फ़ेअल करने से बचे जिससे लोग गुनाहगार हों। और उस पर तअन व तशनीअ करने लगें। उनका यह मक़सूद नहीं होता कि उनमें इज़्ज़त पाने से राहत महसूस करें और न यह कि मलामत कराने से उन्हें गुनाहगार बनायें। इसलिये मलामती को सज़ावार है कि पहले दुनियावी झगड़ों और लोगों की उख़रवी इलाक़ों से खुद को जुदा करे इसके बाद लोग उसे कुछ भी कहें। दिल की निजात के लिये ऐसा फ़ेअल करे जो शरीअत में न गुनाहे कबीरा हो न सग़ीरा। ताकि लोग उससे बरगश्ता होकर उसे छोड़ दें यहां तक एहतियात बरते कि मामलात में उसका ख़ौफ़ क़दरिय्यों के ख़ौफ़ की मानिंद हो और मामला कुंदगान से ऐसी उम्मीद रखे जैसे मरजिय्या उम्मीद रखते हैं हक़ीक़त में मलामत से बेहतर किसी चीज़ से मुहब्बत व दोस्ती न हो। इसलिये कि दोस्त की मलामत का दोस्त के दिल पर असर न होगा और दोस्त का गुज़र दोस्त की गली ही में होगा और दोस्त के दिल में अग़यार का ख़तरा न होगा। जब ऐसी हालत हो जायेगी तो अपनी ख़्वाहिश में मलामत की सबसे बढ़कर लज़्ज़त पायेंगे। इसलिये की मलामत आशिक़ों का बाग़, मुहिब्बों की ताज़गी, मुश्ताक़ों की राहत और मुरीदों की खुशी का नाम है यह लोग दिल की सलामती की ख़ातिर जिन्न व इन्स का हदफ़े मलामत बनना पसंद करते हैं और कोई मख़लूक़ ख़्वाह वह मुक़र्रिबों में से हो या करोबिय्यों से या रूहानियों में से, उनके दर्जा को नहीं पहुंच सकती। गुज़श्ता उम्मतों के ज़हहाद और अब्बाद और सालेकान व तालिबान हक़ में से भी कोई उनके रुत्बा तक नहीं पहुंचा। बजुज़ इस उम्मत के उन हज़रात के जो तरीक़त के सालिक हैं और दिल को मुनक़तअ कर चुके हैं, सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक मलामत की ख़्वाहिश ऐन रिया है और रियाकारी ऐन निफ़ाक़ है इसलिये कि रियाकार क़सदन ऐसी राह पर चलता है जिससे वह मख़लूक़ में मक़बूल हो। और मलामती भी क़सदन ऐसी रविश इख़्तेयार करता है जिससे लोग उससे नफ़रत करें। यह दोनों तबक़े ख़ल्क़ ही में सरगरदां रहते हैं इनसे गुज़रने की उन्हें राह ही नहीं मिलती। एक इस राह पर हो लिया और दूसरा दूसरे रास्ते पर। हालांकि दरवेश के दिल

में मख़लूक़ात के गुज़र की गुंजाईश कहां? जब दिल के आईना से ख़ल्क़ की तस्वीर महव हो चुकी हो तो वह दोनों रास्तों से जुदा हो जाता है (यानी न रियाकारी रहती है और न निफ़ाक़ का ख़तरा) और वह किसी चीज़ में गिरफ़्तार नहीं रहता।

एक दिन मावाउलनहर में एक मलामती से मुलाक़ात हुई जब वह खुश हुआ तो उसी लम्हा मैंने पूछा ऐ भाई! इन अफ़आले बद से तेरी क्या मुराद है? उसने जवाब दिया लोगों से गुलू ख़लासी चूंकि मैंने दिल में ख्याल किया कि यह मख़लूक़ तो बहुत है और तेरी उम्र थोड़ी है इन सबसे अपना पीछा छुड़ाना दुश्वार है। अगर तू ख़लक़त से अपना पीछा छुड़ाना चाहता है तो इन सबको छोड़ दे ताकि इन सब की मसरूफ़ीअतों से खुद को महफ़ूज़ रख सके।

एक तबक़ा ऐसा भी है जो ख़लक़त में मशगूल होते हुए भी समझता है कि लोग खुद ही उनकी तरफ़ मुतावज्जेह हैं और कोई तुझको नहीं देखता अब तू खुद अपने आपको मत देख। जब तेरे हाल पर मुसीबत तेरी अपनी ही नज़र से है तो तुझे ग़ैर से क्या सरोकार। अगर किसी को परहेज़ से शिफ़ा हासिल हो जाये तो मदावाए ग़िज़ाई हासिल करना मरदानगी नहीं है।

एक तबक़ा ऐसा भी है जो रियाज़त के लिये नफ़्स को मलामत करता है ताकि ख़लक़त में रुसवाई से या फटे कपड़ों में होने की ज़िल्लत से उनका नफ़्स अदब सीखे। उससे वह दाद के ख़्वाहिशमंद होते हैं क्योंकि उससे वह बहुत खुश होते हैं जिनमें नफ़्स की ख़्वारी और रुसवाई पायें।

हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाह अलैहि से किसी ने दरयाफ़्त किया कि कभी आपने अपने मक़सद में कामयाबी देखी है? उन्होंने फ़रमाया हां दो मर्तबा। एक उस वक़्त जब मैं कश्ती में सवार था और किसी ने मुझे नहीं पहचाना क्योंकि मैं फटे पुराने कपड़े पहने हुए था। और बाल भी बढ़ गये थे। ऐसी हालत थी कि कश्ती के तमाम सवार मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे थे। उनमें एक मसख़रा इतना जरी था कि वह मेरे पास आकर सर के बाल नोचने लगा और मेरा मज़ाक़ उड़ाने लगा। उस वक़्त मैंने अपनी मुराद पाई और उस ख़राब लिबास और शिकस्ता हाली में मुसर्रत महसूस हुई यहां तक कि मेरी यह मुसर्रत बयीं सबब इंतेहा को पहुंची कि वह मसख़रा उठा और उसने मुझ पर पेशाब कर दिया। और दूसरी मर्तबा उस वक़्त जबकि मैं एक गांव में था और वहां शदीद बारिश हुई सर्दी का मौसम था गुदड़ी भीग गयी और ठंडक ने बेहाल कर दिया। मैंने मस्जिद की

तरफ़ रुख़ किया लोगों ने वहां ठहरने नहीं दिया। दूसरी मस्जिद की तरफ़ गया तो वहां भी जगह न मिली फिर तीसरी मस्जिद की तरफ़ गया वहां भी यही सुलूक हुआ। सर्दी मेरी कुव्वते बर्दाश्त से बाहर हो गयी। आख़िरकार मैं हम्माम की भट्टी के आगे आया और अपने दामन को आग पर फैला दिया उसके धुंए से मेरे कपड़े और चेहरा सियाह हो गया उस रात भी मैं अपनी मुराद को पहुंचा।

सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझे भी एक मुश्किल दरपेश आयी मैंने उस मुश्किल से ख़लासी पाने की कोशिश की मगर कामयाब न हो सका। उससे पहले भी मुझ पर ऐसी ही मुश्किल पड़ी थी तो मैंने हज़रत शैख़ बा यज़ीद रहमतुल्लाह तआला अलैहि के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी दी थी और मेरी वह मुश्किल आसान हो गयी थी। इस मर्तबा भी मैंने इरादा किया कि वहां हाज़िरी दूं। बिल आख़िर तीन माह तक मज़ारे मुबारक पर चिल्लाकशी की ताकि मेरी यह मुश्किल हल हो जाये। हर रोज़ तीन मर्तबा गुस्ल और तीस तीस मर्तबा वुज़ू करता इस उम्मीद पर कि मुश्किल आसान हो मगर परेशानी दूर न हुई तो ख़ुरासान के सफ़र का इरादा किया।

इस विलायत में एक रात एक गांव में पहुंचा वहां एक ख़ानक़ाह थी जिसमें सूफ़ियों की एक जमाअत फरोकश थी मेरे जिस्म पर खुरदरी और सख़्त किस्म की गुदड़ी थी।

मुसाफ़िरों की मानिंद मेरे साथ कुछ सामान न था सिर्फ़ एक लाठी और लोटा था उस जमाअत ने मुझे हक़ारत की नज़र से देखा और किसी ने मुझे न पहचाना। वह अपने रस्म व रिवाज के मुताबिक़ बाहम गुफ़्तगू करते और कहते कि यह हम में से नहीं और यह दुरुस्त भी था कि मैं उनमें से नहीं था। लेकिन मुझे चूंकि वहां रात गुज़ारनी ज़रूरी थी गुंजाईश न होने के बावजूद मैं ठहर गया और उन्होंने मुझे दरीचा में बैठा दिया और वह लोग उससे ऊंची छत पर चले गये। मैं ज़मीन पर रहा। उन्होंने मेरे आगे एक सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटी डाल दी। मैं इन ख़ुश्बुओं को सूंघ रहा था जो वह लोग खुद खा रहे थे। वह लोग मुझ पर बराबर आवाज़ें कस रहे थे। जब वह खाने से फ़ारिग़ हो गये तो ख़रबूज़े खाने लगे और दिल लगी से उसके छिलके मेरे सर पर फेंक कर मेरी तहक़ीर व तौहीन करते रहे और मैं अपने दिल में कह रहा था कि ख़ुदावंद अगर मैं तेरे महबूबों का लिबास पहनने वालों में से न होता तो मैं उन लोगों से किनाराकश हो जाता।

फिर जितनी भी मुझ पर उनकी तअन व तशनीअ ज़्यादा होती रही मेरा दिल मसरूर होता गया। यहां तक कि इस वाक़िया का बोझ उठाने से मेरी मुश्किल हल हो गयी। उस वक़्त मुझ पर यह हक़ीक़त मुनकशिफ़ हुई कि मशायख़े किराम जाहिल लोगों को अपने साथ क्यों गवारा करते हैं और क्यों उनकी सख़्तियां झेलते हैं? यह हैं कामिल तहक़ीक़ के साथ मलामत के अहकाम।

सहाबा-ए-किराम में अहले तरीक़त के मशाइख़े इज़ाम

अब मैं उन अइम्मा किराम के अहवाल को कुछ तज़किरा करता हूं जो सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन में से मशायेख़ इज़ाम के पेशे रौ तरीक़त और ज़ात व सिफ़ात और अहवाल में उनके इमाम व क़ाइद हैं। जिनका मर्तबा अंबियाए रिकाम अलैहिमुस्सलाम के बाद है जो अव्वलीन साबिक़ीन और मुहाजिरीन व अंसार में से हैं हमारे और तुम्हारे।

तज़किर-ए-ख़ुल्फ़ाए राशिदीन

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

सहाब-ए-किराम में से शैख़ुल इस्लाम बाद अज़ अंबियाए ख़ैरुल अनाम अलैहिमुस्सलाम ख़लीफ़ा व इमाम तारीकीने दुनिया के सरदार साहेबाने ख़िलवत के शहंशाह आफ़ाते दुनियावी से पाक व साफ़ अमीरुल मोमिनीन सैयदुना अबू बकर अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन अबी कहाफ़ा सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं आप की करामतें और बुज़ुर्गियां मशहूर हैं और मामलात व हक़ायक़ में आपके निशानात व दलायल वाज़ेह हैं। तसव्वुफ़ के सिलसिले में आपके कुछ हालात किताबों में मज़कूर हैं। मशायख़े तरीक़त ने अरबाबे मुशाहदा और साहेबाने इल्म व इरफ़ान में आपको मुक़द्दम रखा है चूंकि आपकी मरवियात बहुत कम हैं। इसी तरह हज़रत फ़ारूक़े आज़म सैयदुना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अरबाबे मुजाहदा में मुक़द्दम रखा है क्योंकि आपके मामलात और हक़ पर सलाबत सहीह रिवायतों में मरक़ूम और अहले इल्म के दर्मियान मारूफ़ हैं। चुनांचे हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु रात में तिलावते कुरआन करीम नमाज़ में करते तो नरम व आहिस्ता आवाज़ में करते और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ते तो बुलंद आवाज़ से करते थे। एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैयदुना

अबू बकर सिद्दीक़ से दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम किस वजह से नरम व आहिस्ता आवाज़ में तिलावत करते हो? उन्होंने अर्ज़ किया जिसे मुनाजात करता हूं वह ख़ूब सुनता है चूंकि मैं जानता हूं कि वह मुझसे दूर नहीं है और उसकी समाअत के लिये नरम या बुलंद आवाज़ से पढ़ना दोनों बरारब हैं। और जब हज़रत फ़ारूके आज़म से दर्याफ़्त फ़रमाया तो आपने अर्ज़ किया सोते हुए को जगाता हूं और शैतान को भगाता हूं यह मुजाहदे की अलामत है और वह मुशाहदे का निशान। मुजाहदे का मक़ाम मुशाहदे के पहलू में ऐसा है जैसा क़तरा दरिया में। यह इसलिये है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उमर! अबू बकर की नेकियों में से एक नेकी हो। जबकि सैयदुना फ़ारूक़ आज़म हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बतले जलील जिनसे इस्लाम की इज़्ज़त व रिफ़अत मिली हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की नेकियों में से एक नेकी हैं तो ग़ौर करो कि सारे जहान के लोग किस दर्जा में होंगे।

सैयदुना अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हमारा घर फ़ानी है, हमारे अहवाल आरी हैं हमारे सारे सांस गिनती के हैं और सुस्ती व काहिली मौजूद ज़ाहिर है। लिहाज़ा फ़ानी घर की तामीर करना जहालत आरियाती हाल पर एतेमाद करना नादानी, गिनती के सांसों पर दिल लगाना ग़फ़लत और काहिली को दीन समझ लेना सरासर नुक़्सान व ख़सारा है इसलिये कि जो चीज़ आरियतन ली जाती है उसे वापस करना होता है और जो चीज़ वापस जाने वाली होती है वह बाक़ी नहीं रहती। और जो चीज़ गिनती में आये वह महदूद होती है और सुस्ती व काहिली का तो कोई ईलाज ही नहीं। इस इरशाद में आपने हमें तलक़ीन फ़रमाई कि यह दुनिया और इस की हर चीज़ फ़ना होने वाली है उसके जाने का अंदेशा न करना चाहिये और न उसकी ख़ातिर उससे दिल लगाना चाहिये। क्योंकि जब तुम फ़ानी से दिल लगाओगे तो बाक़ी से पोशीदा और हिजाब में रह जाओगे। हालांकि यह दुनिया और यह नफ़्स तालिबे हक़ और उसके महबूबों के लिये हिजाब व पर्दा है। वह दोनों से इज्तेनाब करते हैं जब यह बात मालूम हो गयी कि यह दुनिया और इसका तमाम साज़ व सामान सब आरज़ी और आरीयत की चीज़ें हैं उनको अपनी मिल्क समझ कर उनमें मालिके हक़ीक़ी की इजाज़त और उसकी मंशा के ख़िलाफ़ तसर्रुफ़ करना कितनी नादानी है।

हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी मुनाजात में अर्ज़ किया करते थे कि ऐ ख़ुदा दुनिया को मेरे लिये कुशादा फ़रमा। लेकिन मुझे इसमें

मुब्तला होने से महफूज़ रख। दुनिया की फ़राख़ी की दुआ के बाद इससे महफूज़ रखने की इल्तेजा में एक लतीफ़ इशारा है। वह यह कि दुनिया दे ताकि शुक्र बजा लाऊं फिर यह तौफ़ीक़ दे कि उसे तेरी राह में अपने हाथ से ख़र्च करूं। और अपना रुख़ तेरी तरफ़ फेरूं। ताकि शुक्र और इन्तेफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का दर्जा पाऊं और मक़ामे सब्र भी हासिल करूं ताकि फ़क्र में परेशान न हूं। और फ़क्र पर मेरा इख़्तेयार हो। इस मफ़हूम से इस क़ौल की तरदीद भी हो जाती है कि जिसने यह कहा कि जिस का फ़क्र इज़्तेराबी हो वह फुक़रे इख़्तेयारी से ज़्यादा कामिल होता है अरग इज़्तेराबी हो तो यह फ़क्र की सिफ़त है अगर इख़्तेयारी हो तो यह फ़क्र बंदे की सिफ़त है जब इसका अमल कशिश मुन्क़तअ फ़क्र से हो जाये तो उससे बेहतर है कि तकल्लुफ़ से अपना दर्जा बनाये।

सैयदुना दाता गंज रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि सिफ़ते फ़क्र का उस वक़्त ज़्यादा ज़ुहूर होता है जबकि तवंगरी की हालत में उसके दिल पर फ़क्र का इदारा हो फिर वह ऐसा अमल करे जो उसे इब्ने आदम की महबूब चीज़ों से यानी दुनियावी माल व मतअ से दस्ते कश कर दे न कि फ़क्र की हालत में उसका दिल तवंगरी की ख़्वाहिश से भरपूर हो। और ऐसे अमल का इर्तकाब करे जिसकी बिना पर तवंगरों, बादशाहों और दरबारियों के दरवाज़ों पर जाना पड़े।

सिफ़ते फ़क्र तो यह है कि इंसान तवंगरी छोड़कर फ़क्र इख़्तेयार करे न यह कि फ़क्र माल व मनाल और जाह व हश्म का तालिब हो।

सैयदुना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का रुत्बा अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सारी मख़लूक़ से अफ़ज़ल व मुक़द्दम है और यह जायज़ नहीं कि कोई उन से आगे क़दम रखे और मानवी एतेबार से मुक़द्दम हो जाये क्योंकि आप ने फ़क्रे इख़्तेयारी को फ़क्र इज़्तेराबी पर मक़दम व अफ़ज़ल रखा है यही तमाम मशायख़े तरीक़त का मज़हब है।

हज़रत ज़हरी रज़ियल्लाहु अन्हु आपके बारे में फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सिद्दीक़ ने बेत ख़िलाफ़त ली तो आपने मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुत्बा में इरशाद फ़रमाया -

ख़ुदा की क़सम! एक दिन या एक रात के लिये भी मैं इमारत का ख़्वाहां नहीं हुआ और न मुझे उसकी रग़बत है और न ज़ाहिर व बातिन में ख़ुदा से उसका सवाल किया है और न मेरे लिये इमारत में राहत है।

अल्लाह तआला जब बंदा को कमाले सिदीक़ पर फ़ायज़ करता और इज़्ज़त व मंज़िलत के मक़ाम पर मुतमक्किन फ़रमाता है तो बंदए सादिक़ मुन्तज़िर रहता है कि हक़ तआला की तरफ़ से क्या हुक्म होता है जैसा भी उस पर हुक्म वारिद होता है वह उस पर क़ायम व बरक़रार रहता है। अगर फ़रमान आए कि फ़क़ीर हो जा तो फ़क़ीर हो जाता अगर फ़रमान आए कि अमीर हो जा तो अमीर बन जाता है उस में वह अपने तसर्रुफ़ व इख़्तेयार को काम में नहीं लाता। यही सूरते हालत हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की थी। आप ने इब्तेदा में भी वैसी ही तालीम व रज़ा को इख़्तेयार फ़रमाया जिस तरह इंतेहा में इख़्तेयार फ़रमाया, सूफ़िया किराम ने तर्के दुनिया और हिर्स व मंज़िलत के छोड़ने को फ़क्र पर और तर्के रियासत की तमन्ना को इसलिये पसंद किया कि दीन में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम मुसलमानों के इमामे आम हैं और तरीक़त में आप तमाम सूफ़िया के इमामे ख़ास।

सैयदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

दूसरे ख़लीफ़ए राशिद, सरहंग अहले ईमान, मुक़तदाना अहले एहसान इमाम अहले तहक़ीक़, दरियाए मुहब्बत के ग़रीक़ सैयदुना अबू हिफ़्स उमर बिन अलखिताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। आपके फ़ज़ायल व करामात और फ़रासत व दानाई मशहूर व मारूफ़ हैं। आप फ़रासत व सलाबत के साथ मख़सूस हैं। तरीक़त में आपके मुताद्दिद लतायफ़ व वक़ायक़ हैं इसी माअने व मुराद में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का यह इरशाद है कि हक़ उमर की ज़ुबान पर बोलता है। यह भी फ़रमाया कि गुज़श्ता उम्मतों में मुहद्दसीन गुज़रे हैं, अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर हैं। तरीक़त के बकसरत रोमूज़ व लतायफ़ आपसे मरवी हैं इस किताब में इन सबका जमा करना दुश्वार है। अलबत्ता उनमें से एक यह है आपने फ़रमाया बदों की हमनशीनी से गोशा नशीनी में चैन व राहत है।

गोशा नशीनी के दो तरीक़े

गोशा नशीनी दो तरीक़े से होती है। एक ख़लक़त से किनारा कशी करने पर, दूसरे उनसे ताल्लुक़ मुनक़तअ करने से। ख़लक़त से किनाराकशी की सूरत यह है कि उन से मुंह मोड़कर ख़लवत में बैठ जाये और हम जिंसों की सोहबत से ज़ाहिरी तौर पर बेज़ार हो जाये और अपने आमाल के ओयूब पर निगाह रखने

से राहत पाये। खुद को लोगों के मिलने जुलने से बचाये और अपनी बुराईयों से उनको महफूज़ रखे। और दूसरा तरीक़ा यह कि खलकत से ताल्लुक़ मुनक़तअ करे। उसकी सूरत यह है कि उसके दिल की कैफ़ियत यह हो जाये कि वह ज़ाहिर से कोई इलाक़ा न रखे। जब किसी का दिल ख़ल्क़ से मनक़तअ हो जाये तो उसको किसी मख़लूक़ का अंदेशा नहीं रहता और उसे कोई ख़तरा नहीं रहता कि कोई उसके दिल पर ग़ल्बा पा सकेगा उस वक़्त ऐसा शख़्स अगरचे ख़लक़त के दर्मियान होता है लेकिन वह ख़लक़त से जुदा होता है। और उसके इरादे उनसे मुनफ़रिद होते हैं यह दर्जा अगरचे बहुत बुलंद है लेकिन बईद अज़ क़ियास नहीं मगर यही तरीक़ा सीधा और मुस्तक़ीम है सैयदुना फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु उसी मक़ाम पर फ़ायज़ थे ज़ाहिर में तो सरीर आराए ख़िलाफ़त और ख़लक़त में मिले जुले नज़र आते थे लेकिन हक़ीक़त में आप का दिल उज़लत व तंहाई से राहत पाता था। यह दलील वाज़ेह है कि अहले बातिन अगरचे बज़ाहिर ख़ल्क़ के साथ मिले जुले होते हैं लेकिन उनका दिल हक़ के साथ वाबस्ता होता है और हर हाल में खुदा ही की तरफ़ रुजूअ होते हैं और जिस क़दर वक़्त ख़ल्क़ से मिलने जुलने में सर्फ़ होता है उसे हक़ की जानिब से बला व इम्तेहान शुमार करते हैं वह ख़ल्क़ की हम नशीनी से हक़ तआला की तरफ़ भागते हैं वह ख़्याल करते हैं कि दुनिया खुदा के महबूबों के लिये हरगिज़ पाक व साफ़ नहीं होती। क्योंकि अहवाले दुनिया मुकद्दर होते हैं जैसा कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया- दुनिया ऐसा घर है जिसकी बुनियाद बलाओं पर रखी गयी है मुहाल है कि बग़ैर बला के वह रह सके।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मख़सूस सहाबा में से हैं और बारगाहे इलाही में आपके तमाम अफ़आल मक़बूल हैं हत्ता कि इब्तेदाअन जब मुशर्रफ़ बा'इस्लाम हुए तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया - या रसूलल्लाह आसमान वाले आज उमर के मुशर्रफ़ बा इस्लाम होने पर बशारत व तहनीयत देते हैं और वह खुशियां मना रहे हैं।

सूफ़ियाए किराम गुदड़ी पहनने और दीन में सलाबत व सख़्ती इख़्तेयार करने में आपकी पैरवी करते हैं इसलिये कि आप तमाम उमूर में सारे जहान के इमाम हैं।

हज़रत उस्मान जून नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु

तीसरे खलीफ़ा-ए-राशिद, मख़ज़ने हया आबदे अहले सफ़ा मुताल्लिक़ बदरगाहे रज़ा, मुतहल्ला बतरीक़ मुस्तफ़ा सैयदुना अबू उमर उस्मान बिन अफ़्फ़ान जून नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। हर लिहाज़ से आपके फ़ज़ायल और आपके मनाक़िब ज़ाहिर हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रब्बाह और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जि दिन बलवाईयों ने आपके घर का मुहासिरा किया हम अमीरुल मोमिनीन सैयदुना उस्मान जून नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मौजूद थे। बलवाई जब दरवाज़े के सामने जमा हो गये तो आपके गुलामों ने हथियार उठा लिये। आपने फ़रमाया जो हथियार न उठाए वह मेरी गुलामी से आज़ाद है। रावी बयान करते हैं कि हम अपने ख़ौफ़ के सबब बाहर, निकल आए असनाए राह में हज़रत इमाम हसन इब्ने अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम आते हुए मिले। हम उनके हमराह फिर हज़रत उस्मान के पास आ गये। ताकि देखें कि इमाम हसने मुज्तबा क्या करते हैं जब इमाम हसने मुज्तबा अंदर दाख़िल हुए तो सलाम अर्ज़ किया फिर बलवाईयों की हरकत पर इज़्हारे अफ़सोस करते हुए कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं आपके हुक्म के बग़ैर मुसलमानों पर तलवार बे नियाम नहीं कर सकता, आप इमामे बरहक़ हैं आप हुक्म दीजिये ताकि आपसे इस क़ौम को दूर करूं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में फ़रमाया-

ऐ मेरे भाई अली के फ़रज़ंद जाओ अपने घर आराम करो यहां तक कि अल्लाह का कोई हुक्म वारिद हो हमारे लिये लोगों के ख़ून बहाने की ज़रूरत नहीं।

मक़ाम खिलत व दोस्ती में, बला व मुसीबत के दर्मियान, तसलीम व रज़ा की यह रौशन अलामत हैं। आपका यह तर्ज़े अमल हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के इस तर्ज़े अमल के बिल्कुल मुमासिल है जो उनसे आतिशे नमरूद की आज़माइश के वक़्त ज़ुहूर में आया था। चुनांचे नमरूद मलऊन ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़ात्मा करने के लिये आग जलाईऔर उनको गौफ़न (मिनजनीक़) में रखा गया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और अर्ज़ किया- क्या आपको कोई हाजत है? हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- बंदा सरापा मोहताज है लेकिन तुम से कोई हाजत नहीं। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया फिर अल्लाह तआला से अर्ज़ कीजिये। फ़रमाया- हक़ तआला

मेरे सवाल से बे नियाज़ है वह मेरी हालत को जानता है। मतलब यह है कि मुझे अपना हाल अर्ज़ करने की क्या ज़रूरत है वह जानता है कि मुझ पर क्या बीत रही है। वह मेरे मामला को मुझ से बेहतर समझता है। वह ख़ूब जानता है कि मेरी दुरुस्तगी व सलाह किस चीज़ में है। हज़रत उस्मान का मामला भी बिल्कुल उसी के मुशाबा और वह हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम को मिनज़नीक़ में रखे जाने के मक़ाम पर थे और बलवाईयों का इज्तेमा, आतिशे नमरूद के क़ायम मक़ाम और इमाम हसने मुज्तबा, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की जगह थे। लेकिन इन दोनों वाक़िया में फ़र्क़ यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस बला में निजात मिली थी और हज़रत उस्मान इस बला में शहीद हुए थे। क्योंकि निजात का ताल्लुक़ बक़ा से और हलाकत का ताल्लुक़ फ़ना से। फ़ना व बक़ा का ज़िक्र पहले बयान कर चुके हैं।

अलग़र्ज़ सूफ़ियाए किराम जो माल व जान ख़र्च करते हैं और बलाओं में तसलीम व रज़ा और इबादत में इख़लास बरतते हैं वह सब इन्हीं की इक़्तेदा में है। दर हक़ीक़त आप हक़ीक़त व शरीअत के इमामे बरहक़ हैं और आपकी तरीक़त में तर्तीब या तर्बियत दुरुस्ती में ज़ाहिर है।

हज़रत अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहहु

चौथे ख़लीफ़ा मुक़तदा-ए-जुमला राशिद,अख़ी-ए-मुस्तफ़ा ग़रीक़े बहरे बला, हरीक़े नारवला, औलिया व असफ़िया सैयदुना अबुल हसन अली बिन अबू तालिब करमतुल्लाह वजहु हैं। तरीक़त में आपकी शान अज़ीम और मक़ाम रफ़ीअ है। उसूल हक़ायक़ की तशरीह व ताबीर में आपको कमाले दस्तरस हासिल थे यहां तक कि हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि उसूल व बला में हमारे रहनुमा पेशवा हज़रत अली मुर्तज़ा हैं और आप इल्मे तरीक़त और उसके मामलात में हमारे इमाम हैं। इल्मे तरीक़त को अहले तरीक़त उसूल कहते हैं मामलाते तरीक़त दर असल बलाओं का तहम्मुल है।

मंक़ूल है किसी ने हज़रत अली मुर्तज़ा से अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे कोई वसीयत फ़रमाइये आपने इरशाद फ़रमाया-

अपने अहल व अयाल से इनहेकाम तेरा सबसे बड़ा मशग़ला न बन जाये अगर तेरे अहल व अयाल औलिया में से हैं तो अल्लाह तआला अपने वलियों को ज़ाया नहीं करता और अगर वह दुश्मने ख़ुदा हैं तो उसके दुश्मन से तुझे क्या सरोकार?

यह मसला मिन दूनिल्लाह से दिली इनक़ताअ व अलाहदगी से मुताल्लिक़ है वह अपने बंदों को जैसा चाहता है रखता है। चुंनाचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी अहलिया को जो कि हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम की दुख़्तर थीं इंतेहाई नाज़ुक (दर्देज़ह) में छोड़कर तसलीम व रज़ाए इलाही इख़्तेयार फ़रमाई। और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीबी हज़रत हाजरा और अपने फ़रज़ंद हज़रत इस्माईल को बे आब व गयाह मैदान में छोड़कर रज़ाए इलाही पर शाकिर हो गये। उन्होंने उनको अपना सबसे बड़ा मशग़ला न जाना। और हमा तन होकर दिल को हक़ से वासिल कर लिया। बिल आख़िर इन्हें दोनों जहान में सरफ़राज़ी हासिल हुई।

हज़रत अली मुर्तज़ा से एक और मौक़ा पर किसी ने दर्याफ़्त किया कि सबसे अच्छा अमल कौन सा है? आपने फ़रमाया अल्लाह तआला के साथ दिल तवंगर बनाना। जो दिल ख़ुदा के साथ ग़नी होता है उसे न तो दुनिया की नेस्ती परेशान कर सकती है और न दुनिया की हस्ती ख़ुश कर सकती है दर हक़ीक़त यह फ़ुक़र की सफ़वत की तरफ़ लतीफ़ इशारा है जिसका ज़िक्र किया जा चुका हैं।

लिहाज़ा अहले तरीक़त को चाहिये कि इबादात के हक़ायक़ इशारात के दक़ायक़ दुनिया व आख़ेरत के माल से इन्क़ेताअ और तक़दीरे इलाही के नज़ारा में आपकी इक़्तेदा करे।

अइम्मए तरीक़त अज़ अहले बैते अतहार

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले बैत वह हज़रात हैं कि जिनकी तहारत अज़ल से मख़सूस है। इनमें का हर फ़र्द तरीक़त में जामा व मुकम्मल था। मशायख़े तरीक़त और सूफ़िया के हर आम व ख़ास फ़र्द के यह इमाम रहे हैं इनमें चंद हज़रात का मुख़्तसर तज़किरा करता हूं।

१- सैयदना इमाम हसने मुज्तबा रज़ियल्लाहु अन्हु

अइम्मए अहले बैत अतहार में से जिगर बंदे मुस्तफ़ा रेहान दिल मुर्तज़ा क़ुर्रतुल ऐन सैयदा ज़हरा, अबू मुहम्मद सैयदुना इमाम हसन बिन अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। तरीक़त में आपकी नज़रे कामिल और ताबीराते हक़ायक़ में आला दर्जा की दस्तरस हासिल थी। यहां तक कि आपने अपनी वसीयत में फ़रमाया-

तुम असरारे रब्बानी की हिफ़ाज़त में महकम रहना क्योंकि अल्लाह तआला दिलों के भेदों से वाकिफ़ है।

इसकी हकीकत यह है कि बंदा असरारे रब्बानी की हिफ़ाज़त ऐसी ही करता है जिस तरह दिलों के भेदों को वह दूसरों से पोशीदा रखता है लिहाज़ा हिफ़्ज़े असरार यह है कि ग़ैरों की तरफ़ मुतवज्जोह न हो और हिफ़्ज़े ज़मायर यह है कि उसके इज़हार में हया मानेअ हो।

इल्मे तरीकत के हकायक व लतायफ़ में बुलंद मर्तबा का अंदाज़ा इस वाकिया से लगाया जा सकता है कि जब फ़िरका कदरिया को उरूज हुआ और मोतज़ला का मज़हब फैला तो हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत इमाम हसने मुज्तबा की ख़िदमत में बदीं मज़मून ख़त लिखा-

अल्लाह के नाम से जो रहमान व मेहरबान है आप पर ख़ुदा का सलाम और उसकी रहमत व बरकत हो ऐ रसूले ख़ुदा के फ़रज़ंद और उनकी चश्माने मुबारक की राहत। आप गरोह बनी हाशिम में उस कश्ती की मानिंद हैं जो गहरे व अंधेरे समुंद्र में चल रही हो आप हिदायत के रौशन चिराग़ और उसकी निशानियों में से हैं और आप उन आइम्मा-ए-दीन के सरख़ैल व कायद हैं कि जिसने उनकी पैरवी की वह इस तरह निजात पायेगा जिस तरह कश्ती-ए-नूह में सवार होने वाले मुसलमानों ने निजात पाई। ऐ फ़रज़ंदे रसूल आपका क्या इरशाद है जो कदर व इस्तेताअत (जबर व कदर) के मसले में हमें परेशानी लाहक है। आप हमारी रहनुमाई फ़रमाते हुए बताइये ताकि इस मसले में हमें मालूम हो जाये कि आप की रविश क्या है? क्योंकि आप फ़रज़ंदे रसूल हैं अल्लाह तआला ने आप हज़रात को इल्मे खुसूसी से नवाज़ा है। वह आप सबका मुहाफ़िज़ है और आप तमाम लोगों पर ख़ुदा की तरफ़ से मुहाफ़िज़ व निगहबान हैं।

हज़रत इमाम हसन मुज्तबा अलैहिस्सलाम ने इस मज़मून का जवाब फ़रमाया-

अल्लाह के नाम से जो मेहरबान व रहीम है। मकतूब तुम्हारा मुझे मौसूल हुआ जिसमें तुमने अपनी और उम्मत के दूसरे लोगों की परेशानी का तज़किरा किया है। इस मसले में मेरी जो राय है वह यह है कि जो शख़्स नेक व बद और तकदीर पर ईमान नहीं रखता वह काफ़िर है और जो अपने गुनाहों का ज़िम्मेदार ख़ुदा को ठहराता है वह बे ईमान है। अल्लाह तआला ने अपने बंदों को शुत्रे बेमु नहीं छोड़ा है न वह जबरन इताअत कराता है और न जबरन गुनाह

लेकिन बंदों की तमाम मिलकियतों और उनकी तमाम कुव्वत व ताक़त का हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआला है। अगर बंदों को ताअत पर मजबूर कर दिया जाता तो उनके लिये कोई इख़्तेयार न होता और इन्हें ताअत के सिवा कोई चाराकार न रहता। और अगर बंदे उसकी मअ़सियत करें और ख़ुदा की मशिय्यत उन पर एहसान करना चाहे, तो उनके और उनके गुनाह के दर्मियान कोई फ़ेअल हायल कर देता है। अब अगर वह इर्तकाबे मासी न कर सकें तो यह बात नहीं है कि ख़ुदा ने इन्हें मजबूर कर दिया था और न जबर से वह फ़ेअल उन पर लाज़िम कर दिया था। यह उन पर दलील व हुज्जत के तौर पर है अगर इन्हें उसकी मारफ़त हो। अल्लाह तआला ने उनके लिये राहे हिदायत बना दी है लिहाज़ा जिसके करने का हुक्म दिया है उसे करो और जिससे बचने का हुक्म दिया है उससे बचो। और अल्लाह ही के लिये हुज्जते बालिग़ा है वस्सलाम।

इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने बंदे को जिस क़दर तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाई है बंदा अमल में उसी क़दर मुख़्तार है। हमारा दीन जबर व क़दर के दर्मियान है। अगरचे इस ख़त के तमाम मज़मून से एक यही जुमला हमारा मक़सूद था लेकिन फ़साहत व बलाग़ते कलाम के एतबार से हमने पूरा ख़त नक़ल कर दिया है। और यह कि तुम्हें अंदाज़ा हो जाये कि हज़रत इमाम हसन मुज्तबा इल्मे हक़ायक़ व उसूल में कैसी महारत ताम्मह रखते थे। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि कमाले इल्म व फ़ज़्ल के बावजूद हज़रत इमाम हसन मुज्तबा के इल्म व फ़ज़्ल के मुक़ाबले में दसवीं दर्जे पर थे।

हज़रत इमाम हसन मुज्तबा के तहम्मुल व बुर्दबारी का अंदाज़ा इसी वाक़िया से लगाया जा सकता है कि एक रोज़ हज़रत इमाम हसन मुज्तबा कूफ़ा के दारुल ख़िलाफ़ा के दरवाज़े पर तशरीफ़ फ़रमा थे सहरा से एक देहाती आया और उसने आते ही आपको और आपके वालिदैन को गालियां देना शुरू कर दीं। आपने उससे पूछा क्या तू भूखा प्यासा है या तुझ पर कोई मुसीबत पड़ी है उसने फिर कहा आप ऐसे हैं और आपके वालिदैन ऐसे हैं। हज़रत इमाम हसन ने अपने गुलाम से फ़रमाया तश्त में चांदी भरकर लाओ और उसे दे दो। फिर फ़रमाया ऐ देहाती हमें माज़ूर समझना। घर में इसके सिवा कुछ और न था वरना उसके देने से इंकार न होता। जब देहाती ने आपका यह सब्र व तहम्मुल देखा तो कहने लगा मैं गवाही देता हूं कि यक़ीनन आप फ़रज़ंदे रसूल हैं।

हक़ीक़त यह है कि तमाम मशायख़ व औलिया की यह सिफ़त आपके इत्तेबा में है क्योंकि इनके नज़दीक भी लोगों का बुरा भला कहना बराबर है और उनके जुल्म व सितम और सब्ब व शतम से वह कोई असर नहीं लेते।

२- हज़रत इमाम हुसैन गुलगों क़बा रज़ियल्लाहु अन्हु

अइम्मा अहले बैत अतहार में से शमअे आले मुहम्मद तमाम दुनियावी अलायक़ से पाक व साफ़। अपने ज़माना के इमाम व सरदार अबू अब्दुल्लाह सैयदुना इमाम हुसैन बिन अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। आप अहले इब्तेला के क़िब्ला व रहनुमा और शहीद शिद्दते कुर्ब व बला में और तमाम अहले तरीक़त आपके हाल की दुरुस्तगी पर मुत्तफ़िक़ हैं। इसलिये कि जब तक हक़ ज़ाहिर व ग़ालिब रहा आप हक़ के फ़रमा बर्दार रहे और जब हक़ मग़लूब व मफ़कूद हुआ तो तलवार खींचकर मैदान में निकल आये और जब तक राहे खुदा में अपनी जान अज़ीज़ कुरबान न कर दी चैन व आराम न मिला। आप में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेश्तर निशानियां थीं। जिनसे आप मख़सूस व मुज़ैयन थे। चुनांचे सैयदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं एक रोज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ तो देखा कि इमाम हुसैन को आप ने अपनी पुश्त मुबारक पर सवार कर रखा है। डोरी का एक हिस्सा हुज़ूर ने अपने हाथ में ले रखा है और दूसरा हिस्सा इमाम हुसैन के हाथ में है। इमाम हुसैन आपको चलाते हैं और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ानू के ज़रिये चलते रहे। मैंने जब यह हाल देखा तो कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! कितनी अच्छी सवारी है आपकी। हुज़ूर ने आपसे फ़रमाया या उमर् यह सवार भी तो कितना उम्दा है।

सैयदुना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से तरीक़त में बकसरत कलामे लतीफ़ और उसके रुमूज़ व मामलात मंकूल हैं चुनांचे आप ने फ़रमाया तुम्हारे लिये सबसे ज़्यादा रफ़ीक़ व मेहरबान तुम्हारा दीन है इसलिये कि बंदे की निजात दीन की पैरवी में है और उसकी हलाकत उसकी मुख़ालफ़त में है। साहबे अक़्ल व ख़रद वही शख़्स है जो मेहरबान के हुक्म की पैरवी करे और उसकी शफ़क़त को मलहूज़ रखे और किसी हालत में उसकी मुताबेअ़त से रूगरदानी न करे। बिरादरे मुशफ़िक़ वही होता है जो उसकी खैर ख़्वाही करे और शफ़क़त व मेहरबानी का दरवाज़ा उस पर बंद न करे।

एक रोज़ एक शख़्स ने हाज़िर होकर आप से अर्ज़ किया कि ऐ फ़रज़ंदे रसूल!

में एक मुफ़लिस व नादार शख़्स हूं में साहबे अहल व अयाल हूं मुझे अपने पास से रात के खाने में से कुछ इनायत फ़रमाइये। हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया बैठ जाओ मेरा रिज़्क़ अभी राह में है कुछ देर बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से दीनारों की पांच थैलियां आयीं। हर थैली में एक हज़ार दीनार थे। लाने वालों ने अर्ज़ किया कि हज़रत अमीर मुआविया माज़रत ख़्वाह हैं और अर्ज़ करते हैं कि फ़िलहाल इनको अपने ख़ुद्दाम पर ख़र्च फ़रमायें मज़ीद फिर हाज़िर किये जायेंगे। हज़रत इमाम हुसैन ने इस नादार व मुफ़लिस शख़्स की तरफ़ इशारा फ़रमाया और पांचों थैलियां उसे इनायत करते हुए माज़रत की कि तुम्हें बहुत देर तक इंतज़ार करना पड़ा सिर्फ़ इतना ही कमतर अतीया था अगर मैं जानता कि इतनी क़लील मिक़दार है तो तुम्हें इंतज़ार की ज़हमत न देता मुझे माज़ूर समझना। हम तो अहले इब्तेला से ताल्लुक़ रखते हैं हम ने तो तमाम दुनियावी ज़रूरतों को छोड़कर अपनी राहतों को फ़ना कर दिया है दूसरों की भलाई के लिये आपके फ़ज़ायल व मनाक़िब इस क़द्र मशहूर हैं कि कोई उम्मती इससे बेख़बर नहीं है।

३- हज़रत सज्जाद ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु

आइम्मा अहले बैत अतहार में से वारिसे नुबुव्वत, चिराग़े उम्मत, सैयदे मज़लूम ज़ैनुल एबाद, शमअ-ए-औताद, सैयदुना अबुल हसन अली अल मारूफ़ बज़ैनुल आबेदीन बिन इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। आप अपने ज़माना के सबसे बड़े ज़ाहिद व इबादत गुज़ार और कश्फ़ व हक़ायक़ व नुक्ते दक़ायक़ में मशहूर हैं किसी ने आपसे दर्याफ़्त किया दुनिया व आख़ेरत में सबसे ज़्यादा नेक बख़्त व सईद कौन शख़्स है आपने फ़रमाया- वह शख़्स जब राज़ी हो तो उसकी रज़ा उसे बातिल पर आमादा न करे और जब नाराज़ हो तो उसकी नाराज़गी उसे हक़ से न भटकने दे। यह वस्फ़, रास्त रौ लोगों के औसाफ़े कमाल में से है इसलिये कि बातिल से राज़ी होना भी बातिल है और गुस्सा की हालत में हक़ को हाथ से छोड़ना भी बातिल है। मोमिन की यह शान नहीं है कि वह अपने आपको बातिल में मुब्तला करे।

आपके बारे में मंकूल है कि मैदाने करबला में जब हज़रत इमाम हुसैन को अपने अहल व अयाल और रुफ़क़ा समेत शहीद कर दिया गया और हज़रत ज़ैनुल आबेदीन के सिवा मस्तूराते हरम का मुहाफ़िज़ व निगहबान कोई न था आप उस वक़्त बीमार व अलील थे चुनांचे अहले बैत अतहार को ऊंटों की

नंगी पुश्त पर सवार करके दमिश्क ले जाया गया यज़ीद बिन अमीर मुआविया के दरबार में किसी ने आपसे पूछा ऐ अली ऐ रहमत के घर वालो, किस हाल में हो? आपने फ़रमाया हमारी हालत अपनी कौम के हाथों ऐसी है जैसे हज़रत मूसा की कौम की हालत फ़िरऔनियों के हाथों हुई थी कि वह उनके फ़रज़ंदों को क़त्ल करते और उनकी औरतों को छोड़ देते थे। लिहाज़ा हम नहीं जानते कि इस इम्तेहानगाह में हमारी सुबह हमारी शाम के मुक़ाबला में क्या हक़ीक़त रखेंगी, हम ख़ुदा की नेमतों पर शुक्र बजा लाते हैं और उसकी डाली हुई मुसीबतों पर सब्र करते हैं।

हिकायत

एक साल हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान हज के लिये आया तवाफ़े काबा कर रहा था और चाहता था कि हजरे असवद को बोसा दे लेकिन अज़दहाम में वहां तक पहुंचने की राह न मिलती थी। जब वह मिम्बर पर ख़ुत्बा देने खड़ा हुआ तो हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिदे हराम में इस जाह व जलाल से दाख़िल हुए कि आप का चेहरा दरख़्शां रुख़सारे मुबारक ताबां और लिबासे मुबारक मोअत्तर था। जब आप तवाफ़ करते हुए हजरे असवद के क़रीब पहुंचे तो आपके एहतेराम व ताज़ीम में हजरे असवद के गिर्द से तमाम लोग हटकर खड़े हो गये ताकि आप हजरे असवद को बोसा दे सकें। शामियों ने जब आपकी यह शान व शौकत देखी तो वह हश्शाम से कहने लगे ऐ अमीरुल मोमिनीन! लोगों ने हमें हजरे असवद को बोसा देने की राह नहीं दी बावजूद यह कि तुम अमीरुल मोमिनीन थे लेकिन यह ख़ूबरू नौजवान के आते ही सब लोग हजरे असवद के पास से हट गये और इन्हें रास्ता दे दिया। हश्शाम ने अज़ राहे तजाहुल आरिफ़ाना कहा मैं नहीं जानता कि यह शख़्स कौन हैं? इस इंकार का मक़सद यह था कि शामी लोग इन्हें पहचान न सकें और कहीं उनकी पैरवी इख़्तेयार न कर लें जिससे उसकी इमारत ख़तरे में पड़ जाये। फ़रज़ौक़ शायर उस वक़्त वहीं खड़ा था इस एहानत से उसकी ग़ैरत ईमानी जोश में आई और बबांगे दहुल कहने लगा। मैं इन्हें ख़ूब जानता हूं शामियों ने पूछा ऐ अबू फ़रांश! बताओ यह कौन है? इससे बढ़कर पुरवक़ार और दबदबा वाला नौजवान हमने नहीं देखा। फ़रज़ौक़ शायर ने कहा कि कान खोलकर सुन लो मैं इनके औसाफ़ बताता हूं और उनके नस्ब को बयान करता हूं इसके बाद फ़ील बदीह क़सीदा मोज़ूं करके पढ़ा-

क़सीदा मदहिया दर शाने इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु

यह वह शख़्स है जिसके निशाने क़दम को अहले हरम पहचानते हैं
ख़ाना-ए-काबा और हल व हरम सब इसे जानते हैं
यह ख़ुदा के बंदों में बेहतरीन बंदे का फ़रज़ंद है
सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी, पाक व साफ़ और बे दाग़ वाला है
अगर तू नहीं जानता तो सुन यह फ़ातिमा ज़हरा के जिगर गोशा हैं
इनके नाना पर अल्लाह ने नबियों का सिलसिला ख़त्म फ़रमाया है
इनकी मुनव्वर पेशानी से नूरे हिदायत इस तरह जलवा कफ़गन है
जैसे आफ़ताब की रौशनी से तारीकियां छट जाती हैं
यह अपनी आंखें हया से नीचे रखें और लोग हैबत से इनकी तरफ़ आंखें ऊंची नहीं कर सकते
और जब बात करें तो मुंह से फूल झड़ें
जब कोई क़ुरैश इन्हें देखता है तो वह बोल उठता है
कि इन पर तमाम ख़ूबियां तमाम हो चुकी हैं
यह इज़्ज़त व मंज़िलत की ऐसी बुलंदी पर फ़ायज़ हैं
कि अरब व अजम का कोई मुसलमान इनसे हमसरी नहीं कर सकता
इनके नाना तमाम नबियों से अफ़ज़ल और उनकी उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है और तू भी उनकी उम्मत का एक फ़र्द है
जब हजरे असवद को बोसा देने क़रीब हों तो मुमकिन है वह उनकी उंगलियों की राहत पहचान कर इन्हें थाम ले
इनके दस्ते मुबारक में छड़ी है जिसकी ख़ुशबू दिल नवाज़ है
इनकी हथेली की ख़ुशबू हर तरफ़ फैल रही है
यह नर्म ख़ू हैं ख़फ़गी व गुस्सा का उनसे कोई अंदेशा
यह अपनी दो ख़ूबियों से यानी हुस्ने अख़लाक़ और पाकीज़ा ख़सलत से आरास्ता हैं
इनके औसाफ़ हमीदा अल्लाह के रसूल से माख़ूज़ हैं
इनके अनासिर और इनकी ख़ू बू पाकीज़ा हैं
ऐ हश्शाम! तेरा इंकार करना इन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता

इन्हें तो अरब व अजम सब पहचानते हैं
इनके दोनों हाथ ऐसे हैं जिनका फ़ैज़ बारिश की मानिंद आम है
इनकी बख़्शिश हर वक़्त जारी है हत्ता कि तंगदस्ती में भी ख़त्म नहीं होती
ख़ुदा की तमाम मख़लूक़ पर इनका एहसान आम है
जिससे गुमराही, तंगदस्ती और ज़ुल्म व ज़्यादती परागंदा होकर रह गये हैं
किसी सख़ी की सख़ावत इनकी बख़्शिश की हद तक नहीं पहुंच सकती
और कोई क़ौम इनके बराबर नहीं पहुंच सकती अगरचे शुमार में कितनी ही ज़्यादा क्यों हो

यह हज़रात क़हतसाली के ज़माने में बारिश की मानिंद सैराब करते हैं
यह शेरे बब्बर हैं जब कि लोग जंग की भट्टी में जल रहे हैं
यह उस गरोह से हैं जिनसे मुहब्बत करना दीन और उनसे बाज़ रखना कुफ्र और उनसे वाबस्ता रहना निजात और पनाह देने वाला है
अगर तमाम अहले तक़वा को जमा किया जाए तो यह उन सबके इमाम होंगे
अगर अहले ज़मीन से अच्छे लोगों के बारे में पूछा जाये तो सब कहें कि यही हैं

इनके लिये तवंगरी व मुफलिसी दोनों बराबर हैं
तंगदस्ती इनके हाथों की फ़राख़ी को कम नहीं करती
अल्लाह ने इन्हें फ़ज़ीलत दी और इनको शराफ़त व बुज़ुर्गी से नवाज़ा
और लोहे व क़लम में इनके लिये यही हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है
इनका ज़िक्र, ज़िक्रे ख़ुदा के बाद मुक़द्दम है
हर मैदान में उनके कलिमात मुसबत हैं
वह कौन सा क़बीला है जिनकी गर्दनों पर उनका और उनके आबा, व अजदाद के एहसान का बोझ नहीं है
जिसे ख़ुदा की मारेफ़त है वह इनकी बरतरी को पहचानता है
चूंकि इनके घर से दीन सारी उम्मत को पहुंचा है

फ़रज़्दक़ शायर ने हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु की मनक़बत में अशआर कहने के अलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अहले बैत अतहार की तारीफ़ व तौसीफ़ में और भी अशआर कहे हैं जिस पर हश्शाम बहुत बराफ़रोख़्ता हुआ और फ़रज़ौक़ को गिरफ़्तार करके असफ़ान के जेलख़ाने में क़ैद कर दिया जो कि मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के

दर्मियान वाक़ेय है। (हश्शाम की यह पहली जुरअत है कि बिला सुबूत व मुक़द्दमा किसी को क़ैद किया हालांकि इस्लाम में इसका कहीं जवाज़ नहीं है) हज़रत इमाम को जब इस वाक़िया की इत्तेला मिली तो फ़रज़ौक़ की जुरअते ईमान की तहसीन फ़रमाई और दिलजमअई के लिये बारह हज़ार दिरहम व दीनार इस पैग़ाम के साथ भिजवाये कि हमें माजूर समझना अगर इससे ज़्यादा हमारे पास होते तो उसमें भी दरीग़ न करते। फ़रज़ौक़ ने वह माल वापस करते हुए अर्ज़ किया कि ऐ फ़रज़ंदे रसूल! मैंने बादशाहों और अमीरों की शान में बकसरत क़सीदे कहे हैं अगर उनके कफ़्फ़ारा में कुछ अशआर फ़रज़ंदाने रसूल की मुहब्बत में अर्ज़ कर दिये तो क्या कमाल किया है? मैंने अपनी ईमानी ग़ैरत का सबूत दिया है किसी माल व मनाल की तमअ में नहीं कहा है। इसका अज्र खुदा से ही चाहता हूं और खुदा के रसूल के अहले बैत से मुहब्बत व दोस्ती का तलबगार हूं। हज़रत इमाम को जब यह पैग़ाम पहुंचा तो आपने वह रक़म वापस करके कहलवाया कि ऐ अबुल फ़राश! अगर तुम हमसे मुहब्बत रखते हो तो जो हमने भेजा है उसको क़बूल कर लो। क्योंकि हमने रज़ाए इलाही के लिये अपनी मिलक से निकालकर तुम्हारी मिलक में दे दिया है। उस वक़्त फ़रज़ौक़ शायर ने वह अतीया ले लिया और एहसानमंदी का इज़हार किया। हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ इससे कहीं ज़्यादा है जितनी की जाये कम है।

४-हज़रत इमाम अबू जाफ़र मुहम्मद बाक़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

अइम्मा अहले बैत अतहार में से, तरीक़त में दलील व हुज्जत, अरबाबे मुशाहदा के बरहान इमामे औलादे नबी बरगुज़ीदा नस्ले अली, सैयदुना इमाम अबू जाफ़र मुहम्मद सादिक़ बिन अली बिन हुसैन बिन अली मुर्तज़ा बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। बाज़ कहते हैं कि आप की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी। उलूम की बारीकियों और किताबे इलाही के रुमूज़ व इशारात और उसके लतायफ़ वाज़ेह तौर पर बयान करने में आपको कमाले दस्तरस थी। आपकी करामतें और रौशन दलायल और दलायल क़ातिआ ज़ुबाने ज़द ख़ास व आम हैं। बादशाहे वक़्त ने आपको शहीद करने के इरादे से किसी के ज़रिये बुलवाया। जब उसके क़रीब पहुंचे तो वह माज़रत करने लगा और तहायफ़ पेश करके

इज़्ज़त व एहतेराम के साथ वापस किया। दरबारियों ने हैरत व ताज्जुब से पूछा आपने तो इन्हें शहीद करने के लिये बुलाया था लेकिन सुलूक इसके बरअक्स है? बादशाह ने जवाब दिया जब वह मेरे करीब आये तो मैंने दो शेरों को उनके दाहिने और बायें खड़े देखा और वह ज़ुबाने हाल से गोया थे कि अगर तूने इमाम के साथ बद सुलूकी की तो हम तुझे मार डालेंगे। मंकूल है कि आपने आयते करीमा (जिसने तागूत का इंकार किया और अल्लाह पर ईमान रखा) की तफ़सीर में फ़रमाया जो तुझे हक़ तआला के मुताला से ग़ाफ़िल करे वही तेरा तागूत है।

तो ऐ तालिबे हक़! अब तुम्हें यह देखना चाहिये कि कौन सी चीज़ हिजाब बन रही है जो मारेफ़ते इलाही में मानेअ है और यादे ख़ुदा से तुम्हें ग़ाफ़िल बना रही है उसे तर्क कर दो ताकि मकाशफ़ा-ए-रब्बानी हासिल हो और कोई हिजाब व मानेअ दर्मियान में हायल न रहे। क्योंकि किसी ममनूअ व महजूब शख़्स को ज़ेब नहीं देता कि वह कुर्बे इलाही का दावा करे। आपके एक ख़ादिमे ख़ास बयान करते हैं कि जब रात का एक पहर गुज़र जाता है और आप दुरूद व वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो बुलंद आवाज़ से मुनाजात करते हैं और कहते हैं ऐ मेरे ख़ुदा! ऐ मेरे मालिक! रात आ गयी है अब बादशाहों का तसर्रुफ़ व इख़्तेयार ख़त्म हो चुका है, आसमान पर सितारे झिलमिलाने लगे हैं। ख़लक़त घरों में जा चुकी है और लोग सो चुके हैं, आवाज़ें सकूत में डूब चुकी हैं ख़लक़त लोगों के दरवाज़ों से हट चुकी है। बनू उमैया भी महव ख़्वाब व ख़ोर हैं उन्होंने अपने ख़ज़ानों को मुक़फ़्फ़ल करके पहरेदार खड़े कर दिये हैं। जो लोग उनसे तमअ व लालच रखते हैं वह भी उनसे दूर हो चुके हैं। ऐ ख़ुदा तू ज़िन्दा व पाइंदा और देखने और जानने वाला है। तेरे लिये ख़्वाब व बेदारी बराबर है। जो तुझे ऐसा न जाने वह किसी नेमत का मुस्तहिक़ नहीं है। ऐ ख़ुदावंद करीम! तुझको कोई चीज़ किसी चीज़ से रोक नहीं सकती, और रात व दिन, तेरी बक़ा में असर अंदाज़ नहीं होते। तेरी रहमत के दरवाज़े हर दुआ करने वाले के लिये खुले हुए हैं और तेरे ख़ज़ाने तेरी हम्द व सना करने वालों के लिये वक्फ़ हैं। तू ऐसा मालिक हक़ीक़ी है कि किसी सायल को महरूम रखना तेरी शायाने शान नहीं है। तू हर मोमिन की दुआ क़बूल फ़रमाता है किसी की दुआ रद्द नहीं करता। और ज़मीन व आसमान में किसी सायल को महरूम नहीं रखता। ऐ मेरे ख़ुदा! जब मौत, क़ब्र, हिसाब और हश्र को याद करता हूं तो दुनिया में यह दिल किसी तरह चैन व क़रार नहीं पाता। लिहाज़ा जो भी हाजत मुझे लाहक़ होती है मैं

तुझी से अर्ज़ करता हूं और तुझी को फ़रयाद रस जान कर तुझ ही से मांगता हूं अब मेरी अर्ज़ यह है कि बवक़्ते मौत, अज़ाब से महफ़ूज़ रखना और बवक़्त हिसाब, बे अताब राहत अता फ़रमाना। आपका मामूल था कि इस दुआ में तमाम रात गुज़ार देते। और बराबर आह व फ़ुग़ां में मशग़ूल रहा करते थे एक रात मैंने अर्ज़ किया ऐ मेरे और मेरे मां बाप के आक़ा! यह गिरया ज़ारी का और सीना फ़ंगारी का सिलसिला कब तक जारी रहेगा? आपने फ़रमाया ऐ दोस्त! हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के एक फ़रज़ंद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम नज़रों से रू पोश हुए थे उस पर वह इतना रोए थे कि उनकी आंखों की बसारत जाती रही थी। और आंखें सफ़ेद हो गयी थीं लेकिन मेरे आबा व अजदाद के ख़ानदान के १८ नुफ़ूस हज़रता इमाम हुसैन की रफ़ाक़त में मैदाने करबला के अंदर गुम हुए हैं। यह ग़म क्या उससे कुछ कम है? मैं इनके ग़म व फ़िराक़ में अपने रब के हुज़ूर फ़रियाद करके क्यों आंखें सफ़ेद न करूं?

यह मुनाजात अरबी में ही फ़सीह है तवालत के लिहाज़ से सिर्फ़ तर्जमा पर इक्तेफ़ा किया गया है।

५- इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा

अइम्मा अहले बैत अतहार में से, यूसुफ़े सुन्नत जमाले तरीक़त, मेबरे मारेफ़त मुज़ैयने सफ़वत सैयदुना अबू मुहम्मद इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद सादिक़ अलमुलक़्क़ब ब-इमाम बाक़र बिन अली बिन हुसैन बिन अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन हैं।

आपका हाल बुलंद सीरत पाकीज़ा ज़ाहिर व बातिन आरास्ता व पैरास्ता और शमायल व ख़सायल शुस्ता व मुनव्वर थे। आपके इशारात तमाम उलूम में ख़ूबी और रिक़्क़ते कलाम की बिना पर मशहूर हैं और मशायख़े तरीक़त में बा एतेबार लतायफ़ व मुआनी मारूफ़ हैं जिनसे किताबें भरी पड़ी हैं आपका इरशाद है कि जिसे अल्लाह की मारेफ़त हासिल हो गयी वह मा सिवा अल्लाह से किनारा कश हो गया। इसलिये कि जो शख़्स ख़ुदा से वासिल हो जाता है उसके दिल में किसी ग़ैर की कोई क़दर व मंज़िलत बाक़ी नहीं रहती।

दर असल ख़ुदा की मारेफ़त उसके ग़ैर से दस्तकश होने ही का नाम है। और उसी अलहेदगी से ही मारेफ़ते इलाही वासिल होती है। जब तक ग़ैरुल्लाह

से लगाव और ताल्लुक़ रहेगा, मारेफ़ते इलाही से महरूम ही रहेगा। चुनांचे आरिफ़बिल्लाह मख़लूक़ और उसकी फ़िक्र से बे नियाज़ होता है और उसका दिल मासिवा अल्लाह से जुदा होकर ख़ुदा के साथ वासिल हो जाता है। उसके दिल में मख़लूक़ की कोई क़द्र व मंज़िलत नहीं रहती न वह किसी हाल में उनकी तरफ़ इल्तेफ़ात करता है और न उनसे कोई इलाक़ा रखता है।

आपका यह भी इरशाद है- तौबा के बग़ैर इबादत सहीह नहीं होती इसलिये कि अल्लाह तआला ने तौबा को इबादत पर मुक़द्दम फ़रमाया चुनांचे फ़रमाता है तौबा करने वाले ही इबादत करने वाले होते हैं क्योंकि तौबा मक़ामात की इब्तेदा और अबूदिय्यत उसकी इंतेहा है। अल्लाह तआला ने जब गुनाहगार बंदों का ज़िक्र फ़रमाया तो तौबा के हुक्म से याद किया चुनांचे फ़रमाया-

ख़ुदा की बारगाह में तमाम गुनाहों से तौबा करो ऐ मुसलमानो!

लेकिन अल्लाह तआला ने जब अपने हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद फ़रमाया तो अबूदिय्यत व बंदगी से याद किया चुनांचे फ़रमाया-

हम अपने बंदए ख़ास पर जो वही चाही नाज़िल फ़रमाई।

हिकायत

एक मर्तबा हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह अलैहि आपकी ख़िदमत में आये और अर्ज़ किया कि ऐ फ़रज़ंदे रसूल! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये। मेरा दिल स्याह हो गया है। आपने फ़रमाया ऐ अब्बा सुलेमान! तुम तो अपने ज़माना के मश्हूर आबिद व ज़ाहिद हो तुम्हें मेरी नसीहत की हाजत ही क्या? उन्होंने अर्ज़ किया ऐ फ़रज़ंदे रसूल! आपको सारी मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत हासिल है और आप पर सब की नसीहत फ़रमाना वाजिब है। आपने फ़रमाया ऐ अब्बा सुलेमान! मैं हमेशा इस बात से ख़ायफ़ रहता हूं कि कल रोज़े क़ियामत मेरे जद्दे करीम अलैहित्तहिय्यतो वत्तसलीम उस पर मेरी गिरफ़्त न फ़रमायें कि तुमने क्यों मेरी इत्तेबा का हक़ अदा न किया क्योंकि इत्तेबा नबवी का ताल्लुक़ न नस्बे सहीह से है, और न निसबते क़वी से बल्कि पैरवी करने से ही मुताल्लिक़ है, यह सुनकर हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह रोकर अर्ज़ करने लगे ख़ुदावंद! जिस शख़्स का ख़मीर ही नुबुव्वत की ख़ाक से है और जिसकी तबअ निश व नुमा अपने जद्दे करीम अलैहिस्सलाम के बुरहान व हुज्जत के उसूल से है और जिसकी मादरे मोअज़्ज़मा बतूल अलज़हरा हैं जिनका नाम नामी सैयदा फ़ातिमा

रज़ियल्लाहु अन्हा है वही जब बज़ाते ख़ुद इस हैरानी व परेशानी में हैं तो दाऊद किस गिनती व शुमार में है वह ज़ुहद व वरअ पर कैसे भरोसा कर सकता है।

हिकायत

एक दिन आप अपने गुलामों के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे आपने उनसे फ़रमाया आओ हम सब मिलकर अहद व पैमान करें कि हम में से जो भी बख़्शा जाये वह रोज़े क़ियामत दूसरे की शफ़ाअत करे। तमाम गुलाम अर्ज़ करने लगे ऐ फ़रज़ंदे रसूल! आपको हमारी शफ़ाअत की क्या हाजत है? आपके जद्दे करीम अलैहिस्सलाम तो ख़ुद सारी मख़लूक़ के शफ़ीअ होंगे। आपने फ़रमाया! अपने रब तआला पर शर्मसार हूं और रोज़े क़ियामत अपने जद्दे करीम अलैहिस्सलाम के रूबरू खड़े होने की ताक़त नहीं रखता।

आपकी यह कैफ़ियत अपने नफ़्स की ऐब गीरी पर मबनी थी क्योंकि यह सिफ़त औसाफ़े कमाल से मुताल्लिक़ है। और इसी सिफ़त पर ख़ुदा के तमाम मक़बूल बंदे हैं ख़्वाह वह अंबिया व मुरसेलीन हों या औलिया व असफ़िया क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

अल्लाह तआला जब अपने किसी बंदे पर भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसको उसके नफ़्स के उयूब दिखा देता है।

जो बंदा बारगाहे समदियत में तवाज़अ व बंदगी से सर झुकाता है अल्लाह तआला उसे दोनों जहान में सर बुलंद रखता है अगर हम तमाम अहले बैत अतहार का किसी तरह तज़्किरा करें और इनके फ़ज़ायल व मनाक़िब शुमार करायें तो यह किताब उसकी मुतहम्मिल नहीं हो सकती। लिहाज़ा इसी पर इक्तेफ़ा किया जाता है।

असहाबे सुफ़्फ़ा

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और चंद अहले बैत अतहार के बाद दरबारे नबवी के असहाबे सुफ़्फ़ा का तज़किरा इख़्तेसारन करता हूं अगरचे इससे पहले की तसनीफ़ मिनहाजुद्दीन में नाम बनाम तफ़सील के साथ बयान कर चुका हूं इस जगह उनके असमा कुन्नियत और मुख़्तसर हाल बयान करता हूं ताकि मक़सद बर आरी में मुआविन साबित हो।

वाज़ेह रहना चाहिये कि उम्मते मुस्लेमा का इस पर इजमा है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबए किराम की एक जमाअत मस्जिदे

नबवी में हमा वक़्त मसरूफ़े इबादत रहती थी और उन्होंने कस्बे मआश से किनारा कशी इख़्तेयार कर रखी थी। अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनकी तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाने का हुक्म दिया चुनांचे इरशाद है--

जो लोग दिन रात अपने रब की इबादत करते और उसकी रज़ा चाहते हैं आप उन पर तवज्जोह ख़ास मबज़ूल फ़रमायें।

असहाबे सुफ़्फ़ा के फ़ज़ायल व मनाक़िब में बकसरत आयाते क़ुरआनी और अहादीसे नबवी नातिक़ व शाहिद हैं। इनमें से चंद बातों का इस जगह ज़िक्र करता हूं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु बयान करते हैं कि एक दिन रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र असहाबे सुफ़्फ़ा की तरफ़ हुआ, और आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि वह फ़क्र व मुजाहिदे के बावजूद ख़ुश व ख़ुर्रम हैं आप ने इनसे फ़रमाया ऐ असहाबे सुफ़्फ़ा तुम को और मेरी उम्मत के हर उस शख़्स को जो तुम्हारी सिफ़त पर ख़ुश दिली से क़ायम हो बशारत दी गयी है कि तुम जन्नत में मेरे रुफ़क़ा होंगे।

१- उन अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से एक सहाबी हज़रत बिलाल बिन रबाह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो बारगाहे जबरूत के मनादी यानी मोअज़्ज़िन और हुज़ूर के पसंदीदा थे।

२- दूसरे सहाबी हज़रत अबू अब्दुल्लाह सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हुज़ूर के महबूब और महरमे असरार थे।

३- तीसरे सहाबी हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो मुहाजिर व अंसार के जरनैल थे और रज़ाए इलाही के हर वक़्त तालिब थे।

४- चौथे सहाबी हज़रत अबू अलयक़ज़ान अम्मारा बिन यासर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो बरगुज़ीदा और महबूबाने ख़ुदा की ज़ीनत थे।

५- पांचवें सहाबी हज़रत अबू मसऊद अब्दुल्लाह बिन मसऊद हज़ली रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं जो इल्म व हिल्म के मख़ज़न हैं।

६- छटे सहाबी हज़रत उतबा बिन मसऊद बिरादर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं जो पाक तीनत और दरगाहे हुरमत के मुतमस्सिक थे।

७- सातवें सहाबी हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो गोशाए तंहाई की राह के सालिक और हर ऐब व ज़िल्लत से किनाराकशी करने वाले थे।

८- आठवें सहाबी हज़रत ख़बाब इब्नुलअरत रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो मक़ाम तक़्वा की दावत देने वाले और बला व मुसीबत पर राज़ी रहने वाले थे।

९- नवें सहाबी हज़रत सुहेब बिन सन्नान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो बारगाहे रज़ा के क़ासिद और बारगाहे बक़ा और फ़ना के तालिब थे।

१०- दसवें सहाबी हज़रत उत्वा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो सआदत के मोती और बहरे क़नाअत के शनावर थे।

११- ग्यारहवें सहाबी हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई थे दोनों जहान और तमाम मख़लूक़ से मुंह मोड़ एक ख़ुदा के होकर रह गये।

१२- बारहवें सहाबी हज़रत अबू कबीशा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हुज़ूर अकरम के महबूब और मुशाहिदात की तलब में मुशक़्क़तें झेलने वाले थे।

१३-तेरहवें सहाबी हज़रत अबू मुरशिद अदवी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो और तमाम मख़लूक़ से मुंह मोड़ कर ख़ुदा की तरफ़ रुजू करने वाले थे।

१४- चौदहवें सहाबी हज़रत सालिम जो हज़रत हुज़ैफ़ा यमानी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मौली हैं वह राहे तवाज़ो की तामीर करने वाले और हुज्जते क़तइअ की राह तय करने वाले थे।

१५- पंद्रहवें सहाबी हज़रत अकाशा बिन अलहिसीन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो अज़ाबे इलाही से डरने वाले और गुमराही से दूर रहने वाले थे।

१६- सोलहवें सहाबी हज़रत मसऊद बिन रबीउल क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो क़बीला बनी क़ार के सरदार और मुहाजिर व अंसार की ज़ीनत थे।

१७- सत्रहवें सहाबी हज़रत अबू ज़र बिन जुनादा ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनका ज़ुहद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुशाबह और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मानिंद था और जो दीदारे इलाही के मुश्ताक़ थे।

१८- अट्ठारहवें सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं जो हुज़ूर के तमाम क़ौल व फ़ेअल के मुहाफ़िज़ और हर ख़ूबी से मुत्तसिफ़ थे।

१९- उन्नीसवें सहाबी हज़रत सफ़वान बिन बेज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो मक़ामे इस्तेक़ामत पर क़ायम और मुताबअते शरीअत पर गामज़न थे।

२०- बीसवें सहाबी हज़रत अबू अलदर अवीम बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो साहबे हिम्मत और हर तोहमत से मुबर्रा और पाक थे।

२१- इक्कीसवें सहाबी हज़रत अबू लवाबा बिन अब्दुल मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बरगुज़ीदा सहाबी और बारगाहे रेजा से ताल्लुक़ रखने वाले थे।

२२- बाईसवें सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन बदर जहनी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो कीमयाए बहरे शर्फ़ और तवक्कुल के सदफ़ के मोती थे।

अगर तमाम असहाबे सुफ़्फ़ा के अस्मा बयान किये जायें तो किताब बहुत तवील हो जायेगी। शेख़ अब्दुर्रहमान मुहम्मद बिन अल हुसैन सलमा रहमतुल्लाह ने जो मशायख़ इज़ाम के कलाम व अक़वाल के जामेअ व नाक़िल हैं एक किताब, ख़ास अहले सुफ़्फ़ा के लिये तसनीफ़ फ़रमाई है जिसमें हर एक के मनाक़िब व फ़ज़ायल और अस्माए गिरामी उनकी कुन्नियतों के साथ अलहदा अलहदा बयान किये हैं यह किताब क़ाबिलेदीद है।

२३- हज़रत मसत्तह बिन साबित बिन एबाद बदरी रज़ियल्लाहु अन्हु को भी असहाबे सुफ़्फ़ा में शुमार किया जाता है मगर मैं दिल से उनको दोस्त नहीं रखता चूंकि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पर लगाई जाने वाली झूटी तोहमत की इब्तेदा उन ही से हुई थी।

२४- हज़रत अबू हुरैरा।

२५- हज़रत सौबान।

२६- हज़रत मआज़ बिन अलहारिस।

२७- हज़रत दस्तान।

२८- हज़रत ख़िलाब।

२९- हज़रत साबित बिन वदीया।

३०- हज़रत अबू ईसा।

३१- हज़रत अवीम बिन साइद।

३२- हज़रत सालिम बिन उमर बिन सावित।

३३- हज़रत अबुल लैस।

३४- हज़रत कअब बिन उमर।

३५- हज़रत ज़हब बिन मअक़ल।

३६- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस।

३७- हज़रत हज्जाज बिन उमर असलमी रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को भी इन्हीं असहाबे सुफ़्फ़ा में शुमार किया जाता है लेकिन कभी कभी उन्होंने अपने मुताल्लेक़ीन की तरफ़ भी तवज्जोह कर ली थी।

तबक़ा-ए-सहाबा रज़ियल्लाहु की अफ़ज़लियत

इनका ज़माना सब ज़मानों से हर लिहाज़ से अफ़ज़ल था। दर हक़ीक़त सहाबए किराम का ज़माना ही ख़ैरुल क़ुरून था अल्लाह तआला ने इनको अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत से सरफ़राज़ फ़रमाया और उनके दिलों को तमाम ऐबों से महफ़ूज़ रखा था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है सबसे बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है इसके बाद वह ज़माना जो इससे मुत्तसिल है फिर वह जो उसके बाद आयेगा अल्लाह तआला फ़रमाता है-

सबसे पहले ईमान में सबक़त करने वाले मुहाजेरीन व अंसार हैं और वह लोग जो भलाई के साथ उनके बाद ईमान लाये।

तबक़ा-ए-ताबेईन के अइम्मा-ए-तरीक़त का तज़किरा

अब मैं बाज़ ताबेईन के तज़किरे को शामिले किताब करता हूं ताकि मुकम्मल फ़ायदा हासिल हो क्योंकि उनका ज़माना सहाबए किराम के ज़माने से मुत्तसिल व क़रीब था।

१- हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु

तबक़ए ताबेईन के अइम्मा-ए-तरीक़त में से आफ़ताबे उम्मत, शमअे दीन व मिल्लत हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु है। आप अहले तसव्वुफ़ के मशायख़ केबार में से हैं आपने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़मानए हयाते ज़ाहिरी और अहदे मुबारक पाया है लेकिन दो चीज़ों ने दीदारे जमाले जहां आरा से आपको रोके रखा। एक आपका ग़लबए हाल दूसरा आपकी वालिदा का हक़।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया करन में एक उवैस नामी मर्दे ख़ुदा है जिसकी शफ़ाअत से क़ियामत के दिन क़बीला रबीआ और क़बीला मुज़िर के भेड़ियों के बालों की तादाद के बराबर मेरी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी इसके बाद हुज़ूर ने हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तरफ़ मुतावज्जोह होकर फ़रमाया

जब तुम इससे मुलाक़ात करोगे तो पस्ता क़द, लंबे बाल और दाहिनी जानिब रुपये के बराबर सफ़ेद निशान पाओगे। यह सफ़ेदी बरस की न होगी। ऐसा ही निशान उसके हाथ की हथेली पर होगा। वह रबीया व मुज़िर की बकरियों की तादाद के बराबर मेरी उम्मत की शफ़ाअत करेगा जब तुम इससे मिलो तो मेरा सलाम पहुंचाकर कहना कि मेरी उम्मत के लिये दुआ करें। चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहलत के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ जब हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ मक्का मुकर्रमा आये तो हज़रत उमर फ़ारूक़ ने दौराने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया "ऐ नज्द के रहने वालो खड़े हो जाओ जब वह लोग खड़े हो गये तो फ़रमाया तुम में से कोई क़रन का रहने वाला शख़्स है? जब क़रन के लोग आये तो उनसे हज़रत उवैस के बारे में इस्तेफसार फ़रमाया। उन्होंने बताया वह तो दीवाना आदमी है। वह न तो आबादी में आता है और न किसी से मिलता जुलता है। आम तौर पर जो लोग खाते हैं वह नहीं खाता हत्ता कि वह ग़म व ख़ुशी तक को नहीं जानता जब लोग हंसते हैं तो वह रोता है और जब लोग रोते हैं तो वह हंसता है। हज़रत फ़ारूक़े आज़म ने फ़रमाया मैं उससे मुलाक़ात करना चाहता हूं लोगों ने कहा वह जंगल में हमारे ऊंटों के पास रहता है। चुनांचे हज़रत फ़ारूक़े आज़म और हज़रत अली मुर्तज़ा दोनों उठ कर चल दिये। यहां तक कि दोनों हज़रत उवैस क़रनी के पास पहुंचे वह नमाज़ में मसरूफ़ थे इंतेज़ार में बैठ गये जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो सलाम अर्ज़ किया और दोनों ने उनकी हथेली और पहलू पर निशान देखे और जब हुज़ूर की बयान करदा निशानियों को पहचान लिया तो दुआ के ख़्वास्तगार होकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सलाम और उम्मत के लिये दुआ की वसीयत पहुंचाई। कुछ देर यह दोनों उनके पास बैठे रहे। फिर हज़रत उवैस ने कहा आप ने बड़ी तकलीफ़ व ज़हमत फ़रमाई अब जाइये क़ियामत नज़दीक है वहां हमें ऐसा दीदार नसीब होगा जो कभी मुनक़तअ न होगा। अब मैं क़ियामत का रास्ता बनाने और उसे साफ़ करने में मशगूल हूं। इन दोनों अमीरों की मुलाक़ात से अहले क़रन को मालूम हो गया कि बज़ाहिर यह दीवाना आदमी कौन है? चुनांचे वह लोग उनकी बहुत इज़्ज़त और क़दर व मंज़िलत करने लगे। इस वाक़िये के बाद हज़रत उवैस क़रनी वहां से कूच करके कूफ़ा चले गये। कूफ़ा में इन्हें सिर्फ़ हरम बिन हब्बान ने एक मर्तबा देखा। यहां तक कि जंगे सफ़ीन में हज़रत अली मुर्तज़ा की हिमायत में जिहाद के लिये निकले

और लड़ते हुए जामे शहादत नोश फ़रमाया पसंदीदा ज़िन्दगी गुज़ारी और शहादत की मौत पाई।

हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि वहदत में सलामती है इसलिये कि जिस का दिल तंहा हो वह ग़ैर के फ़िक्र व अंदेशा से बे परवाह, हर हाल में मख़लूक़ से किनारा कश और इन आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है। लेकिन अगर यह समझे कि तंहाई की ज़िन्दगी गुज़ारना महाल है तो वह जान ले कि उसके दिल पर शैतान का तसल्लुत है और उसके सीना में नफ़्स का ग़ल्बा है हालांकि जिस वक़्त दुनिया व आख़ेरत की फ़िक्र और ख़ल्क़ का अंदेशा इसके दिमाग़ में मौजूद है उस वक़्त तक वहदत व तंहाई से हमकिनार नहीं हो सकता इसलिये कि किसी ख़ास चीज़ से राहत पाना और उसकी फ़िक्र रखना एक ही चीज़ है जिसे ख़लवत गुज़िनी और तंहाई की आदत हो गयी वह अगरचे मजलिस में बैठा हो मगर उसकी वहदत में कोई ख़लल वाक़ेय नहीं होता। और जो शख़्स किसी और ख़्याल में ग़र्क़ हो अगरचे वह ख़लवत में हो तो यह ख़लवत उसे फ़ारिग़ नहीं करती। मालूम हुआ कि इंसानों से जुदा होना मुहब्बते इलाही नहीं है लेकिन जिसे मुहब्बते इलाही हासिल हो जाये उसके लिये इंसानों से मिलना जुलना ज़रूरी नहीं है और जिसे इंसानों से मुहब्बत है उसके दिल में ख़ुदा की दोस्ती गुज़र नहीं हो तो बल्कि उसे मुहब्बते इलाही की हवा तक नहीं लगती इस लिये कि वहदत साफ़ दिल बंदा की सिफ़त है। सुनो अल्लाह तआला फ़रमाता है-

"क्या अल्लाह बंदे के लिये काफ़ी नहीं?"

२- हज़रत हरम बिन हब्बान रज़ियल्लाहु अन्हु

तबक़ा-ए-ताबेईन के अइम्मए तरीक़त में से मनबअे सफ़ा, मअदने वफ़ा हज़रत हरम बिन हब्बान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो अकाबिरे तरीक़त में से हैं आपको तरीक़त व मारेफ़त में कमाले दस्तरस हासिल थी। सहाबए किराम की मजलिसों में रहे हैं आपने जब हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात करने का इरादा किया तो क़रन पहुंचे लेकिन वह वहां से कूच करके जा चुके थे। ना उम्मीद होकर वापस आ गये। फिर पता चला कि कूफ़ा में हैं तो कूफ़ा पहुंचे मगर तवील अर्सा तक मुलाक़ात न हो सकी मायूस होकर बसरा जाने का इरादा किया तो अचानक फ़रात के किनारे हब्बा पहुंचे वुज़ू करते मिल गये देखते ही पहचान लिया जब किनारा फ़रात से बाहर आकर रेशे मुबारक में कंघा

की तो हज़रत हरम बिन हब्बान ने आगे बढ़कर सलाम अर्ज़ किया। उन्होंने जवाब दिया व अलेकस्स्सलाम या हरम बिन हब्बान। हज़रत हरम बिन हब्बान ने दर्याफ़्त किया आपने मुझे कैसे पहचाना? उन्होंने कहा, मेरी रूह ने तुम्हारी रूह को पहचान लिया, कुछ अर्सा क़याम के बाद इन्हें वापस कर दिया।

हज़रत हरम फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मेरी अक्सर बातें हुई हैं। हज़रत उवैस क़रनी मुझे ब-रिवायत हज़रत उमर फारूक़, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस सुनाई कि-

आख़िर तक यानी हक़ीक़त यह है कि हर अमल का मदार नीयतों पर है हर शख़्स को वही समरा मिलता है जो नीयत करे जिसने ख़ुदा व रसूल की तरफ़ हिजरत की तो उसकी हिजरत ख़ुदा व रसूल ही की तरफ़ होगी। और जिसने दुनिया की तरफ़ हिजरत की उसे वहाँ मिलेगी। अगर बीवी की ख़्वाहिश की तो उससे निकाह करेगा। उसकी हिजरत उसके लिये है जिसकी वह नीयत करे। इसके बाद हज़रत उवैस क़रनी ने मुझे नसीहत की कि तुम पर फ़र्ज़ है कि अपने दिल की निगहदाश्त करो ताकि किसी ग़ैर की फ़िक्र में मुब्तला न हो जाओ।

दिलों की हिफ़ाज़त का तरीक़ा

इस नसीहत के दो मअ़ने हैं। एक यह कि दिल को रियाज़त व मुजाहिदे के ज़रिये हक़ तआला की इताअत पर लगाये रखे और दूसरे यह कि ख़ुद को दिल के ताबेअ करो। यह दोनों उसूल क़वी हैं दिल को हक़ के ताबे करना इरादतमंदों का काम है ताकि ख़्वाहिशात की कसरत और हवाए नफ़्स के मुहब्बत से दिल महफ़ूज़ रहे और तमाम नामुवाफ़िक़ ख़तरात और अंदेशे दिल से निकाल फेंके। और उसकी दुरुस्तगी व हिफ़ाज़त की तदबीर में मशगूल होकर हक़ तआला के निशाने कुदरत पर नज़र रखे ताकि दिल ख़ुदा की मुहब्बत की आमा जगह बन जाये। और ख़ुद को दिल के ताबेअ करना कामिलों का काम है, क्योंकि हक़ तआला उनके दिलों को नूरे जमाल से मुनव्वर करके, तमाम असबाब व अलल से पाक व साफ़ बनाकर मुक़ाम बुलंद और दर्जए रफ़ीया पर फ़ायज़ कर देता है और उनके जिस्मों को ख़ुलअते कुर्ब से नवाज़ देता है और अपने लतायफ़ व तजल्लियात की रौशनी से इन्हें मुनव्वर कर देता है और

मुशाहदा-ए-कुर्ब से सरफ़राज़ करता है। जिस वक़्त कामिल की ऐसी हालत हो जाये उस वक़्त उसे ख़ुद को दिल के ताबेअ और उसके मुवाफ़िक़ कर देना चाहिये गोया पहली सिफ़त के हज़रात, साहिबुल कुलूब मालिकुल कुलूब और बाक़ी अलसिफ़त मग़लूबुलकुलूब और फ़ानी युस्सिफ़ात होते हैं। इस मसला की असल व हक़ीक़त यानी दलील व हुज्जत में अल्लाह तआला का इरशाद है कि (मगर यह कि इनमें से तेरे मुख़लिस बंदे) इसमें दो क़राअत हैं। एक यह कि मुख़्लेसीन लाम के ज़ेर से दूसरी मुख़्लसीन लाम के ज़बर से। मुख़लिस इस्मे फ़ाइल है जो कि बाक़ी युस्सिफ़त है और मुख़लस इस्मे मफ़ऊल है जो कि फ़ानी युस्सिफ़त है इंशाअल्लाह किसी और मक़ाम पर इस मसले को बयान करूंगा।

वह हज़रात जो फ़ानी युस्सिफ़त हैं वह ज़्यादा जलीलुल क़दर हैं इसलिए कि उन्होंने ख़ुद को दिल के तावेअ और उसके मुवाफ़िक़ बनाकर रखा है और उनके दिल हक़ तआला के सुपुर्द हैं। और उनमें हक़ तआला ही जल्वागर है और इसके मुशाहदा में क़ायम हैं। लेकिन वह हज़रात जो बाक़ी युस्सिफ़त हैं वह दिल को बकोशिश अमरे हक़ के मुवाफ़िक़ बनाते हैं। इस मसले की बुनियाद होश व मस्ती और मुशाहदा व मुजाहदा पर है। वल्लाह आलम।

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु

तबक़ए ताबेईन के अइम्मा-ए-तरीक़त में से इमामे अस्र, यगाना-ए-ज़माना हज़रत अबू अली अल हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। बाज़ उलमा उनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद बताते हैं और बाज़ अबू सईद। अहले तरीक़त के दर्मियान आप की बड़ी क़द्र व मंज़िलत है इल्मे सुलूक में आप के लतीफ़ इशारात हैं।

हिकायत

एक मर्तबा हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि ने एक देहाती के सवाल पर फ़रमाया सब्र दो तरह पर होता है। एक मुसीबत व बला पर सब्र और दूसरा उन पर सब्र करना जिन के न करने का हुक्म हक़ तआला ने दिया है। जिन चीज़ों के पीछे चलने से हक़ तआला ने हमें मना किया है इन्हें न करे इस पर देहाती ने कहा आप सरापा ज़ाहिद हैं मैंने आपसे बढ़कर किसी ज़ाहिद को नहीं देखा हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया ऐ बंदए ख़ुदा! मेरा ज़ुहद मरग़ूब चीज़ों में है और मेरा सब्र इज़्तेरार और बेक़रारी में है। देहाती ने कहा इस इरशाद की वज़ाहत

फ़रमायें क्योंकि मेरा एतेक़ाद मुतज़लज़ल हो गया हैं आपने फ़रमाया बलाओं पर मेरा सब्र करना और ख़ुदा की मना करदा चीज़ों से किनारा बर बिनाए इताअत है इसलिये कि आतिश दोज़ख़ के ख़ौफ़ से है और इज़्तेरार व बेक़रारी है और दुनिया में जो मेरा ज़ुहद है वह आख़िरत की रग़बत की वजह से है। और यह ऐन रग़बत है। ख़ुशी व मुसर्रत का मोज्जिब तो यह है कि दुनिया में अपने नसीब पर क़नाअत करे और इसी को हासिल करे ताकि इसका सब्र हक़ ताअला के लिये हो न यह कि अपने जिस्म को आतिशे दोज़ख़ से बचाने के लिये हो। और अपना ज़ुहद ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये हो न कि यह जन्नत में जाने की ख़्वाहिश के लिये हो। यह सेहते इख़लास की निशानी व अलामत है।

बदों की सोहबत से परहेज़

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बदों की सोहबत, नेकों से बद गुमानी पैदा करती है। यह नसीहत बिल्कुल सही व दुरुस्त है और मौजूदा लोगों के हाल के ऐन मुताबिक़ है मक़बूलाने बारगाह के तमाम मुन्किरों पर सादिक़ है आम बदज़नी व इंकार की वजह यही है कि लोग नक़ली सूफ़ियों की सोहबत इख़्तेयार करते हैं और जब उनसे ख़ियानत, झूट और ग़ीबत वग़ैरह का सदूर होता है वह खेल कूद और बेहूदा पन के शायक़ होते हैं लगवियात व ख़्वाहिशात और शहवतों के दिलदादा होते हैं और हराम व मुश्तबह माल के जमा करने में हरीस होते हैं तो लोग यही समझने लगते हैं कि तमाम सूफ़ी ऐसे ही होते होंगे और तमाम सूफ़ियों का यही मज़हब होगा। हालांकि यह बात बिल्कुल ग़लत है बल्कि सूफ़िया के तमाम अफ़आल ताअते इलाही में होते हैं और मुहब्बते इलाही से भरपूर उनकी ज़ुबानों पर कलिमए हक़ होता है, उनके क़ुलूब, मुहब्बते इलाही की जगह उनके कान कलामे हक़ सुनने का मक़ाम, और उनकी आंखें मुशाहदा जमाले इलाही की जगह होती हैं जो कोई ख़ियानत का मुजरिम होता है वह उसका मुवाख़ज़ादार होगा यह नहीं कि जहां भर के बुज़ुर्गों और अकाबिर को एक सा समझा जाये जो बदों की सोहबत इख़्तेयार करता है दरअसल ख़ुद इसमें ही बदी के जरासीम होते हैं। अगर उसके दिल में नेकी व भलाई का मादा होता है तो वह नेकों की सोहबत इख़्तेयार करता है इसलिये वही शख़्स मुस्तहिक़े मलामत है जो नालायक़ और ना अहलों की सोहबत इख़्तेयार करता है। एक वजह इंकार यह भी होती है कि जब सूफ़िया को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के ख़िलाफ़ पाते हैं तो उनके मक़ामाते बुलंद से इंकार

करने लगते हैं या मुन्किरों के हम्ज़बां हो जाते हैं। अहले मारेफ़त सूफ़ियाए किराम के इंकार करने वाले लोग, मख़लूक़ खुदा में शरीरतर और ग़ायत दर्जा ज़लील व कमीना होते हैं क्योंकि सूफ़िया का तरीक़ा जहान भर में बरगुज़ीदा है और उनकी बरकतों से दोनों जहान की मुरादें हासिल होती हैं यह हज़रात तमाम जहान में मुमताज़ हैं इसी मअने में यह शेर है-

तुम मेरे नफ़्स को हक़ीर न जानो, वह तुम्हारा महबूब है
हर शख़्स को अपने ही हमजिंसों से मुराद हासिल होती है

१- हज़रत सईद इब्नुल मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु

तबक़ा-ए-ताबेईन के आइम्मा-ए-तरीक़त में से रईसुल उलमा, फ़क़ीहुल फ़ुक़हा हज़रत सईद इब्नुल मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ीमुल मरतबत, रफ़ीयुलमंज़िलत, हर दिल अज़ीज़ और सीरत व ख़सायल में उम्दा तरीन थे तफ़सीर, हदीस फ़िक़्ह, लुग़त, शेअर, तौहीद, नअत और इल्मे हक़ायक़ में आपका बड़ा मर्तबा है। वह ज़ाहिर में होशियार और तबीयत में नेक सीरत थे यह ख़ूबी तमाम मशायख़ के नज़दीक महमूद व मसऊद है। आप फ़रमाते हैं ऐ मर्दे मुसलमान! अपनी इस थोड़ी सी दुनिया पर जो तुझे दीन की सलामती के साथ हासिल हुई है इस पर क़नाअत कर, जिस तरह आम लोग अपना दीन खोकर माल की ज़्यादती पर खुश होते हैं। अगर फ़क़्र में दीन की सलामती है तो यह इस तवंगरी से बेहतर है जिसमें ग़फ़लत भी हो और दीन भी जाता है। इसलिये कि सलामतीए ईमान के साथ जब फ़क़ीर अपने दिल की तरफ़ ख़्याल करता है तो माल दुनिया से उसे ख़ाली पाता है और जो मयस्सर आता है उसी पर क़नाअत करता है और तवंगर जब अपने दिल की तरफ़ ख़्याल करता है तो उसे हर दम माल की तमअ व ज़्यादती में फ़िक्रमंद पाता है और वह हुसूले दुनिया की ख़ातिर हर तरफ़ हाथ पांव मारता है लिहाज़ा महबूबाने खुदा की हर आन नज़र हक़ तआला की रज़ा पर रहती है और ग़ाफ़िलों की नज़र हमेशा उस दुनिया पर रहती है जो ग़रूर व आफ़त से भरपूर है। हसरत नदामत, ज़िल्लत व मुसीबत से बेहतर है। ग़ाफ़िलों पर जब बला व मुसीबत नाज़िल होती है तो वह कहते हैं कि हमारे जिस्म महफ़ूज़ रहे और जब महबूबाने खुदा पर आती है तो वह कहते हैं कि अलहम्दो लिल्लाह हमारे दीन पर नहीं आयी। उसकी वजह यह है कि जब जिस्म पर बला का नुज़ूल हो और दिल में बक़ा हो तो वह जिस्म पर नुज़ूले बला से खुश होते हैं। और अगर दिल

ग़फ़लत है अगरचे जिस्म ऐश व इशरत में हो तो यह मोजिबे ज़िल्लत है दर हकीकत मकामे रज़ा यह है कि कम देना को ज़्यादा और ज़्यादा देना को कम समझे। इसलिये इसकी कमी उसकी ज़्यादती की मानिंद है।

हज़रत सईद इब्नुल मुसैइब एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में थे किसी ने आकर पूछा मुझे ऐसा हलाल बताइये जिसमें हराम का शायबा न हो और ऐसा हराम बताइये जिसमें हलाल का शायबा न हो तो आप ने जवाब दिया- ज़िक्रे इलाही ऐसा हलाल है जिसमें किसी हराम का शायबा नहीं और गैरुल्लाह का ज़िक्र ऐसा हराम है जिसमें ज़र्रा भर हलाल नहीं। इसीलिये ज़िक्रुल्लाह में निजात है और ज़िक्रे ग़ैर में हलाकत है।

तबक़ए तबअ ताबेईन और दीगर मुतकद्देमीन के अइम्मए तरीक़त

हज़रत हबीब अजमी रहमतुल्लाह

अइम्माए तरीक़त में से शुजाअ तरीक़त मुतमक्कन दर शरीअत हज़रत हबीब अजमी रहमतुल्लाह अलेहि हैं आप बुलंद हिम्मत, मर्दे ख़ुदा, और साहबे कमाल बुज़ुर्ग हैं। आपने हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ तौबा फ़रमाई। इससे पहले आपमें रिया व फ़साद बहुत था। मगर अल्लाह तआला ने सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। आपने अर्सा तक हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु से इल्म व तरीक़त की तहसील फ़रमाई। चूंकि आप अजमी थे अरबी जुबान पर उबूर हासिल न हुआ मगर अल्लाह तआला ने आपको मुक़र्रब बनाकर मुतअद्दिद करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। एक रात हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह का उनकी ख़ानक़ाह की तरफ़ गुज़र हुआ। आप इक़ामत कहकर नमाज़े मग़रिब शुरू कर चुके थे। हज़रत हसन बसरी ने इनकी इक़्तेदा में नमाज़ न पढ़ी क्योंकि सहीह तलफ़्फ़ुज़ और दुरुस्त मख़ारिज के साथ तिलावते कुरआन करीम पर आपको कुदरत हासिल न थी। हज़रत हसन बसरी जब रात को सोए तो दीदारे इलाही हासिल हुआ। आपने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया रब्बुल आलमीन तेरी रज़ा किस चीज़ में है? हक़ तआला ने फ़रमाया ऐ हसन! तूने मेरी रज़ा तो पाई लेकिन उसकी क़दर न की। आपने अर्ज़ किया परवर्दिगार वह कौन सी रज़ा है? हक़ तआला ने फ़रमाया अगर तू हबीब अजमी की इक़्तेदा में नमाज़ पढ़ लेता तो सेहते नीयत और मोतबर इबादत के इंकार के ख़तरे से महफ़ूज़ रहता और तुझे रज़ाए इलाही हासिल हो जाती।

मशायखे तरीक़त में यह बात मशहूर है कि जब हज़रत हसन बसरी हिज्जाज के जुल्म से भागकर हज़रत हबीब अजमी की ख़ानक़ाह में तशरीफ़ लाए और हिज्जाज के सिपाही तअक़्कुब करते हुए अंदर घुस आये तो सिपाहियों ने पूछा ऐ हबीब! तुमने हसन बसरी को कहीं देखा है? फ़रमाया हां। सिपाहियों ने पूछा किस जगह हैं? फ़रमाया मेरे हुजरे में हैं। वह आपके हुजरे में घुस गये लेकिन वहां किसी को न पाया। सिपाहियों ने समझा कि हबीब अजमी ने मज़ाक़ किया है। उस पर उन्होंने सख़्ती के साथ पूछा सच बताओ कहां हैं? उन्होंने क़सम खाकर फ़रमाया मैं सच कहता हूं वह मेरे हुजरे में हैं सिपाही दो तीन बार अंदर गये मगर वह हसन बसरी को न देख सके। बिल आख़िर वह चले गये जब हसन बसरी हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया ऐ हबीब मैं समझ गया कि हक़ तआला ने आपकी बरकत से इन ज़ालिमों के पंजे से महफ़ूज़ रखा। लेकिन इसकी वजह बताइये कि आपने यह क्यों फ़रमाया कि वह इस हुजरे में हैं। हज़रत हबीब अजमी ने जवाब दिया। ऐ मेरे मुरशिदे बरहक़! अल्लाह तआला ने आप को मेरी बरकत की वजह से ज़ाहिर नहीं किया बल्कि सच बोलने की वजह से ख़ुदा ने उनसे मख़्फ़ी रखा। अगर झूठ कहता तो अल्लाह तआला मुझे और आप को दोनों को रुसवा करता। इस क़िस्म की बकसरत करामतें आपसे मंसूब हैं।

हज़रत हबीब अजमी रहमतुल्लाह अलैहि से लोगों ने पूछा किस चीज़ में रज़ाए इलाही है? आपने फ़रमाया, ऐसे दिल में जहां निफ़ाक़ का गुब्बार तक न हो क्योंकि निफ़ाक़, वफ़ाक़, के ख़िलाफ़ है और रज़ा ऐने वफ़ाक़ है और यह कि मुहब्बत को निफ़ाक़ से दूर का भी इलाक़ा नहीं है। और न वह महले रज़ा है। मुहिब्बाने इलाही की सिफ़त रज़ा है और दुश्मनाने ख़ुदा की सिफ़त निफ़ाक़ इसकी तफ़सील इंशाअल्लाह दूसरी जगह आयेगी।

२- हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैहि

अइम्मए तरीक़त में से एक बुजुर्ग इमामे तरीक़त, नक़ीबे अहले मुहब्बत, जिन्न व इन्स की ज़ीनत हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह के मुसाहिब व मुरीद हैं। तरीक़त में आपका बुलंद मक़ाम है। आपकी करामतें और रियाज़तें मशहूर व मारूफ़ हैं। आपके वालिद का नाम दीनार था जो कि गुलाम थे आप गुलामी की हालत में पैदा हुए थे। आपकी तौबा का वाक़िया यह है कि एक रात आप एक जमाअत

के साथ महफ़िले रक़्स में थे जब तमाम लोग सो गये तो उस तंबूरा से जिसे बजाया जा रहा था आवाज़ आयी ऐ मालिक! क्या बात है तौबा में देर क्यों है? आपने अपने तमाम दोस्त व अहबाब को छोड़कर और हज़रत हसन बसरी की ख़िदमत में हाज़िर होकर सच्ची तौबा की और अपना हाल दुरुस्त करके साबित क़दम रहे। इसके बाद आपकी शान इस क़दर बुलंद हुई कि एक मर्तबा जब आप कश्ती में सफ़र कर रहे थे एक ताजिर का मोती कश्ती में गुम हो गया। बावजूद यह कि आपको इल्म तक न था लेकिन ताजिर ने आप पर सरक़ा की तोहमत लगायी आपने आसमान की तरफ़ मुंह उठाया उसी लम्हा दरिया की तमाम मछलियां मुंह में मोती दबाए सतहे आब पर उभर आयीं आपने इनमें से एक मोती लेकर इस ताजिर को दे दिया और ख़ुद दरिया में उतर गये और पानी पर गुज़र कर किनारे पर पहुंच गये।

एक मर्तबा आप ने फ़रमाया मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब अमल में इख़्लास है क्योकि इख़्लास के साथ अमल करना ही तो वाक़ई अमल है। इसलिये कि अमल के लिये इख़्लास का दर्जा ऐसा है जैसे जिस्म के लिये रूह। जिस तरह बग़ैर रूह के जिस्म पत्थर व जमाद है इसी तरह बग़ैर इख़्लास के अमल रेत का तोदा है। इख़्लासे बातिनी आमाल के क़बील से है और ताअत व नेकियां ज़ाहिरी आमाल के क़बील से। ज़ाहिरी आमाल की तकमील बातिनी आमाल की मुवाफ़िक़त पर मौक़ूफ़ है और आमाले बातिना, ज़ाहिरी आमाल के साथ ही क़दर व क़ीमत रखते हैं। अगर कोई शख़्स हज़ार बरस तक दिल से मुख़्लिस रहे जब तक इख़्लास के साथ अमल को न मिलाए वह मुख़्लिस नहीं हो सकता। इसी तरह अगर कोई शख़्स हज़ार बरस तक ज़ाहिरी अमल करता रहे लेकिन जब तक वह ज़ाहिरी अमल के साथ इख़्लास को न मिलायेगा वह अमल नेकी नहीं बन सकती।

३-हज़रत हबीब बिन असलम रायी रहमतुल्लाह

अइम्मए तरीक़त में से एक बुज़ुर्ग, फ़क़ीहे कबीर, तमाम वलियों के अमीर, अबु हलीम हज़रत हबीब बिन असलम रहमतुल्लाह हैं। मशायख़े किबार में आपकी बड़ी क़दर व मंज़िलत है तसव्वुफ़ के तमाम अहवाल में बकसरत दलायल व शवाहिद मज़कूर हैं। आप हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुसाहिब हैं आपसे एक हदीस मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- मोमिन की नीयत उसके अमल से अफ़ज़ल है।

आप बकरियां पालते थे और फ़रात के किनारे चराया करते थे। आपका मसलक ख़लवत गुज़ीनी था। एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि एक मर्तबा मेरा गुज़र इस तरफ़ हुआ तो क्या देखता हूं कि आप तो नमाज़ में मशगूल हैं और भेड़िया उनकी बकरियों की रखवाली कर रहा है। मैं ठहर गया कि इस बुज़ुर्ग की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होना चाहिये जिनकी बुज़ुर्गी का करिश्मा आंखों से देख रहा हूं। बड़ी देर तक इंतेज़ार में खड़ा रहा यहां तक जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैंने सलाम अर्ज़ किया, आपने जवाबे सलाम के बाद फ़रमाया किस काम से आये हो? मैंनें अर्ज़ किया बग़र्ज़े ज़ियारत। फ़रमाया जज़ाकल्लाह इसके बाद मैंने अर्ज़ किया हज़रत! आपकी बकरियों से भेड़िये को ऐसा लगाव है कि वह उनकी हिफ़ाज़त कर रहा है। फ़रमाया इसकी वजह यह है कि बकरियों के चरवाहे को हक़ तआला से दिली मुहब्बत है यह फ़रमाकर आपने लकड़ी के प्याले को पत्थर के नीचे रख दिया। पत्थर से दो चश्मे जारी हुए एक दूध का दूसरा शहद का। फिर फ़रमाया नोश करो। मैंने अर्ज़ किया आपने यह मक़ाम किस तरह पाया? आपने जवाब दिया सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुताबिअ़त के ज़रिये ऐ फ़रज़ंद! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम अगरचे उनकी मुख़ालिफ़ थी लेकिन पत्थर ने उन्हें पानी दिया। हालांकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्जा में न थे जब कि मैं हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक फ़रमा बरदार हूं तो यह पत्थर मुझे दूध और शहद क्यों न देगा? क्योंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सलाम से अफ़ज़ल हैं। फिर मैंने अर्ज़ किया मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये। आपने फ़रमाया यानी अपने दिल को हिर्स की कोठरी और अपने पेट को हराम की गठरी न बनाना। क्योंकि लोगों की हलाकत इन्हीं दो चीज़ों में मुज़मिर है और उनकी निजात उनसे दूर रहने में है।

हज़रत शेख़ मज़कूरा के और भी बकसरत अहवाल व रिवायात हैं इस वक़्त इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं। क्योंकि जब मैं मुलतान के इलाक़ा बहनूर में दुश्मनों के चंगुल में महसूर था तो मेरी किताबें ग़ज़नी में रह गयी थीं।

४- हज़रत अबू हाज़िम मदनी रहमतुल्लाह अलैहि

तबअ ताबईन में से एक बुजुर्ग, इमाम तरीकत, पीर सालेह हज़रत अबू हाज़िम मदनी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप मशायखे किराम के पेशवा और सुलूक व मारेफ़त में कामिल दस्तरस रखते हैं। फ़क्र में बुजुर्ग और सादिक़ क़दम थे। मुजाहदात में बड़ी मेहनत व मुशक्कत बर्दाश्त किया करते थे। हज़रत अमर बिन उस्मान मक्की रहमतुल्लाह अलैहि को आपकी सोहबत का शर्फ़ हासिल है। आपका कलाम मक़बूल और तमाम किताबों में मज़कूर है। यही हज़रत अमर बिन उस्मान रिवायत करते हैं कि किसी ने आपसे पूछा यानी आपकी पूंजी क्या है? फ़रमाया मेरी पूंजी खुदा की रज़ा और लोगों से बेनियाज़ी है। बिलाशुबह जो शख़्स हक़ तआला से राज़ी होगा वह लोगों से मुस्तग़नी हो जायेगा।क्योंकि इसके लिये सबसे बड़ा ख़ज़ाना तो खुदा की रज़ा ही है। ग़ना से उनकी मुराद हक़ तआला से ग़ना है। जो शख़्स हक़ तआला से मुस्तग़नी हो जाता है वह ग़ैरों से बे परवाह हो जाता है वह उसके दर के सिवा किसी और दर को जानता ही नहीं। और ज़ाहिर व बातिन में किसी हालत में खुदा के सिवा किसी को पुकारता ही नहीं।

एक बुजुर्ग बयान करते हैं कि मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने उनको सोता पाया। चुनांचे मैं इंतेज़ार में बेठ गया। जब वह बेदार हुए तो फ़रमाया मैंने ख़्वाब में इस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत की है हुजूर ने तुम्हारे लिये मुझे पैग़ाम दिया है कि मां के हक़ की हिफ़ाज़त करना हज करने से बेहतर है लौट जाओ मां को खुश रखो। मैं वापस आ गया और मक्का मुकर्रमा हाज़िर न हुआ। मैंने इससे ज़्यादा उनके अक़वाल नहीं सुने।

५- हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रहमतुल्लाह अलैहि

तबअ ताबेईन में से एक बुजुर्ग, इमामे तरीकत, दाई अहले मुजाहदा, क़ायम अंदर मुशाहदा हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रहमतुल्लाह हैं। आप यगानए रोज़गार, बकसरत ताबेईन के सोहबतयाफ़ता थे और अक्सर मशायखे मुतक़द्देमीन ने भी आपसे मुलाक़ात की है। और आपसे तरीकत के हक़ायक़, अक़वाले आलिया और इशाराते कामिला बकसरत मंक़ूल हैं। चुनांचे आपने फ़रमाया यानी मैंने कोई चीज़ ऐसी नहीं देखी जिस में मुझे ख़ुदा का जलवा नज़र न आया हो। यह मक़ाम मुशाहदा का है क्योंकि बंदा फ़ायल हकीकी की मुहब्बत में

इस हद तक फ़ायज़ हो जाता है कि वह जब भी किसी फ़ेअल को देखता है तो उसे फ़ेअल नज़र नहीं आता बल्कि फ़ायेल ही नज़र आता है। जिस तरह कोई शख़्स तस्वीर को देखकर तव्वीर बनाने वाले के कमाल को देखता है, इस कलाम की असल व हक़ीक़त हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के इस क़ौले मुबारक पर है जबकि उन्होंने चांद सितारे और आफ़ताब को देखकर कहा था यह मेरा रब है। यह आपके ग़ल्बए शौक़े इलाही का हाल है कि उन्होंने जो कुछ भी देखा उसमें महबूब ही की सिफ़त का जलवा देखा। इसलिये कि महबूबाने ख़ुदा, जब किसी चीज़ पर नज़र डालते हैं तो इन्हें जहान की हर चीज़ उसके क़हर का मक़हूर और उसके ग़ल्बा का असीर नज़र आती है। और हस्ती के वजूद को इसके फ़ायेल की कुदरत के पहलू में परागंदा देखते हैं वह मफ़ऊल को नहीं देखते बल्कि फ़ायल को देखते हैं। और तकवीन की हालत में नाचीज़ नज़र आते हैं जब हालते इश्तेयाक़ में उस पर नज़र पड़ती है तो उनकी नज़र मक़हूर यानी कायनात पर नहीं पड़ती बल्कि क़ाहिर यानी कायनात के बनाने वाले ही का जल्वा नज़र आता है। इसलिये उनकी नज़र मफ़ऊल पर नहीं होती बल्कि फ़ायेल ही के मुशाहदा में होती है। मख़लूक़ नज़र ही नहीं आती बल्कि ख़ालिक़ का जलवा सामने होता है। मज़ीद तफ़सील इंशाअल्लाह तआला मुशाहदा के बाब में आयेगी।

एक गरोह से इस मक़ाम में ग़लती वाक़ेय हुई है वह रायतुल्लाह फ़ीहि का मफ़हूम यह लेते हैं कि मैंने इसमें अल्लाह को देखा है। उनका मफ़हूम लेना मकान और तजज़्ज़ी यानी जुज़ व हलूल का इक़्तेज़ा करता है हालांकि यह सही कुफ़्र है। इसलिये कि मकान और जो मकान में हो दोनों एक जिन्स के होते हैं। अगर कोई यह फ़र्ज़ करे कि मकान मख़लूक़ है तो लाज़िम है कि जो मकान में होगा वह भी मख़लूक़ ही होगा। और अगर यह फ़र्ज़ किया जाये जो मकान में मुतमक्किन है वह क़दीम है तो लाज़िम है कि वह मकान भी क़दीम ही होगा। बहरतौर दोनों नज़रियात फ़ासिद हैं। ख़्वाह मख़लूक़ को क़दीम किया जाये या ख़ालिक़ को हादिस। यह दोनों बातें कुफ़्र होंगी। लिहाज़ा किसी चीज़ में उसकी रोइयत इसी मअ़ने में है जिसे इब्तेदा में बयान कर दिया गया है। इसमें और लतायफ़ हैं जो किसी और जगह लिखे जायेंगे।

६–इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु

तबअ ताबेईन में से इमामे तरीक़त इमामुल अइम्मा मुक़्तदाए अहले सुन्नत शर्फ़ फुक़हा, इज़्ज़े उलमा, सैयदुना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित खज़ाज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। आप इबादात व मुजाहिदात और तरीक़त के उसूल में अज़ीमुश्शान मर्तबा पर फ़ायज़ हैं। इब्तेदाई ज़िन्दगी में आपने लोगों के अज़दहाम से किनारा कश होकर गोशा नशीनी का क़सद फ़रमाया ताकि लोगों में इज़्ज़त व हशमत पाने से दिल को पाक व साफ़ रखें और दिन व रात अल्लाह तआला की इबादत में मसरूफ़ व मुनहमिक रहें मगर एक रात आपने ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तख़्वाने मुबारक को जमा कर रहे हैं और बाज़ को बाज़ के मुक़ाबला में इंतेख़ाब कर रहे हैं। इस ख़्वाब से आप बहुत परेशान हुए और हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहु अन्हु के एक मुसाहिब से इस ख़्वाब की ताबीर दर्याफ़्त की उन्होने जवाब दिया आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे मुबारक और आपकी सुन्नत की हिफ़ाज़त में ऐसे बुलंद दर्जा पर फायज़ होंगे गोया आप उनमें तसर्रुफ़ करके सही व सक़ीम को जुदा जुदा करेंगे। दूसरी मर्तबा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ हनीफ़ा! तुम्हें मेरी सुन्नत के ज़िन्दा करने के लिये पैदा किया गया है तुम गोशा नशीनी का ख़्याल दिल से निकाल दो।

आप बकसरत मशायख़े मुतक़द्देमीन के उस्ताज़ हैं चुनांचे हज़रत इब्राहीम अदहम फ़ुज़ैल बिन अयाज़, दाऊद ताई और हज़रत बशर हाफ़ी वग़ैरहुम ने आपसे इक्तेसाबे फ़ैज किया है। उलेमा के दर्मियान यह वाक़िया मशहूर है कि आपके ज़माने में अबू जाफ़र अल मंसूर ख़लीफ़ा था उसने यह इंतज़ाम किया कि चार उलमा में से किसी एक को क़ाज़ी बना दिया जाये। इन चारों में इमामे आज़म रहमतुल्लाह का नाम भी शामिल था बक़िया तीन फ़र्द हज़रत सुफ़यान सूरी, सिलाबन और शरीक रहमतुल्लाह अलैहिम थे। यह चारों बड़े मुतबिहहर आलिम थे। फ़रसतादा को भेजा कि इन चारों को दरबार में लेकर आये चुनांचे जब यह चारों यकजा होकर रवाना हुए तो राह में इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह ने फ़रमाया मैं अपनी फ़ेरासत के मुताबिक़ हर एक के लिये एक एक बात

तजवीज़ करता हूं सबने कहा आप जो तजवीज़ फ़रमायेंगे दुरुस्त ही होगा। आपने फ़रमाया में तो किसी हीला से इस मनसबे क़ज़ा को ख़ुद से दूर कर दूंगा सिला बिन अलशैम ख़ुद को दीवाना बना लें, सुफ़यान सूरी भाग जायें और शरीक क़ाज़ी बन जायें। चुनांचे हज़रत सुफ़यान ने इस तजवीज़ को पसंद किया और रास्ते ही से भाग खड़े हुए। एक कश्ती में घुसकर कहने लगे मुझे पनाह दो लोग मेरा सर काटना चाहते हैं। इस कहने में उनका इशारा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशाद की तरफ़ था कि जिसे क़ाज़ी बनाया गया उसे बग़ैर छुरी के ज़िब्ह कर दिया गया। मल्लाह ने इन्हें कश्ती के अंदर छुपा दिया। बक़िया तीनों उलेमा को मूंसर के रूबरू पहुंचा दिया गया। मंसूर ने इमाम आज़म की तरफ़ मुतवज्जोह होकर कहा कि आप मंसबे क़ज़ा के लिये बहुत मुनासिब हैं इमाम आज़म ने फ़रमाया ऐ अमीर मैं अरबी नहीं हूं। इसलिये सरदारे अरब मेरे हाकिम बनने पर राज़ी न होंगे। मंसूर ने कहा अव्वल तो यह मनसब निसबत व नस्ल से ताल्लुक़ नहीं रखता यह इल्म व फ़रासत से ताल्लुक़ रखता है। चूंकि आप तमाम उलेमाए ज़माना से अफ़ज़ल हैं इसलिये आप ही इसके लिये ज़्यादा मौंजूं व लायक़ हैं। इमामे आज़म ने फ़रमाया मैं इस मनसब के लायक़ नहीं फिर फ़रमाया मेरा यह कहना कि मैं इस मंसब के लायक़ नहीं अगर सच है तो मैं इसके लायक़ नहीं और अगर झूठ है तो झूटे को मुसलमानों का क़ाज़ी नहीं बनाना चाहिये। चूंकि तुम ख़ुदा की मख़लूक़ के हाकिम हो तो तुम्हारे लिये एक झूटे को अपना नायब बनाना और लोगों के अमवाल का मोतमद और मुसलमानों के नामूस का मुहाफ़िज़ मुक़र्रर करना मुनासिब नहीं है। इस हीला से आपने मनसबे क़ज़ा से निजात पाई।

इसके बाद मंसूर ने हज़रत सिला बिन अलशेम को बुलाया। उन्होंने ख़लीफ़ा का हाथ पकड़कर फ़रमाया ऐ मंसूर तेरा क्या हाल है और तेरे बाल बच्चे कैसे हैं? मंसूर ने कहा यह तो दीवाना है इसे निकाल दो। इसके बाद हज़रत शरीक की बारी आयी उनसे कहा आपको मंनसबे क़ज़ा मिलना चाहिये। उन्होंने फ़रमाया में सौदाई मिज़ाज का आदमी हूं और मेरा दिमाग़ भी कमज़ोर है मंसूर ने जवाब दिया एतेदाले मिज़ाज के लिये शर्बत व शीरे वग़ैरह इस्तेमाल करना ताकि दिमाग़ी कमज़ोरी दूर होकर अक़्ले कामिल हासिल हो जाये। ग़र्ज़ कि मंसबे क़ज़ा हज़रत शरीक के हवाले कर दिया गया और इमामे आज़म ने इन्हें छोड़ दिया और फिर कभी बात न की। इस वाक़िया से आपका कमाल दो हैसियत

से ज़ाहिर है एक यह कि आपकी फ़रासत इतनी अरफ़अ व आला थी कि आप पहले ही सबकी ख़सलत व आदत का जायज़ा लेकर सहीह अंदाज़ा लगा लिया करते थे ओर दूसरे यह कि सलामती की राह पर गामज़न रहकर ख़ुद को मख़लूक़ से बचाए रखना ताकि मख़लूक़ में रियासत व जाह के ज़रिया नख़ूवत न पैदा हो जाये यह हिकायत इस अम्र की क़वी दलील है कि अपनी सहत व सलामती के लिय किनाराकशी बेहतर है हालांकि आज हुसूले जाह व मर्तबा और मंसबे क़ज़ा की ख़ातिर लोग सरगरदां रहते हैं। क्योंकि लोग ख़्वाहिशे नफ़सानी में मुब्तला होकर राहे हक़ व सवाब से दूर हो चुके हैं। और लोगों ने उमरा के दरवाज़ों को क़िब्ला-ए- हाजात बनाकर रखा है और ज़ालिमों के घरों को अपना बैतुल मामूर समझ लिया है और जाबिरों की मसनद को क़ाब कौसैन के बराबर जान रखा है जो बात भी उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो वह उससे इंकार कर देते हैं।

हिकायत

ग़ज़नी में एक मुद्दई-ए-इल्म व इमामत से मुलाक़ात हुई। उसने कहा कि गुदड़ी पहनना बिदअत है, मैंने जवाब दिया हशीशी और दबीक़ी लिबास जो कि ख़ालिस रेशम का होता है जिसे शरीअत ने हराम क़रार दिया है उसको पहनना और ज़ालिमों की मन्नत व समाजत और तमल्लुक़ व चापलूसी करना ताकि अमवाले हरामे मुतलक़ मिल सकें क्या यह जायज़ है? क्या शरीअत ने इसे हराम नहीं किया है? इसे बिदअत क्यों नहीं कहते? भला वह लिबास जो हलाल हो और हलाल माल से बना हो वह कैसे हराम हो सकता है? अगर तुम पर नफ़्स की रऊनत और तबीयत की ज़लालत मुसल्लत न होती तो तुम इससे ज़्यादा पुख़्ता बात कहते! क्योंकि रेशमी लिबास औरतों के लिये हलाल है और मर्दों पर हराम, और जो दीवाने और पागल हैं जिनमें अक़्ल व शऊर नहीं उनके लिये वह मुबाह है अगर इन दोनों बातों के क़ायल होकर ख़ुद को माज़ूर गर दानते हो तो अफ़सोस का मक़ाम है।

हिकायत

सैयदुना इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जब हज़रत नौफ़ल हब्बान रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतेक़ाल हुआ तो मैंने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत बरपा है और तमाम लोग हिसाबगाह में खड़े हैं मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप हौज़े कौसर के किनारे

खड़े हैं और आपके दायें बायें बहुत से बुजुर्ग मौजूद हैं मैंने देखा कि एक बुजुर्ग जिनका चेहरा नूरानी और बाल सफ़ेद हैं हुजूर के रुख़सार मुबारक पर अपना रुख़सार रखे हुए हैं। और उनके बराबर नौफ़ल मौजूद हैं जब हज़रत नौफ़ल ने मुझे देखा तो वह मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाये और सलाम किया। मैंने उनसे कहा मुझे पानी इनायत फ़रमायें। उन्होंने फ़रमाया मैं हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इजाज़त ले लूं। फिर हुजूर ने अंगुश्ते मुबारक से इजाज़त मरहमत फ़रमाई और उन्होंने मुझे पानी दिया। इसमें से कुछ पानी तो मैंने पिया और कुछ अपने रुफ़का को पिलाया लेकिन उस प्याले का पानी वैसा ही वैसा का रहा कम नहीं हुआ। फिर मैंने हज़रत नौफ़ल से पूछा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाहिनी जानिब कौन बुजुर्ग हैं? फ़रमाया यह हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम हैं और हुजूर की बायें जानिब हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। इसी तरह मैं मालूम करता रहा यहां तक कि १७ बुजुर्ग की बाबत दर्याफ़्त किया। जब मेरी आंख खुली तो हाथ की उंगलियां सत्रह अदद पर पहुंच चुकी थीं।

हज़रत यहया बिन मआज़ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ऐ अल्लाह के रसूल! आपको (रोज़े क़ियामत) कहां तलाश करूं? फ़रमाया अबू हनीफ़ा के अलम में (या) इनके झंडे के पास। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का वरअ और आपके फ़ज़ायल व मनाक़िब इस कसरत से मंकूल व मश्हूर हैं कि उन सबके बयान की यह किताब मुतहम्मिल नहीं हो सकती।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं मुल्के शाम में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मोअज़्ज़िन हज़रत बिलाल हबशी रज़ियल्लाहु अन्हु के रौज़ए मुबारक के सरहाने सोया हुआ था ख़्वाब में देखा कि मैं मक्का मुकर्रमा में हूं और हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बुजुर्ग को आग़ोश में बच्चे की तरह लिये हुए बाबे शीबा से दाख़िल हो रहे हैं मैंने फ़र्ते मुहब्बत में दौड़कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक को बोसा दिया मैं इस हैरत व ताज्जुब में था कि यह बुजुर्ग कौन हैं? हुजूर को अपनी मोजिज़ाना शान से मेरी बातनी हालत का अंदाज़ा हुआ तो हुजूर ने फ़रमाया यह तुम्हारे इमाम हैं जो तुम्हारे ही विलायत के हैं। यानी अबू हनीफ़ा इस ख़्वाब से यह

बात मुनकशिफ़ हुई कि आपका इज्तेहाद हुजूर अकरम की मुताबेअत में बे ख़ता है इसलिये कि वह हुजूर के पीछे खुद नहीं जा रहे थे बल्कि हुजूर खुद इन्हें उठाए लिये जा रहे थे। क्योंकि वह बाक़ी अलसिफ़त यानी तकल्लुफ़ व कोशिश से चलने वाले नहीं थे। बल्कि फ़ानी अलसिफ़त और शरई अहकाम में बाक़ी व क़ायम थे। जिस की हालत बाक़ी अलसिफ़त होती है वह ख़ताकार होता है या राहयाब। लेकिन जब इन्हें ले जाने वाले हुजूर खुद हैं तो वह फ़ानी अल सिफ़त होकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ते बक़ा के साथ क़ायम हुए चूँकि हुजूर से ख़ता के सुदूर का इमकान ही नहीं इसलिये जो हुजूर के साथ क़ायम हो उससे ख़ता का इमकान नहीं यह एक लतीफ़ इशारा है।

हिकायत

हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह अलैहि जब हुसूले इल्म से फ़ारिग़ हो गये और इनका शोहर आफ़ाक़ में फेल गया और यगानए रोज़गार आलिम तसलीम कर लिये गये, तब वह हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाह की ख़िदमत में इक्तेसाबे फ़ैज़ के लिये हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि अब क्या करूं? इमामे आज़म ने फ़रमाया यानी अब तुम्हें अपने इल्म पर अमल करना चाहिये क्योंकि बिला अमल के इल्म ऐसा है जैसे बिला रूह के जिस्म होता है। आलिम जब तक बाअमल नहीं होता उसे सफ़ाए क़लब और इख़लास हासिल नहीं होता। जो शख़्स महज़ इल्म पर ही इक्तेफ़ा करे वह आलिम नहीं है। आलिम के लिये लाज़मी है कि वह महज़ इल्म पर क़नाअत न करे क्योंकि ऐन इल्म का इक़्तेज़ा यही है कि बाअमल बन जाये जिस तरह कि ऐन हिदायत मुजाहिदे की मुक़तज़ी है और जिस तरह मुशाहेदा बग़ैर मुजाहिद के हासिल नहीं होता इसी तरह इल्म बग़ैर अमल के सूदमंद नहीं होता क्योंकि इल्म अमल की मीरास है इल्म में नूर व वुसअत और उनकी मनफ़अत, अमल ही की बरकत का समरा होता है किसी सूरत से भी इल्म अमल से जुदा नहीं किया जा सकता जैसे कि आफ़ताब को नूर कि ऐन आफ़ताब से हैं इससे जुदा नहीं हो सकता। यही हाल इल्म व अमल के माबैन हैं इब्तेदा-ए-किताब में इल्म व अमल पर कुछ बहस की जा चुकी है।

७-हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक मरूज़ी रहमतुल्लाह

तबअ ताबेईन में से इमामे तरीक़त सैइदे जुहहाद क़ायदऔताद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अल मुबारक मरूज़ी रहमतुल्लाह हैं आप मशायख़े तरीक़त में बड़ी क़द्र व मंज़िलत वाले और अपने वक़्त में तरीक़त व शरीअत के असबाव व अहवाल और अक़्वाल के आलिम व इमामे ज़माना थे। अकाबिरं मशायख़े तरीक़त के सोहबत याफ़ता साहबे तसानीफ़ कसीरा और तमाम उलूम व फ़ुनून के माहिर थे। आपकी करामतें बकसरत मश्हूर हैं। आपकी तौबा का वाक़िया अजीब व इबरतनाक है। आप एक हसीन व जमील बांदी के इश्क़ में मुब्तला हो गये एक रात अपने एक दोस्त को लेकर अपनी माशूक़ा की दीवार के नीचे जाकर खड़े हो गये वह माशूक़ा भी छत पर आ गयी सुबह तक यह दोनों एक दूसरे के नज़ारे में मस्त रहे। जव फ़ज्र की अज़ान हुई तो आपने गुमान किया कि ईशा की अज़ान हुई है लेकिन जब दिन चढ़ा तो समझे कि तमाम रात इसके हुस्न के नज़ारे में बीत गयी है। यही बात आपकी तंबीह का मोजिब बनी दिल पर चोट पड़ी तो कहने लगे ऐ मुबारक के बेटे तुझे शर्म करनी चाहिये कि नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे सारी रात एक पांव पर खड़े खड़े गुज़ार दी इसी पर तू एज़ाज़ व बुज़ुर्गी का ख़्वास्तगार है अगर इमाम नमाज़ में किसी सूरत को तूल दे दे तू घबरा जाता है इस पर भी तो मोमिन होने का दावा करता है। उसी वक़्त आपने सिद्क़ दिल से तौबा की और तहसीले इल्म और उसकी तलब में मशग़ूल हो गये। और ऐसी जुहद व दीनदार की ज़िन्दगी इख़्तेयार की कि एक रोज़ अपनी वालिदा के बाग़ में सो रहे थे आपकी वालिदा ने देखा कि एक सांप मुंह में रैहान की टहनी लिये आपके चेहरे से मक्खी और मच्छर उड़ा रहा है।

आपने मरूज़ छोड़कर अर्सा दराज़ तक बग़दाद में इक़ामत फ़रमाई और बकसरत मशायख़े तरीक़त की सोहवत में रहे। इसके बाद कुछ अर्सा तक मक्का मुकर्रमा में भी रहे फिर अपने वतन मरूज़ वापस तश्रीफ़ ले आये और तालीम व तदरीस में मशग़ूल हो गये। शहर की निस्फ़ आवादी ज़ाहिर हदीस पर अमल करती और शहर की निस्फ़ आवादी राहे तरीक़त पर चलती थी चूंकि शहर के दोनों फ़रीक़ आपको अपना बुज़ुर्ग मानते थे और आप से राज़ी व मुताल्लिक़ रहते थे इस बिना पर आपको रज़िअल फ़रीक़ैन के लक़ब से सब पुकारते थे आपने उस जगह दो कमरे बनाये एक मुत्तबेईने अहादीस के लिये और एक अहले तरीक़त के लिये दोनों कमरे आज तक उन्हीं क़दीम बुनियादों पर क़ायम हैं इसके बाद

आप वहां से हिजाज़ आ गये और यहीं पर सुकूनत इख़्तेयार कर ली।

आपसे लोगों ने पूछा आपने कौन सी अजीब व ग़रीब चीज़ देखी है? फ़रमाया मैंने एक राहिब को देखा जिसका बदन रियाज़ व मुजाहिदे से लाग़र व नहीफ़ हो गया था और उसकी कमर दोहरी हो चुकी थी। मैंने उससे पूछा ऐ राहिब! ख़ुदा तक रसाई की कौन सी राह है? उसने कहा अगर तुम अल्लाह को जानते हो तो उस तक रसाई की राह भी जानते होगे? फिर कुछ देर बाद उसने कहा मुझे देखो मैं उसे नहीं जानता लेकिन उसकी इबादत में मैंने अपना यह हाल बना लिया है। तुम उसे जानते हो लेकिन तुम उससे दूर हो। मतलब यह कि मारेफ़त का इक़्तेज़ा यह है कि उसकी ख़शिय्यत दिल में हमा वक़्त रहे लेकिन मैं देख रहा हूं कि तुम उससे बे ख़ौफ़ हो। और मैं कुफ़्र व जहालत में मुब्तला होने के बावजूद उससे ख़ौफ़ज़दा हूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अल मुबारक रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने राहिब की यह नसीहत गिरह में बांध ली उसने मुझे बहुत से नाजायज़ अफ़आल से बाज़ रखा है। आपका एक क़ौल यह है कि ख़ुदा के दोस्तों का दिल हरगिज़ साकिन नहीं होता। वह हमेशा बेक़रार रहते हैं क्योंकि उस तबक़ा पर सुकून व आराम हराम है उसकी वजह यह कि चूंकि वह दुनिया में हुसूले मक़सद की ख़ातिर बेक़रार होते हैं और आख़ेरत में मंज़िले मक़सूद हासिल होने की ख़ुशी में क्योंकि दुनिया में हक़ तआला से ग़ायब होने की वजह से उन पर सुकून व आराम जायज़ नहीं होता और उक़बा में बारगाहे हक़ में उसकी तजल्ली व रोईयत की वजह से इन्हें क़रार नहीं आता उनके लिये दुनिया उक़बा की मानिंद है। क्योंकि दिल को सुकून या तो मक़सूद व मुराद को पा लेने से हासिल होता है या अपने मक़सूद व मुराद से बे ख़बरी व ग़फ़लत दुनिया व आख़ेरत दोनों जगह जायज़ नहीं। इसलिये मुहब्बत की वारफ़्तगी से दिल को क़रार कैसे हासिल हो?

८- हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह

तरीक़त के इमामों में एक, वासेलीने हक़ के सरदार, मुक़र्रेबीन बारगाह के बादशाह हज़रत अबू अली फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं। फ़ुक़रा में आपका बड़ा मर्तबा है। तरीक़त में आपको कामिल महारत और पूरा शग़फ़ हासिल था मशायख़े तरीक़त के दर्मियान आप बहुत मशहूर व मारूफ़ हैं। आपके अहवाल सिद्क़ व सफ़ा से मामूर थे। आप इब्तेदा उम्र में जरायम पेशा आदमी थे। मरु और मावर्द के दर्मियान रहज़नी का मशग़ला था। इसके बावजूद

आप की तबीयत हर वक़्त मायल ब-इस्लाह रहती थी चुनांचे जिस काफ़िला में कोई औरत होती तो उसके क़रीब तक न जाते जिसके पास माल थोड़ा होता उससे तअर्रूज़ न करते और हर शख़्स के पास कुछ न कुछ माल ज़रूर छोड़ देते थे आपकी तौबा का वाक़िया बड़ा अजीब है। एक सौदागर मरू से मावर्द जा रहा था। मरू के लोगों ने उस सौदागर से कहा मुनासिब है कि एक सरकारी हिफ़ाज़ती दस्ता साथ लेकर चलो क्योंकि राह में फ़ुज़ैल रहज़नी करता है सौदागर ने जवाब दिया मैंने सुना है कि वह रहम दिल और ख़ुदा तरस आदमी है। सौदागर ने हिफ़ाज़ती दस्ता की बजाए एक ख़ुश आवाज़ क़ारी को उजरत पर लेकर ऊंट पर बैठा दिया और रवाना हो गया। क़ारी दिन व रात रास्ते में तिलावते कुरआन करता रहा यहां तक कि यह क़ाफ़िला उस मक़ाम तक पहुंच गया जहां यह घात लगाये बैठे थे। इत्तेफ़ाक़ से क़ारी ने यह आयत तिलावत की- यानी क्या अभी तक मोमिनों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि वह ज़िक्रे इलाही और हक़ की तरफ़ से नाज़िल किये हुए अहकाम के आगे अपने दिलों को झुकायें। हज़रत फ़ुज़ैल ने जब यह सुना तो उनके दिल पर रिक़्क़त तारी हो गयी। फ़ुज़ैल के दिल पर फ़ज़्ले ख़ुदा ने ग़ल्बा दिखाया और उस लम्हा उन्होंने रहज़नी से तौबा कर ली। जिन जिन के माल लूटे थे उनके नाम लिख रखे थे उन सबको राज़ी किया। उसके बाद मक्का मुकर्रमा चले गये और अर्सा तक वहां मुक़ीम रहे और बकसरत औलिया अल्लाह से मुलाक़ातें कीं फिर वह कूफ़ा आ गये और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की मजलिसे मुबारक में मुद्दत तक रहे उनसे बकसरत रिवायात मरवी हैं जो मुहद्देसीन के नज़दीक बहुत मक़बूल हैं।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि तसव्वुफ़ के हक़ायक़ व मारेफ़त में आला दर्जा की गुफ़्तगू किया करते थे चुनांचे आपका क़ौल है कि जिसे अल्लाह तआला का कमा हक़्क़ा मारेफ़त हासिल हो गयी वह मक़दूर भर उसकी इबादत में मशग़ूल हो गया। इसलिये कि मारेफ़त उसकी एहसान व करम की पहचान की वजह से हासिल होती है और जब उसके एहसान व करम की पहचान हो जाये तो उसने उसको दोस्त बना लिया और जब उसे दोस्त बना लिया तो गोया उसने मक़दूर भर ताअत व इबादत कर ली क्योंकि दोस्त का कोई हुक्म मुश्किल व दुश्वार नहीं होता। इसी बिना पर जितनी दोस्ती ज़्यादा होगी उतना ही ताअत व इबादत का ज़ौक़ बढ़ता जायेगा और दोस्ती की ज़्यादती

ही मारफ़त की हक़ीक़त है। चुनांचे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका फ़रमाती हैं कि एक रात हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास से उठे फिर आप मेरी नज़रों से ओझल हो गये मुझे ख़्याल गुज़रा कि शायद किसी दूसरे हुजरे में तशरीफ़ ले गये हैं मैं उठी और हुजूर के पीछे चल दी यहां तक कि मैंने देखा कि आप मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं और हुजूर की आंखों से आंसू जारी हैं। फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आये और उन्होंने सुबह की अज़ान दी और हुजूर बदस्तूर नमाज़ में मशगूल रहे। नमाज़े सुबह अदा फ़रमाने के बाद जब हुजूर हुजरे में तशरीफ़ लाए तो मैंने देखा कि आपके क़दमे मुबारक पर वरम था और आपकी उंगलियों से ख़ून जारी था मैंने रोकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह ने आपको मग़फ़ूर फ़रमाया इस बशारत की मौजूदगी में इतनी मुशक़्क़त क्यों बर्दाश्त फ़रमाते हैं ऐसा तो वह करे जिसकी आख़ेरत महफ़ूज़ न हो। आपने फ़रमाया यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व एहसान है क्या मैं ख़ुदा का शुक्र गुज़ार बंदा न बनूं अल्लाह तआला तो मुझे ऐसी बशारत दे और तुम यह चाहती हो कि मैं उसकी बंदगी न करूं और मक़दूर भर शुक्रगुज़ारी भी न करूं।

नीज़ हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मेराज पच्चास नमाज़ें क़ुबूल फ़रमा ली थीं और आपने इन्हें गिरां न जाना था लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बार बार अर्ज़ करने पर दोबारा जा जाकर पांच नमाज़ें करायीं। उसकी वजह यह भी है कि आपकी सरिशत में फ़रमाने इलाही की मुख़ालेफ़त का शायबा भी न था। इस लिये कि मुहब्बत नाम ही मुवाफ़िक़त का है।

यह दुनिया बीमारी का घर है और लोग इस पर दीवाने हैं और दीवानों को बीमारिसतान में तूफ़ान व सलासिल से मुक़ैयद रखा जाता है।

मतलब यह है कि हमारी ख़्वाहिशें हमारी ज़ंजीरें और हमारे गुनाह हमारी क़ब्र हैं।

हिकायत

हज़रत फ़ज़ल बिन रबीअ बयान फ़रमाते हैं कि मैं ख़लीफ़ा हारून रशीद के साथ हज के लिये मक्का मुकर्रमा गया। हज से फ़ारिग़ होने के बाद हारून रशीद ने मुझसे कहा अगर मरवाने ख़ुदा में से कोई यहां मौजूद हो तो हम उसकी ज़ियारत के लिये जायेंगे। मैंने कहा हां! इस जगह हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़ सनआनी

हैं। उसने कहा मुझे उनके पास ले चलो। जब हम उनके पास पहुंचे तो बहुत देर तक गुफ़्तगू होती रही। रुख़सत के वक़्त हारून रशीद ने मुझसे कहा इनसे दर्याफ़्त करो कि क्या इनके ज़िम्मे कुछ क़र्ज़ा है? उन्होंने कहा हां क़र्ज़ा है? हारून रशीद ने मुझसे कहा इनका क़र्ज़ा अदा कर दो। जब हम वहां से वापस आए तो उसने कहा ऐ फ़ज़ल! मेरा दिल किसी और बुजुर्ग से भी मिलने का मुतमन्नी है। मैंने कहा यहां हज़रत सुफ़यान बिन ऐनिया भी जलवागर हैं। उसने कहा उनके पास भी ले चलो, चुनांचे जब हाज़िर हुए तो देर तक गुफ़्तगू होती रही। वापसी के वक़्त ख़लीफ़ा ने मुझसे इशारा किया कि मैं इनसे क़र्ज़ के बारे में दर्याफ़्त करूं। मैंने पूछा तो फ़रमाया हां क़र्ज़ है। ख़लीफ़ा ने मुझे हुक्म दिया कि इनका क़र्ज़ भी अदा कर दो बाहर आकर ख़लीफ़ा ने मुझसे कहा ऐ फ़ज़ल! अभी मेरा दिल सैर नहीं हुआ किसी और बुजुर्ग से भी मुलाक़ात कराओ। मैंने कहा मुझे याद आया यहां हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ भी तशरीफ़ फ़रमा हैं फिर हम उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए वह ऊपर एक गोशे में बैठे क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे। मैंने दस्तक दी अंदर से आवाज़ आयी कौन है? मैंने जवाब दिया अमीरुल मोमिनीन आये हैं, उन्होंने फ़रमाया मुझे अमीरुल मोमिनीन से और उन्हें मुझसे क्या सरोकार? मैंने कहा सुबहानल्लाह! क्या हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद नहीं है कि-

किसी बंदे को लायक़ नहीं कि ताअते इलाही में ख़ुद को ज़लील करे।

आपने फ़रमाया हुज़ूर का इरशाद हक़ है लेकिन रज़ाए इलाही इसके हुज़ूर में दायमी इज़्ज़त है तुम मेरी इस हालत को ज़लील गुमान करते हो हालांकि मैं ताअते इलाही में अपनी इज़्ज़त जानता हूं। इसके बाद नीचे आकर दरवाज़ा खोल दिया और चिराग़ बुझा दिया और मकान के एक कोने में जाकर खड़े हो गये। मुसाफ़हा के वक़्त हारून रशीद का हाथ उनके हाथ से मस हुआ तो हज़रत फुज़ैल ने फ़रमाया अफ़सोस है कि इतना नर्म व नाज़ुक हाथ दोज़ख़ में जलेगा। काश कि यह हाथ ख़ुदा के अज़ाब से महफ़ूज़ रहता। हारून रशीद यह सुनकर रोने लगे और इतना रोये कि बेहोश होकर गिर पड़े। जब होश आया तो कहने लगे ऐ फुज़ैल! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये। आपने फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन तेरा बाप, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था उन्होंने हुज़ूर से दरख़्वास्त की कि मुझे अपनी क़ौम पर अमीर बना दीजिये, हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ चचा! मैंने तुम को तुम्हारी जान पर अमीर बना दिया क्योंकि

एक सांस अगर ताअते इलाही में गुज़रे तो वह उससे बेहतर है कि लोग हज़ार साल तक तुम्हारी फ़रमा बर्दारी करें। इसलिये कि अमीरी से क़यामत के दिन बजुज़ नदामत व शर्मिन्दगी के कुछ हासिल न होगा। हारून रशीद ने कहा कुछ और भी नसीहत फ़रमाइये। हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया जब हज़रत अमर व विन अब्दुल अज़ीज़ को लोगों ने ख़िलाफ़त पर फ़ायज़ करना चाहा तो उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह रेजा बिन हयात और मुहम्मद बिन कअब क़रज़ी को बुलाया और उनसे कहा लोगों ने मुझे इस बला व मुसीबत में फंसा दिया है मुझे क्या तदबीर करनी चाहिये क्योंकि इमारत को मैं बला समझता हूं अगरचे लोग इसे नेमत ख़्याल करते हैं, उनमें से एक ने कहा ऐ अमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अगर आप चाहते हैं कि रोज़े क़ियामत अज़ाबे इलाही से रुस्तगारी हो तो मुसलमान बुज़ुर्गों और बूढ़ों को अपने बाप की मानिंद और जवानों को भाई और बच्चों को अपनी औलाद की मानिंद समझें और उन सबके साथ वही सुलूक कीजिये जो ख़ानदान का सरबराह बाप, अपने भाईयों फ़रज़ंदों और दीगर अयाले के साथ करता है। क्योंकि यह मुमालिके इस्लामिया एक घर की मानिंद हैं और उनमें रहने वाले अहल व अयाल अपने बड़ों की ज़ियारत करो और भाईयों की इज़्ज़त करो और छोटों से प्यार व मुहब्बत करो। इसके बाद हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन मुझे अंदेशा है कि कहीं तुम्हारा यह ख़ूबसूरत चेहरा दोज़ख़ की आग में न झुलसाया जाये, ख़ुदा का ख़ौफ़ रखो और उसका हक़ बेहतरीन तरीक़ पर अदा करो। इसके बाद हारून रशीद ने अर्ज़ किया आप पर कुछ क़र्ज़ है? हज़रत फ़ुज़ैल ने जवाब दिया हां ख़ुदा का क़र्ज़ मेरी गर्दन पर है वह उसकी इताअत है मैं फ़िक्रमंद हूं कि इस वजह से मेरी गिरफ़्त न हो जाये। हारून रशीद ने अर्ज़ किया बारे क़र्ज़ से मेरी मुराद लोगों का क़र्ज़ है आपने फ़रमाया अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का शुक्र व एहसान है उसने मुझे बहुत कुछ नेमत दे रखी है और मुझे कोई शिकवा नहीं है। कि लोगों से बयान करता फिरूं। हारून रशीद ने एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली आपके आगे रख दी और अर्ज़ किया इसे अपनी ज़रूरतों पर ख़र्च फ़रमाइये। हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन मेरी इतनी नसीहतों ने तुम पर कुछ असर नहीं किया और अभी तक ज़ुल्म व इस्तेबदाद की रविश पर क़ायम हो। हारून रशीद ने कहा मैंने आप पर ज़ुल्म व इस्तबादाद किया है? फ़रमाया मैं तुम्हें निजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे इब्तेला में डालना चाहते हो। क्या यह ज़ुल्म

व जफ़ा नहीं है? यह सुनकर हारून रशीद और फुज़ेल बिन रबीअ दोनों रोने लगे और रोते हुए बाहर आ गये। इसके बाद हारून रशीद ने मुझे कहा ऐ फुज़ैल बिन रबीअ! बादशाह दर हक़ीक़त हज़रत फुज़ैल हैं और यह सब उनके दबदबा की दलील है जो दुनिया और दारुल आख़रत में इन्हें हासिल है। दुनिया की तमाम ज़ेब व ज़ीनत उनकी नज़र में बे वक़अत और हक़ीर हैं अहले दुनिया की ख़ातिर तवाज़ुअ करनी भी उन्होंने इसी लिये तर्क कर रखी है।

आपके फ़ज़ायल व मनाक़िब इससे कहीं ज़्यादा हैं जितने कि लिखे जा सकते हैं।

९- हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग सफ़ीना तहक़ीक़ व करामत, समसाम शर्फ़ अंदर विलायत हज़रत अबू फ़ैज़ ज़ुन्नून इब्ने इब्राहीम मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आपका नाम सौबान थासौबी नज़ाद थे। रियाज़त व मुशक़्क़त और तरीके मलामत को पसंद कर रखा था। मिस्र के तमाम रहने वाले आपके मर्तबे की अज़मत को पहचानने में आजिज़ थे और अहले ज़माना आप के हाल से नावाफ़िक़ रहे। यहां तक कि मिस्र में किसी ने भी आपके हाल व जमाल को इंतेकाल के वक़्त तक न पहचाना। जिस रात आपने रेहलत फ़रमाई उस रात सत्तर लोगों ने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की आपने उन से फ़रमाया ख़ुदा का एक महबूब बंदा दुनिया से रुख़सत होकर आ रहा है। इसके इस्तिक़बाल के लिये आया हूं। जब हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि ने वफ़ात पाई तो उनके पेशानी पर यह लिखा गया- यह अल्लाह का महबूब है अल्लाह की मुहब्बत में फ़ौत हुआ यह ख़ुदा का शहीद है। लोगों ने जब आपका जनाज़ा कांधों पर उठाया। तो फ़ज़ा के परिन्दों ने पर बांधकर जनाज़ा पर साया किया। इन वाक़ियात को देखकर अपने किये हुए ज़ुल्म व जफ़ा पर लोग पशेमान हुए और सिद्क़ दिल से तौबा करने लगे।

तरीक़त व हक़ीक़त और उलूमे मारेफ़त में आपके कलिमात निहायत उम्दा हैं। आपने फ़रमाया- ख़शीयते इलाही में आरिफ़ का हर लहज़ा बढ़कर है इसलिये कि उसकी हर घड़ी रब से ज़्यादा क़रीब है क्योंकि बंदा जितना ज़्यादा क़रीब होगा उसकी हैरत व ख़ुशूअ और ज़्यादा होगी। चूंकि बारगाहे हक़ के दबदबा का ज़्यादा शनासा होता है और उसके दिल पर जलाल हक़ ग़ालिब

होता है जब वह खुद को इससे दूर देखेगा तो उसके विसाल में और कोशिश करेगा इस तरह खुशूअ बर खुशूअ की हालत में इज़ाफ़ा होता रहेगा। जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मुकालेमत के वक़्त अर्ज़ किया- खुदाया तुझे कहां तलाश करूं! हक ने फ़रमाया शकिस्ता दिल और अपने सफ़ाए क़ल्ब से मायूस लोगों के पास। हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! मुझसे ज़्यादा शिकस्ता दिल और ना उम्मीद शख़्स और कौन होगा? फ़रमाया मैं वहीं हूं जहां तुम हो। मालूम हुआ कि ऐसा मुद्दई मारेफ़त जो बे ख़ौफ़ व खुशूअ हो वह जाहिल है आरिफ़ नहीं है। क्योंकि मारेफ़त के हक़ीक़त की अलामत सिद्क़ इरादत है और सिद्क़ इरादत, खुदा के सिवा हर सबब के फ़न करने वाली और तमाम निसबतों को क़तअ करने वाली होती है।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह ने फ़रमाया- खुदा की सरज़मीन में सच्चाई उसकी तलवार है जिस चीज़ पर यह पड़ती है उसे काट देती है और सिद्क़ यह है कि मुसब्बल असबाब की तरफ़ नज़र हो न कि आलिमे असबाब की तरफ़ क्योंकि जब तक सबब क़ायम व बरक़रार है उस वक़्त तक सिद्क़ साक़ित व बईद है।

हिकायत

एक मर्तबा आप अपने साथियों के साथ कश्ती में सवार दरियाए नील में सफ़र कर रहे थे। सामने से एक कश्ती आ रही थी जिसमें लोग गा बजाकर खूब खुशियां मना रहे थे और एक हंगामा बरपा कर रखा था। आपके रुफ़का ने आपसे अर्ज़ किया ऐ शैख़ दुआ कीजिये अल्लाह तआला इन सबको ग़र्क़ कर दे ताकि इन की नहूसत से मख़लूक़े खुदा पाक हो। हज़रत जुन्नून मिसरी खड़े हो गये और हाथ उठाकर दुआ मांगी कि खुदाया जिस तरह तूने दुनिया में आज इनको खुशी व शादमानी बख़्शी उसी तरह उस जहान में इनको खुशी मुसर्रत अता फ़रमा। आपके रुफ़का इस दुआ को सुनकर हैरान रह गये। जब वह कश्ती आमने सामने हुई और लोगों की नज़रें हज़रत जुन्नून मिसरी पर पड़ीं तो रोकर माज़रत करने लगे। और अपने आलाते मौसीक़ी को तोड़कर दरिया में फेंक दिया और तायब होकर हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह हो गये। हज़रत जुन्नून मिसरी ने अपने रुफ़का से फ़रमाया उस जहान की खुशी व मुसर्रत इस जहान में तौबा करने से हासिल होती है। देख लो सबकी मुरादें हासिल हो गयीं तुम्हारी भी और इनकी भी और किसी को रंज व तकलीफ़ भी न पहुंची। यह वाक़िया

आपकी इस हक़ीक़त व मेहरबानी पर दलालत करता है जो कि आप को मुसलमानों के साथ थी। आपकी यह ख़ूबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इत्तेबा में थी क्योंकि काफ़िरों ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ुल्म व सितम रवा रखने में कोई कसर उठा न रखी थी। इसके बावजूद आपकी सिफ़त रहमत में कभी फ़र्क़ न आया और कभी बद दुआ नहीं फ़रमाई। बल्कि हर बार यही दुआ की कि ख़ुदाया मेरी क़ौम को हिदायत दे क्योंकि वह नादान हैं।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि ने एक वाक़िया अपने रुश्द व हिदायत के बारे में ख़ुद बयान फ़रमाया है कि मैं बैतुल मुक़द्दस से मिस्र की तरफ़ आ रहा था मुझे एक शख़्स आता हुआ दिखाई दिया मैंने दिल में यह ख़्याल किया कि इससे कुछ पूछना चाहिये। जब क़रीब आया तो मैंने देखा कि वह कुबड़ी की बूढ़ी औरत है। पश्म का जुब्बा पहने और हाथ में असा व लोटा लिये हुए थी। मैंने उससे पूछा कि कहां से आ रही हो? उसने कहा ख़ुदा की तरफ़ से। मैंने कहा अब किधर का इरादा है? उसने कहा ख़ुदा की तरफ़। मेरे पास एक दीनार था उसे देना चाहा। उसने एक तमांचा मेरे रुख़सार पर मारकर कहा ऐ जुन्नून! तूने जो मुझे समझा है वह तेरी नाफ़हमी है मैं ख़ुदा के लिये ही काम करती हूं उसी की इबादत करती हूं और उसी से मांगती हूं किसी दूसरे से कुछ नहीं लेती यह कहा और आगे बढ़ गयी।

इस वाक़िये में लतीफ़ रम्ज़ व इशारा है वह यह कि उस बूढ़ी ने कहा मैं ख़ुदा के लिये ही काम करती हूं जो सिद्क़े मुहब्बत की दलील है क्योंकि लोगों का सलूक दो तरह का होता है एक यह कि वह जो काम करते हैं उसके बारे में यह गुमान रखते हैं कि उसी के लिये किया है? हालांकि वह अपने ही लिये करते हैं। अगर इस अमल में ख़्वाहिशे नफ़्स का दख़ल न हो लेकिन यह ख़्वाहिश तो बहरहाल होती है कि उस जहान में इसका अज्र व सवाब मिलेगा। दूसरे यह कि वह उस जहान के अज्र व सवाब की ख़्वाहिश और इस जहान में रिया व समअ के दख़ल से अपने अमल को मुबर्रा रखते हैं। जो शख़्स ऐसा अमल करेगा वह ख़ालिस अल्लाह तआला के फ़रमान की अज़मत और उसकी मुहब्बत के इक़्तेज़ा पर मबनी होगा और उसके फ़रमान की बजा आवरी में अज्र व सवाब की तमअ न होगी। अव्वल गरोह की यह हालत है कि हर अमले ख़ैर पर गुमान रखते हैं कि इसके लिये किया है हालांकि वह ज़ादे आख़ेरत के

लिये होता है अगरचे जायज़ है लेकिन उसे पहले तो यह मालूम होना चाहिये कि फ़रमां बर्दार की ताअत का अज्र उस शख़्स से ज़्यादा है जो मासीयत में मुब्तला हो क्योंकि मासीयत में ख़ुशी कुछ देर की होती है और ताअत की ख़ुशी दायमी है। रब बे नियाज़ को मख़लूक़ के मुजाहिदे से कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता और न ही उनके न करने से उसका कुछ नुक़्सान है। अगर सारा जहान हज़रत अबू सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सिद्क़ के हम पल्ला हो जायं तो उसका फ़ायदा इन्हीं को होगा न कि ख़ुदा को। और अगर सारा जहान फ़िरऔन के मानिंद ख़ुदा को झुटलाने लगे तो उसका नुक़्सान इन्हीं को पहुंचेगा न कि ख़ुदा को जैसा हक़ तआला का इरशाद है अगर तुम नेक अमल करते हो तो अपने लिये ही अच्छा करते हो और अगर बुरे अमल करो तो वह भी तुम्हारे ही लिये है। फ़रमाने इलाही है जो मुजाहिदा करता है वह अपने लिये मुजाहिदा करता है क्योंकि अल्लाह सारे जहान से बे नियाज़ है लोग आफ़ियत के लिये इताअत करते हैं और वह गुमान करते हैं कि ख़ुदा के लिये कर रहे हैं लेकिन अपने महबूब की राह पर चलना और ही चीज़ है। ऐसे लोगों की निगाहें किसी और तरफ़ नहीं उठतीं।

१०- हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, अमीरुल मुराद, सालिके तरीक़त लक़ब हज़रत अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अदहम मंसूर रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप अपने ज़माने और अपने सुलूक में मुनफ़रिद और सैयदे अक़रान थे। आप हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के मुरीद थे। आपने बकसरत क़दमाए मशायख़ की सोहबत पाई और हज़रत ख़िज़्र ने इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की मजलिस में हाज़िर होकर तहसीले इल्म किया। इब्तेदाए हाल यह है कि आप बल्ख़ के अमीर थे एक दिन शिकार के लिये निकले एक हिरन के तआक़ुब में घोड़ा डाल दिया और लश्कर से बिछड़ गये। अल्लाह तआला ने हिरन को कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई और उसने बजुबाने फ़सीह कहा- ऐ इब्राहीम क्या तुम इसी काम के लिये पैदा किये गये हो? यह बात आपकी तौबा का सबब बनी। और आपने उसी वक़्त दुनिया से किनारा कशी इख़्तेयार करके ज़ुहद व वरअ की ज़िन्दगी अपना ली। और हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ और हज़रत सुफ़यान सूरी की ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी सोहबत इख़्तेयार कर ली तौबा के बाद अपने हाथ की कमाई के सिवा कुछ न खाया। तरीक़त व मारेफ़त

में आपके इशारात ज़ाहिर और करामतें मश्हूर हैं। तसव्वुफ़ के हक़ायक़ में आपके कमालात निहायत लतीफ़ व नफ़ीस हैं हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि ने आपके बारे में फ़रमाया हज़रत इब्राहीम अदहम तरीक़त व मारेफ़त के उलूम की कुंजियां हैं।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह तआला को सोहबत इख़्तेयार करके लोगों को एक तरफ़ छोड़ दो। मतलब यह है कि हक़ तआला के साथ जब बंदा का ताल्लुक़ ख़ातिर दुरुस्त हो और उसकी मुहब्बत में इख़लास हो तो हक़ तआला से यह सही ताल्लुक़ ख़ल्क़ से किनारा कशी का मक़तज़ी होता है इसलिये कि ख़ल्क़ से सोहबत रखना ख़ालिक़ की बातों से जुदा होना है और अल्लाह तआला से सोहबत इसी सूरत में मुमकिन है जबकि इख़्लास के साथ उसके अहकाम की इताअत की जाये। और ताअत में इख़्लास जब ही पैदा होता है जबकि मुहब्बते इलाही में खुलूस हो और हक़ तआला से मुहब्बत में ख़ुलूस जब पैदा होता है जबकि वह नफ़सानी ख़्वाहिशात का दुश्मन बन जाये। जो शख़्स कि नफ़सानी ख़्वाहिशात का ताबेअ बना वह ख़ुदा से जुदा हो गया। और जिसने नफ़सानी ख़्वाहिशात को निकाल फेंका वह रहमते इलाही से बहरावर होगा। गोया कि तुम अपने वजूद से ख़ुद ही तमाम ख़ल्क़ हो जब तुमने अपनी ज़ात से एराज़ कर लिया तो गोया सारी ख़लक़त से किनाराकशी इख़्तेयार कर ली। लेकिन वह शख़्स जो ख़लक़त से तो किनाराकशी इख़्तेयार कर ले मगर अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश का गुलाम बन रहे तो यह ज़ुल्म है क्योंकि सारी ख़लक़त जिस हालत में है वह तो हुक्म व तक़दीर से है मगर तुम्हारा मामला तुम्हारे साथ है।

इस्तेक़ामते ज़ाहिर व बातिन

तालिबे हक़ की ज़ाहिरी व बातिनी इस्तेक़ामत दो चीज़ों पर है एक इल्म से मुताल्लिक़ है और दूसरी अमल से जो इल्म से मुताल्लिक़ है वह नेक व बद तक़दीर का जानना है इसलिये आलम में कोई शख़्स मुतहर्रिक को साकिन और साकिन को मुतहर्रिक नहीं कर सकता। इसलिये कि हर चीज़ को और इसमें हरकत व सुकून को अल्लाह ही ने पैदा किया है और वह जो अमल से मुताल्लिक़ है वह फ़रमाने इलाही का बजा लाना है। मामला की सेहत, मुकल्लफ़ाते अहकामे इलाहिया का तहफ़्फ़ुज़ और हर वह हाल जो तक़दीरे इलाही से मुताल्लिक़ हो फ़रमाने इलाही के तर्क के लिये हुज्जत नहीं बन सकता

लिहाज़ा ख़ल्क़ से किनाराकश उस वक़्त तक सहीह नहीं हो सकती जब तक कि वह ख़ुद से किनाराकश न हो जाये। जब ख़ुद से किनाराकशी हो जाओगे तो तमाम ख़ल्क़ से किनाराकशी हासिल हो जायेगी। और यही हासिले मुराद है। जब हक़ तआला से लगाव पैदा हो गया तो अमरे हक़ की इक़ामत के लिये साबित क़दमी मुयस्सर आ जायेगी मालूम हुआ कि ख़ल्क़ के साथ किसी हाल में चैन व राहत पाना जायज़ नहीं है अगर हक़ के सिवा किसी ग़ैर से चैन व राहत चाहोगे तो यह ग़ैर के साथ राहत पाना होगा, और यह बात तौहीद के मनाफ़ी है। और अपनी ज़ात से आराम पाना तो सरासर निकम्मापन है। इसी वजह से हज़रत शैख़ अबुल हसन सालबा रहमतुल्लाह अलैहि अपने मुरीदों से फ़रमाया करते थे कि बिल्ली का हुक्म मानना अपने नफ़स से बेहतर है इसलिये कि उससे मुहब्बत बराए ख़ुदा है और अपने नफ़स की मुहब्बत और उसकी पैरवी ख़्वाहिशाते नफ़सानिया की परवरिश है। मज़ीद तफ़सील दूसरी जगह आयेगी इंशाअल्लाह।

हिकायत

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जब मैं बेयाबान में पहुंचा तो एक बूढ़े ने मुझसे कहा ऐ इब्राहीम तुम जानते हो यह कौन सा मक़ाम है जहां बग़ैर तोशा के सफर कर रहे हो? मैंने समझ लिया कि यह शैतान है (जो ग़ैर की तरफ़ मुझे फंसना चाहता है) मेरे पास उस वक्त चार सिक्के थे जो उस ज़ंबील की क़ीमत के थे जिसे मैंने कूफ़ा में ख़ुद फ़रोख़्त करके हासिल किया था। इन्हें जेब से निकालकर फेंक दिया और अहद किया कि हर मील पर चार सौ रकअत नमाज़ पढूंगा। मैं चार साल बेयाबान में रहा लेकिन अल्लाह तआला ने हर वक़्त बे मुशक़्क़त मुझे रोज़ी अता फ़रमाई। इसी असना में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की सोहबत हासिल हुई और मुझे इस्मे आज़म की तालीम दी उस वक़्त मेरा दिल एकदम ग़ैर से ख़ाली हो गया।

११- हज़रत बशर बिन हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामो से एक बुज़ुर्ग, सरीर आराए मअरेफ़त ताजे अहले मअ मिल्लत हज़रत बशर बिन हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप मुजाहिदे में अज़ीमुश्शान और बुरहाने कबीर थे। मामलाते तरीक़त में कामिल महारत रखते थे। आपने हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह की सोहबत पाई और अपनी

मामू हज़रत अली बिन हशरम रहमतुल्लाह अलहि से बैयते इरादत की। आप इल्मे उसूल व फ़रोअ़ के आलिम थे। इब्तेदा का वाक़िया है कि आप एक दिन नशे की हालत में घर से निकले रास्ते में एक काग़ज़ का पुरज़ा पड़ा मिला जिस पर "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" तहरीर था ताज़ीम से उठाकर ख़ुश्बू से मोअतर करके पाक जगह पर रख दिया उसी रात आपने ख़्वाब में देखा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि - ऐ बशर तुम ने मेरे नाम को ख़ुश्बू में बसाया क़सम है मुझे अपनी इज़्ज़त की मैं तुम्हारे नाम की ख़ुश्बू को दुनिया व आख़ेरत में फैलाऊंगा। यहां तक कि जो भी तुम्हारा नाम लेगा या सुनेगा उसके दिल को राहत नसीब होगी। ख़्वाब से बेदार होते ही तौबा की और मज़बूती के साथ तरीक़ए ज़ुहद पर गामज़न हो गये।

हक़ तआला के मुशाहदा का ग़ल्बा इस हद तक शदीद था कि हमेशा नंगे पांव रहे। लोगों ने बरहना पा रहने की वजह दर्याफ़्त की तो फ़रमाया ज़मीन खुदा का फ़र्श है मैं जायज़ नहीं समझता कि फ़र्श पर चलूं कि मेरे पांव और उसके फ़र्श के दर्मियान कोई चीज़ हायल हो। आपकी मारेफ़त का यह अजीब मामला है कि जूतों को भी हिजाब समझ लिया।

आप फ़रमाते हैं कि जो यह चाहता है कि वह दुनिया में इज़्ज़त वाला और आख़ेरत में शराफ़त वाला हो उसे लाज़िम है कि तीन बातों से इज्तेनाब करे। एक यह कि किसी से अपनी ज़रूरत बयान न करे दूसरे यह कि किसी को बुरा न कहे तीसरे यह कि किसी के खाने की दावत क़बूल न करे। क्योंकि जिसे अल्लाह तआला की मारफ़त होगी उसे मख़लूक़ की एहतियाज न होगी। चूंकि ख़ल्क़ की एहतियाज अदमे मारेफ़त की दलील है अगर वह ख़ुदा को क़ाज़ी हाजात जानता तो किसी ग़ैर से एहतियाज बर आरी न चाहेगा। इसलिये कि मख़लूक़ का मख़लूक़ से तालिबे इमदाद होना ऐसा ही है जैसे क़ैदी का क़ैदी से मदद मांगना। किसी को बुरा न कहने की वजह यह है कि वह ख़ुदा के हुक्म में तसर्रुफ़ करता है इसलिये कि वह शख़्स और उसका फ़ेअले बद दोनों ख़ुदा की मख़लूक़ हैं। इसकी पैदा करदा चीज़ को बुरा कहना ख़ुदा की तरफ़ मुराजअत करता है। किसी फ़ेअल में ऐब डालना या फ़ायल में ऐब निकालना बराबर है सिवाए उसके कि ख़ुदा ने जिसे बुरा कहा उसकी मुवाफ़िक़त में बुरा कहा जाए जैसे फ़स्साक़ व फ़ुज्जार और कुफ़्फ़ार वग़ैरह। इसी तरह किसी के खाने की दावत क़बूल न करने की वजह यह है कि रोज़ी रसां हक़ तआला है अगर कोई

मख़लूक़ को तेरी रोज़ी का ज़रिया बनाये तो मख़लूक़ को न देखा बल्कि यह देखा कि वह रोज़ी है जिसे ख़ुदा ने तेरे पास पहुंचाया है न यह कि किसी मख़लूक़ ने रोज़ी दी है। अगर रोज़ी देने वाला बंदा यह समझे कि यह रोज़ी उसकी तरफ़ से है और उस बिना पर तुझसे एहसान जताता है तो उसे क़बूल न करो इसलिये कि रोज़ी में किसी का किसी पर एहसान नहीं है। अलबत्ता अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक रोज़ी ग़िज़ा है (जिसे ख़ुदा ने उनको ज़रिया बनाकर भेजा लिहाज़ा उसकी सपास व शुक्रगुज़ारी ज़रूरी है) और मोतज़ला के नज़दीक रोज़ी ग़िज़ा नहीं बल्कि अशिया में से है और यह कि अल्लाह तआला ही मख़लूक़ को ग़िज़ा के ज़रिया पालता है न कि किसी मख़लूक़ का ज़रिया मजाज़ी सबब हो इसकी और भी वजूहात हैं! वल्लाहु आलम।

१२- हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, मारेफ़त व मुहब्बत के आसमान हज़रत अबू यज़ीद तैफ़ूर बिन ईसा बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप तमाम मशायख़े तरीक़त में जलीलुल क़द्र हैं। आप का हाल सबसे रफ़ीअ तर है। आप की जलालते शान के बारे में हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि सूफ़ियाए किराम में अबू यज़ीद की शान ऐसी है जैसे फ़रिश्तों में जिब्राईल अलैहिस्सलाम की है।

आपके आबा व अजदाद बुसताम के रहने वाले मजूसी थे। लेकिन आपके दादा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसी हदीसें रिवायत की हैं जिन का मक़ाम बहुत बुलंद है। तसव्वुफ़ में जो दस इमाम गुज़रे हैं उनमें से एक आप हैं। हक़ायक़ व मारफ़त में आपसे बढ़कर किसी को दस्तर्स और कुव्वते इंबिसात नहीं है। तरीक़त व शरीअत के तमाम उलूम और उनके अहवाल के आप बहुत बड़े आलिम और उनसे मुहब्बत करने वाले थे। मुलहेदीन का वह मरदूद गरोह जो ख़ुद को आपकी वज़अ व तरीक़ का पाबंद बताता है आप का हाल उनके बिल्कुल ख़िलाफ़ था। आपका इब्तेदाई ज़माना मुजाहिदे और तहसीले इल्म तरीक़त में गुज़रा था। आप ख़ुद ही फ़रमाते हैं कि- मैंने तीस साल मुजाहिदे में गुज़ारे लेकिन इल्म और उसकी मुतालबा से ज़्यादा सख़्त व दुश्वार कोई चीज़ मुझ पर नहीं गुज़री। अगर हर मसले में उलमा का इख़्तेलाफ़ न होता तो मैं रह जाता और दीने हक़ की मारफ़त न हो सकती। हक़ीक़त यह है कि उलमा का इख़्तेलाफ़ रहमत है मगर तौहीदे ख़ालिस में

इख़्तेलाफ़ मुज़िर है। चूंकि इंसानी तबीयत जहल की तरफ़ ज़्यादा मायल है क्योंकि बे इल्म आदमी बवजहे जहालत बहुत से काम बे रंज व तअब कर गुज़रता है लेकिन इल्म के साथ एक क़दम भी बग़ैर दुश्वारी के नहीं चल सकता। शरीअत की राह जहान की तमाम राहों से ज़्यादा बारीक व पुर ख़तर है। हर हाल में बंदे के लिये यही सज़ावार है कि अगर बुलंद मक़ामात और अहवाले रफ़ीया से गुज़रना मुश्किल हो तो मैदाने शरीअत में उतर जाये इसलिये कि अगर इससे हर चीज़ गुम हो जाये तो वह शरीअत के दायरे में तो क़ायम रहेगा। मुरीद के लिये सब से बड़ी आफ़त सलूक के मामलात का तर्क है और मुद्दईयाने काज़िब के तमाम दावे मैदाने शरीअत में परागंदा हो जाते हैं और शरीअत के मुक़ाबला में तमाम ज़ुबानें गुंग और ख़ामोश हो जाती हैं।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि- अहले मुहब्बत के नज़दीक जन्नत की कोई क़दर व क़ीमत नहीं। वह तो अपनी मुहब्बत में ही मुस्तग़रक़ व शैदा रहते हैं क्योंकि जन्नत एक मख़लूक़ शय है अगरचे वह बुलंद इज़्ज़त है लेकिन हक़ तआला की मुहब्बत ऐसी सिफ़त है जो ग़ैर मख़लूक़ है। जो शख़्स ग़ैर मख़लूक़ से हटकर मख़लूक़ की तरफ़ ध्यान रखेगा वह अलायके दुनिया में फंस कर सुबक होगा। ख़ुदा के महबूबों के नज़दीक मख़लूक़ की कोई इज़्ज़त व मंज़िलत नहीं होती। वह ख़ुदा की मुहब्बत ही में मगन रहते हैं इसलिये कि वजूद और हस्ती दुई को चाहती है और असल तौहीद में दुई ना मुमकिन है। महबूबाने ख़ुदा का रास्ता वहदानियत से वहदानियत की तरफ़ है और मुहब्बत की राह मुहब्बत की इल्लत है।

अगर कोई मुरीद अल्लाह से मुहब्बत व दोस्ती इस ख़्याल से करे कि वह मुरीद हो जाये या मुराद बन जाये अगरचे वह मुरीदे हक़ हो या मुरादे बंदा, या मुरादे हक़ हो या मुरीदे बंदा, बहर सूरत यह ख़्याल इसके लिये आफ़त है इसलिये कि अगर मुरीदे हक़ होकर मुरादे बंदा हो जाये तो मुरादे हक़ में हस्ती-ए-बंदा साबित हो गयी और अगर मुरीदे बंदा होकर मुरादे हक़ का तालिब हो तो मख़लूक़ की इरादत की वहां गुंजाईश नहीं दोनों हालतों में यह आफ़त है क्योंकि मुहब्बत में हस्ती का सुबूत है लिहाज़ा वही शख़्स सादिक़ है जो बक़ाए मुहब्बत में कामिल तौर से फ़ना हो जाये, क्योंकि उसकी फ़ना ही में मुहब्बत की बक़ा है।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी ख़ुद फ़रमाते हैं कि पहली मर्तबा जब मक्का

मुकर्रमा में हाज़िर हुआतो ख़ाली मकान देखकर मैंने गुमान किया कि हज मकबूल नहीं हुआ। क्योंकि मैंने ऐसे पत्थर तो दुनिया में बहुत देखे हैं और जब दूसरी मर्तबा हाज़िर हुआ तो ख़ाना काबा को भी देखा और साहबे ख़ाना को भी उस वक़्त मेरी समझ में आया कि अभी मैं हक़ीक़त तौहीद से दूर हूं और जब तीसरी बार हाज़िर हुआ तो साहबे ख़ाना ही नज़र आया। घर नज़र नहीं आया। उस वक़्त ग़ैब से आवाज़ आयी ऐ बायज़ीद जब तुमने अपने आपको न देखा और सारे आलम को देखा तो तुम मुश्रिक न हुए। लेकिन जब तुमने सारे आलम को न देखा और अपने आप पर नज़र रखी तो अब तुम मुश्रिक हो गये। उसी वक़्त इस ख़्याल से तौबा की बल्कि मैंने तौबा की और अपनी हस्ती की रोइयत से भी तौबा की। यह वाक़िया आपकी दुरुस्तगी-ए-हाल में बहुत अहम व लतीफ़ है। और साहबाने हाल के लिये यह उम्दा निशानी है।

१३-हज़रत हारिस मुहासबी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग इमामे फ़ुनून जासूसे ज़नून, हज़रत अबू अब्दुल्लाह अल हारिस असद मुहासबी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप इल्मे उसूल व फ़रूअ के आलिम और अपने वक़्त के तमाम अहले इल्म के मरजा थे। इल्मे तसव्वुफ़ में रग़ायब नामी किताब आप ही की तसनीफ़ है। इसके सिवा बकसरत तसानीफ़ हैं आप हर फ़न में बुलंद मर्तबा और बुलंद हिम्मत थे। अपने ज़माना में आप बग़दाद में शैख़ुलमशायख़ कहलाते थे। आपका इरशाद है दिल की हरकतों का इल्म महल ग़ैब में इस अमल से ज़्यादा मुशर्रफ़ है जो आज़ा की हरकतों से हासिल किया जाये। इससे आप का मतलब यह है कि इल्म महले कमाल है और जहल मक़ाम तलब। और इल्मे हुज़ूरी इससे बेहतर है कि जहल की चौखट पर खड़ा रहे क्योंकि आदमी को इल्म, दर्जए कमाल तक पहुंचाता है और जहालत तो चौखट से भी गुज़रने नहीं देती। दर हक़ीक़त इल्म अमल से अफ़ज़ल है। इल्म ही के ज़रिये हक़ तआला की मारेफ़त हासिल हो सकती है लेकिन सिर्फ़ अमल से उसे नहीं पा सकते। अगर बग़ैर इल्म के अमल उसे उस तक पहुंचा सकता तो नसारा और राहिब अपनी रियाज़त व मुजाहिदे की शिद्दत की वजह से मुशाहेदे तक पहुंच चुके होते और मुसलमान किल्लते अमल की बिना पर ग़ैवियत में नाफ़रमान व ना मुराद होते। मालूम हुआ कि अमल बंदे की सिफ़त है और इल्म ख़ुदा की सिफ़त। बाज़ नाक़िलों ने आपके मक़ूला में दोनों जगह अमल को बयान किया है जो कि ग़लत और महाल है क्योंकि

बंदा काअमल हरकाते कलब से ताल्लुक़ नहीं रखता। और अगर उससे फ़िक्र और अहवाले बातिन का मराकबा मुराद हो तो यह बज़ाते ख़ुद नादिर है क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

एक घड़ी दीन में ग़ौर व फ़िक्र करना साठ साल की इबादत से बेहतर है।

दर हक़ीक़त आमाले बातिन, आमाले जवारह यानी ज़ाहिरी अमल से अफ़ज़ल है और अहवाल व आमाले बातिन की तासीर दर हक़ीक़त आमाले ज़ाहिरी से मुकम्मल व जामेअ है बुज़ुर्गों का इरशाद है-

आलिम का सोना इबादत है और जाहिल का जागना मासीयत है इसकी वजह यह है कि सोने और जागने में जब उसका बातिन मग़लूब होता है तो ज़ाहिर यानी जिस्म भी मग़लूब हो जाता है। इसलिये ग़ल्बा हक़ से बातिन का मग़लूब होना इस नफ़्स से बेहतर है जो मुजाहिदे के ज़ाहिरी हरकतों पर नफ़्स का ग़ल्बा हासिल कर लेता है।

हज़रत मुहासबी रहमतुल्लाह अलैहि ने एक दिन एक दरवेश से फ़रमाया-

हिकायत

ख़ुदा के होकर रहो वरना ख़ुद न रहो। मतलब यह कि हक़ के साथ बाक़ी रहो और अपनी वजूद से फ़ानी हो जाओ। यानी सफ़ाए बातिन के साथ ख़ातिर जमा हो या फ़क्र से परागंदा। गोया अपनी हस्ती को फ़ना करके हक़ के साथ बाक़ी रहो या सिफ़त पर क़ायम रहो जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया-

आदम के लिये सज्दा करो।

या इस फ़रमाने इलाही की सिफ़त बन जाओ।

क्या इंसान पर ऐसा वक़्त नहीं आया जब कि वह क़ाबिले ज़िक्र शय न था।

लिहाज़ा अगर तुम अपने इख़्तेयार से हक़ के साथ हो गये तो रोज़े क़ियामत अपनी ख़ुदी के साथ होगे। और अगर अपने इख़्तेयार से हक़ के साथ न होगे बल्कि इख़्तेयार को फ़ना कर दोगे तो क़ियामत में हक़ के साथ होगे। यह माअ़ना बहुत दक़ीक़ व लतीफ़ हैं।

१४- हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग वह हैं जो लोगों से किनाराकश और हुसूले जाह व मर्तबा से बे नियाज़ हैं यानी हज़रत अबू सुलेमान दाऊद इब्ने ताई

रहमतुल्लाह। आप अकाबिर मशायख़ तरीक़त और सादाते अहले तसव्वुफ़ में अपने अहद के बे नज़ीर थे। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के शागिर्द और हज़रत फुज़ेल और इब्राहीम अदहम के हमअस्र और हबीब राई के मुरीद थे। तमाम उलूम में कमाले महारत और इल्मे फ़िक़्ह में फ़कीहुल फ़ुक़हा कहलाते थे। गोशा नशीनी इख़्तेयार करके हर जाह व मर्तबा से वे नियाज़ हो गये थे। कमाले जुहद व तक़्वा के मालिक थे। आपके फ़ज़ायल व मनाक़िब और मामलात आलम में बहुत मश्हूर हैं। हक़ायक़ व मारिफ़त में कामिल दस्तरस हासिल थी।

आपने एक मुरीद से फ़रमाया-

ऐ फ़रज़ंद अगर तू सलामती चाहता है तो दुनिया को छोड़ दे और अगर बुजुर्गी चाहता है तो आख़ेरत के इनाम व इकराम की ख़्वाहिशों के गले पर छुरी फेर दे।

क्योंकि यह दोनों मक़ाम हिजाब के हैं। और तमाम ख़्वाहिशें इन्हीं दोनों चीज़ों में मस्तूर हैं जो शख़्स जिस्म से फ़ारिग़ होना चाहे उससे कहो कि दुनिया से किनाराकश हो जाए और जो शख़्स रूह से फ़रागत चाहे उससे कहो कि आख़ेरत की ख़्वाहिश को दिल से निकाल दे।

आप हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह की सोहबत में बकसरत रहा करते थे। और हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह के क़रीब तक न फटकते थे। लोगों ने इनसे पूछा यह दोनों शख़्स बहुत बड़े आलिम हैं क्या वजह है कि एक को तो आप अज़ीज़ रखते हैं और दूसरे को करीब तक नहीं आने देते? आपने फ़रमाया वजह यह है कि हज़रत इमाम मुहम्मद बिन हसन ने दुनियावी माल देकर इल्म हासिल किया है और उनका इल्म, दीन की इज़्ज़त और दुनिया की ज़िल्लत का मोजिब है। और इमाम अबू यूसुफ़ ने दरवेशी व मिस्कीनी देकर इल्म हासिल किया है और अपने इल्म को इज़्ज़त व मंज़िलत का ज़रिया बनाया है इसलिये इमाम मुहम्मद इब्ने हसन इनके हम पल्ला नहीं हैं।

हज़रत मारूफ़ करखी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने दाऊद ताई की मानिंद दुनिया को हक़ीर व कमतर जानने वाला किसी को भी नहीं देखा इसलिये कि वह दुनिया और अहले दुनिया को ज़लील जानते और फ़ुक़रा को चश्मे कमाल से देखते थे अगरचे वह पुर आफ़त हो आपके मनाक़िब बकसरत हैं।

१५- हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, शैख़ अहले तरीक़त, मुनक़तअ अन जुमला अलायक़, हज़रत अबुल हसन बिन मग़लिस सक़ती रहमतुल्लाह अलैहि हैं आप हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के मामू थे। तसव्वुफ़ के तमाम उलूम में आपकी बड़ी अज़मत व शान थी। सबसे पहले जिसने वाक़ेआत मक़ामात की तर्तीब और बस्त अहवाल में ग़ौर व ख़ोज़ किया है वह आप ही थे। इराक़ के बकसरत मशायख़ आप के मुरीद थे। आपने हज़रत हबीब राई को देखा और उनकी सोहबत पाई और हज़रत मारूफ़ करख़ी रहमतुल्लाह अलैहि के मुरीद हुए।

आप बग़दाद के बाज़ार में सक़त (कबाड़) फ़रोशी करते थे। किसी वक़्त से जब बग़दाद का यह बाज़ार जल गया तो लोगों ने ख़बर दी आपकी दुकान भी जल गयी है। आपने फ़रमाया मैं इसकी फ़िक्र से आज़ाद हो गया। जब लोगों ने देखा कि उनकी दुकान महफ़ूज़ है और उसके इर्द गिर्द की तमाम दुकानें जल गयीं तो आपको इसकी ख़बर दी आप दुकान पर तशरीफ़ लाये उसे सलामत देखकर उसका तमाम माल व असबाब फुक़रा में तक़सीम कर दिया और तसव्वुफ़ की राह इख़्तेयार कर ली।

लोगों ने जब इब्तेदाए हाल की बाबत दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया एक दिन हज़रत हबीब राई रहमतुल्लाह अलैहि मेरी दुकान के आगे से गुज़रे तो मैंने रोटी का टुकड़ा उन्हें दिया जिस तरह तमाम फ़क़ीरों को दिया जाता है उन्होंने मुझे यह दुआ दी कि (अल्लाह तुझे ख़ैर की तौफ़ीक़ दे) जब से मेरे कान ने यह दुआ सुनी है मैं दुनियावी माल से बेज़ार हो गया और इससे निजात पानी की तदबीर करने लगा।

आप यह दुआ बकसरत मांगा करते थे-

ख़ुदाया जब कभी तू मुझे किसी चीज़ का अज़ाब देना चाहे तो मुझे हिजाब की ज़िल्लत का अज़ाब न देना इसलिये कि जब मैं हिजाब में न होऊंगा तो तेरा अज़ाब व बला मेरे लिये तेरे ज़िक्र व मुशाहेदा के ज़रिये आसान हो जायेगा और जब मैं हिजाब में होऊंगा तो इस हिजाब की ज़िल्लत में तेरी यह नेमतें ही मुझे हलाक कर देंगी। मालूम हुआ कि जो बला मुशाहदे की हालत में वाक़ेय होती है। वह बला नहीं होती लेकिन वह नेमत जो हिजाब की हालत मे हो व इब्तला है। दोज़ख़ में हिजाब से बढ़कर कोई अज़ाबे शदीद व सख़्त तर न होगा क्योंकि

अगर दोज़ख में दोज़खी, अल्लाह तआला के मुशाहेदा और मुकाशफ़ा में हों तो गुनाहगार मुसलमान जन्नत को हरगिज़ याद न करते। इसलिये कि दीदारे इलाही जिस्मों में खुशी व मुसर्रत की ऐसी लहर दौड़ा देता है कि जिस्म पर बला व अज़ाब का होश ही नहीं रहता और जन्नत में कश्फ़ व मुशाहदा इलाही से बढ़कर कोई नेमत नहीं है क्योंकि जन्नत की तमाम नेमतें बल्कि इससे मज़ीद सौ गुना नेमतें मुयस्सर हों, लेकिन हक़ तआला के मुशाहेदा से हिजाब में हों तो यह उनके दिलों के लिये मोजिबे हलाकत है लिहाज़ा अल्लाह तआला की आदते करीमा है कि वह अपने दोस्तों और महबूबों के दिलों को हर हाल में बीना रखता है ताकि वह तमाम बशरी मुशक़्क़त व रियाज़त को बर्दाश्त कर सकें। ऐसी हालत में यक़ीनन उनकी दुआ यही होनी चाहिये कि तेरे हिजाब के मुक़ाबला में हर क़िस्म का अज़ाब प्यारा है। जब तक हमारे दिलों पर तेरा जमाल ज़ाहिर व मुनकशिफ़ है बला व इब्तेला का कोई अंदेशा नहीं।

१६- हज़रत शफ़ीक़ बिन इब्राहीम अज़्दी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग, सरे फ़ेहरिस्ते अहले बला व बलवा मायाए ज़ुहद व तक़वा हज़रत अबू अली शफ़ीक़ बिन इब्राहीम अज़्दी रहमतुल्लाह अलैहि हैं, आप सूफ़ियाए किराम के मुक़्तदा और रहनुमा और जुम्ला उलूमे शरअ़ियः के आलिम और हक़ीक़त व मारफ़त के दाना थे। इल्मे तसव्वुफ़ में आपकी तसानीफ़ बकसरत हैं। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाह अलैहि की सोहबत में रहे। बकसरत मशायखे इज़ाम से मुलाक़ात की और उनकी मजालिस में हाज़िर रहे।

आपका इरशाद है कि-

अल्लाह तआला ने अपने फ़रमां बरदारों की मौत को भी ज़िन्दगी क़रार दी है और नाफ़रमानों की ज़िन्दगी को मुरदा क़रार दिया है।

यानी मुतीअ अगरचे मुर्दा हो मगर ज़िन्दा है क्योंकि फ़रिश्ते उनकी इताअत पर क़ियामत तक आफ़रीं कहते रहते हैं और उनका अज्र व सवाब बढ़ता रहता है। मालूम हुआ कि वह मौत की फ़ना के बाद भी बक़ा के साथ बाक़ी हैं और अज्र व सवाब लेते रहेंगे।

एक बूढ़ा शख़्स आपके पास आया और उसने कहा ऐ शैख़ मैं बहुत

गुनाहगार हूं तौबा के क़सद से हाज़िर हुआ हूं। आपने फ़रमाया तुम देर से आये हो, बूढ़े ने कहा नहीं जल्द ही आया हूं। फ़रमाया वह कैसे? उसने कहा जो शख़्स मरने से पहले चाहे कुछ देर से ही पहुंचे जल्द ही आता है।

आपकी तौबा का इब्तेदाई वाक़िया यह है कि एक साल बल्ख़ में शदीद क़हत पड़ा लोग एक दूसरे को खाने लगे। सब लोग ग़मज़दा और परेशान हाल थे। एक गुलाम को देखा कि बाज़ार में हंसता और ख़ुशी मनाता फिर रहा था। लोगों ने उससे कहा तुझे शर्म नहीं आती कि तू हंसी ख़ुशी फिर रहा है जबकि तमाम मुसलमान ग़मज़दा और परेशान हाल हैं उसने जवाब दिया कि मुझे कोई ग़म व अंदेशा नहीं है मैं उसका गुलाम हूं जो इस शहर का मालिक है उसने मेरे दिल से हर परेशानी को दूर कर दिया है। हज़रत शफ़ीक़ ने गुलाम की यह बात गोशे दिल से सुनकर बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया ऐ ख़ुदा! यह गुलाम जिसका आक़ा सिर्फ़ एक शहर का मालिक है वह इस क़दर ख़ुश है तो तू मालिकुल मुल्क है और हमारे रिज़्क़ का ज़ामिन फिर भला हम इस क़दर फ़िक्रमंद और परेशान क्यों हैं? इस ख़्याल के आते ही आपने दुनियावी मशाग़िल से मुंह मोड़ लिया और राहे हक़ में लग गये। फिर कभी रोज़ी की फ़िक्र व ग़म न किया। आप हमेशा यही कहते रहे कि मैं उस गुलाम का शागिर्द हूं और जो कुछ मैंने पाया है उसी से पाया हैं आपका यह कहना अज़राहे तवाज़ोअ था। आपके मनाक़िब बहुत मश्हूर हैं।

१७- हज़रत अब्दुर्रहमान अतीया दुर्रानी रहमतुल्लाह

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग अपने वक़्त के शैख़, राहे हक़ में यगाना हज़रत अबू सुलेमान अब्दुर्रहमान अतीया दुर्रानी रहमतुल्लाह हैं। आप सूफ़िया के महबूब उनके दिलों के फूल थे। आपने शदीद रियाज़त व मुजाहिदे किये इल्मे वक़्त के आलिम, आफ़ाते नफ़्स और उसकी घातों की मारफ़त से बाख़बर थे। सुलूक में आपके अक़वाल लतीफ़ हैं। आपने दिलों की हिफ़ाज़त और आज़ा की निगहदाश्त के बारे में बहुत कुछ बयान फ़रमाया है।

आपका इरशाद है-

जब ख़ौफ़ पर उम्मीद ग़ालिब आ जाती है तो वक़्त में ख़लल वाक़ेय हो जाता है।

इसलिये कि वक़्त हाल का निगहबान होता है। जब तक बंदा हाल की रिआयत करता है तो उसका ख़ौफ़ दिल पर ग़ालिब रहता है और जब वह ख़ौफ़

जाता रहता है तो वह रिआयत को तर्क करके अपने वक़्त में ख़लल अंदाज़ हो जाता है। अगर उम्मीद पर ख़ौफ़ को ग़ालिब करें तो उसकी तौहीद बातिल होती है क्योंकि ख़ौफ़ का ग़ल्बा, ना उम्मीदी और मायूसी से होता है। और हक़ तआला से मायूस व ना उम्मीद होना शिर्क है। लिहाज़ा तौहीद का तहफ़्फ़ुज़, उम्मीद की सेहत पर मौकूफ़ है और वक़्त का तहफ़्फ़ुज़ उसके ख़ौफ़ के तहफ़्फ़ुज़ में जब दोनों बराबर होंगे तो तौहीद और वक़्त दोनों महफ़ूज़ रहेंगे। तौहीद की हिफ़ाज़त से बंदा मोमिन बनता है और वक़्त की हिफ़ाज़त से बंदा मुतीअ हो जाता है उसका ताल्लुक़ ख़ास मुशाहेदा से है। इसी में मुकम्मल एतमाद भरोसा है और ख़ौफ़ का ताल्लुक़ ख़ास मुजाहदा से है कि इसमें मुकम्मल इज़्तेराब व परेशानी है। मुशाहेदा मुजाहिदे की मीरास है और यह वह मुराद है कि सब उम्मीदें ना उम्मीदी से ज़ाहिर होती हैं जो शख़्स अपने अमल के सबब अपनी निजात से ना उम्मीद हो तो ऐसी ना उम्मीदी हक़ तआला की जानिब से उसे निजात का समरा देगी और उसे ऐसी राह दिखायेगी जिससे ख़ुशी के दरवाज़े खुल जायेंगे और उसका दिल तबई आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा। और तमाम असरार मनकशिफ़ हो जायेंगे।

हज़रत अहमद बिन अलहवारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने एक रात तंहाई में नमाज़ पढ़ी। मुझे इसमें बड़ा सुरूर व लुत्फ़ आया। दूसरे दिन उस का तज़किरा हज़रत अबू सुलेमान से किया। आप ने फ़रमाया तुम अभी कमज़ोर हो। क्योंकि तुम्हारे दिल में अभी तक लोगों का ख़्याल मौजूद है। इसीवजह से ख़लवत में तुम्हारी और हालत होती है और ज़ाहिर में कुछ और। हालांकि दोनों हालतों में कुछ फ़र्क़ न होना चाहिये। बंदा के लिये कोई चीज़ हक़ तआला से हिजाब का मोजब न बने। क्योंकि दुल्हा की मजमअ आम में जलवा नुमाई कराई जाती है ताकि ख़ास व आम की नज़र दुल्हा पर पड़े। इस नुमाईश में दुल्हा की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई होती है (यही हाल आरिफ़बिल्लाह का होता है) लेकिन आरिफ़ बिल्लाह के लिये यह मुनासिब नहीं कि अपने मक़सूदे हकीकी के सिवा किसी और तरफ़ नज़र डाले। क्योंकि ग़ैर की तरफ़ नज़र उठाना उसकी ज़िल्लत का मोज्जिब है अगर सारी मख़लूक़ इस मुतीअ आरिफ़बिल्लाह की कैफ़ियत को देखे तो उसकी इज़्ज़त में फ़र्क़ नहीं आता। लेकिन अरग वह आरिफ़ अपनी इज़्ज़त की तरफ़ नज़र डाले और अपने वजूद को देखने लगे तो वह हलाक हो जायेगा।

१८- हज़रत मारूफ़ करख़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग मुताल्लिक़ दरगाहे रज़ा परवर्दए हज़रत अली बिन मूसा रज़ा अबुल महफ़ूज़ हज़रत मारूफ़ बिन करख़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप सादाते मशायख़ में से थे। जवांमर्दी, इंकेसारी और वरअ व तक़वा में मारूफ़ व ज़ुबान ज़द थे। आपका तज़किरा पहले आना चाहियें था लेकिन दो बुज़ुर्गों की मुवाफ़िक़त की वजह से मोअख़्ख़र हो गया। इनमें से एक तो साहबे नक़्ल हैं और दूसरे साहबे तसर्रुफ़। यानी एक बुज़ुर्ग तो शैख़ मुबारक अब्दुर्रहमान सलमा हैं उन्होंने अपनी किताब में इसी तर्तीब से ज़िक्र फ़रमाया और दूसरे उस्ताज़ अबुल क़ासिम कशीरी रहमतुल्लाह हैं इन्होंने भी अपनी किताब के शुरू में आपका ज़िक्र इसी तरह पर किया है मैंने भी इन्हीं की पैरवी में यह तर्तीब बर क़रार रखी। इसलिये कि आप हज़रत सरी सक़ती रहमतुल्लाह अलैहि के उस्ताज़ और हज़रत दाऊद ताई रज़ियल्लाहु के मुरीद थे।

हज़रत मारूफ़ करख़ी रहमतुल्लाह अलैहि पहले ग़ैर मुस्लिम थे हज़रत इमाम अली बिन मूसा रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। हज़रत इमाम अली बिन मूसा रज़ा आपको बहुत महबूब रखते थे। आपने उनकी बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। हज़रत मारूफ़ करख़ी के फ़ज़ायल व मनाक़िब फ़ुनूने इल्म में बकसरत हैं। आपका इरशाद है-

मरदाने बा ख़ुदा की तीन निशानियां हैं हर लहज़ वफ़ा पर अमल करे बग़ैर तमअ के तारीफ़ करे और बग़ैर मांगे दे।

हर लहज़ा वफ़ा पर अमल करने का मतलब यह है कि बंदा अपनी बंदगी में अहकाम की मुख़ालेफ़त और फ़रमाने ख़ुदा की मासीयत को अपने ऊपर हराम कर ले। बग़ैर तमअ के तारीफ़ करना यह है कि जिस किसी की भलाई न देखी हो फिर भी उसकी तारीफ़ करे और बग़ैर मांगे देना यह है कि जब माल हो तो उसकी तक़सीम में कोताही न करे। इसे जब किसी की एहतियाज मालूम हो जाये तो उसे सवाल करने की ज़िल्लत का मौक़ा न दे यह अख़लाक़ अगरचे हर मुसलमान में होने चाहिये लेकिन लोग इन ख़ूबियों से नाआशना और बेगाने हैं। यह तीनों सिफ़तें अल्लाह तआला की हैं वह अपने बंदों के साथ ऐसा ही करता है। इस लिये इसकी यह सिफ़ात हक़ीक़ी हैं अल्लाह तआला दोस्तों के साथ फ़ैयाज़ी में कमी नहीं करता। ख़्वाह बंदा वफ़ा करने में कितना ही नाहक़

शनास हो। अल्लाह तआला के वफ़ा की निशानी यह है कि अल्लाह तआला अज़ल में अपने बंदों को क़ब्ल इसके कि इनसे कोई अमले ख़ैर हो मुख़ातिब फ़रमाता है और इन्हें याद फ़रमाता है और आज दुनिया में इनके अफ़आल के बावजूद इन्हें नज़र अंदाज़ नहीं करता और मदह विला वजूद तो इसके सिवा कोई कर ही नहीं सकता। क्योंकि वह किसी बंदे के फ़अल का मोहताज नहीं। इसके बावजूद बंदे के क़लील हम्द व सना पर उसकी तारीफ़ करता है। यही हाल अताए बे सवाल का है इसके सिवा कोई ऐसा कर ही नहीं सकता इसलिये कि वह करीम है और हर के हाल का वाक़िफ़ व अलीम है। और हर एक के मक़सद को बग़ैर सवाल के पूरा करता है लिहाज़ा अल्लाह तआला अपने किसी बंदे को मोअज़्ज़ज़ व मुकर्रम करना चाहता है तो उसे बुजुर्गी इनायत फ़रमाता है और अपने क़ुर्बे ख़ास से नवाज़ता है और अपनी तीनों मज़कूरा सिफ़ात को इस्तेमाल फ़रमाता है। जो बंदा अपनी मक़दूर भर इन सिफ़ात व अख़लाक़ के साथ सुलूक करता है इस्तेलाहे तसव्वुफ़ में इसे ''फ़ुतुव्वत'' यानी जवांमर्द कहा जाता है और जवांमर्दों की फ़ेहरिस्त में इसका नाम दर्ज किया जाता है यह तीनों सिफ़तें हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम में वदर्जए अतम मौजूद थीं। मज़ीद तफ़सील इंशाअल्लाह आगे आयेगी।

१९- हज़रत हातिम बिन असम रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग ज़ेने इबाद जमाले औताद हज़रत अब्दुर्रहमान हातिम बिन उनवान अल अस्म रहमतुल्लाह हैं। आप बल्ख़ के बरगुज़ीदा मशायख़ और ख़ुरासान के अकाबिर में से हैं। आप हज़रत शफ़ीक़ के मुरीद थे और हज़रत अहमद ख़िज़्र रहमतुल्लाह अलैहि के उस्ताद थे। इब्तेदा से इंतेहा तक एक क़दम सिद्क़ व तरीक़त के ख़िलाफ़ न रखा। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि - हमारे ज़माने के सिद्दीक़ हज़रत हातिम अल असम हैं रोययते इलाही आफ़ाते नफ़्स और रऊनते तबअ के दक़ायक़ में आपका कलाम बहुत अरफ़अ है। इल्मे तसव्वुफ़ में आपकी बकसरत तसानीफ़ हैं आपका इरशाद है-

यानी नफ़सानी ख़्वाहिशात हैं एक शहवत खाने की है दूसरी शहवत गुफ़्तगू की है और तीसरी शहवत नज़र यानी आंख की है लिहाज़ा उनकी हिफ़ाज़त इस तरह करो कि अपने रिज़्क़ के लिये ख़ुदा पर भरोसा करो ज़ुबान से सच बोलो और आंख से इबरत हासिल करो।

जिसने ख़ुराक में तवक्कुल किया वह लज़्ज़ते तआम के फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहा। और जिसने ज़ुबान को सच्चाई का आदी बना लिया वह ज़ुबान के फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहा और जिसने आंख से दुरुस्त काम लिया वह नज़र के फ़ित्ना से दूर रहा। तवक्कुल की असल व हक़ीक़त, सिद्क़ व अख़लास में है इसलिये कि जब हर मामला में सिद्क़ व इख़लास से काम लेगा और ख़ुदा की रोज़ी रसानी पर एतेमाद रखेगा और ज़ुबान को इबादत में और नज़र को इसकी मारेफ़त में मशग़ूल रखेगा तो बंदा जो खायेगा और पियेगा वह दुरुस्ती के साथ होगा और जो बात करेगा वह भलाई के साथ होगी। जब ख़ुदा को सच्चा मानेगा तो इसका ज़िक्र ज़ुबान पर होगा और जब सच देखेगा तो इसी को देखेगा। यह इसलिये कि इसके अताया-ए-नेमत को इसकी इजाज़त के बग़ैर खाना हलाल नहीं और इसके ज़िक्र के सिवा ज़ुबान पर किसी और का ज़िक्र करना सच्चाई नहीं और इसके जमाल के सिवा मौजूदात में किसी और पर नज़र डालना जायज़ नहीं है। जब इससे लेकर इसकी इजाज़त से खायेगा तो इसकी ख़्वाहिश का दख़ल न होगा। लेकिन जब अपनी ख़्वाहिश से खायेगा अगरचे वह शई हलाल ही क्यों न हो तो यह शहवत कहलायेगी। इसी तरह जब अपनी ख़्वाहिश से बोलेगा अगर इसी का ज़िक्र हो तो यह झूट और शहवत हुई और जब अपनी ख़्वाहिश से देखेगा चाहे वह सिफ़ाते इलाही के इस्तेदलाल ही में हो तो वबाल व शहवत होगी।

२०- हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त व शरीअत के इमामों में से एक बुज़ुर्ग इमाम मतलबी हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई रहमतुल्लाह हैं। आप अपने ज़माने के अकाबेरीन में थे और तमाम उलूम के मश्हूर व मारूफ़ इमाम गुज़रे हैं। फ़ुतुव्वत, वरअ और तक़वे में आपके फ़ज़ायल मश्हूर और कलाम अरफ़अ है जब तक मदीना मुनव्वरा में रहे इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि से तिलिम्ज़ रहा और जब इराक़ तशरीफ़ लाए तो इमाम मुहम्मद बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की सोहबत में रहे। आपकी तबीयत हमेशा गोशा नशीनी की तरफ़ मायल रही और तरीक़त के हक़ायक़ की जुस्तजू में मशग़ूल रहे यहां तक कि लोग आपके गिर्द जमा होकर आपकी इक़्तेदा करने लगे। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि भी इन ही में से हैं।

आप हर हाल में ख़सायले हमीदा के हामिल रहे। इब्तेदा में सूफ़िया के ज़मरे में रहे मगर दिल में करख़्तगी रही। लेकिन जब हज़रत शीबान राअई से मुलाक़ात हुई और इनकी सोहबत इख़्तेयार की तो जहां कहीं रहे तालिब सादिक़ रहे।

आपका इरशाद है-

जब तुम ऐसे आलिम को देखो जो रुख़सत व तावील का मुतलाशी रहता है तो इससे कुछ भी हासिल न कर सकोगे। मतलब यह कि उलमा चूंकि मख़लूक़ात के पेश रौ हैं इसलिये इन्हें अज़ीमयत की राह पर गामज़न रहना चाहिये। (अगर ग़ैर आलिम में अज़ीमयत पाई गयी तो अमल में ग़ैर आलिम आगे बढ़ जायेगा) हालांकि किसी को यह जायज़ नहीं है कि (कोई ग़ैर आलिम) इनसे आगे बढ़कर क़दम रखे ख़्वाह किसी मा'अने में हो। राहे हक़ का उसूल एहतियात और मुजाहिदे में मुबालग़ा के बग़ैर मुमकिन नहीं। और आलिम में रुख़सत यह है कि ऐसा काम करे जिसमें आसानी हो और मुजाहिदे से फ़रार की राह मिल सके। लिहाज़ा रुख़सत की जुस्तजू तो अवाम का दर्जा है ताकि दायरा-ए-शरीअत से बाहर न निकल जाये। और जब ख़्वास यानी उलेमा ही अवाम के दर्जा में उतर आयें और रुख़सत पर अमल करने लगें तो फिर इनसे क्या हासिल होगा इसके मा सिवा एक बात यह भी है कि रुख़सत के दरपे होने में फ़रमाने इलाही का इस्तेख़फ़ाफ़ भी है। उलमा चूंकि अल्लाह तआला के दोस्त हैं और कोई दोस्त अपने दोस्त के हुक्म का इस्तेख़फ़ाफ़ कर सकता है न इसको सुबुक कर सकता है और न उलमा हक़ ही अवाम के दर्जे में आना गवारा कर सकते हैं बल्कि वह हर हाल में एहतियात और अज़ीमयत को ही इख़्तेयार करना पसंद करेंगे।

एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे एक रिवायत पहुंची है कि ज़मीन में अल्लाह तआला के औताद औलिया और अबरार हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रावी ने मेरी यह हदीस तुम पर सहीह पहुंचाई है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर तो मुझे इनमें से किसी को दिखाया जाये? हुज़ूर ने फ़रमाया मुहम्मद बिन इदरीस इनमें से एक हैं।

२१- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त व शरीअत के इमामों में से एक बुज़ुर्ग, शैखे सुन्नत क़ातेअ बिदअत हज़रत अबू मुहम्मद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप वरअ तक़्वा और हाफ़िज़े हदीसे नबवी होने में मख़सूस हैं। तमाम मशायखे तरीक़त और उलमाए शरीअत आपको मुक़्तदा मानते हैं। आपने मशायखे किबार में हज़रत जुन्नून मिसरी बशर हाफ़ी सरी सक़्ती और मारूफ़ करख़ी की सोहबतें पायी हैं। आप ज़ाहिरुल करामात और सहीहुल फ़रासत थे। आज कुछ लोग उनसे अपना ताल्लुक़ ज़ाहिर करते हैं लेकिन वह मुफ़तरी और कज़्ज़ाब हैं आप तमाम इतहामात से पाक व मुबर्रा हैं। उसूले दीन व मज़हब में आपके वही मोतक़दात हैं जो तमाम उलमाए अहले सुन्नत के नज़दीक मुख़्तार हैं। जब बग़दाद में मुअतज़िला का ग़ल्बा व तलस्सुत हुआ तो उन्होंने इरादा किया कि आपको इतनी अज़ीयत व तकलीफ़ पहुंचाई जाये कि आप कुरआन को मख़लूक़ कहने पर मजबूर हो जायें। बावजूद यह कि आप ज़ईफ़ुल उम्र और कमज़ोर लाग़र हो चुके थे फिर भी आप के हाथों को कंधे से खींचकर बांध दिया गया और आपके जिस्म पर एक हज़ार कोड़े मारे गये लेकिन आपने इनकी मुवाफ़िक़त में अपने इल्म व ज़मीर के ख़िलाफ़ कहना गवारा न फ़रमाया। इस दौरान आपका एज़ार बंद खुल गया चूंकि आपके दोनों हाथ बंधे हुए थे एक ग़ैबी हाथ नमूदार हुआ और उसने आपके एज़ारबंद को बांध दिया। जब इन लोगों ने आपकी हक़्क़ानियत की यह दलील देखी तो आपको छोड़ दिया। इन्हीं कोड़ों के ज़ख़्मों के नतीजे में आपका इंतक़ाल हो गया। आख़िर वक़्त में आपसे कुछ लोगों ने दर्याफ़्त किया कि उन लोगों के बारे में क्या ख़्याल है जिन्होंने आप पर कोड़े बरसाए? आपने फ़रमाया मैं क्या कह सकता हूं बजुज़ इसके कि उन्होंने ख़ुदा की राह में इस गुमान पर कोड़े मारे हैं कि (मआज़ल्लाह) मैं बातिल पर हूं और वह हक़ पर हैं मैं महज़ ज़ख़्मी होने पर क़यामत के दिन इनसे झगड़ा नहीं करूंगा। यह आपके इल्म व बुर्दबारी और तफ़वीज़ इलल्लाह का आलम था रज़ियल्लाहु अन्हु तरीक़त व सुलूक में आप का कलाम बहुत अरफ़अ व बुलंद है। आपसे जो भी कोई मसला दर्याफ़्त करता अगर वह सलूक और तरीक़त से मुताल्लिक़ होता तो जवाब इनायत फ़रमा देते और अगर हक़ायक़ व मारेफ़त से ताल्लुक़ रखता

तो हज़रत बशर हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि के पास भेज देते थे। चुनांचे एक दिन किसी ने आपसे दर्याफ़्त किया कि इख़लास क्या है? आपने फ़रमाया इख़लास यह है कि तुम आमाल की आफ़तों से महफ़ूज़ रहो। मतलब यह है कि अमल ऐसा होना चाहिये जो समअ व रिया से ख़ाली हो और वह आफ़त रसीदा न हो। उसने सवाल किया कि तवक्कुल क्या है? आपने फ़रमाया रोज़ी रसानी में अल्लाह तआला पर मुकम्मल एतेमाद व भरोसा रखना। फिर उसने सवाल किया रज़ा क्या है? आपने फ़रमाया तमाम कामों को ख़ुदा के हवाला करना और राज़ी बरज़ा रहना। फिर उसने सवाल किया मुहब्बत क्या है? आपने फ़रमाया यह बात हज़रत बशर हाफ़ी से दर्याफ़्त करो जब तक वह हयात से हैं मैं इसका जवाब नहीं दूंगा।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह की तमाम ज़िन्दगी मोतज़ेला की तअन व तश्नीअ और इनके ज़ुल्म व सितम में गुज़री और बाद वफ़ात मुतशब्बह के इफ़तरा व इतहाम का निशाना बने रहे यहां तक कि अहले सुन्नत व जमाअत आपके अहवाल पर कमाहक़्क़ा वाक़िफ़ न हो सके और अदम वाक़फ़ियत की वजह से इन पर इतहाम रखे गये हालांकि वह इससे बरी हैं।

२२- हज़रत अहमद बिन अबी अलजवारी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग, सिराजे वक़्त, मुतहम्मिल आफ़ात अबुल हसन अहमद बिन अबी अलजवारी रहमतुल्लाह अलैहि हैं तरीक़त और सहीह अहादीसे नबविया की रिवायात के तमाम उलूम व फ़ुनून और इनके इशारात में आपका कलाम बुलंद व लतीफ़ है। तमाम उलूम में उलमाए वक़्त आपसे रुजू करते रहे हैं आप हज़रत अबू सुलेमान के मुरीद थे और हज़रत सुफ़यान बिन अय्येना और मरवान बिन माविया क़ारी रहमतुल्लाह के सोहबत याफ़्ता थे। आपने अदब के हर मसले में हर एक से इस्तेफ़ादा किया है।

यह दुनिया गंदगी का ढेर और कुत्तों के जमा होने की जगह है। वह शख़्स कुत्ते से भी कमतर है जो इस पर जमकर बैठ जाये क्योंकि कुत्ता उस ढेर से अपनी हाजत पूरी करके चला जाता है लेकिन दुनिया से मुहब्बत करने वाला इससे कभी जुदा नहीं होता और न किसी हालत में इसे छोड़ता है।

आपका यह इरशाद इस बात की दलील है कि आप दुनिया परस्तों से

किनाराकश रहते थे। अहले तरीक़त के लिये दुनिया में आज़र्दा रहना मोजिब मुसर्रत व इंबिसात है। आपने इब्तेदा में तहसील इल्म किया और दर्जए इमामत तक पहुंचे फिर अपनी किताबों को उठाकर दरिया बुर्द कराया और फ़रमाया-

ऐ खुदा तू बज़ाते खुद दलील है मदलूल के पा लेने के बाद दलील ही में मशगूल रहना मुहाल है।

क्योंकि दलील तो उस वक़्त तक काम देती है जब तक सालिक, हुसूले मक़सद की राह में होता है हुसूले मक़सद के बाद दलील की क्या हाजत है? इसके बाद फ़रमाते हैं कि मुझे वसूले इलल्लाह हो गया अब मैं दलील के झंझट से आज़ाद हो गया। इसके बाद राह से चिमटे रहना महज़ मशगूलियत है। अब फ़रागत ही फ़राग़त है फ़राग़त व शग़ल के उसूल में एक क़ायदा और एक निसबत है और यह दोनों बंदे की सिफ़तें हैं। और फ़सल व वसल और इनायते हक़ और इसका अज़ली इरादा बंदे के लिये यह खैर ख़्वाही है। जो शग़ल व फ़राग़त के दौरान बंदे को हासिल नहीं होता। लिहाज़ा इसके वसूल को उसूल नहीं और दायमी व मजावरत का इत्तेहाद रवा नहीं। क्योंकि खुदा का वसल बंदे की करामत और उसकी इज्ज़त अफ़ज़ाई है और इससे जुदायगी इसकी अहानत व तज़लील है इसके सिफ़ात का तग़य्युर जायज़ नहीं है।

हुजूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि इस इरशाद में लफ़्ज़ वसूल से इन बुज़ुर्ग की मुराद, वसूले राहे हक़ है इसलिये कि तरीक़त की किताबों में इसकी ताबीर राहे हक़ से भी की गयी है। जब राह वाज़ेह हो गयी तो इबारत यानी दलील मुनक़तअ हो जाती है क्योंकि दलील व इबारत की अब चन्दां हाजत बाक़ी नहीं रहती है। इबारत की तो उस वक़्त तक ज़रूरत रहती है जब तक कि मक़सूद मख़्फ़ी हो जब मुशाहदा हासिल हो गया तो इबारत की एहतियाज मफ़कूद हो गयी। जब मारफ़त की सेहत में जुबानें गुंग हैं तो किताबों की इबारतें बदर्जए ऊला बेकार हैं। इनके सिवा दीगर बाज़ मशायख़ ने भी इसी तरह किताबों को ज़ाया किया है जैसे शैख़ुल मशायख़ अबू सईद फ़ज़लुल्लाह बिन मुहम्मद वग़ैरह। और कुछ ऐसे भी रसमी नक़्क़ाल हैं जिन्होंने अपनी जहालत के बावजूद इन आज़ाद शयूख़ की तक़लीद की है। बिला शुब्हा इन मुक़द्दस आज़ाद बुजुर्गों ने इनक़ेत-ए-अलायक़, तर्के इल्तेफ़ात और मा सिवा अल्लाह से दिल को फ़ारिग़ करके कमाल हासिल किया इनकी यह कैफ़ियत सुकर की हालत की है। मुबतदी और नो आमूज़ आदमी को ऐसा नहीं चाहिये

क्योंकि मुतमक्किन यानी मक़ामे रफ़ीअ पर फ़ायज़ होने वाले के लिये जब दोनों जहान हिजाब नहीं बनते तो काग़ज के पुरज़े इसके लिये क्या हिजाब बनेंगे? जब दिल ही अलायक़ से जुदा हो गया तो काग़ज़ के पुरज़े की क्या क़द्र व क़ीमत है? लेकिन किताबों को दरिया बुर्द से इनकी मुराद तहक़ीक़ मअ़ने से, इबारत की नफ़ी है जैसा कि हमने बयान किया। लिहाज़ा सबसे बेहतर यही है कि इबारत को जुबान से अदा न किया जाये इसलिये कि जो किताब में मकतूब है और जो इबारत जुबान पर जारी है यह इबारत उस इबारत से ज़्यादा बेहतर नहीं है मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि हज़रत अहमद बिन अबी अल जवारी ने अपने ग़ल्बए हाल में किसी को इसके सुनने के क़ाबिल नहीं पाया और अपने हाल की वजाहत व तशरीह काग़ज़ों पर तहरीर फ़रमाई जब बहुत जमा हो गये और किसी को इसका अहल न पाया तो इसको मुन्तशर करने के लिये दरिया बुर्द कर दिया और फ़रमाया लेकिन इनका यह फ़रमाना कि मदलूल के पा लेने के बाद दलील में ही मशगूल रहना मुहाल है। तो यह क़ौल भी मुतहम्मिल है मुमकिन है इनके पास बकसरत किताबें जमा हो गयी हों और वह किताबें इनको औराद व वज़ाइफ़ से बाज़ रखती हों तो उन्होंने इस शग़ल को अपने सामने से हटा दिया इस तरह दिल की फ़राग़त चाही हो ताकि इबारत को छोड़कर इसके मअ़ने की तरफ़ रुजूअ हो जायें।

२३- हज़रत अहमद बिन ख़िज़्र बियह बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, सरे फ़ेहरिस्ते जवांमर्द आफ़ताबे ख़ुरासां हज़रत अबू हामिद अहमद बिन ख़िज़्र वियह बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप हाल की बुलंदी और वक़्त की बुजुर्गी के एतेबार से मख़सूस हैं अपने ज़माना में अहले तरीक़त के मुक़तदा और महबूबे ख़ास व आम थे। तरीक़े मलामत को पसंद करते और फ़ौजी लिबास ज़ेब तन रखते थे। आप की ज़ौजा फ़ातिमा हाकिमे बल्ख़ की दुख़्तर थीं। इनका मक़ाम भी तरीक़त में अज़ीम था। जब इन्हें तौबा की तौफ़ीक़ मयस्सर हुई तो किसी को हज़रत अहमद बिन ख़िज़्र वियह के पास भेजा ताकि वह अपना प्याम मेरे वालिद के पास भेजें। लेकिन आपने मंजूर न किया। दोबारा फिर किसी को भेजा और कहलवाया कि ऐ अहमद! मैं आपको इस से ज़्यादा मर्दे ख़ुदा जानती थी कि आप एक औरत

की राहे हक़ में रहबरी करेंगे। न कि रहज़नी। इसके बाद आपने अमीरे बल्ख़ के पास फ़ातिमा के लिये पैग़ाम भेजा उसने उसे बरकत जान कर कुबूल कर लिया और फ़ातिमा इनकी ज़ौजियत में आ गयीं और फ़ातिमा ने दुनियावी मशाग़िल तर्क करके हज़रत अहमद बिन ख़िज़्रविया के साथ गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली। आप अक्सर बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह से मुलाक़ात करने जाया करते थे और फ़ातिमा भी इनके साथ जाया करती थीं। पहली मर्तबा जब फ़ातिमा अपने शौहर के साथ हज़रत बा यज़ीद से मिलने के लिये गयीं तो चेहरे से निक़ाब उठाकर गुस्ताख़ाना कलाम शुरू कर दिया। अहमद ने इस हरकत पर बड़ा ताज्जुब किया और तेश में आकर कहा ऐ फ़ातिमा! हज़रत बा यज़ीद के साथ यह कैसी गुस्ताख़ी है? तुम्हारी इस बद अख़लाक़ी की वजह मुझे मालूम होनी चाहिये। फ़ातिमा ने कहा इसकी वजह यह है कि आप मेरी तबीयत के महरम हैं और हज़रत बा यज़ीद मेरी तरीक़त के महरम हैं मैं आपसे अपनी ख़्वाहिश के तहत रस्म व राह रखती हूं और इनसे ख़ुदा के लिये। यह मुझे ख़ुदा से मिलाते हैं। ग़र्ज़ कि फ़ातिमा हज़रत बायज़ीद के साथ हमेशा शोख़ चश्म रहीं इत्तेफ़ाक़ से एक दिन हज़रत बायज़ीद बुस्तामी ने निगाह ऊपर उठाई तो फ़ातिमा के हाथ में मेंहदी का रंग लगा देखा। हज़रत बा यज़ीद ने कहा तुमने अपने हाथों में मेंहदी क्यों लगाई है? फ़ातिमा ने कहा ऐ बायज़ीद! जब तक तुमने मेरे हाथों को और उसकी मेंहदी को न देखा था तो मुझे तुम से ख़ुशी थी। अब जबकि तुमने मुझ पर नज़र उठाई तो अब तुम्हारी सोहबत मुझ पर हराम हो गयी। उसके बाद दोनों वहां से कूच करके नीशापुर चले आये और यहीं क़याम कर लिया। नीशापुर के मशायख़ और आम लोग हज़रत अहमद से बहुत ख़ुश हुए हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि बल्ख़ जाते हुए नीशापुर आये तो हज़रत अहमद ने उनकी दावत का इरादा किया और इस सिलसिले में अपनी ज़ौजा फ़ातिमा से मश्वरा किया कि क्या सामान होना चाहिये? उन्होंने कहा इतनी गायें, इतनी भेड़ें, इतनी शमएं, इतना इत्र, इतना सामान, और इनके अलावा इतने गधे भी ज़िब्ह करने के लिये मंगवा लें। हज़रत अहमद ने पूछा इस सामान के साथ गधों की क्या ज़रूरत? फ़ातिमा ने कहा जब कोई करीम किसी करीम के यहां मेहमान होता है तो मुहल्ले के कुत्ते भी आ जाते हैं इन्हें भी खिलाना चाहिये। फ़ातिमा की इन्हीं ख़ूबियों की वजह से हज़रत बायज़ीद रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि जो ख़्वाहिश रखता है कि

किसी मर्दे खुदा को निसवानी लिबास में मलबूस देखे उसे चाहिये कि वह फ़ातिमा को देखे।

हज़रत अबू हफ़स हद्दाद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

अगर अहमद बिन ख़िज़्रविया न होते तो जवांमर्दी ज़ाहिर ही न होती।

हज़रत अहमद बिन ख़िज़्रविया रहमतुल्लाह का कलाम बुलंद और अनफ़ास मुहज़्ज़ब हैं तरीक़त और आदाबे तरीक़त के हर फ़न में आपकी तसानीफ़ मशहूर और हक़ायक़ में आपके निकात मारूफ़ हैं चुनांचे आप फ़रमाते हैं कि-

राह ज़ाहिर हक़ आशकार और निगहबान ख़ूब सुनने वाला है इसके बाद मुतहय्यर और परेशान रहना बजुज़ अंधेपन के कुछ नहीं।

मतलब यह है कि राह की तलाश के क्या माअ़ने वह तो रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह है तू अपने आपको तलाश कर तू खुद कहां भटक रहा है। जब तूने अपने आपको पा लिया तो तू राहे हक़ पर लग जायेगा क्योंकि राहे हक़ इससे ज़्यादा ज़ाहिर है जितना तालिब की तलब के तहत आये।

आपका इरशाद है कि-

अपने फ़क़्र की इज़्ज़त को लोगों से पोशीदा रखो यानी लोगों से यह कहते न फिरो कि मैं दुरवेश हूं ताकि तुम्हारा भेद न खुल जाये इसलिये कि यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत और उसका इकराम है। आप एक वाकिया मिसाल में बयान फ़रमाते हैं कि एक दरवेश ने माहे रमज़ान में किसी तवंगर की दावत की। हालांकि उसके घर में सिर्फ़ एक सूखी हुई रोटी थी, चुनांचे वह रोटी उसने तवंगर के सामने रदख दी जब तवंगर वापस गया तो उसने अशरफ़ी की एक थैली उस दरवेश के पास भेजी। दरवेश ने थैली वापस करके कहलवाया कि यह इसकी सज़ा है जो अपने भेद को नाजिंसों पर खोलता है। यही उनके फ़क़्र की सदाक़त की दलील है।

२४-हज़रत असुकर बिन हुसैन नख़्शाबी रहमुतल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग इमाम मुतवक्के बरगुज़ीदा अहले ज़मां अबू तराब हज़रत असुकर बिन अलहुसैन नख़्शाबी नसफ़ी रहमतुल्लाह हैं। आप ख़ुरासान के बुज़ुर्ग तरीन सादात मशायख़ और मश्हूर जवांमर्दों में से थे। आप का ज़ुहद व तक़्वा मश्हूर व मारूफ़ था। आबादी व सहरा में हर जगह आपकी कसरत करामतें और बेशुमार अजायब देखे गये। सूफ़िया और सालिकों में आप बहुत दानिशवर थे। जंगलों में बसेरा रखते, हत्ता कि बसरे के जंगल ही

में आपकी वफ़ात हुई। चंद साल के बाद जब मुसलमानों का एक काफ़िला उस तरफ़ से गुज़रा तो आपको रू किब्ला कयाम में मुर्दा पाया। आपका जिस्म खुश्क हो चुका था, आगे लोटा रखा हुआ था और असा हाथ में था। इस असना में न कोई दरिन्दा इनके क़रीब गया और न किसी इंसान के निशाने क़दम पाये गये।

आपका इरशाद है-

दरवेश की ग़िज़ा वही है जो उसे मिल जाये और उसका पहनावा वही है जिससे सतरपोशी हो जाये और उसका मकान वही है जहां ठहर जाये।

मतलब यह कि दरवेश की ग़िज़ा में उसकी अपनी कोई पसंद नहीं होती और लिबास में भी उसकी पसंद का कोई दख़ल नहीं होता और मकान भी वही होता है जहां वह ठहर जाये। कोई ख़ास जगह या ठिकाना नहीं। इन तीनों बातों में तसर्रुफ़ करना मशगूलियत है। सारे जहान की बलायें इन ही तीन चीज़ों में हैं। जब कि वह इसमें तसर्रुफ़ करे। यह बात मामला से मुताल्लिक़ है वरना अज़रुए तहक़ीक़ दरवेश की ग़िज़ा वज्द है और उसका लिबास तक़वा और उसका मसकन ग़ैब है। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

अगर वह तरीक़त पर इस्तेक़ामत रखें तो हम यक़ीनन उन्हें शीरीं और सुथरा पानी पिलायेंगे।

और फ़रमाया-

और तक़वा का लिबास ही बेहतर है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

फ़क्र ग़ैब का वतन है।

मालूम हुआ कि दरवेश का खाना पीना, शराबे कुरबत और उसका लिबास तक़वा व मुजाहिदा और उसका वतन ग़ैब और इंतेज़ार वस्ल है। लिहाज़ा तरीक़त की राह वाज़ेह और उसका मामला ज़ाहिर व रौशन है और यही कमाल का दर्जा है।

२५- हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, मुहब्बत और वफ़ा की ज़ुबान, विलायत व तरीक़त की ज़ीनत हज़रत अबू ज़करिया यहया बिन मआज़ राज़ी रहमतुल्लाह

अलैहि हैं। आपका हाल बुलंद, नेक खसलत और हकीकत में हक तआला की उम्मीद पर कामिल साबित कदम थे। हज़रत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने दो यहया पैदा फ़रमाये हैं एक अंबिया में जो हज़रत यहया बिन ज़िक्रया अलैहिस्सलाम हैं और दूसरे औलिया में जो हज़रत मआज़ राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। हज़रत यहया अलैहिस्सलाम खौफ़े इलाही की राह पर इस तरह गामज़न रहे कि तमाम मुद्दईयाने खौफ़, निजात से ना उम्मीद हो गये। और हज़रत यहया बिन मआज़ हक तआला की उम्मीद पर ऐसे कायम रहे कि तमाम मुद्दईयाने उम्मीद हाथ बांधे खड़े रहे। लोगों ने हज़रत हिज़्मी से दर्याफ़्त किया कि हज़रत यहया बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम का हाल तो मालूम है लेकिन हज़रत यहया बिन मअज़ राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि का हाल किस तरह मालूम हुआ? उन्होंने जवाब दिया मुझे मालूम है कि वह किसी हालत में भी अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल नहीं रहे और न कभी किसी गुनाहे कबीरा का इर्तेकाब किया। मामलाते तरीकत और उसके मुजाहिदे में इतने कामिल थे कि ऐसी ताकत कोई दूसरा नहीं रखता था। हज़रत यहया बिन मआज़ से किसी मुहिब ने दर्याफ़्त किया कि ऐ शैख़! आपका मकाम तो मकामे रजा यानी उम्मीद है लेकिन आपका सुलूक तो खायफ़ों जैसा है? आपने फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद सुनो! बंदगी को छोड़ना ज़लालत व गुमराही है और खौफ़ व रजा ईमान के दो सुतून हैं। यह मुहाल है कि कोई शख़्स अपने मुजाहिदे में किसी रुक्न ईमान को ज़लालत व गुमराही में डाल दे। खायफ़ अपने खौफ़ को दूर करने के लिये इबादत व बंदगी करता है और उम्मीदवार विसाले इलाही की उम्मीद में। जब तक इबादत न हो तो न खौफ़ का वजूद दुरुस्त और न रजा का। और जब इबादत मौजूद हो तो यह खौफ़ व रजा सब इबादत बन जाता है। जहां महज़ इबादत हो तो ऐसी इबादत सूदमंद नहीं होती।

आपकी बकसरत तसानीफ़ हैं और आप के नुक्ते और इशारात अनोखे हैं। खुलफ़ाए राशेदीन के बाद सूफ़ियाए किराम में से आप ही ने मिम्बर पर वअज़ व नसीहत फ़रमाई। मैं इनके कलाम को बहुत पसंद करता हूं चूंकि तबीयत में रिक्कत और समाअत में लज़्ज़त पैदा करने वाला और असल में दकीक और इबारत में मुफ़ीद होता है।

आपका इरशाद है कि-

यह दुनिया मशगूलियतों की जगह है और आख़ेरत होल व वहशात का

मक़ाम। और बंदा इन दोनों के दर्मियान हमेशा रहता है यहां तक कि किसी एक जगह वह क़रार हासिल कर ले ख़्वाह वह जन्नत हो या दोज़ख़।

ख़ुशी व मुसर्रत के मक़ाम में वह दिल है जो दुनिया में मशग़ूलियतों से और आख़ेरत में होलनाकियों से महफ़ूज़ रहा है। और दोनों जहान से तवज्जोह हटाकर वासिल बहक़ हो गया।

आपका मज़हब तवंगरी को मुफ़लिसी पर तरजीह देना था। जब शहर 'रे' में आप पर बारे क़र्ज़ ज़्यादा हो गया तो ख़ुरासान का क़स्द फ़रमाया और जब बल्ख़ पहुंचे तो वहां के लोगों ने आपको रोक लिया ताकि कुछ अर्सा वअज़ व नसीहत फ़रमायें। वहां के लोगों ने एक लाख की थैली पेश की। आप वह थैली लेकर बारे क़र्ज़ उतारने के लिये शहर 'रे' की तरफ़ वापस हुए। रास्ते में डाकुओं ने डाका डालकर तमाम रुपया छीन लिया। आप ख़ाली हाथ नीशापुर आ गये वहीं आपने वफ़ात पाई। आप हर हाल में साहबे इज़्ज़त और वजीह व बावक़ार थे।

२६- हज़रत उमर बिन सालिम हद्दादी नीशापुरी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग ख़ुरासान के शैख़ुल मशायख़ ज़मीन व ज़मान के नादिर हज़रत अबू हफ़्स उमर बिन सालिम हद्दादी रहमतुल्लाह अलैहि है। आप सूफ़िया के बुज़ुर्ग व सरदार और तमाम मशायख़ के ममदूह थे। हज़रत अब्दुल्लाह दनेवुरी के सोहबत याफ़्ता और हज़रत अहमद ख़िज़्रविया के रफ़ीक़ थे। करमान से शाह शुजाअ आपकी ज़्यारत के लिये हाज़िर हुआ था।

आप जब बग़दाद में वहां के मशायख़ से मुलाक़ात करने तशरीफ़ लाये तो अरबी ज़ुबान से नावाफ़िक़ थे इसलिये मुरीदों के वास्ते से गुफ़्तगू की मगर ख़्याल किया कि यह बड़े ऐब की बात है कि ख़ुरासान के शैख़ुल मशायख़ के लिये तर्जुमान की ज़रूरत हो। चुनांचे जब आप मस्जिद शौनेज़ में पहुंचे तो बग़दाद के तमाम मशायख़ को मुलाक़ात की दावत दी और उनसे अरबी में फ़सीह गुफ़्तगू फ़रमाई। यहां तक कि तमाम मशायख़ आपकी फ़साहत पर शशदर रह गये। बग़दाद के मशायख़ ने आपसे सवाल किया कि जवांमर्दी क्या है? आपने फ़रमाया बेहतर यह है कि पहले आप में से कोई साहब अपनी राय ज़ाहिर

फ़रमायें चुनांचे जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया-

मेरे नज़दीक जवांमर्दी यह है कि जो अमल किया जाये उसे न खुद देखे और न उसको अपनी तरफ़ मंसूब करे।

इस पर हज़रत अबू हफ़्स रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया-

शैख़ ने निहायत उम्दा बात फ़रमाई है लेकिन मेरे नज़दीक जवांमर्दी यह है कि खुद तो दूसरों के साथ इंसाफ़ करने में कोताही न करे मगर दूसरों से अपने लिये इंसाफ़ का ख़्वाहां न हो।

यह सुनकर हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया ऐ मेरे हमराहियो! उठो यकीनन अबू हफ़्स आदम और उनकी औलाद पर बाज़ी ले गये हैं।

आपकी इब्तेदाए तौबा का वाक़िया बड़ा ही अजीब है। आलमे शबाब में एक लौंडी पर आप फ़रेफ़ता हो गये। हर चंद मनाने की तदबीरें कीं मगर कोई तदबीर कारगर न हुई। लोगों ने बताया कि नीशापुर में एक यहूदी रहता है जो सहर व अमल के ज़रिये इस काम को आसान कर सकता है। अबू हफ़्स उसके पास पहुंचे और उससे अपना हाल बयान किया। यहूदी ने कहा ऐ अबू हफ़्स! तुम्हें चालीस दिन नमाज़ छोड़नी होगी और इस असना में न तो जुबाने दिल पर खुदा का नाम लाना होगा और न ही नेकी का कोई काम। अरग इस पर राज़ी हो तो मैं जंतर मंतर पढ़ता हूं ताकि तुम्हारी मुराद बर आये। हज़रत अबू हफ़्स ने यहूदी की यह शर्त मान ली और चालीस दिन इस तरह गुज़ार दिये। यहूदी ने अपना सहर व अमल किया मगर उनकी मुराद बर न आयी। यहूदी कहने लगा ग़ालिबन तुमने शर्त पूरी नहीं की, ज़रूर तुमसे कोई खिलाफ़ वरज़ी हुई है और नेकी का कोई काम किया है। ज़रा सोचकर बताओ। अबू हफ़्स ने कहा मैंने कोई नेकी नहीं की और न ज़ाहिर व बातिन में कोई अमले ख़ैर किया। अलबत्ता एक दिन मैंने रास्ता में पत्थर पड़ा देखा इस ख़्याल से उसे पांव से हटा दिया कि किसी को ठोकर न लग जाये। इस पर यहूदी कहने लगा। अफ़सोस है कि तुम पर कि तुमने चालीस दिन तक उसके हुक्म की नाफ़रमानी की और उसे फ़रामोश किये रखो लेकिन खुदा ने तेरे एक अमल को भी ज़ाया नहीं जाने दिया। यह सुनकर हज़रत अबू हफ़्स ने सिद्क़ दिल से तौबा की और वह यहूदी भी उसी वक़्त मुसलमान हो गया।

हज़रत अबू हफ़स आहनगरी का पेशा करते थे जब बयावरद पहुंचे तो हज़रत अबू अब्दुल्लाह बावरदी से मुलाक़ात की और उनसे बैयत की। जब नीशापुर वापस आये तो एक दिन बाज़ार में एक नाबीना को क़ुरआन करीम की तिलावत करते देखा। आप अपनी दुकान में बैठे सुनते रहे। इन पर इतनी महवियत और वज्द की कैफ़ियत तारी हुई कि बेख़ूदी में बग़ैर दस्त पनाह के भट्टी से गर्म व सुर्ख़ लोहा हाथ डाल कर निकाल लिया। शागिर्दों ने उस्ताद की यह महवियत व इस्तेग़राक़ देखा तो उनके होश उड़ गये। जब आप का इस्तेग़राक़ ख़त्म हुआ तो इस पेशा को छोड़ दिया फिर कभी दुकान पर नहीं गये। आप फ़रमाते हैं कि -

मैंने एक मर्तबा अपने पेशा को छोड़कर दोबारा उसे इख़्तेयार किया लेकिन फिर उस पेशा ने मुझे छोड़ दिया उसके बाद मैं फिर कभी मुतवज्जोह न हुआ।

बंदे को जो चीज़ हुनर और दस्तकारी से हासिल हो उसके करने से बेहतर है कि उसे छोड़ दिया जाये क्योंकि तमाम इक्तेसाबात आफ़तों के महल हैं क़ाबिले क़द्र और लायक़ ऐतना तो वह चीज़ है जो ग़ैब से बिला तकल्लुफ़ आये और जिस जगह भी बंदे का दख़ल व इख़्तेयार शामिल होगा वहां उससे हक़ीक़त के लतायफ़ ज़ायल हो जायेंगे इसलिये बंदा पर किसी काम के करने या न करने का अज़ ख़ुद इख़्तेयार नहीं है। क्योंकि अता व ज़वाल अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं और उसी की तक़दीर से हैं जब अता होती है तो उसी की तरफ़ से लेना भी होता है और जब ज़वाल हो तो उसी की तरफ़ से तर्क भी है। जब ऐसी हालत हो जाये तो उसकी क़द्र व क़ीमत होती है क्योंकि अख़्ज़ व तर्क का क़याम उसी की तरफ़ से है न यह कि बंदा अपनी कोशिश से नफ़ा या दफ़ा करता है। मालूम हुआ कि अगर मुरीद हज़ार बरस क़बूले हक़ की कोशिश करे तो यह मुमकिन नहीं एक लम्हा के लिये भी हक़ तआला क़बूलियत का शर्फ़ दे दे इसलिये कि इसकी क़बूलियत तो अज़ल से मुक़र्रर है और दायमी मुसर्रत पहले ही से शामिल है बंदे के लिये तो बजुज़ ख़ुलूस के कोई राह रखी ही नहीं इसलिये वही बंदा साहबे इज़्ज़त है जो आलमे असबाब की निसबत को छोड़कर मुसब्बबुल असबाब से लो लगाये।

२७- हज़रत हमदून बिन अहमद बिन क़स्सार रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, तबक़ा मलामतीया के सरदार, गिरफ़्तारे बला व मलामत, हज़रत अबू सालेह हमदून बिन अहमद बिन अमारतुल क़स्सार रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप मशायख़े मुतक़द्दमीन में मुतवर्रेअ़ और इल्मे फ़िक़ह में बदरजा अतम आलिम थे। हज़रत इमाम सूरी रहमतुल्लाह के मज़हब के मुन्तबेअ़ और तरीक़त में हज़रत अबू तुराब नख़्शबी के मुरीद थे। आप अली नसर आबादी के ख़ानदान से थे। सलूक के हर मामला में आपके इशारात और मुजाहिदे के तमाम अक़साम में आपके इशारात मौजूद हैं चूंकि आपका अमली मर्तबा बहुत बुलंद था इसलिये नीशापुर के तमाम अकाबेरीन आपके रुश्द व हिदायात के मुन्तज़िर रहते लेकिन आप सबको यही जवाब देते कि अभी मेरा दिल दुनिया और हुसूले मर्तबत से ख़ाली नहीं हुआ है इस हाल में मेरा वअज़ फ़रमाना सूदमंद न होगा और न दिलों पर असर अंदाज़ होगा। जो बात दिलों पर असर न करे इसमें इल्म का इस्तेख़फ़ाफ़ और शरीअत का इस्तेहज़ा है। वअज़ करना उस पर वाजिब है जिसकी ख़ामोशी दीन में ख़लल अंदाज़ न हो और जब कुछ कहे तो ख़लल दूर हो जाये उलमा ने सवाल किया हमारे वअज़ के मुक़ाबले में अस्लाफ़ का वअज़ किस वजह से दिलों पर ज़्यादा असर अंदाज़ होता था? फ़रमाया। इसकी वजह यह है कि अस्लाफ़ इस्लाम की बेहतरी, लोगों की निजात और अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए वअज़ कहते थे और हम अपनी ज़ात की इज़्ज़त, दुनिया और मक़बूल ख़लायक़ होने के लिये वअज़ करते हैं। लिहाज़ा जो शख़्स रज़ाए इलाही के लिये बात करता है उसकी ज़ुबान से हक़ बात निकलती है और उसमें दबदबा-ए-जलाल होता है कि शरपसंदों के दिल भी मुतास्सिर हो जाते हैं। और जो शख़्स अपनी ज़ात को सामने रखकर बात करता है उसमें रुसवाई और ज़िल्लत के सिवा कुछ भी नहीं है। ऐसी बातों से लोगों को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता। इसके कहने न यह कहना ही बेहतर है क्योंकि वह हक़्क़ानियत से ख़ाली बात होती है।

२८- हज़रत मंसूर बिन अम्मार रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग शेख़े बावक़ार, मुशर्रफ़े ख़्वातिर व असरार हज़रत अबु अलसरी मंसूर बिन अम्मार रहमतुल्लाह हैं आप दर्जा व मर्तबा के एतेबार से मशायख़े केबार में से हैं। ईराक़ के अकाबिर में ही आप मक़बूल अहले ख़ुरासान थे। पंद व नसायह में हुस्ने कलाम और नुक्ता रसी थी। हर इल्म व फ़न में वअज़ फ़रमाते और दरयारत व रिवायत और अहकाम व मामलात की गुत्थियां सुलझाते थे। बाज़ सूफ़िया तो तारीफ़ में हद से तजावुज़ कर गये हैं। आपका इरशाद है-

वह ज़ात पाक है जिसने आरिफ़ों के दिलों को ज़िक्र की जगह और ज़ाहिदों के दिलों को तवक्कुल की जगह और तवक्कुल करने वालों के दिलों को रज़ा की जगह और दरवेशों के दिलों को क़नाअत की जगह और दुनियादारों के दिलों को हिर्स की जगह क़रार दिया है।

इस इरशाद का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जब हिस व आज़ा पैदा फ़रमाये तो उसमें उसी क़िस्म की ताक़त व तवानाई बख़्शी, मसलन हाथों को पकड़ने का आला और पांव को चलने की ताक़त, आंखों को बीनाई का ज़रिया, कानों को सुनने के लिये और जुबान को बोलने के वास्ते फ़रमाया है। इनकी तहक़ीक़ व ज़ुहूर में कोई ज़्यादा इख़्तेलाफ़ न रखा। लेकिन जब दिलों को पैदा फ़रमाया तो हर दिल की मुराद मुख़्तलिफ़ और हर दिल की ख़्वाहिश गोनागूं पैदा फ़रमाई। चुनांचे किसी दिल को मारेफ़त की जगह, किसी दिल को गुमराही का मुक़ाम किसी दिल को क़नाअत की जगह और किसी दिल को हिर्स व लालच का मक़ाम बनाया और उसने दिल से बढ़कर कोई चीज़ निराली पैदा नहीं की। आपका एक इरशाद यह है कि-

लोग दो क़िस्म के हैं या वह अपने नफ़स के आरिफ़ होंगे या हक़ तआला के आरिफ़, अगर वह अपने नफ़्स के आरिफ़ हैं तो उनका मशग़ला रियाज़त व मुजाहिदा है और अगर हक़ तआला के आरिफ़ हैं तो इनका मशग़ला ख़िदमत, इबादत और तलब रज़ा है लिहाज़ा जो आरिफ़े नफ़्स होते हैं उनकी नज़र इबादत व रियाज़त पर होती है ताकि दर्जा व मक़ाम हासिल करें और जो आरिफ़े रब होते हैं उनकी नज़र इबादत और रियाज़त की तरफ़ नहीं होती बल्कि वह इबादत इसलिये करते हैं कि वह ख़ुद सब कुछ हो जायें।

इन दोनों मर्तबों में बड़ा बादे है। एक बंदा मुजाहिदा में क़ायम है और दूसरा मुशाहदा में। आपका एक इरशाद यह है कि-

लोग दो क़िस्म के हैं। एक ख़ुदा की तरफ़ मोहताज, तो उनका दर्जा शरीअत की ज़ाहिरी ज़ुबान में बहुत बुलंद है दूसरा वह है जो अपनी नियाज़मंदी को देखता ही नहीं इसलिये कि वह जानता है कि अल्लाह तआला ने अज़ल ही में हर मख़लूक़ के रिज़्क़, मौत व हयात सआदत व सक़ावत को लिख दिया है। वह ख़ुदा से अपनी नियाज़मंदी में ख़ालिस ग़ैरों से बेपरवाह है।

लिहाज़ा वह पहला शख़्स जो इफ़्तेक़ार की शान में तक़दीर देखने की वजह से रोयत एहतियाज में महजूब है और वह दूसरा शख़्स जो अपनी नियाज़मंदी की रोयत को छोड़े हुए है वह अपनी नियाज़मंदी की रोयत में मुकाशफ़ा और इस्तग़ना में है। गोया एक नेमत के साथ है दूसरा नेमत देने वाले के साथ। लेकिन वह जो नेमत के साथ नेमत की रोयत में है अगरचे ग़नी है मगर वह दर असल फ़क़ीर है और जो मुनइम के साथ है उसकी रोयत व मुशाहदा में है अगरचे वह फ़कीर है मगर वह दरअसल ग़नी है।

२९- हज़रत अहमद बिन आसिम अंताकी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग ममदूहे औलिया क़ुदवा अहले रज़ा हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन आसिम अंताकी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप ख़ासाने ख़ुदा और सादाते सूफ़िया में से हैं। उलूमे शरीअत व तरीक़त और उनके फ़रोअ व उसूल के आलिम थे तवील उम्र पाई और मुतक़द्देमीन मशायख़ की सोहबत में रहे। तबअ ताबेईन का ज़माना पाया और हज़रत बशर हाफ़ी, सिरी सक़ती के हम ज़माना और हज़रत हारिस मुहासबी रहमुहुमुल्लाह के मुरीद थे। आपने हज़रत फ़ुज़ैल को देखा और उनकी सोहबत में रहे। और हर शैख़ ने आपकी तारीफ़ व तौसीफ़ की है तरीक़त और उसके फ़ुनून में आपका कलाम अरफ़अ और लतायफ़ दिलपसंद हैं आपका इरशाद है-

नाफ़ेअ तरीन दरवेशी वह है जिसके ज़रिये तुम साहबे जमाल बनकर उससे राज़ी रहो।

मतलब यह है कि आम लोगों के नज़दीक तो जमाल यह है कि बंदा हर नाफ़ व नअम का मालिक और मुख़्तार है। दरवेशी में जमाल यह है कि असबाब

की नफ़ी और इसबात और मुसब्बब और इससे रग़बत कुछ न हो और खुदा के अहकाम से राज़ी रहे। इसलिये कि दरवेशी, सबब के अदम मौजूदगी का नाम है। तवंगरी सबब की मौजूदगी का नाम। दरवेश बग़ैर सबब के हक़ के साथ होता है। और तवंगर, सबब के साथ अपने लिये होता है। मालूम हुआ कि सबब महले हिजाब से है और तर्के सबब महले कश्फ़, और दोनों जहान में जमाल कश्फ़ व रज़ा के अंदर है। सारे जहान की सख़्ती हिजाब में। यह बयान तवंगरी दरवेशी की फ़ज़ीलत में वाज़ेह और ज़ाहिर है।

३०- हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ रहमतुल्लाह अलैहि

आइम्मए तरीक़त में से एक बुजुर्ग सालिके तरीक़ वरअ व तक़वा, उम्मत में मुशाबह जुहदे हज़रत यहया अलैहिस्सलाम, हज़रत अब्दुल्लाह बिन खफ़ीफ़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं। तरीक़त के हर हाल में ज़ाहिद व ताबेअ और अहादीस में आपकी रिवायत बुलंद मर्तबा रखती हैं। आप फ़िक़ह और सुलूक में इमाम सूरी के पाबंद हैं इनके असहाब को देखने वाले और उनकी सोहबत में रहने वाले थे। आपका कलाम सुलूक व तरीक़त में पुर मग़ज़ है। आपका इरशाद है-

जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी को सुकूने क़ल्ब के साथ गुज़ारना चाहे उसके लिये ज़रूरी है कि दिल में तमअ को जगह न दे।

हत्ता कि वह लज़्ज़ते काम व दहन से भी वेनियाज़ रहे। इसलिये कि हरीस आदमी तमअ दुनिया में मुर्दा हाल होता है। हिर्स व आज़ से दिल पर मुहर सी लग जाती है। और इसमें कोई शक व शुबह की गुंजाईश नहीं कि मुहरशुदा दिल मुर्दा होता है सबसे उम्दा बेहतर दिल वह है जो मासिवा अल्लाह सब के लिये मुर्दा और हक़ तआला के लिये ज़िन्दा रहे क्योंकि हक़ तआला ने दिल को इज़्ज़त देने वाला और ज़िल्लत देने वाला पैदा किया है। और वह अपने ज़िक्र से दिल को इज़्ज़त बख़्शता और तमअ दुनिया से दिल को ज़लील करता है। आपका इरशाद है कि -

अल्लाह तआला ने दिलों को ज़िक्र का मक़ाम बनाया है फिर जब वह नफ़्स की पैरवी करते हैं तो ख़्वाहिशात की जगह बन जाती है। शहवतों से दिलों की पाकीज़गी या तो बेक़रार करने वाले ख़ौफ़ से होती है या बे आराम करने वाले

शौक़ से।

मालूम हुआ कि ख़ौफ़ और शौक़ ईमान के दो सुतून हैं जबकि दिल ईमान का मस्कन है तो उसके लायक़ ज़िक्र व क़नाअत चाहिये कि तमअ व ग़फ़लत। लिहाज़ा मोमिन बा इख़लास का दिल न तमाअ हो सकता है न ख़्वाहिशात का ग़ुलाम। क्योंकि तमअ व शहवत, मोजिबे वहशत हैं इससे दिल परेशान रहता है और ईमान से ग़ाफ़िल व बेख़बर कर देता है। ईमान को हक़ से उन्स व मुहब्बत और मासिवा अल्लाह से वहशत व नफ़रत। चुनांचे फ़रमाया-

तमअ करने वाले से हर एक डरता और परेशान होता है।

३१- हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग, तरीक़त के शैख़ुल मशायख़, शरीअत के इमाम ल अइम्मा हज़रत अबुल क़ासिम जुनैद बिन मुहम्मद बिन जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप उलमाए ज़ाहिर और अरबाबे क़ुलूब में मक़बूल थे। फुनूने इल्म में कामिल, सुलूक व मामलात के उसूल व फ़रोअ़ में इमाम व मुफ़्ती और इमाम सूरी के मुसाहिब थे। आपका कलाम बुलंद पाया और अहवाले कामिल हैं। यहां तक कि तमाम अहले तरीक़त आपकी इमामत पर इत्तेफ़ाक़ रखते हैं। और किसी मुद्दई व मुतसर्रिफ़ ने आप पर एतेराज़ नहीं किया है। आप हज़रत सिर्री सक़ती के भांजे और इन्हीं के मुरीद थे। एक मर्तबा हज़रत सिर्री सक़ती से लोगों ने पूछा क्या कोई मुरीद अपने पीर से बुलंद मर्तबा हुआ है? आपने फ़रमाया हां, और इसका सुबूत ज़ाहिर है कि हज़रत जुनैद का दर्जा मेरे दर्जा से बुलंद है। हालांकि इनका यह फ़रमाना अज़राहे इंकिसार व तवाज़ा था मगर उन्होंने जो फ़रमाया बसीरत से फ़रमाया। अमरे वाकिया है कि कोई शख़्स अपने से बुलंद का दर्जा नहीं देख सकता। क्योंकि दीदार तहते ताल्लुक़ है। और उनका यह फ़रमान दलील वाज़ेह है कि उन्होंने हज़रत जुनैद को अपने से बुलंद मक़ाम पर पाया जब भी इन्हें देखा। अगरचे उन्होंने बुलंदी में देखा लेकिन दर हक़ीक़त वह इनके तहत ही है चुनांचे मशहूर वाक़िया है कि हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाह की हयात में मुरीदों ने हज़रत जुनैद से अर्ज़ किया शैख़ हमें ऐसी नसीहत फ़रमाया कीजिये जिससे हमारे दिलों को चैन व क़रार आये आपने फ़रमाया कि जब तक मेरे शैख़ अपने मक़ाम पर जल्वा अफ़रोज़ हैं मैं कोई तलक़ीन नहीं कर सकता। यहां तक कि एक रात आप को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार हुआ हुज़ूर ने इनसे

फ़रमाया ऐ जुनैद लोगों को पंद व नसायह क्यों नहीं किया करते ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे ज़रिये एक जहान को निजात अता फ़रमाये। जब आप बेदार हुए तो आप यह ख़्याल फ़रमा रहे थे कि मेरा दर्जा, मेरे शैख़ के दर्जे में पैवस्त हो गया है। और मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दावत व तबलीग़ का अम्र फ़रमाया है। जब सुबह हुई तो हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाह अलैहि ने एक मुरीद को भेजा कि जब जुनैद नमाज़ फ़ज्र का सलाम फेरें तो उनसे कहना तुमने मुरीदों के कहने से तालीम व तबलीग़ न की और न मशायख़े बग़दाद की सिफ़ारिश क़बूल की सबकी दरख़्वास्तों को रद्द करते रहे। मेरा पैग़ाम भी पहुंचा जब भी तबलीग़ शुरू नहीं की। अब तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म भी हो चुका है। अब तो हुक्म बजा लाओ। हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि उस वक़्त मैंने जाना कि मेरा शैख़ मेरे दिल से बख़ूबी वाक़िफ़ है और वह मेरी ज़ाहिरी व बातिनी हर हालत से बाख़बर हैं। इनका दर्जा मेरे दर्जे से बुलंद है क्योंकि वह तो मेरे असरार से वाक़िफ़ हैं और मैं तो इनके अहवाल से बेख़बर हूं। इसके बाद मैं अपने शैख़ के दरबार में हाज़िर हुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार किया। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत आपको कैसे मालूम हुआ कि मैंने ख़्वाब में हुज़ूर का दीदार किया है? उन्होंने फ़रमाया मैंने ख़्वाब में रब्बुल इज़्ज़त को देखा उसने मझसे फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जुनैद के पास भेजा है कि वह लोगों को वअज़ व तबलीग़ किया करें ताकि बग़दाद के लोगों की दिली मुराद बर आये।

इस वाक़िया की रौशन दलील यह है कि मुरशिद जिस हाल में भी हो वह मुरीदों की हर हालत से बाख़बर होता है।

आपका कलाम बहुत बुलंद और पुर मग़ज़ है चुनांचे आपका इरशाद है कि-

नबियों का कलाम हुज़ूर हक़ की इत्तेला देता है, और सिद्दीक़ों का कलाम मुशाहिदे की तरफ़ इशारा करता है।

ख़बर की सेहत नज़र से और मुशाहिदे की सेहत फ़िक्र से होती है ख़बर ऐन ज़ात को देखे बग़ैर नहीं दी जा सकती और इशारा ग़ैर के बग़ैर नहीं हो सकता। ग़र्ज़ कि सिद्दीक़ीन का जो हदे कमाल और इंतेहा है वह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के हालात की इब्तेदा है। नबी व वली के दर्मियान यह फ़र्क़ और उनकी फ़ज़ीलत जो नबियों को औलिया पर है इससे वाज़ेह और ज़ाहिर है। बख़िलाफ़ मुलहिदों के उन दो गरोहों के जो फ़ज़ीलत में अंबिया को मोअख़्ख़र और

औलिया को मुक़द्दम कहते हैं। नऊज़ुबिल्लाह।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मेरे दिल में शैतान को देखने की ख़्वाहिश पैदा हुई। एक रोज़ मैं मस्जिद के बाहर के दरवाज़े पर खड़ा था कि दूर से एक बूढ़ा आता हुआ नज़र पड़ा। जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मुझपर शदीद नफ़रत का ग़ल्बा हुआ। जब वह मेरे क़रीब आया तो मैंने कहा ऐ बूढ़े तू कौन है? कि तेरी मुहीब शक्ल को मेरी आंखें देखने की ताक़त नहीं रखतीं और तेरी मौजूदगी से मेरे दिल को सख़्त वहशत हो रही है। उसने कहा मैं वही इबलीस हूं जिसके देखने की तुमने तमन्ना की थी। मैंने कहा मलऊन! हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने बाज़ रखा? शैतान ने कहा ऐ जुनैद तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या मैं ग़ैर ख़ुदा को सजदा कर लेता। हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि इबलीस की यह बात सुनकर मैं हक्का बक्का और हैरान रह गया और मुझे कोई जवाब न बन पड़ा। इतने में ग़ैब से आवाज़ आयी ऐ जुनैद इस मलऊन से कहो तू झूटा है अगर तू फ़रमाबर्दार होता तो उसके हुक्म से और उसकी मुमानेअत से क्यों इंकार करता? शैतान ने मेरे दिल के अंदर से यह आवाज़ सुनी तो वह चीख़ा और कहने लगा ख़ुदा की क़सम तुमने मुझे जला दिया फिर अचानक वह ग़ायब हो गया।

यह हिकायत आपकी हिफ़ाज़त व इसमत की दलील है। इसलिये कि अल्लाह तआला अपने औलिया की निगहदाश्त फ़रमाता है और हर हाल में उन्हें शैतान के शर व फ़साद से महफ़ूज़ रखता है।

आपके एक मुरीद के दिल में यह गुमान पैदा हो गया कि वह किसी दर्जा पर पहुंच गया है और वह मुंह मोड़ कर चला गया। इसके बाद एक दिन इस ख़्याल से आया कि वह आपका तर्जबा करे। आप अपनी बुजुर्गी से इसके दिली ख़्यालात से बाख़बर हो चुके थे। उसने आपसे एक सवाल किया। हज़रत जुनैद ने फ़रमाया इसका जवाब लफ़्ज़ों में चाहता है या माअ़ने में? उसने कहा दोनो शक्लों में। आपने फ़रमाया अगर लफ़्ज़ों में चाहता है तो अगर तूने अपना तर्जबा कर लिया है तो मेरे तर्जबा की तुझे हाजत नहीं। हालांकि तू यहां मेरे तर्जबे के लिये आया है और अगर तू मानवी तर्जबा चाहता है तो मैं तुझे इसी वक़्त विलायत से माज़ूल करता हूं फ़ौरन और उसी लम्हा इस मुरीद का चेहरा काला हो गया। और वह कहने लगा कि यक़ीन की राहत मेरे दिल से जाती रही है। फिर वह तौबा इस्तेग़फ़ार में मशग़ूल हो गया और फ़ुज़ूल बातों से तायब हो

गया। उस वक़्त जुनैद ने उससे फ़रमाया तू इसे नहीं जानता कि औलिया अल्लाह असरार के वाली और हाकिम होते हैं। तू उनके ज़ख़्म की ताक़त नहीं रखता। फिर आप ने उस पर दम किया और वह दोबारा अपनी मुराद पर बहाल हो गया। उसके बाद उसने मशायख़ से बदगुमानी रखने से तौबा कर ली।

३२- हज़रत अबुल हसन अहमद बिन मुहम्मद नूरी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, शैख़ुल मशायख़ शरीअत के इमाम बादशाहे अहले तसव्वुफ़, बरी अज़ आफ़ते तकल्लुफ़, हज़रत अबुल हसन अहमद बिन मुहम्मद ख़ुरासानी नूरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो तसव्वुफ़ के मामलात में उम्दा, कलिमात में ज़ाहिर तर और मुजाहिदों में वाज़ेह तर थे। तसव्वुफ़ में आपका अपना एक ख़ास मशरब है। सूफ़िया की जमाअत आपको नूरी कहती और उनकी इक़्तेदा व पैरवी करती है। सूफ़ियों के बारह गरोह थे जिनमें से दो गरोह मरदूद हो चुके हैं। और दस मक़बूल हैं और इन मक़बूल गरोहों में एक गरोह मुहासबियों का है और दूसरा क़सारियों का तीसरा सैफ़ोरियों का, चौथा जुनैदियों का पांचवां नूरियों का छटा सुहैलियों का सातवा हकीमियों का, आठवां खराज़ियों का, नवां ख़फ़ीफ़ियों का और दसवां सत्तारियों का है यह दसों गरोह मुहक्क़िक़ और अहले सुन्नत व जमाअत हैं लेकिन वह दो गरोह जो मुर्दा हैं इनमें से एक हलूलियों का है जो हलूल व इम्तेज़ाज से मंसूब है और सालमी और मुशब्बह इनसे ताल्लुक़ रखते हैं और दूसरा गरोह वह हल्लाजियों का है जो तर्के शरीअत के क़ायल हैं। उन्होंने इलहाद की राह इख़्तेयार की जिससे वह मुलहिद व बे दीन हो गये। अबाती और फ़ारसी इन ही से मुताल्लिक़ हैं। इस किताब में अपनी जगह हर एक का जुदा जुदा तज़किरा आयेगा। और इनका इख़्तेलाफ़ भी मज़कूर होगा। और दो गरोह के ख़ेलाफ़यात भी बयान किये जायेंगे ताकि मुकम्मल इस्तेफ़ादा किया जा सके। इंशाअल्लाह

लेकिन नूरी तरीक़, तर्के मदाहनत जवांमर्दी की रिफ़अत और दायमी मुजाहिदे उनकी क़ाबिले तारीफ़ ख़ुसूसियात हैं।

हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो इन्हें मसनदे सदारत पर तशरीफ़ फ़रमा देखकर मैंने कहा- ऐ अबुल क़ासिम आपने इनसे हक़ को

छिपाया तो उन्होंने आपको मसनदे सदारत पर बिठाया और मैंने इनको नसीहत की तो उन्होंने मुझ पर पत्थर फेंके। इसकी वजह यह है कि मदाहनत, ख़्वाहिशात के साथ मुवाफ़ेकत रखती है और नसीहत को अपने ख़िलाफ़ समझती है। और आदमी चूंकि इस चीज़ का दुश्मन होता है जो उसकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ हो। और उसको पसंद करता है जो उसकी ख़्वाहिश के मवाफ़िक़ हो। हज़रत अबुल हसन नूरी हज़रत जुनैद के रफ़ीक़ और उनके शैख़े तरीक़त हज़रत सिर्री सक़ती के मुरीद थे। हज़रत नूरी ने बकसरत मशायख़ से मुलाक़ातें कीं और उनकी सोहबत में रहे और हज़रत अहमद बिन अबुल जवारी से भी मिले हैं तरीक़त व तसव्वुफ़ में आपके इशारात लतीफ़ और पसंदीदा हैं और फ़ुनून में आपके निकात बहुत बुलंद हैं। आपका इरशाद है-

हक़ के साथ जमा होना उसके ग़ैर से जुदाई है और उसके ग़ैर से जुदाई हक़ के साथ मिलना है। मतलब यह है कि हर वह शख़्स जो हक़ तआला से वासिल है वह मासिवा अल्लाह से जुदा है। इस्तलाहे तरीक़त में इसी को जमा कहते हैं। मालूम हुआ कि हक़ से वासिल होना फ़िक्रे ख़लायक़ से अलहादगी है। जिस वक़्त ख़ल्क़ से किनाराकशी हो जाये हक़ से विसाल दुरुस्त होगा और जब हक़ तआला से विसाल दुरुस्त हो तो ख़ल्क़ से ऐराज़ सहीह होगा क्योंकि एक साथ दो सनदें जमा नहीं हो सकतीं।

हिकायत

एक मर्तबा हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि ने तीन शबाना रोज़ अपने घर में खड़े होकर शोर मचाया। लोगों ने हज़रत जुनैद बग़दादी से जाकर हाल बयान किया। आप उठकर फ़ौरन तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ अबुल हसन! अगर तुम जानते हो कि इस शोर व गुल में कुछ भलाई है तो बताओ मैं भी शोर व गुल करूं और अगर तुम जानते हो कि इसमें कोई फ़ायदा नहीं तो दिल को रज़ाए इलाही के हवाले कर देना चाहिये ताकि तुम्हारा दिल ख़ुश व ख़ुर्रम रहे। चुनांचे हज़रत नूरी इससे बाज़ आ गये और कहने लगे ऐ अबुल क़ासिम! आप कैसे अच्छे हमारे उस्ताद व रहनुमा हैं। आपका इरशाद है-

हमारे ज़माने में दो चीज़ें बहुत प्यारी हैं एक वह जो अपने इल्म से काम ले दूसरा वह आरिफ़ जो हक़ीक़त को बयान करे।

मतलब यह है कि हमारे ज़माना में इल्म व मारफ़त दोनों अज़ीज़ हैं इसलिये कि बे अमल इल्म बजाए ख़ुद जहालत व नादानी है। और बग़ैर हक़ीक़त के

मारेफ़त ना शनासी है आपने अपने ज़माना के हालात और निशानियां बयान फ़रमाई हैं। वरना आप ख़ुद अपने तमाम औक़ात में अज़ीज़ हुए हैंऔर आज भी अज़ीज़ हैं।

जो शख़्स आलिम और आरिफ़ की जुस्तजू में सरगरदां रहता है वह अपने हाल में परेशान रहता है। वह कभी आलिम व आरिफ़ को न पा सकेगा। हालांकि उसे अपनी ज़ात में तलाश करना चाहिये ताकि उसे सारा जहान आलिम व आरिफ़ नज़र आये। और ख़ुद को हवालए ख़ुदा कर दे ताकि जहान को आरिफ़ नज़र आये क्योंकि आलिम व आरिफ़ बहुत प्यारा और अज़ीज़ होता है। और अज़ीज़ व महबूब दुश्वारी से हासिल होता है जिस चीज़ का इदराक दुश्वार हो उसके हासिल करने में वक़्त की इज़ाअत है ख़ुद अपने में इल्म व मारेफ़त को हासिल करना चाहिये। और अपने ही अंदर इल्म व हक़ीक़त के चश्मे जारी करने चाहियें।

आपका इरशाद है-

जो शख़्स हर चीज़ को ख़ुदा की तरफ़ से जानता और समझता है वह हर शय को देखकर उसकी तरफ़ मुतवज्जोह होता है इसलिये कि मिलक और मुल्क दोनों का क़याम मालिक के साथ होता है।

लिहाज़ा तसकीने ख़ातिर ख़ालिक़े कायनात को देखने से ही हासिल होती है न कि पैदा शुदा अशिया को देखने से। क्योंकि अगर अशिया को अफ़आल की इल्लत बनायेगा तो ग़म व फ़िक्र में मुब्तला हो जायेगा। और किसी शेए की तरफ़ इसका मुतवज्जोह होना शिर्क होगा। और अगर अशिया को फ़ेअल का सबब क़रार देगा तो सबब अज़ ख़ुद क़ायम नहीं होता बल्कि इसका क़याम मुसब्बब के साथ होता है। और जब वह मुसब्ब असबाब की तरफ़ मुतवज्जोह हो गया तो वह ग़ैर में मशगूल होने से निजात पायेगा।

३३- हज़रत सईद बिन इस्माईल हेरी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग, पेशवाए सल्फ़, यारगारे सुलहा हज़रत अबू उस्मान सईद बिन इस्माईल हेरी रहमतुल्लाह हैं। आप मुतक़द्देमीन में बुज़ुर्ग और अपने ज़माना में मुनफ़रिद थे। औलिया अल्लाह के दिलों में आपकी बड़ी क़दर व मंज़िलत थी। इब्तेदा में हज़रत यहया बिन मआज़ की सोहबत में रह

फिर शाह शुजाअ करमानी की सोहबत में अर्सा तक रहे। बाद अज़ां हज़रत अबू हफ़स की ज़ियारत के लिये नीशापुर आ गये और उनकी सोहबत में रहे और तमाम उम्र वहीं गुज़ार दी।

आप खुद अपनी सरगुज़श्त बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि बचपन ही से मेरा दिल हक़ीक़त की तलब में लगा हुआ था। और अहले ज़ाहिर से मेरा दिल मुतनफ़्फ़िर था। मेरा दिल जानता था कि आम लोग जिस ज़ाहिरी हालत में हैं लेकिन इसके सिवा कोई बातिनी हालत ज़रूर होगी यहां तक कि मैं बालिग़ हो गया। एक दिन मैं हज़रत यहया बिन मआज़ की मजलिस में पहुंचा तो वहां मैंने बातिनी हक़ीक़त और मक़सूद का चश्मा बहता हुआ देखा मैंने उनकी सोहबत इख़्तेयार कर ली हत्ता कि एक जमाअत शाह शुजाअ करमानी के पास से उनकी सोहबत में आई। लोगों ने उनकी बातें मुझे सुनाई तो मेरा दिल उनकी ज़ियारत के लिये बेताब हो गया। फिर मैंने रे से करमान जाने का अज़्म किया मैंने बड़ी कोशिश की कि किसी तरह शाह शुजाअ की सोहबत मैयस्सर आ जाये मगर उन्होंने मुझे इजाज़त न दी और फ़रमाया चूंकि तुम मक़ाम रजा के परवरदा और सोहबत याफ़्ता हो और तुमने हज़रत यहया की सोहबत उठाई है जो कि मक़ाम रजा पर फ़ायज़ हैं इसलिये जिसे मशरबे रजा मिल जाये वह तरीक़त पर गामज़न नहीं रह सकता क्योंकि रजा की तक़लीद से काहिली और सुस्ती आ जाती है। लेकिन मैंने बहुत मन्नत व समाजत की और बीस दिन डेवढ़ी पर पड़ा रहा तब कहीं जाकर क़दमबोसी की इजाज़त मिली। एक अर्सा तक उनकी सोहबत में रहा। वह मर्दे ग़यूर थे यहां तक कि उन्होंने हज़रत अबू हफ़स की ज़ियारत के लिये नीशापुर का इरादा किया तो मैंने भी उनके हमराह हो गया जब हम हज़रत अबू हफ़स के पास पहुंचे तो शाह शुजाअ क़बा ज़ेबे तन किये हुए थे। हज़रत अबू हफ़स ने जब इन्हें देखा तो ताज़ीम के लिये खड़े हो गये और इस्तिक़बाल के लिये दौड़े और फ़रमाया- जिसे मैं गुदड़ी में देखना चाहता था वह क़बा में मलबूस है। वह अर्सा दराज़ तक वहां रहे और मेरी तमाम कोशिशें हज़रत अबू हफ़स की सोहबत में हुसूले असरार में सर्फ़ हुई लेकिन शाह का दबदबा और उनकी ख़िदमत का इल्तेज़ाम मुझे मानेअ रहा। मगर हज़रत अबू हफ़स मेरी दिली ख़्वाहिश को भी मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे और मैं दिल में अल्लाह तआला से दुआयें करता था कि मुझे हज़रत अबू हफ़स की सोहबत इस तरह मुयस्सर आये कि शाह शुजाअ आज़ुरदह ख़ातिर न हो। ग़र्ज़

कि जब शाह ने वापसी का क़स्द किया तो मैंने भी उनकी हमसफ़री के लिये सफ़री लिबास पहन लिया। हालांकि मेरा दिल हज़रत अबू हफ़्स को गरवीदा हो चुका था। उस वक़्त हज़रज अबू हफ़्स ने शाह से फ़रमाया इस फ़रज़न्द को खुशदिली के साथ यहां छोड़ दो तो मेरे लिये बायसे मुसर्रत होगा। शाह ने मेरी तरफ़ रुख़ फेर कर फ़रमाया- शैख़ की ख़्वाहिश को क़बूल करो। बिल आख़िर शाह चले गये और मैं वहीं रह गया। मैंने हज़रत अबू हफ़्स की सोहबत में बड़े अजायब व ग़रायब देखे मुझ पर उनकी बड़ी शफ़क़त थी।

अल्लाह तआला ने हज़रत अबू उसमान को तीन बुज़ुर्गों की सोहबत में तीन मंज़िलों से गुज़ारा और वह तीनों मनाज़िल खुद इनके इशारात में मौजूद हैं। यानी मक़ामे रज़ा हज़रत यहया की सोहबत में। मुक़ामे ग़ैरत शाह शुजाअ की सोहबत में और मक़ामे शफ़क़त हज़रत अबू हफ़्स रहमदुल्लाह की सोहबत में हासिल हुआ। तरीक़त में यह जायज़ है कि मुरीद पांच या छ: या उससे ज़्यादा शयूख़ की सोहबत में रहकर कोई ख़ास मंज़िल हासिल करे और शैख़ और उसकी सोहबत उसे किसी ख़ास मुक़ाम का कश्फ़ कराये। लेकिन सबसे बेहतर यह ख़सलत है कि मुरीद अपने मक़ाम से किसी शैख़ को मुलव्वस न करे और उस मक़ाम में उनकी निहायत को ज़ाहिर न करे बल्कि यूं कहे कि उनकी सोहबत में मेरा इतना हिस्सा था। उनका मर्तबा तो उससे बुलंद तर था अलबत्ता मेरे नसीब में उनकी सोहबत से इससे ज़्यादा हिस्सा मुक़द्दर न था। ऐसी रविश मक़ामे अदब के ज़्यादा नज़दीक है इसलिये कि सालकाने हक़ को किसी भी मक़ाम व अहवाल से सरोकार नहीं होता।

हज़रत अबू उस्मान ने नीशापुर और ख़ुरासान में तसव्वुफ़ का इज़हार किया और हज़रत जुनैद, हज़रत यूसुफ़ बिन हुसैन और मुहम्मद बिन फ़ज़ल बल्ख़ी की ख़िदमत में भी हाज़िर रहे। मशायख़ के दिलों से किसी ने इतना फ़ायदा न उठाया होगा जितना हज़रत अबू उसमान ने उठाया था। मशायख़ और अहले नीशापुर ने आपको मिम्बर पर बिठाया ताकि लोगों को तसव्वुफ़ के रमूज़ व निकात समझायें। आपकी किताबें बुलंद और इल्मे तरीक़त के फ़ुनून में आपकी रिवायतें वक़ीअ हैं। आपका इरशाद है-

अल्लाह तआला जिसे मारेफ़त से मोअज़्ज़ फ़रमाये उसे वाजिब है कि वह मासियत के ज़रिये ख़ुद को ज़लील न करे।

इस इरशाद का ताल्लुक़ बंदे के कसब मुजाहिदे और उमूरे हक़ की दायमी रिआयत से है। अगर तुम उस राह पर गामज़न हो जोकि उसके लायक़ है तो याद रखो कि हक़ तआला जब किसी बंदे को मारेफ़त से नवाज़े तो वह गुनाह में मुब्तला होकर ख़ुद को ज़लील न बनाये क्योंकि मारेफ़त हक़ तआला की अता और उसकी इनायत है और मासियत बंदे का फ़ेअल है जिसे हक़ तआला की अता की इज़्ज़त मिल जाती है उसके लिये ना मुमकिन होता है हक़ तआला अपने किसी फ़ेअल के ज़रिये उसे ज़लील करे। जिस तरह कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जब उसने अपनी मारेफ़त से मोअज़्ज़िज़ फ़रमाया तो फिर अपने फ़ेअल से इन्हें ज़लील न फ़रमाया।

३४- हज़रत अहमद बिन यहया बिन जलाली रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग सुहेल औजे मारेफ़त कुतुबे मुहब्बत हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन यहया बिन जलाली रहमतुल्लाह अलैहि हैं आप बुज़ुर्गाने क़ौम और सादाते वक़्त में से थे। नेक ख़सलत, उम्दा सीरत और हज़रत जुनैद, अबुल हसन नूरी और दीगर अकाबिरे तरीक़त के सोहबत याफ़्ता थे। हक़ायक़ में आपका कलाम अरफ़अ और इशारात लतीफ़ हैं। आपका इरशाद है-

आरिफ़ का अज़्म व इरादा अपने मौला की तरफ़ होता है उसके सिवा किसी चीज़ की तरफ़ वह मायल ही नही होता।

अदमे मीलान की वजह यह है कि आरिफ़ को मारेफ़त के सिवा कुछ मालूम नहीं होता। जब इसके दिल का ख़ज़ाना मारेफ़त हो जाता है तो उसकी हिम्मत का मक़सूद दीदारे इलाही के सिवा कुछ नहीं होता क्योंकि अफ़कार की परागंदगी ग़म व फ़िक्र पैदा करती है और उसके लिये बारगाहे हक़ में मानेअ व हिजाब बन जाती है।

आप अपना वाक़िया बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि एक दिन मैंने एक ख़ूबसूरत और हसीन मजूसी लड़के को देखा मैं उसका हुस्न व जमाल देखकर दंग रह गया और उसके रूबरू जाकर खड़ा हो गया। इतने में हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि का गुज़र उधर से हुआ मैंने उनसे अर्ज़ किया कि ऐ उस्ताद! अल्लाह तआला ऐसे हसीन व जमील चेहरे को दोज़ख़ में जलायेगा?

आपने फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! यह नफ़्स का खेल है जो तुझे लाहक़ हुआ है यह नज़रए इबरत नहीं है क्योंकि अगर तू बनिगाहे इबरत देखे तो आलम के हर ज़र्रे में ऐसे ही अजूबे मौजूद पायेगा। तुझे बहुत जल्द मशीयते इलाही की बे हुरमती की बिना पर सज़ा मिलने वाली है। इसके बाद आप बयान करते हैं कि हज़रत जुनैद मुंह फेरकर तशरीफ़ ले गये तो उसी वक़्त मेरे हाफ़िज़ा से कुरआने करीम फ़रामोश हो गया। यहां तक कि मैंने बरसों अल्लाह से मदद मांगी और तौबा की तब कहीं जाकर दोबारा फिर कुरआन करीम की नेमत मुझे हासिल हुई। अब मुझमें यह जुर्रत नहीं कि मौजूदात आलम में किसी चीज़ की तरफ़ मुल्तफ़ित हूं और अपनी मुहब्बत को इस कायनात में इबरत की नज़र से देखने में ज़ाया करूं।

३५-हज़रत रदीम बिन अहमद रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, वहीदुल अस्र, इमामुद्दहर हज़रत रदीम बिन अहमद रहमतुल्लाह अलैहि हैं। जो अजल्लह-ए-सादाते मशायख़ और हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैहि के मुक़र्रेबीने ख़ास और राज़दारों में से थे। आप फ़क़ीहुल फ़ुक़हा हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह के हम मशरब थे। इल्मे तफ़सीर व क़िरअत में कामिल महारत और अपने ज़माने में तमाम उलूम व फ़ुनून में ऐसे मुनफ़रिद थे कि कोई आपका हम पल्ला न था। उलूमे हाल, रिफ़अते मक़ाम, और नेक ख़सलती में यगाना रोज़गार और रियाज़ते शदीद में यकता व बेमिसाल थे। अपनी उम्र के आख़िरी अय्याम में अलायके दुनिया में मुलव्विस होकर मनसब क़ज़ा पर फ़ायज़ हो गये थे। आपका दर्जा दर असल होने से ज़्यादा कामिल था। चुनांचे हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हम मशग़ूले आरिफ़ हैं रदीम मशग़ूले फ़ारिग़ हैं।

आपकी तसानीफ़ बकसरत हैं ख़ासुकर वह किताब जिसका ग़लतुल वाजिदीन में नाम है मुझे बहुत पसंद है।

एक शख़्स ने आपसे पूछा आपका हाल कैसा है? आपने फ़रमाया तुम उसका हाल क्या पूछते हो जिसका हाल यह है कि उसका दीन उसकी ख़्वाहिश उसकी हिम्मत उसकी दुनिया है न वह सालेह मुत्तक़ी है न आरिफ़े मुसफ़्फ़ा। आपका यह इशारा नफ़्स के ऐबों की तरफ़ है। इसलिये कि नफ़्स के नज़दीक हवा का नाम दीन है और हवा के पैरोकार उसे दीन का नाम देते हैं और उस

पैरवी को शरीअत की मुताबेअत कहते हैं। जो भी नफ़्स की ख़्वाहिश पर चलेगा अगरचे वह मुबतदअ हो, अहले हवा के अंदर दीनदार कहलायेगा और जो उसके ख़िलाफ़ चलेगा अगरचे वह मुत्तक़ी ही क्यों न हो उसे बेदीन कहा जायेगा। हमारे ज़माने में यह फ़ित्ना व फ़साद एक दूसरे में आम है। लिहाज़ा जिनकी ऐसी हालत हो उनकी सोहबत से पनाह मांगते हैं। दर हक़ीक़त शैख़ ने सायल के जवाब में अहले ज़माना के हाल की तरफ़ इशारा किया है और यह भी मुमकिन है कि सायल को उस हाल के मुताबिक़ पाया हो तो आपने अपने ऊपर ढाल कर उसका हाल इस तरह बयान किया हो और अपना हाल मख़्फ़ी रखा हो।

३६- हज़रत यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुजुर्ग, नादिरे ज़माना, रफ़ीउल मंज़िलत हज़रत अबू याकूत यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो वक़्त के अकाबिर आइम्मा और मुतक़द्दमीने मशायख़ में से थे। अपनी जिन्दगी बहुत उम्दा गुज़ारी। हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि के मुरीद, बकसरत मशायख़ के सोहबत याफ़ता और उनके ख़िदमत गुज़ार थे। आपका इरशाद है-

लोगों में से सबसे ज़्यादा लालची ज़लील दरवेश है और उनमें सबसे ज़्यादा साहबे इज़्ज़त दरवेशे सादिक़ है।

क्योंकि लालच दरवेश को दोनों जहान में ख़्वार कर देती है इसलिये कि बजाए ख़ुद दरवेशी अहले दुनिया की नज़र में हक़ीर व ज़लील है और जब उसके साथ लालच भी शामिल हो जाये तो और ज़्यादा ज़लील बना देती है। लिहाज़ा साहबे इज़्ज़त तवंगर, ज़लील दरवेश से बहुत अच्छा है और तमअ व लालच से दरवेश महज़ फ़रेबी और झूटा मालूम होता है और दूसरा मुहिब भी अपनी महबूब की नज़र में तमाम मख़लूक़ से ज़्यादा ज़लील होता है। इसलिये कि मुहिब ख़ुद को अपने महबूब के मुक़ाबले में बहुत ज़लील जानता है। वह इसके साथ इंकिसारी से पेश आता है यह भी तमअ व लालच का नतीजा है जब तबीयत से तमअ जाती रहती है तब हर ज़िल्लत में वह इज़्ज़त पाता है। चुनांचे जब तक जुलैख़ा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तमअ रही वह हमेशा ज़लील तर होती रही। और जब तमअ जाती रही तो अल्लाह तआला

ने उनका हुस्न व जमाल और आलमे शबाब उन्हें वापस कर दिया। यह क़ायदा है कि मुहिब जितना महबूब के सामने आने की कोशिश करेगा महबूब उतना ही दूर होता जायेगा। जब दोस्ती को हाथ में ले और महज़ दोस्ती में दोस्त से किनाराकश हो और सिर्फ़ दोस्ती ही पर इक्तफ़ा करे तो ला मुहाला दोस्त उसकी तरफ़ मुतवज्जोह होगा। दर हक़ीक़त मुहिब की इज़्ज़त उस वक़्त तक है जब तक वस्ल की तमअ न करे और जब मुहिब में विसाल की हवस पैदा हो और वस्ल मुयस्सर न आये तो उसका लाज़मी नतीजा है कि वह ज़लील हो जाता है। और जिस मुहिब को दोस्ती में दोस्त के विसाल व फ़िराक़ से बेनियाज़ी न हो उसकी मुहब्बत गज़ंमंदाना होती है।

३७-हज़रत अबुल हसन समनून बिन अब्दुल्लाह ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि

अज़ अइम्मए तरीक़त, आफ़ताबे अहले मुहब्बत, क़ुदव-ए-अहले मुआलत हज़रत अबुल हसन समनून अब्दुल्लाह ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि हैं। जो अपने ज़माने में बेनज़ीर थे। मुहब्बत में आपका मर्तबा बुलंद था। तमाम मशायख़ बुज़ुर्ग जानते थे और समनून नुल मुहिब कहते थे। हालांकि वह ख़ुद अपने को समनूनुल किज़्ब कहा करते थे। आपने गुलामुल ख़लील से बड़ी तकलीफ़ें उठाईं। उसने ख़लीफ़ए वक़्त के आगे नामुमकिन व मुहाल झूटी गवाहियां दीं जिससे तमाम मशायख़ आज़ुरदा रहे। यह गुलामुलख़लील एक रियाकार आदमी था जो सूफ़ी व पारसा होने का मुद्दई था। जिसने ख़ुद को बादशाह का ख़ुसूसी और उसका नायब, व ख़लीफ़ा मशहूर कर रखा था और पक्का दुनियादार और चुग़लख़ोर इंसान था जैसे चुग़लख़ोर और झूटे लोग आज भी पाये जाते हैं इसी तरह यह मुद्दई, दरवेशों और मशायख़ की बदगोईयां हक्काम ओमरा के सामने करता रहता था ताकि ऐसे लोगों की रसाई आमिरों और हाकिमों तक न होने पाये और ख़ुद उसका मर्तबा बरक़रार रहे। मक़ामे मुसर्रत है कि हज़रत समनून और उन मशायख़ के ज़माना में सिर्फ़ एक ही ऐसा बद ख़सलत शख़्स था वरना इस ज़माने में तो हर मुहक्क़िक़ के लिये एक लाख गुलामुल ख़लील जैसे बद तीनत मौजूद हैं।

बग़दाद में जब हज़रत समनून के मर्तबा का ग़ुलग़ुला बुलंद हुआ और हर एक आपकी नज़दीकी का ख़्वाहां हुआ तो गुलामुल ख़लील उससे रंजीदा हुआ

और उसने कई बातें गढ़ डालीं यहां तक कि एक ख़ूबसूरत औरत को हज़रत समनून के पास भेजा। हज़रत समनून की नज़र जब उसके जमाल पर पड़ी तो औरत ने अपने आपको पेश किया। आपने उसे झिड़क दिया। फिर वह हज़रत जुनैद के पास पहुंची और उनसे कहा कि आप समनून से फ़रमायें कि वह मुझसे निकाह कर लें। हज़रत जुनैद को उसकी यह दरख़्वास्त नापसंद आयी और उसे झिड़क कर निकाल दिया उसके बाद वह गुलामुल ख़लील के पास आयी और उससे उन औरतों की मानिंद जो धुतकारी जाती हैं और इतहाम तराज़ी शुरू कर देती हैं आप पर तोहमत धरने लगी और इस क़िस्म की बातें बनाकर कहने लगी कि जो सुनता उनसे बरगश्ता हो जाता। हत्ता कि ख़लीफ़-ए- वक़्त को उनसे इतना बरगश्ता कर दिया कि उसने इन्हें क़त्ल करने का पुख़्ता इदारा कर लिया। जब जल्लाद को बुलाया गया और उसने ख़लीफ़ा से क़त्ल की इजाज़त मांगी और ख़लीफ़ा ने क़त्ल की इजाज़त देनी चाही तो उसकी ज़ुबान गंग हो गयी। जब उस रात वह सोया तो ख़्वाब में उसे ख़बरदार किया गया कि तेरे मुल्क और हुकूमत का ज़वाल हज़रत समनून रहमतुल्लाह अलैहि की ज़िन्दगी से वाबस्ता है। दूसरे दिन ख़लीफ़ा ने उनसे मुआफ़ी मांगी और हुस्ने सुलूक से पेश आया।

हक़ीक़त व मुहब्बत में आपका कलाम बुलंदऔर इशारात दक़ीक़ हैं एक मर्तबा का वाक़िया है जब वह हिजाज़ से वापस आ रहे थे तो शहर "फ़ैद" के लोगों ने दरख़्वास्त की कि मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होकर कुछ पंद व नसायह फ़रमायें। आप मिम्बर पर वअज़ के लिये तशरीफ़ ले गये कोई मुतवज्जोह न हुआ। आपने अपना रुख़ मस्जिद की कंदीलियों की तरफ़ करके फ़रमाया ऐ कंदीलो! मैं तुमसे मुख़ातिब हूं उसी वक़्त सब क़ंदीलें गिरकर चकना चूर हो गयीं। आपका इरशाद है-

चीज़ों की ताबीर उससे ज़्यादा दक़ीक़ चीज़ से होती है क्योंकि मुहब्बत से ज़्यादा अदक़ चीज़ कोई नहीं है उसकी ताबीर किसी चीज़ से नहीं की जा सकती है।

मतलब यह है कि मुहब्बत के मफ़हूम को अलफ़ाज़ व इबारत में अदा नहीं किया जा सकता चूंकि इबारात मिअ़बर यानी माअ़ने की सिफ़त है और मुहब्बत महबूब की सिफ़त है लिहाज़ा इबारत के ज़रिये उसकी हक़ीक़त का इदराक नामुमकिन है।

३८- हज़रत शाह शुजाअ करमानी रहमतुल्लाह अलैहि

अज़ अइम्मए तरीक़त शाहे शयूख़ ग़य्युराते ज़माना से महफ़ूज़ हज़रत अबुल्न फ़वारस शाह शुजाअ रहमतुल्लाह अलैहि हैं। जो ख़ानवादए सलातीन से ताल्लुक़ रखते थे। आप अपने ज़माने में बेनज़ीर और अबू तराब नख़्शबी रहमतुल्लाह अलैहि के सोहबत याफ़ता थे। बकसरत मशायख़ से मुलाक़ात की। हज़रत अबू उस्मान हैरी के तज़किरे में आपका मुख़्तसर हाल मज़कूर है तसव्वुफ़ में आपकी कुतुब व तहरीरें मश्हूर हैं। आपको मिरआतुल हुकमा यानी दानिशमंदों का आईना कहा जाता था। आपका कलाम बुलंद है।

साहबे फ़ज़ीलत को उस वक़्त तक फ़ज़ीलत है जब तक कि अपनी फ़ज़ीलत को न देखे जब उसे देख लिया तो अब उसकी कोई फ़ज़ीलत नहीं ऐसे ही साहबे विलायत के लिये उस वक़्त तक विलायत है जब तक कि उसकी नज़र से पोशीदा है। जब उसे नज़र आ गयी तो अब उसके लिये कोई विलायत नहीं।

मतलब यह है कि फ़ज़ीलत ऐसी सिफ़त है जिसे फ़ाज़िल नहीं देखता, उसी तरह विलायत भी ऐसी सिफ़त है जिसे वली नहीं देखता। जिसने अपने आपको देखा कि मैं फ़ाज़िल हूं या वली हूं तो वह न फ़ाज़िल है और न वली। आपकी सीरत के तज़किरे में मज़कूर है कि आप चालीस साल तक नहीं सोए और जब सोए तो इन्हें ख़्वाब में दीदारे इलाही नसीब हुआ। उन्होंने अर्ज़ किया ऐ ख़ुदा तुझे तो मैं बेदारी में तलाश कर रहा था मगर तू ख़्वाब में मिला। फ़रमाया ऐ शाह! तूने बेदारी की वजह ही से ख़्वाब में नेमते दीदार पाई है अगर तू वहां सोता तो यहां न पाता।

३९- हजरत अम्र बिन उस्मान मक्की रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में से एक बुज़ुर्ग दिलों के सरवर, बवातिन के नूर हज़रत अम्र बिन उस्मान मक्की रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर सादात अहले तरीक़त में से थे। इल्मे तरीक़त के हक़ायक़ में आपकी तसानीफ़ मश्हूर हैं अपनी निसबते इरादत, हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि से करते थे। उन्होंने

बाद उन्होंने हज़रत अबू सईद ख़राज़ी से मुलाक़ात की और नाजी की सोहबत पाई। उसूल में आप इमामे वक़्त थे। आपका इरशाद है-

मरदाने ख़ुदा के वज्द की कैफ़ियत इबारत से अदा नहीं की जा सकती क्योंकि वह हक़ का भेद है जो मोमिनों के लिये है।

इसलिये कि जिन लफ़्ज़ों को मुरक्कब करके मफ़हूम अदा किया जायेगा वह हक़ तआला का भेद नहीं होगा। बंदों की हर सई तकलीफ़ व तसर्रुफ़ पर मुबनी है और असरारे रब्बानी इससे बहुत दूर हैं।

हज़रत अम्र जब अस्फ़हान तशरीफ़ लाए तो एक नौजवान आपकी सोहबत में शामिल हो गया। इसका बाप उनकी सोहबत से मना करता था यहां तक कि वह नौजवान उस ग़म में बीमार पड़ गया और अर्सा तक सोहबत में न आया। एक रोज़ हज़रत अम्र अपने रुफ़का के साथ उसकी अयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। नौजवान ने इशारा किया कि किसी क़व्वाल को बुलाकर चंद अशआर सुनवा दीजिये। चुनांचे क़व्वाल बुलाया गया और उसने यह शेर पढ़ा-

तर्जमा : मेरा अजब हाल है मैं बीमार रहता हूं तो तुम में से कोई मेरी इयादत को नहीं आता। और जब तुम बीमार होते तो तो मैं बीमार पुरसी करता हूं।

नौजवान ने जब यह शेर सुना तो उठ कर बैठ गया और मर्ज़ की शिद्दत बहुत कम हो गयी। वह कहने लगे ऐ क़व्वाल और कोई शेर सुनाओ चुनांचे उसने पढ़ा-

तर्जमा : तुम्हारी सोहबत में हाज़िरी की बंदिश, अपने मर्ज़ से ज़्यादा सख़्त है और तुम्हारी सोहबत से रोकना मुझ पर बहुत दुश्वार है।

यह सुनकर वह नौजवान खड़ा हो गया और सारा मर्ज़ दूर हो गया। यह देखकर उसके बाप ने उसे हज़रत अम्र के सुपुर्द कर दिया। उनकी तरफ़ से दिल में जो अंदेशा था उसकी माज़रत चाही और तौबा की। वह नौजवान मशायख़े तरीक़त में शामिल है।

४०- हज़रत सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, मालिकुल क़लूब, माहीयुल उयूब हज़रत अबू मुहम्मद सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो शैख़े वक़्त और सबके नज़दीक सेतूदा सिफ़ात थे आप साहबे रियाज़त शदीदा और

नेक ख़सलत थे इख़लास और अफ़आल के उयूब में आपका कलाम लतीफ़ है, उलमाए ज़ाहिर फ़रमाते हैं कि वह शरीअत व हक़ीक़त के जामेअ थे। हालांकि यह मक़ूला बजाए ख़ुद ख़ता की अलामत है इसलिये किसी ने शरीअत व तरीक़त में फ़र्क़ नहीं किया है क्योंकि शरीअत बग़ैर हक़ीक़त के नहीं और हक़कीत बग़ैर शरीअत के नहीं दोनों लाज़िम व मलज़ूम हैं। मुमकिन है इस मक़ूला से उनकी मुराद यह हो कि उनका कलाम फ़हमे हक़ीक़त में बहुत आसान और दिलों में असर करने वाला था। अल्लाह तआला ने जब ख़ुद शरीअत और हक़ीक़त को यकजा फ़रमाया है तो नामुमकिन है कि कोई वली उनमें फ़र्क़ करे। ला मुहाला जो फ़र्क़ को जायज़ रखता है उस पर लाज़िम आता है कि वह एक को क़बूल करे और दूसरे को रद्द करे। हालांकि शरीअत का रद्द करना इलहाद व बेदीनी है और तरीक़त का रद्द करना कुफ़्र व शिर्क है। और जो फ़र्क़ भी नज़र आता है वह माअने का फ़र्क़ नहीं है बल्कि इसबाते हक़ीक़त का फ़र्क़ है चुनांचे कहते हैं कि ला इलाहा इल्लल्लाह हक़ीक़ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह शरीअतुन ला इलाहा इल्लल्लाह हक़ीक़त है और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह शरीअत है। अगर कोई सेहते ईमान की हालत में एक को दूसरे से जुदा करना चाहे तो नहीं कर सकता। इसकी यह ख़्वाहिश सेहते ईमान को बातिल करती है हालांकि पूरी शरीअत हक़ीक़त की फ़रअ है जिस तरह तौहीद का इक़रार हक़ीक़त की मारेफ़त है उसी तरह फ़रमान को बजा लाना शरीअत के हम माअने है। यह ज़ाहिर दार लोग जो इन्हें पसंद न आये उसके मुन्किर हो जाते हैं राह हक़ के उसूलों में से किसी असल का इंकार ख़तरनाक है। आपका इरशाद है-

रुए ज़मीन के रहने वालों पर इस हाल में सूरज तुलू व गुरूब होता है कि अल्लाह तआला से उनकी बेख़बरी बढ़ती ही जाती है बजुज़ उन ख़ुश नसीब लोगों के जिन्होंने अल्लाह तआला को अपने आप पर और अहल व अयाल और अपनी दुनिया व आख़िरत पर मुक़द्दम कर रखा है।

मतलब यह है कि जो शख़्स अपने मुक़द्दर के दामन पर दस्त अंदाज़ी करता है यह उसकी दलील है कि वह अल्लाह तआला की क़ुदरत से ला इल्म है क्योंकि अगर उसे मारेफ़त होती तो वह तदबीर से किनाराकश हो जाता। क्योंकि मारेफ़त तदबीर के तर्क की मक़तज़ी है और उसी का दूसरा नाम तसलीम व रज़ा है तदबीर का इसबात तक़दीर से जहालत व नादानी है।

४१- हज़रत मुहम्मद बिन फ़ज़्ल बल्खी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, मुख़्तार अहले हरमैन, मशायख़ के कुर्रतुल ऐन हज़रत अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन फ़ज़्ल बल्ख़ी रहमतुल्लाह हैं जो अजल्ला मशायख़ में से थे और अहले इराक़ व ख़ुरासान के महबूब थे। हज़रत अहमद बिन ख़िज़्रविया के मुरीद थे और हज़रत अबू उस्मान हैरी को आपसे अज़ीम ताल्लुक़ हाज़िर था। मुतास्सिब लोगों ने अपने जुनून में आपको बल्ख़ से निकाल दिया आप वहां से समरक़ंद तशरीफ़ ले गये और वहीं उम्र गुज़ार दी। आपका इरशाद है-

लोगों में सबसे ज़्यादा आरिफ़ वह है जो अदाए शरीअत में कोशां और अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी का सबसे ज़्यादा ख़्वाहां है।

क्योंकि जो जितना ज़्याद ख़ुदा के नज़दीक होगा वह उतना ही ज़्यादा अदाए हुक्म में हरीस होगा और जितना ख़ुदा से दूर होगा वह उतना ही ज़्यादा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी से किनाराकश होगा। आपका इरशाद है-

मैं उस शख़्स पर ताज्जुब करता हूं जो जंगल व सहरा और बियाबानों को तय करता हुआ ख़ुदा के घर और हरम तक तो पहुंचता है क्योंकि इसमें उसके नबियों के आसार हैं लेकिन वह अपने नफ़्स के जंगल और अपनी ख़्वाहिशात की वादियों को तय करके अपने दिल तक पहुंचने की कोशिश क्यों नहीं करता क्योंकि दिल में तो उसके मौला के आसार हैं।

मतलब यह है कि दिल हक़ तआला की मारेफ़त की जगह है वह उस काबा से बेहतर है जो ख़िदमत व इबादत का क़िब्ला है। काबा वह है जिसकी तरफ़ बंदे की नज़र है और दिल वह है जिसकी तरफ़ हक़ तआला ख़ुद नज़र फ़रमाता है। जहां मेरे दोस्त का दिल होगा मैं वहां हूंगा। और जहां उसका हुक्म होगा मेरी मुराद वहां होगी। और जिस जगह मेरे नबियों के आसार हैं वह जगह मेरे दोस्तों का क़िब्ला है।

४२- हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, शैख़े बाख़तर, फ़ानी अज़ सिफ़ाते बशर हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह हैं जो फ़ुनूने इल्म के कामिल और बरगुज़ीदा शैख़ुल मशायख़ थे। आपकी तसानीफ़ बकसरत हैं। और हर किताब से आपकी करामतें ज़ाहिर हैं। आपकी तसानीफ़ में किताब ख़त्मुल विलायत किताबुल नहज और नवादिरुल उसूल ज़्यादा मशहूर हैं। मैं आपकी हर किताब पर फ़रेफ़ता हूं मेरे शैख़ ने फ़रमाया है कि हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी ऐसे दुर्रे यतीम हैं जिनकी मिसाल सारे जहान में नहीं है। उलूमे ज़ाहिरी में भी आपकी किताबें हैं और अहादीस में आपकी सनद बहुत वक़ीअ है। आपने एक तफ़सीर भी शुरू की थी मगर आपकी उम्र न वफ़ा न की। जिस क़द्र तहरीर फ़रमाई है वह तमाम अहले इल्म में मुरौवज हैं। हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के मुसाहेबीन में से किसी एक ख़ास मसाहिब को फ़िक़्ह पढ़ाई। शहर तिरमिज़ में आपको हकीम तिर्मिज़ी के नाम से याद किया जाता था। उस विलायत में तमाम दानिशवर सूफ़िया आपकी पैरवी करते थे। आप के मनाक़िब बहुत हैं आप हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की सोहबत में भी रहे। आपके मुरीद हज़रत अबू बकर वराक़ बयान करते हैं कि हर इतवार को हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम इनके पास आते और एक दूसरे से वाक़ियात व हालात दर्याफ़्त करते थे। आपका इरशाद है-

जो शख़्स इल्मे शरीअत और औसाफ़े अबूदियत से नावाफ़िक़ है वह औसाफ़े रबूबियत से तो और भी ज़्यादा बेख़बर होगा। और जो ज़ाहिर में मारफ़ते नफ़्स की राह से बेख़बर है वह मारफ़ते रब की राह यानी तरीक़त से भी बेख़बर होगा। क्योंकि ज़ाहिर बातिन के साथ मरबूत है और ज़ाहिरी ताल्लुक़ बग़ैर बातिन के मुहाल है नीज़ बग़ैर ज़ाहिर के बातिन का दावा भी बातिल है लिहाज़ा औसाफ़े रबूबियत की मारेफ़त, अरकाने अबूदियत व बंदगी की सेहत पर मुनहसिर है और यह बात सेहते अदब और अहकामे शरीअत की पाबंदी के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती।

४३- हज़रत अबू बकर मुहम्मद बिन उमर वराक़ रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुजुर्ग, शर्फ़ें जुह्हादे उम्मत, मज़की अहले सफ़्वत हज़रत अबू बकर मुहम्मद बिन उमर वराक़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर व जुहहाद मशायख़ में से थे। आपने हज़रत अहमद बिन खिज़्रविया से मुलाक़ात की और हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी की सोहबत पाई है। आदाब व मामलात में आपकी तसानीफ़ बकसरत है। मशायख़े इज़ाम आपको मोअद्दिबे औलिया कहते हैं।

हिकायत : आप फ़रमाते हैं कि मेरे शैख़ हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी ने चंद औराक़ मुझे दिये थे कि मैं इन्हें दरिया में डाल दूं। लेकिन मेरा दिल उनके दरिया बर्द करने पर राज़ी न हुआ लेकिन मैंने उन औराक़ को अपने घर रख लिया और हाज़िर होकर कह दिया कि मैंने दरिया में डाल दिया है। आपने फ़रमाया तुमने देखा? मैंने कहा मैंने तो कुछ भी नहीं देखा। फ़रमाया तो फिर तुमने उन्हें दरिया में नहीं डाला कहा जाओ उन्हें दरिया में डालकर आओ। चुनांचे मैं गया उस वक़्त दिल में कई क़िस्म के वसवसे लाहक़ हो रहे थे बिल आख़िर औराक़ को दरिया में डाल दिया। दरिया का पानी उसी लम्हा फटा और एक संदूक़ नमूदार हुआ। जिसका ढकना खुला हुआ था और औराक़ उस संदूक़ में चले गये फिर उसका ढकना बंद हो गया और पानी बराबर होकर संदूक़ रू पोश हो गया। वापस आकर उन्होंने सारा वाक़िया बयान कर दिया। आपने फ़रमाया हां अब तुमने डाला है मैंने अर्ज़ किया ऐ शैख़! यह क्या असरार है मुझ पर ज़ाहिर फ़रमाईये। आपने फ़रमाया मैंने उसूले तहक़ीक़ में एक किताब लिखी थी जिसका संभालना दुश्वार था। मेरे भाई हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने मुझसे उसे मांगा। अल्लाह तआला ने पानी को मामूर फ़रमाया कि वह उन तक पहुंचा दे। हज़रत अबू बकर वराक़ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

लोग तीन तरह के हैं उलमा, उमरा, और फुक़रा जब उलमा ख़राब हो जाते हैं तो ख़ल्क़ के ताअत व अहकाम तबाह हो जाते हैं। और जब उमरा ख़राब हो जाते हैं तो लोगों की मईशत तबाह और बर्बाद हो जाती है और जब फुक़रा ख़राब हो जाते हैं तो लोगों के अख़लाक़ बरबाद हो जाते हैं।

लिहाज़ा उमरा व सलातीन की ख़राबी जुल्म व सितम उलमा की हिर्स व

तमअ की सूरत में ज़ाहिर होती है और फुक़रा की ख़राबी जाह व मनसब की ख़्वाहिश में रूनुमा होती है। जब तक उमरा व सलातीन उलमा से मुंह न मोड़ें तबाह व बर्बाद नहीं होते। और जब तक उलमा बदशाहों की सोहबत से इज्तेनाब करें तबाह व ख़राब नहीं होते। और जब तक फुक़रा में जाह व हश्म की ख़्वाहिश पैदा नहीं होती तबाह व ख़राब नहीं होते इसलिये कि बादशाहों का जुल्म, बे इल्मी की वजह से उलेमा में तमअ बद दयानती की वजह से और फुक़रा में जाह व हश्म की ख़्वाहिश बे तवक्कली की वजह से पैदा होती है। लिहाज़ा बे इल्म बादशाह, बद दयानत आलिम और बे तवक्कुल फ़क़ीर बहुत बुरे होते हैं। लोगों में ख़राबियों का ज़ुहूर और बुराईयों का सुदूर इन ही तीनों से रूनुमा होता है।

४४- हज़रत अबू सईद अहमद बिन ईसा ख़राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुजुर्ग सफ़ीनए तवक्कुल व रज़ा, सालिके तरीके फ़ना हज़रत अबू सईद अहमद बिन ईसा ख़राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अहवाले मुरीदां की ज़ुबान और तालिबाने औक़ात की बुरहान थे। सबसे पहले जिसने तरीक़ व फ़ना की तारीफ़ लफ़्ज़ों में की वह आप ही थे। आपके मनाक़िब उम्दा रियाज़तें और उसके नुक्ते मशहूर हैं उनसे किताबें भरी पड़ी हैं आपका कलाम और आपके रुमूज़ व इशारात बुलंद हैं हज़रत जुन्नून मिसरी, बशर हाफ़ी और सिर्री सक़ती की सोहबत उठाई। आपका इरशाद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है-

अल्लाह तआला ने दिलों को इस ख़ासियत पर पैदा फ़रमाया है कि जो इस पर एहसान करता है उस का दिल मुहब्बत के साथ उसकी तरफ़ मायल होता है। मुझे ऐसे दिल पर ताज्जुब होता है जो यह देखने के बावजूद के अल्लाह तआला के सिवा कोई एहसान करने वाला नहीं मगर वह ख़ुलूसे दिल से ख़ुदा की तरफ़ मायल नहीं होता।

हक़ीक़त यह है कि वही एहसान करता है जो ईमानों यानी जानों का हक़ीक़ी मालिक हो एहसान की तारीफ़ यह है कि साहबे एहतियाज के साथ भलाई की जाये और जो ख़ुद दूसरे का एहसान मंद है वह भला किसीदूसरे पर क्या एहसान करेगा? चूंकि हक़ीक़ी मिल्कियत और हक़ीक़ी बादशाहत अल्लाह तआला ही

को हासिल है और उसी ही की ज़ात ऐसी है जो किसी दूसरे के एहसान से बे नियाज़ है जब बंदगाने ख़ुदा मुनइम व मोहसिन के इनाम व एहसान के उस माअने को देखते और समझते हैं तो उनके कुलूब साफ़िया मुकम्मल तौर पर उसी की मुहब्बत में ग़र्क़ हो जाते हैं और वह हर ग़ैर से किनारा कश रहते हैं।

४५- हज़रत अली बिन मुहम्मद अस्फ़हानी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, शाहे मुहक्क़िक़ान दिले मुरीदां हज़रत अबुल हसन अली बिन मुहम्मद असफ़हानी रहमतुल्लाह हैं। यह भी कहा गया है कि हज़रत अली बिन मुहम्मद जो अकाबिर मशायख़ में से थे और उनसे हज़रत जुनैद बग़दादी की लतीफ़ मकातिब हुई और अम्र बिन उस्मान मक्की उनकी ज़्यारत को अस्फ़हान तशरीफ़ ले गये वह अबू तुर्राब के मुसाहिब, हज़रत जुनैद के रफ़ीक़ ख़ास थे। ग़र्ज़ आप ममदूह मशायख़ रज़ा व रियाज़त से आरास्ता और फ़ित्ना व आफ़त से महफ़ूज़ थे हक़ायक़ व मामला में उमदा ज़ुबान और हक़ायक़ व इशारात में लतीफ़ बयान के हामिल थे। आपका इरशाद है कि -

बारगाहे कुदसी में हुज़ूरी यक़ीन से अफ़ज़ल है इसलिये हुज़ूरे दिल में जा गुज़ीं होता है इसमें ग़फ़लत जायज़ नहीं और यक़ीन में ख़तरे हैं कभी हो कभी न हो।

लिहाज़ा हाज़िर रहने वाले हुज़ूर में रहते हैं और यक़ीन करने वाले चोखट पर। नीज़ आपका इरशाद है कि -

आदम से क़ियामत तक लोग यही कहते रहे और कहते रहेंगे कि हाए दिल हाए दिल लेकिन में ऐसे शख़्स को देखना पसंद करता हूं जो यह कहे कि दिल क्या है या दिल कैसा होता है लेकिन मैंने ऐसा शख़्स अभी तक नहीं देखा। आम लोग गोश्त के लोथड़े को दिल कहते हैं वह तो पागलों, दीवानों और बच्चों में भी होता है। अगर वह दिल नहीं है तो फिर दिल क्या है जिसे बजुज़ अल्फ़ाज़ों के नहीं सुनता? यानी अगर अ़क्ल दिल को दिल कहें तो वह दिल नहीं और अगर रूह को दिल कहें तो वह भी दिल नहीं है अगर इल्म को दिल कहें तो वह भी नहीं। मतलब यह है कि शवाहिदे हक़ का क़्याम जिस दिल से किया जाता है वह लफ़्ज़ व बयान में तो है लेकिन ज़ाहिर में उसका कोई वजूद नहीं है।

४६- हज़रत अबुल हसन मुहम्मद बिन इस्माईल खैरुन्निसाज

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, शैख़ अहले तसलीम, तरीक़े मुहब्बत में मुस्तक़ीम हज़रत अबुल हसन मुहम्मद इब्ने इस्माईल ख़ैरुन्निसाज रहमतुल्लाह अलैहि हैं। जो अपने ज़माना में बुज़ुर्गाने मशायख़ में से और मामलात में उम्दा ज़ुबान और मुहज़्ज़ब बयान रखते थे। तवील उम्र पाई हज़रत शिबली और हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमहमुल्लाह ने आपकी मजलिस में तौबा की और हज़रत शिबली को हज़रत जुनैद बग़दादी की ख़िदमत में एहतेराम व इज़्ज़त के साथ भेज दिया।

आप हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाह अलैहि के मुरीद थे। हज़रत अबुल हसन नूरी के हम ज़माना और हज़रत जुनैद बग़दादी के नज़दीक क़ाबिले एहतेराम शख़्स थे हज़रत अबू हमज़ा ने आपकी ख़ैर ख़्वाही की। आपको खैरुन्निसाज कहने की वजह यह है कि आप अपनी जाए विलादत सामरा से बइरादह-ए-हज रवाना हुए जब कूफ़ा से गुज़र हुआ तो शहर पनाह की दीवार पर एक रेशम बुनने वाले ने आपको पकड़ लिया और कहने लगा तू मेरा गुलाम है और तेरा नाम ख़ैर है। आपने उस मामले में क़ज़ा व क़द्र का हाथ देखा तो उससे तअर्रुज़ न किया। यहां तक कि सालहा साल उसके साथ काम करते रहे जब भी वह पुकारता कि ऐ ख़ैर! तो जवाब देते कि हाज़िर हूं। हत्ता कि वह शख़्स अपने किये पर शर्मसार हुआ और आपसे कहने लगा मैंने ग़लती की है। तुम मेरे गुलाम नहीं हो। अब तुम जाओ। फिर आप वहां से चलकर मक्का मुकर्रमा आये और इस दर्जा व मक़ाम तक रसाई पाई। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि ख़ैर खैरुना! हमारा ख़ैर बहुत अच्छा है आप इसे पसंद करते थे कि लोग आपको ख़ैर से पुकारें। आप फ़रमाया करते थे कि जायज़ नहीं है एक मुसलमान ने मेरा नाम ख़ैर रखा मैं उसे बदल दूं।

जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो शाम की नमाज़ का वक़्त था जब मौत की बेहोशी में आंख खोली तो मलकुल मौत के सिवा कुछ नज़र न आया। उस वक़्त आपने कहा-

ऐ मलकुल मौत! ख़ुदा तेरा भला करे ज़रा ठहर जा। तू भी बंदा-ए-फ़रमा बर्दार है और मैं भी बंदा-ए-फ़रमा बर्दार हूं। तुझे जो हुक्म दिया गया है तू उसे

तर्क नहीं कर सकता यानी तुम रूह ज़रूर क़ब्ज़ करोगे और जो हुक्म मुझे दिया गया है मैं भी उसे नहीं छोड़ सकता। यानी शाम की नमाज़ ज़रूर अदा करूंगा। लिहाज़ा तुम मुझे इतनी मोहलत दो कि फ़रमाने इलाही बजा लाऊं फिर मैं तुम्हें इजाज़त दे दूंगा कि तुम भी ख़ुदा का हुक्म बजा लाओ।

इसके बाद आपने पानी तलब फ़रमाया वुज़ू करके नमाज़ अदा की और जान जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर दी। उसी रात लोगों ने ख़्वाब में आपको देखा तो उन्होंने आपसे पूछा कि ख़ुदा ने आपके साथ क्या सुलूक किया? तो आपने फ़रमाया यह बात मुझसे न पूछो क्योंकि मैं ने तुम्हारी दुनिया से रिहाई पाई है। आपका इरशाद है कि-

अल्लाह ने मुत्तक़ियों के सीना को नूरे यक़ीन से भर दिया और मुसलमान की आंखों को हक़ायक़े ईमान के नूर से मुनव्वर फ़रमा दिया है।

मतलब यह है कि मुत्तक़ियों के लिये यक़ीन के सिवा कोई चारा नहीं। इनका दिल नूरे यक़ीन के लिये खोला गया है और मोमिन को ईमान के हक़ायक़ के सिवा कोई चारा नहीं उनकी अक़्लों की बसीरतों को नूरे ईमान से रौशन कर दिया गया है। लिहाज़ा जहां ईमान होगा, यक़ीन होगा और जहां यक़ीन होगा तक़वा भी होगा क्योंकि यह एक दूसरे के क़रीब और एक दूसरे के ताबेअ हैं।

७०-हज़रत अबू हमज़ा ख़ुरासानी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, दायी-ए-असर, यगानए दहर हज़रत अबू हमज़ा ख़ुरासानी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो ख़ुरासान के क़ुदमाए मशायख़ में से हैं आपने हज़रत अबू तुराब की सोहबत पाई और हज़रत ख़राज़ी से मुलाक़ात की तवक्कुल पर आपको कामिल एतेमाद व यक़ीन था।

हिकायत : एक दिन का वाक़िया है कि आप जा रहे थे कि अचानक कुंए में गिर पड़े। तीन दिन के बाद एक क़ाफ़िला उधर से गुज़रा और कुंए के किनारे उसने पड़ाव किया। आपने दिल में ख़्याल किया कि अहले क़ाफ़िला को मदद के लिये पुकारें या नहीं? फिर ख़्याल गुज़रा कि आवाज़ देना अच्छा नहीं है क्योंकि यह ग़ैरे ख़ुदा से मदद चाहना होगा और उसकी शिकायत भी। गोया मैं यह कहूंगा कि ख़ुदा ने मुझे कुंए में डाला अब तुम मुझे यहां से आकर निकालो। इतने में क़ाफ़िले वाले ख़ुद कुए पर आ गये और कुंए में झांक कर कहने लगे यह कुंआ सरे राह वाक़ेय है न कोई रोक इस पर है न मुंडेर वग़ैरह। ऐसा

न हो कि कोई राह गुज़र इस में गिर पड़े। आओ मिलकर इस पर छत डाल दें और इसका दहाना बंद कर दें। ताकि इसमें कोई गिर न पड़े और इस अमले ख़ैर का अज्र ख़ुदा से हासिल करें। हज़रत अबू हमज़ा फ़रमाते हैं कि इनकी यह बातें सुनकर मुझ पर घबराहट तारी हो गयी और मैं अपनी ज़िन्दगी से ना उम्मीद हो गया। क़ाफ़िला वालों ने कुंए पर छत डाली और दहाना बंद करके ज़मीन हमवार की और चले गये मैं ख़ुदा से दुआ मांगने लगा मौत के तसव्वुर से मेरा दिल बैठने लगा चूंकि अब किसी मख़्लूक़ की मदद पहुंचने का इमकान ही नहीं था। चुनांचे जब रात हुई तो मैंने देखा कि छत पर जुंबिश पैदा हुई। जब ग़ौर से देखा तो नज़र आया कि कोई चीज़ दहाना के सर को खोल रही है। और अज़दहे की मानिंद कोई बहुत बड़ा जानवर अपनी दुम कुंए में लटका रहा है। उस वक़्त मुझे यक़ीन हुआ कि यह मेरी निजात का ज़रिया है और यह हक़ तआला की फ़रसतादा है। मैने उस जानवर की दुम पकड़ ली और उसने मुझे खींचकर बाहर निकाल लिया। उस वक़्त ग़ैब से आवाज़ आयी ऐ अबू हमज़ा कैसी अच्छी तुम्हारी निजात है कि जान लेने वाले के ज़रिये तुम्हारी जान को निजात दिलायी गई।

लोगों ने आपसे सवाल किया ग़रीब यानी अजनबी कौन है? आपने फ़रमाया वह शख़्स है जो उलफ़त व मुहब्बते इलाही से परेशान व वारफ़ता हो दरवेश के लिये दुनिया व आख़ेरत में कोई वतन नहीं है और वतन के सिवा उलफ़त करना वहशत है जब दरवेश की उलफ़त, मख़्लूक़ से मुनक़तअ हो गयी तो वह हर एक से वहशत ज़दा होगा। उसकी यह हालत ग़रीब कहलायेगी यह बहुत बुलंद दर्जा है।

४८- हज़रत अबू अब्बास अहमद बिन मसरूक़ रहमतुल्लाह अलेह

तरीक़त के इमामों में एक बुजुर्ग, दाई-ए-मुरीदां बहुक्म फ़रमाने इलाही अबुल अब्बास अहमद बिन मसरूक़ रहमतुल्लाह अलेह हैं जो ख़ुरासान के अजल्ला मशायख़ व अकाबिर में से हैं। और तमाम औलिया आपके ज़माने पर औताद होने पर मुत्तफ़िक़ हैं। आपने क़ुतबुल मदार अलैहि की सोहबत पाई लोगों ने आपसे क़ुतबुल मदार अलैहि की बाबत पूछा कि वह कौन हैं? आपने उसकी वज़ाहत नहीं फ़रमाई। अलबत्ता इशारात से पता चलता है कि इससे आपकी मुराद

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आपने चालीस साहबे तमकीन औलिया की ख़िदमत की और उनसे इस्तेफ़ादा किया। ज़ाहिरी व बातिनी उलूम में आपको कमाले दस्तरस हासिल था। आपका इरशाद है कि -

यानी ख़ुशी व मुसर्रत ख़ुदा के सिवा किसी और से है तो उसकी यह ख़ुशी दायमी ग़म का वारिस बनाती है, और जिसका लगाव ख़ुदा की ख़िदमत व इबादत से न हो तो उसका यह लगाव दायमी वहशत का वरसा देती है।

इसलिये कि ख़ुदा के सिवा हर चीज़ फ़ानी है और जिसकी ख़ुशी फ़ानी चीज़ से होगी तो जब वह चीज़ फ़ना हो जायेगी तो उसके लिये बजुज़ हसरत व ग़म के सिवा कुछ न रहेगा और ग़ैरे ख़ुदा की ख़िदमत हक़ीर शय से है जिस वक़्त अशिया मख़लूक़ की दनायत और ख़्वारी ज़ाहिर होगी तो उसके लिये उससे उन्स व मुहब्बत रखना मोजिब वहशत व परेशानी होगा। लिहाज़ा अल्लाह पर नज़र रखने ही से सारे जहान में ग़म व परेशानी है।

४९- हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन अहमद इस्माईल मग़रबी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुज़ुर्ग, उस्ताज़े मुतवक्किलां, शैख़े मुहक़्क़ेक़ां हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन अहमद इस्माईल मग़रबी रहमतुल्लाह अलैहि हैं आप बुज़ुर्गाने सल्फ़ और अपने ज़माने के मक़बूल असातेज़ा में से थे। मुरीदों की ख़ूब निगहबानी फ़रमाते थे। हज़रत इब्राहीम ख़्वास और इब्राहीम शैबानी रहमहुमुल्लाह दोनों आपके मुरीद थे। आपका कलाम आली और बराहीन वाज़ेह हैं, ख़लवत नशीनी में कामिल तर थे। आपका इरशाद है कि-

मैंने दुनिया से ज़्यादा मनसफ़ चीज़ नहीं देखी अगर तुम उसकी ख़िदमत करो तो वह तुम्हारी ख़िदमत करेगी अगर तुम उसे छोड़ दो तो वह तुम्हें छोड़ देगी।

मतलब यह कि जब तक कि तुम दुनिया की तलब में रहोगे तो वह तुम्हारी तलब में रहेगी और जब उसे छोड़कर ख़ुदा के तालिब बन जाओगे तो वह तुम्हें छोड़ देगी और उसका ख़तरा तुम्हारे दिल में न रहेगा। लिहाज़ा जो सिद्क़ दिल से दुनिया से किनारा कश होता है वह उसके शर से महफ़ूज़ रहता है।

५०- हज़रत अबू अली बिन अलहसन बिन अली जोरजानी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुजुर्ग, शैखे ज़माना अपने वक़्त के यगाना हज़रत अबू अली बिन अल हसन जोरजानी रहमतुल्लाह हैं जो अपने ज़माने में बे मिस्ल थे। आप की तसानीफ़ मालूमाते इल्म और रोइयते आफ़ात में मशहूर है। हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह के मुरीद और हज़रत अबू बकर वराक़ रहमतुल्लाह के हम असर हैं। हज़रत इब्राहीम समरक़ंदी आप ही के मुरीद थे। आपका इरशाद है कि -

तमाम मख़लूक़ ग़फ़लत के मैदानों में महज़ ज़न व गुमान पर एतेमाद करके भागी चली जा रही है और वह अपने ख़्याल में समझ रहे हैं कि वह हक़ पर हैं और जो कुछ वह कर रहे हैं वह कश्फ़ से कर रहे हैं।

आपके इरशाद का मतलब यह है कि सब कुछ तबीयत के गुरूर और नफ़्स की रऊनत की वजह से है क्योंकि आदमी जाहिल होने के बावजूद अपनी जहालत पर कामिल एतेक़ाद रखता है। बिलखुसूस जाहिल सूफ़ी। जिस तरह आलिम सूफ़ी मख़लूक़े ख़ुदा में सबसे बढ़कर अज़ीज़ होता है इसी तरह जाहिल सूफ़ी मख़लूक़ ख़ुदा में सबसे ज़्यादा ज़लील व ख़्वार होता है इसलिये कि उलमा तरीक़त इल्म व हक़ीक़त पर गामज़न होते हैं न कि महज़ ज़न व गुमान पर और जाहिल सूफ़ी का तकिया गुमान पर होता है न कि यक़ीन पर। वह ग़फ़लत के मैदानों में चरते हैं और गुमान यह रखते हैं कि वह विलायत के मैदानों में दौड़ रहे हैं। ज़न व गुमान पर एतेमाद होता है और ख़्याल यह करते हैं कि यक़ीन पर हैं। ज़ाहिर रस्मों पर उनका अमल होता है और गुमान यह होता है कि वह हक़ीक़त पर हैं। नफ़सानी ख़्वाहिश से बोलते हैं और गुमान यह करते हैं कि यह मुकाशफ़ा है आदमी के दिमाग़ से ज़न व गुमान का इख़राज़ उस वक़्त तक मुमकिन नहीं जब तक कि जलाले हक़ या जमाल हक़ का उसे दीदार न हो जाये क्योंकि उसके जमाल के इज़हार में सब कुछ उसी का देखता है, और उसका ज़न व गुमान फ़ना हो जाता है कश्फ़े जलाल में ख़ुद को भी नहीं देखता और उसका गुमान सर भी नहीं उठा सकता।

५१- हज़रत अबू मुहम्मद बिन अहमद बिन हुसैन हरीरी रहमतुल्लाह अलैहि

तरीकत के इमामों में एक बुजुर्ग, बासिते उलूम, वाज़ेह रुसूम तरीक़त हज़रत अबू मुहम्मद बिन अहमद बिन अल हुसैन हरीरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के महरम असरार थे। हज़रत सुहेल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी की सोहबत पाई थी। आप तमाम अक़सामे उलूम के आलिम और फ़िक़्ह में इमामे वक़्त थे। उसूल में महारत और तरीक़ तसव्वुफ़ में ऐसा दर्जा-ए-कमाल हासिल था कि हज़रत जुनैद बग़दादी आपसे फ़रमाया करते थे कि मेरे मुरीदों को अदब व रियाज़त की तालीम दिया करें हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह की अदमे मौजूदगी में आप उनके वली-ए-अहद होते हैं और उनकी जगह तशरीफ़ रखते थे आप का इरशाद है-

ईमान का दवाम, दीन का क़ियाम और बदन की इस्लाह का इनहिसार तीन चीज़ों पर है क़नाअत तक़वा और ग़िज़ा की हिफ़ाज़त, जिसने ख़ुदा पर इक्तेफ़ा किया और उसी पर क़नाअत की उसके बातिनी असरार दुरुस्त रहेंगे और जिसने ख़ुदा की ममनूआ चीज़ों से इज्तेनाब किया उसकी सीरत उम्दा और मज़बूत हो जायेगी। और जिसने ना मुवाफ़िक़ ग़िज़ा खाने में एहतियात बरती उसकी तबीयत दुरुस्त रहेगी लिहाज़ा इक्तेफ़ा व क़नाअत का फल, सफ़ाए मारेफ़त है और तक़वा का नतीजा पाकीज़ा अख़लाक़ से मुज़य्यन होता है और ग़िज़ा में एहतियात का समरा तंदुरुस्ती का ज़ामिन है।

मतलब यह है कि जो अल्लाह तआला पर इक्तेफ़ा करता है, उसकी मारेफ़त पाक व साफ़ हो जाती है और जो मामलात में तक़वा का दामन थामे रहता है उसकी आदत व ख़सलत दुनिया व आख़ेरत में उम्दा हो जायेगी जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो रात में नमाज़ की कसरत रखता है उसका चेहरा दिन में दमकता चमकता रहता है। एक हदीस में वारिद है कि रोज़े क़ियामत अहले तक़वा इस शान से लाये जायेंगे कि उनके चेहरे मुनव्वर नूरी तख़्त पर जल्वा फ़गन होंगे और जो ग़िज़ा में एहतियात बरतता है उसका जिस्म बीमारी से और उसका नफ़्स ख़्वाहिशात से महफ़ूज़ रहता है समअ व ताअत में यह कलाम जामेअ है।

५२- हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन सुहेल आमली रहमतुल्लाह अलैहि

तरीक़त के इमामों में एक बुजुर्ग, शैख़े अहले मामला, हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन सुहेल आमली रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अपने ज़माना में बुजुर्गतरीन अकाबिर मशायख़ में से महरम असरार थे। इल्मे तफ़सीर व क़िरअत के आलिम व लतायफ़े कुरआन बयान करने में ख़ासुकर माहिर थे। हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह के अकाबिर मुरीदों में से थे। हज़रत इब्राहीम मारसतानी की सोहबत पाई। हज़रत अबू सईद ख़राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि आप का बहुत एहतेराम करते थे और आप के सिवा किसी को तसव्वुफ़ में मुसल्लम व मोतबर न गरदानते थे। आपका इरशाद है कि-

तबीयतों की मरगूबात से चैन व राहत पाने वाला शख़्स दरजाते हक़ायक़ से महरूम रह जाता है।

यानी जो तबई मरगूबात से ऐश व आराम हासिल करेगा वह हक़ीक़त से महरूम रहेगा इसलिये तबायअ नफ़्स के आलातो औज़ार हैं और नफ़्स जाये हिजाब और हक़ीक़त मक़ामे कश्फ़ है। मुरीद महजूब, मकाशिफ़ के बराबर चैन व राहत नहीं पाता। लिहाज़ा हक़ायक़ का इदराक कश्फ़ का महल है और यह हक़ीक़त, मरग़ूबाते तबअ से एराज़ करने में वाबस्ता है तबायअ की रग़बत दो चीज़ों से होती है। एक दुनिया और उसकी चीज़ों से दूसरे आख़ेरत और उसके अहवाल से। लिहाज़ा जो दुनिया से उलफ़त व रग़बत रखता है वह तो हम जिन्स होने की वजह से है लेकिन आख़रत से उलफ़त रखना, ज़न व गुमान की बिना पर हैं जो बे देखी और ग़ैर जिन्स है आख़ेरत से उलफ़त, गुमान और नाशनाखी ही की वजह से है न कि मुशाहेदा ऐनी से अगर हक़ीक़त की मारेफ़त हो जाये तो वह इस जहान में पिघल जाये और जब इस जहान में पिघल जाता है और दुनिया से क़तअ ताल्लुक़ कर लेता है तो वह तबाय की विलायत से गुज़र जाता है फिर कहीं जाकर कश्फ़ हक़ायक़ का दर्जा हासिल होता है क्योंकि आक़बत को फ़नाए तबअ के बग़ैर सुकून नहीं मिलता क्योंकि तहक़ीक़ उक़्बा में वह चीज़ है जिसका गुज़र बंदे के दिल पर नहीं होता।

आख़ेरत का ख़तरा भी यही है कि इसका रास्ता ख़तरनाक है और उसका कोई ख़तरा ऐसा नहीं जो दुनिया में दिल के अंदर आ सके जबकि आख़ेरत की

मारेफ़ते हक़ीक़त से हमारा ज़ेहन व शऊर अलाहदा है तो तबीयत को उसके तसव्वुरे ऐनी से किस तरह उलफ़त हो सकती है यह बात सही है कि तबीयत को आख़ेरत से उलफ़त गुमान ही की वजह से है।

५३- हज़रत अबुल मुग़ीस हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि

मिनजुमला अकाबिरे तरीक़त मुस्तग़रक़े मअना मुस्तहलिक दावा हज़रत अबुल मुग़ीसुल हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो तरीक़त के मुश्ताक़ और उसके रहीने मन्नत थे। आपका हाल क़वी और हिम्मत बुलंद थी आपके बारे में मशायख़ की रायें मुख़्तलिफ़ हैं। बाज़ मरदूद गरा दानते थे और बाज़ मक़बूल जानते थे। चुनांचे अम्र बिन उस्मान मक्की, अबू याक़ूब नहर जूरी, अबू याक़ूब अक़तअ और अली बिन सुहैल जैसे मशायख़ ने आपको मरदूद क़रार दिया है और हज़रत इब्ने अता मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ अबुल क़ासिम नसरआबादी और तमाम मशायख़ मुतअख़्ख़ेरीन आपको मक़बूल जानते थे। तीसरा तबक़ा ऐसा है जो आपके बारे में तवक़्क़ुफ़ की राह पर क़ायम है उनमें हज़रत जुनैद बग़दादी, शिबली हरीरी, हज़रमी वग़ैरह मशायखे तरीक़त हैं। चौथा तबक़ा ऐसा है जो जादू वग़ैरह की निसबत करता है लेकिन हमारे ज़माने में शैखुल मशायख़ अबू सईद अबुल ख़ैर शैख़ अबुल क़ासिम गरगानी और शैख़ अबुल अब्बास नसक़ानी ने उसे बातिनी असरार पर महमूल किया है। इनके नज़दीक वह बुज़ुर्ग थे। लेकिन उस्ताद अबुल क़ासिम कशीरी फ़रमाते हैं कि अगर वह अरबाबे मानी व हक़ायक़ में से होते तो लोगों की जुदाई इन्हें हक़ से जुदा न होने देती। और अगर वह महजूरे तरीक़त और मरदूदे हक़ होते तो ख़ल्क़ की क़बूलियत से मक़बूल न होते। अब हम बहुक्मे तसलीम हक़, उनके मामले को ख़ुदा के हवाले करते हैं और उनमें जिस क़दर हक़ की निशानिया पाते हैं उतना ही हम उनको बुज़ुर्ग जानते हैं। बहरहाल चंद के सिवा तमाम मशायख़ उनके कमाल फ़ज़्ल, सफ़ाए हाल और कसरते रियाज़त व मुजाहिदा के मुन्किर नहीं हैं। इस किताब में इनके तज़किरे को बयान न करना बद दयानती होगी क्योंकि कुछ ज़ाहिरी लोग उनकी तकफ़ीर करते हैं और उनके मुन्किर हैं। और उनके अहवाल को उज़्र हीला और जादू से मंसूब करते हैं। उनका गुमान है कि हुसैन बिन मंसूर हल्लाज, बग़दादी मुलहिद है जो मुहम्मद बिन

ज़िकरिया का उस्ताद था। और अबू सई करमती का साथी व हमअसर, हालांकि वह और शख़्स है हम जिस हुसैन बिन मंसूर हल्लाज का तज़किरा कर रहे हैं उनके बारे में हमें इख़्तेलाफ़ है वह फ़ारस के शहर बेज़ा के रहने वाले हैं इनके बारे में मशायख़ का जो हिज्र और रद्द है वह उनके दीन व मज़हब पर ताना ज़नी के सिलसिले में नहीं है। बल्कि उनके हाल और कैफ़ियत के बारे में है क्योंकि वह इब्तेदा में सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी के मुरीद हुए फिर बग़ैर इजाज़त लिये उनके पास से चले गये और अम्र बिन उस्मान की सोहबत इख़्तेयार कर ली। फिर उनके पास से भी बग़ैर इजाज़त चले गये और हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुए मगर उन्होंने कबूल न किया और सोहबत की इजाज़त न दी। इस बिना पर मशायख़ उनको महजूर गरदानते थे लिहाज़ा यह महजूरी मामला में है न कि असल तरीक़त में। हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा के इस क़ौल पर ग़ौर करो फ़रमाया-

मैं और हल्लाज दोनों एक ही राह के राही हैं मुझे मेरी वारफ़तगी ने निजात दी और उनको उनकी अक़्ल ने ख़राब कर दिया।

अगर वह ऐसे ही मतऊन व मरदूद होते तो शिबली यह न फ़रमाते कि मैं और हल्लाज एक ही राह के राही हैं। और हज़रत मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

हल्लाज रब्बानी आलिम हैं।

इसी तरह के और भी अक़वाल हैं जिससे मालूम होता है कि मशायख़ तरीक़त की नाख़ुशी और आक़ कर देना तरीक़त में हिजरान व वहशत का बाइस होता है।

हज़रत हल्लाज अलैहिर्रहमा की तसानीफ़ बकसरत हैं और अहवाल व फ़रूअ में उनका रुमूज़ व कलाम मुहज़्ज़ब है।

हज़रत सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने बग़दाद और उसके गिर्द व नवाह में उनकी तसानीफ़ में से पचास किताबें देखी हैं और कुछ ख़ुज़स्तान, फ़ारस और ख़ुरासान में भी हैं। तमाम किताबों में ऐसी ही बातें थीं जिस तरह नौ आमूज़ मुरीद ज़ाहिर करता है कुछ क़वी और कुछ कमज़ोर। कुछ आसान और कुछ सख़्त। जब किसी पर तजल्ली-ए-हक़ हो जाती है तो अपनी कुव्वते इस्तेदाद के मुताबिक़ अपने हाल को ज़ाहिर करता है। फ़ज़्ले इलाही उसकी मुआविन व मददगार बन जाती है। और जब कोई बात

मुश्किल व दुश्वार हो बिलखुसूस जबकि बयान करने वाला उजलत व हैरत में इज़हार करे तो उसे उसके सुनने से अवहाम में नफ़रत पैदा होती है और अक़्ल समझने से क़ासिर रह जाती है ऐसे ही वक़्त कहा जाता है कि यह बात ऊंची है और कुछ लोग जहालत से इंकार करते हैं और कुछ जहालत से इक़रार कर लेते हैं। इनका इक़रार भी इनके इंकार के मानिंद है। लेकिन जब मुहक्किक़ और अहले बसीरत देखते हैं तो वह इबारत में न अटकते हैं न हैरत व ताज्जुब करते हैं वह मदह व ज़म से बे ताल्लुक़ होकर इंकार व इक़रार से दामन को बचा कर गुज़र जाते हैं।

लेकिन वह लोग जो इस जवांमर्द के हाल पर सहर व जादू से निसबत देते हैं तो यह मुहाल है इसलिये कि अहले सुन्नत व जमाअत के उसूल में सहर व जादू इसी तरह हक़ है जैसे करामत हक़ है लेकिन हालते कमाल में सहरा का इज़हार तो कमतर है मगर इस हालत में करामत का इज़हार मारेफ़त है इसलिये कि सहर अगर ख़ुदा की नाराज़गी का मोजिब है तो करामत ख़ुदा की रज़ामंदी की अलामत। यह मस्लए इस्बात करामत के बयान में तश्रीह के साथ बयान किया जायेगा।

अहले सुन्नत के साहेबाने बसीरत का इत्तेफ़ाक़ है कि मुसलमान ज़ियां कार और जादूगर नहीं होते, और न काफ़िर साहबे करामत, क्योंकि जमअे अज़दाद मुहाल है। हज़रत हुसैन हल्लाज जब तक जामए हयात में रहे दुरुस्त कार रहे उम्दा तरीक़ पर नमाज़ अदा करते थे। बकसरत ज़िक्र व अज़कार करते थे। मुतावातिर रोज़ादार रहते थे और पाकीज़ा हम्द वसना किया करते थे और तौहीदे ख़ुदा की निकात बयान करते रहते थे। अगर इनके अफ़आल में सहर होता तो इन सबका सुदूर उनसे मुहाल था। लिहाज़ा सहीह यह है कि करामत थी और करामत बजुज़ वली के मुतहक्किक़ नहीं होती।

अहले सुन्नत में कुछ हज़रात ऐसे हैं जो उनके उसूले इलाही का रद्द करते हैं और उनके कलिमात पर एतेराज़ करते हैं जो इम्तेज़ाज व इत्तेहाद की ताबीर में हैं। यह अल्फ़ाज़ अगरचे ताबीर व बयान में बहुत बुरे हैं लेकिन मफ़हूम व माअ़ने में इतने बुरे नहीं हैं। इसलिये कि मग़लूबुल हाल में सहीह ताबीर की क़ुदरत नहीं होती और अपने ग़ल्बए हाल में उसकी इबारत सही नहीं ला सकता। और यह भी इमकान है कि माअ़ने में इबारत मुश्किल हो और ताबीर करने वाला इज़हार मक़सूद में आसान इबारत लाने से क़ासिर रहा हो। और वह मुन्किरीन

जिनकी फ़हम में उस के माअने सही नहीं आये वह ऐसी सूरत बना दें कि जिससे इंकार का जवाज़ पैदा हो जाये तो ऐसों का इंकार इन्हीं की तरफ़ राजेअ होगा न कि माअने में। वईं हमा मैंने बग़दाद और उसके गिरदो नवाह में ऐसे मुलहिदों को देखा है जो उनकी पैरवी का दावा करते हैं और अपनी जिंदोक़ी की दलील में उनका कलाम पेश करते हैं और वह खुद को हल्लाजी कहलवाते हैं इनके बारे में ऐसा ग़लू करते हैं जैसे रवाफ़िज़ मुहब्बते अली के दावे में। इनके ऐसे कलिमात का रद्द इंशाअल्लाह उस बाब में लाऊंगा जहां जुदा जुदा फ़िरक़ों का तज़किरा होगा।

हासिले बहस यह है कि सलामती इसी में है कि इनके कलाम को मुक़्तदा न बनाया जाये। इसलिये कि वह अपने हाल में मग़लूब थे मुतमक्किन के कलाम की ही इक़्तेदा करनी चाहिये।

अलहम्दोलिल्लाह हज़रत हुसैन बिन हल्लाज मुझे दिल से मरगूब व महबूब हैं लेकिन इनका तरीक़ किसी असल पर क़ायम नहीं और न किसी हाल पर उनकी इस्तेक़ामत है। इनके हालात में फ़ित्ना बहुत है मुझे अपने इब्तेदाए ज़ुहूर के वक़्त उनसे बहुत तक़वियत मिली है और दलायल हासिल हुए हैं इस किताब से पहले मैंने इनके कलाम की शरह लिखी है इसमें दलायल व शवाहिद से उलूम कलाम और उनके सेहते हाल का इसबात किया है और अपनी किताब "मिनहाजुल आबेदीन" में इनकी इब्तेदा उनकी इंतेहा का तज़किरा किया है यहां भी इतना तज़किरा कर दिया है लिहाज़ा जिसके तरीक़ की असल को इतने एतेराज़ात एतेराफ़ात और हीलों से साबित किया जाये इससे ताल्लुक़ और उसकी पैरवी क्यों की जाये? लेकिन जो नफ़सानी ख़्वाहिश का पैरोकार है उसे इस रास्ते से क्या ताल्लुक़? क्योंकि वह ऐसा ही रास्ता तलाश करता है जिसमें कजी और टेढ़ापन हो। चुनांचे हज़रत हुसैन हल्लाज का एक क़ौल यह है कि-

बोलने वाली जुबानें अपनी गोयाई के नीचे हलाक हैं (इनके दिल ख़ामोश हैं)।

यह इबारत सरासर आफ़त है और हक़ीक़ी माअ़ने में यह इबारत एक क़िस्म की बड़ है क्योंकि माअ़ने हासिल हों तो इबारत मफ़क़ूद नहीं होती और जब माअ़ने मफ़क़ूद हों तो इबारत मौजूद नहीं होती बजुज़ इसके इसमें कोई ऐसा गुमान ज़ाहिर हो कि जिसमें तालिब की हलाकत मुज़मिर हो इसलिये कि वह इबारत को गुमान करता है कि यह इसकी हक़ीक़ी माअ़ने हैं।

५४- हज़रत अबू इस्हाक़ इब्राहीम अहमद ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि

मिनजुमला-ए-अइम्मा-ए-अकाबिरे तरीक़त, सरहंगे मुतवक्किलां, सरदारे मुस्तसलेमान हज़रत अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अहमद ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि हैं। जिनका तवक्कुल में बड़ा मर्तबा है। बकसरत मशायख़ की सोहबत पाई आपकी बकसरत निशानियां और करामतें हैं तरीक़त के मामलात में आपकी तसानीफ़ उम्दा हैं। आपका इरशाद है कि-

सारा इल्म दो कलिमों में जमा है एक यह कि अल्लाह तआला ने जिस चीज़ का अंदेशा दिल से उठा दिया है उसमें तकल्लुफ़ न करो। दूसरा यह कि जो कुछ तुम्हें करना है वह तुम पर फ़र्ज़ है उसे ज़ाया न करो यहां तक कि दुनिया व आख़ेरत में उसके मुवाफ़िक़ बन जाओ।

मतलब यह है कि तक़दीर में तकल्लुफ़ न करो, क्योंकि अज़ली क़िस्मत तुम्हारे तकल्लुफ़ से बदल नहीं सकती और इसके किसी हुक्म की बजा आवरी में कोताही न करो क्योंकि नाफ़रमानी तुम्हें अज़ाब में मुब्तला कर देती है।

आपसे कुछ लोगों ने दर्याफ़्त किया कि अजायबात में आपने क्या देखा? आपने फ़रमाया मैंने बकसरत अजायबात देखे हैं लेकिन इससे ज़्यादा अजीब कुछ न था कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने मुझसे इजाज़त चाही कि मैं तुम्हारी मजलिस में शामिल रहूं। मगर मैंने उसे मंजूर न किया। लोगों ने पूछा इसकी क्या वजह? आपने फ़रमाया मेरा मंज़ूर न करना इसलिये न था कि मैं इनसे बेहतर रफ़ीक़ को चाहता था बल्कि मैं डरता था कि मैं किसी ग़ैरे हक़ के साथ एतेमाद करके अपने तवक्कुल को ज़ाया न कर बैठूं। कहीं ऐसा न हो कि नफ़्ल के बदले फ़र्ज़ जाता रहे यह आपका दर्जए कमाल है।

५५- हज़रत अबू हमज़ा बग़दादी बज़ाज़ रहमतुल्लाह अलैहि

मिनजुमला-ए-अइम्मए तरीक़त महरमे सरा परदा तमकीन असास अहले यक़ीन। हज़रत अबू हमज़ा बग़दादी बज़ाज़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर मुतकल्लेमीने मशायख़ में से थे। आप हज़रत मुहासबी के मुरीद, हज़रत सिर्री सक़ती के सोहबत याफ़ता और हज़रत नूरी व ख़ैरुन्निसाज के हम ज़माना थे।

आपने अकाबिर मशायख़ की सोहबत पाई और बग़दाद में मस्जिद साफ़िया में वअज़ फ़रमाया करते थे। तफ़सीर व क़िरअत के आलिम थे। आपकी रिवायाते हदीस बुलंद मर्तबा हैं जिस वक़्त हज़रत नूरी पर इबतिला का ज़माना आया तो आप उनके साथ थे अल्लाह ने सबको निजात अता फ़रमाई। आपका इरशाद है-

जब तुम्हारा जिस्म तुमसे सलामती पाए तो जान लो कि तुमने उसका हक़ अदा कर दिया और जब लोग तुम से महफ़ूज़ रहें तो जान लो कि तुमने इनका हक़ अदा कर दिया।

मतलब यह है कि हक़ दो तरह के हैं। अपने ऊपर अपना हक़ दूसरा अपने ऊपर लोगों का हक़। जब तुमने अपने आपको मासीयत से महफ़ूज़ रखा और दुनिया में सलामती की राह पर क़ायम रहकर आख़ेरत के अज़ाब से उसे बचा लिया तो तुमने उसका हक़ अदा कर दिया। और जब तुमने लोगों को अपनी अज़ीयत से महफ़ूज़ रखा और उनकी बदख़्वाही न की तो तुमने उनका हक़ अदा कर दिया। लिहाज़ा कोशिश करो कि तुम खुद बुराई में न पड़ो और न लोगों को बुराई में डालो। इसके बाद हक़ तआला के हुकूक़ की अदायगी में पूरी कोशिश करो।

५६- हज़रत अबू बकर मुहम्मद बिन मूसा वास्ती अलैहिर्रहमा

मिनजुमला-ए-अइम्मए तरीक़त अपने हक़ के इमाम, आली हाल, लतीफ़े कलाम, हज़रत अबू बकर मुहम्मद बिन मूसा वास्ती रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो मुहक़्क़ेक़ीने मशायख़ में से थे। हक़ायक़ में आपका बहुत बुलंद दर्जा था। तमाम मशायख़ के नज़दीक आप लायक़े तारीफ़ और हज़रत जुनैद के क़दीम मसाहिबों में थे। आपके इज़हार व बयान में ऐसी गहराई होती थी कि असहाब ग़ौर व फ़िक्र की फ़हम से बालातर होती थी। आपने किसी शहर में मुस्तक़िल इक़ामत इख़्तेयार नहीं की। जब आप शहर मरदू में तशरीफ़ लाये तो वहां के लोग आपकी लताफ़ते तबअ और नेक सीरती के गरवीदा हो गये और आपका वअज़ ग़ौर से सुना करते थे उम्र के आख़िरी अय्याम वहीं गुज़ारे। आपका इरशाद है कि-

ज़िक्र करने वाले को उसकी याद में फ़रामोश कुनिंदए ज़िक्र से ज़्यादा गफ़लत होती है।

इसलिये कि जब ख़ुदा को याद रखे और उसके ज़िक्र को भूल जाये तो उसमें कोई मुज़ायक़ा नहीं है ख़राबी तो उसमें है कि तू उसके ज़िक्रको याद रखे और उसे भूल जाये। क्योंकि ज़िक्र और चीज़ है और मज़कूर यानी जिसका ज़िक्र किया जाये और है। लिहाज़ा जब ज़िक्र गुमान पर, ज़ाते मज़कूर से मुंह मोड़े तो उस में गफ़लत ज़्यादा पाई जाती है। बनिसबत इसके कि ऐन मज़कूर की याद को फ़रामोश कर दे और गुमान भी न हो। भूल जाने वाले को निसयान व ग़ैबत की हालत में हुज़ूर का गुमान नहीं रहता। और ज़ाकिर को हालते ज़िक्र व ग़ैबत में ज़ाते मज़कूर के हुज़ूर का गुमान होता है। लिहाज़ा अदम हुज़ूर की हालत में हुज़ूर का गुमान बनिसबत इसके जो ग़ैबत खाली अज़गुमान हो गफ़लत से ज़्यादा नज़दीक है। इसलिये कि तालिबाने हक़ की हलाकत इनके गुमान में है। कहीं गुमान ज़्यादा और माअ़ने कम होंगे और कहीं माअ़ने ज़्यादा और गुमान कम होगा। दर हक़ीक़त इनका गुमान, अक़्ल की इत्तिहाम तराज़ी है और अक़्ल की इत्तिहाम तराज़ी, नफ़्स के इरादा से हासिल होती है। लेकिन हिम्मत का तोहमत से कोई ताल्लुक़ नहीं असल ज़िक्र तो ग़ैबत में होता है या हुज़ूर में जब ग़ायब अज़ ख़ुद ग़ैबत में और हक़ के हुज़ूर में हो तो वहां ज़िक्र नहीं होता बल्कि मुशाहदा होता है और जब बंदा हक़ से ग़ायब और अज़ ख़ुद हाज़िर हो तो वहां भी ज़िक्र नहीं होता, क्योंकि ग़ैबत ग़फ़लत से होती है।

५७- हज़रत अबू बकर बिन दल्फ़ बिन ख़च्चा शिबली अलैहिर्रहमा

मिनजुमलए अइम्मा-ए-तरीक़त सकीनए अहवाल सफ़ीनए मक़ाल हज़रत अबू बकर बिन दल्फ़ बिन ख़च्चा शिबली रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिरे मशायख़ में से थे और सबके नज़दीक क़ाबिले तारीफ़ थे। आपके हालात व मक़ालात बयान हक़ में मुहज़्ज़ब व पाकीज़ा हैं। इशारे लतीफ़ और क़ाबिले सताइश हैं। जैसा कि मुताख़ेरीन मशायख़ फ़रमाते हैं कि दुनिया में तीन बुज़ुर्गों की अजीब व ग़रीब ख़ुसूसियतें हैं एक शिबली के इशारे दूसरे मुरतइश के नुक्ते और तीसरे जाफ़र की हिकायतें।

आप अकाबिरे क़ौम और सादात अहले तरीक़त में से हैं। इब्तेदा में आप ख़लीफ़ए वक़्त के मुक़र्रबे ख़ास थे। हज़रत ख़ैरुन्निसाज की सोहबत में आप ने तौबा की और हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैहि से ताल्लुक़े इरादत क़ायम

किया। बकसरत मशायख़ से मुलाक़ातें कीं।

आपने इरशादे हक़ की तफ़सीर में फ़रमाया-

ऐ नबी मुसलमानों को यह हुक्म पहुंचा दो कि वह अपनी निगाहों को नीचा रखें यानी सरों की आंखों को ना महरमों की तरफ़ शहवत के साथ देखने से बचायें और दिलों की आंखों को ग़ैरुल्लाह की तरफ़ देखने से महफ़ूज़ रखें।

मतलब यह है कि दिल की आंख को अनवाअ-ए-फ़िक्र से महफ़ूज़ रखो उसे दीदार व मुशाहदा के सिवा और किसी से सरोकार न रखो। लिहाज़ा ख़्वाहिशात की पैरवी और नामहरमों की तरफ़ नज़र ग़फ़लत से होती है। और ग़ाफ़िलों के लिये अहानत आमेज़ मुसीबत यह है कि वह अपने ऐबों से जाहिल होते हैं जो शख़्स दुनिया में जाहिल है वह आख़िरत में भी जाहिल होगा। हक़ तआला फ़रमाता है-

जो इस जहान में अंधा है वह आख़ेरत में भी अंधा होगा।

दर हक़ीक़त जब तक अल्लाह तआला किसी के दिल से शहवानी ख़्यालात को दूर न फ़रमाये उस वक़्त तक सर की आंखें इसके ग़वामिज़ से महफ़ूज़ नहीं होतीं और जब तक अल्लाह तआला अपनी मुहब्बत और अपना इरादा किसी के दिल में जा गुज़ीं न करे उस वक़्त तक दिल की आखें ग़ैर के नज़ारे से महफ़ूज़ नहीं रहतीं।

आप बयान करते हैं कि एक दिन मैं बाज़ार गया तो लोग कहने लगे यह पागल है। मैंने उनको जवाब दिया। मैं तुम्हारे नज़दीक पागल हूं और तुम मेरे नज़दीक होशियार हो लिहाज़ा अल्लाह तआला मेरे जुनून को और ज़्यादा करे और तुम्हारी सेहत को और बढ़ाये क्योंकि मेरा जुनून शिद्दते मुहब्बत में है और तुम्हारी सेहत क़वी ग़फ़लत की वजह से है। लिहाज़ा अल्लाह तआला मेरी दीवानगी को बढ़ाये ताकि इससे मेरी क़ुरबत और ज़्यादा हो और तुम्हारी होशियारी और ज़्यादा करे ताकि इससे और ज़्यादा दूरी हो जाये। यह फ़रमान ग़ैरतमंदी की वजह से है। ताकि आदमी ऐसा न बने कि वह सेहत व दीवानगी में फ़र्क़ न कर सके।

५८- हज़रत अबू मुहम्मद बिन जाफ़र बिन नसीर ख़ालिदी अलैहिर्रहमा

मिन जुमलए अइम्मए तरीक़त, नरमी-ए-गुफ़्तार से हिकायत कुनन्दा

अहवाले औलिया हज़रत अबू मुहम्मद जाफ़र नसीर ख़ालिदी अलैहिर्रहमा हैं। आप हज़रत जुनैद के असहाबे किबार और मुतक़द्देमीने मशाइख़ में से हैं। फ़ुनूने तरीक़त के मुतबह्हिर आलिम, इतकामीने मशायख़ के मुहाफ़िज़ थे। हर फ़न में आपका कलाम अरफ़ा है तर्क रऊनत के हर मसले में हिकायात बयान की हैं यहां पर इस का हवाला किसी दूसरे की तरफ़ किया है आपका इरशाद है कि-

मुतवक्कुल वह है कि इसके दिल में वजूद और अदम बराबर हों।

मतलब यह कि रिज़्क़ पाने से दिल ख़ुश न हो और उसके न होने से दिल ग़मगीन न हो। इसलिये कि जिस्म मालिक का मिल्क है और उसकी परवरिश और उसकी हलाकत दोनों मालिक ही के क़ब्ज़े में हैं और वह अपने मिल्क को तुमसे ज़्यादा जानता है वह जैसा चाहे रखे। तुम उसमें दख़ल न दो। मिल्कियत को मालिक के हवाले करके उससे ला ताल्लुक़ हो जाओ।

आप बयान करते हैं कि मैं एक दिन हज़रत जुनैद अलैहिर्रहमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उनको बुख़ार में मुब्तला पाया। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ उस्ताद!आप हक़ तआला से दुआ करें कि वह सेहत बख़्शे। हज़रत जुनैद ने फ़रमाया मैंने कल दुआ की थी कि मेरे दिल में आवाज़ आयी कि ऐ जुनैद! तुम्हारा जिस्म, हमारी मिल्कियत है हमें इख़्तेयार है चाहे तंदुरुस्त रखें या बीमार। तुम कौन हो कि हमारे और हमारी मिल्कियत के दर्मियान दख़ल दो। अपना इख़्तेयार ख़त्म कर दो ताकि बंदे हो जाओ।

५९- हज़रत अबू अली मुहम्मद बिन क़ासिम रूदबारी अलैहिर्रहमा

मिन जुम्ला-ए-अइम्मए तरीक़त शैख़े महमूद मअदने जूद, हज़रत अबू अली मुहम्मद बिन क़ासिम रूदबारी अलैहिर्रहमा हैं जो अकाबिर जवांमर्दाने सूफ़िया के सरख़ैल थे। ख़ानदाने सलातीन से ताल्लुक़ रखते थे फ़ुनूने मामलात में अज़ीम मर्तबा थे आपके मनाक़िब व निशानियां बकसरत और मारफ़त व तरीक़त के दक़ायक़ में कलाम लतीफ़ हैं। आपका इरशाद है-

मुरीद वह है जो अपने लिये कुछ न चाहे बजुज़ उसके जो अल्लाह तआला उसके लिये चाहे। और मुराद वह है जो दोनों जहां से बजुज़ ख़ुदा किसी चीज़ को न चाहे।

मतलब यह है कि हक़ तआला के इरादे पर राज़ी रहकर अपने लिये कोई

ख़्वाहिश न रखे ताकि वह मुरीदे सादिक़ बन जाये। मुहिब को ज़ेबा है कि अपना कोई इरादा न हो ताकि ख़ुदा ही उसकी मुराद हो। गोया वह हक़ तआला ही को चाहे और किसी ग़ैर की तलब न रखे। और वही चाहे जो ख़ुदा चाहे क्योंकि उसे हक़ चाहता है लिहाज़ा वह बजुज़ हक़ के किसी को न चाहे। चूंकि तसलीम व रज़ा तरीक़त का इब्तेदाई मक़ाम है और ख़ूबियत के साथ मुहब्बत करना अहवाल की इंतेहा है। अबूदियत के तहक्कुक़ से मक़ामात की निसबत है और ख़ूबियत की ताईद से अहवाल की मंज़िलत है जब यह कैफ़ियत पैदा हो जायेगी तो मुरीद बख़ुद क़ायम और मुराद बहक़ क़ायम हो जायेगा।

६० हज़रत अबुल अब्बास क़ासिम बिन मेहदी सय्यारी रहमतुल्लाह अलैहि

मिनजुमला-ए-अइम्मए तरीक़त ख़ज़ीनादारे, तौहीद, समसारे तफ़रीद हज़रत अबुल अब्बास क़ासिम बिन मेहदी सय्यारी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अपने ज़माना के इमाम और उलूमे ज़ाहिर और फुनूने हक़ायक़ के आलिम थे। हज़रत अबू बकर वास्ती के सोहबत याफ़ता, बकसरत मशायख़ से अदब गिरफ़ता सूफ़िया की सोहबत में अज़हमा अशरफ़ और राहे उलफ़त में ज़रीफ़तर थे। आपका कलाम बुलंद और तसानीफ़ उम्दा हैं। आपका इरशाद है-

तौहीद यह है कि दिल में हक़ तआला के सिवा किसी दूसरे का तसव्वुर न हो।

दिल के असरार पर किसी मख़लूक़ का गुज़र न हो और न मामलात की पाकीज़गी में कोई कदूरत हो। इसलिये कि ग़ैर का अंदेशा ग़ैर के इसबात से है जब ग़ैर का इसबात है तो हुक्मे तौहीद साक़ित है।

हज़रत अबुल अब्बास सय्यारी के बारे में मशहूर है कि आप मरू के इलाक़ा के एक बड़े रईस थे कि कोई शख़्स दौलत और मर्तबा में आप से बढ़कर न था आपने अपने वालिद की मीरास में बहुत माल व दौलत पाया था। लेकिन यह तमाम माल व मनाल देकर आप हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो मूए मुबारक हासिल कर लिये। अल्लाह तआला ने आपको इन मूए मुबारक की बरकत से सच्ची तौबा अता फ़रमाई और हज़रत अबू बकर वास्ती की सोहबत में रहकर ऐसा कमाल पाया कि सूफ़िया के इमामे हक़ हो गये।

आप फ़रमाया करते थे कि मुझे जो कुछ मिला इन मूए मुबारक की बरकत से मिला। जब आप दुनिया से रिहलत फ़रमाने लगे तो वसीयत की कि वह मूए मुबारक को मेरे मुंह में रख देना चुनांचे ऐसा ही किया गया। उसी का असर है कि मरू में आज भी आपकी क़ब्र का निशान है लोग मज़ारे मुबारक पर हाज़िर होकर मुरादें मांगते हैं और हले मुश्किलात की दुआयें करते हैं और उनकी मुरादें पूरी होती हैं और मुश्किलें आसान होती हैं। यह आज़मूदा है।

६१- हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन खफ़ीफ़ अलैहिर्रहमा

मिन जुमलए अइम्मा तरीक़त अपने ज़माने में तसव्वुफ़ के मालिक, हज़रत अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं। आप की तबीयत तकल्लुफ़ व तसर्रुफ़ से पाक थी। अनवाअ-ए-उलूम में अपने वक़्त के इमाम थे मुजाहिदा अज़ीम हक़ायक में बयान शाफ़ी और हाल उम्दा था। आपकी तसानीफ़ से पता चलता है कि आप ने हज़रत इब्ने अता, हज़रत शिबली, हुसैन बिन हल्लाज, मंसूर हरीरी और मक्का मुकर्रमा में हज़रत याकूब नहरजूरी की सोहबत पाई थी। आप शाही खानदान से ताल्लुक़ रखते थे लेकिन अल्लाह तआला ने तौबा की तौफ़ीक़ बख़्शी और बादशाहत छोड़कर राहे तरीक़त इख़्तेयार कर ली। आपका बातिन, अहले माअ़ने के बातिन पर फ़ायक़ था। आपका इरशाद है -

तबीयत से मुंह मोड़ने ही में तौहीद का क़ियाम है।

इसलिये कि तबीयत सरापा हिजाब है जो ख़ुदा की नेमतों से महजूब व अंधा कर देती है लिहाज़ा जब तक तबीयत से मुंह न मोड़ा जाये उस वक़्त तक विसाले हक़ मुमकिन नहीं और साहबे तबअ, हक़ीक़ते तौहीद से हिजाब में रहता है। जिस वक़्त तबीयत की आफ़तों से बाख़बर हो गया उस वक़्त हक़ीक़ते तौहीद मुनकशिफ़ हो जायेंगी आपके दलायल बकसरत हैं।

६२- हज़रत अबू उस्मान सईद बिन सलाम मग़रबी अलैहिर्रहमा

मिनजुमला-ए-अइम्मए तरीक़त, सैफ़े सियादत आफ़ताबे निजाबत हज़रत अबू उस्मान सईद बिन सलाम मग़रबी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अहले

इस्तेकामत बुजुर्गों से थे साहबे रियाज़त व सियासत और फुनूने इल्म में कामिल महारत रखते थे। रिवायात में मानिंद आफ़ताबे निजाबत थे आपकी निशानियाँ बकसरत और बराहीन उम्दा हैं। आपका इरशाद है-

जो दरवेशों की सोहबत पर तवंगरी की हम नशीनी को तरजीह देता है अल्लाह तआला उसे दिल की मौत में मुब्तला कर देता है।

इसलिये जब दरवेशों की मजलिस के मुकाबले में तवंगरों की सोहबत इख़्तियार करेगा तो उसका दिल हाजत की मौत से आप ही मर जायेगा और उसका जिस्म वहम व गुमान में गिरफ़्तार हो जायेगा। जब कि मजलिस छोड़ने का नतीजा दिल की मौत है तो सोहबत से एराज़ का क्या अंजाम होगा? इन मुख़्तसर कलिमात में सोहबत और मजानसित का फ़र्क़ ज़ाहिर है।

६३- हज़रत अबू क़ासिम इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन नसराबादी अलैहिर्रहमा

मिनजुमलए अइम्मए मुतक़द्दमीन सूफ़िया के सफ़ के बहादुर आरिफ़ों के अहवाल के मअबर हज़रत अबुल क़ासिम इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन महमूद नसराबादी रहमतुल्लाह हैं। जिस तरह नीशापुर में ख़्वारज़म बादशाह थे और शाहपुर में हमविया बादशाह गुज़रे हैं इसी तरह आप नीशापुर में बुलंद मर्तबा पर फ़ायज़ थे। फ़र्क़ यह था कि वह दुनिया की इज्ज़त रखते थे और आप आख़ेरत की इज्ज़त से मालामाल। आपका कलाम अनोखा और निशानियाँ बहुत हैं हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा के मुरीद और मुतअख़्ख़िरीन अहले ख़ुरासान के उस्ताद थे। अपने ज़माना में हर फ़न में अअ़लम व औरअ़ थे। आपका इरशाद है-

यानी तुम दो निसबतों के दर्मियान हो एक निसबत हज़रत आदम की तरफ़ है और दूसरी निसबत हक़ तआला की तरफ़ है जब तुम आदम की तरफ़ मंसूब होते हो तो शहवत के मैदानों में और आफ़त की ग़लत जगहों और मक़ामात में दाख़िल हो जाते हो। यही वह निसबत है जिससे तुम्हारा बशर होना साबित है इसी निसबत के लिहाज़ से अल्लाह तआला ने फ़रमाया इब्ने आदम बड़ा हजफ़ाकार और ना आक़बत अंदेश वाक़ेय हुआ है। जब तुम अपनी निसबत हक़ तआला से क़ायम करते हो तुम कश्फ़ व बराहीन और इसमत व विलायत के मक़ामात में दाख़िल हो जाते हो यही वह निसबत है जिससे हक़ तआला

की बंदगी का सुबूत मिलता है उसी निसबत के ऐतवार से हक़ तआला ने फ़रमाया रहमान के बंदे ज़मीन पर आजिज़ी से चलते हैं।

पहली निसबत बशरीयत की है और दूसरी निसबत अबूदियत की। निसबते आदम तो क़ियामत में मुनक़तअ हो जायेंगी अलबत्ता निसबते अबूदियत हमेशा क़ायम व दायम रहेगी इसमें तग़य्युर व तबद्दुल जायज़ नहीं रखा गया। जब अपनी निसबत को अपनी तरफ़ या हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से जोड़े तो उसका कमाल यह है कि वह कहे मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की है और जब अपनी निसबत हक़ तआला की तरफ़ करता है तो बंदा उसी का महल बन जाता है कि हक़ तआला फ़रमाये ऐ मेरे बंदे आज तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं।

६४- हज़रत अबुल हसन अली बिन इब्राहीम हिज़्मी अलैहिर्रहमा

मिनजुमलए अइम्मए मुतक़द्दमीन सालेकाने तरीक़ हक़ के सरदार, अहले तहक़ीक़ की जानों के जमाल हज़रत अबुल हसन अली बिन इब्राहीम हिज़्मी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो बारगाहे इलाही के बुज़ुर्गतरीन अहरार बंदों और सूफ़िया किबार के इमामों में से थे आप अपने अहद में बे नज़ीर थे। हर माअ़ने में आपका कलाम अरफ़ा और इबारतें उमदा हैं। आपका इरशाद है-

मुझे अपनी बलाओं में छोड़ दो, सुनो! तुम क्या उसी आदम की औलाद में से नहीं हो जिसे अल्लाह तआला ने अपने दस्ते कुदरत से पैदा करके अपनी तरफ़ से उनमें रूह फूंकी और इन्हें फ़रिश्तों से सज्दा कराया। फिरएक हुक्म दिया तो उसकी भी ख़िलाफ़ वरज़ी की। जब कि शुरू ही में तलछट है तो आख़िर में क्या होगा?

आपके फ़रमाने का मतलब यह है कि अगर आदमी को इसके हाल पर छोड़ दिया जाये तो वह सरासर मुख़ालिफ़े हक़ बन जायेगा और अगर इस पर इनायते हक़ हो जाये तो सरतापा मुहब्बत हो जाये। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने हुस्ने इनायत को समझकर अपने मामलात की बुराई का इससे मवाज़ना करते रहना चाहिये और अपनी तमाम उम्र उसी मुवाज़ने में गुज़ार देनी चाहिये।

यह है सल्फ़ के बरगुज़ीदा मुतक़द्दमीन का मुख़्तसर तज़किरा। अगर मैं इस किताब में तमाम बुज़ुर्गों का तज़किरा करता या तशरीह व तफ़सील के दरपे होता और इनके तमाम हालात व वाक़ियात को दर्ज करता तो असल मक़सूद

फ़ौत हो जाता। तवालत के ख़ौफ़ से इसी पर इक्तेफ़ा किया जाता है अब कुछ मुतअख़्ख़ेरीन सूफ़िया का तज़किरा शामिल करता हूं।

मुतअख़्ख़ेरीन अइम्मा व मशायख़ का तज़किरा

वाज़ेह रहना चाहिये कि हमारे ज़माने में एक गरोह ऐसा है जो रियाज़त का बोझ बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखता और बे रियाज़त मर्तबा का ख़्वाहां है और वह तमाम सूफ़िया को अपना ही जैसा काहिल ख़्याल करता है। जब वह इन सूफ़िया की बातें सुनते हैं और इनके इज़्ज़त व मर्तबा को देखते हैं और इनके मामलात को पढ़ते हैं और फिर अपने आप पर नज़र डालते हैं तो ख़ुद को इनसे बहुत दूर पाते हैं। उस वक़्त तसव्वुफ़ को छोड़ देते हैं और कहते हैं कि हम ऐसे बा-हिम्मत लोग नहीं हैं और न हमारे ज़माने में ऐसे हज़रात नज़र आते हैं हालांकि इनका यह कहना बातिल इसलिये है कि अल्लाह तआला ज़मीन को हरगिज़ बे हुज्जत न छोड़ता और इस उम्मत को बग़ैर वली के कभी नहीं रखता। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा ख़ैर व हक़ पर ता क़ियामत क़ायम रहेगी नीज़ फ़रमाया मेरी उम्मत के चालीस अफ़राद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ख़ल्क़ पर हमेशा मौजूद रहेंगे। इनमें से कुछ अफ़राद का तज़किरा इस जगह ला रहा हूं अगरचे कुछ हज़रात दुनिया से कूच करके बहिश्त में आराम पज़ीर हैं और कुछ ज़िन्दा हैं।

१- हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद क़स्साब अलैहिर्रहमा

मिनजुमला-ए-मुतअख़्ख़ेरीन आइम्मा तरीक़त, तराज़ तरीक़े विलायत जमाल अहले हिदायत, हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद क़स्साब रहमतुल्लाह हैं आपने मावराउन्नहर के सूफ़िया, मुतक़द्देमीन से मुलाक़ात की और उनकी सोहबत में रहे। आप उलू-ए-हाल सिद्क़ फ़िरासत, कसरते बुरहान और जुहद व करामत में मशहूर व मारूफ़ थे। इमाम तबरस्तान हज़रत अबू अब्दुल्लाह ख़्याती अली फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का एक फ़ज़ल यह है कि वह किसी को बग़ैर तालीम के ऐसा बना देता है कि जब हम को उसूले दीन और तौहीद के दक़ायक़ में कोई मसला दुश्वार व मुश्किल नज़र आता है तो हम उनसे जाकर हल कर लेते हैं वह हज़रत अबुल अब्बास क़स्साब हैं।

चूंकि आप उम्मी थे लेकिन इल्मे तसव्वुफ़ और उसूले दीन में आपका कलाम बहुत अरफ़ा था। आपकी हालते इब्तेदा व इंतेहा बहुत आला और नेक सीरत थी।

अगरचे मुझे आपकी बहुत सी हिकायतें सुनाई गयी हैं लेकिन मेरा तरीक़ इस किताब में इख़्तेसार है इसलिये आपकी एक हिकायत बयान करता हूं।

हिकायत

एक बच्चा ऊंट पर बोझ लादे उसकी नकेल पकड़े आमिल के बाज़ार में जा रहा था। उस बाज़ार में कीचड़ बहुत थी ऊंट का पांव फिसला। वह गिर पड़ा और उसका पांव टूट गया। लोगों ने चाहा कि ऊंट की कमर से बोझ उतार लें लेकिन बच्चा हाथ उठाकर दुआयें मांग रहा था और रोता जा रहा था इत्तेफ़ाक से इधर हज़रत अबुल अब्बास का गुज़र हुआ आपने पूछा क्या बात है? लोगों ने कहा ऊंट का पांव टूट गया है। आपने ऊंट की नकेल थामी और आसमान की तरफ़ मुंह करके दुआ मांगी कि ऐ ख़ुदा! इस ऊंट का पांव ठीक कर दे और अगर तू दुरुस्त करना नहीं चाहता तो इस क़स्सावी का दिल बच्चे के रोने से क्यों जलाता है उसी वक़्त ऊंट खड़ा हो गया और दौड़ने लगा।

आपका इरशाद है कि सारे आलम को ख़्वाह वह चाहें या न चाहें बहर तोर ख़ुदा की ख़ू से ख़ूगीर होना चाहिये वरना वह रंज में रहेंगे। इसलिये कि जब तुम हक़ तआला की ख़सलत के आदी बन गये तो बला व इब्तेला की हालत में रग़बत ज़्यादा पाओगे क्योंकि बला पर बला नहीं आती। अगर हक़ के ख़ूगर न होगे तो बला की हालत में तुम आज़ुरदा दिल होगे क्योंकि अल्लाह तआला ने ख़ुशी सख़्ती दोनों मुक़द्दर फ़रमाये हैं। वह अपनी तक़दीर को बदलता नहीं है लिहाज़ा इसके हुक्म पर हमारा राज़ी होना हमारी राहत का सबब होगा। और जो भी इसका आदी होगा उसका दिल राहत पायेगा और उसे एतेराज़ करोगे तो तक़दीस के नाज़िल होने पर आज़ुरदा होगे।

२ हज़रत अबू अली बिन हुसैन बिन मुहम्मद दक़्क़ाक़ अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा मुतअख़्ख़ेरीन बयाने मुरीदां, बुरहाने मोहक़्क़ेक़ां हज़रत अबू अली बिन हुसैन बिन मुहम्मद दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाह अलैहि हैं अपने फ़न के इमाम, ज़माना में बे नज़ीर और कश्फ़े राहे हक़ में बयान सरीह और ज़ुबान

नसीह रखते थे बकसरत मशायख़ से मुलाक़ात की और उनकी सोहबत पायी आप हज़रत नसराबादी के मुरीद थे वअज़ व नसीहत फ़रमाया करते थे। आपका इरशाद है-

जो हक़ तआला के सिवा किसी और से उन्स रखे वह अपने हाल में कमज़ोर है और जो उसके ग़ैर की बात करे वह अपने कलाम में झूटा है। इसलिये कि ग़ैर से उन्स रखना मारेफ़त की कमी की बिना पर है और ख़ुदा से उन्स रखना ग़ैर की वहशत से महफ़ूज़ रहना है। और जो ग़ैर से डरने वाला होता है वह ग़ैर से बात तक नहीं कर सकता।

एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि एक दिन मैं उनकी मजलिस में इसलिये गया कि मैं उनसे मुतवक्केलीन का हाल दर्याफ़्त करूं। आप उस वक़्त तबरी का नफ़ीस अमामा सर पर बांधे हुए थे। मेरा दिल दस्तार पर मायल हो गया। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि ऐ शैख़! तवक्कुल क्या है आपने फ़रमाया यह है कि तुम लोगों की दस्तार की लालच न करो यह फ़रमाकर अपना अमामा मेरे आगे डाल दिया।

३- हज़रत अबुल हसन अली बिन अहमद ख़रक़ानी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़ेरीन शर्फ़ अहले ज़माना दर ज़माना ख़ुद यगाना हज़रत अबुल हसन अली बिन अहमद ख़रक़ानी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो बरगुज़ीदा जलीलुल क़द्र मशायख़ में से हैं। तमाम औलिया के ममदूह रहे। हज़रत शैख़ अबू सईद ने इनकी ज़्यारत का क़स्द किया। उन्होंने इनके साथ हर फ़न के लतीफ़ मुहावरात इस्तेमाल किये। जब वापसी का अज़्म किया तो फ़रमाया मैं आपको अपने ज़माने का साहबे विलायत और बरगुज़ीदा शख़्स मानता हूं। और आपकी बातें हुस्ने अदब से सुनी हैं। हालांकि वह शैख़ अबू सईद के ख़ादिम थे। और जब यह शैख़ उनके पास पहुंचते तब भी उनसे कोई बात न करते। वह इनकी बातें सनुते रहते और बात का जवाब देते रहते। इसके सिवा कुछ न फ़रमाते मैंने उनसे दर्याफ़्त किया ऐ शैख़! आप ने ऐसी ख़ामोशी किस लिये इख़्तेयार फरमाई आपने फ़रमाया एक ही शख़्स बयान करने के लिये काफ़ी है। हज़रत उस्ताज़ अबू क़ासिम कुरैशी रहमतुल्लाह अलैहि से मैंने सुना वह फ़रमाते हैं कि जब वह ख़रक़ान की विलायत में दाख़िल हुआ तो उस बुज़ुर्ग

के जलाल व दबदबा की वजह से मेरी फ़साहत जाती रही और मेरी तमाम नुक्ता चीनियां ख़त्म हो गयीं। मैंने ख़्याल किया कि शायद मैं अपनी विलायत से मअ़ज़ूल कर दिया हूं।

आपका इरशाद है कि रास्ते दो हैं। एक गुमराही का दूसरा हिदायत का जां रास्ता गुमराही का है वह बंदे का रास्ता ख़ुदा की तरफ़ है और जो रास्ता हिदायत का है वह ख़ुदा की राह बंदे की तरफ़ है। लिहाज़ा जो यह कहे कि मैं हक़ तक पहुंच गया वह नहीं पहुंचा और जो यह कहे कि मुझे उस तक पहुंचा दिया गया है वह पहुंच गया। इसलिये कि जो ख़ुद बख़ुद इस तक पहुंचने का दावा करता है गोया वह बग़ैर पहुंचाने वाले के दावे करता है है और यह कहता कि मैं ख़ुद नहीं पहुंचा, पहुंचाया गया हूं तो यह पहुंचने से मुताल्लिक़ है।

४- हज़रत मुहम्मद बिन अली अलमारूफ़ ब-दास्तानी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन, बादशाहे वक़्त, अपने ज़माना में बयान व ताबीर में मुनफ़रिद हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली अल मारूफ़ ब-दास्तानी अलैहिर्रहमा हैं जो बुस्ताम के रहने वाले अनवा-अ-ए-उलूम के आलिम और बरगुज़ीदए बारगाहे हक़ थे। आपका कलाम मुहज़्ज़ब और इशारात लतीफ़ हैं। इस इलाक़ा के इमाम शैख़ सहलकी रहमतुल्लाह अलैहि आपके साथ ख़ुश एतेक़ादी रखते थे। मैंने इनके कुछ अनफ़ास शैख़ सहलकी से सुने हैं। वह बहुत बुलंद और ख़ुश अख़लाक़ थे। आपका इरशाद है-

तुमसे मुताल्लिक़ तौहीद मौजूद है लेकिन तुम तौहीद में ग़ैर मौजूद हो। क्योंकि तौहीद का इक़्तेज़ा है इस पर तुम क़ायम नहीं हो। तौहीद का अदना दर्जा है कि मिल्कियत में अपना तसर्रुफ़ व इख़्तेयार ख़त्म कर दिया जाये और अपने तमाम उमूर ख़ुदा के हवाले करके इस पर साबित क़दम रहे।

हज़रत सहलकी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि शहर बुस्ताम में एक मर्तबा टिड्डी दल ने यलग़ार की और उनकी कसरत से तमाम दरख़्त और खेतियां स्याह हो गयीं सब लोग हाथ मलते हुए दलफ़िगार निकले हज़रत शैख़ ने मुझसे पूछा यह कैसा शोर व गुल है? मैंने बताया कि टिड्डियां आ गयी हैं लोग परेशान हैं। शैख़ उठे और छत पर चढ़कर मुंह आसमान की तरफ़ उठाया उस वक़्त तमाम टिड्डियां उठ गयीं और ज़ुहर की नमाज़ तक एक टिड्डी बाक़ी न रही और किसी दरख़्त का एक पत्ता तक ज़ाया न हुआ।

५ हज़रत फ़ज़लुल्लाह बिन मुहम्मद महमीनी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन,, शहंशाहे मुहिब्बां, मलिकुल मलूके सूफ़ियां, हज़रत अबू सईद फ़ज़लुल्लाह बिन मुहम्मद महमीनी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो सुल्ताने वक़्त और जमाले तरीक़त थे तमाम लोग आप से मसख़्ख़र थे कुछ आपके दीदारे जमाल से और कुछ अक़ीदत से और कुछ कुव्वते हाल से। आप फुनूने उलूम के आलिम और निराली शान रखते थे। असरारे इलाही से मुशर्रफ़ हज़रात में आपका मर्तबा बुलंद था इलावा अज़ीं आपकी निशानियां और बराहीन बकसरत हैं और आज भी जहान में इनके आसार ज़ाहिर हैं। आपका इब्तेदाई हाल यह है कि आप महीना से तहसीले इल्म के लिये सरख़स आये हज़रत अबू अली ज़ाहिद के दर्स में बैठे। आप इनसे एक दिन में तीन दिन का दर्स लेते और तीन दिन इबादत में गुज़ारते यहां तक कि आपके उस्ताद ने आपके रुश्द का हाल देखा तो ताज़ीम व तकरीम में इज़ाफ़ा कर दिया। उस ज़माने में सरख़स का हाकिम शैख़ अबुल फ़ज़्ल हसन था। एक रोज़ आप नहर के किनारे जा रहे थे कि सामने से अबुल फ़ज़ल आते दिखाई दिया। वह कहने लगा ऐ अबू सईद तुम्हारा रास्ता यह नहीं है जिस पर तुम चल रहे हो अपनी राह चलो। आपने इससे कुछ तअर्रुज़ न किया और पलट कर अपनी जगह आ गये और रियाज़त व मुजाहिदा में मशगूल हो गये। यहां तक कि हक़ तआला ने आप पर हिदायत का दरवाज़ा खोल दिया और मरातिबे आलिया पर फ़ायज़ कर दिया।

हज़रत शैख़ अबू मुस्लिम फ़ारसी ने मुझे बताया कि मेरी उनसे बड़ी छेड़छाड़ रहती थी एक मर्तबा मैं उनसे मिलने गया उस वक़्त में मैली सी एक गुदड़ी पहने हुए था जब मैं मकान के अंदर उनके रूबरू पहुंचा तो इन्हें दीबाए मिसरी पहने हुए तख़्त पर बैठे देखा। मैंने दिल में कहा यह इस ठाट बाट के साथ बूद व बाश पर दरवेशी का दावा करते हैं और मैं उन तमाम इलाक़ों से मुजर्रिद रहकर दरवेशी का मुद्दई हूं इनके साथ मेरी मुवाफ़िक़त कैसे होगी? वह मर्दे खुदा मेरे इस दिली ख़दशा से ख़बर हो गया सर उठा कर फ़रमाया-

ऐ अबू मुस्लिम! तुम ने किस किताब में पाया है कि जिसका दिल मुशाहदा हक़ में क़ायम हो उस पर नामे फ़कर (नादारी व मुफ़लिसी) लिखा है।

ज़िन्दगी गुज़ारी। आप की निशानियां और बराहीन बकसरत हैं लेकिन आप आम सूफ़िया के रस्म व लिबास के पाबंद न थे। अहले रूसूम से सख़्त बेज़ार थे मैंने आपसे बढ़कर रोब व दबदबा वाला किसी मर्दे ख़ुदा का कभी न देखा। आपका इरशाद है-

दुनिया एक दिन की है और हम इसमें रोज़ादार हैं।

मतलब यह है कि हम न तो दुनिया से कुछ हासिल करने की ख़्वाहिश करते हैं और न इसको बंदिश में आना चाहते हैं। हमने इसकी आफ़तों को देख लिया है और इसकी हिजाबात से बाख़बर हो चुके हैं हम इससे भागते हैं।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं वुज़ू वक़्त करते आपके हाथों पर पानी डाल रहा था मेरे दिल में ख़्याल गुज़रा कि जब तमाम काम क़िस्मत व तक़दीर पर मुनहसिर हैं तो आज़ाद लोग क्यों करामत की ख़्वाहिश में मुरशिदों के गुलाम बनते फिरते हैं। आपने फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! जो ख़्यालात तुम्हारे दिल में गुज़र रहे हैं मैंने जान लिया है लिहाज़ा तुम्हें मालूम होना चाहिये कि हर हुक्म के लिये कोई सबब होता है जब अल्लाह तआला किसी सिपाही बच्चे को ताज व तख़्त अता फ़रमाता है तो वह उसे तौबा की तौफ़ीक़ दे कर किसी दोस्त व महबूब की ख़िदमत की सआदत नसीब फ़रमाता है ताकि यह ख़िदमत उसकी करामत का मोजिब बने। इस क़िस्म के बकसरत लताइफ़ रोज़ाना ज़ुहूर पज़ीर होते थे। जिस दिन आपकी रिहलत हुई उस वक़्त आप दमिश्क़ दनयान के मावेन घाटी के किनारे एक गांव ''बैतुल हक़'' नामी में तशरीफ़ फ़रमा थे और आपका सर मुबारक मेरे आग़ोश में था। उस वक़्त अपने किसी दोस्त की तरफ़ से मेरे दिल में कुछ रंज था जो इंसानी ख़ासा मिज़ाज है आपने मुझसे फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद दिल को मज़बूत करने वाला एक मसला बताता हूं अगर ख़ुद को उस पर कारबंद करें तो तमाम रंज व फ़िक्र से महफ़ूज़ होगे फ़रमाया हर महल और हर हालत को ख़्वाह वह नेक हो या बद अल्लाह तआला ही ने उसे पैदा फ़रमाया है लिहाज़ा उसके किसी फ़ेअल पर मोअतरिज़ न होना चाहिये और न दिल को रंजीदा करना चाहिये। इसके सिवा आपने कोई वसीयत न फ़रमाई और अपनी जान जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर दी।

७- हज़रत अबुल क़ासिम क़शीरी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन, उस्ताद व इमाम वज़ीने इस्लाम हज़रत अबुल क़ासिम अब्दुल करीम इब्ने हवाज़न क़शीरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं आ

अपने ज़माने में यकता और क़दर व मंज़िलत में अरफ़अ व अशरफ़ थे। आपके हालात और गोनागूं फ़ज़ायल अहले ज़माने में मशहूर हैं। हर फ़न में आपके लतायफ़ मौजूद हैं। आपकी मुहक़्क़ेक़ाना तसानीफ़ बकसरत हैं। अल्लाह तआला ने आपके हाल व ज़ुबान को लग्वियात से महफ़ूज़ रखा। मैंने आपका यह इरशाद सुना है कि-

सूफ़ी सरसाम की बीमारी की मानिंद है कि पहले बकवास होती है आख़िर में ख़ामोशी, फिर जब क़ायम हो जाये तो गूंगा बना देती है।

मतलब यह है कि सफ़वत की दो सूरतें होती हैं एक वजद की दूसरे नुमूद की नुमूद मुबतदियों के लिये है, नमूद से मुराद हज़्यान है। और वजद मुनतहियों के लिये है और हालते वजद का बयान मुहाल व दुश्वार होता है। लिहाज़ा जब तक तालिब है उलू हिम्मत से गोया है और गोयाई अहले तलब के नज़दीक हज़्यान है जब विसाल हो गया तो वासिल हो गये। इनके लिये बयान व इशारे की हाजत नहीं रहती, जिस तरह के हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब मुबतदी थे तो उनकी तमाम हिम्मतें रोइयते इलाही की तमन्ना में रहीं और ऐ रब मुझे अपना जलवा दिखा कि मैं तेरे दीदार से मुशर्रफ़ हो जाऊं की मुनाजात करते रहे यह मक़सूद की नारसाई में नुमूदारी ताबीर है और हमारे आक़ा सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मनतही और साहबे तमकीन हैं जब आप का वजूद मक़ामे हिम्मत से बुलंद हुआ और हिम्मत फ़ना हुई तो इरशाद हुआ मैं तेरी सना शुमार नहीं कर सकता। यह मंज़िलत रफ़ीअ और मक़ाम आला है।

हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अशक़ानी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन,, शैख़ व इमाम व औहदे दर तरीक़ ख़ुद मुफ़रद हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अशक़ानी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो फुनूने इल्म के उसूल व फ़रोअ़ में इमाम, और हर माअ़ने में कामिल व अकमल थे। अहले तसव्वुफ़ के अकाबिर और अजल्ला में आपका शुमार है। बकसरत मशायख़ से मुलाक़ात की। आप अहले राह को फ़ना से ताबीर करते थे और मुग़लक़ व मुश्किल इबारत बोलने में मख़सूस थे। मैंने जुहला की एक जमाअत को देखा कि वह इन इबारतों की तक़लीद करते और उनके शुतहिय्यात की पैरवी करते और ग़ैर महमूद माअ़ने का इत्तेबा करते थे। हालांकि

उनकी इबारतों पर ग़ौर व फ़िक्र की ज़रूरत थी मुझे इनसे बड़ी मुहब्बत थी चूंकि वह मुझ पर बड़ी मेहरबानी व शफ़क़त फरमाते थे। बाज़ उलूम में वह मेरे उस्ताद थे। शरीअत की ताज़ीम करते और हर शख़्स से किनाराकश रहते में उनसे ज़्यादा किसी शख़्स को मैंने न देखा। इल्मे उसूल में उनकी दक़ीक़ इबारतों से इमाम व मुहक़्क़िक़ के सिवा कोई फ़ायदा नहीं उठा सकता। उनकी तबीयत हमेशा दुनिया व आख़िरत से बेज़ार रही और हमेशा यही कहते थे कि मैं ऐसी फ़ना का तालिब हूं जिसमें वजूद का शायबा तक न हो। और फ़ारसी में फ़रमाते जिसका मतलब यह है कि हर आदमी को मुहाल की ख़्वाहिश है मुझे भी मुहाल का दरकार है लेकिन मैं यक़ीन से जानता हूं कि ऐसा कभी न होगा। हालांकि मुमकिन वही है जिसकी मुझे ज़रूरत है क्योंकि अल्लाह तआला मुझे ऐसी फ़ना में ले जायेगा जहां फ़ना का भी वजूद न होगा। क्योंकि जितने मक़ामात जो कि ज़माने में हैं वह सब ही हिजाब व इब्तेला हैं। और आदमी खुद अपने हिजाब का आशिक़ है दीदार की आरज़ू में बंदा का फ़ना होना हिजाब में आराम व सुकून से बेहतर है और जबकि अल्लाह तआला बाकी है और उस पर अदम व फ़ना जायज़ नहीं है तो बेहतर यही है कि मैं उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत ही में फ़ना हो जाऊंगा क्योंकि ऐसे फ़ना के लिये हरगिज़ बक़ा न होगी। सेहते फ़ना में यह क़ायदा मज़बूत व मुस्तहकम है।

९- हज़रत अबुल क़ासिम बिन अली गरगानी अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन, क़ुतुबे ज़माना दरे वक़्त खुद यगाना हज़रत अबुल क़ासिम बिन अली बिन अब्दुल्लाह गरगानी रहमतुल्लाह अलैहि हैं आप अपने वक़्त व ज़माने में बे नज़ीर व बे अदील थे। आपका इब्तेदाई हाल बहुत अच्छा था। आपकी मुसाफ़ेरत सख़्त और बाशर्त थी। लोगों के दिल आपकी तरफ़ मायल थे। तमाम तलबा आपसे अक़ीदत रखते थे और मुरीदों के वक़ूअ-ए-कश्फ़ में एक क़िस्म का निशान थे। ज़ाहिरी हालत मुज़ैयन और तमाम उलूम में माहिर थे। आपका हर मुरीद जहान की ज़ीनत था। उन्होंने अपनी औलाद को नेक छोड़ा। उम्मीद है कि इंशाअल्लाह वह क़ौम के पेशवा होंगे आप लिसानुल वक़्त थे।

हज़रत अबू अली फ़ज़्ल बिन मुहम्मद ने उनके हक़ में अपना नसीब

छोड़ा था चूंकि वह सबसे किनाराकश रहते थे। अल्लाह तआला ने इस एराज़ की बरकत से इस मुक़तदा को ज़ुबाने हाल बना दिया था। एक दिन मैं शैख़ के रूबरू हाज़िर था और अपने अहवाल व नुमूद को शुमार कर रहा था ताकि अपनी कैफ़ियत आपसे बयान करूं क्योंकि आप ही वक़्त के नाक़िद थे। आपने मुझ पर शफ़क़त फ़रमा कर इन्हें सुना और मेरे बचपन के गुरूर और जवानी की आग पर महमूल फ़रमाया और उसी नतीजे में इस कैफ़ियत की मौजूदगी क़रार दी, चूंकि यह शैख़ अपना इब्तेदाए हाल में इस कूचा से गुज़र चुके थे इसलिये मेरे बारे में उन्होंने इतना इज्ज़ व इंकिसार बरता। लेकिन वह मेरी दिली कैफ़ियत को समझ गये। फ़रमाने लगे ऐ वालिद के दोस्त! तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मेरा यह इंकिसार न तुम्हारे लिये है न तुम्हारे हाल के लिये क्योंकि हाल का बदलने वाला मुहाल के महल में आता है बल्कि मेरा यह इंकिसार अहवाल अल्लाह तआला के हुज़ूर में है यह बात तमाम तलबा के लिये आम है सिर्फ़ तुम्हारे ही लिये नहीं है। जब मैंने यह सुना तो मैं अज़ख़ुद रफ़्ता हो गया। उन्होंने मेरी बातिनी हालत को मुलाहज़ा फ़रमाकर कहा ऐ फ़रज़ंद! आदमी को इस तरीक़त से इससे ज़्यादा निसबत नहीं होती कि जब उसे तरीक़त की तरफ़ लगायें तो उसके गुमान को फेर दिया जाये और जब वह गुमान से फिर जाये तो फिर उस पर ख़्याली ताबीर की राह बंद कर दी जाये। लिहाज़ा नफ़ी व इसबात और उसका वजूद व अदम दोनों ख़्याली हैं आदमी किसी तरह ख़्याली बंदिश से बाहर नहीं निकल सकता। उसे चाहिये कि वह हक़ की बंदगी इख़्तेयार करे और अपने दिल से तमाम निसबतों को निकाल फेंके। सिर्फ़ बंदगी और फ़रमां बर्दारी की निसबत को बरक़रार रखे। इसके सिवा और भी बकसरत असरार की बातें हुई जिनके तज़किरे में असल मौज़ू ख़ारिजे मबहस हो जायेगा।

१०- हज़रत अबू अहमद अलमुज़फ़्फ़र अलैहिर्रहमा

अज़ अइम्मा-ए-मुतअख़्ख़रीन, रईसे औलियाए नासेहे असफ़िया हज़रत अबू अहमद अल मुज़फ़्फ़र बिन अहमद बिन हमदान रहमतुल्लाह अलैहि हैं आपका बातिन मसनदे जलवा हाए रब्बानी था। तसव्वुफ़ के दरवाज़े कुशादा और सर पर ताजे फ़िरासत आरास्ता था। फ़ना व बक़ा की तशरीह उम्दा और

ताबीर बुलंद थी। शैखुल मशायख़ हज़रत अबू सईद फ़रमाते हैं कि हमें बारगाहे इलाही का कुर्ब, बंदगी की राह से अता हुआ और ख़्वाजा अल मुज़फ़्फ़र को बराहे रास्त ख़ुदा की तरफ़ से मिला। मतलब यह है कि हमने मुजाहिदे से मुशाहदा किया और उन्होंने मुशाहदा से मुजाहिदा किया। इन्हीं से मैंने सुना कि बुज़ुर्गों को जो कुछ वादिया पैमाई और कतअ-ए-मुसाफ़त के बाद मिला वह मुझे मसनद और बाला नशीनी से हासिल हुआ। असहाबे रऊनत व मुतकब्बिरीन शैख़ की इस बात को दावा पर महमूल करते हैं हालांकि दावा ऐब है। और किसी सूरत से अपने हाल की सदाकत के बयान को दावा नहीं कहा जा सकता। ख़ास कर जब कि अहले माअ़नें बयान करें इनका फ़रज़ंदे रशीद मौजूद है।

हज़रत ख़्वाजा अबू सईद फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं इनके पास मौजूद था कि नीशापुर का एक मुद्दई आया और आपके इशारे पर कहने लगा यानी फ़ानी हो जाने के बाद बाक़ी होता है ख़्वाजा अलमुज़फ़्फ़र ने फ़रमाया फ़ना पर बक़ा की क्या सूरत है? क्योंकि फ़ना मादूम होने को कहते हैं। और बक़ा मौजूद को। वह हर एक दूसरे को नफ़ी करने वाला है। लिहाज़ा फ़ना तो मालूम है कि चीज़ नापैद हो जाती है। अगर वह मौजूद हो जाये तो वह ऐन शय नहीं हो सकती बल्कि वह बजाए ख़ुद दूसरी चीज़ होगी। और यह जायज़ नहीं कि ईमान व ज़ात फ़ना हो जायें। अलबत्ता फ़नाए सिफ़त और फ़नाए सबब जायज़ है। मालूम हुआ कि जब सबब और सिफ़त मादूम हो गयी तो अब मौसूफ़ व मुसब्बब रहेगा। और ज़ात के लिये फ़न दुरुस्त नहीं।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा की बेऐनिही इबारत मुझे याद नहीं अलबत्ता इस का मफ़हूम यही था जो दर्ज किया गया है मज़ीद वज़ाहत आम फ़हम तौर पर यूं की जायेगी कि बंदे का इख़्तेयार बंदे की सिफ़त है। बंदा अपने इस इख़्तेयार की वजह से इख़्तेयारे हक़ में महजूब है लिहाज़ा इस सिफ़त की बिना पर बंदा हक़ तआला से हिजाब में आ गया। और यह यक़ीनी अम्र है कि इख़्तेयारे हक़ अज़ली है और बंदा हादिस। अज़ल के लिये फ़ना जायज़ नहीं है। और जब इख़्तेयारे हक़ बंदे के बारे में बक़ा बने तो ला मुहाला बंदे का इख़्तेयार फ़ानी हुआ और उसका तसर्रुफ़ मुनक़तअ हो गया।

एक दिन मैं परागंदा हाल सफ़री कपड़े पहने करमान उनके पास पहुंचा उन्होंने मुझसे फ़रमाया ऐ अबुल हसन! अपना हाल बयान करो? मैंने अर्ज़ किया, समअ चाहता हूं। आपने उसी वक़्त कव्वाल को बुलाने भेजा। इसके

बाद अहले इशरत की एक जमाअत आयी जोशे जवानी, कुव्वते इरादी और सोजे मुहब्बत ने मुझे कुछ कलिमात सुनने पर बेचैन कर दिया। कुछ अर्सा बाद जब जोश ठंडा पड़ा और ग़ल्बा कम हुआ तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया समाअ के बारे में क्या हाल है? मैंने अर्ज़ किया ऐ शैख़! मुझे बड़ी फ़रहत हासिल हुई। उन्होंने फ़रमाया जिस वक़्त कव्वाल को बुलाया गया था उस वक़्त समाअ की आवाज़ और कव्वों की आवाज़ दोनों बराबर थीं क्योंकि समाअ की ताक़त उस वक़्त तक है जब तक कि मुशाहदा न हो। और जब मुशाहेदा हासिल हो जाता है तो कुदरते समाअ नापैद हो जाती है देखो ऐसी आदत इख़्तेयार न करो कि कहीं तबीयते सानिया न बन जाये और मुशाहदा से दूर हो जाओ।

मुख़्तलिफ़ शहरों में मशायेख़े मुतअख़्ख़ेरीन का तज़किरा

अगर मैं हर एक के ज़िक्र और हाल की तशरीह करूं तो किताब तवील हो जायेगी और बिल्कुल ही ज़िक्र न करूं तो किताब का मक़सद फ़ौत हो जायेगा इसलिये सिर्फ़ इनके अस्मा गिनाता हूं जो मेरे ज़माने में तरीक़त के मशायख़ और सूफ़िया गुज़रे हैं और वह अरबाबे माअ़ने में हैं न कि असहाबे रुसूम में से।

ईराक़ व शाम में मशायख़े मुतअख़्ख़ेरीन में से-

१ शैख़ ज़की बिनुल ओला हैं जो बरगुज़ीदा और सादाते ज़माने में से हैं। मैंने उनको सरापा शोला-ए-मुहब्बत पाया उनकी निशानियां और बराहीन ज़ाहिर हैं।

२ शैख़ बुज़ुर्गवार अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अलमिस्बाह सैदानी हैं। जो रुउसाए मुतसव्वेफ़ीन में से हैं और तहक़ीक़ में जुबान व बयान के माहिर हैं। वह हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज से बड़ी मुहब्बत रखते हैं। उनकी बाज़ तसानीफ़ मैंने पढ़ी हैं।

३ हज़रत अबुल क़ासिम सदसी जो साहबे मुजाहिदा और साहबे हाल हैं। हुस्ने अक़ीदत के साथ दरवेशों की नियाज़मंदी और ख़िदमत गुज़ारी करते हैं।

मुल्के फ़ारस में-

१ शैख़ुश्शयूख़ अबुल हसन बिन सालबा हैं जो तसव्वुफ़ में अफ़सहुल लिसान और तौहीद में औज़हुल बयान है। इनके कलिमात मशहूर हैं। २ शैख़ मुरशिद अबू इसहाक़ इब्ने शहरयार हैं जो बरगुज़ीदए कौम और साहबे सियासत

हैं। ३ शैख़े तरीक़त अबुल हसन बिन बकरान हैं जो अकाबिर सूफ़िया में से हैं। ४ शैख़ अबु मुस्लिम हरवी हैं जो अज़ीज़े वक़्त और साहबे हाल हैं। ५ शैख़ अबुल फ़तह सालबा हैं जो अपने वालिद के फ़रज़ंदे रशीद और उम्मीदवार हैं। ६ शैख़ अबू तालिब हैं। जो एक बुज़ुर्ग पाबंद कलिमाते हक़ हैं। ७ शैखुश्शयूख़ अबू इस्हाक़ रांदीदा जो इन सबमें बुज़ुर्ग हैं।

क़हस्तान, आज़र बायजान, बहरिस्तान, और फ़िक में-

१ शैख़ शफ़ीक़ फ़रहअल मारूफ़ बह अख़ीज़ुंजानी हैं जो मर्दे नेक सीरत और सतूदा तरीक़त हैं और अपने ज़माने के शैख़ और बुज़ुर्ग सूफ़ी हैं। इनकी नेकियां बहुत हैं। बादशाह जो अय्यार शख़्स था इनकी वजह से तायब होकर राहे हक़ पर आ गया। २ शैख़ अबू अब्दुल्लाह जुनैदी हैं जो महरबान व शफ़ीक़ बुज़ुर्ग हैं। ३ अजल्लए मशायख़े में से शैख़ अबू तालिब मकशूफ़ हैं। ४ ख़्वाजा हसन समसानी जो एक मर्दे गिरफ़्तारे बला और उम्मीदवार हैं। ५ शैख़ सहलकी हैं जो जमाअते सूफ़िया में दानिशवर हैं। ६ अहमद बिन शैख़ ख़रमानी जो अपने वालिद के फ़रज़ंदे रशीद हैं। ७ हज़रत अदीब कमंदी जो सादाते ज़माने में से हैं।

करमान में-

१ हज़रत ख़्वाजा अली बिन हुसैन कीरकानी हैं जो सैयाह वक़्त और नेक ख़सलत हैं उनके फ़रज़ंद हकीम, एक मर्दे अज़ीज़ हैं। २ हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन सलमा हैं जो इस अहद के बुज़ुर्गों में से हैं इनके सामने बकसरत औलिया अल्लाह जवांमर्द और तालिब व उम्मीद गुज़रे हैं।

ख़रासान में जहां आज साया इक़बाले हक़ है-

१ शैख़े मुजतहिद हज़रत अबुल अब्बास वामग़ानी हैं जिनका हाल और ज़माना बहुत उम्दा है। २ हज़रत ख़्वाजा अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली हैं जो तरीक़त के मुहक़्क़िक़ों में से हैं। ३ हज़रत ख़्वाजा अबू जाफ़र तरशीज़ी हैं जो अज़ीज़ाने वक़्त में से हैं। ४ हज़रत ख़्वाजा महमूद नीशापुरी जो मुक़्तदा और फ़सीह हैं। ५ हज़रत शैख़ मुहम्मद माशूक़ हैं जिनका हाल उम्दा व नेक है और निहायत ख़ुश ख़ुल्क़ हैं। ६ हज़रत जम्रतुल हुब जो नेक बातिन और ख़ुश व ख़ुर्रम बुज़ुर्ग हैं। ७ हज़रत ख़्वाजा रशीद मुज़फ़्फ़र फ़रज़ंद शैख़ अबू सईद उम्मीदवार हैं जो मुक़्तदाए क़ौम और दिलों के क़िबला हैं। ८ हज़रत ख़्वाजा शैख़ अहमद नज्जार समरक़ंदी मुक़ीम मरू हैं जो सुल्ताने ज़माना हैं। ९ हज़रत

ख़्वाजा शेख़ अहमद जमारी सरख़सी हैं जो वक़्त के सिपाही और मेरे साथी हैं इनके कामों में बड़ी कुदरत देखी है। जवांमर्दाने मुतसव्विफ़ा में से हैं। १० हज़रत शेख़ अबुल हसन अली बिन अलसऊद हैं जो अपने वालिद के फ़रज़ंद रशीद और अपने ज़माने में उलू हिम्मत और सिद्क़ व फ़िरासत में बेहतरीन व बे मिस्ल हैं। ख़रासान के तमाम मशायख़े का ज़िक्र तो दुश्वार है इनमें से तीन सौ मशायख़े से तो मैंने मुलाक़ात की और हर एक का मुशरब जुदा जुदा पाया है इनमें हर एक फ़र्द सारे जहान के लिये काफ़ी है। यह सब इसलिये हैं कि ख़रासान के उफ़क़ पर आफ़ताबे मुहब्बत और इक़बाले तरीक़त हमेशा तावां रहा है।

मावरा उन्नहर में-

१ ख़्वाजा व इमाम, मक़बूल ख़ास व आम हज़रत अबू जाफ़र मुहम्मद बिन हुसैन हरमी हैं जो साहबे समाअ और पाबंदे तरीक़त उनकी हिम्मत बुलंद और हाल पाकीज़ा है। सालेकाने राहे हक़ के साथ शफ़क़त फ़रमाते हैं और अपने साथियों में सरदार व फ़क़ीह हैं। २ हज़रत अबू मुहम्मद पालग़री हैं जो उम्दा हाल और महकम मामलात रखते हैं। ३ शैख़े वक़्त हज़रत अहमद ऐलाक़ी हैं जो बरगुज़ीदए वक़्त और तारिके रुसूम व आदात हैं। ४ फ़रीदुल अस्र और यकताए ज़माना हज़रत ख़्वाजा आरिफ़ हैं। ५ हज़रत ख़्वाजा ज़मन अली अबू इस्हाक़ हैं जो मर्दे मोहतशिम और नेक ज़ुबान हैं यह वह मशायख़ हैं कि जिनसे मैंने मुलाक़ात की है और हर एक का मक़ाम मालूम किया है यह सब मुहक्क़िक़ हैं।

ग़ज़नी में-

१ शेख़ आरिफ़ ममदूहे ज़माना हज़रत अबुल फ़ज़ल बिन असदी हैं जो शैख़े तरीक़त हैं और उनकी करामत व बराहीन ज़ाहिर हैं। जब सोज़े मुहब्बत का ग़ल्बा हुआ तो ज़ाहिरी हालत से लोगों ने धोका खाया। २ शैख़ मुजर्रिद, अलायक़ दुनयवी के तारिक हज़रत इस्माईल शाशी हैं जो शैख़े मोहतशिम और मलामती तरीक़ पर हैं। ३ मिनजुमला उलमाए तरीक़त हज़रत शैख़ सालार हैं जिनका हाल उम्दा है। ४ शैख़ दाना, मअ़दने असरार हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन हकीम मारूफ़ ब "मुरीद अज़ मस्ताने हक़" हैं जो अपने ज़माने में अपने फ़न में सानी नहीं रखते। इनका हाल लोगों पर पोशीदा है बराहीन व निशानात ज़ाहिर व रौशन हैं इनका हाल सेहत में बेहतर है। इसलिये कि वह साहबे मुशाहदा हैं। ५ शैख़ मुहतरम तमाम में मुक़द्दम हज़रत सईद बिन अबू

सईद एयार हैं जो हदीसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाफ़िज़ हैं उम्दा ज़िन्दगी पाई, हाल में क़वी व बाख़बर मगर पोशीदा रहते हैं। किसी पर ज़ाहिर नहीं होते। बकसरत मशायख़ की सोहबत पाई है। ६ ख़्वाजा बुज़ुर्गवार, जानशीने हिम्मत व वक़ार, हज़रत अबुल उला अब्दुर्रहीम बिन अहमद सईदी हैं जो अज़ीज़ क़ौम और सरदारे वक़्त हैं। मुझे वह दिल से प्यारे लगते हैं। इनकी ज़िन्दगी मज़हब, हाल उम्दा और फ़ुनून के आलिम हैं। ७ शैख़ औहद हज़रत क़सूरा बिन मुहम्मद जरवंज़ी हैं जो अहले तरीक़त से कमाल मुहब्बत रखते हैं और हर एक का एहतेराम फ़रमाते हैं। बकसरत मशायख़ से मुलाक़ात की। मुझे इस शहर का आम लोगों के एतेक़ाद और वहां के उलमा से अच्छी उम्मीद वाबस्ता है वहां का रहने वाला जो भी मिलता है मुझे इससे हुस्ने अक़ीदत होती है। यह गरोहे मशायख़ मुन्तशर और मुख़्तलिफ़ शहरों में इक़ामत पज़ीर है यह तरीक़ा मेरे नज़दीक अच्छा नहीं है क्योंकि यह ऐसे शहर को छोड़कर चले जाते हैं जो बुज़ुर्गों की इक़ामतगाह है। अब मैं तरीक़त के फ़िरक़ों और इनके मज़ाहिब का बयान शुरू करता हूं।

अहले तरीक़त के मज़ाहिब और इनमें इम्तेयाज़ी फ़र्क़

हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि के तज़किरे में पहले बता चुका हूं कि अहले तरीक़त के बारह मज़हब हैं जिन में से दो मरदूद और दस मक़बूल हैं। इन दसों के मामलात और तरीक़त के सुलूक दुरुस्त व उम्दा हैं। मुशाहिदात में इनके आदाब लतीफ़ व दक़ीक़ हैं अगरचे बाहम मामलात व मुजाहिदात और उनकी रियाज़तों में इख़्तेलाफ़ है ताहम तौहीद और शरीअत के उसूल व फ़रोअ में सब मुत्तफ़िक़ हैं। हज़रत अबू यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि यानी तौहीदे ख़ालिस के सिवा हर मसले में उलमा का इख़्तेलाफ़ रहमत है। इस क़ौल के मुवाफ़िक़ एक मशहूर हदीस भी है। अख़्यारे मशायख़ के दर्मियान तसव्वुफ़ की हक़ीक़त दो हिस्सों पर मुनक़सम है एक बा एतेबारे हक़ीक़त दूसरे बा एतेबारे मजाज़ व रुसूम। अब मैं उनके अक़वाल को जो इन हिस्सों पर मुश्तमिल हैं बर तरीक़े इजाज़ व इख़्तेसार बयान करता हूं और हर मज़हब की असास और उनकी बुनियाद का तज़किरा करता हूं ताकि तालिब को इनका इल्म हो और उलमा को इल्म का मख़ज़न एक जगह मिल जाये और

यह कि मुरीदों की इस्लाह महजूबों की फ़लाह और दानिशवरों को मुरव्वत व तंबीह हो और दोनों जहान में मेरे लिये अज्र व सवाब का सबब बने।

१- फ़िरक़ा मुहासबिया

फ़िरक़ए मुहासबिया की निसवत व अक़ीदत हज़रत अबू अब्दुल्लाह हारिस बिन असद मुहासबी रहमतुल्लाह अलैहि हैं। वह अपने ज़माने में मक़बूलुन्नफ़ूस और क़ातेअ नफ़्स थे। आपका कलाम तौहीदे ख़ालिस के हक़ायक़ और उसके फ़रोअ व उसूल के बयान में है। आपके तमाम ज़ाहिरी व बातिनी मामलात सहीह व दुरुस्त थे। आपके मज़हब की ख़ुसूसियत यह है कि आप रज़ाए इलाही को मक़ामात के क़बील से नहीं मानते थे। बल्कि अज़ क़िस्म अहवाले तरीक़त समझते थे तरीक़त में यह पहला इख़्तेलाफ़ है जो इनसे वाक़ेय हुआ। इस पर उलमा ख़ुरासान व इराक़ ने गिरफ़्त व मुवाख़ज़ा किया इनका कहना है कि रज़ा तरीक़त के एक मक़ाम का नाम है जो तवक्कुल की आख़िरी मंज़िल है यह इख़्तेलाफ़ आज तक उलमा के दर्मियान मौजूद व बरक़रार है। अब मैं इस क़ौल की कुछ तशरीह करता हूं।

हक़ीक़ते रज़ा : बयाने मज़हब और वजह इख़्तेलाफ़ के लिये ज़रूरी है रज़ा की हक़ीक़त और उसके अक़साम की वज़ाहत करूं इसके बाद हाल व मक़ाम की हक़ीक़त और उनका इख़्तेलाफ़ ज़ाहिर करूं। जानना चाहिये कि रज़ा पर किताब व सुन्नत नातिक़ और उस पर उम्मत का इजमा साबित है। चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है वह अल्लाह से राज़ी हो गये। नीज़ इरशादे बारी है अल्लाह तआला उन मुसलमानों से राज़ी हो गया जिन्होंने दरख़्त के नीचे आपसे बैअत की। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है उसने ईमान का ज़ायक़ा पा लिया जो अल्लाह के रब होने पर राज़ी हो गया।

सूरते रज़ा : रज़ा की दो सूरतें हैं एक यह कि अल्लाह तआला का बंदे से राज़ी होना दूसरी यह कि बंदा का अल्लाह तआला से राज़ी होना है। लेकिन ख़ुदा के राज़ी होने की हक़ीक़त यह है कि वह बंदे को सवाब व नेमत और करामत से नवाज़े। और बंदे का ख़ुदा से राज़ी होने की हक़ीक़त यह है कि उसके फ़रमान पर अमल करे और उसके हुक्म के आगे सरे तसलीम ख़म कर दे और ख़ुदा के मामलात में चूं व चरा न करे। इसलिये कि रज़ाए बंदा, रज़ाए ख़ुदा पर मौक़ूफ़ है उस पर इसका क़ियाम होना चाहिये।

रज़ाए बंदा का ख़ुलासा यह है कि मना व अता की दोनों हालतों में उसका

दिल यकसां रहे। और जलाल व जमाल के नज़ारे में उसका बातिन मज़बूत व मुस्तहकम रहे ख़्वाह उसे मनअ से रोक दिया जाये या अता में आगे बढ़ाया जाये हर हालत में उसका क़ियाम मसावी हो। ख़्वाह आतिशे जलाल में जले या लुत्फ़ व जमाल के नूर से मुनव्वर हो, इसके दिल में जलना और मुनव्वर होना यकसां हो क्योंकि उसका ज़ुहूर हक़ तआला की तरफ़ से है उसकी जानिब से जो भी कुछ आये अच्छा ही होता है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु के आगे हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़ौल रखा गया है कि मेरे नज़दीक मुफ़लिसी तवंगरी से और बीमारी सेहतमंदी से ज़्यादा महबूब है। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया यानी अल्लाह तआला अबूज़र पर रहम फ़रमाये मैं तो यह कहता हूं कि अल्लाह तआला ने बंदे के लिये जो इख़्तेयार फ़रमाया है बंदा ख़ुदा के इख़्तेयार करदा हालत के सिवा किसी और हालत की आरज़ू न करे अल्लाह तआला बंदे के लिये जो पसंद फ़रमाये बंदा उसी को चाहे। जब बंदा ख़ुदा की रज़ा और इख़्तेयार को देख लेता है तो वह अपनी मर्ज़ी व इख़्तेयार से मुंह मोड़ कर हर ग़म व फ़िक्र से निजात पा जाता है। यह माअ़ने हालते ग़ैबत में मुमकिन नहीं इसके लिये मुशाहेदा दरकार है। रज़ा बंदे को ग़फ़लत से छुड़ाती और ग़मों के पंजों से बचाती है। और ग़ैर के अंदेशे को दिल से निकालती और तकलीफ़ों की बंदिशों से निजात देती है। क्योंकि रज़ा की सिफ़त ही आज़ाद करना है।

मामलाते रज़ा की हक़ीक़त : मामलाते रज़ा की हक़ीक़त बंदे की पसंदीदगी है कि वह यक़ीन रखे कि मना व अता अल्लाह तआला के इल्म से है और वह एतेक़ाद रखे कि अल्लाह तआला तमाम हालात का देखने वाला बाख़बर है। इस माअ़ने के हक़ में उलमा के चार गरोह हैं एक यह कि वह ख़ुदा की अता पर राज़ी हो यह मारेफ़त है दूसरा यह कि वह नेमतों पर राज़ी हो यह दुनिया के अंदर है। तीसरा यह कि मसायब व इब्तेला पर राज़ी रहे, यह मुख़्तलिफ़ मुशक़्क़तें हैं। चौथा यह कि बरगुज़ीदगी पर राज़ी हो यह मुहब्बत है। लिहाज़ा वह लोग जो अता करने वाले के जल्वे को उसकी अता में देखते हैं और जान व दिल से क़बूल करते हैं तो उनका यह क़बूल करना उनके दिल से उसकी तकलीफ़ व मुशक़्क़त को दूर कर देती है। और जो लोग अता के ज़रिये अता करने वाले को देखते हैं वह अता ही में रह जाते हैं। वह तकल्लुफ़

से रज़ा की राह पर चलते हैं और तकल्लुफ़ में सरासर रंज व मुशक़्क़त है मारेफ़त उस वक़्त हक़ीक़त होती है जब बंदा हक़ की मारेफ़त में मुकाशिफ़ व मुशाहिद हो। और जब उसके लिये मारेफ़त क़ैद व हिजाब हो तो वह मारेफ़त मकरूह, वह नेमत अज़ाब और वह अता हिजाब बन जाता है।

लेकिन वह लोग जो दुनिया के अंदर नेमतों के ज़रिये इससे राज़ी हों वह हलाकत व नुक़्सान में रहते हैं। ऐसी रज़ा, उसे दोज़ख़ में झोंक देती है इसलिये कि जिसके दिल में हक़ तआला की मुहब्बत होती है उसके लिये दुनियावी नेमतों की कोई क़दर व क़ीमत नहीं होती। और न उसके दिल में महरूमी पर कोई रंज व मलाल गुज़रता है। नेमत तो उस वक़्त नेमत कहलाती है जबकि वह नेमत देने वाले की तरफ़ रहनुमाई करे लेकिन जब वह उसे मुनईम से महजूब कर दे तो ऐसी नेमत सरापा आफ़त व बला होती है।

लेकिन वह लोग जो इब्तेला के ज़रिये इससे राज़ी हों वह वह हैं जो बला में मीलान को देखते हैं और मुशक़्क़त के ज़रिये मुशाहदे की तरफ़ मायल होते हैं इस हालत में इनकी तकलीफ़ उनको दोस्त के मुशाहदा की मुसर्रत में आज़ुरदा नहीं करती।

लेकिन वह लोग जो बरगुज़ीदगी के ज़रिये इससे राज़ी हों वह इसके महबूब होते हैं क्योंकि वह हालते रज़ा में बला व सख़्ती से ख़ाली होते हैं उनके दिलों की मंज़िलें सिर्फ़ हक़ तआला ही की तरफ़ होती हैं। इनके सिवा पर्दए असरार बजुज़ मुहब्बत के गुल व गुंचा के कुछ नहीं होता। ग़ायब होते हुए भी हाज़िर होते हैं, फ़रशी होते हुए भी अरशी होते हैं और जिस्मानी होते हुए भी रूहानी होते हैं। यह लोग ख़ालिस मोवहहिदे रब्बानी और लोगों से दिल बरदश्ता होते हैं। इनके मक़ामात व अहवाल महफ़ूज़, इनका बातिन ख़ल्क़ से जुदा, हक़ तआला की मुहब्बत में रफ़्ता और उसके लुत्फ़ व करम के इंतेज़ार में रहते हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है-

वह अपनी जानों के नफ़ा व नुक़्सान के मालिक नहीं होते न मौत व हयात और मरने के बाद उठने के मालिक होते हैं।

लिहाज़ा ग़ैरे हक़ पर राज़ी होना नुक़्सान का मोजिब और हक़ तआला से राज़ी होना रिज़वान का सबब है इसलिये कि अल्लाह से राज़ी होना सरीहन बादशाहत है और इसी में आफ़ियत है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

जो अल्लाह की रज़ा और उसकी कज़ा पर राज़ी न हो उसने अपने दिल को तक्दीर व असबाब में मशगूल करके बदन को सख़्ती में डाल दिया।

हज़रत कलीम की दुआए रज़ा : अहादीस में वारिद है कि हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलेहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि यानी ऐ मेरे रब! मुझे ऐसा अमल बता जिसपर मैं अमल करूं तो मुझे तेरी रज़ा हासिल हो जाये'' अल्लाह तआला ने फ़रमाया यानी ऐ मूसा यह बात तुम्हारी कुव्वते बर्दाश्त से बाहर है। यह सुनकर हज़रत मूसा रोते हुए सज्दे में गिर पड़े। चुनांचे वही नाज़िल फ़रमाई कि यानी ऐ फ़रज़ंद इमरान! मेरी रज़ा तो तुम्हारे अंदर है तुम को चाहिये कि कज़ा पर राज़ी रहो। मतलब यह है कि जब बंदा अल्लाह तआला के कज़ा पर राज़ी रहेगा तो यह उसकी दलील है कि हक तआला उससे राज़ी है।

जुहद व रज़ा के दर्मियान फज़ीलत : हज़रत बशर हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि से दर्याफ़्त किया कि जुहद अफ़ज़ल है या रज़ा? हज़रत फुज़ैल ने फरमाया-

जुहद से रज़ा अफ़ज़ल है क्योंकि राज़ी इससे ऊपर की मंज़िल की ख़्वाहिश नहीं करता।

मकसद यह है कि जुहद के ऊपर और भी एक मंज़िल है जिसको हासिल करने की ज़ाहिद तमन्ना करता है लेकिन रज़ा के ऊपर कोई मंज़िल नहीं जिस की राज़ी तमन्ना करे। ऊपर का दर्जा नीचे के दर्जे से अफज़ल होता है। यह वाकिया हज़रत मुहासबी के इस कौल की सेहत पर दलालत करता है कि रज़ा अहवाल के कबील से है यह कोई शय नहीं है जो मुजाहिदे और कस्ब के ज़रिये हासिल हो जाये। बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से वहबी यानी अतीया और बख़्शिश के तौर पर हासिल होती है। नीज़ इसका भी एहतेमाल है कि राज़ी को सिरे से तमन्ना ही न हो जैसा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी एक दुआ में फरमाया कि यानी मैं तुझसे दुआ मांगताहूं कि नुजूल कज़ा के बाद मुझे राज़ी रखना। मतलब यह कि मुझे ऐसी सिफ़अत अता फ़रमा कि जब तेरी जानिब से कज़ा का इजरा हो तो नुजूल कज़ा के वक्त तू मुझे राज़ी पाये। इससे साबित होता है कि नुजूले कज़ा से पहले रज़ा दुरुस्त नहीं होती इसलिये कि यहां रज़ा पर अज़्म होगा। और अज़्मे रज़ा ऐन रज़ा नहीं होती।

रज़ा के बारे में अकवाले मशायख : हज़रत अबू अब्बास बिन अता

फ़रमाते हैं कि यानी बंदे पर अल्लाह के क़दीम इख़्तेयार की जानिब दिली निगाह को रज़ा कहते हैं। मतलब यह कि बंदे को जो कुछ पहुंचे उस पर वह एतेक़ाद रखे कि यह अल्लाह के इदारा-ए-क़दीम और हुक्मे अज़ली की बिना पर है जो मेरे लिये मुक़द्दर फ़रमाया है इस पर बंदा बेचैन न हो बल्कि ख़ुश दिल रहे।

हज़रत हारिस महासबी रहमतुल्लाह साहबे मज़हब फ़रमाते हैं यानी अहकामे इलाही के अज्र पर सुकूने क़ल्ब का नाम रज़ा है। इस मसले में हज़रत मुहासबी का मसलक क़वी है क्योंकि दिल का सकून व इत्मीनान बंदे के इख़्तेयारे अमल से मुताल्लिक़ नहीं है बल्कि यह वहबी और अल्लाह तआला की बख़्शिश व अता से ताल्लुक़ रखता है। यह बात इसकी दलील है कि रज़ा अहवाल के क़बील से है मक़ाम से इसका ताल्लुक़ नहीं है।

अहले इल्म बयान करते हैं कि हज़रत उतबतुल गुलाम रात भर नहीं सोए और दिन चढ़े तक यही कहते रहे कि यानी अगर तू मुझे दोज़ख़ के अंदर अज़ाब में डाल दे या अपनी रहमत की चादर में ढांप ले। दोनों हालतों में मैं तुझसे मुहब्बत करता रहूंगा।

मतलब यह है कि अज़ाब की तकलीफ़ और नेमत की लज़्ज़त जिस्म पर होगी लेकिन अगर मुहब्बत व दोस्ती मेरे दिल में क़ायम रहे तो यह अज़ाब मेरे लिये नुक़्सान रसां न होगा। यह बात भी हज़रत मुहासबी के मज़हब ही की ताइद करती है क्योंकि रज़ा मुहब्बत का नतीजा है और मुहब्बत करने वाला, महबूब के हर फ़ेअल पर राज़ी रहता है अगर वह अज़ाब में रखे जब भी दोस्ती से महजूब नहीं होता बल्कि ख़ुश रहता है और अगर नेमत में रखे तब भी दोस्ती से महजूब नहीं होता और अपनी ख़्वाहिश को हक़ तआला के इख़्तेयार के मुक़ाबला में दख़ल अंदाज़ नहीं करता।

हज़रत अबू उस्मान हीरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि यानी चालीस साल गुज़र गये हैं अल्लाह तआला ने मुझे जिस हाल में रखा मैंने उसे नापसंद न किया और जिस हाल की तरफ़ भी उसने मुझे फेरा मैंने उससे नाराज़गी ज़ाहिर नहीं की। यह इशारा दायमी रज़ा और कमाले मुहब्बत की तरफ़ है।

हिकायत : मशहूर वाक़िया है कि दजला में एक दरवेश फंस गया वह तैरना नहीं जानता था किसी ने किनारे से पुकारकर कहा ऐ दरवेश अगर तुम चाहो तो किसी को बुलाऊं ताकि वह तुम्हें निकाल ले? दरवेश ने कहा नहीं। उस शख़्स ने कहा क्या ग़र्क़ होने की ख़्वाहिश है? दरवेश ने कहा नहीं। उसने

कहा फिर क्या चाहते हो? जवाब दिया वही चाहता हूं जो मेरा रब मेरे लिये चाहता है।

ग़र्ज़ यह कि रज़ा की तारीफ़ व बयान में मशायख़ का बहुत इख़्तेलाफ़ है लेकिन इस बात में दो बुनियादी क़ायदे हैं जिनको बयान करके बहस को मुख़्तसर करता हूं मगर मुनासिब है कि पहले अहवाल व मक़ाम का फ़र्क़ और उसके हुदूद ज़ाहिर कर दूं ताकि समझने में सबको आसानी हो और इसके हुदूद से भी वाक़फ़ियत हो जाये। इंशाअल्लाह।

मक़ाम व हाल का फ़र्क़

मालूम होना चाहिये कि मक़ाम व हाल के दोनों लफ़्ज़ तमाम मशायख़ के माबैन मुस्तअमल और उनकी इबारतों में रायज और मुहक़्क़ेक़ीन के उलूम व बयान में मतदावल हैं तालिबाने इल्म तरीक़त के लिये इनकी वाक़फ़ियत के बग़ैर कोई चारा-ए-कार नहीं है।

मक़ाम की तहक़ीक़ : वाज़ेह हो कि मक़ाम, मीम के पेश से बंदे का क़ियाम और मीम के ज़बर से बंदे के जाये इक़ामत व क़ियाम के माअ़ने में इस्तेमाल होता है। लफ़्ज़ मक़ाम के माअ़ने और उसकी तफ़सील के लिये अरबी ज़ुबान के क़वायद का एतेबार व लिहाज़ करना सुहव व ग़लत है। चूंकि क़वायदे अरबी में लफ़्ज़ मक़ाम मीम के पेश से बमायने इक़ामत व जाय क़याम के हैं। और बंदा का राहे हक़ में इक़ामत के माअ़ने इसमें नहीं हैं। इसी तरह मक़ाम मीम के ज़बर से क़याम के हैं। बंदे का राहे हक़ में क़याम के माअ़ने इसमें नहीं है। और बंदे का इस मक़ाम के हक़ का अदा करना और उसकी रिआयत करना ताकि इसके कमाल तक वह रसाई पाये। जहां तक भी उसकी कुदरत हो जायज़ है। अलबत्ता यह जायज़ नहीं कि इस मक़ाम का हक़ अदा किये बग़ैर इस मक़ाम से गुज़र जाये। मसलन पहला मक़ाम तौबा है इसके बाद अनाबत फिर ज़ुहद फिर तवक्कुल वग़ैरह वग़ैरह।

मतलब यह है कि यह जायज़ नहीं है कि बग़ैर तौबा किये अनाबत में पहुंच जाये या बग़ैर अनाबत के ज़ुहद हासिल कर ले या बग़ैर ज़ुहद के तवक्कुल मिल जाये। अल्लाह तआला ने हमें जिब्राईल अलैहिस्सलाम के कलाम में तालीम दी कि यानी हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिसके लिये कोई मक़ाम मालूम न हो।

हाल की तहक़ीक़ : हाल इस माअ़ने को कहते हैं जो हक़ तआला की तरफ़ से बंदे के दिल पर तारी हो और उसे वह अपने क़ुदरत व इख़्तेयार से

दूर न कर सकता हो और न किसी मेहनत व मुजाहिदे से हासिल कर सकता हो। मतलब यह है कि जब दिल में आये तो दूर न कर सके। और न आये तो वह ला न सके। लिहाज़ा बारगाहे इलाही में रियाज़त व मुजाहिदे के ज़रिये महले रियाज़त और उसके दर्जे में तालिब की राह और उसकी जाए इक़ामत का नाम मुक़ाम है। और जो कैफ़ियत बग़ैर रियाज़त व मुजाहिदे के दिल पर वारिद हो वह अल्लाह तआला का लुत्फ़ व फ़ज़्ल है उसका नाम हाल है इसी लिहाज़ से मुक़ाम आमाल की क़बील से है और हाल अल्लाह तआला की बख़्शिश और उसकी अता के ज़मरे में है गोया मुक़ाम अव्वल ता आख़िर कसबी है और हाल वहबी है। लिहाज़ा साहबे मुक़ाम अपने मुजाहिदे में क़ायम और साहबे हाल अपने वजूद में फ़ानी है और वह उस हाल के साथ क़ायम है जिसे हक़ तआला ने उसके दिल में पैदा फ़रमाया है। मशायख़ की एक जमाअत हाल के दवाम को जायज़ रखती है।

और एक जमाअत दवाम को जायज़ नहीं रखती इस सिलसिले में इनका इख़्तेलाफ़ है चुनांचे हज़रत महासबी रहमतुल्लाह अलैहि का मज़हब हाल के दवाम का है वह फ़रमाते हैं कि मुहब्बत व शौक़ और क़ब्ज़ व बस्त यानी दिल की तंगी व कुशादगी यह सब अहवाल से मुताल्लिक़ हैं अगर इसमें दवाम को जायज़ न माना जाये तो मुहिब, मुहिब नहीं रह सकता और न मुश्ताक़, मुश्ताक़ रह सकता है। जब तक हाल बंदे की सिफ़त न हो तो उसका वक़ूअ बंदे पर किस तरह हो सकता है? इसी बिना पर आप रज़ा को अहवाल की क़बील से शुमार करते हैं और हज़रत अबू उस्मान हीरी के क़ौल का इशारा भी इसी तरफ़ है कि चालीस बरस गुज़र गये हैं अल्लाह तआला ने मुझे जिस हाल में रखा मैंने उसे नापसंद नहीं किया।

मशायख़ की वह दूसरी जमाअत जो हाल के दवाम व बक़ा को जायज़ नहीं मानती इनमें से एक हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि हैं इनका इरशाद है कि-

अहवाल बिजली कूदने की मानिंद हैं कि जो ज़ाहिर होती और ख़त्म हो जाती है और जो बाक़ी रहती है वह हदीसे नफ़्स यानी तबई तख़लीक़ है।

एक जमाअत ने उसकी निसबत यह कहा कि-

अहवाल की कैफ़ियत अपने नाम ही की मानिंद है यानी जिस तरह दिल में आता है उसी तरह दूसरे वक़्त दिल से ज़ायल हो जाता है और जो कैफ़ियत

बाक़ी व बरक़रार रहती है उसको सिफ़त कहते हैं और सिफ़त का क़ियाम मौसूफ़ के साथ होता है। वरना लाज़िम आयेगा कि मौसूफ़ अपनी सिफ़त में कामिल हो यह मुहाल है।

मैंने हाल और मुक़ाम का यह फ़र्क़ इसलिये वाज़ेह करके बयान किया है कि इस किताब में जहां कहीं भी मशायख़ के अक़्वाल में हाल व मुक़ाम का ज़िक्र आये तो जान सको कि इससे क्या मुराद है? मुख़्तसरन इतना याद रखो कि रज़ा मुक़ामात की इंतेहा और अहवाल की इब्तेदा है और यह मुक़ाम ऐसा है जिसका एक किनारा रियाज़त व मुजाहिदे की तरफ़ है और दूसरा किनारा मुहब्बत व इश्तेयाक़ की सिमत। इससे ऊपर और कोई मुक़ाम नहीं है। और तमाम मुजाहिदे उसी पर ख़त्म हो जाते हैं। इसकी इब्तेदा कसबी है और इसकी इंतेहा वहबी। अलबत्ता इसका इमकान है कि जिसने अपनी रज़ा की इब्तेदा अपने साथ देखी उसने कह दिया कि यह मुक़ाम है और जिसने अपने रज़ा की इंतेहा हक़ के साथ देखी उसने कह दिया कि यह हाल है। तसव्वुफ़ में हज़रत महासबी के मज़हब का मामला यह है। वई हमा तसव्वुफ़ के मामलात में उन्होंने कोई इख़्तेलाफ़ नहीं किया। अलबत्ता उन्होंने अपने मुरीदों को ऐसी इबारत और मामलात में ज़जर फ़रमाई है जिसमें किसी क़िस्म का इबहाम व ख़ता हो। अगरचे व तौबीख़ असल में दुरुस्त ही क्यों न हो।

जैसे एक दिन हज़रत अबू हमज़ा बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि जो हज़रत मुहासबी के मुरीद थे इनके पास आये चूंकि वह साहबे हाल और साहबे समाअ थे और हज़रत हारिस मुहासबी के यहां एक मुर्ग़ था जो बांग दिया करता था इत्तेफ़ाक़ से मुर्ग़ ने उस वक़्त बांग देनी शुरू कर दी। इसी बांग पर हज़रत हमज़ा ने नारा मारा हज़रत मुहासबी खंजर लेकर उठ खड़े हुए और फ़रमाया "कफ़रत" तूने कुफ़्र किया और हज़रत हमज़ा को मार डालने के लिये बढ़े। दीगर मुरीदीन हज़रत शैख़ के क़दमों में गिर पड़े और बमुश्किल इन्हें बाज़ रखा। इसके बाद उन्होंने अबू हमज़ा से फ़रमाया- ओ मरदूद इस्लाम क़बूल कर। (जब मामला रफ़्त गुज़श्त हो गया) तो मुरीदों ने अर्ज़ किया ऐ शैख़! जबकि हम आप सब अबू हमज़ा को मख़सूस औलिया और तौहीद पर इस्तेक़ामत रखने वालों में से जानते हैं तो आप को उन पर क्यों शक व तरद्दुद हुआ? हज़रत मुहासबी ने फ़रमाया मुझे उसके ईमान पर कोई शक व तरद्दुद नहीं हुआ यक़ीनन मैं उसे मुशाहदा-ए-हक़ और दिल से तौहीद में मुस्तग़रक़ जानता हूं। लेकिन

हम उसे ऐसा करने की कैसे इजाज़त दे सकते हैं जैसे हलूलियों का वतीरा और इनके किरदार का शंआर है मुर्ग़ एक बे अक़्ल जानवर है वह अपनी आदत के मुताबिक़ बांग देता है उसे हक़ तआला के साथ हम कलामी कैसे हो गयी? यह बात हक़ तआला के शायाने शान भी नहीं। वह तजज़ी में पाक है और इसमें भी शुबह नहीं कि अल्लाह तआला के दोस्तों का हर वक़्त और उनका हर हाल हक़ के साथ हैं और उनका हर लम्हा ख़ुदा के शायाने शान सलाम व कलाम के बग़ैर आराम व चैन से नहीं गुज़रता। इसके बावजूद किसी चीज़ में उसका हलूल व नुज़ूल भी जायज़ नहीं है और न क़दीम पर इत्तेहाद व इम्तेज़ाज और तरकब जायज़ है। हज़रत अबू हमज़ा ने जिस वक़्त मुरशिद की बालिग़ नज़री को देखा अर्ज़ करने लगे ऐ शैख़! अगरचे मैं असल के एतेबार से रास्ती पर था लेकिन चूंकि मेरा यह फ़ेअल ऐसी क़ौम के मुशाबेह बन गया था जो हलूली और गुमराही में मुब्तला हैं मैं रुजूअ़ व तौबा करता हूं।

चूंकि मेरा मक़सूद इख़्तेसार है इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं। बिलाशुबह इनका यह तरीक़ा सलामती और हिफ़ाज़त की राह में सेहत कमाल के बावजूद बहुत पसंदीदा और लायक़े तारीफ़ है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

तुम में जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखता है वह तोहमत की जगहों पर हरगिज़ खड़ा न हो।

हुज़ूर सैयदुना दातागंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह तआला से हमेशा यही दुआ करता हूं कि मुझे भी अल्लाह ऐसी ही तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये और आज कल के रस्मी पीरों व फ़क़ीरों की सोहबत से बचाये! यह लोग ऐसे नहीं जिनकी रिया व मासीयत में अगर मुवाफ़िक़त न की जाये तो दुश्मन हो जाते हैं। नऊज़ु बिल्लाह मिनल जहले।

२- फ़िरक़ए क़सारी

क़सारी फ़िरक़ा के पेशवा हज़रत अबू सालेह बिन हमदून बिन अहमद बिन अम्मारा क़स्सार रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर और सादाते तरीक़त में से हैं इनका मसलक व मशरब, मलामत की नशर व इशाअत है। फुनूने मामलात में इनका कलाम बुलंद व बाला है। वह फ़रमाते हैं कि लोगों को जताने के मुक़ाबले में तुम्हारा इल्म, अल्लाह तआला के मुताल्लिक़ बहुत बेहतर से बेहतर

होना चाहिये जो तुम लोगों के साथ ज़ाहिर में करते हो। इसलिये कि राहे हक़ में सबसे बड़ा हिजाब यह है कि तुम्हारा दिल लोगों के साथ मशगूल हो। मलामती मशरब के बारे में शुरू किताब में बहुत कुछ लिख चुका हूं। मुख़्तसर यह कि-

हिकायत : हज़रत अबू सालेह बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैं नीशापुर में नहर हीरा के किनारे जा रहा था वहां एक शख़्स नूह नामी जिसकी जवांमर्दी नीशापुर में मश्हूर थी रास्ते में मिला मैंने उससे पूछा कि ऐ नूह! जवांमर्दी क्या चीज़ है? उसने कहा आप मेरी जवांमर्दी के बारे में दर्याफ़्त करते हैं या अपनी जवांमर्दी के बारे में? मैंने कहा दोनों के बारे में। उसने कहा मेरी जवांमर्दी तो यह है कि मैंने क़बा को उतार कर गुदड़ी पहन ली है और ऐसा मामला करने लगा हूं जिससे सूफ़ी बन जाऊं ख़ुदा से हया करता हूं और इस लिबास में मासीयत से परहेज़ करता हूं। और आपकी जवांमर्दी यह है कि आप इस गुदड़ी को उतार डालें ताकि आपसे लोग फ़ित्ना में मुब्तला न हों। लिहाज़ा मेरी जवांमर्दी ज़ाहिर शरीअत की हिफ़ाज़त में है और आपकी जवांमर्दी बातिनी हक़ीक़त की हिफ़ाज़त में है यह असल बड़ी क़वी है।

३- फ़िरक़ए तैफ़ूरिया

तैफ़ूरी फ़िरक़ा के पेशवा, हज़रत अबू यज़ीद तैफ़ूर बिन ईसा बिन सरोशां बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर और सादात सूफ़िया में से हैं। यह साहबे ग़ल्बा और साहबे सुकर थे। शौक़े इलाही का ग़ल्बा, सुकर और मुहब्बत। इंसान की मुहब्बत किसी जिन्स से नहीं है। बल्कि यह इंसान के कसब व इख़्तेयार के एहात से बाहर है जो इसका दावा करे वह बातिल है और ऐसों की तक़लीद मुहाल है। लिहाज़ा किसी सेहतमंद के लिये सुकर यानी मदहोशी सिफ़त नहीं हो सकती। ला मुहाला आदमी, सुकर को अपनी तरफ़ लाने की क़ुदरत नहीं रखता बल्कि वह ख़ुद सुकर के हाथों मग़लूब हो जाता है। न वह लोगों की तरफ़ मुतवज्जोह होता है न इससे तकल्लुफ़ की कोई सिफ़त ज़ाहिर होती है। इस बारे में मशायख़ का मसलक यह है कि साहबे इस्तेक़ामत ही की पैरवी और तक़लीद की जाये। गर्दिशे अहवाल की ईक़्तेदा दुरुस्त नहीं होती। अगरचे मशायख़ की एक जमाअत उसे जायज़ रखती है कि आदमी अपने इख़्तेयार से ग़ल्बा व सुकर की राह इख़्तेयार कर सकता है क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

तज़र्रुअ व ज़ारी करो अगर न कर सको तो रोने की सी सूरत बना लो। इसकी दो सूरतें हैं एक तो यह कि रियाकारों की मानिंद खुद को भी वैसा ही बना लो यह शिर्क सरीह है। दूसरी यह कि खुद को वैसा बना लो ताकि हक़ तआला इस बनावट को हक़ीक़त के इस दर्जे के मुताबिक़ बना दे जो अहले हक़ीक़त का है ताकि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान के मुवाफ़िक़ बन जाओ। जिसने जिस क़ौम की मुशाबिहत की वह उसी में से है लिहाज़ा अक़साम मुजाहिदे में से जिस क़दर हो सके उसे तो करता रहे इसके बाद वह खुदा से उम्मीदवार हो कि उस पर इसके मअ़नी-ए-हक़ीक़त को खोल दे एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि यानी मुजाहिदों से मुशाहदे हासिल होते हैं।

हुजूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मुजाहिदे हर लिहाज़ से उम्दा और बेहतर हैं लेकिन सुकर व ग़ल्बा इंसान के कसब व इख़्तियार में नहीं है कि वह मुजाहिदों से उसे हासिल कर सके और हुसूल सुकर के लिये ऐन मुजाहिदात भी इल्लत व सबब नहीं हैं। मुजाहिदे सेहतमंदी की हालत ही में मुमकिन हैं और कोई सेहतमंद सुकर की हालत को क़बूल नहीं कर सकता। क्योंकि यह मुहाल आदी है अब मैं सुकर व सुहव को और इसमें इख़्तेलाफ़े अक़वाल को बयान करता हूं ताकि मुश्किलात दूर हो जायें। इंशाअल्लाह।

सुकर व सुहव की बहस

वाज़ेह रहना चाहिये कि अरबाब मअ़नी ने सुकर व ग़ल्बा (मदहोशी) से ग़ल्बा-ए-मुहब्बते इलाही और सुहव (सेहतमंदी) से हुसूले मक़सद मुराद लिये हैं। इस मसले में अहले मअनी का बहुत इख़्तेलाफ़ है चुनांचे एक जमाअत सुकर को सुहव पर फ़ज़ीलत देती है और एक जमाअत सुहव को सुकर पर बरतरी देती है। पहली जमाअत जो सुकर को सुहव पर फ़ज़ीलत देती है उसमें हज़रत अबू यज़ीद बुस्तामी और उनके मुत्तबिईन हैं। इनका कहना है कि सुहव आदमियत की सिफ़त पर एतेदाल व इस्तेक़ामत की शक्ल बनाती है और यह मुशाहदा हक़ में बहुत बड़ा हिजाब है। और सुकर आफ़त के ज़ायल होने, सिफ़ाते बशरीयत के फ़ना करने, तदबीर व इख़्तेयार की नेस्त व नाबूद होने और मानवी बक़ा और हक़ तआला के अफ़आल में बंदे के तसर्रुफ़ात के फ़ना होने और उस कुव्वत के फ़ना होने से जो बंदे में उसकी जिन्स के ख़िलाफ़ है हासिल होता है यह हालते, सुकर बमुक़ाबला सुहव अबलग़ व अतम और

ज़्यादा मुकम्मल है। चुनांचे हालत सुहव में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से वह फ़ेअल सादिर हुआ जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने फ़रमाया तो उनके इस फ़ेअल की निसबत उन्हीं की तरफ़ फ़रमाई जैसा कि फ़रमाया यानी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने जालूत को क़त्ल किया। और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि हालते सुकर (यानी फ़नाफ़ीज़्ज़ात) पर फ़ायज़ थे तो आपसे जब फ़ेअल वजूद में आया तो अल्लाह तआला ने इस फ़ेअल की निसबत अपनी तरफ़ फ़रमाई जैसा कि फ़रमाया यानी आपने वह मुश्ते ख़ाक नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी थी। यानी लिहाज़ा बंदे और बंदगी के दर्मियान बड़ा फ़ासला है जो अज़ख़ुद क़ायम और अपनी सिफ़ात में साबित व बक़रार है अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया है तूने किया अगरचे इसमें भी उनकी बुज़ुर्गी और करामत का इज़हार है लेकिन वह ज़ात जो हक़ के साथ क़ायम है और अपनी सिफ़ात में फ़ानी है उसे यूं फ़रमाया कि जो कुछ तुमने किया वह हमने किया। लिहाज़ा बंदे के फ़ेअल की निसबत हक़ तआला के साथ होना इससे अफ़ज़ल व बेहतर है जिसमें हक़ तआला के फ़ेअल की निसबत बंदे की तरफ़ की जाये। जब फ़ेअले इलाही की निसबत बंदे की तरफ़ होती है तो बंदा अपने वजूद से क़ायम होता है और जब बंदे के फ़ेअल की निसबत हक़ तआला के साथ हो तो वह हक़ के साथ क़ायम व बाक़ी रहता है। जब बंदा अपने वजूद में साबित व बरक़रार होता है तो बंदा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़ेरे क़दम नज़र आता है और बसा औक़ात ऐसी हालत में उसकी नज़र ना मुनासिब मुक़ाम पर भी पड़ जाती है। जैसे कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की नज़र औरिया औरत पर पड़ी और जो देखा सो देखा। और जब बंदा हक़ के साथ क़ायम हो जाये जैसे कि हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं तो उसकी नज़र का यह आलम हो जाता है कि जब उसकी नज़र जिन्से औरत पर ही पड़ती है तो हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ख़ुद ज़ैद पर हराम हो जाती है। इसकी वजह यही है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महले सुहव (होश व इख़्तेयार) में थे और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महल सुकर में

और वह जमाअत जो सुहव को सुकर पर फ़ज़ीलत देती है उनमें हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि और उनके ताबेईन हैं। उनका कहना है कि सुकर महले आफ़त है इसलिये सुकर में अहवाल परागंदा, सेहत व होश मफ़क़ूद

और बंदे के तमाम अलायक़ गुम होते हैं और जबबंदा तमाम क़वायद मुआनी का तालिब हो ख़्वाह सूरते फ़ना में या हालते बक़ा में, ख़्वाह नाबूद होने की सूरत में या इसबात की शक्ल में, अगर बंदा सहीहुल हाल न होगा तो तहक़ीक़ का फ़ायदा कैसे हासिल कर सकेगा इसलिये कि अहले हक़ का दिल हर मौजूद व मख़लूक़ से ख़ाली होना चाहिये और बीनाई की बुनियाद, क़ैदे अशिया में कभी चैन नहीं पाती और उसकी आफ़त हरगिज़ ज़ायल नहीं होती। लोग हक़ तआला के मुशाहेदा (फ़ना होने वाली हैं) नहीं देख पाते और वह इसमें फंसे रहते हैं।

सहीह तौर पर अशिया का देखना दो तरह पर है देखने वाली चीज़ों को या तो बक़ा की नज़र से देखे या फिर फ़ना की नज़र से? अगर वह बक़ा की नज़र से देखेगा तो उन तमाम चीज़ों को अपने वजूद में नाक़िस पायेगा क्योंकि वह चीज़ों को उनकी मौजूदा हालत में अपने वजूद के साथ बाक़ी देखगा और अगर वह फ़ना की नज़र से देखेगा तो वह तमाम चीज़ों को हक़ तआला की बक़ा के पहलू में फ़ानी और नापैद देखेगा। यह दोनों कैफ़ियतें मौजूदात से देखने वाले का मुंह फेर देती हैं इसलिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहालते दुआ यह फ़रमाया कि यानी ऐ ख़ुदा मुझे अशिया की हक़ीक़त जैसी कि वह हैं दिखा। यह इसलिये कि जिसने अशिया को इनकी हक़ीक़त के साथ देखा वह आसूदा रहा। इस मअ़ने में हक़ तआला का यह इरशाद है कि यानी ऐ देखने वाले साहबे बसीरत! ब निगाहे इबरत देख। बंदा जब तक देखेगा नहीं तो वह इबरत कैसे हासिल कर सकेगा। इसलिये यह बातें हालते सुहव (होश व इख़्तेयार) के सिवा कैसे दुरुस्त हो सकती हैं। अहले सुकर की इन मुआनी तक कैसे रसाई मुमकिन है? चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सुकर की हालत में थे। वह एक तजल्ली-ए-रब्बानी को बर्दाश्त न कर सके। होश जाते रहे जैसा कि हक़ तआला ने फ़रमाया है यानी मूसा अलैहिस्सलाम चीख़ मारकर ज़मीन पर गिर पड़े। और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हालत सुहव की थी इसलिये मक्का मुकर्रमा से क़ाब क़ौमें और दना तक ऐने तजल्ली-ए-रब्बानी में बेदार और होशियार रहे।

मैंने शराबे राहत प्याले भर भर के पिये
लेकिन शराब ने मुझपर न असर किया और न मैं उससे सैराब ही हो सका

मेरे शैख़ व मुरशिद ने फ़रमाया जो जुनैदी मशरब के थे कि सुकर बच्चों के खेल का मैदान है और सुहव मरदाने ख़ुदा के फ़ना का मैदान।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं अपने शैख़ व मुरशिद के मुताबिअत और उनकी मवाफ़िक़त में कहता हूं कि साहबे सुकर के हाल का कमाल, सुहव है और सुहव का अदना दर्जा यह है कि वह बशरी हालत में दीदार से महरूम रह जाये। लिहाज़ा ऐसा सुहव जो यह आफ़त बरपा न करे उस सुकर से बेहतर है जो सरासर आफ़त है।

हज़रत अबू उस्मान मग़रबी रहमतुल्लाह अलैहि के वाक़ियात में मज़कूर है कि उन्होंने इब्तेदाए अहवाल में जंगलों में बीस साल तक ऐसी गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर की कि किसी आदम की बू तक न सूंघी। यहां तक कि रियाज़त व मुजाहिदा ने चेहरे पर झुर्रियां और आंखों में हलक़े डाल दिये बीस साल के बाद सोहबत व जलवत का फ़रमान हुआ। उस वक़्त उन्होंने दिल में सोचा कि पहले अहलुल्लाह और ख़ाना काबा के हम नशीनों के साथ हम नशीनी करना मुबारक रहेगा चुनांचे मक्का मुकर्रमा का क़सद करके चल दिये। उधर औलिया किराम के दिलों में इलहाम हो चुका था हज़रत अबू उस्मान आ रहे हैं तो वह सब उनके इस्तेक़बाल के लिये बाहर आ गये। उन्होंने इनको इस हाल में पाया कि बीनाई पथरा चुकी थी और सिवाए ज़िन्दगी के रमक़ के उनके जिस्म में कुछ न था। यह हाल देखकर कहने लगे कि ऐ अबू उस्मान! आपने ज़िन्दगी के बीस साल इस शान से गुज़ारे कि तमाम लोग आपके ज़िन्दा होने ही से मायूस हो चुके थे हमें बताइये आपने ऐसा क्यों किया? और आपने क्या देखा? और क्या पाया? और क्यों वापस आये? हज़रत अबू उस्मान ने फ़रमाया मैं बहालते सुकर गया, सुकर को आफ़त देखी, मायूसी को पाया और आजिज़ी से वापस आया। तमाम मशायख़ ने बयक ज़ुबान कहा अब आपके बाद सुहव व सुकर की ताबीर हर तारीफ़ करने वाले पर हराम है क्योंकि उन्होंने तशरीह व ताबीर का हक़ अदा किया और सुकर की आफ़त को ज़ाहिर फ़रमा दिया।

अर्ज़ यह कि सुकर, बक़ाए सिफ़त का ऐन और फ़नाए सिफ़त का गुमान है और यह सरापा हिजाब है और सुहव फ़ना-ए-सिफ़त में मुकम्मल मुशाहदा की बक़ा है और यह ऐन कश्फ़ व मुशाहदा है। अगर किसी की यह सूरत हो कि सुहव के मुक़ाबला में सुकर फ़ना से ज़्यादा नज़दीक हो तो यह मुहाल है क्योंकि सुकर ऐसी सिफ़त है जो सुहव पर ज़्यादा है और जब तक बंदे में ऐसी सिफ़ात का इज़ाफ़ा होता रहे वह उस वक़्त तक बेख़बर रहता है और जब बंदे में यह सिफ़ात कम होने लगीं उस वक़्त तालिब को उम्मीद हो सकती है कि

मुशाहदा हो। सुहव व सुकर की तारीफ़ में यह इंतेहाई हालत का बयान है।

हिकायत : हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि जो मग़लूबुल हाल थे उनका वाक़िया है कि हज़रत यहया बिन मआज़ ने उनके नाम एक ख़त भेजा जिसमें दर्याफ़्त किया कि आप उस शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं जिसने दरियाए मुहब्बत से एक क़तरा पिया और मस्त हो गया? हज़रत बा यज़ीद ने जवाब में तहरीर फ़मराया आप उस शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि अगर सारे जहान के दरिया, मुहब्बत की शराब बन जायें और वह शख़्स उन सबको पी जाये फिर भी वह सैराब न हुआ और प्यासा ही रह जाये? लोगों ने उससे यह समझा कि हज़रत यहया ने सुकर की तरफ़ इशारा फ़रमाया था और हज़रत बा यज़ीद ने सुहव की तरफ़ इशारा फ़रमाया हालांकि वाक़िया इसके बरअक्स है यानी साहबे सुहव वह होता है जो एक क़तरा की भी बर्दाश्त न रखे और साहबे सुकर वह होता है जो मस्ती में सब कुछ पीकर भी प्यासा रहता है इसलिये कि शराबे मुहब्बत मस्ती का सरचश्मा है। जिन्स के लिये हम जिंसी ही बेहतर होती है। सुहव चूंकि उसकी ज़िद है इसलिये वह शराब से राहत नहीं पाता (बल्कि उसके लिये शर्बत विसाल और दीदार व मुशाहदा मोजिबे राहत होता है-मुतरजिम)

सुकर के अक़साम : सुकर की दो क़िस्में हैं एक शराबे मवद्दत से दूसरे जामे मुहब्बत से। सुकरे मवद्दत मालूम है यानी वह सब के साथ है क्योंकि मदहोशी और मस्ती, नेमत के दीदार से पैदा होती है और सुकरे मुहब्बत ग़ैर मालूम यानी बे इल्लत व सबब है क्योंकि यह मस्ती, मुनइम यानी हक़ तआला के दीदार से पैदा होती है लिहाज़ा जिसने नेमत को देखा गोया उसने ख़ुद को देख लिया। और जिसने मुनइम को देखा उसने अपने आपको नहीं देखा। अगरचे वह हालते सुकर में है लेकिन उसका यह सुकर सुहव है।

सुहव के अक़साम : इसी तरह सुहव की भी दो क़िस्में हैं एक सुहव बर ग़फ़लत दूसरा सुहव पर मुहब्बत। सुहव बर ग़फ़लत बहुत बड़ा हिजाब है और सुहव बर मुहब्बत, रौशन व वाज़ेह कश्फ़ व मुशाहेदा है। लिहाज़ा जो ग़फ़लत पर होता है अगरचे वह सुहव व होशमंद है मगर सुकर व मदहोश है और जो मुहब्बत में वासिले बहक़ हो जाये अगरचे वह सुकर व मदहोशी में हो मगर वह सुहव होशमंद है। और जब असल व बुनियाद मज़बूत व मुस्तहकम होती है तो सुहव सुकर की मानिंद और सुकर सुहव की मानिंद होती है और जब

असल व बुनियाद दुरुस्त व सही न हो तो दोनों बे फ़ायदा और बेकार हैं।

खुलासा यह है कि मरदाने ख़ुदा की जाए इक़ामत में सुहव व सुकर इख़्तेलाफ़ सबब की वजह से मालूम होता है लेकिन जब सुल्ताने हक़ीक़त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना जमाल दिखा दे तो सुहव व सुकर दोनों तुफ़ैली रह जाते हैं। इसलिये कि इन दोनों के किनारे और सरहदें एक दूसरे से मिली हुई हैं। और एक की इंतेहा में दूसरे की इब्तेदा शामिल है। इब्तेदा व इंतेहा सिवाए तफ़रेक़ा के कुछ नहीं है। चूंकि उनकी निसबत तफ़रेक़ा है इसलिये हुक्म में दोनों बराबर हैं। और दो नफ़ी के जमा करने से तिफ़रक़ा ही होगा। इसी मफ़हूम में यह शेअर कहा गया है-

यानी जब दीदारे हक़ की सुबह दिल को ख़ुश करने वाले तारों के साथ तुलू होती है तो इसमें मस्त व होशियार दोनों बराबर होते हैं।

हिकायत : सरख़न में दो बुज़ुर्ग रहते थे एक का नाम लुक़ाम और दूसरे का नाम अबुल फ़ज़ल हसन था। एक दिन लुक़मान अबुल फ़ज़ल के पास आये। अबुल फ़ज़ल के हाथ में किताब देखकर कहा ऐ अबुल फ़ज़्ल! किताब में क्या तलाश कर रहे हो? उन्होंने जवाब दिया उसे तलाश कर रहा हूं जिसे तुम इसको छोड़ कर तलाश कर रहे हो। लुक़मान ने कहा यह ख़िलाफ़ क्यों है? अबुल फ़ज़ल ने जवाब दिया ख़िलाफ़ तो तुम कर रहे हो और मुझसे दर्याफ़्त करते हो कि क्या तलाश कर रहे? लिहाज़ा मस्ती से होशियार बनो और होशियारी से बेदार हो ताकि तुमसे ख़िलाफ़ उठ जाये और जान सको कि हम और तुम किसे तलाश कर रहे हैं।

मज़कूरा बहस से तुमने अंदाज़ा लगा लिया होगा कि तैफ़ूरियों का जुनैदियों से कितना इख़्तेलाफ़ है। तसव्वुफ़ के मामलात में इनका मज़हब मतलक़न तर्के सोहबत और उज़लत नशीनी इख़्तेयार करता है और वह अपने मुरीदों को उसी की तलक़ीन किया रकते थे। अगर यह मयस्सर आ जाये तो यह तरीक़ा महमूद और सीरत लायक़ सताईश है।

४- फ़िरक़ा-ए-जुनैदिया

फ़िरक़ए जुनैदिया के पेशवा, हज़रत अबुल क़ासिम जुनैद बिन मुहम्मद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जिनको अपने ज़माने में ताऊसुल उलमा कहा जाता था। वह मशायख़ के सरदार और इमामुल अइम्मा थे। इनका तरीक़ा तैफ़ूरी मज़हब के बरअक्स सुहव पर मबनी है जिसकी तफ़सील गुज़र चुकी है। जुनैदी

मसलक व मशरब, तमाम मज़ाहिब में सबसे ज़्यादा मश्हूर और मारूफ़ है। अक्सर व बेश्तर मशायख़ जुनैदी मसलक पर हुए हैं मा सिवा उसके तरीक़त के मामलात में उनके इख़्तेलाफ़ और भी बहुत से हैं लेकिन मैंने इख़्तेसार के पेशे नज़र इसी पर इक्तेफ़ा करके इन्हें छोड़ दिया है।

हिकायत : हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि अपने ग़ल्बए हाल में जब हज़रत अम्र बिन उस्मान से जुदा होकर हज़रत जुनैद के पास आये तो आपने फ़रमाया क्यों आये हो? अर्ज़ किया इसलिये कि शैख़ की सोहबत में रहूं। आपने फ़रमाया मुझे मजनूनों की सोहबत दरकार नहीं क्योंकि सेहत के लिये सेहत चाहिये। जब तुम आफ़त की मौजूदगी में मेरे क़रीब रहोगे तो ऐसा ही होगा जैसे तुमने हज़रत अब्दुल्लाह तशतरी और अम्र के साथ रहकर किया और फिर जुदा होकर चले आये। हज़रत हलाल ने अर्ज़ किया यानी ऐ शैख़! सुहव व सुकर तो बंदे की सिफ़तें हैं और यह बंदे के साथ उस वक़्त तक पेवस्त हैं जब तक वह अपने रब से महजूब है हत्ता कि इसकी तमाम सिफ़ात फ़ना न हो जायें। इसके जवाब में हज़रत जुनैद ने फ़रमाया यानी ऐ मंसूर के बेटे! तुमने सुहव व सुकर के मुआनी समझने में ग़लती की है इसलिये कि बिला ख़िलाफ़ सुहव का मफ़हूम यह है कि बंदा का हाल हक़ तआला के साथ सही हो और यह मफ़हूम न बंदे की सिफ़त है और न इसके इक्तेसाबे हक़ के तहत दाख़िल है। और ऐ इब्ने मंसूर! मैंने तुम्हारी बातों में बहुत सी लग़्व और बे मअ़नी इबारतें पाई हैं।

५- फ़िरक़ा-ए-नूरिया

नूरी फ़िरक़ा के पेशवा, हज़रत अबुल हसन अहमद बिन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो मशायख़ में उलमा आलाम गुज़रे हैं और नूरी के लक़ब से मश्हूर हैं। मशायख़ में इनके औसाफ़े हमीदा और दलायले क़विय्या मारूफ़ हैं। तसव्वुफ़ में इनका मज़हब मुख़्तार है। इनके मज़हब की बुनियादी ख़ुसूसियत यह है कि वह फ़ुक़र पर तसव्वुफ़ को फ़ज़ीलत देते हैं और इनका मामला हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैहि के मज़हब के मुवाफ़िक़ है और इस तरीक़ा के नवादिरात में से यह है कि साहबे हक़ सोहबत में अपने हक़ का ईसार करते हैं। इसलिये कि वह बग़ैर ईसार के सोहबत हराम जानते हैं। हज़रत नूरी फ़रमाते हैं कि दरवेशों के लिये सोहबत फ़र्ज़ है और गोशा नशीनी ना पसंदीदा। और यह कि हमनशीं का दूसरा हम नशीं के लिये ईसार भी फ़र्ज़ है चुनांचे इनका

इरशाद है कि-

गोशा नशीनी से बचो क्योंकि गोशा नशीनी शैतान की हम नशीनी है और बंदगाने खुदा की सोहबत में आओ क्योंकि सोहबत में अल्लाह तआला की खुशनूदी है।

अब मैं ईसार की हक़ीक़त बयान करता हूं और जब सोहबत और उज़लत के बाब में पहुंचूंगा तो वहां इसकी भी वज़ाहत करूंगा इंशाअल्लाह।

ईसार की बहस

अल्लाह तआला का इरशाद है-

''मुसलमान अपनी जानों की निसबत दूसरों पर ईसार करते हैं गरचे इन्हें तंगी हो।''

ईसार करने वाले अगरचे खुद इसके ज़रूरतमंद होते हैं यह आयते करीमा फुक़रा सहाबा की शान में ख़ास तौर पर नाज़िल हुई।

ईसार की हक़ीक़त : ईसार की हक़ीक़त यह है कि सोहबत में अपने रफ़ीक़ के हक़ की हिफ़ाज़त रखे और अपने हक़ से इसके हक़ की ख़ातिर दस्तबरदार हो जाये और अपने रफ़ीक़ को आराम व राहत पहुंचाने में खुद तकलीफ़ बर्दाश्त करे और अपने आराम व राहत को उस पर कुरबान कर दे। यानी इसलिये कि ईसार यह है कि दूसरों की मदद करने में क़ायम रहे। बावजूद यह कि वह खुद इसका हाजतमंद हो। यह इस हुक्मे खुदावंदी के तहत है जिसने अपने रसूले मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि दरगुज़र से काम लो और नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से दूर रहो। यह मसला अपनी कामिल तशरीह के साथ आदाबे सोहबत के बाब में आयेगा इंशाअल्लाह।

ईसार के अक़साम : ईसार की दो क़िस्में हैं एक सोहबत में ईसार करना जैसा कि लिखा जा चुका है। दूसरे मुहब्बत में ईसार करना। लेकिन हमनशीं और रफ़ीक़ के हक़ में ईसार करना एक तरह से रंज व तकलीफ़ है। लेकिन दोस्त के हक़ में ईसार करना सरासर राहत ही राहत है।

हिकायत : यह वाक़िया मशहूर है कि गुलामुल ख़लील ने जमाअते सूफ़िया के साथ जब अदावत का इज़हार किया और हर एक से तरह तरह की दुश्मनी पैदा की और हज़रत नूरी, रक़ाम और अबू हमज़ा रहमतुल्लाह अलैहिम को गिरफ़्तार कराकर दरबारे ख़िलाफ़त में बुलवाया तो उस वक़्त उस गुलामुल ख़लील ने कहा यह ज़िन्दीक़ों की जमाअत है। ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर

आप इन ज़िंदीक़ों के क़त्ल का हुक्म दे दें तो इन ज़िंदीक़ों की नस्ल ही ख़त्म हो जाये क्योंकि यह तीनों तमाम ज़िंदीक़ों के सरग़ना हैं जिसके हाथ से ऐसी नेकी वाक़ेय हो मैं उसके अज्र व सवाब का ज़ामिन हूंगा। ख़लीफ़ा ने इन सबकी गर्दनें उड़ा देने का हुक्म दे दिया। चुनांचे जल्लाद आया और उसने तीनों के हाथ बांधे और हज़रत रक़ाम की गर्दन उड़ाने के लिये तलवार उठाई तो हज़रत नूरी जल्दी से उठे और रक़ाम की जगह तलवार की ज़द में जा बैठे। तमाम लोगों ने इस पर तअज्जुब किया जल्लाद ने कहा ऐ जवांमर्द यह तलवार ऐसी नहीं है जिसे खेल समझा जाये और तुम इसके सामने आओ। अभी तुम्हारी बारी नहीं आयी है। हज़रत नूरी ने फ़रमाया तुम ठीक कहते हो लेकिन मेरा तरीक़ा ईसार है दुनिया में सबसे अज़ीज़ ज़िन्दगानी है मैं चाहता हूं कि अपनी ज़िन्दगी के जो बक़िया सांस हैं इनको अपने भाईयों पर कुरबान कर दूं। क्योकि मेरे नज़दीक दुनिया में एक सांस लेना आख़ेरत के हज़ार सांस से बेहतर है। यह दुनिया ख़िदमत व इबादत और ख़ुदा की बंदगी का मुक़ाम है और आख़रत कुरबत की जगह और कुरबत ख़ुदा ही से हासिल होती है। ख़लीफ़ा ने जब यह बात सुनी तो वह उनकी तबीयत की नर्मी और कलाम की बारीकी पर ऐसा मुतअज्जुब हुआ कि उसी वक़्त हुक्म दिया कि अभी ठहर जाओ। इस ज़माने में क़ाज़ी उलक़ज़ात अल अब्बास बिन अली थे। ख़लीफ़ा ने इनके अहवाल की तफ़तीश का काम उसके सुपुर्द कर दिया। चुनांचे क़ाज़ी अबुल अब्बस इन तीनों को अपने घर ले गया। उसने शरीअत और हक़ीक़त के अहकाम व मसायल के बारे में सवालात किये और हर सवाल के जवाब में इन्हें राहे हक़ पर पाया और इनके अहवाल से अपनी ग़फ़लत व नादानी पर शर्मसार हुआ। उस वक़्त हज़रत नूरी ने फ़रमाया ऐ क़ाज़ी! जो सवालात तुमने दर्याफ़त किये हैं उनकी हैसियत कुछ भी नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला के ऐसे बंदे भी हैं जो उसके साथ खाते, पीते, बैठते, और उसी के साथ बात करते हैं। मतलब यह कि उन मरदाने ख़ुदा का क़ियाम व क़ऊद अकल व शर्ब, हरकत व सकून और नुतक़ व कलामअल्लाह तआला ही के साथ है इसी के लिये ज़िन्दा हैं और इसी के मुशाहदा में महव रहते हैं। अगर एक लम्हा के लिये भी मुशाहेदए हक़ न हो तो उनकी ज़िन्दगी मुज़महल व परागंदा हो जाती है। ऐसा लतीफ़ कलाम सुनकर क़ाज़ी बहुत हैरत ज़दा हुआ उसने उसी वक़्त तमाम गुफ़्तगू और उनके हालात की दुरुस्तगी क़लमबंद करके ख़लीफ़ा के पास भेज दी। और

लिखा कि अगर यह जमाअत मुलहिदों की है तो जहान में फिर कौन मोहिद और तौहीद परस्त होगा? मैं गवाही देता हूं कि और फ़ैसला करता हूं कि अगर यह मुलहिद हैं तो रुए ज़मीन में कोई मोवहहिद नहीं है। ख़लीफ़ा ने इन सबको बुलाया और कहा अगर कुछ ज़रूरत हो तो बतायें। उन्होंने कहा ऐ ख़लीफ़ा! हमें तुमसे यही हाजत है कि तुम हम सबको फ़रामोश कर दो। न अपनी क़बूलियत से हमें अपना मुक़र्रब बनाओ और न अपनी दूरी से हमें मरदूद व मक़हूर क़रार दो क्योंकि हमारे लिये तुम्हारी दूरी, तुम्हारी क़बूलियत के मुशाबह है और तुम्हारी क़बूलियत तुम्हारी दूरी की मानिंद। ख़लीफ़ा रोने लगा और इज़्ज़त व एहतेराम के साथ इन्हें रुख़सत कर दिया।

ईसारे सहाबा : हज़रत नाफ़ेअ बयान करते हैं कि इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को एक रोज़ मछली खाने की ख़्वाहिश पैदा हुई। शहर भर में मछली तलाश कराई मगर न मिली। चंद रोज़ बाद मुझे मछली मिल गयी मैंने बावरची को तैयार करने का हुक्म दिया। फिर जब मैंने उनके रूबरू पेश किया तो मछली देखते ही उनकी पेशानी पर ख़ुशी व मुसर्रत की लहर दौड़ गयी। उसी वक़्त एक साइल उनके दरवाज़े पर आ गया। उन्होंने हुक्म दिया कि यह मछली सायल को दे दी जाये। गुलाम ने कहा आक़ा! आप इतने दिन से मछली की तलाश में थे आपको इस की ख़्वाहिश थी। आप इसे क्यों दे रहे हैं मैं सायल को कोई और चीज़ दिये देता हूं। फ़रमाया ऐ गुलाम! अब इसका खाना मुझ पर हराम है क्योंकि मेरे दिल में इसकी ख़्वाहिश नहीं रही। उसके बाद हज़रत इब्ने उमर ने यह वाक़िया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुनाया तो हुज़ूर ने फ़रमाया यानी जिस आदमी के दिल में किसी चीज़ की ख़्वाहिश पैदा हो और वह चीज़ उसे मिल जाने पर वह उससे हाथ खींच ले अपने आप पर दूसरे को तरजीह दे तो यक़ीनन अल्लाह तआला उस ईसार पर उसे बख़्श देगा।

ईसार की नादिर मिसाल : दस दरवेश ब्याबान में सफ़र कर रहे थे असनाए राह में इन्हें शिद्दत की प्यास लगी। इनके पास सिर्फ़ एक प्याला पानी था। हर एक ने दूसरे को वह पेश किया मगर किसी ने नहीं पिया यहां तक कि प्यास की शिद्दत में नौ दरवेश दुनिया से रुख़सत हो गये एक दरवेश रह गया। उसने कहा जब मैंने देखा कि सब फ़ौत हो चुके हैं और सिर्फ़ मैं ही रह गया हूं तो मैंने वह पानी पी लिया जिससे मुझे होश आया और तवानाई महसूस हुई। किसी ने उस दरवेश से कहा अगर तुम भी उसे न पीते तो अच्छा होता। उसने

कहा ओ शख़्स! शरीअत को क्या समझता है? अगर उस वक़्त उसे न पीता तो मर जाता तो मैं अपनी जान का क़ातिल होता और मवाख़ज़ादार ठहरता। उस शख़्स ने कहा फिर तो वह नौ दरवेश भी अपने क़ातिल ठहरे। दरवेश ने कहा नहीं, उन्होंने एक दूसरे की ख़ातिर पानी नहीं पिया कि इनकी ज़िन्दगियां बच जायें जब वह उस ख़ातिरदारी और ईसार में जान बहक़ हुए और सिर्फ़ मैं अकेला रह गया तो अब शरअन पानी का पीना मुझ पर वाजिब हो गया।

ईसार में फ़रिश्तों की आज़माईश : अमीरुल मोमिनीन सैयदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहहु बवक़्ते हिजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर आराम फ़रमाए हुए और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके ग़ारे सोर में तशरीफ़ फ़रमा हुए चूँकि उस रात काफ़िरों ने हुज़ूर को शहीद करने का पक्का इरादा कर लिया था तो अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल व मीकाईल अलैहिमुस्सलाम से फ़रमाया मैंने तुम दोनों के दर्मियान बिरादरी और मुहब्बत पैदा करके एक दूसरे पर ज़िन्दगी दराज़ कर दी है अब बताओ तुम दोनों में से कौन सा भाई ऐसा है जो अपनी ज़िन्दगी को दूसरे पर कुरबान करके अपनी मौत को चाहेगा। मगर इन दोनों फ़रिश्तों ने अपनी अपनी ज़िन्दगी को ही इख़्तेयार किया और एक दूसरे पर ईसार व कुरबानी के लिये तैयार न हुए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया तुम दोनों हज़रत अली मुर्तज़ा की बुज़ुर्गी व फ़ज़ीलत को देखो कि मैंने अली मुर्तज़ा और अपने रसूल के दर्मियान बिरादरी क़ायम फ़रमाई लेकिन अली मुर्तज़ा ने इनके मुक़ाबले में अपने क़त्ल और अपनी मौत को पसंद किया और वह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जगह पर सो गये। अपनी जान को उन पर फ़िदा करने और अपनी ज़िन्दगी को उन पर निसार करने के लिये तैयार हो गये और ख़ुद को हलाकत के मुंह में डाल दिया। अब तुम्हारा फ़र्ज़ यह है कि तुम ज़मीन पर जाओ और अली मुर्तज़ा की ख़िदमत बजा लाओ और उनको दुश्मनों से महफ़ूज़ रखो चुनांचे जिब्राईल व मिकाईल अलैहिमुस्सलाम आये एक अली मुर्तज़ा के सिरहाने और दूसरे उनकी पाईंती हिफ़ाज़त के लिये खड़े हो गये। उस वक़्त जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा यानी ऐ अली इब्ने अबी तालिब! तुम कितने ख़ुश क़िस्मत हो, कौन है जो तुम्हारी मिस्ल हो? बिलाशुबह अल्लाह तआला आज तुम्हारे साथ फ़रिश्तों पर फ़ख़्र व मुबाहात फ़रमा रहा है और तुम अपनी

नींद में मगन हो। इस ईसार पर अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई। यानी कुछ लोग ऐसे है। जो अपनी जान को ख़ुदा की ख़ातिर बेचते हैं और अल्लाह बंदों पर मेहरबान है।

गज़्वए उहद में ईसार की मिसाल : जिस वक़्त अल्लाह तआला ने गज़्वए उहद में सख़्ती व मुशक़्क़त के ज़रिये मुसलमानों का इम्तेहान लिया तो एक अंसारी इफ्फ़त मआब औरत शरबत का प्याला लेकर आयीं ताकि किसी मजरूह को पिलायें वह बयान करती हैं कि मैदाने जंग में एक बुज़ुर्ग सहाबी को ज़ख़्मों से चूर देखा जो गिनती के सांस पूरे कर रहे थे। उन्होंने इशारा किया कि मुझे पानी दो। जब मैं पानी लेकर उनके क़रीब पहुंची तो दूसरे ज़ख़्मी ने पुकारा मुझे पानी दो। पहले ज़ख़्मी ने पानी न लिया और मुझे कहा उनके पास ले जाओ। जब मैं उनके पास पहुंची तो तीसरे ज़ख़्मी ने पुकारा पानी उन्होंने भी न पिया और कहा उनके पास ले जाओ यहां तक कि उस तरह मैं सात ज़ख़्मियों के पास पहुंची जब मैं सातवें के पास पहुंची तो उन्होंने चाहा कि पानी पिये तो जान बहक़ हो गया मैं पानी लेकर छटे के पास पहुंची तो उसने भी जान दे दी इस तरह हर एक ज़ख़्मी अपनी जान को हक़ तआला के हवाले करते रहे और किसी ने एक दूसरे के ईसार में पानी नहीं पिया। इस सिलसिले में आयते करीमा नाज़िल हुई यानी मुसलमान अपनी जानों पर ईसार करते हैं अगरचे बख़ुद तंगी में हों।

बनी इसराईल के एक आबिद का वाक़िया : बनी इसराईल में एक आबिद था जिसने चार सो साल तक इबादत की एक दिन उसने कहा ऐ ख़ुदा अगर इस पहाड़ को पैदा न फ़रमाया होता तो लोगों के आने जाने और सफ़र व सेयाहत करने में बहुत आसानी होती। उस ज़माने के नबी सलवातुल्लाह अलैहि से रब तआला ने फरमाया कि तुम फ़लां आबिद को बता दो कि हमारी मिलकियत में तुझे तसर्रुफ़ करने और राए देने का कोई हक़ नहीं है। अब चूंकि तूने यह गुस्ताख़ी व जुर्रत की है तो सुन कि तेरा नाम नेक बख़्तों की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज करके नाफ़रमानों और बदबख़्तों की फ़ेहरिस्त में लिखता हूं। आबिद के दिल में यह सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई और फ़ौरन सज्दा-ए-शुक्र में गिर गया। अल्लाह तआला ने नबी के ज़रिये कहलावाया कि ऐ नादान शक़ावत व बदबख़्ती पर सज्दा शुक्र वाजिब नहीं होता। आबिद ने कहा मेरा शुक्र, सक़ावत पर नहीं है बल्कि उस पर है कि मेरा नाम अल्लाह तआला के किसी दीवान

में तो है लेकिन ऐ खुदा के नबी! मेरी एक हाजत खुदा की बारगाह में पेश कर दो। नबी ने फ़रमाया कहो क्या है? उसने कहा खुदा से अर्ज़ करो कि अब जबकि तूने मेरे लिये दोज़ख में जाना मुक़र्रर कर दिया है तो इतना करम कर मुझे ऐसा बना दे कि तमाम मोवहहिद गुनाहगारों के बदले सिर्फ़ में ही गुनाहगार ठहरूं ताकि वह सब जन्नत में जायें। फ़रमाने इलाही हुआ कि इस आबिद से कह दो तेरा यह इम्तेहान तेरी ज़िल्लत के लिये नहीं था बल्कि लोगों के सामने तेरे ईसार के इज़हार के लिये था। अब रोज़े क़ियामत तू जिस जिस को शफ़ाअत करेगा मैं उन सबको जन्नत में भेज दूंगा।

हज़रत अहमद हम्माद सरख़सी का ईसार : हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अहमद हम्माद सरख़सी से पूछा कि तुम्हारी तौबा का इब्तेदाई वाक़िया क्या है उन्होंने बयान किया कि मैं एक मर्तबा सरख़स से जंगल की तरफ़ गया और अर्सा तक वहां ऊंटों के पास रहा और मैं हमेशा ख़्वाहिशमंद रहा कि मैं भूका रहूं और अपना खाना किसी दूसरे को दे दूं चूंकि खुदा का यह इरशाद लौहे क़ल्ब पर नक़्श था यानी मुसलमान अपनी जानों पर ईसार करते हैं अगरचे इन्हें खुद तंगी हो। इसी बिना पर ईसार पसंद लोगों से हुस्ने अक़ीदत रखता था। एक दिन एक भूका शेर जंगल से आया और मेरे ऊंटों में से एक ऊंट को मार डाला और जाकर एक बुलंद जगह पर खास क़िस्म की अवाज़ निकाली। जंगल के तमाम परिन्दे उस आवाज़ पर उसके गिर्द जमा हो गये। शेर ने उन सबके सामने उस ऊंट को फाड़ डाला और खुद कुछ न खाया। और दूर जाकर ऊंची जगह पर बैठ गया। वह दरिन्दे जिनमें भेड़िया, चीता, लोमड़ी और गीदड़ वग़ैरह थे सब उसे खाने लगे। शेर उस वक़्त तक खड़ा देखता रहा जब तक कि वह दरिन्दे खाकर वापस न चले गये। उनके जाने के बाद शेर ने खुद खाने का इरादा किया कि इतने में एक लंगड़ी लोमड़ी नमूदार हुई शेर फिर जाकर ऊंची जगह पर बैठ गया। लोमड़ी से जितना खाया गया खाया और चली गयी। उस वक़्त शेर आया और उसमें से थोड़ा सा खाया में दूर बैठा इस नज़ारे को देख रहा था। जब लौटने लगा तो शेर ने फ़सीह ज़ुबान में मुझसे कहा ऐ अहमद! लुक़मा का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्द तो अपनी जान व ज़िन्दगी तक क़ुरबान कर देते हैं जब मैंने इस दलील को देखा तो मैंने हर मशग़ूलियत से हाथ खींच लिया। यह था मेरी तौबा का इब्तेदाई वाक़िया।

हज़रत नूरी की मुनाजात : जाफ़र खुलदी बयान करते हैं कि एक दिन

हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि ख़लवत में मुनाजात कर रहे थे कि उनकी मनाजात के अलफ़ाज़ सुनने की ग़र्ज़ से इस तरह करीब हुआ कि उनको ख़बर न हो क्योंकि वह मुनाजात फ़सीह व बलीग़ थीं। उन्होंने मुनाजात में कहा कि ऐ ख़ुदा! तू दोज़ख़ियां को अज़ाब देगा हालांकि वह सब तेरे बंदे हैं और तेरे पैदा करदा हैं। और वह तेरे अज़ली इल्म व इरादा और कुदरत में हैं। अगर तू वाक़ियतन दोज़ख़ को लोगों से भरना ही चाहता है तो इस पर क़ादिर है कि मुझसे दौज़ख़ और उसके तबक़ात को भर दे और उन दोज़ख़ियों को जन्नत में भेज दे। जाफ़र कहते हैं कि मैं यह अल्फ़ाज़ सुनकर हैरान रह गया। मैंने जवाब में देखा कि किसी ने आकर मुझसे कहा कि तुम अबुल हसन से जाकर कह दो कि अल्लाह तआला फ़रमाता है हमने तुम्हारी इस शफ़क़त व ईसार पर जो तुम्हें हमारे बंदों से है तुम्हें बख़्श दिया।

हज़रत अबुल हसन रहमतुल्लाह अलैहि को नूरी इस बिना पर कहा जाता था कि अंधेरे घर में जब वह बात करते थे तो उनके बातिन के नूर से घर रौशन हो जाता था और यह कि वह मुरीदों के असरार को नूरे हक़ से मालूम कर लेते थे यहां तक कि हज़रत जुनैद बग़दादी उनके बारे में फ़रमाया करते थे कि अबुल हसन तो दिलों का जासूस है।

यह हैं नूरी मज़हब की ख़ुसूसियात जो अहले बसीरत के नज़दीक क़वी अलअसल और अज़ीमुल मामलात हैं।

हक़ीक़त यह है कि इंसान के लिये रूह पर ख़र्च करने और अपनी महबूब व मरग़ूब चीज़ से दस्तकश होने से ज़्यादा शदीद चीज़ कोई नहीं है। अल्लाह तआला ने तमाम नेकियों की कुंजी, सबसे ज़्यादा महबूब चीज़ ख़र्च करने को बताया है। चुनांचे फ़रमाता है-

हरगिज़ हरगिज़ नेकी न पाओगे जब तक कि अपनी सबसे ज़्यादा महबूब चीज़ उसके लिये ख़र्च न करोगे।

तरीक़त की असल यही है चुनांचे हज़रत रदयम रहमतुल्लाह अलैहि के पास एक शख़्स आया उसने कहा मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये आपने फ़रमाया-

ऐ फ़रज़ंद! कोई चीज़ जान ख़र्च करने से बढ़कर नहीं है बशर्ते कि तुम को उस पर क़ाबू हो वरना सूफ़ियां की गहरी बातों के दरपे न हो उसके सिवा जो कुछ है सब बातिल है।

अल्लाह तआला का इरशाद है-

यानी जो ख़ुदा की राह में जान दे चुके हैं उन्हें मुर्दा गुमान मत करो बल्कि वह अपने रब के हुज़ूर ज़िन्दा हैं इन्हें रिज़्क दिया जाता है।

दूसरी जगह इरशाद है-

जिन्होंने राहे ख़ुदा में जान दी उन्हें मुर्दा न कहो वह ज़िन्दा हैं हयाते अवदी और कुर्बे सरमदी राहे ख़ुदा में जान देने अपनी नसीब को छोड़ने और अल्लाह के दोस्तों की फ़रमा बरदारी से हासिल होती है।

ऐन ईसार व इख़्तेयार, अगरचे मारेफ़त की नज़र में जुदा जुदा हैं मगर ऐन में जमा हैं ऐन ईसार यह है कि अपने नसीब को जो कुरबान किया है हकीकत में वह ईसार कुरबानी ही इसका नसीब था। (क्योंकि हकीकत में वह हिस्सा अगर उसके मुकद्दर में होता तो मुकद्दर में चूंकि तग़य्युर व तबद्दुल का इमकान नहीं ला मुहाला वह किसी दूसरे पर कैसे ख़र्च होता बल्कि इसका मुकद्दर वही है जो उसे न मिला बल्कि दूसरे को पहुंचा। फ़ाफ़हम मुरतजम) तालिब का सुलूक जब तक कि उसके हुसूल से मुताल्लिक रहेगा वह हलाकत में रहेगा लेकिन जब अल्लाह तआला की तौफ़ीक और उसकी मदद शामिल हो जाये तो तालिब के तमाम अफ़आल व अहवाल परागंदा और नापैद हो जाते हैं। इस कैफ़ियत की कोई लफ़्ज़ी ताबीर नहीं हो सकती और न इस कैफ़ियत का कोई नाम तजवीज़ किया जा सकता है जिससे उसकी ताबीर की जा सके उसका हवाला देकर किसी नाम से पुकारा जा सके इस मफ़हूम को हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा इस तरह अदा करते हैं कि-

यानी जब तू मेरी निगाहों से ओझल था तो मैं अपने आपको भी न पहचान सका और ज़ाते मौसूफ़ मेरी सिफ़तों को तलाश ही करती रही। आज तो मैं सब से ग़ायब हूं अब अफ़सोस की इबारतों के सिवा कुछ नहीं है।

६- फ़िरकए सुहेलिया

फ़िरकए सुहेलिया के पेशवा, हज़रत सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि हैं यह अकाबिर व बरगुज़ीदा मशायख़ में से हैं। इनका तज़किरा पहले किया जा चुका है ग़र्ज़ यह अपने ज़माना के सुल्ताने वक़्त और तरीक़त में अहले हल व अक़्द, साहबे असरार थे। इनके दलायल बहुत वाज़ेह और इनकी हिकायात फ़हमे अक़्ल से बहुत बुलंद हैं। इनके मज़हब की ख़ुसूसियत इज्तेहाद मुजाहिदा-ए-नफ़्स और रियाज़ते शाक़्क़ा है। मुरीदों को मुजाहिदे से दर्जए कमाल तक पहुंचा देते थे।

आपके वाकियात में मश्हूर है कि एक मुरीद से फ़रमाया ख़ूब जहद व कोशिश करो यहां तक कि एक रोज़ तमाम दिन या अल्लाह या अल्लाह या अल्लाह ही कहते रहो और दूसरे और तीसरे दिन भी यही विर्द रहे। इसके बाद फ़रमाया अब इनके साथ रात को भी शामिल कर लो और यही कहते रहो। चुनांचे मुरीद ने इस पर अमल किया यहां तक कि मुरीद जब ख़्वाब में होता तो वह ख़्वाब में भी यही कहता था हत्ता कि यह उसकी तबई आदत बन गयी। इसके बाद फ़रमाया अब इससे लौट आओ और उसकी याद में मशगूल हो जाओ फिर उसकी यह हालत हो गयी कि वह हमा वक़्त उसी में मुस्तग़रक़ रहने लगा। एक दिन मुरीद अपने घर में था। हवा की वजह से वज़नी लकड़ी गिरी और उसने उसका सर फाड़ दिया। सर से जो ख़ून के कतरे टपक कर ज़मीन पर गिरते थे वह भी अल्लाह अल्लाह लिखते जाते थे।

ग़र्ज़ कि मुजाहिदं व रियाज़त के ज़रिये मुरीदों की तर्बियत, सुहेलियां का ख़ास तरीका है दरवेशों की ख़िदमत और उनकी ताज़ीम व तौकीर हम्दूनियों का ख़ास इम्तेयाज़ है और बातिन का मुराकबा जुनैदियों का इम्तेयाज़ है इसमें रियाज़त व मुजाहिदा फ़ायदा मंद नहीं होता।

अब मैं मारेफ़त नफ़्स और उसकी हकीकत बयान करता हूं इसके बाद मुजाहिदों के मज़ाहिब और उनके अहकाम बयान करूंगा ताकि तालिबे मारफ़त पर हकीकत आशकार हो जाये।

नफ़्स की हकीकत और हवा के मअ़ने की बहस

वाज़ेह हो कि नफ़्स के लग़वी मअ़ने वजूदे शई और हकीकत व ज़ात के हैं। लोगों की आदत और उनके इस्तेमाल में उसके मअ़ने बहुत हैं जो एक दूसरे के बिल्कुल ख़िलाफ़ बल्कि मतज़ाद हैं। चुनांचे एक गरोह के नज़दीक नफ़्स के मअ़ने रूह हैं, और एक गरोह के नज़दीक इसके मअ़ने मोवद्दत हैं और एक गरोह के नज़दीक इसके मअ़ने जिस्म व बदन के हैं। एक दूसरे गरोह के नज़दीक इसके मअ़ने में से कोई मअ़ना मुराद नहीं है।। अरबाबे तरीकत का इस पर इत्तेफ़ाक है कि दर हकीकत नफ़्स, तमाम शर और बुराई का सरचश्मा है। और बड़ा इमाम और कायद है लेकिन एक गरोह यह कहता है कि नफ़्स वह शय है जो कालिब में बतौर अमानत रखा गया है जैसे रूह। एक गरोह यह कहता है कि यह कालिब ही की एक सिफ़त है जिस तरह हयात व ज़िन्दगानी उसकी

सिफ़त है बई हमा इसमें सब मुत्तफ़िक़ हैं कि कमीना ख़सलतें और बुरे अफ़आल इसी से ज़ाहिर होते हैं।

अफ़आल नफ़्स के अक़साम : नफ़्स के अफ़आल की दो क़िसमें हैं एक मासीयत व नाफ़रमानी दूसरी कमीना ख़सायल जैसे तकब्बुर, गुस्सा और कीना हसद व बुख़्ल वग़ैरह इनके मा सिवा वह तमाम बातें जो अक़्ल व शरीअत के नज़दीक मज़मूम व हैं नफ़्स के अफ़आल बद हैं। इसलिये रियाज़त व मुजाहिदे से इन बुरे ख़सायल को ज़ायल किया जा सकता है जिस तरह तौबा से मासीयत को दूर किया जाता है और यह कि मआसी नफ़्स के ज़ाहिरी औसाफ़ में से है और कमीना ख़सायल इसके बातनी औसाफ़ में से ताल्लुक़ रखते हैं। रियाज़त व मुजाहिदा इसके ज़ाहिरी अफ़आल को और तौबा इसके बातिनी अफ़आल को नेस्त व नाबूद करते हैं। और कमीना ख़सायल से जो बातिन में कदूरत पैदा होती है वह ज़ाहिरी औसाफ़ (रियाज़त व मुजाहिदे) के ज़रिये पाक व साफ़ की जा सकती हैं। नफ़्स व रूह दोनों क़ालिब में इतने ही लतीफ़ हैं जितने आलमे शयातीन व फ़रिश्ते और जन्नत व दोज़ख़। लेकिन एक महले ख़ैर है और एक महल शर जिस तरह आंख महले बसर, कान महले समाअत और ज़ुबान महले ज़ायक़ा है इसी तरह कुछ ईमान व औसाफ़ क़ालिब इंसान में बतौर अमानत रखे गये हैं। लिहाज़ा नफ़्स की मुख़ालेफ़त तमाम इबादतों की जड़ और मुजाहिदों की असल है इसके बग़ैर बंदा राहे हक़ नहीं पा सकता। इसलिये कि नफ़्स की मवाफ़क़त में बंदे की हलाकत है और इसकी मुख़ालफ़त में बंदे की निजात है चूंकि हक़ तआला ने इसकी मुज़म्मत फ़रमाई है जैसा कि इरशाद है-

जिस ने नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका बेशक जन्नत उसका मसकन है।

और इरशाद है-

जब भी तुम्हारे पास रसूल वह चीज़ लेकर आये जो तुम्हारे जी को पसंद नहीं थी तो तुमने उससे तकब्बुर किया।

हज़रत यूसुफ़ सिद्दीक़ अलैहिस्सलाम के क़ौल की अल्लाह तआला ने ख़बर दी कि-

मैं अपने नफ़्स की पाकी नहीं बयान करता क्योंकि नफ़्स तो बहुत ज़्यादा बुराई का हुक्म करने वाला है मगर जो ख़ुदा ने मुझ पर रहम फ़रमाया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

अल्लाह तआला जब बंदे से भलाई का इदारा फ़रमाता है तो उसके नफ़्स के उयूब दिखा देता है।

अहादीस में मज़कूर है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई-

ऐ दाऊद तुम अपने नफ़्स का दुश्मन जानो क्योंकि मेरी मुहब्बत उसकी दुश्मनी में है।

यह जो कुछ बयान हुआ सब सिफ़ात हैं और यह यक़ीनी चीज़ है कि सिफ़त के लिए मौसूफ़ दरकार होता है ताकि वह इसके साथ क़ायम हो क्योंकि सिफ़त अज़ खुद क़ायम नहीं होती और सिफ़त की मारफ़त उस वक़्त तक नहीं हो सकती जब तक कि क़ालिब की पहचान मुकम्मल तौर से न हो जाये। उसकी पहचान का तरीक़ा, इंसान के औसाफ़ का बयान है और लोगों की इंसानियत की हक़ीक़त में उरफ़ा के बहुत से क़ौल हैं। यहां तक कि यह नाम किस चीज़ का है और किस चीज़ के लिये सज़ावार है। इसका इल्म हर तालिब हक़ पर फ़र्ज़ है इसलिये कि जो तालिब खुद से बेख़बर है वह अपने ग़ैर से ज़्यादा जाहिल होगा। जब बंदे को मारेफ़ते इलाही का मुकल्लफ़ बनाया गया है तो ला मुहाला पहले उसे अपनी मारेफ़त होनी चाहिये ताकि अपने हादिस व नोपैद होने को सेहत के साथ अल्लाह तआला के क़दीम व अज़ली होने को पहचाने और अपनी फ़ना से हक़ तआला के साथ बक़ा को मालूम कर सके। नस्से कुरआनी इस पर नातिक़ है कि अल्लाह तआला ने कुफ़्फ़ार का ज़िक्र सिफ़ते जहालत से किया है चुनांचे इरशाद है कि-

जिसने मिल्लते इब्राहीमी से मुंह मोड़ा वह अपने आपसे जाहिल है।

यानी उसने अपने आपको नहीं पहचाना-

तरीक़त के एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि-

जो अपने नफ़्स से जाहिल है वह दूसरों से ज़्यादा जाहिल होगा यानी उसने अपने आपको नहीं पहचाना।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं-

जिसने अपनी नफ़्स को पहचाना उसने अपनी रब को पहचान लिया।

मतलब यह कि जिसने अपने नफ़्स की बाबत न जान लिया कि वह फ़ना होने वाली चीज़ है तो उसने अपने रब को पहचान लिया और समझ लिया वही बाक़ी रहने वाली ज़ात है। एक क़ौल यह है कि जिसने अपने नफ़्स को

जान लिया कि वह ज़लील व ख़्वार होने वाली चीज़ है उसने अपने रब को पहचान लिया कि वह इज़्ज़त व करामत बख़्शने वाली ज़ात है। एक क़ौल यह है कि जिसने अपने नफ़्स को बंदगी से पहचान लिया उसने अपने रब को रबूबियत से पहचान लिया जिसने अपने ही को न पहचाना वह दूसरे को क्या पहचानेगा? इस जगह मारेफ़त नफ़्स से मुराद मारफ़ते इंसानियत है।

मारेफ़ते इंसानियत : बाहमी मुअरज़ा की वजह से लोगों का इसमें इख़्तेलाफ़ है चुनांचे एक गरोह यह कहता है कि इंसान सिर्फ़ रूह का नाम है और जिस्म उसकी ज़र्रा और लिबास और उसके रहने की जगह है ताकि तबाअ के खलल से महफूज़ रहे। और हुस्ने अक़्ल उसकी सिफ़त है यह क़ौल बातिल है इसलिये कि जब रूह जिस्म से जुदा हो जाती है तब भी उसे इंसान कहा जाता है यह नाम मुर्दा शख़्स से भी जुदा नहीं होता। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि जब जिस्म में रूह थी तो ज़िन्दा इंसान था और जब रूह निकल गयी तो वह इंसान मुर्दा हो गया। बतलान की दूसरी वजह यह है कि हैवान के अजसाम में भी रूह रखी गयी है मगर उसे इंसान नहीं कहा जाता है। अगर इंसानियत की इल्लत रूह होती तो चाहिये था कि रूह जहां कहीं भी हो उस पर इंसानियत के हुक्म का इतलाक़ किया जाता और वह भी दलायल के साथ यह क़ौल बातिल है।

एक गरोह यह कहता है कि जब तक रूह व जिस्म दोनों यकजा हैं उसका नाम इंसान है और जब यह दोनों जदा हो जायें तो फिर यह नाम साक़ित हो जाता है। जिस तरह घोड़े में जब दो रंग मिल जायें एक स्याह और दूसरा सफ़ेद तो उसे अबलक़ कहते हैं और जब कोई एक रंग उससे जाता रहे तो फिर अबलक़ न कहेंगे बल्कि सफ़ेद या स्याह कहेंगे यह क़ौल भी बातिल है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

क्या इंसान पर ज़माना में ऐसा वक़्त न गुज़रा जबकि वह कोई क़ाबिले ज़िक्र शेई न था।

और यह कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के जसदे ख़ाकी (पुतले) को इंसान कहा गया हालांकि उनके क़ालिब में उस वक़्त जान व रूह डाली भी नही गयी थी।

एक गरोह वह कहता है कि इंसान ऐसे हिस्सा-ए-जिस्म का नाम है जिसका तजज़िया नहीं किया जा सकता और उसका मुक़ाम दिल है क्योंकि आदमी के तमाम सिफ़ात की बुनियाद ही दिल है यह क़ौल भी बातिल है इसलिये कि

अगर कोई मार डाला जाये और उसका दिल निकाल कर फेंक दिया जाये तब भी इंसानियत का नाम उससे जुदा नहीं होता। और नफख़े रूह से पहले बिल इत्तेफ़ाक़ हज़रत आदम के क़ालिब में दिल न था।

मुद्दईयाने तसव्वुफ़ का एक गरोह इंसान के मअ़ने में शदीद ग़लती पर इसरार करता है इसका क़ौल है कि इंसान में खाने पीने और तग़य्युर पज़ीर होने की सलाहियत नहीं है इंसान का वजूद खुदा का एक भेद है और जिस्म उसका लिबास। यह खुदा का भेद, इम्तेज़ाजं तबअ और जिस्म व रूह के इत्तेहाद में पनहां है। इसका जवाब यह है कि तमाम ग़ाफ़िल, दीवाने फ़ासिक़ व फ़ाजिर और तमाम काफ़िरों के साथ भी इंसानियत का नाम मुस्तअमल है हालांकि इनमें इनके मजमूआ में इसरारे इलाही का नाम व निशान तक नहीं। वह सब मुतग़य्यिर और अपने वजूद में खाने पीने वाले हैं इसी तरह शख़्स वजूद के भी कोई मअ़ने नहीं कि उसे इंसान कहा जाये। ख़्वाह वह मौजूद हो या नापैद। हालांकि अल्लाह तआला ने हमारे इन तमाम अनासिर को जिनसे हम मुरक्कब हैं इंसान ही फरमाया है। बावजूद उन मअ़नी के जो बाज़ आदमियों में नहीं हैं चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है–

बेशक हमने इंसान कोचती हुई मिट्टी से बनाया फिर उसे पानी की बूंद (नुत्फ़ा) किया एक मज़बूत जगह (रहम) में फिर हमने उस पानी की बूंद को खून की फटकी बनाया और फिर उसको गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी से हड्डी। और फिर उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया या फिर उसे और सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सबसे बेहतर बनाने वाला।

लिहाज़ा बफ़रमाने इलाही जो तमाम सच्चों से बढ़कर सच्चा है यह मख़सूस सूरत जो आज़ा व तबाएअ़ और मिज़ाजों से मुरक्कब है इसका नाम इंसान रखा है। जैसे कि अहले सुन्नत व जमाअत के एक गरोह ने कहा है कि इंसान उस सूरत का नाम है जो इन सिफ़ात के साथ मख़सूस है जो कि उसके नाम को उसकी मौत से जुदा नहीं करती। यहां तक कि ज़ाहिर व बातिन की जो कैफ़ियत इस सूरते मख़सूसा पर मुरत्तबत है इसी ज़र्फ़ व आलह ही का नाम इंसान है इस सूरते मअहूदा व मख़सूसा से मुराद, तंदरुस्त व बीमार होना और आलह मौसूमा से मुराद मजनून व पागल है और ग़ाफ़िल होना है। बिल इत्तेफ़ाक़ जो खलक़त में सहीह तर होगा वह उतना ही कामिल तर होगा।

कामिल तर इंसान : वाज़ेह हो कि मुहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक कामिल तर

इंसान, बा एतेबार तरकीब तीन मअनी से होता है एक तो रूह दूसरे नफ़्स तीसरे जिस्म। और इसके हर ज़ात वजूद के लिये सिफ़त होती है जो इसके साथ क़ायम होती है। रूह के लिये अक़्ल, नफ़्स के लिये ख़्वाहिश, (हवा) और जिस्म के लिए एहसास, इंसान सारे आलम का नमूना है और आलम नाम दोनों जहां का है। इंसान में दोनों जहान की निशानियां मौजूद हैं। इस जहान की निशानी पानी, मिट्टी, हवा और आग है। इसी से बलग़म, ख़ून और सौदा की तरकीब है और उस जहान की निशानी जन्नत व दोज़ख़ और मैदाने क़यामत है। इंसान में जन्नत की लताफ़त की क़ायम मुक़ाम रूह है। और दोज़ख़ की आफ़त और उसकी हौलनाकियों का क़ायम मुक़ाम नफ़्स है और मैदाने क़यामत का क़ायम मुक़ाम जिस्म है। इन दोनों मअ़ने का जमाल व पर तो क़हर व मुहब्बत है लिहाज़ा जन्नत ख़ुदा के रज़ा की तासीर और दोज़ख़ उसकी नाराज़गी का नतीजा है। इसी तरह मोमिन की रूह मारेफ़त की राहत और उसका नफ़्स हिजाब व ज़लालत से है। जब तक मोमिन की रूह मारेफ़त से निजात हासिल करके जन्नत में न पहुंचे वह दीदारे इलाही की हक़ीक़त से बहरावर नहीं हो सकता और मुराद की तहक़ीक़ से हमकिनार नहीं हो सकता और न क़ुरबत व मारफ़त की हक़ीक़त जो रूह ही की असल है हासिल कर सकता है।

जो शख़्स दुनिया में ख़ुदा को पहचानता है वह दूसरों से मुंह मोड़कर राह शरीअत पर क़ायम रहता है वह रोज़े क़यामत न दोज़ख़ में जायेगा और न पुलसिरात की दुश्वारियों से दोचार होगा।

ख़ुलासा यह है कि मोमिन की रूह उसे जन्नत की तरफ़ बुलाती है क्योंकि रूह दुनिया में जन्नत का नमूना है और नफ़्स दोज़ख़ की तरफ़ ले जाने वाला होता है क्योंकि नफ़्स दुनिया में दोज़ख़ का नमूना है। मोमिन व आरिफ़े रब्बानी के लिये अक़्ल मुदब्बुर कामिल है और जाहिल व नादान के लिये नफ़्स की ख़्वाहिशें, निकम्मी क़ायद हैं। आरिफ़ के अक़्ल की तदबीर दुरुस्त व सवाब और उनके मा सिवा की ख़ता व ग़लत। लिहाज़ा तालिबाने राहे हक़ पर वाजिब है कि हमेशा नफ़्स की मुख़ालेफ़त की राह पर जमे रहें ताकि उसकी मुख़ालफ़त में अक़्ल व रूह मदद करती रहे। क्योंकि वह असरारे इलाही का मुक़ाम है।

हक़ीक़ते नफ़्स में मशायख़ के अक़वाल

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

बंदे के लिये सख़्त तरीन हिजाब, नफ़्स को देखना और उसकी तदबीर की

पैरवी करना है।

क्योंकि नफ़्स की पैरवी में हक़ तआला की मुख़ालफ़त मख़्फ़ी है और हक़ तआला की मुख़ालफ़त हिजाबात का मनबअ है।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

नफ़्स की ख़ू बू ऐसी है कि वह बातिल ही से चैन पाता है।

और राहे हक़ से उसे कभी फ़रहत महसूस नहीं होती।

हकीम तिर्मिज़ी हज़रत मुहम्मद बिन अली रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तुम यह चाहते हो कि अपने नफ़्स की बक़ा के बावजूद जो तुम्हारे अन्दर है हक़ तआला की मारेफ़त हासिल हो जाये भला यह कैसे हो सकता है? जबकि तुम्हारा नफ़्स अपने वजूद के बाक़ी रखने की तदबीर से भी आशना नहीं है वह अपने ग़ैर को कैसे पहचान सकेगा?

मतलब यह है कि नफ़्स तो ख़ुद अपने बक़ा की हालत से ना बलद और महजूब है और जो ख़ुद अपने आपसे ना बलद व महजूब हो वह हक़ तआला को किस तरह पहचान सकेगा?

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

कुफ़्र की बुनियाद, अपने नफ़्स की आरज़ू पर तेरा क़ायम रहना है।

गोया नफ़्स की ख़्वाहिशात पर क़ायम रहने में बंदे के लिये कुफ़्र की बुनियाद है क्योंकि इस्लाम की लताफ़त के साथ नफ़्स को कोई लगाव नहीं है। लिहाज़ा ख़्वाहिशाते नफ़्स से एराज़ करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये। इससे पहलू तही करने वाला मुन्किर होता है बल्कि मुन्किरे बेगाना।

हज़रत अबू सुलेमान दुर्रानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

नफ़्स अमानत में ख़्यानत करने वाला और रज़ाए इलाही से रोकने वाला है और सबसे बेहतर अमल नफ़्स कुशी है।

क्योंकि अमानत में ख़्यानत बेगानगी और रज़ाए इलाही के तर्क में गुमराही है इस सिलसिले में मशायख़ के अक़्वाल बकसरत हैं जिनकी तफ़सील पेश करना दुश्वार है।

अब मैं अपने मक़सूद की तरफ़ आता हूं और हज़रत सुहैल रहमतुल्लाह अलैहि के मज़हब के इसबात और उनके मुजाहिदए नफ़्स रियाज़त और हक़ीक़त का बयान करता हूं।

मुजाहिदए नफ़्स की बहस

अल्लाह तआला का इरशाद है कि-

जिन्होंने हमारी राह में मुजाहिदा किया यक़ीनन हमने उन्हें अपना रास्ता दिखाया।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि -

मुजाहिदा वह है जिसने राहे ख़ुदा में अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया।

और आपने फ़रमाया कि-

अब हम छोटे जिहाद यानी ग़ज़वे से जिहाद अकबर की तरफ़ लौट रहे हैं। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहादे अकबर क्या है? फ़रमाया सुन लो! वह नफ़्स से मुजाहिदा है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुजाहिदा-ए-नफ़्स को जिहाद यानी अज़वात पर फ़ज़ीलत दी है इसलिये कि इसमें रंज व मुशक़्क़त ज़्यादा है और इसमें पायमाल करना वाजिब है और मुजाहिदा नफ़्स में नफ़्स को मग़लूब व मक़हूर करना है।

तो ऐ अज़ीज़! अल्लाह तआला तुम्हें इज़्ज़त बख़्शे, आगाह रहो कि मुजाहिदा नफ़्स का तरीक़ा किताब व सुन्नत से वाज़ेह व ज़ाहिर है और तमाम दीनों और सब मिलतों में उसकी तारीफ़ की गयी है अहले तरीक़त तो ख़ास तौर से उसे मलहूज़ रखते हैं और तमाम आम व ख़ास मशायख़ में इसके मालूमात जारी व मुस्तअमल हैं। इस बारे में मशायख़ के बकसरत रुमूज़ व इशारात हैं। हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि तो इस ख़ुसूस में बहुत ज़्यादा इसरार करते हैं। मुजाहिदे के सिलसिले में इनके दलायल व बराहीन बकसरत हैं। उरफ़ा फ़रमाते हैं कि हज़रत सुहैल की आदत थी कि हर पंद्रहवीं रोज़ एक मर्तबा खाना खाते थे। इतनी क़लील ग़िज़ा पर उन्होंने तवील उम्र पाई। तमाम मुहक़्क़ेक़ीन ने मुजाहिदे को साबित किया है और उसे मुशाहिदा का ज़रिया बताया है। मशायख़ फ़रमाते हैं कि हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी मुजाहिदा को मुशाहेदा की इल्लत क़रार दिया है और फ़रमाया कि तालिब के लिये इरफ़ाने हक़ में मुजाहिदा निहायत मोअस्सर अमल है।

हज़रत सुहैल रहमतुल्लाह अलैहि दुनियावी ज़िन्दगानी को जो तालिबे इरफ़ाने हक़ में हो उस आख़ेरत की ज़िन्दगानी के मुक़ाबले में जो हुसूल मुराद से ताल्लुक़ रखती है अफ़ज़ल बताते हैं। इसी बिना पर उनका यह इरशाद है

कि उख़रवी हुसूले मुराद, इस दुनियावी मुजाहिदे का समरा है जब तुम दुनिया में ख़िदमत व इबादत करोगे तो आख़ेरत में कुरबत पाओगे। बग़ैर ख़िदमत के वह कुरबत हासिल नहीं हो सकती हत्ता कि यह इतना ज़रूरी है कि वसूले हक़ की इल्लत बंदा का मुजाहिदा है बशर्ते कि ख़ुदा उसकी तौफ़ीक़ बख़्शे।

मुजाहिदों की मीरास मुशाहदा है।

इसके बरअक्स दीगर मशायख़ यह फ़रमाते हैं कि वसूले हक़ के लिये इल्लत व सबब नहीं है जो भी वासिल होता है वह फ़ज़्ले इलाही से होता है। फ़ज़ल के मुक़ाबला में बंदे के अफ़आल की क्या हक़ीक़त? मुजाहिदा तो तहज़ीब नफ़्स और उसके तज़किया के लिये है न कि हक़ीक़त क़रीब के लिये। इसकी वजह यह है कि मुजाहिदे की तरफ़ रुजूअ होना बंदे की जानिब से है और मुशाहेदा के अहवाल हक़ तआला की तरफ़ इस सूरत में मुहाल है कि बंदे के आफ़ाल इसका सबब या इसका आलह बन सकें। इस मसले में इनके ख़िलाफ़ हज़रत सुहैल यह दलील पेश करते हैं कि -

जिसने हमारी राह में मुजाहिदा किया यक़ीनन हम उसे अपनी राह दिखाते हैं।

मतलब यह कि जो मुजाहिदा करता है वह मुशाहिदा पाता है नीज़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम की बेअसत, शरीअत का क़ियाम, किताबों का नुज़ूल और तमाम अहकामे मुकल्लफ़ा यह सब मुजाहिदे ही तो हैं। अगर मुजाहिदा मुशाहदा की इल्लत न हो तो उन सबका हुक्म बातिल क़रार पाता है। नीज़ दुनिया आख़ेरत के तमाम अहकाम, इलल व हुक्म के साथ ही मुताल्लिक़ हैं जो हुक्म से इल्लत की नफ़ी करता है वह शरीअत और उसके अहकाम को उठाता है इस सूरत में न असल में अहकामे मुकल्लफ़ा का सुबूत दुरुस्त होगा और न फ़रअ में। खाना भूक को ख़त्म करने और लिबास सरदी को दूर करने की इल्लत होते हैं लिहाज़ा इल्लतों की नफ़ी से तमाम मक़सूद व मअने में तअल्लुल व ख़लल वाक़ेय होता है लिहाज़ा अफ़आल में असबाब पर नज़र तौहीद और उसकी नफ़ी तअतील है। इस बारे में इनके मसलक के बमूजिब मुशाहदा के इसबात में दलायल हैं और मुशाहदा का इंकार मुकाबरा और हटधर्मी है क्या तुमने नहीं देखा कि सरकश घोड़े को चाबुक के ज़रिये सीधा कर बहादुरी की शान पैदा की जाती है और इसकी सरकशी को ख़त्म किया जाता है और आख़िर में वही चाबुक ज़मीन से उठाकर घोड़ा ख़ुद मालिक

के हाथ में दे देता है और अपने मुंह में लगाम ले लेता हैं इस तरह नादान अजमी बच्चे पर मेहनत करके अरबी जुबान सिखा दी जाती है और उसकी तबई बोली को बदल दिया जाता है फिर यह कि वहशी जानवरों को रियाज़त के ज़रिये ऐसा सधा दिया जाता है कि जब उसे छोड़ते हैं तो वह खुद चला जाता है और जब बुलाते हैं तो आ जाता है। पिंजरे में रहना आज़ादी और छोड़ने से ज़्यादा पसंदीदा है नापाक कुत्ते को सधाकर उस मंज़िल तक पहुंचा दिया जाता है कि उसका शिकार हलाल हो जाता है। हालांकि आदमी के बग़ैर सधाए उसका शिकार हराम है। इस क़िस्म की बेशुमार मिसालें हैं लिहाज़ा पूरी शरीअत और उसके अहकाम का मदार मुजाहिदे पर है। अल्लाह के हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद बकसरत मुजाहिदे फ़रमाये हैं आपको हुसूले कुर्ब, वसूले मक़सूद, आफ़ियते उक़बा और क़ियाम बर इसमत हासिल था। इसके बावजूद भूके रहे, तवील मुद्दत तक सौमे विसाल रखे और कितनी ही रातों तक शब बेदारी फ़रमाई। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ऐ महबूब! आप पर कुरआन हमने इसलिये नाज़िल नहीं किया कि अपनी जान को हलाकत में डालें।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मस्जिदे नबवी की तामीर के वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईंटें उठा रहे थे और मैं देख रहा था कि हुजूर को तकलीफ़ हो रही थी मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! ईंटों का काम मेरे सुपुर्द फ़रमा दें मैं यह ख़िदमत बजा लाऊं। हुजूर ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा-

तुम और काम करो क्योंकि हक़ीक़ी ऐश व आख़िरत का ही ऐश है। दुनिया तो रंज व मेहनत की जगह है।

हज़रत हयान बिन खारजा मक्की रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से दर्याफ़्त किया कि जिहाद किया है? तो फ़रमाया-

पहले अपने नफ़्स से जिहाद की इब्तेदा करो और उसके साथ जंग शुरू करो अब अगर तुम भागते हुए मारे गये तो अल्लाह तआला भागने वालों में तुम्हें उठायेगा और अगर तुम रियाकारी में मारे गये तो अल्लाह तआला रियाकारों में उठायेगा और अगर हुसूले अज्र व सवाब के लिये सब्र व तहम्मुल में मारे गये तो अल्लाह तआला तुम्हें साबिरों और शाकिरों में उठायेगा।

लिहाज़ा हक़ तआला के मअ़नी के बयान में जितनी इबारतें तसनीफ़ व तालीफ़ में मरवी व हैं इतनी ही मुजाहिदे के उसूल मुआनी और उसकी तरकीब व तालीफ़ में मरवी हैं। जिस तरह बग़ैर इबारत व तरकीब के बयान दुरुस्त नहीं होता, इसी तरह वसूले हक़ बग़ैर रियाज़त व मुजाहिदे के दुरुस्त नहीं। जो बग़ैर मुजाहिदे के वसूले हक़ का दावा करता है वह ग़लती पर है, इसलिये कि जहान और उसके हुदूस का सुबूत उसके पैदा करने वाले के मारिफ़त की दलील है वहां मारिफ़ते नफ़्स और उसके मुजाहिदा उसके वस्ल और मुशाहिदा की दलील है।

अहले तरीक़त के एक गरोह की दलील यह है कि तफ़सीर के लिहाज़ से कलिमाते आयत मुक़द्दम और मुअख़्ख़र हैं।

जो हमारी राह में जिहाद करते हैं हम उन्हें अपना रास्ता दिखाते हैं इसका मतलब यह है कि जिन लोगों को हम ने अपनी राह दिखा दी है वह हमारी राह में जिहाद करते हैं।

और यह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

तुम में से कोई अपने अमल के ज़रिये निजात नहीं पायेगा।

किसीने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप भी नहीं?

फ़रमाया हां मैं भी नहीं? लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी रहमत में मुझे ढांप रखा है।

लिहाज़ा मुजाहिदा फ़ेअले बंदा है और यह मुहाल है कि इसका फ़ेअल इसकी निजात का मोजिब बने क्योंकि बंदे की निजात मशीयते इलाही से मुताल्लिक़ है न कि मुजाहिदे से? इस वजह से अल्लाह तआला ने फ़रमाया है-

जिसके लिये अल्लाह तआला की मशीयत यह होती है कि वह हिदायत पाये तो अल्लाह तआला इस्लाम के लिये इसका सीना खोल देता है और जिसके लिये अल्लाह तआला की मशीयत यह हो कि वह गुमराह रहे तो वह इसके सीना को बहुत ज़्यादा तंग कर देता है।

इरशाद है कि-

जिसे चाहता है मुल्क देता है और जिससे चाहता है मुल्क ले लेता है।

अल्लाह तआला ने अपनी मशीयत के इसबात में सारे जहान के अफ़आल की नफ़ी फ़रमाई है अगर मुजाहिदा वसूले हक़ का वसीला होता तो शैतान मरदूद न होता। अगर मुजाहिदे का तर्क मरदूद होने की इल्लत होती तो हज़रत

आदम अलैहिस्सलाम हरगिज़ मक़बूल व मुसफ़्फ़ा न होते। लिहाज़ा हुसूले मक़सद, फ़ज़्ल व इनायते इलाही की सबक़त है न कि कसरते मुजाहिदा। और यह बात भी नहीं कि जो सबसे ज़्यादा मुजाहिदा करे वह सबसे ज़्यादा महफ़ूज़ हो बल्कि जिस पर हक़ तआला की इनायत ज़्यादा है वही हक़ तआला से क़रीब है। कोई कलीसा में रहकर हमेशा ताअत में मशग़ूल रहते हुए हक़ तआला से दूर है और कोई शराब ख़ाना में रहकर मासीयत में मुब्तला होकर हक़ तआला से क़रीब है हर लिहाज़ से बच्चे का ईमान सबसे ज़्यादा मुशर्रफ़ है क्योंकि वह मुकल्लफ़ नहीं है उसका हुक्म, हुकमी ईमान है। यही हाल दीवानों का है ज़ाहिर है कि जब इनायते इलाही में ज़्यादा मुशर्रफ़ होने के लिये मुजाहिदा वसीला नहीं है तो जो भी इससे कम हो इसके लिये भी वसीला की मोहताजी नहीं।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि यह ताबीर दो तरह पर ख़िलाफ़े अमल है क्योंकि एक क़ौल है जिसने चाहा पा लिया। और दूसरा क़ौल है जिसने पाया वह तालिब हुआ। मतलब यह है कि पाने का सबब तलब होती है और तलब का सबब पाना है एक मुजाहिदा करता है ताकि मुशाहदा करे, दूसरा मुशाहदा करता है ताकि मुजाहिदा करे। इसकी हक़ीक़त यह है कि मुशाहेदा में मुजाहिदा, ताअत में तौफ़ीक़े इलाही मुयस्सर आने की वजह से है जो ख़ास इसका फ़ज़्ल और अता है। लिहाज़ा जब बे तौफ़ीक़ के हुसूले की तलब मुहाल है तो हुसूल तौफ़ीक़ भी बे ताअत मुहाल है। जब बग़ैर मुशाहिदा के मुजाहिदे का वजूद नही तो बे मुजाहिदा के मुशाहेदा भी मुमकिन नहीं। इसके लिये जमाले इलाही का नूर दरकार है ताकि मुजाहिदे में बंदे की रहनुमाई कर सके। फिर जब मुजाहिदे की इल्लत नूरे जमाले इलाही है तो मुजाहिदे पर हिदायत पहले हुई लेकिन यह जमाअत, यानी हज़रत सुहेल और इनके इत्तेबा जो दलील देते हैं कि जो मुजाहिदे का इसबात नहीं करता वह तमाम अंबिया कुतुबे समावी और शरायेअ का मुन्किर है क्योंकि तकलीफ़ का मदार मुजाहिदे पर है। इससे बेहतर यह था कि वह कहते कि तकलीफ़ का मदार हक़ तआला की हिदायत पर मुनहसिर है। मुजाहिदे तो इसबाते हुज्जत के लिये हैं न कि वस्ले इलाही की हक़ीक़त के लिये चूँकि हक़ तआला का इरशाद है कि-

अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्तों को उतारें और मुर्दों को उनसे कलाम करायें और तमाम चीज़ों को उनके रूबरू उठायें तब भी वह हरगिज़ ईमान न लायेंगे। मगर यह कि अल्लाह अगर चाहे। लेकिन अक्सर लोग नादान हैं।

क्योंकि ईमान की इल्लत, हमारी मशीयत है न कि दलायल के देखने और उनके मुजाहिदे पर मौकूफ़ है नीज़ इरशादे हक़ है कि-

बेशक जिन्होंने कुफ्र किया उनके लिये बराबर है कि आप इन्हें डरायें या न डरायें वह ईमान लाने वाले नहीं।

क्योंकि काफ़िरों के लिये इज़हारे हुज्जत और वरूदे दलायल और रोज़े क़ियामत से डराना न डराना दोनों बराबर हैं। वह उस वक़्त तक ईमान लाने वाले नहीं जब तक हम उन्हें अहले ईमान होने की तौफ़ीक़ न बख़्शें। इसलिये कि इनके दिलों पर शक़ावत व बदबख़्ती की मुहर लग चुकी है। लिहाज़ा अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बेअसत, किताबों का नुज़ूल और अहकामे शरीअत का विर्द सब हक़ तआला से मिलने के असबाब हैं न कि इल्लत। इसलिये कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु क़बूले इस्लाम में ऐसे ही मुकल्लफ़ थे जिस तरह अबू जहल था लेकिन हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तो अदल और फ़ज़्ले इलाही को पहुंच गये लेकिन अबू जहल बे अदल और बे फ़ज़्ल ही पड़ा रहा। लिहाज़ा अबू जहल के इस में पड़े रहने की इल्लत, ऐन वसूल और तौफ़ीक़े इलाही से महरूमी है न कि तलबे वसूल यानी जद्दो जेहद वग़ैरह क्योंकि अगर तलब और मतलूब दोनों बराबर होते तो तालिब वाजिद होता जब वाजिद होता तो तालिब न रहता। इसलिये कि वाजिद तो वासिल होता है और तालिब के लिये आराम दुरुस्त नहीं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जिसके दो दिन यकसां रहें वह आफ़त ज़दा है।

मतलब यह कि तालिबाने हक़ के लिये हर दिन पहले दिन से बरतर व बेहतर होना चाहिये क्योंकि इसका हर दिन तरक़्क़ी पज़ीर है यह तालिबों का दर्जा है फिर हुज़ूर ने फ़रमाया-

इस्तेक़ामत पे रहो और एक हाल पे न रहो।

गोया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुजाहिदे को सबब क़रार दिया और हुज्जत के इसबात के लिये सबब का इसबात फ़रमाया और तहक़ीक़े इलाहियत के लिये सबब से वसूल की नफ़ी कर दी और वह जो यह कहते हैं कि घोड़े को सधाकर मेहनत व मुशक़्क़त के ज़रिये दूसरी सिफ़त में बदला जा सकता है तो उसे यूं समझना चाहिये कि घोड़े में एक ख़ास सिफ़त पोशीदा होती है जिसके इज़हार का सबब मेहनत व मशक़्क़त है जब तक उस

पर मेहनत व मशक़्क़त न की जाये उस सिफ़त का इज़्हार न होगा और चूंकि गधे में वह सिफ़त सिरे से है ही नहीं इसलिये वह घोड़े की मानिंद होशियार नहीं हो सकता। और न घोड़े को मेहनत व मुशक़्क़त के ज़रिये गधे की मानिंद बनाया जा सकता है चूंकि वह सिफ़त सिरे से है ही नहीं इसलिये कि वह क़ल्बे ऐन यानी ज़ात की तबदीली है लिहाज़ा जब किसी चीज़ की ऐन व ज़ात नहीं बदल सकती तो हक़ तआला के लिये उसका इसबात करना मुहाल है हज़रत सुहेल तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि पर मुजाहिदे का वरूद था क्योंकि वह उससे आज़ाद थे और उनकी ज़ात में उसका बयान मनक़तअ था। वह उन लोगों में से नहीं थे कि जिन्होंने बग़ैर दुरुस्तगी-ए-मामला सिर्फ़ बयान बाज़ी को अपना मज़हब बना लिया हो। यह मुहाल है कि तमाम आमाल व मामलात की वज़ाहत सिर्फ़ लफ़्ज़ व बयान से की जाये। ख़ुलासा यह कि बाइत्तेफ़ाक़ अहले तरीक़त में रियाज़त व मुजाहिदा मौजूद है। लेकिन मुजाहिदे की हालत में मुजाहिदे की दीद आफ़त है, लिहाज़ा जो हज़रात मुजाहिदे की नफ़ी करते हैं उनकी मुराद, ऐन मुजाहिदे की नफ़ी नहीं बल्कि उनकी मुराद, अदम रोइयते मुजाहिदा और अपने उन अफ़आल में है जो बारगाहे कुद्स में ज़ुहूर पज़ीर हो रहे हों उन पर अजब व गुरूर न करना है इसलिये कि मुजाहिदा बंदे का फ़ेअल है और मुशाहिदा मिन जानिब अल्लाह है। और जब तक अताए हक़ न हो बंदे के अफ़आल की कोई क़दर व क़ीमत नहीं? एक ज़माना के बाद वह अपने दिल में ख़ुद पा लेगा कि इस क़द्र दिल की आरास्तगी की कोशिश की मगर फ़ज़्ले इलाही को न देखा और क्यों अपने अफ़आल पर बातें बनायें। इसके बाद मालूम होना चाहिये कि हक़ तआला के दोस्तों का मुजाहिदा उनके अपने इख़्तेयार के बग़ैर महज़ हक़ तआला के फ़ज़्ल इसके ग़ल्बा और उसके सोज़ व गुदाज़ से होता है। और सोज़ व गुदाज़ का होना सरासर हक़ तआला की मेहरबानी है और जाहिलों का मुजाहिदा ख़ुद उनका अपना फ़ेअल होता है जो परेशान कुन है। परेशान होना और दिल की परागंदगी, आफ़त की परागंदगी से होती है लिहाज़ा तुम से जहां तक हो सके अपने फ़ेअल का इज़्हार व बयान न करो और किसी हाल में नफ़्स की पैरवी न करो क्योंकि तुम्हारी हस्ती का वजूद तुम्हारे लिये हिजाब है। अगर तुम किसी एक फ़ेअल से महजूब हुए तो दूसरा फ़ेअल अपना सर उठाएगा चूंकि तुम सरापा हिजाब हो लिहाज़ा जब तक तुम बिल्कुल फ़ानी न होगे उस वक़्त तक तुम बक़ा के लायक़ नहीं बनोगे।

नफ़्स बाग़ी कुत्ता है और कुत्ते की खाल पकाने ही से पाक होती है।

दुरुस्तगी-ए-मामला की मिसाल : हज़रत हुसैन बिन मंसूर रहमतुल्लाह अलैहि कूफ़ा में मुहम्मद बिन हुसैन अलवी के घर मुक़ीम थे हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह कूफ़ा तशरीफ़ लाये तो उन्होंने उनसे मुलाक़ात की और पूछा कि ऐ इब्राहीम! तरीक़त में आपको चालीस साल गुज़र चुके हैं इसके मुआनी में आपने क्या हासिल किया? उन्होंने फ़रमाया मुझे तवक्कुल का तरीक़ा कामिल तौर से हासिल हुआ है। हज़रत हुसैन बिन मंसूर ने कहा-

आपने अपने बातिन की बस्ती में इतनी उम्र ज़ाया कर दी फिर भी आपको तौहीद में फ़ना हासिल न हुआ मतलब यह है कि तवक्कुल के मुआनी तो यह हैं कि अपने मामलात को हक़ तआला के सुपुर्द करके अपने बातिन को एतेमाद के साथ दुरुस्त रखे। और जब कोई सारी उम्र बातिनी मामलात की दुरुस्तगी ही में सर्फ़ कर दे तो ज़ाहिरी मामालत की दुरुस्तगी के लिये उसे एक और उम्र दरकार होगी। यह दोनों उम्रें ज़ाया होने के बाद भी उस पर हक़ का कोई असर न होगा।

नफ़्स की सरकशी की मिसाल : हज़रत शैख़ अबू अली स्याह मरूज़ी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैंने नफ़्स को ऐसी शक्ल में देखा जो मेरी ही सूरत था किसी ने उसने बाल पकड़ रखे थे उसने उसे मेरे हवाले कर दिया मैंने उसे एक दरख़्त से बांध दिया उसके बाद मैंने उसे हलाक कर देने का इरादा किया। उसने मुझसे कहा ऐ अबू अली! ज़हमत न उठाओ मैं ख़ुदा का लश्करी हूं तुम मुझे फ़ना नहीं कर सकते।

नफ़्स की उल्टी ख़सलत की मिसाल : हज़रत मुहम्मद बिन अलयान नसवी जो हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह के अकाबिर असहाब में से थे बयान करते हैं कि इब्तेदाए हाल में जब मैं नफ़्स की आफ़तों पर बीना हुआ और उसकी ख़ुफ़िया पनाहगाहों से वाक़िफ़ हुआ उसी वक़्त से मेरे दिल में नफ़्स की तरफ़ से कीना हो गया था। एक दिन लोमड़ी के बच्चे की मानिंद कोई चीज़ मेरे हलक़ से बाहर निकली। जो हक़ तआला ने मुझे उससे वाक़िफ़ कराया और मैं जान गया कि वह नफ़्स है मैं उसे पांव से रौंदने लगा और ठोकरें मारने लगा मगर वह बढ़ता ही रहा। उस वक़्त मैंने कहा ऐ नफ़्स हर चीज़ मारने और ज़ख़्मी करने से हलाक हो जाती है तू उसके बरअक्स बढ़ता ही जाता है उसकी वजह क्या है? नफ़्स ने कहा मेरी तख़लीक़ उल्टी है। औरों को जो चीज़

तकलीफ़ पहुंचाती हैं वह मुझे आराम व राहत पहुंचाती हैं और जो चीज़ें दूसरों को आराम व राहत पहुंचाती हैं वह मुझे तकलीफ़ देती हैं।

कुत्ते की शक्ल में नफ़्स का ज़ुहूर : हज़रत शैख़ अबुल अब्बास इस शक़ानी रहमतुल्लाह अलैहि जो इमामे वक़्त थे फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं घर आया तो ज़र्द रंग के एक कुत्ते को अपने बिस्तर पर सोता हुआ पाया। मैंने ख़्याल किया कि शायद मुहल्ले का कुत्ता घुस आया है उसे बाहर निकाने का इरादा किया मगर वह मेरे दामन में घुस कर ग़ायब हो गया।

मुख़्तलिफ़ सूरतों में नफ़्स का ज़हूर : हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम गरगानी जो आज क़ुतुबे ज़माना और तरीक़त के दारुल हाम हैं। वह अपने इब्तेदाए हाल की एक निशानी बयान करते हैं कि मैंने नफ़्स को सांप की सूरत में देखा है और एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि मैंने नफ़्स को चुहे की शक्ल में देखा है तो मैंने उससे पूछा तू कौन है? उसने कहा मैं ग़ाफ़िलों को हलाकत में डालने वाला, उनको शरारत व बुराई की तरफ़ बुलाने वाला और दोस्तों की निजात हूं। चूंकि मेरा वजूद सरापा आफ़त है तो वह अपनी पाकी व तहारत पर नाज़ां होकर अपने अफ़आल पर तकब्बुर करने लगते हैं वजह यह है कि जब वह दिल की पाकीज़गी, सीरत की सफ़ाई नूरे विलायत और ताअत पर अपनी इस्तेक़ामत को देखते हैं तो हवा व तकब्बुर उनमें पैदा हो जाता है फिर जब वह अपने पहलू में मुझे देखते हैं तो वह उन तमाम ऐबों से पाक हो जाते हैं।

यह तमाम अमसाल व हिकायात इस बात की दलील हैं कि नफ़्स मुस्तक़िल ज़ात है न कि सिफ़त, नफ़्स की कुछ सिफ़ात भी हैं जिनको हम ज़ाहिर तौर पर देखते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन तुम्हारा नफ़स है जो दोनों पहलू के दर्मियान है।

लिहाज़ा जिसे नफ़्स की मारेफ़त हो जाती है वह जान लेता है कि उसे रियाज़त व मुजाहिदे के ज़रिये ही क़ाबू में लाया जा सकता है। चूंकि नफ़्स की असल व माहियत अच्छी नहीं है अगर तालिब को इसकी सहीह तौर पर पहचान हो जाये तो उसकी मौजूदगी में भी उसे कोई ख़तरा नहीं होता हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

इसलिये कि नफ़्स आज़ाद कुत्ता है सिखाने के बाद कुत्ते को बांधना मुबाह है।

लिहाज़ा मुजाहिदा नफ़्स की सिफ़ात को तो फ़ना कर देता है लेकिन उसकी ज़ात को नापैद नहीं करता। इस बारे में मशायख़ के अक़्वाल बकसरत हैं, बखौफ़े तवालत, इसी पर इक़्तेफ़ा करता हूं। अब हवा की हक़ीक़त और तर्के शहवत की बहस शुरू करता हूं।

हवा की हक़ीक़त और तर्के शहवत की बहस

ऐ अज़ीज़! अल्लाह तआला तुम्हें इज़्ज़त दे, जानना चाहिये कि एक गरोह के नज़दीक असनाफ़े नफ़्स में से एक वस्फ़ हवा यानी ख़्वाहिश है। और एक गरोह के नज़दीक तबई इरादा ख़्वाहिश का मुतसर्रिफ़ व मुदब्बिर है इसका नाम हवा है जिस तरह रूह के लिये अक़्ल है और हर वह रूह जिसकी अपनी अफ़ज़ाईश में अक़ली कुव्वत न हो नाक़िस होती है इसी तरह हर वह नफ़्स जिसके लिये हवा की कुव्वत न हो नाक़िस होती है। लिहाज़ा रूह का नाक़िस होना कुरबत का नफ़्स है और नफ़्स का नाक़िस होना ऐन कुरबत है। बंदा के लिये हमेशा दो दावतें होती हैं एक अक़्ल की तरफ़ से दूसरी हवा की तरफ़ से। जो अक़्ल की दावत को क़बूल करके उसका मुतीअ बन गया वह साहबे ईमान हो गया। और जो हवा की दावत को क़बूल करके उसका नाफ़रमान बन गया वह ज़लालत व कुफ़्र में पड़ गया। लिहाज़ा हवा, वासिलों के लिये हिजाब और गुमराह करने वाली चीज़ है। ग़ाफ़िलों के लिये जाए क़याम है और तालिबों के लिये महले एराज़ है बंदा को इसके ख़िलाफ़ अमल करने का हुक्म दिया गया है और उसके इर्तेकाब से रोका गया है।

जिसने उसकी सवारी की यानी फ़रमां बर्दारी की वह हलाक हो गया और जिसने उसके ख़िलाफ़ किया वह मालिक हुआ।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरते और नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बचते हैं यक़ीनन इन्हीं के लिये जन्नत में ठिकाना है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं-

मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़नाक हवा की पैरवी और उम्मीदों की दराज़ी है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा आयते करीमा की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि-

क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी हवा को अपना माबूद बना लिया है यानी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया है?

वह शख़्स क़ाबिले अफ़सोस है जिसने हक़ तआला के सिवा अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहराकर अपनी ताक़तें रात दिन उसकी इताअत व चापलूसी में सर्फ़ कर दी हैं।

ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की क़िस्में : तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिश, दो क़िस्म की हैं एक लज़्ज़त और शहवत की दूसरे लोगों में इज़्ज़त व मंज़िलत की। जो शख़्स किसी लज़्ज़त का गुलाम है वह शराबख़ाना में है लोग उसके फ़ित्ना से महफ़ूज़ हैं लेकिन जो शहवत और लोगों में इज़्ज़त व मंज़िलत की ख़्वाहिश मंद है वह हिर्स व तमअ और ख़्वाहिशात के चक्करों में फंसा हुआ है। वह लोगों के लिये फ़ित्ना है। ख़ुद तो राहे हक़ से बरगश्ता है दूसरों को भी उस गुमराही में फंसाता है।

जिसकी हरकतें ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरो हैं और वह उनका दिलदादा है वह हक़ तआला से दूर है अगरचे वह तुम्हारे साथ मस्जिद में शरीके जमआत ही क्यों न हो और जिसकी हरकतें ख़्वाहिशात से पाक हैं और वह उसकी पैरवी से नफ़रत करता है वह हक़ तआला के नज़दीक है अगरचे किसी दैर ही में क्यों न हो।

एक राहिब की नफ़्सकुशी : हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैंने सुना कि रोम में राहिब है जो सत्तर साल से कनीसा में ज़ुहद व रहबानियत में मशगूल है मैंने ताज्जुब से कहा कि रहबानियत की शर्त तो चालीस साल होती है यह आदमज़ाद किस मज़हब पर सत्तर साल से कनीसा में बैठा हुआ है। चुनांचे मैं उनसे मिलने गया। उसने खिड़की खोलकर मुझसे बातचीत की और कहा ऐ इब्राहीम! मैं जानता हूं कि तुम किस लिये आए हो मैं यहां रहबानियत की ग़र्ज़ से सत्तर साल से नहीं बैठा हूं बल्कि मेरे पास एक कुत्ता है जो ख़्वाहिश में सरकश है। मैं उस कुत्ते की रखवाली कर रहा हूं ताकि लोग उसके शर से महफ़ूज़ रहें वरना मैं यहां न होता। मैंने जब राहिब की यह बात सुनी तो ख़ुदा से मुनाजात की कि ऐ ख़ुदा तू बड़ा क़ादिर है, खुली गुमराही में पड़े हुए शख़्स को भी सही रास्ता दिखाता है। फिर राहिब ने मुझसे कहा ऐ इब्राहीम! तुम कब तक लोगों की तलब में रहोगे जाओ पहले अपने आपको

तलब करो जब तुम अपने आपको पा जाओ तो उसकी निगहबानी करो क्योंकि ग़रज़ यह हवा यानी नफ़्सानी ख़्वाहिश तीन सौ साठ क़िस्म की अलवहियत का लिबास पहनकर बंदे को गुमराही की तरफ़ बुलाती है।

ग़र्ज़ कि शैतान का बंदे के दिल और बातिन पर उस वक़्त तक क़ब्ज़ा नहीं हो सकता जब तक कि मासीयत व नाफ़रमानी का ज़ज़्बा और ख़्वाहिश उसके अंदर न उभर आये। जिस वक़्त बंदे के अंदर ख़्वाहिश ने सर उठाया उसी वक़्त शैतान का उस पर क़ब्ज़ा हो जाता है वह दिल में आराम करता है और उसके बातिन में जमकर बैठ जाता है उस हालत का नाम वसवास है। उसकी इब्तदा हवा व ख़्वाहिश से होती है। पहल करने वाला ज़्यादा ज़ालिम होता है यह मतलब अल्लाह तआला के इस फ़रमान से माख़ूज़ है जो अल्लाह ने इबलीस से फ़रमाया था और उसने कहा था मैं तमाम आदमियों को राह हक़ से वरग़लाऊंगा हक़ तआला ने फ़रमाया-

ऐ इबलीस मेरे ख़ास बंदों पर तेरा कोई क़ब्ज़ा व इख़्तियार नहीं है।

दर हक़ीक़त शैतान ही बंदे का नफ़्स व हवा है इसी वजह से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि-

कोई शख़्स ऐसा नहीं है जिस पर उसका शैतान ग़ालिब न आता हो बजुज़ हज़रत उमर फ़ारूक़ के कि वह अपने शैतान पर ग़ालिब आ गये हैं।

इस हदीस में शैतान से मुराद, बंदे की नफ़्सानी ख़्वाहिशें हैं। लिहाज़ा आदमी के सरिश्त में ही हवा की तरकीब है। जैसा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

हवा और शहवत से इब्ने आदम का ख़मीरा मुरक्कब है।

तर्क हवा बंदे को अमीर करता है और उसका इर्तकाब अमीरको असीर बना देता है। चुनांचे जुलेख़ा ने हवा यानी ख़्वाहिश का इर्तकाब किया वह अमीर थी असीर हो गयी। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने तर्क हवा किया तो वह असीर थे फिर अमीर बन गये।

हज़रत जुनेद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि से किसी ने पूछा, वस्ल क्या है? फ़रमाया ख़्वाहिश के इर्तकाब को तर्क करना।

जो शख़्स चाहता है कि हक़ तआला के विसाल से मुशर्रफ़ हो उसे कहो कि जिस्म को ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करे क्योंकि बंदा को कोई इबादत हक़ से इतना क़रीब नहीं करती जितनी हवा की मुख़ालफ़त। हवा की मुख़ालफ़त करना

वाला ही ज़्यादा बुजुर्ग है क्योंकि आदमी के लिये नाखुन से पहाड़ खोदना उससे ज़्यादा आसान है कि वह अपनी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करे।

ख़्वाहिश पर क़दम रखकर उड़ना : हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैंने एक शख़्स को देखा जो फ़िज़ा में उड़ रहा था मैंने उससे पूछा कि तुम्हें यह कमाल कैसे हासिल हुआ? उसने कहा मैं हवाए नफ़्स पर क़दम रखकर हवा में उड़ जाता हूं।

हज़रत मुहम्मद बिन फ़ज़्ल बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं। कि मुझे उस शख़्स पर ताज्जुब होता है जो नफ़्सानी ख़्वाहिश को लेकर ख़ाना काबा जाता है और उसकी ज़्यारत करता है। वह हवाए नफ़्स पर क़दम क्यों नहीं रखता ताकि वह हक़ तआला तक पहुंचे और उसका दीदाद पाये।

नफ़्सानी शहवत : नफ़्स की सबसे बढ़कर ज़ाहिर सिफ़त शहवत है और शहवत के माने आदमी के तमाम आज़ा में इंतेशार पैदा होना है बंदे को उनके तहफ़्फ़ुज़ की तकलीफ़ दी गयी है क़ियामत के दिन हर एक अज़्व के अफ़आल की बावत सवाल होगा। चुनांचे आंख की शहवत, देखना, कान की शहवत, सुनना नाक की शहवत, सूंघना, जुबान की शहवत बोलना, तालू की शहवत, चखना, जिस्म की शहवत छूना, और सीना की शहवत, सोचना है। लिहाज़ा तालिब पर लाज़िम है कि वह अपने वजूद का हाकिम व निगहबान बने और दिन व रात उसकी हिफ़ाज़त करे यहां तक कि ख़्वाहिश के हर दाईया को जो उसमें ज़ाहिर हो अपने से जुदा कर दे और अल्लाह तआला से दुआ मांगे कि वह उसे वह सिफ़त अता फ़रमाये ताकि उसके बातिन से हर ख़्वाहिश दूर हो जाये। क्योंकि जो शहवत के भंवर में फंसा रहता है वह हर लिहाज़ से महजूब रहता है। अगर बंदा अपनी ताक़त से उसे दूर करना चाहे तो यह बंदे के लिये सख़्त दुश्वार होता है और उसके जिन्स का दरपे होता रहता है। उसका चारए कार तरीक़े तसलीम है ताकि मुराद हासिल हो।

मक़ामे इबरत : हज़रत अबू अली स्याह मरूज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन हम्माम में गया और सुन्नत कि मुताबिक़ उस्तरा इस्तेमाल कर रहा था। मैंने अपने दिल में सोचा के ऐ अबू अली इस अज़्व को जो तमाम शहवतों की जड़ है और उससे तुझे कितनी आफ़तों में मुब्तला होना पड़ता है, अपने से जुदा करके क्यों नहीं फेंक देता ताकि तू शहवत की हर आफ़त से महफ़ूज़ रहे। इसी लम्हा एक आवाज़ महसूस हुई कि ऐ अबू अली!

तुम हमारी मिल्क में तसर्रुफ़ कर रहे हो हमारे बनाए हुए किसी अज़्व से कोई दूसरा अज़्व ज़्यादा बेहतर नहीं है। मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम गर तुमने उसे काटकर फेंक दिया तो मैं तुम्हारे हर बाल को सौ गुना शहवत देकर उसका क़ायम मकाम बना दूंगा। इसी मफ़हूम में यह शेअर है-

तरजमा : तू एहसान का मुतलाशा शई है अपने एहसान को छोड़

ख़ौफ़े ख़ुदा से सबको छोड़ दे उसी में तेरी राहत है।

बंदे के लिये उसके जिस्म के किसी हिस्से की बिना पर फ़साद नहीं है बल्कि तबदीले सिफ़त में ख़राबी व फ़साद है। और तौफ़ीक़े इलाही और तसलीम और अम्र व नवाही में अपने तसर्रुफ़े इख़्तेयार और कुव्वत के ज़रिये तग़य्युर व तबद्दुल से ख़राबी पैदा होती है।

दर हक़ीक़त जब तसलीम का मर्तबा हासिल हो जाता है तो इसमें इसमत व हिफ़ाज़त आ जाती है और बंदा ख़ुदा की हिफ़ाज़त में रहकर मुजाहिद के मुक़ाबला में ज़्यादा महफ़ूज़ और फ़ना-ए-आफ़त में नज़दीक तर हो जाता है।

इसलिये कि मक्खी को झाड़ू से दूर करना आसान है बमुक़ाबला लाठी के।

लिहाज़ा ख़ुदा की हिफ़ाज़त, तमाम आफ़तों से बचाने वाली है और तमाम इल्लतों को दूर करने वाली है और किसी सिफ़त में भी बंदा इसका शरीक नहीं है जैसा कि इसका इरशाद है कि इसके मुल्क में कोई तसर्रुफ़ कर ही नहीं सकता। जब तक कि इसमते इलाही मुक़द्दर न हो जाये बंदा अपने कुव्वतों से महफ़ूज़ नहीं रह सकता। अगर तौफ़ीक़े इलाही मुयस्सर न हो तो उसकी तमाम कोशिशें रायगां और बे फ़ायदा हो जाती हैं। बंदे की तमाम कोशिशें दो ही सूरतों के लिये हो सकती हैं या तो इसलिये कि कोशिश के ज़रिये अपनी जानिब से तक़दीरे इलाही को बदल दे या तक़दीर के ख़िलाफ़ अपने लिये कोई और चीज़ बनाए हालांकि यह दोनों सूरतें मुमकिन नहीं हैं। न तो कोशिश से तक़दीर को बदला जा सकता है और न बग़ैर तक़दीर के कोई काम हो सकता है।

अटल तक़दीर की मिसाल : हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा जब बीमार हुए तो एक तबीब उनके पास आया और उसने मश्वरा दिया कि परहेज़ किया जाये। आपने पूछा किस चीज़ से परहेज़ किया करूं, क्या इससे जो मेरी रोज़ी है या उस चीज़ से जो मेरी रोज़ी नहीं है। अगर मैं परहेज़ रोज़ी से मुताल्लिक़ है तो यह मुमकिन ही नहीं। अगर उसके सिवा कुछ और है तो वह अल्लाह तआला मुझे देता ही नहीं।

जिसे मुशाहेदा हासिल हो जाता है वह मुजाहिदा नहीं करता। इस मसले को किसी और जगह मज़ीद बयान करूंगा।

७ फ़िरक़ए हुकमिया

फ़िरक़ए हुकमिया के पेशवा हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह हैं जो अपने ज़माने के इमामे वक़्त, तमाम ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के माहिर, साहबे तसानीफ़े कसीरा हैं। इनके मज़हब की ख़ुसूसियत इसबाते विलायत और उसके क़वायद व दरजात का बयान है। आप हक़ीक़त के माने और औलिया के दरजात इस तरतीब और ऐसे अंदाज़ से वाज़ेह फ़रमाते थे गोया वह एक बहरे बे पायां थे जिसमें बकसरत अजीब व ग़रीब चीज़ें थीं। इनके मज़हब की इब्तेदाई वज़ाहत यह है कि वह हर शख़्स को यह बताना और सिखाना चाहते थे कि औलिया अल्लाह की शान यह है कि हक़ तआला उनको दुनिया में बरगुज़ीदा करके उनकी हिम्मतों को मुतालेक़ात से जुदा करके और नफ़्स व हवा के हर दाइया से मुनज़्ज़ह बनाकर किसी न किसी दरजा पर फ़ायज़ फ़रमाता है और जो मुआनी का दरवाज़ा उन पर खोल दिया गया है उसका कलाम तवील है। चंद उसूल व क़वायद के लिये भी शरह दरकार है। अब मैं इस तहक़ीक़ को ज़ाहिर करता हूं और उनके कलाम के असबाब व औसाफ़ बयान करता हूं।

असबाते विलायत की बहस

वाज़ेह रहना चाहिये कि तसव्वुफ़ व मारेफ़त के तरीक़े के उसूल व क़वायद और तमाम विलायतों की पहचान और उस बात के सिलसिले में इतना जान लेना काफ़ी है कि तमाम मशायख़ का इस पर इत्तेफ़ाक़ है। अलबत्ता हर एक ने विलायत का इसबात जुदागाना अंदाज़ में किया है। चुनांचे हकीम तिर्मिज़ी हक़ीक़त व तरीक़त के मआने के बयान व इतलाक़ मे ख़ास कमाल रखते थे।

विलायत की तहक़ीक़ : विलायत, वाव के ज़बर से इसके लग़वी मअने तसर्रुफ़ करना है और विलायत वाव के ज़ेर से इसके मअ़ने इमारत व हुकूमत के हैं। दोनों का मसदर बख़ज़ने फ़अली वलीता है। नीज़ विलायत के मअने रबूबियत के भी हैं जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है उस जगह विलायत यानी रबूबियत अल्लाह तआला ही का हक़ है क्योंकि कुफ़्फ़ार से इल्तेजा करते हैं और अपने ख़ुदाओं से इज़हारे बेज़ारी करते हैं नीज़ विलायत के एक मायने

मुहब्बत के भी हैं।

लफ़्ज़ वली की तहक़ीक़ : लफ़्ज़े वली फ़ेअल के वज़न पर मफ़ऊल के मअने में भी मुमकिन है जैसा कि इरशादे बारी तआला है कि अल्लाह तआला नेकों का कारसाज़ है क्योंकि अल्लाह तआला अपने नेक बंदों को उनके अफ़आल व औसाफ़ के साथ नहीं छोड़ता और अपनी हिफ़ाज़त व पनाह की चादर में छुपा लेता है। और यह भी मुमकिन है कि लफ़्ज़े वली इस्मे फ़ाइल के मअने में मुबालग़ा के तौर पर आया हो क्योंकि बंदा ताअत में ख़ूब मेहनत का इज़्हार करता है और उसके हुक़ूक़ की हमेशा निगहबानी करता है और उसके ग़ैर से मुंह मोड़ लेता है। ऐसा शख़्स मुरीद कहलायेगा और अल्लाह तआला मुराद यह तमाम मायने हक़ का बंदा के साथ होना या बंदे का हक़ के साथ होना दोनों सूरतों में जायज़ हैं। यह भी जायज़ है कि अल्लाह तआला अपने नेक बंदों का मददगार हो क्योंकि उसने उनकी मदद का वादा फ़रमाया है जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने उन दोस्तों से जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा हैं मदद का वादा करते हुए फ़रमाया है कि-

आगाह रहो अल्लाह की नुसरत क़रीब है।

नीज़ इरशाद है-

यक़ीनन काफ़िरों का कोई मौला यानी मददगार नहीं है।

जब काफ़िरों का कोई मददगार नहीं है तो ला मुहाला मुसलमानों का कोई मददगार ज़रूर होना चाहिये जो उनकी मदद करे। और वह अल्लाह तआला है। जो आयात व दलायल के लाने में उनकी अक़्लों के और मअ़नी के बयान करने में और उनके असरार मुनकशिफ़ करने के लिये उनके दिलों के दरवाज़े खोल देता है और तमाम मुसलमानों को नफ़्स व शैतान की मुख़ालफ़त और अहकामे इलाहिया की मुताबेअत करने में मदद देता है।

दूसरे यह भी जायज़ है कि मुहब्बत व ख़िलत में इन्हें मख़सूस रखे जैसा कि इरशाद है वह ख़ुदा से मुहब्बत करते हैं और ख़ुदा उन्हें महबूब रखता है ताकि उनकी दोस्ती ख़ुदा के लिये हो और उन्हीं को दोस्त रखे। और यह भी जायज़ है कि किसी को विलायत अता फ़रमाकर ताअत पर क़ायम रखे और अपनी हिफ़ाज़त व पनाह में रखे ताकि वह इताअते इलाही पर क़ायम रहे और उसकी मुख़ालेफ़त से इज्तेनाब करे यहां तक कि उकनी हुस्ने ताअत को देखकर शैतान ज़लील होकर भागे। और यह भी जायज़ है कि किसी को विलायत

इसलिये अता फ़रमाए कि उसकी उक़दा कुशाई से मुल्क में उक़दा कुशाई हो और तमाम बंदोबस्त और उमूर तकवीनिया उनके कब्ज़े में देकर उनकी दुआओं को मुस्तजाब और उनके इनफ़ास को मक़बूल बनाए जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है-

बकसरत बंदगाने ख़ुदा परेशान हाल, गुबार आलूद बाल बिखरे, कपड़े फटे ऐसे हैं जिनकी लोग परवाह नहीं करते अगर वह किसी मामले में अल्लाह की क़सम खायें तो अल्लाह उनकी क़समों को ज़रूर पूरी करता है।

फ़ारूक़े आज़म की हक़ीक़ी इमारत की मिसाल : मशहूर वाक़िया है कि सैयदुना फ़ारूक़े आज़म उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे ख़िलाफ़त में हस्बे क़दीम दरियाए नील का पानी ख़ुश्क हो गया चूंकि ज़माना-ए-जाहलियत में दस्तूर था कि हर साल एक जवान ख़ूबसूरत लड़की ज़ेवरात से आरास्ता करके दरिया को भेंट चढ़ाई जाती थी तब जाकर दरिया जारी होता था। (मिस्र के गवर्नर ने यह वाक़िया लिखकर आपकी ख़िदमत में भेजा आपने गवर्नर के हुक्म की तौसीक़ करते हुए) एक काग़ज़ के पर्चे पर लिखकर इरसाल फ़रमाया (और गवर्नर को हुक्म दिया कि यह रुक़्आ दरियाए नील में पढ़कर डाल दें। उस रुक़्आ पर तहरीर था) ऐ पानी! अगर तू अपनी मर्ज़ी से रुका है तो जारी न हो और अगर ख़ुदा के हुक्म से रुका है तो उमर कहता है कि जारी हो जा। जब रुक़्आ पढ़कर पानी में डाला गया तो पानी जोश मारता हुआ जारी हो गया (इसके बाद आज तक उसका पानी ख़ुश्क नहीं हुआ) फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की यह इमारत हक़ीक़ी थी।

मेरी मुराद, विलायत और उसके इसबात से यही हक़ीक़ी इमारत है। अब तुम समझ लो कि वली का नाम उसी के लिये जायज़ है जिसमें मज़कूरा माने मौजूद हों जैसा कि हमने बयान किया है कि वह साहबे हाल हो न कि साहबे क़ाल और मालिके बहस व जुदाल। इसी लिये गुज़श्ता मशायख़ ने इस सिलसिले में बकसरत किताबें तसनीफ़ फ़रमाई हैं जो नायाब होती जा रही हैं। अब साहबे मज़हब हजरत हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि की मुराद और उसकी ख़ूबियां बयान करता हूं क्योंकि मुझको उनसे हद दर्जा हुस्ने अक़ीदत है ख़ुदा करे कि हर तालिबे राहे हक़ और इस किताब के पढ़ने वाले को फ़ायदा पहुंचे और सआदत हासिल करें।

नाम वली के इतलाक़ात : वाज़ेह रहना चाहिये कि लफ़्ज़े वली लोगों

में बहुत मुस्तअमल है और किताब व सुन्नत उस पर नातिक़ व शाहिद है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ख़बरदार! अल्लाह के औलिया वह हैं जिन पर न ख़ौफ़ होता है और न हुज़्न व मलाल।

और इरशाद है-

हम तुम्हारी दुनियावी और उख़रवी ज़िन्दगानी में मददगार हैं।

और इरशाद है-

ईमानदारों का मददगार अल्लाह ही है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

बिलाशुबह बंदगानं ख़ुदा में से कुछ बंदे ऐसे हैं जिन पर अंबिया व शोहदा ग़बता (रश्क) करते हैं।

सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमें उनकी पहचान बताइये ताकि हम उनसे मुहब्बत क़ायम रखें।

आपने इरशाद फ़रमाया-

यह वह लोग हैं जो माल व मेहनत के बग़ैर सिर्फ़ ज़ाते इलाही से मुहब्बत रखते हैं। इनके चेहरे नूर के मीनारों पर रौशन व ताबां हैं लोगों के ख़ौफ़ के वक़्त यह बे ख़ौफ़ और उनके ग़मां के वक़्त यह बे ग़म हैं फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई कि बेशक अल्लाह के औलिया वह हैं जिन पर न ख़ौफ़ है और न हुज़्न व मलाल।

एक हदीस कुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

जिसने मेरे वली को ईज़ा दी उससे मेरा लड़ना हलाल हो गया।

किताब व सुन्नत के इन दलायल से मुराद यह है कि औलियाए अल्लाह की शान यह है कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी दोस्ती व विलायत से मख़सूस करके अपने मुल्क का वाली बनाया है और उनके अहवाल को बरगुज़ीदा करके अपने फ़ेअल व इज़्हार का मरकज़ बनाया है और मुतादिद करामतों से सरफ़राज़ करके उनकी तबअ की आफ़तों और नफ़्स व हवा की पैरवी से पाक व मुनज़्ज़ फ़रमाया है। ताकि उनके तमाम इरादे ख़ुदा के लिये ही हों और उनकी मुहब्बत उसी से हो। ज़माना-ए-माज़ी में हमसे पहले भी औलिया अल्लाह गुज़रे हैं और आज भी मौजूद हैं और क़यामत तक होते रहेंगे क्योंकि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को तमाम गुज़श्ता उम्मतों पर शराफ़त

व बुज़ुर्गी अता फ़रमाई है और ज़मानत दी है कि मैं शरीअते मुहम्मदिया की हमेशा हिफ़ाज़त फ़रमाऊंगा। उस पर दलायल नक़लिया और बराहीन अक़लिया उलमा के दर्मियान आज भी मौजूद हैं और ग़ैबी दलायल भी कि औलिया अल्लाह और ख़ासाने ख़ुदा का मौजूद होना ज़रूरी है। इस मसले में हमारा इख़्तिलाफ़ दो गरोह से है एक मुअतज़ला से दूसरे हशवियों से। मुअतज़ला ईमानदारों में एक को दूसरे पर तख़सीस का इंकार करते हैं हालांकि वली के ख़ास होने से इंकार करना नबी के इंकार को मुसतलज़िम है और यह कुफ़्र है और आम हशवी, अगरचे तख़सीस को जायज़ तो रखते हैं लेकिन साथ ही यह कहते हैं कि वली हुए तो हैं लेकिन आज नहीं हैं। हालांकि माज़ी व हाल व मुस्तक़बिल का इंकार सब बराबर है। इसलिये कि इंकार का एक रुख़ दूसरे रुख़ से ज़्यादा बेहतर होता है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने बराहीन नुबूवत को आज तक बाक़ी रखा है और औलिया को इसके इज़हार का सबब बनाया है ताकि आयाते हक़, और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सदाक़त के दलायल हमेशा ज़ाहिर होते रहें। अल्लाह तआला ने औलिया को जहान का वली बनाया है यहां तक कि वह ख़ालिस सुन्नते नबवी के पैरोकार होकर रहे और नफ़्स की पैरवी की राहों को छोड़ दिया। आसमान से रहमतों की बारिश इन्हीं के क़दमों की बरकत से होती है और ज़मीन में जो कुछ उगता है वह इन्हीं की बरकत और उनके अहवाल की सफ़ाई की बदौलत पैदा होता है काफ़िरों पर मुसलमानों की फ़तहयाबी इन्हीं के इरादे से है।

मख़फ़ी औलिया की तादाद : औलिया अल्लाह में से चार हज़ार तो वह हैं जो पोशीदा रहते हैं वह न तो एक दूसरे को पहचानते हैं और न अपने हाल की ख़ूबी व जमाल को जानते हैं। उनकी हालत ख़ुद अपने से और तमाम लोगों से पोशीदा रहती है। इस बारे में मुतअद्दिद अहादीस वारिद हुई हैं औलियाए किराम के अक़वाल उस पर शाहिद व नातिक़ हैं मुझ पर ख़ुद बिहम्दिलल्लाह इसके मअ़ने ज़ाहिर हो चुके हैं।

औलिया के अक़साम : जो औलिया हक़ तआला की बारगाह के लश्करी और मुश्किलात को हल करने वाले और हल शुदा को बंद करने वाले हैं उनकी तादाद तीन सौ है। इनको अख़यार कहा जाता है। और चालीस वह हैं जिनको अबदाल और सात वह हैं जिनको अबरार और चार वह हैं जिनको औताद और तीन वह हैं जिनको नक़बा और एक वह है जिसे क़ुतुब और ग़ौस कहा जाता

है। यह औलिया वह हैं जिन्हें एक दूसरे पहचानते हैं और उमूर व मामलात में एक दूसरे की इजाज़त के मोहताज होते हैं। इस पर मरवी सहीह हदीसें नातिक़ हैं और अहले सुन्नत व जमाअत का उनकी सेहत पर इजमाअ है यहां शरह व बस्त की गुंजाईश नहीं है।

एतेराज़ात और उनके जवाबात : आम लोग एतेराज़ करते हैं कि मैंने जो यह कहा है कि यह एक दूसरे को पहचानते हैं कि हर एक इनमें से वली है इससे लाज़िम आता है कि वह अपनी आक़ेबत से बेख़ौफ़ हों हालांकि यह मुहाल है कि मारेफ़ते इलाही और मनसबे विलायत बेख़ौफ़ी का इक़्तेज़ा करे इसका जवाब यह है कि जब यह जायज़ है कि मोमिन अपने ईमान का आरिफ़ होते हुए बेख़ौफ़ नहीं होता तो यह भी जायज़ है कि वली अपनी विलायत का आरिफ़ होते हुए बे ख़ौफ़ न हो।

दूसरा जवाब यह है कि यह भी जायज़ है कि हक़ तआला करामत के तौर पर वली को उसके हाल की सेहत और मुख़ालेफ़त पर ख़ुदा की हिफ़ाज़त बताकर उसे अपनी आक़ेबत के महफ़ूज़ होने पर आरिफ़ और मुशर्रफ़ फ़रमा दे।

चूंकि इस जगह मशायख़ का इख़्तेलाफ़ है और इख़्तेलाफ़ की वजह मैं ने ज़ाहिर कर दी है कि कुछ औलिया वह हैं जो छिपे रहते हैं जिनकी तादाद चार हज़ार है इनको अपने विलायत से आगाही जायज़ नहीं। लेकिन मशायख़ की एक जमाअत ऐसी है जो उस आगाही को जायज़ रखती है तो यह वह औलिया हैं जिनकी तफ़सील इसके बाद बयान की गयी है। बकसरत फ़ुक़हा व मुतकल्लेमीन पहले गरोह की भी मुवाफ़ेक़त करते हैं और दूसरी जमाअत के नज़रिये की भी चुनांचे-

उस्ताद अबुल इसहाक़ असफ़रानी और मुतक़द्देमीन की एक जमाअत का मज़हब यह है कि वली अपने आपको नहीं पहचानता कि वह वली है और उस्ताद अबू बकर बिन मोजक़ और मुतक़द्देमीन की एक और जमाअत का मज़हब यह है कि वली अपनी विलायत को पहचानता है।

जब हम पहले गरोह से दर्याफ़्त करते हैं कि वली को अपनी आगाही में क्या आफ़त व नुक़्सान है तो वह कहते हैं कि आगाह होने पर वह अज़ब व गुरूर में मुब्तला हो जाते हैं। इस पर हम कहते हैं कि विलायत की शर्त तो यह है कि वह हक़ तआला की हिफ़ाज़त में रहकर हर आफ़त से महफ़ूज़ रहे भला

ख़ुदा की हिफ़ाज़त में रहकर उस पर अजब व गुरूर का सुदूर व जायज़ ही कब है? और यह बात तो बहुत ही आमयाना और बोदी है कि जो वली हो और उससे ख़र्क़े आदात और करामतों का सुदूर भी हो फिर भी वह इतना न जाने कि मैं वली हूं और यह कि यह करामतें हैं? अवाम में से कुछ लोगों ने पहले गरोह की तक़लीद की और कुछ लोगों ने दूसरे गरोह की और उनकी बातों को क़ाबिल ऐतना नहीं समझा। लेकिन मुअतज़ला तो सिरे से तख़सीसे ईमान और करामतों ही का इंकार करते हैं हालांकि विलायत की हक़ीक़त तख़सीस और करामत ही से है। मुअतज़ला कहते हैं कि तमाम वह मुसलमान जिन्होंने ईमानी अहकाम को क़ायम रखा और हक़ की फ़रमां बर्दारी की वह सब औलिया अल्लाह हैं। और जिसने ईमानी अहकाम को क़ायम न रखा, सिफ़ाते इलाही और दीदारे ख़ुदा का इंकार किया, मोमिन के लिये ख़ुलूदे दोज़ख़ को जायज़ रखा और अंबिया व मुरसलीन की बेअसत और नुज़ूले कुतुब समाविया के बग़ैर, महज़ अक़्ल के ज़रिये अहकाम के जवाज़ का क़ायल हुआ उनके नज़दीक वह वली है बिलाशुबह जिसके मुअतक़ेद ऐसे हों तमाम मुसलमानों के नज़दीक वह वली है मगर वह ख़ुदा का वली नहीं बल्कि शैतान का वली होगा।

मुअतज़ला यह भी कहते हैं कि विलायत के लिये अगर करामत वाजिब होती तो लाज़िम था कि हर मुसलमान के लिये करामत होती क्योंकि तमाम मुसलमान ईमान में मुश्तक हैं जबकि वह असल में मुश्तरक हैं तो ला मुहाला वह फ़रअ में भी मुश्तरक होंगे। इसके बाद वह कहते हैं कि यह जायज़ है कि मुसलमान और काफ़िर से करामत सादिर हो जाये और यह ऐसा ही होगा जैसा कि सफ़र में कोई भूका हो और उसे कोई मेज़बान मिल जाये और खाना खिला दे या थका हुआ और उसे कोई सवारी मिल जाये वग़ैरह वग़ैरह। वह यह भी कहते हैं कि अगर किसी के लिये तवील मसाफ़त एक रात में तय करना होता तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये भी यह बात जायज़ होती। हालांकि जब आपने मक्का मुकर्रमा का अज़्म फ़रमाया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि-

और वह तुम्हारे बोझ उठाकर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अधमरे होकर।

इसके जवाब में हम कहते हैं कि तुम्हारा यह क़ौल बातिल है इसलिये कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

पाक है वह ज़ात जो अपने बंदए ख़ास को रात के मुख़्तसर हिस्से में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया।

लेकिन जिस आयत को तुम पेश करते हो इसमें बोझ उठाने के मअ़ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को जमा करके उनको मक्का की तरफ़ ले जाना है क्योंकि करामत ख़ास हैं आम नहीं है अगर करामत से उन सबको मक्का मुकर्रमा ले जाते तो करामत आम हो जाती। और ईमान बिलग़ैब ज़रूरी न रहता। और ग़ैबी ईमान के तमाम अहकाम और ग़ैबी ख़बरों का वजूद सब जाता रहता क्योंकि ईमन मुतीअ व आसी में महले उमूम है और विलायत, महले ख़ास है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने इस हुक्म को महले आम नहीं रखा और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सहाबए किराम की मुवाफ़िक़त पर बोझ उठाना फ़रमाया है और अल्लाह तआला ने दूसरी जगह हुक्म को महले ख़ास में रखा और अपने को रात के मुख़्तसर हिस्से में मक्का से बैतुल मक़्दिस तक ले गया। इसके बाद वहां से क़ाब और आलम के दोनों किनारों पर ले जाकर सब कुछ दिखाया और जब वापस तशरीफ़ लाये तो रात का बेश्तर हिस्सा बाक़ी था। ख़ुलासा यह कि ईमान का हुक्म आम है और आम लोगों से मुताल्लिक़ है और करामत का हुक्म ख़ास है। और ख़ास लोगों से वाबस्ता है तख़सीस का इंकार तो खुला मकाबरा और हठधर्मी है उसे यूं समझो जैसे कि बादशाह के दरबार में हाजिब, दरबान, अमीर और वज़ीर होते हैं हालांकि ख़िदमत व नौकरी के एतबार से वह सब बराबर होते हैं लेकिन एक को दूसरे पर फ़र्क़े मरातिब के लिहाज़ से फ़ौक़ियत हासिल होती है। इसी तरह ईमान की हक़ीक़त में तमाम मुसलमान बराबर हैं इसके बावजूद कोई आसी, कोई मुतीअ, कोई आलिम और कोई जाहिल है। इसी बिना पर ख़ुसूसियत के इंकार से हर मअ़ना का इंकार साबित होता है।

विलायत के रुमूज़ व इशारात : विलायत के मअ़ने की तहक़ीक़ में मशायख़ के मुतअद्दिद रुमूज़ व इशारात हैं हत्तल मक़दूर इनके मुख़्तार रमूज़ को बयान करता हूं।

१ हज़रत अबू अली जरजानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि –

वली वह है जो अपने हाल में फ़ानी और मुशाहिदए इलाही में बाक़ी हो इसके लिये मुमकिन न हो कि अपने हाल की ख़बर दे और न उसे ग़ैरुल्लाह से सुकून व क़रार हासिल हो।

क्योंकि ख़बर देना तो बंदे के अहवाल के क़बील से ताल्लुक़ रखती है जब बंदे के अहवाल ही फ़ना हो गये तो उसकी ख़बर देना कैसे दुरुस्त हो सकता है। जब वह ख़ुदा के सिवा किसी से आराम पाही नहीं सकता तो अपने अहवाल की ख़बर किसी दूसरे को कैसे दे सकता है क्योंकि अपने हाल की ख़बर किसी दूसरे को देना गोया हबीब के असरार को मुनकशफ़ करना है जो ग़ैबी हाल से मुताल्लिक़ हैं और हबीब के असरार व इंकिशाफ़ ग़ैर हबीब पर मुहाल है नीज़ जब वली मुशाहेदा से होता है तो मुशाहेदे में ग़ैर की रोइयत मुहाल होती है। जब ग़ैर की रोइयत तक का इमकान नहीं तो ग़ैर से सुकून व क़रार तो क़यास है।

२ हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तरजमा : इस इरशाद का मतलब यह है कि वली को ख़ौफ़ नहीं होता क्योंकि ख़ौफ़ इस मकर व चीज़ को कहते हैं जिसके आने से दिल में नागवारी या जिस्म पर कोई सख़्ती आये या हासिल शुदा महबूब चीज़ के गुम होने का खदशा हो। वली के पास इतना वक़्त ही कहां कि वह आने वाले लमहात का ख़ौफ़ करें जिस तरह वली को ख़ौफ़ नहीं होता उसी तरह उसे उम्मीद भी नहीं होती, इसलिये कि उम्मीद नाम है कि किसी महबूब के हासिल होने का इंतेज़ार करना या किसी नागवार चीज़ के दूर होने का इंतेज़ार करना। यह दूसरी बात भी वक़्त के क़बील से है और इनके पास इतना वक़्त होता नहीं। इसी तरह वली को कोई ग़म भी नहीं होता क्योंकि ग़म वक़्त के तलछट हैं जो शख़्स रज़ा की रौशनी और शुक्र की चांदनी में हो उसे ग़म कहां? अल्लाह तआला इसी की ख़बर देता है कि ख़बरदार, अल्लाह के वलियों के लिये न कोई ख़ौफ़ है और न कोई ग़म व फ़िक्र।

इस क़ौल से अवाम यह ख़्याल करते हैं कि औलिया को जब न कोई ख़ौफ़ व ग़म है और न उम्मीद वरजा तो ज़रूर इन्हें अमन होगा हालांकि इन्हें अमन भी नसीब नहीं क्योंकि अमन ग़ैब के न देखने और वक़्त के मुंह मोड़ने से ताल्लुक़ रखता है। यह तमाम औसाफ़ इनके होते हैं जिन्होंने अपनी बशरियत को न देखा हो। वह तो हर सिफ़त से बे नियाज़ हो सकते हैं। ख़ौफ़ व ग़म और उम्मीद सब नफ़्स के नसीबा में हैं। जब बंदा अपने नफ़्स को फ़ना कर लेता है उस वक़्त बंदे की सिफ़त रज़ा व तसलीम बनती है। और जब रज़ा का हुसूल हो गया तो मुशाहेदए इलाही में इस्तेक़ामत पैदा होकर तमाम अहवाल से किनारा कशी ज़ाहिर हो गयी। फिर कहीं जाकर विलायत दिल पर मुनकशिफ़ होती

है और उसके मअ़ने बातिन पर ज़ाहिर होते हैं।

३ हज़रत अबू उसमान मग़रबी अलैहि फ़रमाते हैं कि-

वली मश्हूर तो हो सकता है लेकिन फ़ित्ना में नहीं पड़ सकता।

४ एक बुज़ुर्ग बयान फ़रमाते हैं-

वली गुमनाम तो हो सकता है लेकिन मश्हूर नहीं हो सकता।

इन बुज़ुर्गो के नज़दीक वली की गुमनामी की वजह यह है कि वह शोहरत से बचता है क्योंकि शोहरत में फ़ित्ना होता है। इस पर हज़रत उसमान ने फ़रमाया है कि जायज़ है कि वली मश्हूर हो लेकिन उसकी शोहरत मोजिबे फ़ित्ना न होगी इसलिये कि झूटी शोहरत में फ़ित्ना होता है। मगर जब वली अपनी विलायत में सादिक़ है तो यह शोहरत मोजिबे फ़ित्ना नहीं और झूटे पर विलायत का इतलाक़ नहीं होता और झूटे के हाथ पर करामत का ज़ुहूर भी नामुमकिन व मुहाल है। इस इरशाद के बमोजिब लाज़िम आता है कि सादिक़ वली के ज़माना से फ़ित्ना दूर हो जाता है और इन दोनों क़ौल से यह बात भी मतरश्ह होती है कि वली ख़ुद को नहीं पहचानता कि वह वली है क्योंकि अगर आगाही हो जाय तो मश्हूर हो जाये और अगर आगाही न हो तो फ़ित्ना में पड़ जाये। इसकी तशरीह तवालत चाहती है यहां इसकी गुंजाईश नहीं।

मुस्तग़रके विलायत की मिसाल : ५ हज़रत इब्राहीम अदहम अलैहि ने एक शख़्स से पूछा क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह के वली हो जाओ? उसने कहा ख़्वाहिश तो है आपने फ़रमाया-

ऐ अज़ीज़! दुनिया व आख़ेरत की किसी चीज़ से रग़बत न रखो क्योंकि दुनिया की तरफ़ राग़िब होना हक़ तआला की तरफ़ से मुंह मोड़कर फ़ानी चीज़ की तरफ़ मुतवज्जोह होना है।

और उख़रवी चीज़ की रग़बत रखना गोया हक़ तआला की जानिब से मुंह मोड़ना है।

जब फ़ानी चीज़ से एराज़ हो तो वह फ़ानी चीज़ फ़ना हो जाती है और एराज़ नाबूद हो जाता है और जब किसी चीज़ से एराज़ बाक़ी हो तो बक़ा पर फ़ना जायज़ नहीं है।

लिहाज़ा इस एराज़ पर भी फ़ना जायज़ नहीं। इस क़ौल से यह नतीजा निकलता है कि अपनी दुनिया व आख़ेरत की ख़ातिर अल्लाह तआला को न छोड़ो। आख़िर में हज़रत इब्राहीम ने नसीहत फ़रमाई कि अपने आपको ख़ुदा

की दोस्ती के लिये वक्फ़ कर दो। दुनिया व आख़ेरत को अपने दिल में राह न दो और दिल का लगाव सिर्फ़ ख़ुदा ही के साथ हो। जिस वक़्त यह औसाफ़ तुम्हारे अंदर पैदा हो जायेंगे तो तुम वली बन जाओगे।

शरीअत की पासदारी : ६ हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह से किसी ने पूछा वली कौन है? उन्होंने फ़रमाय-

वली वह है जो अल्लाह तआला के अमर व नही के तहत सब्र करे। क्योंकि जिसके दिल में मुहब्बत ज़्यादा होगी इतनी ही वह उसके हुक्म की दिल से ताज़ीम करेगा और उसकी मुख़ालफ़त से दूर रहेगा नीज़ यह भी इन्हीं से मरवी है कि एक मर्तबा लोगों ने मुझे बताया कि फ़लां शहर में अल्लाह का एक वली रहता है। मैं उठा और उसकी ज़्यारत की ग़र्ज़ से सफ़र शुरू कर दिया। जब मैं उसकी मस्जिद के पास पहुंचा तो वह मस्जिद से निकल रहा था मैंने देखा कि मुंह का थूक फ़र्शे मस्जिद पर गिर रहा है। मैं वहीं से वापस लौट पड़ा। उसे सलाम तक न किया। मैंने कहा वली के लिये शरीअत की पासदारी ज़रूरी है ताकि हक़ तआला उसकी विलायत की हिफ़ाज़त फ़रमाये। अगर यह शख़्स वली होता तो अपने मुंह के थूक से मस्जिद की ज़मीन को आलूदा न करता इसका एहतेराम करता। उसी रात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैंने ख़्वाब में देखा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया ऐ बायज़ीद! जो काम तुमने किया है उसकी बरकतें तुम ज़रूर पाओगे दूसरे दिन ही मैं उस दर्जा पर फ़ायज़ हो गया जहां आज तुम सब मुझे देख रहे हो।

७ हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में एक शख़्स आया उसने मस्जिद में पहले बायां क़दम रखा। उन्होंने हुक्म दिया कि इसे निकाल दो जो शख़्स दोस्त के घर में दाख़िल होने का सलीक़ा नहीं रखता और बायां क़दम रखता है वह हमारी मजलिस के लायक़ नहीं है।

मुलहिदों की एक जमाअत उस बुज़ुर्ग के साथ ताल्लुक़ का इज़हार करती है (ख़ुदा इन पर लानत करे) वह मुलहेदीन कहते हैं कि ख़िदमत यानी इबादत इतनी ही करनी चाहिये जिससे बंदा वली बन जाये। जब वली हो जाये तो ख़िदमत व इबादत ख़त्म। यह खुली गुमराही है क्योंकि राहे हक़ में कोई मुक़ाम ऐसा नहीं है जहां ख़िदमत व इबादत के अरकान में से कोई रुक्न साक़ित हो जाये। इसकी तशरीह अपनी जगह इंशाअल्लाह आयेगी।

इसबाते करामत

वाज़ेह रहना चाहिये कि सहीह तौर पर मुकल्लफ़ होने की हालत में वली के लिये करामत का ज़हूर जायज़ है। अहले सुन्नत व जमाअत के दोनों फ़रीक़ यानी उलमा व मशायख़ का इस पर इत्तेफ़ाक़ है और अक़्ल के नज़दीक भी यह नामुमकिन व मुहाल नहीं है। इसलिये कि यह अज़ क़िस्म कुदरते इलाही है और शरीअत के उसूल में उसके इज़हार के मनाफ़ी होने पर कोई असल नहीं है और यह इरादए हुस्न और वहम व अक़्ल से बईद भी नहीं है। करामत वली की सदाक़त की अलामत है। झूटे पर करामत का ज़ुहूर जायज़ ही नहीं है। और विलायत का झूटा दावा करामत न होने से साबित है बल्कि उसके झूटे दावे का निशान है।

करामत की तारीफ़ : करामत ऐसा फ़ेअल है जो उसकी मानिंद लाने पर इंसानी आदतों को आजिज़ कर दे। मारेफ़ते इलाही के लिये इस्तदलाली कुव्वतों से सिद्क़ के मुक़ाबिल बातिल को आजिज़ कर देना भी करामत है अहले सुन्नत व जमाअत के एक तबक़ा के नज़दीक करामत हक़ है लेकिन मोजिज़े की हद तक नहीं। मसलन दुआओं का लाज़मी क़बूल होना या मुरादों का ज़रूर हासिल होना या इस क़िस्म की बातें जो इंसानी आदतों को तोड़ने वाली हों।

हुज़ूर सैयदना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मुकल्लफ़ होने की हालत में वली सादिक़ से ऐसा फ़ेअल सरज़द हो जिससे आदते इंसानी टूटती हो तो इसमें फ़साद की बाबत तुम्हारा क्या ख़्याल है? अगर तुम यह कहो कि अज़ क़िस्म कुदरते इलाही नहीं है तो यह ख़ुद गुमराही ही है और अगर यह कहो कि यह अज़ क़िस्म कुदरते इलाही तो है लेकिन वली सादिक़ से इस का ज़ुहूर, अबताले नुबूवत और अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ख़ुसूसियत की नफ़ी है तो हम जवाब देंगे कि यह भी मुहाल है इसलिये कि वली करामतों के साथ मख़सूस है और नबी मोजिज़ात के साथ।

फ़ी नफ़्सेही मोजिज़ा जायज़ करने वाला नहीं होता अलबत्ता इसका हासिल करना आजिज़ करने वाला होता है और मोजिज़ा की शर्त यह है कि दावा-ए-नुबूवत भी शामिल हो। लिहाज़ा मोजिज़ा अंबिया के लिये मख़सूस है और करामत औलिया के लिये हैं।

चूंकि वली वली है और नबी नबी। और इनके दर्मियान कोई वजहे इलतेबास

भी नहीं है जिससे एहतेराज़ किय जाये और यह कि अंबियाए अलैहिमुस्सलाम के मरातिब की बुजुर्गी और उनकी अज़मत व बरतरी इसमत और सफ़ाए बातिनी की वजह से है न कि सिर्फ़ मोजिज़ा या करामत या ऐसे अफ़आल के सुदूर की वजह से है जो ख़रके आदात हों। बिलइत्तेफ़ाक़ तमाम नबियों के तमाम मोजिज़ात ख़ारके आदात होते हैं और असल एजाज़ में सब बराबर हैं अलबत्ता फ़ज़ीलत में एक दूसरे पर फ़ायक़ हैं जबकि यह बात जायज़ है कि अंबिया के मोजिज़ात ख़ारिके आदात में मसावी होने के बावजूद एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत है तो यह क्यों जायज़ नहीं कि यह करामत भी हो और वह करामत ख़ारिके आदत भी हो और जबकि अंबिया औलिया से अफ़ज़ल हैं जब वहां ख़रके आदात फ़ेअल, फ़ज़ीलत की इल्लत और उनके साथ एक दूसरे से ख़ुसूसियत नहीं रखते तो उस जगह भी ख़रके आदत फ़ेअल वली की ख़ुसूसियत की इल्लत नहीं हो सकती और नबी के साथ उनकी बराबरी व मसावात नहीं हो सकती। हर साहबे अक़्ल व ख़ेरद जब इस बात को दलील से समझेगा तो उसके दिल से यह शुबह जाता रहेगा।

अब अगर किसी के दिल में यह ख़्याल पैदा हो कि वली की करामत अगर ख़ारिके आदत होती तो वह नुबूवत का दावा कर लेता? तो यह बात मुहाल है इसलिये कि विलायत की शर्त रास्त गोई और सदाक़त है और ख़िलाफ़े मअ़ने दावा करना झूट व किज़्ब है झूटा आदमी वली नहीं हो सकता अगर वली नुबूवत का दावा करे तो बिलाशुबह यह मोजिज़े में दस्त दराज़ी है और यह कुफ़्र है। और करामत फ़रमां बरदार मोमिन के सिवा दूसरे से ज़ाहिर नहीं होती और किज़्ब व झूट मासीयत है न कि ताअत? जब हक़ीक़ते वाक़िया यह है तो वली की करामत नबी की हुज्जत के इसबात के मुवाफ़िक़ होगी। इसके लिये करामत और मोजिज़े के दर्मियान किसी क़िस्म का शुबह और ताना वाक़ेय नहीं होता क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी नुबूवत का इसबात मोजिज़े के इसबात से किया है और वली भी अपनी विलायत के साथ करामत के ज़रिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूवत का इसबात करते हैं। लिहाज़ा सच्चा वली अपनी विलायत के इसबात में वही कहता है जो नबी सादिक़ अपनी नुबूवत में फ़रमाते हैं वली की करामत, नबी के एजाज़ का ऐन होती है और मोमिन के लिये वली की करामत देखना नबी की सदाक़त पर ज़्यादा मुहर यक़ीन सबत करता है न कि उसमें शुबह डालना? क्योंकि इनके

दावा में तज़ाद वाक़ेय नहीं होता जिससे एक दूसरे की नफ़ी होती हो। एक का दावा बिऐनिहि दूसरे के दावे की दलील है। चुनांचे शरीअत में जब एक गरोह वरासत के दावा में मुत्तफ़िक़ हो तो जिस वक़्त एक की हुज्जत साबित हो जाये तो उसके दावे में मुत्तफ़िक़ होने की वजह से दूसरे की हुज्जत भी साबित हो जाती है और जब दावा में तज़ाद हो उस वक़्त एक हुज्जत दूसरे की हुज्जत नहीं होती। जब नबी मोजिज़े की दलालत से नुबूवत की सेहत का मुद्दई होता है तो वली नबी के दावा में इसका तसदीक़ करने वाला होता है। इसमें शुबह साबित करना मुहाल है।

मोजिज़ात और करामतों के दर्मियान फ़र्क़ व इम्तेयाज़

जबकि यह बात सहीह है कि झूटे से मोजिज़ा और करामत मुहाल है तो लामुहाला खूब वाज़ेह कोई फ़र्क़ व इम्तेयाज़ होना चाहिये ताकि अच्छी तरह मालूम व ज़ाहिर हो जाये। जानना चाहिये कि मोजिज़ात की शर्त, इज़हार है और करामाते औलिया की शर्त इख़फ़ा है इसलिये कि मोजिज़े का फ़ायदा दूसरे को पहुंचता है। (कि लोग नबी की सदाक़त पर यक़ीन करके ईमान लायें) और करामत का फ़ायदा ख़ास वली यानी साहबे करामत को पहुंचता है। (क्योंकि इसमें वली की इज़्ज़त अफ़ज़ाई और उसकी बुज़ुर्गी की निशानी पोशीदा है) और एक फ़र्क़ यह भी है कि साहबे मोजिज़ा यानी नबी उसे दूर भी कर सकता है क्योंकि यह ऐन एजाज़ है और वली दूर नहीं कर सकता क्योंकि यह करामत बमअ़ने इज़्ज़त अफ़ज़ाई है या इस्तेदराज है। (असल किताब फ़ारसी की इबारत से एक मफ़हूम यह भी पैदा होता है कि साहबे मोजिज़ा यक़ीन रखता है यह ख़ालिस एजाज़ है और वली यक़ीन नहीं कर सकता कि यह करामत है या इस्तदराज है।

एक फ़र्क़ यह भी है कि साहबे मोजिज़ा यानी नबी शरीअत में तसर्रुफ़ कर सकता है और उसकी तरतीब में बफ़रमाने ख़ुदा, नफ़ी व इसबात कर सकता है लेकिन साहबे करामत यानी वली को इसमें बजुज़ तसलीम करने और अहकाम पर अमल करने के सिवा कोई सूरत मुमकिन ही नहीं है क्योंकि वली अपनी करामत के ज़रिये नबी के किसी शरई हुक्म में किसी क़िस्म की मनाफ़ात और रद्द व बदल नहीं कर सकता।

अगर कोई यह कहे कि जब तुम मोजिज़े को ख़र्क़ आदत से और बिलजुमला को नबी की सदाक़त से ताबीर करते हो और उसे नबी के अलावा बसूरते करामत

दूसरों के लिये जायज़ समझते हो तो इसबात मोजिज़े पर करामत के इसबात की तुम्हारी ऐन हुज्जत बातिल हो जाती है इसके जवाब में हम कहेंगे कि तुम्हारी यह बात उस सूरत के बर ख़िलाफ़ है जिस पर तुम्हारा एतेक़ाद है इसलिये कि मोजिज़ा वह है जो लोगों की आदत को तोड़ने वाला हो। जब वली की करामत नबी का ही ऐन मोजिज़ा है तो वही दलील दिखायेगी जो नबी के मोजिज़े की है और एक मोजिज़ा दूसरे मोजिज़े का तोड़ नहीं होता। क्या तुमने नहीं देखा कि जब सहाबीए रसूल हज़रत ख़बीब रज़ियल्लाहु अन्हु को काफ़िरों ने मक्का मुकर्रमा में सूली पर चढ़ाया तो मदीना मुनव्वरा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ फ़रमा होकर वह सब कुछ देख लिया और सहाबा को बता दिया कि कुफ़्फ़ारे मक्का हज़रत ख़बीब के साथ ज़ुल्म व सितम कर रहे हैं। इधर अल्लाह तआला ने हज़रत ख़बीब की आंखों से भी दर्मियान के पर्दे उठा दिये हत्ता कि उन्होंने भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और आप पर दुरूद व सलाम भेजा। अल्लाह तआला ने उनका सलाम हुज़ूर के गोशे मुबारक में पहुंचाया और हुज़ूर ने उनके सलाम का जवाब दिया और यह जवाब हज़रत ख़बीब के कानों ने सुना और दुआ की यहां तक कि वह रूब क़िब्ला हो गये।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा में इनको देखना ऐसा फ़ेअल था जो ख़ारिक़े आदत यानी मोजिज़ा था। इसी तरह हज़रत ख़बीब का मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर को देखना ख़ारिक़े आदत यानी उनकी करामत थी। बिल इत्तेफ़ाक़ ग़ायब को देखना ख़र्क़े आदत है लिहाज़ा ग़ैबते ज़मान और ग़ैबते मकान में कुछ फ़र्क़ न रहा। इसलिये कि हज़रत ख़बीब की यह करामत इस हालत में है जबकि उनको हुज़ूर से ग़ैबत मकानी थी यही सूरते हाल मुतअख़्ख़ेरीने औलिया के लिये है क्योंकि वह हुज़ूर से ग़ैबते ज़मानी की हालत में हैं और यह ज़ाहिर फ़र्क़ और वाज़ेह दलील इस बात की है कि करामत मोजिज़े के बरख़िलाफ़ नहीं होती। (अगरचे सूरत में यकसां और बराबर होती है मगर मअ़ने और एतेक़ाद में फ़र्क़ होता है) क्योंकि करामत, साहबे मोजिज़ा की तसदीक़ के बग़ैर, किसी और हालत में साबित नहीं होती। और तसदीक़ करने वाले इबादत गुज़ार मोमिन के सिवा किसी और से भी ज़ाहिर नहीं होती। इसलिये कि उम्मत की करामत दर हक़ीक़त नबी ही का मोजिज़ा है क्योंकि आप की शरीअत बाक़ी है, इसलिये लाज़मी है कि इसकी

हुज्जत भी बाकी रहे। लिहाज़ा औलिया-ए-उम्मत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की सदाकृत के गवाह हैं। यह जायज़ नहीं है कि ग़ैर उम्मती से करामत का ज़ुहूर हो। इसी मफ़हूम की एक हिकायत यह है।

एक वली की करामत और एक नुसरानी का मुकाबला : हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं अपनी उज़लत नशीनी की आदत के तहत जंगल में चला गया। कुछ अर्सा के बाद ब्याबान के एक जानिब से एक शख़्स आया उसने मुझसे साथ रहने की इजाज़त मांगी। जब मैंने उस पर गहरी नज़र डाली तो मेरे दिल में उसकी तरफ़ से नफ़रत पैदा हुई और मैनें ख़्याल किया कि यह किस लायक़ है? उसने मुझसे कहा ऐ इब्राहीम आप आज़ुरदा ख़ातिर न हों मैं नसरानी राहिब हूं आपकी सोहबत की आरज़ू में मुल्के रोम से आ रहा हूं। जब मुझे मालूम हुआ कि यह शख़्स ग़ैर है तो मेरे दिल को इत्मीनान हुआ और सोहबत का तरीक़ और उसका हक़ मुझ पर बहुत आसान हो गया। मैंने कहा ऐ नसरानी राहिब! मेरे साथ खाने पीने की चीज़ें नहीं हैं मुझे ख़ौफ़ है कि इस जंगल में तुम्हें कोई तकलीफ़ न पहुंचे। राहिब ने कहा ऐ इब्राहीम! जहां में आपका बड़ा शुहरा है लेकिन आप अभी तक खाने पीने के ही ग़म में मुब्तला हैं। फ़रमाते हैं कि राहिब की इस बात पर मुझे ताज्जुब हुआ और तजरबा के तौर पर उसकी सोहबत को कृबूल कर लिया कि वह अपने दावे में कितना सच्चा हैं जब हमें सात दिन और सात रातें सफ़र करते हुए गुज़र गये तो हमें प्यास मालूम हुई तो राहिब रुककर कहने लगा ऐ इब्राहीम! जहान में आपका नक्कारा बज रहा है। अब कुछ लाइये आप क्या रखते हैं प्यास की शिद्दत ने बेजान कर रखा है। आपकी जनाब में गुस्ताख़ी के सिवा कोई चारा-ए-कार नहीं है। वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपना सर ज़मीन पर रखा और दुआ मांगी कि ऐ ख़ुदा मुझे इस बेगाने के सामने ज़लील व रुसवा न करना क्योंकि वह अपनी बेगानगी में मुझसे नेक गुमान रखता है। क्या मुज़ायका है अगर एक काफ़िर का गुमान मुझ पर पूरा हो जाये। वह फ़रमाते हैं कि जब मैंने सज्दे से सर उठाया तो देखा कि एक तश्त में दो रोटी और दो गिलास पानी के रखे हुए हैं। हमने उसे खाया पिया और वहां से चल दिये। जब सात रोज़ इसी तरह गुज़र गये तो मैंने दिल में ख़्याल किया कि मैं इस काफ़िर का तरजबा करूं कब्ल इसके कि वह मुझसे किसी और चीज़ का सवाल करे और मेरा इम्तेहान ले और अपने मुतालबा में मुझसे इसरार करे और मैं ज़िल्लत महसूस करूं। मैंने कहा ऐ

नसरानियों के राहिब! आज तुम्हारी बारी है देखो कि इतना अर्सा रियाज़त करके तुमने क्या पाया है? उसने भी सर ज़मीन पर रखा और कुछ दुआ मांगी उसी वक़्त एक तश्त नमूदार हुआ जिसमें चार रोटी और चार गिलास पानी के रखे हुए थे। मुझे यह देखकर सख़्त ताज्जुब हुआ और आज़ुरदा ख़ातिर हुआ और अपने अहवाल से ना उम्मीद हो गया। मैंने अपने आपसे कहा मैं इसे नहीं खाऊंगा क्योंकि यह काफ़िर के लिये आसमान से उतरा है इसमें इसकी मदद है मैं इसे कैसे खा सकता हूं। राहिब ने मुझसे कहा ए इब्राहीम! खाइये, मैंने कहा मैं नहीं खाऊंगा। राहिब ने पूछा क्या वजह? मैंने कहा तुम इसके अहल नहीं हो और बात तुम्हारे हाल की जिन्स से नहीं है। मैं इस मामला में सख़्त हैरान हूं। अगर इसे करामत पर महमूल करूं तो काफ़िर पर करामत जायज़ नहीं और अगर इसे मऊनत कहूं तो मुद्दई शुब्हा में पड़ जायेगा। राहिब ने मुझसे कहा खाइये और दो चीज़ों की बशारत सुनिये। एक तो मेरे इस्लाम की, कि मैं कलिमा पढ़ता हूं और दूसरे यह कि ख़ुदा की जनाब में आपका बड़ा मर्तबा है। मैंने पूछा वह कैसे? उसने कहा इसलिये कि इस जिन्स में से मेरे पास तो कुछ नहीं था। मैंने सिर्फ़ शर्मसारी की वजह से ज़मीन पर सर रखा था और दुआ मांगी थी कि ऐ ख़ुदा! अगर दीने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हक़ है और तेरा पसंदीदा है तो तू मुझे दो रोटी और दो गिलास पानी के दे और अगर इब्राहीम ख़्वास तेरा बंदा वली है तो दो रोटी और दो गिलास पानी और अता फ़रमा। जब मैंने सर उठाया तो इस तश्त को मौजूद पाया। यह माजरा सुनकर हज़रत इब्राहीम ने उसे खाया पिया। वह राहिब जवांमर्द और बुज़ुर्गाने दीन में गुज़रा है। यह मअ़ने हैं ऐन एजाज़ नबी के जो वली की करामत से क़रीब तर हैं यह हिकायत अजीब है नबी की ग़ैबत में ग़ैर के लिये दलील रू नुमा हो और वली के हुज़ूर में इसके ग़ैर के लिये इसकी करामत में से हिस्सा मिले। दर हक़ीक़त विलायत की मंतही को इसके मबतदी के सिवा कोई नहीं जानता इसलिये कि वह राहिब, फ़िरऔन के जादूगरों की तरह था इसका ईमान पोशीदा था लिहाज़ा हज़रत इब्राहीम ख़्वास ने नबी के मोजिज़े की सदाक़त साबित की और राहिब ने भी नुबूवत की सदाक़त का मुतालबा किया और साथ ही विलायत की इज़्ज़त का मुतालबा किया। अल्लाह तआला ने बहुस्ने इनायते अज़ली, इसके मक़सूद को पूरा फ़रमा दिया। करामत व एजाज़ के दर्मियान यह एक ज़ाहिर फ़र्क़ है।

• औलियाए किराम का करामत ज़ाहिर फ़रमाना यह उनकी मज़ीद करामत

है क्योंकि विलायत की शर्त तो पोशीदा रखना है न कि बिलक़स्द इज़हार करना। मेरे शैख़ व मुरशिद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अगर वली विलायत ज़ाहिर करे और उससे अपने हाल की दुरुस्तगी साबित करे तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन अगर उसे तकल्लुफ़ से ज़ाहिर करे तो यह रऊनत है।

ख़ुदाई दावा करने वाले के हाथ से अज़ क़िस्मे मोजिज़ा ज़ाहिर होने की बहस

तरीक़त के मशायख़ और तमाम अहले सुन्नत व जमाअत का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि किसी काफ़िर के हाथ से मोजिज़ा व करामत के मुशाबा कोई ख़र्क़ आदत फ़ेअल का ज़ाहिर होना जायज़ है क्योंकि शुबहात के मवाक़े को इस फ़ेअल का ज़ुहूर दूर कर देता है। और किसी को इस के झूटे होने में शक नहीं रहता। और इस फ़ेअल का ज़ुहूर उसके झूटे होने पर गवाह बन जाता है। जिस तरह से फ़िरऔन था कि उसने चार सौ साल उम्र पाई लेकिन उस दौरान वह कभी बीमार तक न हुआ इसका हाल यह था कि दरिया का पानी उसके पुश्त के अक़ब में ऊंचा हो जाता और जब वह खड़ा होता तो पानी भी ठहर जाता और जब चलने लगता तो पानी भी चलने लगता। लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद भी किसी अक़्लमंद को इस के दावा-ए-ख़ुदाई के झूटे होने में शुबह न हुआ। क्योंकि अक़्लमंद का इत्तेफ़ाक़ है कि अल्लाह तआला के मुजस्सम व मुरक्कब नहीं है। इस क़िस्म की बातें और अफ़आल आक़िल के लिये इसके झूटे मुद्दई होने में शुबह नहीं डालते। बाग़ एरम के मालिक शद्दाद व नमरूद के बारे में भी इस क़िस्म की बातें सुनी जाती हैं उनको भी इसी पर क़यास करना चाहिये। इसी के हम मअ़ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ख़बर दी है कि आख़िर ज़माने में दज्जाल निकलेगा जो ख़ुदाई का दावा करेगा और दो पहाड़ एक दाहिने जानिब और एक बायें जानिब साथ साथ लेकर चलेगा। दाहिने जानिब के पहाड़ को वह जन्नत कहेगा और बायें जानिब के पहाड़ को दोज़ख़। वह लोगों को अपनी तरफ़ बुलायेगा जो उसकी दावत क़बूल न करेगा वह उसे सज़ा देगा और वह लोगों को अपनी गुमराही के सबब हलाक करेगा फिर इन्हें ज़िन्दा करेगा। सारे जहान में उसी का हुक्म चलेगा अगर वह उससे बढ़कर सौ गुना ख़र्क़े आदात अफ़आल ज़ाहिर करे तब भी किसी अक़्लमंद का उसके झूटे होने में कोई शुबह न होगा। हर ज़ी शुऊर बख़ूबी जानता है कि

ख़ुदा गधे पर नहीं बैठता और मुतग़य्यिर व मुतलव्विन नहीं होता ऐसी बातों की नुमाईश को इस्तेदराज कहते हैं। और यह भी जायज़ है कि किसी झूटे मुद्दई नुबूवत से ख़र्क़े आदात फ़ेअल सादिर हो जो उसके झूठ पर दलालत करता हो जैसे सादिक़ नबी से ज़ाहिर होता है। और मोजिज़ा इसके सिद्क़ की दलील होता है लेकिन यह जायज़ नहीं है कि इससे ऐसा फ़ेअल सरज़द हो जिससे साहबे अक़्ल को शुबह पड़ जाये। अगर हम शुबह को भी जायज़ मान लें तो फिर काज़िब से सादिक़ को और सादिक़ से काज़िब को नहीं पहचान सकेंगे। इस वक़्त तालिब को दुश्वार होगा कि किसकी तसदीक़ करें और किसकी तकज़ीब, इस तरह हुक्मे सुबूत बिल्कुल बातिल हो जाता है।

जायज़ है कि मुद्दई विलायत से अज़ क़िस्म करामत कोई फ़ेअल ज़ाहिर हो क्योंकि वह दीन में तो दुरुस्त है अगरचे मामलाते तरीक़त में बेहतर नहीं है। वह ज़ुहूर व करामत से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सदाक़त का इसबात और ख़ुद पर फ़ज़्ले हक़ को ज़ाहिर करना चाहता है यह फ़ेअल उसकी अपनी क़ुव्वत व ताक़त से नहीं है और जो असल ईमान में बिला दलील रास्त गो हो वह एतेक़ाद के तमाम उसूल और विलायत में दलील के साथ रास्त गो होगा इसलिये कि इसका एतेक़ाद हर हाल में वली के एतेक़ाद की सिफ़त में होगा। अगरचे इसके आमाल, इसके अपने एतेक़ाद के मुवाफ़िक़ न हों। इसके दावा-ए-विलायत पर विलायत के मामलात न करने से कोई असर नहीं पड़ता। जिस तरह ईमान का दावा अहकाम व अमल न करने से बातिल क़रार नहीं पाता। दरहक़ीक़त करामत और विलायत हक़ तआला की अता व बख़्शिश से मुताल्लिक़ है न कि बंदे के कस्ब व इख़्तेयार से लिहाज़ा बंदे का कस्ब व मुजाहिदा, दरहक़ीक़त हिदायत के लिये इल्लत नहीं होता। इससे पहले बता चुका हूं कि औलिया मासूम नहीं हैं क्योंकि इसमत नुबूवत के लिये है लेकिन औलिया आफ़तों से महफ़ूज़ हैं क्योंकि इनके वजूद से नफ़ी मुक़तज़ी हो सकती है। और विलायत का नफ़ी में आफ़त का वजूद, ईमान की नफ़ी का हुक्म रखती है। इसमें इर्तेदाद अज़क़िस्म मासीयत नहीं है। यह मज़हब मुहम्मद बिन अली हकीम तिर्मिज़ी का है और हज़रत जुनैद, हज़रत अबुल हसन नूरी और हज़रत मुहासबी और उनके बकसरत मुहक़्क़िक़ीने इत्तेबा का भी यही मसलक है लेकिन अहले मामलात जैसे हज़रत सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी, अबू सुलेमान दुर्रानी और अबू हमदून क़स्साब वग़ैरह का है कि विलायत की शर्त

हमें ताअत पर क़ायम रहने की है जब वली के दिल पर कबीरा का गुज़र हो जाये तो वह विलायत से माजूल हो जाता है। मैं पहले ज़ाहिर कर चुका हूं कि उम्मत का इज्मा है कि कबीरा के इर्तेकाब से बंदा ईमान से ख़ारिज नहीं होता। लिहाज़ा कोई विलायत, दूसरी विलायत से बेहतर नहीं है। और जब मारिफ़त की विलायत जो तमाम करामतों की जड़ है मासीयत से साक़ित नहीं होती तो यह ना मुमकिन है कि जो चीज़ शर्फ़ व करामत में इससे कम दर्जा पर हो वह मासीयत से ज़ायल हो जाये। मशायख़ के दर्मियान यह इख़्तेलाफ़ बहुत तवील बहस बन चुका है।

ज़ुहूर करामत की हालत : इस सिलसिले में सबसे अहम बात इल्मे यक़ीन से इस का जानना है कि वली से ज़ुहूरे करामत किस हाल में हुआ है। आया हालते सुहव में हुआ है या हालत सुकर में? ग़ल्बा-ए-हाल में हुआ है या महले इस्तेक़ामत में? सुहव व सुकर की तफ़सील तैफ़ूरी मज़हब के ज़िक्र में आ चुकी है।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी, हज़रत जुन्नून मिसरी, हज़रत मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़, हज़रत हुसैन बिन मंसूर, हज़रत यहया इब्ने मअज़राज़ी रहमहुमुल्लाह और एक जमाअत का मज़हब यह है कि वली से ज़ुहूर करामत, बजुज़ हालते सुकर के मुमकिन नहीं और जो हालते सुहव में वाक़ेय होता है वही नबी का मोजिज़ा है। इनके मज़हब में करामत व मोजिज़े के दर्मियान यह फ़र्क़ वाज़ेह है क्योंकि वली पर इज़हारे करामत सुकर की हालत में होगा यानी वह मग़लूबुल हाल और दावा से बे नियाज़ होगा और नबी पर मोजिज़े का इज़हार इस के सुहव की हालत में होगा। क्योंकि वह तहददी करता और लोगों को अपने मुक़ाबला में बुलाता है और साहबे मोजिज़ा हुक्म के दोनों अतराफ़ में मुख़्तार किया गया है। एक इस के इज़हार में जबकि वह एजाज़ के लिये मुआरज़ा में लाये। दूसरे इनके पोशीदा रखने में। चूंकि औलिया के लिये यह सूरत मक़सूद नहीं कि इन्हें करामत में इख़्तेयार दिया गया है। क्योंकि बसा औक़ात वह ज़ुहूरे करामत चाहते हैं और ज़ुहूर नहीं होता और कभी चाहते नहीं मगर ज़हूर हो जाता है। इसकी वजह यह है कि वली दाई नहीं होता है कि इसका हाल क़ियाम से मंसूब हो बल्कि वह पोशीदा है और इसका हाल सिफ़ते फ़ना से मौसूफ़ है। लिहाज़ा एक साहबे शरअ है और दूसरा साहबे असरार। इसलिये सज़ावार यह है कि करामत, ख़ौफ़ और ग़ैबते हाल के सिवा ज़ाहिर न हो।

ख़ुलासए कलाम यह है कि इसका तसर्रुफ़ हक़ तआला के तसर्रुफ़ से

अवस्ता है जिस वक़्त वली का ऐसा हाल हो जाये उस वक़्त उसकी हर बात हक़ तआला की मदद से वजूद में आती है इसलिये कि सिफ़ते बशरीयत की बर क़रारी या तो अहले लहू को होगी या अहले सुहव को या मुतलक़े इलाही को। लिहाज़ा अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बशरीयत लहू और सुहव की बिना पर नहीं होगी और अंबिया के सिवा कोई मुतलक़े इलाही नहीं होगा। (जिन पर इतलाक़े बशरीयत खुदा की तरफ़ से हो और दर असल हक़ीक़त अवाम से मख़्फ़ी हो। (फ़ाफ़हम मुतरजिम) इस जगह एक तरद्दुद तलव्वुन रह जाता है जो तहक़ीक़ व तमकीन के सिवा है।

औलिया की बशरीयत जब तक क़ायम व बाक़ी रहती है वह महजूब रहते हैं और सिफ़ाते बशरीयत को फ़ना करके मुकाशिफ़ और मुशाहेदे में होते हैं तो वह अलताफ़ हक़ की हक़ीक़त में मदहोश हो जाते हैं। लिहाज़ा हालते कश्फ़ के बग़ैर इज़्हारे करामत सही नहीं होता और यह उनके क़ुर्ब का दर्जा है। इस हाल में उनके दिल में पत्थर और सोना दोनों बराबर हैं यह हाल औलिया के सिवा किसी सूरत में किसी और के लिये मुमकिन नहीं। अगर किसी का हो भी जाये तो वह आरज़ी हालत होगी। यह हाल बजुज़ सुकर व मदहोशी के न होगा। जिस तरह हज़रत हारिस महासबी एक दिन दुनिया से ऐसे गुम हो गये कि दुनिया में रहते हुए भी उक़बा से जा मिले उस वक़्त उन्होंने फ़रमाया-

मैंने दुनिया से अपने आपको जुदा किया तो उस वक़्त मेरे नज़दीक दुनिया का सोना चांदी और पत्थर ढेले सब बराबर हो गये।

दूसरे दिन लोगों ने जब बाग़ में काम करते हुए देखा तो पूछा ऐ हारिस क्या कर रहे हो? उन्होंने फ़रमाया अपनी रोज़ी हासिल कर रहा हूं क्योंकि इसके बग़ैर कोई चारा-ए-कार नहीं। एक दिन उनका वह हाल था और दूसरे दिन उनका यह हाल।

औलिया के नज़दीक सुहव, अवाम का दर्जा है और उनके सुकर का मक़ाम अंबिया का दर्जा है जब वह अपने आप में वापस आते हैं तो उस वक़्त वह ख़ुद को दीगर लोगों की मानिंद एक फ़र्द जानते हैं। और जब वह अपने आपसे ग़ायब हो जाते हैं उस वक़्त वह अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जोह होते हैं। यहां तक कि इनका सुकर इन्हें मुहज़्ज़ब और शाइस्ता बनाने वाला होता है। और वह हक़ तआला के साथ शाइस्ता हो जाते हैं और सारा जहान मिस्ल सोने के हो जाता है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

जहां हम गये सोना था और जिस जगह पहुंचे मोती थे और फ़िज़ा में चांदी थी।

उस्ताज़ व इमाम अबू क़ासिम कशीरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने तिबरानी से इब्तेदाई हाल की बाबत पूछा तो उन्होंने कहा एक दिन मुझे एक पत्थर की ज़रूरत लाहक़ हुई सरख़स की शाहराह से जो पत्थर उठाता था वह जोहर व पारस होता था। उसकी वजह यह है कि उनके नज़दीक दोनों बराबर थे बल्कि यह इसलिये था कि जो लअल उनके हाथ में आता था वह उनकी मुराद के मुक़ाबले में पत्थर से ज़्यादा हक़ीर चीज़ थी।

मुझसे ख़्वाजा इमाम ख़रामी ने सरख़स में फ़रमाया कि मैं बच्चा था और माया कज़्ज़ के लिये शहतूत के पत्तों की तलाश में वहां से एक मुहल्ला में पहुंचा और एक दरख़्त पर चढ़कर एक टहनी से पत्ते झाड़ने लगा। शैख़ अबुल फ़ज़ल बिन हसन रहमतुल्लाह अलैहि इस कूचे से गुज़रे उन्होंने मुझे दरख़्त पर चढ़ा हुआ न देखा मुझे इसमें कोई शक नहीं वह उस वक़्त अपने आपसे ग़ायब थे और उनका दिल ख़ुदा के साथ ख़ुश व ख़ुर्रम था। हज़रत अबुल फ़ज़ल ने अपना सर उठाकर कहा ऐ ख़ुदा एक साल से ज़्यादा गुज़र गया तूने मुझे एक दमड़ी तक न दी कि मैं सर के बाल ही बनवा लेता दोस्तों के साथ ऐसा करता है वह बयान करते हैं कि उसी वक़्त दरख़्त के तमाम पत्ते, टहनियां और जड़ें सोने की हो गयीं यह देखकर हज़रत अबुल फ़ज़ल ने कहा, अजीब बात है, मेरी किनारा कशी पर मेरे दिल की कुशादगी के लिये यह सब फबती और इस्तहज़ा है मैं तुझसे एक बात भी नहीं कह सकता।

हज़रत शिबली अलैहि का वाक़िया है कि उन्होंने चार हज़ार अशरफ़ियां दरयाए दजला में फेंक दीं। लोगों ने कहा यह क्या करते हो? उन्होंने फ़रमाया पत्थर पानी में अच्छे होते हैं। लोगों ने कहा उसे मख़लूक़े ख़ुदा में तक़सीम क्यों न कर दिया। आपने फ़रमाया कि सुबहानल्लाह! अपने दिल से हिजाब उठाकर मुसलमान भाईयों के दिलों पर डाल दूं। मैं ख़ुदा को क्या जवाब दूंगा क्योंकि दीन में इसकी गुंजाईश कहां है कि मुसलमान भाईयों को अपने से बदतर समझूं यह सब सुकर व मदहोशी के हालात हैं। जैसा कि पहले बयान कर चुका हूं इस जगह मक़सूद इसबात करामत है।

हज़रत जुनैद बग़दादी अबुल अब्बास सयारी, अबू बकर वासती और साहबे

मज़हब मुहम्मद बिन अली हकीम तिर्मिज़ी रहमहुमुल्लाह का मज़हब यह है कि करामत, सुहव व तमकीन यानी इस्तेक़ामत की हालत में बग़ैर सुकर के ज़ाहिर होती है क्योंकि औलिया हक़ तआला की तरफ़ से मुदबिराने आलम और बरगुज़ीदा हज़रात हैं। अल्लाह तआला ने जहान का हाकिम बनाकर दुनिया का हल व अक़्द व बस्त व कुशादान से वाबस्ता किया है। और इन्हीं के इरादों पर जहान के लिये अहकाम मुनहसिर फ़रमाये हैं। लिहाज़ा सज़ावार यही है कि इनकी राय सबसे ज़्यादा सही और ख़लके ख़ुदा पर इनका दिल सबसे बढ़कर मेहरबान हो क्योंकि वह वासिल बहक़ हैं तलवीन व सुकर तो इनका इब्तेदाई हाल है जब बलूग़ हासिल हो जाता है तो तलवीन व सुकर तमकीन व इस्तेक़ामत से बदल जाता है उस वक़्त वह हक़ीक़ी वली और उनकी करामत सही होती है औलिया के दर्मियान मशहूर है कि औताद के लिये लाज़िम है कि वह रात भर में सारे जहान का गश्त मुकम्मल कर लें और अगर कोई जगह ऐसी रह जाये जहां उनकी नज़र न पड़े तो दूसरे दिन उस जगह कोई ख़लल वाक़ेय हो जाता है। उस वक़्त वह औताद अपने ग़ौस व कुतुब की तरफ़ रुजू हो जाते हैं ताकि वह अपनी कुव्वत उस तरफ़ मबजूल फ़रमाये। अल्लाह तआला उसी ग़ौस व कुतुब की बरकत से जहान के इस ख़लल को दूर फ़रमा देता है।

जो हज़रात यह कहते हैं कि सोना और पत्थर उनके नज़दीक बराबर हैं यह बात सुकर और दीदारे इलाही में ना दुरुस्ती की अलामत है इसके लिये यह हालत बुज़ुर्गी की नहीं है। मरदाने ख़ुदा की बुज़ुर्गी तो सही और रास्त पंदार में है और उनके नज़दीक सोना सोना और पत्थर पत्थर है मगर वह उसकी आफ़त से बाख़बर हो ताकि इन्हें देखकर यह कह सके कि ऐ ज़र्द सोने ऐ सफ़ेद चांदी, मुझे क्यों फ़रेब देते हो मैं तुम्हारे धोके में नहीं आ सकता क्योंकि मैंने तुम्हारी आफ़तों को देख लिया है और जिसने उनकी आफ़तों को देख लिया उसके लिये वह महले हिजाब नहीं बनता। जब वह उनके छोड़ने को कहता है तो वह सवाब पाता है फिर यह कि जब वह सोने को पत्थर कहता है तो पत्थर को छोड़ने की तलक़ीन किसी तरह दुरुस्त नहीं हो सकती। तुमने नहीं देखा कि हज़रत हारिस जब हालते सुकर में थे तो उन्होंने फ़रमाया-

सोना चांदी और पत्थर ढेले मेरे नज़दीक सब बराबर हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु साहबे सुहव थे दुनिया के क़ब्ज़े की आफ़त को देखा और उसकी जुदाई में अज्र व सवाब मालूम हुआ माल

व ज़र से हाथ उठा लिया यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनसे फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ घर वालों के लिये क्या छोड़ा? अर्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल।

वाक़िया : हज़रत अबू बकर दराक़ रहमतुल्लाह अलैहि बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन हकीम तिर्मिज़ी ने मुझसे फ़रमाया ऐ अबू बकर आज मैं तुम्हें अपने साथ लेकर जाऊंगा मैंने अर्ज़ किया शैख़ का हुक्म सर आंखों पर। मैं इनके साथ चल दिया ज़्यादा देर न गुज़री थी कि मैंने एक निहायत घना जंगल देखा और उस जंगल के दर्मियान, एक सर सब्ज़ दरख़्त के नीचे एक ज़र निगार तख़्त बिछा हुआ देखा जहां एक चश्मा पानी का जारी था। एक शख़्स उम्दा लिबास पहने हुए उस तख़्त पर बैठा हुआ था जब हकीम तिर्मिज़ी उसके नज़दीक पहुंचे तो वह शख़्स खड़ा हो गया और इन्हें इस तख़्त पर बिठा दिया थोड़ी देर के बाद हर तरफ़ से लोग आने लगे यहां तक कि चालीस आदमी जमा हो गये। उन्होंने इशारा किया उसकी वक़्त आसमान से खाने की चीज़ें उतरने लगीं। हम सब ने खाया। हकीम तिर्मिज़ी ने कोई सवाल किया उस मर्द ने उसका बहुत तवील जवाब दिया जिस का मैं एक कलिमा भी न समझ सका कुछ अर्सा बाद इजाज़त मांगी और वापस आ गये मुझसे फ़रमाया तुम नेक बख़्त हो। जब कुछ मुद्दत बाद तिर्मिज़ी फ़िर तशरीफ़ लाये तो मैंने अर्ज़ किया ऐ शैख़! वह कौन सी जगह थी? और वह कौन शख़्स था? उन्होंने फ़रमाया बनी इसराईल का जंगल था और वह मर्द क़ुतुब मदार अलैहि था। मैंने अर्ज़ किया ऐ शैख़! इतनी मुख़्तसर घड़ी में तिर्मिज़ से बनी इसराईल के जंगल में कैसे पहुंच गये। वह बोले ऐ अबू बकर! तुम्हें पहुंचने से काम है न कि पूछने और सब दर्याफ़्त करने से? यह हालत सुहव की अलामत है न कि सुकर की। मुख़्तसरन करामत के इसबात में तमाम पहलू पर गुफ़्तगू कर चुका हूं मज़ीद तफ़्सील व तशरीह की यहां गुंजाईश नहीं। अब इस ज़िमन में यहां कुछ हिकायते लतीफ़ बयान करता हूं जिनके दर्मियान कुछ दलायल होंगे ताकि हर तबक़ा के लिये सूद मंद साबित हों।

करामाते औलिया के सुबूत में दलायले नक़लिया

वाज़ेह रहना चाहिये कि जब करामत की सेहत पर दलायल अक़लिया और उसके सुबूत में बराहीन सातेआ क़ायम हो जायें तो मुनासिब है कि कुछ दलायल नक़लिया भी बयान कर दी जायें चुनांचे अहलुल्लाह की करामतें और उनसे

उन्के आदात अफ़आल के सुदूर होने की सेहत पर किताब व सुन्नत और अहादीसे सहीहा मरवी है. इसका इंकार तमाम नसूसी अहकाम का इंकार होगा। अल्लाह तआला ने हमें कुरआन में ख़बर दी है कि-

और हम ने तुम पर बादलों का साया किया और हमने मन व सलवा उतारा जो हर रात ताज़ा उतरता था।

अगर कोई मुन्किर यह कहे कि यह तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा था तो हम जवाब देंगे कि ठीक है औलिया की करामतें भी तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के मोजिज़े हैं अगर कोई यह कहे कि औलिया की करामत, नबी की ग़ैबत में वाजिब नहीं क्योंकि वह नबी का मोजिज़ा है और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस वक़्त उनमें मौजूद थे तो हम कहेंगे जिस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल से ग़ायब होकर कोहे तूर पर गये थे उस वक़्त भी तो यह मोजिज़ा बरक़रार था। लिहाज़ा ग़ैबते मकान और ग़ैबते ज़मान बराबर है जबकि वह मोजिज़ा ग़ैबत मकान में दुरुस्त था तो इस वक़्त ग़ैबते ज़मान में भी दुरुस्त है।

दूसरी दलील यह कि अल्लाह तआला ने हज़रत आसिफ़ बिन बरख़्या की करामत की भी हमें ख़बर दी है जिस वक़्त कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्लाम ने चाहा था कि बिलक़ीस का तख़्त उनके सामने पेश किया जाये और उन्होंने उस जगह हाज़िर कर दिया था। अल्लाह तआला ने चाहा कि हज़रत आसिफ़ की शराफ़त व बुजुर्गी लोगों पर ज़ाहिर हो जाये और वह अपनी करामत लोगों के रूबरू ज़ाहिर करें क्योकि करामते औलिया जायज़ है। चुनांचे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने दरबार में फ़रमाया था कि कौन है जो बिलक़ीस के आने से पहले उसका तख़्त हमारे सामने ले आये? अल्लाह ने हमें इस तरह ख़बर दी है कि-

जिन्नात में से एक देव ने कहा मैं आपकी मजलिस बरख़्वास्त होने से पहले ले आऊंगा।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इससे जल्दी दरकार है हज़रत आसिफ़ बिन बरख़्या ने अर्ज़ किया-

मैं उसे आपकी पलक झपकने से पहले ले आऊंगा फिर जब नज़र उठाई तो तख़्त मौजूद था।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हज़रत आसिफ़ की इस तामील पर न

हैरत का इज़हार फ़रमाया न इंकार किया और न उसे मुहाल जाना। हालांकि यह किसी हाल मे मौजिज़ा न था क्योंकि हज़रत आसिफ़ नबी न थे ला महाला यही कहा जायेगा कि यह करामत थी। अगर मोजिज़ा होता तो उसका जहूर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के हाथ से होना चाहिये था।

तीसरी दलील पर सब का इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत मरयम अलैहस्सलाम नबी न थीं। अल्लाह तआला ने उनके हाल पर सरीह तौर पर ख़बर दी कि-

ऐ मरयम खजूर के दरख़्त की टेहनी अपनी तरफ़ हिलाओ वह तुम पर तर व ताज़ा खजूरें गिरायेगा।

और यह अल्लाह तआला ने इन्हीं के क़िस्सा में हमें ख़बर दी कि जब ज़िकरिया अलैहिस्सलाम इनके पास तशरीफ़ लाये तो उनके पास गर्मी के मौसम में सर्दी के मेवे और सर्दी के मौसम में गर्मी के मेवे मौजूद पाते। चुनांचे हज़रत ज़िकरिया अलैहिस्सलाम ने इनसे पूछा-

तुम्हारे पास यह मेवे कहां से आये तो मरयम ने कहा यह अल्लाह तआला ने भेजे हैं।

चौथी दलील यह है कि अल्लाह तआला ने असहाबे कहफ़ के हालात में इनके कुत्ते का इनसे कलाम करने और ग़ार में दायें बायें पहलू बदलते रहने की ख़बर दी है कि-

हम इन्हें दायें और बायें पहलू बदलते रहते हैं और इनका कुत्ता दोनों बाज़ू फैलाये बैठा है।

मज़कूरा तमाम अफ़आल ख़र्के आदात से ताल्लुक़ रखते हैं और ज़ाहिर है कि मोजिज़ा नहीं हैं। ला मुहाला इन्हें करामत ही कहना चाहिये। ख़्वाह यह करामतें क़ुबूलियते दुआ के मअ़ने में हों जो तकलीफ़ के ज़माने में उमूरे मोहूम के हासिल होने के लिये हों, ख़्वाह तवील मुसाफ़त मुख़्तसर वक़्त में तय करना हो, ख़्वाह तआम का ज़ाहिर होना ग़ैर मुतवक़्क़ेअ जगह से हुआ हो। ख़्वाह लोगों के ज़ेहनों में शराफ़त व बुज़ुर्गी जस्मानी मक़सूद हो या किसी और सिलसिला में हो।

अहादीस से करामत का सुबूत : अहादीसे सहीह में हदीसे ग़ार मशहूर व मारूफ़ है। जिसकी तफ़सील यह है कि एक रोज़ सहाबए किराम ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! गुज़श्ता उम्मतों के अहवाल में से कोई अजीब चीज़ बयान फ़रमाइये। हुज़ूर ने फ़रमाया

गुज़िश्ता ज़माना में तीन शख़्स कहीं जा रहे थे जब रात का वक़्त आया तो एक ग़ार में चले गये और वहां सो गये। जब रात का एक पहर गुज़रा तो पहाड़ से एक बड़ा पत्थर लुढ़का और ग़ार के मुंह पर आ गिरा जिससे दहाना बंद हो गया। सब परेशान होकर कहने लगे अब यहां से हमारी ख़ुलासी मुमकिन नहीं जब तक कि हर एक अपने अपने उन अफ़आल को याद करके (जो बग़ैर रियाकारी किये हों) ख़ुदा की बारगाह में तौबा न करे। चुनांचे एक ने कहा मेरे मां बाप बूढ़ं और ज़ईफ़ थे और मेरे पास सिवाए एक बकरी के कोई दुनियावी माल न था मैं बकरी का दूध इन्हें पिलाता था और ख़ुद रोज़ाना लकड़ियां काटकर लाता और इन्हें फ़रोख़्त करके अपना और उनका खाना तैयार करता था। इत्तेफ़ाक़ से एक रात देर से आया और वह बग़ैर दूध पिये और खाना खाये सो गये मैं भी कुछ खाए पिये बग़ैर दूध का प्याला हाथ में लिये उनकी बेदारी के इंतेज़ार में खड़ा रहा। यहां तक कि सारी रात बीत गयी सुबह दम वह बेदार हुए और खाना खाया उसके बाद मैं बैठा। फिर उसने दुआ मांगी ऐ ख़ुदा अगर मैं सहीह कह रहा हूं तो हमारे लिये रास्ता खोल दे और हमारी फ़रियाद क़बूल फ़रमा। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि उस वक़्त उस पत्थर ने जुंबिश की और थोड़ा सा दहाना से सरक गया। उसके बाद दूसरे ने कहा मेरे चचा की एक ख़ूबसूरत लड़की थी मैं उस पर फ़रेफ़ता था मैं उसे बुलाता था मगर वह मंज़ूर न करती थी यहां तक कि मैंने एक दिन बहाने से दो हज़ार अशरफ़ियां भेजीं ताकि एक रात मेरे पास गुज़ारे। जब वह मेरे पास आयी तो मेरा दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप उठा और मैंने उसे छोड़ दिया और अशरफ़ियां भी उसके पास रहने दीं उसके बाद उसने दुआ मांगी कि ऐ ख़ुदा अगर मैं सच कह रहा हूं तो हमारे लिये रास्ता खोल दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि पत्थर ने जुंबिश की और वह दहाने से कुछ और हट गया लेकिन अभी इतना रास्ता न हुआ था कि उससे गुज़र सकें। फिर तीसरे शख़्स ने कहना शुरू किया मेरे पास कुछ मज़दूर काम करते थे जब काम ख़त्म हो गया तो तमाम मज़दूरों को उजरत देकर रुख़सत कर दिया। लेकिन एक मज़दूर उनमें से ग़ायब था। मैंने उसकी मज़दूरी से एक भेड़ ख़रीदी दूसरे साल वह दो हो गयीं। तीसरे साल वह चार हो गयीं हर साल वह इसी तरह बढ़ती रहीं यहां तक कि चंद सालों में एक रेवड़ बन गया। उस वक़्त वह मज़दूर आया उसने कहा तुम को याद होगा कि फ़लां वक़्त मैंने तुम्हारी मज़दूरी की थी अब

मुझे उसकी मज़दूरी चाहिये। मैंने कहा वह तमाम भेड़ें ले जाओ वह सब तुम्हारा माल है तुम उसके मालिक हो उसने कहा तुम मुझे हंसी करते हो मैं ने कहा नहीं मैं ठीक कह रहा हूं मैंने वह तमाम माल तुम्हारे लियं ही जमा करके रखा है तुम इन्हें ले जाओ इसके बाद उसने दुआ मांगी कि ऐ ख़ुदा अगर मैं सच कह रहा हूं तो तू हमारे लियं रास्ता खोल दे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि वह पत्थर ग़ार के दहाने से बिल्कुल हट गया और यह तीनों बाहर निकल आये यह फ़ेअल भी ख़र्क़े आदात ही था।

२ जरीह राहिब वाली एक हदीस मश्हूर है जिसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शीर ख़्वारगी के ज़माने में किसी ने झूले में कलाम न किया तीन शख़्सों के एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जिनका हाल सबको मालूम है और दूसरे बनी इस्राईल में जरीह नामी एक राहिब ने जो एक मुजतहिद शख़्स था उसकी मां पर्दा नशीन औरत थीं। एक दिन वह अपने बेटे जरीह को देखने आई वह खानए ख़ुदा के हुजरे में नमाज़ पढ़ रहा था, दरवाज़ा न खुला। दूसरे और तीसरे दिन भी ऐसा ही हुआ उसकी मां ने दिल बर्दाश्ता होकर बद दुआ की कि ऐ ख़ुदा! मेरे बेटे को मेरे हक़ में निकाल कर रुसवा कर दे। उसी दौरान एक फ़ाहशा औरत ने एक गरोह की ख़ुशनूदी और ख़ुशामद की ख़ातिर वादा किया कि मैं जरीह को बे राह कर दूंगी। चुनांचे वह उसके हुजरे में घुस आयी लेकिन जरीह ने उसकी तरफ़ इलतेफ़ात तक न किया। वापसी पर उसी औरत ने रास्ते में एक चरवाहे के पास रात गुज़ारी और वह उससे हामिला हो गयी जब वह बस्ती में आयी तो कहने लगी कि यह हमल जरीह नामी राहिब का है। जब उस औरत ने बच्चा जना तो लोगों ने जरीह के हुजरे में घुसकर उसे पकड़ लिया और बादशाह के सामने ले गये जरीह ने नौज़ाए बच्चे की तरफ़ मुतवज्जोह होकर कहा ऐ बच्चे! बता तेरा बाप कौन है? बच्चे ने जवाब दिया ऐ जरीह मेरी मां ने तुम पर इल्ज़ाम व बोहतान बांधा है मेरा बाप फलां चरवाहा है।

शीर ख़्वारगी में कलाम करने वाला तीसरा बच्चा उस औरत का है जो अपने घर के दरवाज़े पर बन संवर कर बैठी थी एक हसीन व जमील सवार और के आगे से गुज़रा। उस औरत ने दुआ मांगी कि ऐ ख़ुदा मेरे बच्चे को उस सवार की मानिंद बना दे। उस शीर ख़्वार बच्चे ने कहा ऐ ख़ुदा! मुझे ऐसा न करना कुछ देर बाद एक बदनाम औरत गुज़री बच्चे की मां ने कहा ऐ ख़ुदा मेरे बच्चे

को इस जैसा न बना। उसी वक़्त बच्चा ने कहा ऐ ख़ुदा मुझे उस औरत जैसा कर दे। बच्चे की मां ने मुतअज्जिब होकर पूछा ऐसा क्यों कहता है? बच्चे ने जवाब दिया वह सवार मुतकब्बिर और ज़ालिम है और यह औरत इस्लाह पसंद है लेकिन लोग उसे बुरा कहते हैं। हालांकि वह उसे पहचानते नहीं मैं नहीं चाहता कि मैं ज़ालिमों और मुतकब्बिरों में से होऊं मैं चाहता हूं कि इस्लाह करने वाला बनूं।

३ एक और हदीस अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की बांदी ज़ायदा की मशहूर है। एक दिन ज़ायदा हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में आयी। उसने सलाम अर्ज़ किया तो हुजूर ने फ़रमाया ज़ायदा इतने दिनों के बाद क्यों आयी है हालांकि तू फ़रमां बर्दार है और मैं तुझे पसंद भी करता हूं। उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं एक अजीब बात अर्ज़ करने के लिये हाज़िर हुई हूं। फ़रमाया वह क्या बात है? उसने कहा, सुबह के वक़्त मैं लकड़ियां तलाश करने निकली और एक गठ्ठर बांधकर पत्थर पर रखा ताकि उसे मैं उठाकर सर पर रखूं इतने में एक सवार को आसमान से ज़मीन पर उतरते देखा उसने पहले मुझे सलाम किया और फिर कहा कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ करना और कहना कि खाज़िने जन्नत रिज़वान ने सलाम पेश किया है और आपको बशारत दी है कि जन्नत को आपकी करामत के लिये तीन हिस्सों में तक़सीम किया गया है। एक हिस्सा तो उन लोगों के लिये है जो बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे और एक हिस्सा तो उन लोगों के लिये है जिनपर हिसाब आसान होगा और एक हिस्सा उन लोगों के लिये है जो आपकी सिफ़ारिश और आपके वसीला से बख़्शे जायेंगे। यह कहकर वह सवार आसमान पर चढ़ने लगा फिर ज़मीन व आसमान के दर्मियान मेरी तरफ़ रुख़ करके उसने देखा मैं लकड़ी का गटरा उठाकर सर पर रखना चाहती थी लेकिन वह मुझसे उठाया नहीं जा रहा था। उस सवार ने कहा ऐ ज़ायदा इसे पत्थर पर ही रहने दो। फिर पत्थर से कहा ऐ पत्थर! इस गठर को ज़ायदा के साथ हज़रत उमर के मकान तक पहुंचा दे उस पत्थर ने ऐसा ही किया। और वह पत्थर घर तक पहुंच गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठे और अपने सहाबा के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ लाये और पत्थर के आने और जाने का निशान मुलाहज़ा फ़रमाया। फिर हुजूर ने फ़रमाया! अलहम्दोलिल्लाह! ख़ुदा ने मुझे

दुनिया से इस हाल में रुख़सत फ़रमाया है कि रिज़वान के ज़रिये मेरी उम्मत की बशारत मरहमत फ़रमाई। और मेरी उम्मत में से एक औरत जिसका नाम ज़ायदा है उसे मरयम अलैहिस्सलाम के दर्जा पर फ़ायज़ किया है।

४ मश्हूर वाकिया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अला बिन हज़री की सरकर्दगी में एक लश्कर रवाना फ़रमाया। सफ़र के दौरान एक नहर पड़ी लश्करियों ने उसमें क़दम डाल दिये। सब गुज़र गये और किसी का पांव तक न भीगा।

औलियाए उम्मते मुहम्मदिया के करामात

(औलियाए उम्मते मुहम्मदिया के करामात अगरचे इस किताब में जगह बजगह हैं तकरार के लिहाज़ से इनका इआदा नहीं किया जा रहा है, मज़ीद चंद झलकियां पेश की जा हरी हैं जो अहम हैं)

१ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वाकिया है कि वह किसी सफ़र में जा रहे थे आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि सरे राह एक जमाअत ख़ौफ़ज़दा खड़ी है और एक शेर उनका रास्ता रोके खड़ा हुआ है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शेर को मुख़ातब करके फ़रमाया ऐ कुत्ते! अगर तू अल्लाह तआला के हुक्म से रास्ता रोके खड़ा है तो हमें रास्ता न दे और अगर ख़ुदा के हुक्म से नहीं तो रास्ता छोड़ दे। शेर उठा और उनके आगे सर झुका दिया और रास्ते से हट गया।

२ एक बहादुर अजमी शख़्स मदीना मुनव्वरा आया उसने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बाबत दर्याफ़्त किया लोगों ने बताया किसी झोंपड़े में सो रहे होंगे। चुनांचे इस हाल में उनको सोता पाया कि कोड़ा उनके सर के नीचे रखा हुआ था। उसने अपने दिल में कहा जहान में सारा फ़ित्ना इन्हीं के दम का है इस वक़्त उनको मार डालना बहुत आसान है। उसने क़त्ल करने के इरादे से तलवार सौंती। इतने में दो शेर नमूदार हुए और दोनों ने उस पर हमला कर दिया उसने मदद के लिये पुकारा उसकी चीख़ व पुकार से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बेदार हो गये फिर उसने सारा क़िस्सा बयान किया और इस्लाम क़बूल कर लिया।

३ हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु (अमीरे लश्करे इस्लाम) के पास सवादे ईराक़ से तोहफ़ों में एक डिब्बा लाये जिसमें ज़हर क़ातिल था। उससे ज़्यादा

मुहलिक ज़हर और कोई न था। हज़रत ख़ालिद ने उस डिब्बे को खोला और ज़हर को हथेली पर रखकर बिसमिल्लाह पढ़ी और मुंह में डाल लिया। ज़हर ने इन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया। लोग हैरान रह गये और इनमें से बकसरत लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

४ हज़रत अबु दरदा और हज़रत सुलेमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों एक जगह खाना खा रहे थे और खाने में से तसबीह की आवाज़ सुन रहे थे।

५ हज़रत इब्राहीम नख़फ़ी रहमतुल्लाह अलैहि का यह वाक़िया मशहूर है कि उन्होंने एक शख़्स को हवा में बैठा हुआ देखा। उन्होंने उससे पूछा ऐ बंदए ख़ुदा! तुझे यह कमाल किस चीज़ से हासिल हुआ? उसने कहा थोड़ी सी चीज़ से, पूछा वह क्या चीज़ है? उसने कहा मैंने दुनिया से मुंह मोड़ लिया है और ख़ुदा के फ़रमान से दिल लगा लिया है उसने कहा अब तुम क्या चाहते हो? मैंने कहा यह कि एक मकान हवा में हो ताकि मेरा दिल लोगों से जुद हो जाये।

६ हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि एक हबशी आबिद वीरानों में रहा करता था। एक दिन मैं बाज़ार से कुछ ख़रीदकर उसके पास ले गया। उसने पूछा क्या चीज़ है? मैंने कहा कुछ खाने की चीज़ें हैं इस ख़्याल से लाया हूं कि शायद तुम्हें हाजत हो? वह मेरी तरफ़ देखकर हंसा और हाथ का इशारा किया मैंने देखा कि इस वीरान मकान के तमाम ईंट पत्थर सोने के बने हैं मैं अपने किये पर शर्मिन्दा हुआ और जो ले गया था उसे छोड़कर आबिद के रोअ़ब से भाग खड़ा हुआ।

७ हज़रत इब्राहीम अदहम रजमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैं एक चरवाहे के पास से गुज़रा और उससे पानी मांगा। उसने कहा मेरे पास दूध है पानी क्यों मांगते हो? मैंने कहा मुझे पानी ही चाहिये वह उठा और एक लकड़ी को पत्थर पर मारा उस पत्थर से साफ़ व शीरीं पानी जारी हो गया उसको देखकर मैं हैरान रह गया। उसने मुझसे कहा हैरत व ताज्जुब न करो जब बंदा हक़ तआला का फ़रमां बर्दार हो जाता है तो सारा जहान उसके हुक्म के ताबेअ हो जाता है।

८ हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैं जंगल में सफ़र कर रहा था मेरा मामूल था कि हर तीसरे दिन खाना खाता था जब तीसरे दिन के बाद फिर तीसरे दिन गुज़र गया तो खाना न मिलने की वजह से मुझे कमज़ोरी मालूम होने लगी। बदन गिज़ा मांग रहा था। मैं नक़ाहत से एक जगह बैठ गया

ग़ैब से एक आवाज़ आयी ऐ अबू सईद नफ़्स के आराम के लिये खाना चाहते हो या वह सवब चाहते हो जो बग़ैर गिज़ा कमज़ोरी दूर कर दे? मैंने अर्ज़ किया ऐ खुदा मुझे कुव्वत चाहिये। उसी वक़्त तवानाई आ गयी और उठकर सफ़र शुरू कर दिया और बग़ैर खाये पिये १२ मंज़िलें और तय कर लें।

९ मशहूर है कि शहर तसतर में हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी के घर को लोग बैतुस्सिबाअ कहते हैं और तसतर के बाशिंदों का कहना है कि इनके पास बक्सरत दरिन्दे और शेर वग़ैरह आते हैं और वह उनको खिलाते और खातिरदारी करते हैं।

१० हज़रत अबुल क़ासिम मरूज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबू सईद खराज़ी के साथ दरिया के किनारे जा रहा था। मैंने एक जवान को गुदड़ी पहने देखा, पहाड़ की खो में एक तोशा लटका हुआ था। हज़रत अबू सईद ने फ़रमाया इस नौजवान की पेशानी से ज़ाहिर था कि यह तरीक़त में ज़रूर कोई मुकाम रखता है जब उस नौजवान की तरफ़ देखता था तो कहता था कि यह वासिल है और जब तोशादान पर नज़र पड़ती थी तो ख़्याल आता था कि यह अभी तालिबे राह है। उन्होंने फ़रमाया आओ उससे दर्याफ़्त करें कि क्या हाल है? चुनांचे हज़रत खराज़ ने पूछा ऐ नौजवान खुदा की राह कौन सी है उसने जवाब दिया खुदा के दो रास्ते हैं एक अवाम की राह दूसरी ख़्वास की लेकिन तुम्हें ख़्वास की राह का तो पता ही नहीं। अलबत्ता अवाम की राह वह है जिस पर तुम गामज़न हो और अपनी रियाज़त व मुजाहिदे को वसूले हक़ का ज़रिया बनाये हुए हो उस तोशा दान को हिजाब का ज़रिया समझे हुए हो।

११ हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं कुछ लोगों के साथ कश्ती में सफ़र कर रहा था और मिस्र से जद्दा का इरादा था। एक जवान भी गुदड़ी पहने शरीके सफ़र हो गया। मुझे ख़्वाहिश हुई कि मैं उसकी सोहबत में बैठूं। मगर उसके रोब व हैबत से बात करने की हिम्मत न हुई क्योंकि वह बहुत ही मोअज़्ज़िज़ था और उसका कोई लमहा इबादत से खाली न था। यहां तक कि एक दिन एक शख़्स के जवाहरात की थैली गुम हो गयी। उस थैली के मालिक ने उस जवान पर इल्ज़ाम लगाया और वह चाहता था कि उस पर सख़्ती करे। मैंने उससे कहा तुम इससे बात न करो। मैं उससे अभी मालूम किये लेता हूं। चुनांचे उसके पास गया और नर्मी से बात करके बताया कि यह लोग तुम पर ऐसा शक करते हैं और मैंने उनको जुल्म व सख़्ती

ने रोका है। अब क्या करना चाहिये? उसने आसमान की तरफ़ सर उठाया और कुछ पढ़ा। मैंने देखा कि मछलियां मुंह में एक एक मोती दबाए निकल आयीं। उस जवान ने उनमें से एक मोती लिया और उस शख़्स को दे दिया। कश्ती में तमाम लोग इस मंज़र को देख रहे थे। वह जवान उठा और पानी पर क़दम रखकर चला गया। जिसने वह थैली चुराई थी वह कश्ती ही में था उसने उसे निकाल कर डाल दिया। तमाम कश्ती वाले शर्मिन्दा होकर रह गये।

१२ हज़रत इब्राहीम बयान करते हैं कि मैं इब्तेदाए अहवाल में हज़रत मुस्लिम मग़रबी की ज़ियारत करने गया। जब मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वह नमाज़ की इमामत कर रहे थे और क़राअत में अलहम्द ग़लत पढ़ रहे थे। मैंने दिल में ख़्याल कि या मेरी मेहनत ज़ाया गयी। उस रात मैं वहीं रहा दूसरे दिन तहारत के वक़्त उठा ताकि नहरे फ़रात के किनारे जाकर वुज़ू कर लूं। रास्ते में एक शेर सोता दिखाई दिया मैं वापस आने लगा इतने में एक और शेर चीखता हुआ मेरे क़रीब आ गया। मैं मजबूर होकर रुक गया। उस वक़्त हज़रत मुस्लिम मग़रबी अपने हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाये जब शेरों ने इन्हें देखा तो सर झुकाकर खड़े हो गये। उन्होंने दोनों के कान पकड़कर सरज़निश की और फ़रमाया ऐ ख़ुदा के कुत्तो! मैंने तुमसे नहीं कहा है कि मेरे मेहमानों को परेशान न किया करो और मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया ऐ अबुल हसन! तुम लोगों की ज़ाहिरी दुरुस्तगी के दरपे हो और हाल यह है कि तुम मख़लूक़े ख़ुदा से डरते हो और मैं हक़ तआला से डरता हूं और बातिन की दुरुस्तगी के दरपे हूं। मख़लूक़े ख़ुदा हम से डरती है।

१३ एक दिन मेरे मुरशिदे बरहक़ रहमतुल्लाह अलैहि ने बैतुलजिन से दिमिश्क़ जाने का इरादा फ़रमाया। बारिश हो रही थी मुझे कीचड़ में चलने से दुश्वारी हो रही थी। मगर जब मैंने अपने मुरशिद की तरफ़ देखा तो उनके कपड़े और जूतियां ख़ुश्क थीं मैंने उनसे अर्ज़ किया तो फ़रमाया हां! जब से मैंने तवक्कुल की राह में अपने क़सद और इरादा को ख़त्म करके बातिन को लालच की वहशत से महफ़ूज़ कर लिया है उस वक़्त से अल्लाह तआला ने मुझे कीचड़ से बचा लिया है।

१४ हुज़ूर सैयदुना दाता गंज रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे एक वाक़िया ऐसा पेश आया कि उसका हल मेरे लिये दुश्वार हो गया। मैं हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम गरगानी की ज़ियारत करने तूस पहूंचा मैंने इनको अपने

मकान की मस्जिद में तंहा पाया। उन्होंने बेऐनिही मेरी मुश्किल को मस्जिद के सुतून को मुख़ातब करके बयान करना शुरू कर दिया। मैंने अर्ज़ किया ऐ शेख़! यह बात आप किस से फ़रमा रहे हैं। उन्होनें फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! हक़ तआला ने इसी वक़्त इस सुतून को मुझसे बात करने का हुक्म दिया और उसने मुझसे यह सवाल किया और मैंने उसको यह जवाब दिया इस तरह मेरे बातिन की उक़्दा कुशाई बग़ैर अर्ज़ किये उन्होंने फ़रमा दी)

१५. फ़रग़ाना में एक गांव सलांग नामी है वहां एक बुज़ुर्ग ज़मीन के औताद में से थे जिन्हें लोग बाबे उमर कहते थे चूंकि उस शहर के तमाम मशाइख़ सबसे बड़े बुज़ुर्ग को बाब कहा करते थे। इनके यहां फ़ातिमा नाम की एक बूढ़ी औरत थी मैंने उनकी ज़ियारत का इरादा किया। जब उनके रूबरू पहुंचा तो उन्होंने पूछा किस लिये आये हो? मैंने अर्ज किया आपकी ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ हूं। शेख़ ने शफ़क़त व मेहरबानी से मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! मैं फ़लां रोज़ से बराबर तुम्हें देख रहा हूं और जब तक तुम मुझसे रूपोश न हो जाओगे मैं तुमको बराबर देखता रहूंगा जब मैंने उनके बताए हुए दिन पर ग़ौर किया तो वही दिन और साल था जो मेरी तौबा और बैअत का इब्तेदाई दिन था। फिर फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! मुसाफ़त तय करना बच्चों का काम है लिहाज़ा उस मुलाक़ात के बाद हिम्मत करो कि हुज़ूरे क़ल्ब हासिल हो उससे बढ़कर कोई चीज़ नहीं है। इसके बाद फ़रमाया ऐ फ़ातिमा! जो हो ले आओ ताकि इस दरवेश की कुछ ख़ातिर की जा सके। वह एक तबाक़ में ताज़ा अंगूर लायी हालांकि वह मौसम अंगूरों का न था। इस तबाक़ में कुछ ताज़ा खजूरें भी थीं हालांकि फ़रग़ाना में खजूरें होती ही न थीं।

१६ महना में एक दिन हज़रत शेख़ अबू सईद रहमतुल्लाह के मज़ार पर हसबे आदत तंहा बैठा था। एक सफ़ेद कबूतर दिखाई दिया जो क़ब्र के ऊपर पड़ी हुई चादर के नीचे था मैने ख़्याल किया ग़ालिबन यह कबूतर किसी का छोड़ा हुआ है। मैं उठा और चादर उठाकर देखा मगर वहां कुछ न था दूसरे दिन और तीसरे दिन भी मैंने ऐसा ही देखा। मैं हैरत व ताज्जुब में पड़ गया यहां तक कि एक रात मैंने इन्हें ख़्वाब में देखा और इस वाक़िये की बाबत उनसे दर्याफ़्त किया। उन्होंने फ़रमाया वह कबूतर मेरे मामला की सफ़ाई है जो रोज़ाना क़ब्र में हमनशीनी के लिये आता है।

१७ हज़रत अबू बकर दराक़ रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैं

...हज़रत मुहम्मद बिन अली हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी ...तसानीफ़ के कुछ औराक़ मुझे दिये कि मैं उसे दरिया में डाल दूं। जब बाहर ...आकर मैंने देखा तो वह लतायफ़ व निकात से पुर थे मेरे दिल ने किसी तरह ...कुबूल न किया कि दरिया में यूं ही ज़ाया कर दूं। इन्हें अपने घर रखकर वापस ...आ गया। और कह दिया कि मैंने दरिया बुर्द कर दिये। उन्होंने पूछा तुमने क्या ...नज़रा देखा? मैंने अर्ज़ किया मैंने तो कुछ भी नहीं देखा। फ़रमाया तुम ने दरिया ...में नहीं डाले। जाओ इन्हें दरिया में डाल कर आओ। हज़रत अबू बकर बयान ...करते हैं कि उस वक़्त मेरे लिये दो मुश्किलें थीं एक यह कि पानी में डालने ...का क्यों हुक्म दिया जा रहा है। दूसरे यह कि वह क्या ख़ास बात ज़ाहिर होगी ...जिसकी बाबत मुझसे पूछा जा रहा है नाचार में उठा और दर्दे दिल के साथ ...उन औराक़ को जैजून के किनारे लाकर ख़ुद इन्हें अपने हाथ से पानी में डाल ...दिया। फिर मैंने देखा कि पानी की सतह फटी और एक संदूक़ बर आमद हुआ ...जिसका ढकना खुला हुआ था यह औराक़ उस संदूक़ में जा गिरे और उसका ...ढकना बंद होकर पानी के तह में रूपोश हो गया। वापस आकर तमाम सरगुज़श्त ...बयान कर दी। उन्होंने फ़रमाया हां अब तुमने डाला है। मैंने अर्ज़ किया या शैख़! ...आपको इज़्ज़ते ज़ुल जलाल की क़सम! यह क्या असरार हैं? मुझ पर वाज़ेह ...फ़रमाइये? उन्होंने फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! मैंने इल्मे मशायख़ पर यह किताब ...लिखी थी चूंकि उनकी तहक़ीक़ माकूलात के लिये दुश्वार थी मेरे भाई हज़रत ...ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने मुझसे मांगा था और आहनी संदूक़ उनके हुक्म से आया ...था और अल्लाह तआला ने पानी को हुक्म दिया कि वह उन तक पहुंचा दे।

इस तरह की हिकायात व करामात इस क़द्र हैं कि वह ख़त्म ही नहीं हो ...सकतीं चूंकि मेरा मक़सद उसूले तरीक़त का इसबात है इसलिये इस पर इक्तफ़ा ...किया जाता है। अब मैं मज़ाहिब के बारे में चंद उनवान शामिले किताब करता ...हूं ताकि हुसूले मअ़ने के लिये किसी और जगह न जाना पड़े। इंशाअल्लाह ...तआला।

औलिया पर अंबिया की फ़ज़ीलत

वाज़ेह रहना चाहिये तमाम अहवाल वाक़ियात में बा इत्तेफ़ाक़ तमाम ...मशायख़े तरीक़त औलियाए किराम अंबिया के मुत्तबेअ और उनके दावों की ...तसदीक़ करने वाले हैं और अंबिया अलैहिमुस्सलाम, औलिया से अफ़ज़ल हैं।

इसलिये कि जहां विलायत की इंतेहा है वहां से नुबूवत की इबतेदा है। तमाम अंबिया लाज़िमन औलिया हैं। लेकिन औलिया में से कोई नबी नहीं और अंबिया अलैहिमुस्सलाम सिफ़ाते बशरीयत की नफ़ी में मुतमक्किन व बरक़रार हैं और औलिया इसमें आरजी हैं इसलिये कि औलिया पर जो ख़ास कैफ़ियत तारी होती है वह अंबिया का दायमी मुक़ाम है। और औलिया का जो मुक़ाम होता है वह अंबिया के लिये हिजाब होता है।

उलमाए अहले सुन्नत और मुहक़्क़ेक़ीने अहले तरीक़त का इस मअ़ने में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं है अलबत्ता ख़रासान के फ़िरक़ा हशविया ने इख़्तेलाफ़ किया है जो सरापा ऐबे मुजस्सम हैं उन्होंने असल तौहीद में मुतनाक़िज़ और मुतख़ालिफ़ बातें कहीं हैं हालांकि इन्हें तरीक़त की हवा तक नहीं लगी है। बई जहालत वह विलायत का दावा करते हैं। ठीक है वह वली ज़रूर हैं लेकिन वह शैतान के वली हैं रहमान के नहीं।

हशवी टोला कहता है कि औलिया अंबिया से अफ़ज़ल हैं (मआज़ल्लाह) इनकी गुमराही के लिये यही क़ौल काफ़ी है कि वह एक जाहिल को हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अफ़ज़ल कहते हैं। एक गरोह और है जिन को मुशाब्बा कहते हैं वह भी तरीक़त का दावा करते हैं और अल्लाह तआला के लिये नुज़ूल व हलूल बमाअ़ने एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होने को जायज़ जानते हैं और अल्लाह तआला के लिये तजज़ी यानी आज़ा व जवारेह को जायज़ मानते हैं। तरीक़त में यही दो मज़हब मज़मूम व मरदूद हैं मैं हस्बे वादा आख़िर किताब में इन दोनों फ़िरक़ों का मुकम्मल तज़किरा इंशाअल्लाह ज़रूर करूंगा। ख़ुलासा यह कि यही दो गरोह मुद्दई-ए-इस्लाम ऐसे हैं जो अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तख़सीस की नफ़ी में बरहमनों के हम नवा हैं और जो भी अंबिया की तख़सीस के इंकार पर एतेक़ाद रखेगा वह काफ़िर है चूंकि अंबिया अलैहिमुस्सलाम हक़ तआला की तरफ़ बुलाने वाले और इमामे मुतलक़ हैं। और औलिया-ए-किराम हुस्ने एतेक़ाद के साथ अंबिया के मुत्तबेअ और पैरोकार हैं। यह मुहाल है कि मुक़्तदी व मामूम अपने इमाम व रहनुमा से अफ़ज़ल हो। मुख़्तसरन यूं समझना चाहिये कि तमाम औलिया के अक़वाल व अनफ़ास और उनके मामलात को सिद्क़ नबी के पहलू में रखा जाये तो वह तमाम अहवाल व अनफ़ास परेशान और मादूम नज़र आयेंगे। इसलिये कि औलिया हक़ के तालिब व सालिक हैं और अंबिया बारगाहे इलाही के वासिल और मक़सूद को

हासिल किये हुए हैं जो हुक्मे दावत व तबलीग़ के तहत रुजू होकर दावत व तबलीग़ फ़रमाते हैं।

मुलहिदों के एतेराज़ों के जवाबात : अगर कोई मज़कूरा मुलहिदों में से (अल्लाह तआला उनपर लानत करे) यह कहे कि यह क़ायदा है कि जब किसी मुल्क का क़ासिद दूसरे मुल्क में आता है तो वह मबऊस इलैह यानी जिसकी तरफ़ वह भेजा गया हो वह मुल्क उस क़ासिद से अफ़ज़ल होता है जिस तरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम हज़रत जिब्राईल से अफ़ज़ल हैं। (हालांकि) उनकी पैदा करदा यह सूरत ग़लत है। मैं जवाब में कहता हूं अगर किसी मुल्क से एक शख़्स की तरफ़ क़ासिद आये तो जिसकी तरफ़ वह भेजा गया वह क़ासिद से अफ़ज़ल होगा जैसे जिब्राईल अलैहिस्सलाम एक एक रसूल व नबी के पास आते रहे तो वह सब नबी व रसूल जिब्राईल अलैहिस्सलाम से अफ़ज़ल हैं। लेकिन जब क़ासिद व रसूल की एक जमाअत को और किसी क़ौम की तरफ़ भेजा जाये तो वह क़ासिद व रसूल यक़ीनन उस क़ौम व जमाअत से अफ़ज़ल होगा। जिस तरह हर नबी अपनी अपनी उम्मत की तरफ़ मबऊस हुआ। और इसमें किसी ज़ी फ़हम को हुक्मे अहादीस के तहत इश्तेबाह नहीं हो सकता, लिहाज़ा अंबिया अलैहिमुस्सलाम का एक एक सांस, औलिया की पूरी ज़िन्दगी से अफ़ज़ल है। इस लिये कि औलिया जब अपनी आदत के मुताबिक़ इंतेहा को पहुंचते हैं तब वह मुशाहेदे की ख़बर देते हैं और हिजाबे बशरीयत से खुलासी पाते हैं ख़्वाह वह कितने ही ऐन बशर क्यों न हों? लेकिन नबी व रसूल का पहला क़दम ही मुशाहेदे में होता है जब नबी व रसूल की इब्तेदा दिल की इंतेहा होती है तो उनके साथ इन्हें क़यास भी नहीं किया जा सकता। क्या तुम नहीं देखते कि तमाम तालिबाने हक़ औलिया का इत्तेफ़ाक़ है कि तफ़रेक़ा से निकल कर मुक़ामे जमा में होना कमाले विलायत की मेराज है।

तफ़रेक़ा व जमअ की सूरत : इसकी सूरत यह है कि जब बंदा ग़लबा-ए-मुहब्बत में किसी मंज़िल पर फ़ायज़ होता है तो उसकी अक़्ल फ़ेअल पर नज़र करने से आजिज़ हो जाती है और शौक़े मुहब्बत में फ़ायले हक़ीक़ी का फ़ेअल ही सारे जहान में नज़र आते हैं। इस सिलसिले में हज़रत अबू रूदबारी रहमतुल्लाह अलैहि का इरशाद है कि-

अगर इसका दीदार हमसे जुदा हो जाये तो हम से बंदगी का नाम जाता रहे। इसलिये कि इबादत की शर्फ़ इसके दीदार के बग़ैर हासिल नहीं हो सकता।

अंबिया के लिये यह मअने उनके हाल की इब्तेदा है। क्योंकि अंबिया की तमाम ज़िन्दगी में तफ़रेक़ा की सूरत पैदा ही नहीं होती और उनकी नफ़ी व इसबात, मसलक व मक़तअ, इक़बाल व एराज़ और हिदायत व निहायत सबके ऐन हैं चुनांचे हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का इब्तेदाई हाल यह है कि जब आफ़ताब को देखा तो फ़रमाया ''हाज़ारब्बी'' और चांद सितारों को देखा तो फ़रमाया हाज़ा रब्बी उसकी वजह यह है कि आपके दिल पर हक़ का ग़ल्बा था और ऐन जमअ में अपने इज्तेमाअ के अंदर ग़ैर नज़र आया ही नहीं। अगर नज़र डाली भी तो दीदए जमअ की नज़र डाली और अपनी रोइयत से बेज़ारी के इज़हार में फ़रमाया-

यानी में रूपोश होने वाले को पसंद नहीं करता गोया आपकी इब्तेदा में भी जमा है और इंतेहा में भी जमा। बिला शक व शुबह यही विलायत की इब्तेदा व इंतेहा है और नुबूवत की तो कोई इंतेहा ही नहीं है यहां तक कि इनकी इब्तेदा अभी नुबूवत से है और इंतेहा भी नुबूवत पर। और इससे पहले जबकि मख़लूक़ मौजूद न थी उस वक़्त भी हक़ तआला की मुराद वही थे।

हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि से लोगों ने पूछा अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अहवाल के बाबत कुछ फ़रमाइये? उन्होंने फ़रमाया अफ़सोस कि हमें इनके बारे में कोई इख़्तेयार नहीं। जो कुछ भी इनके बारे में हम कहेंगे वह सब हम ही हम होंगे। अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम के नफ़ी व इस बात को इस दर्जा में रखा है कि वहां तक मख़लूक़ की नज़र नहीं पहुंच सकती। जिस तरह औलिया के मर्तबा के इदराक से आम लोग आजिज़ हैं क्योंकि इनका इदराक यहां है इसी तरह औलिया भी अंबिया के मर्तबा के इदराक से आजिज़ हैं क्योंकि इनके इदराक इनसे पोशीदा है।

हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि अपने ज़माने के मुसल्लमा साहबे हुज्जत थे वह फ़रमाते हैं कि-

यानी मैंने देखा कि सबसे पहले मेरा बातिन आसमानों पर ले जाया गया मैंने किसी चीज़ की तरफ़ निगाह न डाली। जन्नत व दोज़ख़ दिखाये गये इनकी तरफ़ भी निगाह न की, मौजूदात और हिजाबात से गुज़ारा गया उनकी तरफ़ भी इल्तेफ़ात न किया। उस वक़्त में एक परिन्दा बन गया जिसका जिस्म अहदियत का और उसके बाल व पर दीमूमियत के थे में ज़ाते हक़ की मुहब्बत में मुसलसल परवाज़ करता रहा यहां तक कि में मुक़ामे तंज़िया से गुज़रा और

अज़लियत के मैदान से मुशर्रफ़ हुआ वहां मैंने अहदियत के दरख़्त देखे फिर जब मैंने निगाह डाली तो वह सब कुछ मैं ही मैं था।

उस वक़्त मैंने मुनाजात की कि ऐ ख़ुदा! मेरी ख़ुदी को तेरा रास्ता ही नहीं मिलता और मुझे अपनी ख़ुदी से निकलने की कोई राह नज़र नहीं आती। मेरी रहनुमाई फ़रमा अब मुझे क्या करना चाहिये? फ़रमाने हक़ आया कि ऐ बा यज़ीद! तुम्हारी अपनी ख़ुदी से निजात, हमारे दोस्त (यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुताबेअत से वाबस्ता है। इनके क़दमे मुबारक के नीचे की ख़ाक को अपनी आंखों का सुरमा बनाओ और उनकी पैरवी में हमेशा मसरूफ़ रहो। यह हिकायत बहुत तवील है अहले तरीक़त इसको हज़रत बायज़ीद रहमतुल्लाह अलैहि की मेराज कहते हैं मेराज से उनकी मुराद कुर्बे हक़ है।

अंबिया की मेराज अज़रुए इज़हार इनकी ज़ात व जिस्म के साथ है और औलिया की मेराज अज़रुए हिम्मत व असरार है अंबिया के अजसाम सफ़ा व पाकीज़गी और कुर्ब से मुत्तसिफ़ हैं। जिस तरह औलिया के दिल इनके असरार का मसकन और यह फ़ज़ीलत ज़ाहिर है इसकी सूरत यह है कि वली को अपने हाल में मग़लूब करके मदहोश कर दिया जाता है फिर इसके बातिनी दरजात को इससे ग़ायब करके कुर्बे हक़ से सरफ़राज़ कर दिया जाता है जब इनकी वापसी हालते सुहव की तरफ़ होती है तो वह तमाम दलायल इनके दिल में नक़्श ज़न होते हैं और उनका इल्म इसे हासिल करता है लिहाज़ा वह हस्ती जिसके जिस्म को कुर्बे हक़ में ले जाये यानी नबी को और वह शख़्स जिसके फ़िक्र व बातिन को कुर्ब में ले जाया जाये यानी वली को। इन दोनों के दर्मियान बड़ा फ़र्क़ है।

फ़रिश्तों पर अंबिया और औलिया की फ़ज़ीलत

वाज़ेह रहना चाहिये कि अहले सुन्नत व जमाअत और जम्हूर मशायख़े तरीक़त का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम और वह औलिया जो महफ़ूज़ हैं फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं इस सिलसिले में मुअतेज़ला का इख़्तेलाफ़ है। वह फ़रिश्तों को अंबिया से अफ़ज़ल कहते हैं। इनका मज़हब है कि फ़रिश्तों को मर्तबा बुलंद इनकी ख़लक़त लतीफ़ तर, और वह अल्लाह तआला के सबसे बड़े फ़रमां बर्दार हैं। इसीलिये बेहतर है कि इन्हें अफ़ज़ल कहा जाये। हम जवाब में कहते हैं कि हक़ीक़त तुम्हारे इस गुमान के ख़िलाफ़

है इसलिये कि बदनी इताअत बुलंद मरतबत और लतीफ़ खलकत फ़ज़ीलते इलाही के लिये इल्लत नहीं है फ़ज़ीलत वहां होती है जहां हक़ तआला चाहे जो कुछ तुम फ़रिश्तों के लिये कहते हो वह सब इबलीस को भी हासिल था लेकिन बिल इत्तेफाक़ वह मलऊन व रुसवा हुआ। लिहाज़ा फ़ज़ीलत उसी को है जिसे हक़ तआला देकर ख़ल्क़ पर बरतरी अता फ़रमाये।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम की अफ़ज़लियत का बड़ा सुबूत यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें। यह क़ायदा मुसल्लम है कि जिसे सज्दा किया जाये उसका हाल सज्दा करने वाले के हाल से बुलंद होता है। अगर कोई यह कहे कि ख़ाना काबा के पत्थर और बेहिस व हरकत जमाद है मुसलमान इससे अफ़ज़ल होकर इसकी तरफ़ सज्दा करते हैं लिहाज़ा जायज़ है कि फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से अफ़ज़ल हों अगर वह इन्हें सज्दा करें इसका जवाब हम यह देंगे कि कोई शख़्स यह नहीं कहता कि मुसलमान ख़ाना काबा या मस्जिद के महराब या दीवार को सज्दा करता है सब यही कहते हैं कि ख़ुदा को सज्दा करते हैं। और हमारा यह कहना कि फ़रिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया था इसका मतलब यह है कि उन्होंने ख़ुदा के हुक्म की तामील में सजदा किया था चुनांचे हक़ तआला ने हुक्म दिया कि हम फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि वह आदम को सज्दा करें और जब मुसलमानों को सज्दा का हुक्म दिया गया तो इस तरह फ़रमाया गया-

अपने रब को सजदा करो और इसकी बंदगी बजा लाओ और नेक काम करो।

लिहाज़ा ख़ाना काबा आदम अलैहिस्सलाम की मानिंद नहीं है क्योंकि मुसाफ़िर जब इबादत करना चाहता है तो सवारी की पुश्त पर ख़ुदा की तरफ़ इबादत करता है अगर सवारी का रुख़ ख़ाना कावा की तरफ़ न हो तो मजबूर मुतसव्विर होता है। इसी तरह वह शख़्स जिस पर सिमतं क़िब्ला ज़ाहिर न हो और जंगल में कोई बताने वाला भी न हो तो वह तहर्री करके जिधर दिल मुतवज्जोह होकर रुख़ करे नमाज़ अदा कर सकता है फ़रिश्तों को हज़रत आदम को सज्दा करने में उज़्र न हुआ। और जिसने अपने लिये उज़्र गढ़ा वह मलऊन व रुसवा हुआ। अहले बसीरत के लिये यह दलील वाज़ेह काफी हैं।

नीज़ यह भी वाज़ेह रहना चाहिये कि फ़रिश्ते अगरचे मारेफ़ते इलाही में अंबिया के बराबर हैं लेकिन इससे इनके दर्जों में बराबरी किसी तरह ज़रूरी नहीं क्योंकि फ़रिश्तों की ख़लक़त में न शहवत है न दिल में हिर्स व आज़। और न तबअ में ज़ौक़ व हीला है इनकी गिज़ा इताअत, इनका पीना, फ़रमाने इलाही पर इक़ामत है। फिर यह कि आदमी की सरिशत शहवत से मुरक्किब है इससे मआसी का इर्तेकाब मुमकिन है और दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत इसके दिल पर असर अंदाज़ हो सकती है इसकी तबीयत में हिर्स व हीला मांजें मार सकता है और शैतान को इसकी ज़ात पर इतना ग़लबा हासिल है कि वह लोगों में ख़ून के साथ गर्दिश करता है और वह इस नफ़्स के साथ चिमटा हुआ है जो तमाम बुराईयों और आफ़तों का सरचश्मा है। जिसके वजूद में यह तमाम बातें शामिल हों फिर वह ग़ल्बा-ए-शहवत के इमकान के साथ फ़िस्क़ व फ़ुजूर से इज्तेनाब करे, सरापा हरीस होकर दुनिया से मुंह मोड़ ले। शैतानी वसवसे बाक़ी रहते हुए मआसी से रुजूअ व तौबा करे और नफ़्सानी ख़्वाहिशों से रुगरदानी करके बंदगी पर क़ायम और ताअत पर मुस्तहकम होकर मुजाहिदए नफ़्स और मुजादलए शैतानी में मशगूल हो दर हक़ीक़त वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है क्योंकि फ़रिश्तों की ख़लक़त में न तो शहवत से मारका आराई है और न उनकी तबीयत में ग़िज़ा व लज़्ज़त की ख़्वाहिश। न बीवी बच्चों का ग़म न ख़ेश व अकरबा की मशग़ूलियत न सबब व वसीला के मोहताज न उम्मीद व आफ़त का इस्तेग़राक़ है। इनमें से मुझे उस शख़्स पर ताज्जुब होता है जो अफ़आल व किरदार में फ़ज़्ल को देखता है। या ख़ूबी व जमाल में इज़्ज़त को देखता है या इज़्ज़त व माल में बुज़ुर्गी को तलाश करता है वह जल्द ही इस नेमत पर बुज़ुर्गी को अपने से ज़ायल देखेगा। वह मालिकुल आयान हक़ तआला के अफ़ज़ाल को क्यों नहीं देखता। रज़ाए इलाही में इज़्ज़त और मारेफ़त व ईमान में बुज़ुर्गी को क्यों नहीं देखता ताकि इस नेमत को हमेशा मौजूद पाए और अपने दिल को दोनों जहान में खुश और शादमा देखे। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हज़ार हा साल ख़िलअत के इंतज़ार में खुदा की बंदगी की लेकिन इनकी ख़िलअत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत गुज़ारी में थी। यहां तक कि शबे मेराज हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की ख़िदमत की वह किस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अफ़ज़ल हो सकते हैं?

जिन बंदगाने खुदा ने दुनिया में नफ़्स को मारने में रियाज़तें कीं रात दिन मुजाहिदे किये, हक़ तआला ने इनके साथ मेहरबानी फ़रमाई और अपने दीदार से सरफ़राज़ करके तमाम ख़तरात से महफ़ूज़ रखा।

जब फ़रिश्तों की नखूव्वत हद से बढ़ गयी और हर एक ने अपने मामला की सफ़ाई को दलील बनाकर बनी आदम के बारे में जुबाने मलामत दराज़ की तो हक़ तआला ने चाहा कि इनका हाल इन पर ज़ाहिर फ़रमाए चुनांचे फ़रमाया ऐ फ़रिश्तो! अपने में से तीन ऐसे बुजुर्ग अफ़राद को मुन्तख़ब कर लो जिन पर तुम्हें एतेमाद हो वह ज़मीन के ख़लीफ़ा हो जायें और मख़लूक़े खुदा को राहे रास्त पर लायें, और बनी आदम में अदल व इंसाफ़ क़ायम करें। फ़रिश्तों ने तीन फ़रिश्ते चुन लिये इनमें से एक तो ज़मीन पर आने से पहले ही ज़मीन की आफ़तों को देखकर पनाह मांग गया। चुनांचे अल्लाह तआला ने उस फ़रिश्ते को रोक लिया और बाक़ी दो फ़रिश्ते ज़मीन पर आये अल्लाह तआला ने इन दोनों की सरिशत और ख़लक़त को बदल दिया। ताकि खाने पीने के ख़्वाहिशमंद होकर शहवत की तरफ़ मायल हों। यहां तक कि इस पर इन्हें मसतौजिब सज़ा बनाया। इस तरह फ़रिश्तों ने बनी आदम की फ़ज़ीलत का अंदाज़ा कर लिया।

खुलासए कलाम यह है कि ख़्वासे मोमिन ख़्वासे मलायका से अफ़ज़ल और अवाम मोमिन, आम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं। लिहाज़ा वह जो मासूम व महफ़ूज़ नहीं वह हिफ़्ज़ुहू और करामन कातिबीन से अफ़ज़ल हैं।

इस मायने में बकसरत अक़्वाल हैं हर शैख़ ने इस सिलसिले में कुछ न कुछ फरमाया है अल्लाह तआला जिसे चाहता है बुजुर्गी से सरफ़राज़ फ़रमाता है।

तसव्वुफ़ में हकीमों के मज़हब के मुताल्लेक़ात और सूफ़िया के बाहमी इख़्तेलाफ़ात यह हैं जिनको बतौर इख़्तसार हमने बयान कर दिया।

दर हक़ीक़त विलायत असरारे इलाही से एक सिर्र है जो रियाज़त व मुजाहिदा और तर्बियते शैख़ के बग़ैर ज़ाहिर नहीं होता। और वली को वली ही पहचानता है अगर इस हक़ीक़त का इज़हार हर साहबे अक़्ल पर जायज़ होता तो दोस्त व दुश्मन की तमीज़ न रहती। और वासिल बहक़, ग़ाफ़िल से मुमताज़ न होता। लिहाज़ा मशीयते इलाही यही है कि दोस्ती व मुहब्बत के जौहर को ज़िल्लत व ख़्वारी की सीप यानी सदफ़ में लोगों से महफ़ूज़ रखा जाये और उसे बलाओं

...के दरिया में छुपाया जाये ताकि इसका तालिब अपने जाने अज़ीज़ को इसके फ़रमान के तहत ख़तरे में डाले इस जान लेवा दरिया में गुज़ारा करे और दरिया की गहराई में ग़ोता ज़न होकर अपनी मुराद को हासिल करे, या इसी तलब में दुनिया से कूच कर जाये।

८ फ़िरक़ए ख़राज़िया

ख़राज़ी फ़िरक़ा के पेशवा, हज़रत अबू सईद ख़राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं तरीक़त में इनकी तसानीफ़ बकसरत हैं और तजरीद व इनक़ेताअ में इनका मर्तबा अज़ीम है। फ़ना व बक़ा के हाल पर सबसे पहले उन्होंने ही गुफ़तगू फ़रमाई और तरीक़त के तमाम रुमूज़ को आपने इन ही दो कलिमों में पोशीदा कर दिया है।

अब मैं इनके मअ़ने बयान करके जिन्होंने इसमें ग़लतियां की हैं ज़ाहिर करता हूं ताकि इनके मज़हब की मारेफ़त के साथ इनके इस्तेमाल का मक़सद समझा जा सके।

बक़ा और फ़ना

अल्लाह तआला का इरशाद है-

जो तुम्हारे पास है वह फ़ना हो जायेगा और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रहने वाला है।

एक और जगह इरशाद है कि-

रुए ज़मीन पर जो कुछ है वह फ़ानी है और तुम्हारे रब की इज़्ज़त व जलाल वाली ज़ात बाक़ी रहने वाली है।

वाज़ेह रहना चाहिये कि इल्मे ज़ुबान में फ़ना व बक़ा के साथ और मअ़ने हैं और इस्तेलाहे तरीक़त और ज़ुबाने हाल में इसके मअ़ने और हैं, उलमाए ज़वाहिर जिस क़दर इनके मअ़ने में हैरान हैं इतने और किसी मअ़ने में नहीं हैं। लिहाज़ा बक़ा के मअ़ने इल्मे ज़ुबान और इक़्तेज़ाए लुग़त में तीन क़िस्म के हैं, एक यह कि बक़ा वह है जिसका इब्तेदाई किनारा भी फ़ना हो और उसका आख़िरी किनारा भी फ़ना। और दूसरे मअ़ने यह हैं कि बक़ा सिरे से मौजूद ही न हो और जब मौजूद हो जाये तो फिर वह फ़ना ही न हो। जैसे बहिश्त व दोज़ख़ और जहाने आख़ेरत और इसके रहने वाले हैं। तीसरे मअ़ने यह हैं कि बक़ा न आगे मादूम हो और न पहले मादूम थी यह हक़ तआला की ज़ाते कुद्स

और इसके सिफ़ात हैं। जो हमेशा से है और हमेशा अपनी क़दीम सिफ़ात के साथ बाक़ी रहेगा। और दायमी बक़ा से मुराद इसकी दायमी वजूद है और कोई भी किसी नाइयत से इसकी ज़ात व सिफ़ात में शरीक व सहीम नहीं है।

फ़ना का इल्म यह है कि तुम ने जान लिया है कि दुनिया फ़ानी है और बक़ा का इल्म यह है कि तुमने जान लिया है कि आख़ेरत बाक़ी है जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है -

तर्जमा : आख़रत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

इस आयत में अबक़ा का कलिमा मुबालग़ा के लिये है क्योंकि आख़ेरत की उम्र के लिये इस जहान में फ़ना नहीं है लेकिन तरीक़त के इस्तेलाह में बक़ाए हाल और फ़नाए हाल से मुराद यह है कि जहालत के लिये यक़ीनन फ़ना है और इल्म बाक़ी रहने वाला है। चुनांचे मासीयत फ़ानी है और ताअत बाक़ी बंदा जब अपनी ताअत का इल्म हासिल कर लेता है तो ग़फ़लत व जहालत मादूम होकर बक़ा के ज़िक्र में बाक़ी हो जाती है। मतलब यह कि बंदा जब हक़ तआला को पहचान जाता है तो वह इसके इल्म के साथ बाक़ी हो जाता है और इससे जहल फ़ना हो जाता है और जब से फ़ना होता है तो वह ग़फ़लत के ज़िक्र में बाक़ी होता है। यह बयान मजमूम क़बीह औसाफ़ के दूर करने और महमूद व पसंदीदा औसाफ़ के क़ायम करने में है। लेकिन ख़्वासे अहले तरीक़त के नज़दीक यह मुराद नहीं है इनके इशारात असले तरीक़त में इल्म व हाल से मुताल्लिक़ नहीं हैं वह फ़ना व बक़ा का इस्तेमाल विलायत के दर्जए कमाल के सिवा नहीं करते।

ख़्वासे अहले तरीक़त के नज़दीक फ़ना व बक़ा से मुत्तसिफ़ वह हज़रात हैं जो मुजाहिदे की मुशक़्क़त से आज़ाद हैं और मक़ामात की क़ैद से और अहवाल के तग़य्युर से निजात पाकर हुसूले मक़सूद में फ़ायज़ुल मराम हो चुके हैं। इनके देखने की तमाम सलाहियतें हक़ तआला के दीदार के साथ वाबस्ता हैं। इनके सुनने की तमाम कुव्वतें कलामे इलाही की समाअत के साथ पेवस्त हैं और दिल से जानने की तमाम इस्तेअदाद असरारे इलाही के हुसूल में मुनहमिक हो चुकी है यह साहबाने विलायत, अपने असरार के हुसूल में ख़ुद बीनी की आफ़त को देख चुके हैं। वह सबसे किनारा कश होकर मुराद में हैं इनके इरादे फ़ना हो चुके हैं। वासिल बहक़ होकर हर दावे से बेज़ार और हर लिहाज़ से मुनक़तअ करामतों से महजूब मक़ामात को देखने वाले होते हैं और

...न मुराद में आफ़तों का लिबास पहनने से बे मुराद होते हैं और हर मशरब में जुदा होकर हर मानूस शय की उनसियत से अलाहदा होते हैं।

ताकि हलाक हों तो मुशाहदे में हलाक हों और ज़िन्दा रहें तो मुशाहेदा में ज़िन्दा रहें, इसी मअ़ने में मैं कहता हूं कि-

यानी मैंने फ़ना को अपनी ख़्वाहिश नापैद करके फ़ना किया है।

हर अम्र में मेरी ख़्वाहिश सिर्फ़ तेरी मुहब्बत है।

बंदा जब अपने सिफ़ाते बशरी को कुरेदता है तो वह बक़ा के तमाम मअ़ने जान लेता है।

मतलब यह है कि बंदा वजूदे औसाफ़ की हालत में जब वसफ़ की आफ़तों से फ़ानी हो जाता है तब मुराद की फ़ना में मुराद की बक़ा के साथ बाक़ी हो जाता है हत्ता कि कुर्ब व बोउ़द भी नहीं रहता। न वहशत व उन्स रहता है न सुहव व सुकर। न फ़िराक़ विसाल रहता है न मायूसी व ख़ुलअ़। न अस्मा व अलाम रहते हैं न नुक़ूश व रुसूम। इसी मअ़ने में एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं-

मेरा मुक़ाम और रुसूम दोनों फ़ना हो गये।

अब नज़दीकी और दूरी कुछ नहीं रही।

जब यह मुझसे फ़ना हो गये तब मेरे लिये हिदायत की राह खुली अब राहे ...क का ज़हूर बिल क़सद फ़ना के बाद है।

दर हक़ीक़त अशिया की फ़ना इनकी आफ़तों को देखे बग़ैर और इनकी ख़्वाहिश की नफ़ी के बग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकती। जिसे यह ख़्याल है कि अशिया की फ़ना, उस चीज़ के हिजाब में होने के बग़ैर दुरुस्त नहीं वह ग़लती पर है। ऐसा नहीं है कि आदमी किसी चीज़ को दोस्त रखे और कहे कि मैं इसके साथ बाक़ी हूं या यह कि वह किसी चीज़ से दुश्मनी रखे और यह कहे कि मैं इसके साथ फ़ानी हूं। क्योंकि यह दोनों सिफ़तें तालिब की हैं। फ़ना में मुहब्बत व अदावत नहीं है। और न बक़ा में जमअ़ व तफ़रक़ा की रोइयत। एक गरोह को इस मअ़ने में ग़लती लाहक़ हुई है। इन का गुमान है कि ज़ात के गुम होने और वजूद को नापैद करने का नाम फ़ना है और बक़ा यह है कि बंदे के साथ हक़ की बक़ा मिल जाये यह दोनों सूरतें मुहाल हैं।

मैंने (ग़ैर मुनक़सम) मुल्क हिंदुस्तान में एक शख़्स को देखा जो तफ़सीर व तज़्कीर और इल्म व फ़हम का मुद्दई था। इस मायने में उसने मुनाज़रा किया तब मैंने उससे गुफ़्तगू की तो पता चला कि वह न तो फ़ना को जानता है और

न बक़ा को। क़दम व हुदूस के फ़र्क़ को भी नहीं जानता। ऐसे जाहिल क़िस्म के लोग बहुत हैं जो फ़नाए कुल्लियत को जायज़ जानते हैं हालांकि यह खुली हुई हठधर्मी और मुकाबरा है। किसी चीज़ के अजज़ाए तरकीबी की फ़ना और इससे उन अजज़ा का इनफ़ेकाक क़तअन जायज़ नहीं। मैं इन जाहिल ग़लत कारों से पूछता हूं कि ऐसी फ़ना से तुम्हारा मुद्दआ क्या है? अगर यह कहूं कि ज़ात फ़ना मक़सूद है तो यह मुहाल है और अगर यह कहो कि वसफ़ की फ़ना मुराद है तो उसे हम जायज़ रखते हैं। क्योंकि फ़ना एक अलाहेदा सिफ़त है और बक़ा एक अलाहेदा सिफ़त बंदा इन दोनों सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होगा। और यह मुहाल है कि कोई शख़्स अपने सिवा किसी दूसरे की सिफ़त से क़ायम हो।

नसतूरियों का मज़हब जो रूमी नसरानियों का है यह है कि हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा मुजाहिदे के ज़रिये तमाम नासूती सिफ़ात को फ़ना करके लाहूती बक़ा के साथ क़ायम हो गयीं। और उन्होंने ऐसी बक़ा पाई है कि माबूद की बक़ा के साथ बाक़ी हो गयीं। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इसी का नतीजा और समरा हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अनासिर तरकीबी की बुनियाद, इंसानी अनासिर नहीं कि इंसान के साथ बक़ा पायें इनका तहक्कुक़ बक़ाए अलूहियत के साथ हुआ है लिहाज़ा वह और इनकी वालिदा मरयम और अल्लाह तआला एक ही बक़ा के साथ बाक़ी हैं जो कि क़दीम है और हक़ तआला की सिफ़त है (मआज़ल्लाह) यह सब बातें इन हशवियों के क़ौल के मवाफ़िक़ हैं जो मुजस्समा व मुशब्बा के क़ायल हैं और हक़ तआला को महले हवादिस कहते हैं और क़दीम के लिये सिफ़ते हदूस जायज़ मानते हैं। मआज़ल्लाह।

मैं इन सबके जवाब में कहता हूं कि क्या हदस क़दम का महल होता है? क्या क़दीम के लिये हुदूस की सिफ़त हो सकती है? और क्या हादिस के लिये क़दीम सिफ़त बन सकती है? इसका जायज़ रखना दहरियों का मज़हब है कि हुदूसे आलम की दलील को बातिल करते हैं और इससे मसनूअ और सानेअ दोनों को क़दीम कहना चाहते हैं। या दोनों को हादिस यानी मख़लूक़ का तरक्कुब व इम्तेज़ाज ना मख़लूक़ यानी ख़ुदा के साथ और ना मख़लूक़ (ख़ुदा) का हुलूल मख़लूक़ के साथ बनाना चाहते हैं। ऐसी ख़राबी व बद नसीबी इन्हीं को सज़ावार हो। क्योंकि वह क़दीम को महले हवादिस या हवादिस को महले क़दीम कहते हैं। लिहाज़ा मसनूअ और सानेअ दोनों को क़दीम ही कहना चाहिये

और जब दलील से साबित है कि मसनूअ हादिस है तो ला मुहाला सानेअ को भी मुहदिस ही कहना चाहिये क्योंकि किसी चीज़ का महल उस चीज़ के ऐन की मानिंद होता है जब महल हादिस है तो चाहिये कि हाल भी हादिस हो। लिहाज़ा इन सब बातों से लाज़िम आता है कि मुहद्दिस को क़दीम कहें या क़दीम को मुहद्दिस? हालांकि यह दोनों ज़लालत व गुमराही हैं।

ख़ुलासा यह कि जो चीज़ किसी दूसरे के साथ मुत्तसिल व मुत्तहिद और मुमर्तज़िज हो इन दोनों का हुक्म यकसां होता है। लिहाज़ा हमारी बक़ा हमारी सिफ़त है और हमारी फ़ना हमारी सिफ़त। और हमारे औसाफ़ की ख़ुसूसियत में हमारी फ़ना हमारी बक़ा की मानिंद और हमारी बक़ा हमारी फ़ना की मानिंद है और हमारी फ़ना ऐसी सिफ़त है जो हमारी बक़ा के साथ एक और सिफ़त है।

इसके बाद अगर कोई फ़ना से यह मुराद ले कि बक़ा का इससे कोई ताल्लुक़ नहीं तो यह जायज़ है और अगर बक़ा से यह मुराद ले कि फ़ना का इससे कोई ताल्लुक़ नहीं तो यह भी जायज़ है क्योंकि इसकी मुराद इस फ़ना से ग़ैर के ज़िक्र की फ़ना है और बक़ा से हक़ तअला के ज़िक्र की बक़ा है।

जो अपनी मुराद से फ़ानी हो गया वह मुरादे हक़ से बाक़ी हो गया। इसलिये कि बंदे की मुराद फ़ानी है और हक़ तआला की मुराद बाक़ी है जब तुम अपनी मुराद से वाबस्ता हो गये तो तुम्हारी मुराद फ़ानी हो गयी और फ़ना के साथ इस का क़याम होगा। फिर जब हक़ तआला की मुराद के साथ मुत्तसिफ़ हो गये तो हक़ की मुराद के साथ बाक़ी होगे। और बक़ा के साथ बाक़ी होगे। इसकी मिसाल ऐसी है कि जो चीज़ आग के ग़ल्बा में होगी इसके ग़लबा की वजह से इसमें भी वही सिफ़त पैदा हो जायेगी जो आग की है। तो जब आग का ग़ल्बा इस चीज़ की सिफ़त को दूसरी सिफ़त के साथ बदल देता है तो हक़ तआला के इरादा का ग़लबा आग के ग़लबा से बदर्जा ऊला बेहतर है। लेकिन आग का यह तसर्रुफ़ लोहे के वस्फ़ में है न कि लोहे की ज़ात में? क्योंकि लोहा हरगिज़ आग नहीं बन जाता।

फ़ना व बक़ा में मशायख़ के रुमूज़ व लतायफ़

फ़ना व बक़ा की तारीफ़ में हर बुज़ुर्ग ने लतायफ़ व रुमूज़ बयान किये हैं जुनैदे साहबे मज़हब अबू सईद ख़राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

फ़ना यह है कि बंदा अपनी बंदगी की दीद से फ़ानी हो और बक़ा यह

है कि बंदा मुशाहदा इलाही से बाक़ी हो।

मतलब यह है कि अफ़आले बंदगी की रोइयत में आफ़त है और बंदगी की हक़ीक़त से वह उस वक़्त रोशनास होता है जबकि वह अपने अफ़आल को न देखे। और उन अफ़आल को देखने से वह फ़ानी हो और फ़ज़्ले इलाही की दीद से बाक़ी हो ताकि इसके मामला की निसबत हक़ के साथ वाबस्ता हो न कि इसके साथ। क्योंकि बंदा के साथ जब तक उन अफ़आल का ताल्लुक़ रहेगा उस वक़्त तक वह नाक़िस रहेगा। और जब हक़ तआला के साथ उसकी निसबत हो जायेगी तो वह पूरे तौर पर कामिल हो जायेगा। लिहाज़ा जब बंदा अपने मुताल्लेक़ात से फ़ानी हो जाता है तब कमाले इलाही से बाक़ी हो जाता है।

हज़रत याक़ूब नहरजोरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

बंदगी की सेहत व दुरुस्तगी फ़ना व बक़ा में है।

क्योंकि जब तक बंदा अपने हर ताल्लुक़ व निसबत से बेज़ारी न करे ख़ुलूस के साथ ख़िदमते इलाही के लायक़ नहीं बनता। लिहाज़ा इंसान का अपने ताल्लुक़ से बेज़ारी करना फ़ना है और बंदगी में ख़ुलूस का होना बक़ा है।

हज़रत इब्राहीम शैबानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

इख़लास वहदानियत और बंदगी की दुरुस्तगी पर मुनहसिर है और जो इसके मा सिवा है वह ग़लत और बेदीनी है।

मतलब यह कि फ़ना व बक़ा के इल्म का क़ायदा इख़लास व वहदानियत पर है चूंकि जब बंदा हक़ तआला की वहदानियत का इक़रार करता है तो वह अपने आपको हुक्मे इलाही में मग़लूब व मजबूर देखता है और जो मग़लूब होता है वह ग़ालिब के ग़ल्बा में फ़ानी होता है जिस वक़्त उसकी फ़ना दुरुस्त हो जाती है और अपने इज्ज़ का इक़रार करता है तब वह बजुज़ बंदगी के कुछ नहीं देखता और अपनी तमाम सलाहियतें बारगाहे इलाही में गुम कर देता है जो कोई फ़ना व बक़ा की इसके सिवा तारीफ़ करता है और वह फ़ना को ज़ात की फ़ना और बक़ा को बक़ाए हक़ से ताबीर करता है वह ज़िन्दीक़ है यह मज़हब तो नसारा का है।

हुजूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि यह तमाम अक़वाल बा एतेबार मअ़ने क़रीब क़रीब हैं। अगरचे इबारात मुख़्तलिफ़ हैं इन सबकी हक़ीक़त यह है कि बंदा के लिये फ़ना जलाले हक़ की दीद और उसकी

अज़मत का कश्फ़ व मुशाहेदा दिल से ताल्लुक़ रखता है, यहां तक कि अल्लाह तआला के जलाल के ग़ल्बा में उसके दिल से दुनिया व आख़ेरत फ़रामोश हो जाती है और उसकी हिम्मत की नज़र में अहवाल व मुक़ाम हक़ीर मालूम होने लगते हैं। और उसकी हालत में ज़ुहूर व करामत परागंदा और अक़्ल व नफ़्स से फ़ानी हो जाते हैं हत्ता कि वह फ़ना से भी फ़ानी हो जाता है और ऐन फ़ना में गुम होकर उसकी ज़ुबान हक़ के साथ गोया हो जाती है और उसके दिल में ख़शीयत और जिस्म में आजिज़ी पैदा हो जाती है जिस तरह की इब्तेदा में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सलब से ज़ुर्रियत के अख़राज के वक़्त बंदगी के इक़रार में आफ़त शामिल न थी।

एक बुज़ुर्ग इस मफ़हूम को इस तरह अदा करते हैं कि-

यानी अगर मुझे तुझ तक पहुंचने की राह मालूम होती तो में सबसे अपने आपको फ़ना कर देता और तेरी याद में रोता रहता।

और एक बुज़ुर्ग यूं फ़रमाते हैं कि-

यानी मेरी फ़ना में अपनी फ़ना की फ़ना है और ख़ुद को फ़ना करने में तेरा पाना है। लिहाज़ा मैंने अपने नाम व जिस्म की आसाईशों को मिटा दिया है अगर तूने मुझसे कुछ पूछा तो मैं यही कहूंगा कि तू ही अलीम है।

फ़क़्र व तसव्वुफ़ में फ़ना व बक़ा के अहकाम और उसका बयान यह था जिसे इख़्तेसार के साथ बयान कर दिया इस किताब में जहां भी फ़ना व बक़ा का ज़िक्र है इससे यही मुराद है। और यह क़ायदा ख़ज़ाज़ियों के मज़हब का है और तमाम मशायख़ इसी अस्ल पर गामज़न हैं। इस जमाअत का आम मक़ूला है कि जो जुदाइ दलीले विसाल हो वह बे अस्ल नहीं होती।

९ फ़िरक़ए ख़फ़ीफ़िया

ख़फ़ीफ़िया फ़िरक़े के पेशवा, हजरत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो अकाबिर सादाते मशायख़ में से मक़बूल व महबूब थे और अपने ज़माना में ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के माहिर थे। तरीक़त के उलूम व फ़ुनून में उनकी तसानीफ़ मशहूर हैं। आपके फ़ज़ायल व मनाक़िब बेहद व बेशुमार हैं। आप मक़बूले ज़माना अज़ीज़े नफ़्स और पाकीज़ा सिफ़ात थे। नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी से किनाराकश थे। मैंने सुना है कि उन्होंने चार सौ निकाह किये थे इसकी वजह यह है कि आप शाही ख़ानदान से ताल्लुक़ रखते थे। जिस वक़्त उन्होंने तौबा की तो शीराज़ के तमाम

लोग आपसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने लगे। जब आपका हाल अरफ़अ व आला हुआ तो शाही ख़ानदान और रईसों की लड़कियों ने हुसूले बरकत की ख़ातिर आपसे निकाह की इस्तद्दिआ की। आप उनसे निकाह करते और दख़ूल से पहले, बाकरह हालत में तलाक़ दे दिया करते थे, अलबत्ता चालीस बीवियां ऐसी ख़ुश नसीब थीं जिन्होंने एक एक दो दो या तीन तीन रातें गुज़ारीं थीं इनमें से सिर्फ़ एक बीवी चालीस साल तक इनकी सोहबत में रही वह एक वज़ीर की लड़की थी।

हज़रत अबुल हसन अली बिन बकरान शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने मुझसे बयान किया कि इनके ज़माना-ए-हुकूमत में औरतों की एक जमाअत इस पर मुत्तफ़िक़ थी कि इस शख़्स से खलवत में कोई खास शहवानी जज़्बात नहीं देखे गये। हर एक के दिल में क़िस्म क़िस्म के वसवसे पैदा होते और हैरत व ताज्जुब का इज़हार करती थीं। इससे पहले सब यह जानते थे कि वह शहवत में ख़ास मिज़ाज रखते हैं और सब यही कहते थे कि इनकी सोहबत का राज़ वज़ीरज़ादी के सिवा और कोई नहीं जानता। क्योंकि इनकी सोहबत में वही सालहा साल रही है और उनकी चहेती बीवी हैं। हज़रत अबुल हसन फ़रमाते हैं कि हमने दो आदमियों को मुन्तख़ब करके वज़ीरज़ादी के पास भेजा। उन्होंने उनसे पूछा शेख़ को तुम से बड़ी मुहब्बत रही है इसलिये हमें उनकी सोहबत की कोई खास बात बताओ। वज़ीरज़ादी ने कहा जिस दिन मैं उनके निकाह में आयी उस वक़्त किसी ने मुझसे कहा कि आज शेख़ तुम्हारे पास रहेंगे। मैंने उम्दा क़िस्म का ख़ाना तैयार किया और ख़ुद को ख़ूब बनाया संवारा। जब वह मेरे पास तशरीफ़ लाये तो मैंने खाना लाकर आगे रखा इसके बाद उन्होंने मेरी तरफ़ कुछ देर ग़ौर से देखा फिर खाने की तरफ़ कुछ देर नज़रें जमाईं। बाद अज़ाँ मेरा हाथ पकड़ कर अपनी आस्तीन में ले गये मैंने सीना से लेकर नाफ़ तक पंद्रह गिरह पड़ी हुई पाईं। उन्होंने फ़रमाया ऐ वज़ीर की दुख़्तर! पूछो कि यह गिरहें कैसी हैं? मेरे दर्याफ़्त करने पर फ़रमाया यह सब साज़िश और सब्र की शिद्दत से पड़ी हुई गिरहें हैं क्योंकि मैंने हमेशा ऐसे ख़ूबसूरत व हसीन चेहरों और ऐसे लज़ीज़ ख़ुश्बूदार खानों पर सब्र किया है यह फ़रमाकर वह उठ खड़े हुए। सबसे बड़ा मामला जो मेरे साथ उनका हुआ वह यही था।

तसव्वुफ़ में इनके मज़हब की खुसूसियत ग़ैबत और हुज़ूर है जिसको इख़्तसार में बयान नहीं किया जा सकता ताहम मक़दूर भर बयान करने की कोशिश करता

ग़ैबत और हुजूर

ग़ैबत व हुजूर ऐसी दो इबारतें और कलिमे हैं जो मक़सूद के ऐन मफ़हूम को बयान करते हैं अक्स व साया की मानिंद हैं (गोया लफ़्ज़ों में इनके मक़सूद का हक़ीक़ी मफ़हूम अदा करना ना मुमकिन है) यह दोनों लफ़्ज़ एक दूसरे की ज़िद हैं। जो अरबाबे जुबान और अहले मआनी के दर्मियान बकसरत मुस्तअमल हैं लिहाज़ा हुजूर से मुराद वह हुजूरे क़ल्ब है जो यक़ीनी विलायत के साथ होता है कि इसके लिये ग़ैबी हुक्म ऐनी हुक्म की मानिंद हो जाये।

और ग़ैब से मुराद, मासिवा अल्लाह से दिल का ग़ायब होना है यहां तक कि वह अपने आपसे भी गायब होकर अपनी ग़ैबत से भी ग़ायब हो जाये और अपनी ग़ैबत को भी वह खुद न देख सके। इसकी अलामत यह है कि वह रसमी हुक्मों से भी किनाराकश हो। जिस तरह नबी इर्तेकाब हराम से मासूम होता है लिहाज़ा अपने से ग़ैबत हक़ से हुजूर है और हक़ से हुजूरी अपने से ग़ैबत है चुनांचे जो अपने से ग़ायब हो गया वह हक़ तआला के हुजूर पहुंच गया और जो हक़ तआला में हाज़िर हो गया वह अपने से ग़ायब हो गया। क्योंकि दिल का मालिक हक़ तआला है जब किसी जज़्बए हक़ से तालिब का दिल मग़लूब हो जाये तो उसके नज़दीक दिल की ग़ैबत. हुजूर की मिस्ल हो जाती है और उस वक़्त दिल से शिर्कत व क़िस्मत उठ जाती है और अपने से भी निसबत मुनक़तअ हो जाती है।

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि-

अब वह कैसे तक़सीम हो?

जब दिल का मालिक अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं रहता तो उस वक़्त वह ख़्वाह ग़ायब हो या हाज़िर, उसी के क़ब्ज़े व तसर्रुफ़ में होता है और नज़री हुक्म में ऐन के साथ होता है। तमाम अरबाबे तरीक़त की दलील यही सुलूक है अलबत्ता मशायख़ को जो इख़्तेलाफ़ है वह इसमें है कि एक गरोह हुजूर को ग़ैबत पर मुक़द्दम रखता है और दूसरा गरोह ग़ैबत को हुजूर पर तरजीह देता है जैसा कि सुकर व सुहव में हमने बयान किया। लेकिन फ़र्क़ यह है कि सुहव सुकर सिफ़ाते बशरिया के बाक़ी रहने की निशानदेही करते हैं और ग़ैबत व हुजूर इन के फ़ना होने का पता देता हैं। लिहाज़ा मैदाने तहक़ीक़ में इसका बड़ा एजाज़ है और जो मशायख़ ग़ैबत को हुजूर पर मुक़द्दम रखते हैं उनमें हज़रत इब्ने अता, हुसैन बिन मंसूर, अबू बकर शिबली, पंदार हुसैन, अबू हमज़ा

बग़दादी और समनून मुहिब रहमहुमुल्लाह हैं।

अहले इराक़ की एक जमाअत कहती है कि राहे हक़में सबसे बड़ा हिजाब तू ख़ुद है जब तूने अपने आपको ग़ायब कर लिया तो तुझसे हस्ती को बर क़रार व साबित रखने वाली तमाम आफ़तें फ़ना हो जाती हैं। और ज़माना के क़ायदे बदल जाते हैं। मुरीदों के तमाम मुक़ामात तेरे लिये हिजाब तालिबों के तमाम अहवाल, तेरी आफ़तगाह बन जाते हैं। असरारे ज़माना नाबूद हो गये इरादा को क़ायम रखने वाली चीज़ें ज़लील हो जाती हैं। अपने वजूद और ग़ैरुल्लाह के वजूद को दखने से आखें जल जाती हैं और बशरी औसाफ़ अपनी जगह क़ुरबत की आग से ख़ुद बख़ुद नेस्त व नाबूद हो जाते हैं और ऐसी सूरत हो जाती है कि अल्लाह तआला ने इस ग़ैबत की हालत में तुझे आदम की पीठ से निकाला और अपना कलामे अजीज़ तुझे सुनाया फिर ख़िलअते तौहीद और मुशाहिदा के लिबास से तुझे सरफ़राज़ फ़रमाया। जब तक तू अपने से ग़ायब रहेगा बारगाहे हक़ में बे हिजाब हाज़िर रहेगा और जब तक अपनी सिफ़ात के साथ हाज़िर रहेगा तो कुरबते हक़ से ग़ायब रहेगा। तेरी हलाकत, तेरे बशरी सिफ़ात को हाज़िरी में है अल्लाह तआला के इरशाद का यही मतलब है कि-

यक़ीनन तुम हमारे हुजूर अकेले आये जिस तरह हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा फ़रमाया-

हज़रत महासबी हज़रत जुनैद बग़दादी, सुहेल बिन अब्दुल्लाह तसतरी, अबू हफ़स हद्दाद, अबू हमदून कस्सार, अबू मुहम्मद जरीरी, साहबे मज़हब हिज़रमी और मुहम्मद बिन हनीफ़ रहमहुमुल्लाह के अलावा एक और जमाअत का मज़हब यह है कि हुजूर ग़ैबत से मुक़द्दम है इसलिये कि तमाम ख़ूबियां हुजूर में हासिल होती हैं और अपने से ग़ैबत तो हुजूरे हक़ का रास्ता है जब हुजूरे हक़ हासिल हो गया तो पहुंचने का रास्ता तो आफ़त है लिहाज़ा जो शख़्स अपने से ग़ायब हो गया, यक़ीनन वह बारगाहे हक़ में हाज़िर हो गया। ग़ैबत का फ़ायदा तो हुजूर है बे हुजूर ग़ैबत दीवानगी और मग़लूबियत है मुनासिब यही है कि तारिके ग़फ़लत हो जाओ ताकि ग़ैबत का जो मक़सूद है यानी हुजूर वह हासिल हो जायें। जिस वक़्त मक़सूद हासिल हो जाता है उस वक़्त इल्लत साक़ित हो जाती है इसी मअ़ने में यह शेर है-

ग़ायब वह नहीं जो शहरों से ग़ायब है
बल्कि ग़ायब वह है जो मक़सूद व मुराद से ग़ायब है

वह हाज़िर नहीं जिसकी मुराद मौजूद न हो
बल्कि वह हाज़िर है जिसे ख़्वाहिशें कुछ न हों
यहां तक कि वह मुराद से मालामाल हो जाये

मतलब यह है कि जो बस्ती व शहर से ग़ायब है वह दरअसल ग़ायब नहीं है बल्कि वह ग़ायब है जो अपने हर इरादा से ग़ायब हो हत्ता कि हक़ तआला का इरादा ही इसका इरादा बन जाये और जिसमें चीज़ों का इरादा न हो उसे हाज़िर नहीं कहते बल्कि हाज़िर वह है जिसके दिल में रानाई और दिलपसंदी न हो ताकि इसमें दुनिया व आख़ेरत की फ़िक्र न रहे और ख़्वाहिश से उसे राहत न हो। इसी मअ़ने में एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं-

जिसका हाल यह न हो कि वह अपने से और नफ़्सानी ख़्वाहिशों से इंसान और अज़ीज़ों से फ़ानी हो वह गोया नफ़्सानी ख़्वाहिशों के हुसूल और नेक अंजाम की तमन्ना में मरातिब के दर्मियान ठहरा हुआ है।

मशहूर वाक़िया है कि हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि का एक मुरीद हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि की ज़ियारत के इरादे से गया। दरवाज़े पर पहुंचकर उसने दस्तक दी। हज़रत बा यज़ीद ने पूछा कौन है? क्या चाहते हो? जवाब दिया कि हज़रत बा यज़ीद की ज़ियारत को आया हूं। पूछा बा यज़ीद कौन है? कहां है वह क्या है मैं मुद्दत से बा यज़ीद को तलाश कर रहा हूं मगर वह नहीं मिलता। जब मुरीद ने वापस होकर हज़रत जुन्नून मिसरी से यह हाल बयान किया तो उन्होंने फ़रमाया-

मेरा भाई बा यज़ीद बुस्तामी तो ख़ुदा की तरफ़ जाने वालों में जा मिला।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के पास आकर एक शख़्स ने दरख़्वास्त की कि थोड़ी देर मेरे पास रहकर कुछ बातें कर लीजिये मुझे आपसे कुछ अर्ज़ करना है।

आपने फ़रमाया ऐ जवां मर्द तुम मुझसे वह चाहते हो जिसे अर्सा से मैं ख़ुद चाहता हूं बरसों से इसी तमन्ना में हूं कि एक लम्हा के लिये अपने आप में मौजूद हो जाऊं लेकिन अब तक ऐसा वक़्त नहीं आया। फिर हमें बताओ मैं तुम्हारे साथ कैसे रह सकता हूं? इससे मालूम हुआ कि ग़ैबत में हिजाब की वहशत है और हुज़ूर में मुशाहिदे की राहत। तमाम अहवाल में मुशाहेदा हिजाब की मानिंद नहीं होता। इसी मअ़ने में हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं-

मुहब्बत के चांद से हिजरत के बादल नापैद हो गये और ग़ैबत की तारीकी से सुबह का तड़का चमक उठा।

ग़ैबत व हुजूर के फ़र्क़ में मशायख़ के बकसरत लतायफ़, हालात और ज़ाहिरी अक़्वाल हैं जिनका मफ़हूम बाहम क़रीब क़रीब है। यानी बारगाहे हक़ का हुज़ूर और अपने से ग़ैबत बराबर है। क्योंकि अपने से ग़ैबत का मफ़हूम हुज़ूर है और जो अपने से ग़ायब नहीं है वह बारगाहे हक़ में हाज़िर नहीं है और जो हाज़िर है वह ग़ायब है। जिस तरह हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने नुज़ूले बला के वक़्त फ़रयाद में अपने आपको न देखा बल्कि वह इस हाल में अपने आपसे ग़ायब थे इसलिये हक़ तआला ने इनकी ऐन फ़रियाद को सब्र से जुदा नहीं होने दिया। उन्होंने फ़रियाद की कि ऐ ख़ुदा मैं तकलीफ़ में हूं तू ही बहुत मेहरबान है हक़ तआला ने फ़रमाया-

(अय्यूब साबिर था) लिहाज़ा हमने उसकी फ़रियाद सुनी और उसकी हर तकलीफ़ को दूर कर दिया।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मुझ पर ऐसा ज़माना भी गुज़रा है कि तमाम ज़मीन व आसमान वाले मेरी परेशानी पर रोते थे। फिर ऐसा ज़माना भी आया है कि मैं उनकी ग़ैबत पर रोता था। अब ऐसा ज़माना आ गया है कि मुझे न अपनी ख़बर है न ज़मीन व आसमान की। यह हुज़ूरे हक़ के मुताल्लिक़ बेहतरीन इशारा है।

यह हैं ग़ैबत व हुज़ूर के मअ़ने जिसे मैंने इख़्तेसार के साथ बयान कर दिया ताकि ख़फ़ीफ़ियों का मसलक मालूम हो जाये कि ग़ैबत व हुज़ूर से उनकी क्या मुराद है।

१० फ़िरक़ए सियारिया

सियारी फ़िरक़ा के पेशवा, हज़रत अबुल अब्बास सियारी रहमतुल्लाह अलैहि हैं जो मरू के इमाम तमाम उलूम के आलिम और हज़रत अबू बक्र वासती के मुसाहिब थे। शहरे निसा और मरू में इनके मुरीदीन बकसरत हैं। तसव्वुफ़ का कोई मज़हब अपने हाल पर बाक़ी नहीं है लेकिन इनका मसलक अब भी अपने हाल पर बाक़ी है क्योंकि यह दोनों इस मज़हब के रहनुमाओं से कभी ख़ाली न रहे। इनके मुरीदीन व तलामिज़ा ने इनके मज़हब की हमेशा हिफ़ाज़त की है और उन्होंने इनके लिये बकसरत रसायल लिखे हैं।

मैंने शहर मरव में इनके कुछ ख़ुतूत व रसायल देखे हैं जो निहायत अजीब

व उम्दा हैं सारी मज़हब की ख़ुसूसियत जमा व तफ़रेक़ा है जो तमाम अहले इल्म के दर्मियान मुस्तअ़मल है हर गरोह ने अपनी मुराद और अपनी इबारतों के समझाने में इन दोनों कलिमात का इस्तेमाल किया है लेकिन हर एक की वज़ाहत एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ रही है चुनांचे मज़हबे मुहासबी में जमअ व तफ़रेक़ा से मुराद, किसी चीज़ के शुमार में जमा और इफ़्तेराक़ लिया गया है और नहवी और असहाबे लुग़त इनसे मुराद नामों का जमा करना और उनका फ़र्क़ लेते हैं। हज़रात फ़ुक़हा ने नस का जमा करना और उनकी सिफ़ात को जुदा करना या नस का जमा करना और क़यास को जुदा करना मुराद लिया है और उसूले कलाम वालों ने सिफ़ाते ज़ात का जमा और सिफ़ात फ़ेअ़्ल का तफ़रेक़ा मुराद लिया है लेकिन मशायख़े तरीक़त के नज़दीक इनमें से कोई मुराद नहीं है बल्कि उनकी मुराद वह है जिसे हम बयान कर रहे हैं।

जमअ व तफ़रेक़ा

अल्लाह तआला ने एक जगह अपनी दावत में तमाम मख़्लूक़ को जमा करके फ़रमाया-

अल्लाह तआला सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है।

दूसरी जगह हिदायते हक़ में इन्हें तफ़रेक़ा के साथ बयान किया कि-

अल्लाह जिसे चाहता है सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत फ़रमाता है-

दावत में तो अल्लाह तआला ने सब को जमा करके पुकारा और इज़हारे मशीयत में एक गरोह को हुक्म से ख़ारिज करके बयान किया और बाक़ी को हुक्म में जमा कर दिया गोया एक गरोह को तो मरदूद व रुसवा करके फ़र्क़ कर दिया और इन्हें जुदा कर दिया। और कुछ को तौफ़ीक़ देकर मक़बूल बनाया और कुछ को मुमानेअत के ज़रिये जमा करके निकाला। एक गरोह को असमत दी और एक गरोह को आफ़त की तरफ़ मीलान दिया। लिहाज़ा इस मअ़ने में हक़ीक़त व असरार और हक़ तआला की मालूम व मुराद में लफ़्ज़ जमा है और अमा व नही के इज़हार में लफ़्ज़ तफ़रेक़ा है चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि अपने फ़रज़ंद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को क़ुरबान कर दें हालांकि मशीयते इलाही यह थी कि ऐसा न हो। इबलीस को हुक्म दिया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करे और मशीयते इलाही यह थी कि वह सज्दा न करे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि दाना गंदुम न खाना मगर मशीयते इलाही यह थी कि वह खायें। इस क़िस्म की बकसरत मिसालें मिलती हैं।

जमा व तफ़रेका की तारीफ़

तसव्वुफ़ में जमा व तफ़रेका की तारीफ़ यह है कि -

जमा वह है जो अपने औसाफ़ के साथ जमा हो और तफ़रेका वह है जो अपने अफ़आल से जुदा हो इससे मुराद, मुकम्मल इरादा का इंकताअ और इरादए इलाही के इसबात में ख़ल्क़ के तसर्रुफ़ का मुकम्मल तर्क है। इस तारीफ़ पर मअतज़ला के सिवा तमाम अहले सुन्नत व अल जमाअत और तमाम मशायख़ का इजमाअ है। अलबत्ता इनके इस्तेमाल में मशायख़ का इख़्तेलाफ़ है चुनांचे एक गरोह इन दोनों कलिमात को तौहीद पर महमूल करता है और कहता है कि जमा के दो दर्जे हैं एक हक़ तआला के औसाफ़ में दूसरा बंदों के औसाफ़ में। हक़ तआला के औसाफ़ से जिसका ताल्लुक़ है वह तौहीद का भेद है जिस पर बंदा का कोई इख़्तेयार नहीं है और जो बंदों के औसाफ़ में है उससे मुराद, तौहीद में सिदक़े अक़ीदत और सेहते अज़ीमत है। यह क़ौल हज़रत अबू अली अलैहिर्रहमा का है। दूसरा गरोह हक़ तआला के औसाफ़ पर महमूल करता है। चुनांचे वह कहता है जमा हक़ तआला की सिफ़त है और तफ़रेका हक़ तआला का फ़ेअल। हक़ तआला के सिफ़त व फ़ेअल में बंदे को कोई इख़्तेयार नहीं है। इसलिये कि हक़ तआला की अलूहियत में कोई शाय मुतनाज़ा नहीं है जमअ ज़ात व सिफ़ात इसी के लिये है क्योंकि जमअ असल में बराबरी का मक़तज़ी है हक़ तआला की ज़ात व सिफ़ात में कोई इसका मसावी नहीं और इसकी जुदाई में ख़लक़ की तफ़सील व इबारत मुजतमअ नहीं है। इसके मअ़नी यह हैं कि अल्लाह तआला के सिफ़ात क़दीम में और वह इसी के साथ मुख़्तस हैं। और इनका क़ियाम भी इसी के साथ है और इनकी ख़ुसूसियात भी इसी से वाबस्ता हैं चूंकि हक़ तआला की ज़ात व सिफ़ात में दोई नहीं है। और न इसकी वहदानियत में फ़र्क़ व अदद रवा है इस लिहाज़ से जमा का इस्तेमाल हक़ तआला के सिवा किसी और के लिये जायज़ न होगा।

लेकिन हुक्म में तफ़रेका अल्लाह तआला के अफ़आल से मुताल्लिक़ है क्योंकि तमाम अहकाम मुतफ़र्रिक़ हैं किसी के लिये वजूद का हुक्म है और किसी के लिये अदम का। इस लिहाज़ से जमा का इस्तेमाल हो इसमें एक को फ़ना का हुक्म है और दूसरे को बक़ा का हुक्म।

एक गरोह वह है जो तफ़रेका को इल्मे इलाही पर महमूल करता है चुनांचे वह कहता है कि-

तौहीद का इल्म जमा, और अहकाम का इल्म तफ़रेका है।

इस लिहाज़ से इल्मे उसूल जमा और इल्मे फ़राअ़ तफ़रेका होंगे।

एक बुज़ुर्ग का क़ौल यह है कि-

जिस पर अहले इल्म का इज्मा हो वह जमा और जिसमें इनका इख़्तेलाफ़ हो वह तफ़रेका है।

लेकिन जम्हूर मुहक़्क़ेक़ीन तसव्वुफ़ की इबारात व इशारात में तफ़रेका से मकासिब (बंदे के इख़्तियारी आमाल) और जमा से मुवाहिब (मुजाहिदे और मुशाहेदे) मुराद लिये हैं लिहाज़ा जो बंदा मुजाहिदे के ज़रिये वासिल वहक़ हो वह तफ़रेका है और हक़ तआला की तरफ़ से बंदा पर जो खास इनायत व हिदायत हो वह जमा है और बंदे की इज़्ज़त व तकरीम इसमें है कि वह अपने वजूदी अफ़आल और जमाले हक़ के लिये मुजाहिदे की कुदरत में अपने अफ़आल की आफ़तों से महफ़ूज़ रहे। और अपने अफ़आल को बा अताए फ़ज़्ले इलाही जानकर मुशाहेदे को हिदायते इलाही के दामन में मनफ़ी देखे लिहाज़ा ऐसा बंदा अपने हर इक़ामत में हक़ तआला के साथ क़ायम होकर इन कायनात और औसाफ़ में इसका वकील होगा। और इसके तमाम अफ़आल की निसबत इसी की तरफ़ होगी यहां तक कि वह अपने कसब की निसबत से महफ़ूज़ हो जायेगा जैसा कि हक़ तआला ने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिये बवस्ता हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हदीसे कुदसी में फ़रमाया-

मेरा बंदा नवाफ़िल के ज़रिये मेरी कुरबत का हमेशा ख़्वाहां रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं फिर जब मैं अपने किसी बंदे को अपना महबूब बना लेता हूं तो मैं उसके कान आंख हाथ और ज़ुबान हो जाता हूं वह मुझसे सुनता है मुझसे ही देखता, मुझसे ही बोलता और मुझसे पकड़ता है।

मतलब यह है कि हमारा बंदा मुजाहिदे के ज़रिये जब हमारा मुकर्रब होकर महबूब हो जाता है तो हम उसके वजूद को इससे फ़ना कर देते हैं और इसके अफ़आल की निसबत को इससे उठा लेते हैं हत्ता कि वह हमारे ज़रिये ही सुनता है जो वह सुने और हमारे ही ज़रिये बोलता है जब वह बोले और हमारे ही ज़रिये देखता है जब वह देखे। और हमारे ज़रिये पकड़ता है जब वह पकड़े। गोया वह हमारे ज़िक्र में ऐसा मुस्तग़रक़ हो जाता है कि वह ज़िक्र का मग़लूब बन जाता है और इसके ज़िक्र में इसका कसब मफ़कूद हो जाता है और हमारा ज़िक्र

इसके ज़िक्र का सुलतान बन जाता है और इसके ज़िक्र से आदमियत की निसबत जुदा हो जाती है। लिहाज़ा इसका ज़िक्र हमारा ही ज़िक्र होगा हत्ता कि बहालते ग़लबा वह इसी के साथ मौसूफ़ होगा। चुनांचे हज़रत बा यज़ीद बुसतामी ग़ल्बाए हाल में नारा लगाते हैं कि यानी पाकी है मुझे कितनी ही बड़ी मेरी शान यह जो कुछ फ़रमाया हक़ तआला की गुफ़तार से था और जो कहा हक़ कहा।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया--

हक़ तआला हज़रत उमर की ज़ुबान में बोलता है इसकी हक़ीक़त इस तरह पर है कि आदमियत पर जब हक़ तआला के ग़ल्बा का ज़ुहूर होता है तो अल्लाह तआला उसे उसकी हस्ती से निकाल देता है यहां तक कि उसकी तमाम बातें हक़ तआला ही की फ़रमूदा होती हैं। इस इस्तेहाला के बावजूद कि हक़ तआला किसी में हलूल नहीं करता और न किसी मख़लूक़ या मसनूअ में मुमतज़िज व मुत्तहिद हो जाता है और न किसी चीज़ में वह पैवस्त होता है।

अलबत्ता यह जायज़ है कि हक़ तआला की मुहब्बत बंदे के दिल पर ग़ालिब हो जाये और इसके ग़ल्बा की ज़्यादती में इसकी अक़्ल व तबअ इसकी बर्दाश्त से आजिज़ आ जाये और इसका अम्र इसके कसब से साक़ित हो जाये। इस दर्जा में इस हालत का नाम जमा है जिस तरह कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहब्बते इलाही में ऐसे मुस्तग़रक़ व मग़लूब थे कि जो फ़ेअल आपसे रूनुमा होता अल्लाह तआला इस फ़ेअल की निसबत को आपसे दूर फ़रमाता और फ़रमाता कि वह फ़ेअल मेरा था आपका न था। हर चंद कि इस फ़ेअल का ज़ुहूर व सुदूर आप में हुआ चुनांचे इरशादे हक़ है-

ऐ महबूब वह मुश्ते ख़ाक जो आपने दुश्मनों पर फेंकी थी वह आपने नहीं फेंकी बल्कि हमने फेंकी थी।

इसी क़िस्म का फ़ेअल, जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से सादिर हुआ तो हक़ तआला ने इस फ़ेअल की निसबत इनकी तरफ़ करते हुए फ़रमाया-

हज़रत दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया। यह हालत तफ़रेक़ा की थी अल्लाह तआला ने दोनों नबियों के अफ़आल में फ़र्क़ व इम्तेयाज़ रखा। एक ने फ़ेअल की निसबत उनकी तरफ़ ही रखी और यह निसबत फ़ेअल महल्ले आफ़त व हवादिस है और दूसरे के फ़ेअल की निसबत अपनी तरफ़ फ़रमाई। चूंकि अल्लाह तआला क़दीम है लिहाज़ा इसकी तरफ़ निसबते फ़ेअल, आफ़त व हवादिस से पाक है बिना बरीं अगर आदमी से ऐसा फ़ेअल सरज़द हो जो

आदमी के अफ़आल की जिन्स से और उसके कबील से न हो तो यकीनन इसके फ़ेअल का फ़ायल हक़ तआला है और एजाज़ व करामत सब कुछ इसके साथ शामिल है। लिहाज़ा तमाम आदी अफ़आल तफ़रेक़ा हैं और तमाम नाकिज़े आदत फ़ेअल जमा हैं क्योंकि एक रात में काब कौसैन पहुंचना फ़ेअल आदी नहीं है और यह बजुज़ फ़ेअले इलाही मुमकिन नहीं। इसी तरह ग़ायत दर्जा सच्ची और दुरुस्त बात कहना फ़ेअले आदी नहीं, यह भी फ़ेअले इलाही के सिवा मुमकिन नहीं और आग से न जलना भी फ़ेअले आदी नहीं यह भी फ़ेअले इलाही के बग़ैर मुमकिन नहीं। और ग़ैबूबियत में दुरुस्त व सहीह बात कहना भी फ़ेअल आदी नहीं यह भी इसके फ़ेअल के बग़ैर मुमकिन नहीं। गर्ज़ कि अल्लाह तआला ने अंबिया व औलिया को यह मोजिज़ात व करामात अता फ़रमाकर इनके अफ़आल को अपनी तरफ़ मंसूब फ़रमाया और इन अफ़आल को अपना ही फ़ेअल बताया। जबकि महबूबों का फ़ेअल इसी का फ़ेअल करार पाया तो इनकी बैअत, ख़ुदा की बैअत और इनकी इताअत ख़ुदा की इताअत हुई चुनांचे हक़ तआला का इरशाद है-

यकीनन जिन्होंने आपके हाथ पर बैअत की उन्होंने अल्लाह से बैअत की। जिसने रसूल की इताअत की बिलाशुबह उसने अल्लाह की इताअत की।

खुलासा यह कि महबूबाने ख़ुदा औलिया अल्लाह असरारे इलाही से तो मजतमअ और मामलात व इज़हार से मुफ़तरक़ हैं। यहां तक कि इज्तेमअ के साथ दोस्ती व मुहब्बत के असरार मुस्तहकम हैं और इफ़तराक़ के साथ बंदगी की इक़ामत का इज़हार सहीह व दुरुस्त है।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं-

मेरा बाति मुतहक्किक़ तो मेरी ज़ुबान ने तेरी मुनाजात की लिहाज़ा हम कुछ मानी में जमा और कुछ मानी में मुफ़तरक़ हैं।

इस शेर में इज्तेमा असरार को जमा और ज़ुबान की मुनाजात को तफ़रेक़ा कहा गया है इसके बाद जमा व तफ़रेक़ा का अपने वजूद में निशानी बताई और इस क़ायदा को अपने पर महमूल किया। यह बहुत लतीफ़ बात है।

जमा व तफ़रेक़ा के मअ़ने में मशायख़ का इख़्तेलाफ़

अब इस जगह एक इख़्तेलाफ़ का बयान बाक़ी है जो हमारे और मशायख़ के इस गरोह के दर्मियान है जो यह कहता है कि जमा का इज़हार तफ़रेक़ा की नफ़ी है इसलिये कि यह दोनों ज़िदें हैं क्योंकि जब हिदायत का ग़ल्बा और

इस्तीला होता है तो बंदे से कसब व मुजाहिदे का इख़्तेयार जाता रहता है और यह तातीले महज़ है इसका जवाब हम यह देंगे कि यह बात ख़ुद तुम्हारे अक़ीदे ही के ख़िलाफ़ है इसलिये कि जब कि मामला की क़ुदरत और कसब व मुजाहिदे की ताक़त मौजूद रहती है उस वक़्त तक बंदे से वह हरगिज़ साक़ित नहीं होती। इसी लिये जमा तिफ़रक़ा से जुदा नहीं है जैसे आफ़तब से नूर, जौहर से अर्ज़ और मौसूफ़ से सिफ़त जुदा नहीं की जा सकती। इसी तरह हिदायत से मुजाहिदा और शरीयत से तरीक़त व हक़ीक़त और तलब से वजदान भी जुदा नहीं। अलबत्ता यह मुजाहिदा कभी मुक़द्दम होता है और कभी मोअख़्ख़र। लेकिन मुजाहिदा जहां मुक़द्दम हो उस पर मुशक़्क़त ज़्यादा होती है क्योंकि वह ग़ैबत में होता है और मुजाहिदा जहां मोअख़्ख़र हो उस पर रंज व कुलफ़त नहीं होती क्योंकि वह हुज़ूर में होता है और जो आमाल के मशरब व मज़हब की नफ़ी करता है वह एन अमल की नफ़ी करता है यह बहुत बड़ी ग़लती है अलबत्ता यह जायज़ है कि बंदा ऐसे दर्जा पर फ़ायज़ हो जाये जहां उसे अपने अफ़आल मायूब नज़र आने लगें जबकि वह अपने औसाफ़े महमूदा को भी ऐब की नज़र से नाक़िस देखता है तो ला मुहाला वह औसाफ़े कबीहा मजमूमा को तो बदर्जए ऊला ऐबदार देखेगा।

मैंने यह मअ़ने इसलिये बयान किये हैं कि मैंने एक जाहिल क़ौम को इस ग़लती में आलूदा पाया है। चूंकि वह बहालते बेगानगी हैं इसलिये कहते हैं कि याफ़त के लिये किसी रियाज़त की हाजत नहीं। और हमारे अफ़आल व ताआत मायूब और मुजाहिदात नाक़िस हैं इसलिये इन्हें करने से न करना बेहतर है मैं उनसे कहता हूं कि हमारे अफ़आल बिल इत्तेफ़ाक़ हैं और हमारे हर क़िस्म के फ़ेअ़ल महले इल्लत और मनबअ शर व आफ़त हैं बई हमा न करने को भी फ़ेअ़ल ही कहा जायेगा जब कि दोनों फ़ेअ़ल ही हुए और फ़ेअ़ल महले इल्लत हुए तो किस वजह में न करने को करने से बेहतर जानते हो? यह तो ज़ाहिरी बदनसीबी व नुक़्सान और वाज़ेह ऐब है लिहाज़ा यह कुफ़्र व ईमान के दर्मियान बेहतरीन फ़र्क़ है। क्योंकि मोमिन व काफ़िर दोनों मुत्तफ़िक़ हैं कि इनके अफ़आल महले इल्लत हैं मगर मोमिन बहुक्मे फ़रमाने ख़ुदा करने को न करने से ज़्यादा बेहतर जानता है और काफ़िर बहुक्म तातील न करने को करने से ज़्यादा बेहतर समझता है लिहाज़ा जमा यह है कि आफ़त के देखने में आफ़ते तफ़रेक़ा और हुक्म तफ़रेक़ा न हो। और तफ़रेक़ा यह है कि जमा के हिजाब में

तफ़रेक़ा को जमा जाने।

हज़रत मुज़ैयन कबीर इस मअ़ने में फ़रमाते हैं -

बंदे के लिये हक़ तआला की ख़ुसूसियत जमा हैं और बंदे की बंदगी उसके लिये तफ़रक़ा। यह दोनों बंदे से जुदा नहीं हैं इसलिये ख़ुसूसियत की अलामत बंदगी की हिफ़ाज़त है। मामला में जब मुद्दई मामला के साथ क़ायम न होगा तो वह अपने दावे में झूटा होगा। अलबत्ता यह जायज़ है कि हुक्मे इलाही बजा लाने और मुजाहिदे का हक़ अदा करने में जो तकलीफ़ व मुशक़्क़त होती है इस का बोझ बंदे पर न पड़े। लेकिन यह किसी तरह जायज़ नहीं है कि ऐने जमा में बग़ैर वाज़ेह उज़्र के कोई हुक्मे शरीअत या मुजाहिदा जो शरीअत में आम हो बंदे से वह ऐने हुक्म उठ जाये। इस मसले को कुछ वज़ाहत से बयान करता हूं।

वाज़ेह रहना चाहिये कि जमा की दो क़िस्में हैं एक जमा सलामत और दूसरी जमा तकसीर। जमा सलामत यह है कि हक़ तआला बहालते ग़ल्बा कुव्वत, वजद शिद्दत और शौक़ को ज़ाहिर फ़रमाकर बंदे की हिफ़ाज़त फ़रमाये और अपना हुक्म ज़ाहिर तौर पर बंदे पर जारी करके उसे बजा लाने में उसकी निगहबानी करे और उसे मुजाहिदे से आरास्ता बना दे चुनांचे हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी अबू हफ़्स हद्दाद, अबुल अब्बास सियारी मरूरी साहबे मज़हबे हाज़ा, बायज़ीद बुसतामी, अबू बकर शिबली, अबुल हसन हिज़रमी और मशायख़ की एक जमाअत क़ुद्देसे सिर्रहुम हमेशा मग़लूबलहाल रहते हैं। बईं हमा जब भी नमाज़ का वक़्त आता तो वह अपने हाल पर लौट आते हैं और जब नमाज़ अदा कर चुकते तो फिर मग़लूबुल हाल हो जाते थे। इसलिये कि जब तक तुम महले तफ़रेक़ा में होगे तो तुम होगे और ख़ुदा का हुक्म बजा लाना तुम पर लाज़िम होगा और जब हक़ तआला तुम्हें जज़्ब करके मग़लूबुल हाल बना देगा तो बेहतर है कि हक़ तआला अपने हुक्म में दो बातों में तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा। एक यह कि बंदगी की अलामत तुम से न उठे दूसरे यह कि वादे के हुक्म पर क़ायम रखे। क्योंकि इसका इरशाद है कि मैं कभी भी शरीअते मुहम्मदी को मंसूख़ न करूंगा।

और जमा तकसीर यह है कि बंदा हुक्म में दीवाना और मदहोश हो जाये। और इसका हुक्म पागलों की मानिंद बन जाये। ऐसा शख़्स मामला में माज़ूर होता है और पहला शख़्स मशकूर। और जो मशकूर होता है इसके हालात दूसरे के मुक़ाबले में ज़्यादा क़वी होते हैं क्योंकि दूसरा हाल हाल में माज़ूर है।

याद रखना चाहिये कि जमा के लिये न कोई मखसूस मुकाम है और न कोई एक हाल। क्योंकि जमा अपने मतलूब के मअने में हिम्मत का जमा करना है। चुनांचे किसी गरोह के लिये इस मअने का कश्फ़ मकामात में होता है और किसी गरोह का कश्फ़ अहवाल में होता है और दोनों वक्तों में साहबे जमा की मुराद नफ़ी मुराद से हासिल होती है इसलिये कि तफ़रका जुदाई है और जमा वसल व मिलाप। और यह कौल तमाम अकवाल में सहीह व दुरुस्त है जैसा कि हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की हिम्मत, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ जमा थी क्योंकि इन्हें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था इसी तरह मजनूं की हिम्मत लैला के साथ जमा थी क्योंकि उसे लैला के सिवा कुछ नज़र आता ही न था। उसे सारे जहां में हर चीज़ के अंदर लैला नज़र आती थी इस क़िस्म की बेशुमार मिसालें हैं।

हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि एक दिन हुजरे में तशरीफ़ फ़रमा थे किसी ने दस्तक दी और पूछा क्या बा यज़ीद हुजरे में हैं? उन्होंने फ़रमाया बजुज़ हक़ के हुजरे में कोई दूसरा नहीं है।

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि एक दरवेश मक्का मुकर्रमा आया और वह एक साल तक खानए काबा के रूबरू इस तरह बैठा रहा कि उसने कुछ खाया न पिया, न सोया न रफ़अ हाजत को कहीं गया। उसकी तमाम हिम्मतें खाना काबा के मुशाहिदे ही में मुजतमअ रहीं। उसने अपने आपको ख़ाना काबा से इस तरह मंसूब कर दिया कि उसका दीदार ही उसके जिस्म की ग़िज़ा और उसके रूह की तवानाई बन गयी।

इन हक़ायक़ की असल यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत के खमीर को जो कि जौहर है हिस्सा हिस्सा करके इसका एक एक हिस्सा अपने हर महबूब के लिये सकी तक़दीर व लियाक़त के मुवाफ़िक़ मख़सूस कर दिया है। उस वक़्त उससे इंसानी जोश, तबइ लिबास मिज़ाजी पर्दे और रूह के हिजाब उठ जाते हैं यहां तक कि वह जुज़ व मुहब्बत जो उसे अता हुआ है अपनी सिफ़त पर उसे ढाल लेता है और वह मुहब्बत का पैकर बन जाता है। उसकी तमाम हरकतें और मुशाहिदे उसी से मरबूत हो जाते हैं इसी बिना पर अरबाबे मानी व असहाबे ज़ुबान इस कैफ़ियत को जमा के नाम से मौसूम करते हैं इसी मअने में हज़रत हुसैन बिन मंसूर फ़रमाते हैं कि-

तर्जमा : यानी हाज़िर हूं ऐ मेरे सरदार मेरे मौला हाज़िर हूं हाज़िर हूं, ऐ मेरे

मक़सद व माउ़ना। ऐ ज़ात, तू मेरे वजूद का ऐन है ऐ मुन्तहा तू मेरी हिम्मतों का मुन्तहा है ऐ मुझे गोयाई देने वाले मेरा कलाम मेरा इशारा और मेरा कहना तू ही है ऐ मेरे कुल के कुल! ऐ मेरे कान और मेरी आंख ऐ मेरे तमाम बदन और मेरे कल का आज़ा व अजज़ा सब तुझसे ही हैं।

लिहाज़ा जो अपनी सिफ़ात में मुस्तआर होता है वह अपनी हस्ती में आर और लायक़ शरमसार होता है और दोनों जहान में उसकी तवज्जोह कुफ़्र होती है और मौजूदात में उसकी हिम्मत मोजिबे ज़िल्लत व रुसवाई होती है।

अरबाबे ज़ुबान का एक गरोह अपनी इबारत व बयान को मुश्किल व मुहैयरुल क़ौल बनाने के लिय जमा की जमा बोल जाते हैं अगरचे यह कलिमा इबारत में तो अच्छा है मगर मअ़ने में यही बेहतर है कि जमा की जमा न बोला जाये। इसलिये कि अव्वलन तफ़रेक़ा हो तो उस पर जमा दुरुस्त हो सकती है और जबकि जमा ख़ुद जमा है तो तफ़रेक़ा कैसे होगा? और जमा को अपने हाल से कैसे गिराया जायेगा। इस तरह यह इबारत यानी जमउल जमा तोहमत की जगह बनायेगी। इसलिये कि जो जमा हो जाये वह फ़ौक़ व तहत में अपने से बाहर नहीं देख सकता। तुमने नहीं देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शबे मेराज सारा जहान दिखाया गया मगर आपने किसी चीज़ की तरफ़ इल्तेफ़ात न फ़रमाया क्योंकि आप जमा के साथ जमा थे और मुजतमअ को मुशाहिदा की तफ़रीक़ जुदा नहीं कर सकती। और वह तफ़रेक़ा को नहीं देखता इसी लिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

महबूब की आंख न इधर उधर फिरी और न हद से गुज़री।

मैंने इस मअ़ने में एक किताब नाम किताबुल बयान लेअहलिलअयान शुरू में लिख दी है। और किताब बहरुल क़ुलूब में जमा कके बयान में चंद वाज़ेह फ़स्लें तहरीर कर दी हैं इस जगह इज़्हारे हक़ीक़त के लिये इतना ही काफ़ी है। सियारी मज़हब, तसव्वुफ़ में मक़बूल व मुहक्क़िक़ है। अब मैं उन नाम निहाद सूफ़ियों की तरफ़ मुतवज्जोह होता हूं जो मुलहिदीन का गरोह है। और उनकी इबारतों को बयान करता हूं जिनको फैलाकर वह ख़ुद ज़लील व ख़्वार हुए हैं और अपनी इज़्ज़त गंवाई है। ज़रूरी है कि उनकी ग़लतियां ज़ाहिर हो जायें और साहबे इरादत उनके झूटे दावों और उनके मकर व फ़रेब से महफ़ूज़ हो जायें और ख़ुद को उनसे बचायें।

११ मुलहिदों के हलूली फ़िरके

हलूलियों के दो मरदूद गरोह हैं जो सूफ़िया के साथ मुहब्बत का दम भरते हैं मगर हक़ीक़त में वह अपनी गुमराही के अंदर एक दूसरे से बढ़ कर हैं। अल्लाह तआला इन पर रहम फ़रमायें।

अब हक़ के बाद गुमराही के सिवा कुछ नहीं तुम कहां भटक रहे हो।

एक मरदूद गरोह अपना पेशवा अबू हलमान दमिशक़ी को बताता है और उनकी तरफ़ ऐसी रिवायतें मंसूब करता है कि जो उनके बर ख़िलाफ़ हैं जिनको मशायख़ अपनी किताबों में उनसे मंकूल लिख चुके हैं और मशायख़ उनको अरबाबे विलायत में से जानते हैं लेकिन मुलहिद व बेदीन गरोह उनकी तरफ़ हलूल व इम्तेज़ाज और नस्ख़े अरवाह की बातें मंसूब करते हैं मैंने मुतक़द्दमीन की किताबों में उनके ऊपर तानों को पढ़ा है और उलमा उसूल भी उनके साथ इसी क़िस्म का बरताव करते हैं सहीह हक़ीक़ते हाल को अल्लाह ही बेहतर जानता है।

और दूसरा मरदूद गरोह वह है जो फ़ारस की तरफ़ निसबत करता है।

और दावा करता है कि यह हज़रत हुसैन बिन मंसूर का मज़हब है हालांकि इन मुलहिदों के सिवा, हज़रत हुसैन बिन मंसूर के असहाब व तलामिज़ा में से किसी का भी यह मज़हब नहीं है। मैंने अबू जाफ़र संदलानी को देखा है जो चार हज़ार लोगों के साथ इराक़ में फैला हुआ है। और अपने आपको हल्लाजी कहलाता है। इनके अक़वाल के सबब फ़ारस पर तमाम बुजुर्ग लानत करते हैं हालांकि हज़रत हुसैन बिन मसूंर की मुसन्नफ़ात में बजुज़ तहक़ीक़ के किसी क़िस्म की लग़वियत नहीं है।

हुजूर सैयदना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि फ़ारस और अबू हिलमान कौन हैं? और उनके क्या अक़वाल हैं? लेकिन जो भी कोई ऐसी बात का क़ायल हो जो तौहीद व तहक़ीक़ के ख़िलाफ़ हो दीन में उसका कोई हिस्सा नहीं है, चूंकि दीन में जो चीज़ असल है वह तौहीद व तहक़ीक़ का इस्तेहकाम है जबकि वह इसमें ही मुस्तहकम नहीं तो तसव्वुफ़ जो कि दीन की फ़रअ और उसका निचोड़ है बदर्जा ऊला ख़लल पज़ीर होगा। इसलिये ज़ुहूरे करामात कश्फ़ और मुशाहिदा आयाते इलाहिया अहले तौहीद और दीनदारों के साथ मख़सूस है। इन बातिल अक़वाल के मानने वालों की रूह में तो सरासर ग़लतियां हैं (इन्हें दीन व विलायत से क्या इलाक़ा)

अब मैं क़ानूने सुन्नत के मुताबिक़ इनके अहकाम और मुलहिदों के अक़वाल व मुग़ालते और उनके शुबहात को बयान करता हूं ताकि तुम जान सको कि इसमें कितने फ़साद फैलाये गये हैं।

रुह की बहस

वाज़ेह रहना चाहिये कि रूह के वजूद का इल्म ज़रूरी है लेकिन इसकी हक़ीक़त व मारेफ़त में अक़्ल आजिज़ व लाचार है। उम्मते मुस्लेमा के हर आलिम व दानिशवर ने अपने अपने फ़हम व क़यास उसके मवाफ़िक़ कुछ न कुछ कहा है और कुफ़्फ़ार व मुलहिदीन ने भी इसमें ख़ामा फ़रसाई की है। जिस वक़्त कुफ़्फार कुरैश ने यहूदियों के सिखाने पर नसरीन हारिस को भेजा कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रूह की कैफ़ियत और उसकी माहियत दर्याफ़्त करे तो अल्लाह तआला ने पहले रूह का इसबात करते हुए फ़रमाया-

ऐ महबूब तुम से रूह के बारे में सवाल करते हैं-

इसके बाद अल्लाह तआला ने रूह की क़दामत की नफ़ी करते हुए फ़रमाया-

ऐ महबूब कह दो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

रूहें लश्कर पेवस्ता हैं जो इसकी मारेफ़त की कोशिश करता है वक़्त ज़ाया करता है और जो उसका इंकार करता है वह ग़लती पर है। इस क़िस्म के बकसरत दलायल हैं लेकिन इनमें रूह की माहियत पर बहस नहीं की गयी जो रूह के वजूद पर कैफ़ियत में तसर्रुफ़ के बग़ैर शाहिद है चुनांचे एक गरोह कहता है कि रूह एक ज़िन्दगी है जिससे बदन ज़िन्दा रहता है।

मुतकल्लेमीन की एक जमाअत का भी यही मज़हब है इस मअ़ने में रूह एक अर्ज़ है जिससे हुक्मे ख़ुदा के तहत ख़ानदान ज़िन्दा होता है और तालीफ़ व हरकत के अक़साम का इज्तेमा इसी से वाबस्ता है जिस तरह दीगर एराज़ होते हैं जो हर शख़्स को एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ ले जाते हैं।

एक और गरोह यह कहता है कि-

रूह ज़िन्दगी के सिवा एक शय है और ज़िन्दगी इसके बग़ैर नहीं पाई जाती और रूह जिस्म के बग़ैर नहीं पाई जाती और दोनों में कोई भी एक दूसरे के बग़ैर नहीं पाई जाती, जैसे अलम और उसका इल्म। क्योंकि यह दोनों जुदागाना शय हैं।

मतलब यह है कि हयात के सिवा रूह का वजूद अलाहदा है इसका वजूद बग़ैर हयात के मुमकिन नहीं है। जैसे कि ग़ैर मोतदिल शख़्स की रूह, जो एक दूसरे के बग़ैर नहीं पाई जाती मसलन अलम व तकलीफ़ और उसका इल्म, कि यह दोनों वजूद में तो मुख़्तलिफ़ हैं लेकिन वकूअ में एक दूसरे से जुदा नहीं है। इसी मअ़ने में उसे अरज़ी भी कहा जाता है जिस तरह कि हयात कहा जाता है।

जम्हूर मशायख़ और अक्सर अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब यह है कि रूह न ऐनी है न वसफ़ी अल्लाह तआला जब तक रूह को इंसानी क़ालिब में रखता है तो वह दस्तूर के मुताबिक़ क़ालिब में हयात पैदा करता है। और हयात इंसानी की सिफ़त है और वह उसी से ज़िन्दा रहता है और यह कि यह जिस्मे इंसानी में आरियतन है मुमकिन है कि वह इंसान से जुदा हो जाये और हयात के साथ ज़िन्दा रहे। जिस तरह कि नींद की हालत में रूह निकल जाती है मगर वह हयात के साथ ज़िन्दा रहती है और यह मुमकिन है कि जिस्म से रूह निकल जाने के वक़्त इसमें अक़्ल व इल्म बाक़ी रहे। इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों की शक्ल में होती हैं। यक़ीनन इससे यह लाज़िम आता है कि रूह ऐनी है नीज़ आप ने फ़रमाया रूहें सफ़ बस्ता लश्कर हैं ला मुहाला जुनूद बाक़ी होता है और अर्ज़ पर बक़ा जायज़ नहीं और न अर्ज़ अज़ खुद क़ायम हो सकता है।

हक़ीक़त यह है कि रूह एक जिस्मे लतीफ़ है जो अल्लाह तआला के हुक्म से आती जाती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि शबे मेराज में मैंने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, सफ़ीउल्लाह, यूसुफ़ सिद्दीक़, मूसा कलीमुल्लाह, हारुन हलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिमुस्सलाम को आसमानों पर देखा। बिला शुबह वह उनकी अरवाहे मुक़द्दसा थीं। अगर रूह शय अरज़ी होती तो अज़ खुद क़ायम न होती और उसे हसती वजूद की हालत में नहीं देखा जा सकता था। अगर वह अर्ज़ी होती तो इसके वजूद के लिये कोई मुक़ाम दरकार होता ताकि आरिज़ इस मुक़ाम में क़याम करे और वह मुक़ाम उसका जौहर होता और जवाहिर मुरक्कब व कसीफ़ होते हैं। मालूम हुआ कि रूह के लिये जिस्मे लतीफ़ है जबकि वह साहबे जिस्म है तो इसका देखना भी मुमकिन है ख़्वाह दिल की आंख से मुमकिन हो या सब्ज़ परिन्दों की शक्ल में या सफ़ बस्ता लश्करी की सूरत में जिनसे वह आयें औरजायें। इस पर हदीसें शाहिद हैं और हक़ तआला का

इरशाद है कि-

ऐ महबूब तुम कह दो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है।

ब बे दीनों के एक इख़्तेलाफ़ का बयान और बाक़ी है वह यह कि वह रूह को क़दीम कहते हैं और उसको पूजते हैं। अशिया का फ़ायले और उनका मुदब्बिर उसी को जानते हैं। वह अरवाह को आला कहते और उसे हमेशा मुदब्बिर समझते और एक से दूसरे की तरफ़ उलटने पलटने वाला जानते हैं (गोया वह आवा गवन और तनासुख के क़ायल हैं) उन लोगों ने अवाम में जिस क़द्र शुबहात फैलाए हैं किसी ने इतने नहीं फैलाए और नसारा का मज़हब इसी पर है। अगरचे उनकी ज़ाहिरी इबारतें इसके बर ख़िलाफ़ हैं और तमाम अहले हुनूद व चीन और माचीन के लोग भी इसी के क़ायल हैं। गरोहे शीआ, क़रामता और बातिनी लोग भी इसके क़ायल हैं और यह दोनों मरदूद बातिल गरोहे भी इन्हीं ख़्यालाते फ़ासिदा के क़ायल हैं। और हर गरोह उसे मुक़द्दम जानता और दलायल पेश करता है। हम उनके तमाम दावों में से सिर्फ़ लफ़्ज़ क़दम के बारे में सवाल करते हैं कि इससे तुम्हारी क्या मुराद है? क्या शय मुहदिस अपने वजूद में मुतक़द्दिम है या हमेशा क़दीम।

अगर वह यह कहें कि हमारी मुराद, मुहदिस, वजूद में मुतक़द्दिम है तो उस बुनियाद पर असल से इख़्तेलाफ़ ही जाता रहता है क्योंकि हम भी रूह को मुहदिस कहते हैं या यह कि उस शख़्स के वजूद पर रूह का वजूद मुतक़द्दिम है क्योंकि सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

अल्लाह तआला ने अजसाम की तख़लीक़ से दो लाख बरस पहले अरवाह को पैदा फ़रमाया।

चूंकि अरवाह का मुहदिस होना सहीह है तो ला मुहाला मुहदिस के साथ जो मुहदिस हो वह भी मुहदिस होता है। और दोनों एक जिन्स के होते हैं और अल्लाह तआला ने तख़लीक़ में एक को दूसरे के साथ मिलाया है और उस इत्तिसाल से अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से हयात पैदा फ़रमाई है। मतलब यह है कि तख़लीक़ में रूह एक जुदा जिन्स है और अजसाम एक जिन्स जुदागाना। अल्लाह तआला जब किसी को हयात अता फ़रमाता है तो रूह को जिस्म के साथ मिलने का हुक्म देता है और उससे ज़िन्दगानी हासिल हो जाती है अलबत्ता एक जिस्म से दूसरे जिस्म की तरफ़ रूह का मुन्तक़िल होना जायज़ नहीं है इसलिये कि जब एक जिस्म के लिये दो किस्म की हयात जायज़ नहीं।

अगर इस पर अहादीस नातिक़ होतीं और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने इरशाद में सादिक़ न होते अज़रुए अक़्ल सिर्फ़ माक़ूल रूह हयात के बग़ैर न होती और वह सिफ़ती होती ऐनी न होती।

अगर यह मुलहिदीन यह कहें कि क़दम से मुराद क़दीम व दवाम है तो हम दर्याफ़्त करते हैं कि यह अज़ ख़ुद क़ायम है या किसी दूसरे के साथ? अगर यह कहें कि क़ायम बेनफ़्सेहि है तो हम दर्याफ़्त करते हैं कि अल्लाह तआला इसका जानने वाला है या नहीं? अगर कहीं कि अल्लाह तआला इसका जानने वाला नहीं है तो दूसरा क़दीम साबित होता है और यह अक़्लन मुहाल है क्योंकि क़दीम महदूद नहीं होता। हालांकि एक ज़ात का वजूद दूसरे की ज़िद होती है और यह मुहाल है। अगर कहें कि अल्लाह तआला इसका जानने वाला है तो हम जवाब देंगे कि वह तो क़दीम है और मख़्लूक़ मुहदिस और यह मुहाल है कि मुहद्दिस का क़दीम के साथ इम्तेज़ाज हो या इत्तेहाद हलूल या मुहदिस क़दीम की जगह हो या क़दीम मुहदिस की जगह और जब एक दूसरे से मिलाया जायेगा तो दोनों एक हो जायेंगे और जुदाई मुहदिसात के सिवा जायज़ नहीं क्योंकि जिन्सें मुख़्तलिफ़ हैं।

और अगर यह कहें कि वह क़ायम बिनफ़्सेहि नहीं है और इसका क़ियाम ग़ैर के साथ है तो यह सूरत दो हाल से ख़ाली नहीं या तो वह सिफ़ती होगा या अरज़ी। कहें तो ला मुहाला उसे या तो किसी महल में कहेंगे या महल में। अगर उसे महल में कहें तो वह महल भी उसकी मानिंद होगा और क़दम का नाम हर एक से बातिल हो जायेगा और अगर यह महल में कहें तो यह मुहाल है जबकि अर्ज़ ख़ुद ही क़ायम बेनफ़्सिहि नहीं तो ला महल में किस तरह मुतसव्विर होगा और अगर कहें की सिफ़ते क़दीम है जैसे कि हलूल व तनासख वाले कहते हैं और वह सिफ़त को हक़ तआला की सिफ़त कहते हैं। तो यह भी मुहाल है कि हक़ तआला के क़दीम सिफ़त किसी मख़लूक़ की सिफ़त बन जाये। और अगर यह जायज़ हो कि ख़ुदा की हयात, मख़लूक़ की सिफ़त हो जाये तो यह भी जायज़ होगा कि इस की कुदरत मख़लूक़ की कुदरत हो जाये। इस तरह सिफ़त मौसूफ़ के साथ क़यम हो जाये। लिहाज़ा यह कैसे जायज़ हो सकता है कि क़दीम सिफ़त के लिये हादिस मौसूफ़ हो ला मुहाला क़दीम को हादिस से कोई ताल्लुक़ न होगा। बहर तौर इस बारे में मुलहिदों का क़ौल बातिल है।

फ़रमाने इलाही के मुवाफ़िक़ रूह मख़लूक़ है तो जो इसके ख़िलाफ़ कहेगा वह खुला मुकाबरा है और वह हादिस व क़दीम का फ़र्क़ नहीं जानता। और वली के लिये यह किसी तौर पर जायज़ नहीं कि वह सेहते विलायत के साथ हक़ तआला के औसाफ़ से बे बहरा हो। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल व करम से हमें बिदअत व ज़लालत और वसवासे से शैतानी से महफ़ूज़ करके अक़्ले सलीम अता फ़रमाई है जिसके ज़रिये ग़ौर व फ़िक्र और इस्तेदलाल करते हैं और बहम्देहि तआला इसने हमें दौलते ईमान से सरफ़राज़ फ़रमाया है जिससे हम उसे पहचानते हैं। वह हम्द ही क्या जो हम्द अपनी ग़ायत को न पहुंचे क्योंकि ना मुतनाही नेमतों के मुक़ाबला में जो हम्द मुतनाही होती है वह ना मक़बूल होती है। जब अहले ज़वाहिर ने अरबाबे उसूल से इस क़िस्म की बातें सुनीं तो गुमान करने लगे कि तमाम सूफ़िया का ऐसा ही एतेक़ाद होगा। इसलिये वह इन नेको का बुज़ुर्गों के बारे में खुले नुक़सान और उनके जमाल से महजूब हो गये और वह विलायते हक़ के लतायफ़ और शोला हाए रुमूज़ रब्बानी के ज़हूर से पोशीदा रह गये। इसलिये अकाबिर सादात की राहों से बरगश्ता होना और इन्हें रद्द करना इनके क़बूल करने की मानिंद और उनका क़बूल करना उनके रद्द करने की मानिंद होता है।

रूह के बारे में अक़वाले मशायख़

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि-

जिस्म में रूह, लकड़ी में आग की मानिंद है आग मख़लूक़ है और कोयला मसनूअ।

अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के सिवा किसी चीज़ का क़दीम होना बातिल है।

हज़रत अबू बकर वासती रहमतुल्लाह अलैहि ने रूह के बारे में मुफ़स्सल बहस की है वह फ़रमाते हैं कि-

दस मक़ामात पर रूहें क़ायम हैं।

१ मुफ़सिदों की रूह तारीकी में मुक़ैयद है और जानती हैं कि इनके साथ क्या होगा।

२ नेक व मुत्तक़ी के जिस्मों की रूहें आसमान के नीचे आमाले सालेहा के बाइस खुश और ताअते इलाही में मसरूर होकर उसकी ताक़त से चलती हैं।

३ मोहसेनीन के जिस्मों की रूह नूरानी कंदीलों अर्शे इलाही से आवेज़ां हैं जिनकी ग़िज़ा मुहब्बत और उनका पानी शराबे लुत्फ़ व कुरबते रब्बानी है।

४ मुरीदीन के जिस्मों की रूह का मसकन चौथे आसमान पर है वहां सिद्क़ की लज़्ज़त पाते हैं और अपने आमाल के साया में फ़रिश्तों के साथ हैं।

५ अहले वफ़ा के जिस्मों की रूह हिजाबे सफ़ा और मुक़ामे उस तिफ़ा में खुश है।

६ शोहदा के जिस्मों की अरवाह सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब में जन्नत और उसके बाग़ों में रहती हैं वह जहां चाहें और जब चाहें जायें।

७ मुश्ताक़ों के जिस्मों की अरवाह अदब के फ़र्श पर अनवारे सिफ़ात के परदों में कियाम करती हैं।

८ आरिफ़ों के जिसमों की रूहें कुद्स के तो शक में सुबह व शाम कलामे इलाही की समाअत करती हैं। और वह दुनिया और जन्नत में अपने मसाकिन को मुलाहेज़ा करती हैं।

९ महबूबों और दोस्तों के जिस्मों की अरवाह मुशाहदा जमाले इलाही और मुक़ामे कश्फ़ में महव हैं इसके सिवा वह किसी चीज़ की ख़बर नहीं रखतीं और न किसी से इन्हें बजुज़ इसके चैन व राहत मिलती है।

१० दुरवेशों के जिस्मों की रूहें महले फ़ना में मुक़र्रब होकर अपनी सिफ़ात को बदल कर अहवाल में मुतग़य्यर होती हैं।

अरबाबे तरीक़त बयान करते हैं कि मशायख़ ने हर एक को उनकी जुदागाना सूरतों में देखा है और यह देखना जायज़ है। हम बता चुके हैं वह मौजूद हैं और उनके अजसाम लतीफ़ हैं उनको देखा जा सकता है और अल्लाह तआला जब चाहे और जिस तरह चाहे अपने किसी बंदे को देखा देता है।

हुज़ूर सैयदना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरी ज़िन्दगानी हर हाल में हक़ तआला के साथ है और इसी से कियाम भी है और हमें ज़िन्दा रखना हक़ तआला का फ़ेअल है हमारा वजूद और हमारी हयात सब इसी की पैदा करदा है इसकी ज़ात व सिफ़ात से नहीं हैं। हुलूलियों का क़ौल सरासर बातिल है और वह बहुत बड़ी गुमराही है उनका पहला बातिल क़ौल यह है कि वह रूह को क़दीम कहते हैं अगरचे उनकी इबारतें मुख़्तलिफ़ हैं लेकिन उनके मफ़हूम यकसां हैं और उनका एक गरोह नफ़्स व हयूला कहता है और एक गरोह नूर व जुलमत कहता है और इस तरीक़त को बातिल ठहराने

वाले लोग उसे तो फ़ना और बक़ा कहते हैं या जमअ व तफ़रक़ा वग़ैरह। इस क़िस्म की बेहूदा बातें गढ़ ली हैं और अपने इस कुफ़्र की दाद चाहते हैं सूफ़िया किराम ऐसे गुमराह गरोहों से बेज़ार और मुतनफ़्फ़िर हैं क्योंकि इसबाते विलायत और मुहब्बते इलाही की हक़ीक़त बजुज़ मारफ़ते इलाही के दुरुस्त नहीं हो सकती और जब कोई क़दीम को मुहद्दस से जुदा करके पहचान न सके उस बारे में वह जो कुछ कहेगा वह जहालत पर मुबनी होगा। अक़्लमंद जाहिलों की बातों की तरफ़ इल्तेफ़ात नहीं करते मैंने इन दोनों मरदूद गरोहों का मक़सद और उनका बुतलान वाज़ेह कर दिया है अगर मज़ीद इल्म की ख़्वाहिश हो तो मेरी दीगर तसानीफ की तरफ़ रुजू करें। मैं इस किताब को तूल देना नहीं चाहता।

अब मैं तरीक़त व तसव्वुफ़ के हिजाबात का कश्फ़ और मामलात व हक़ायक़ के अबवाब को रौशन दलायल के साथ बयान करता हूं ताकि आसान तरीक़ा से मक़सूद का इल्म हो सके और मुन्केरीन के लिये सामाने बसीरत फ़राहम हो जाये और यह इंकार से बाज़ आ जायें इस तरह मुझे दुआ व सवाब हासिल हो जाये।

पहला कश्फ़

मारेफ़ते इलाही में

अल्लाह तआला का इरशाद है कि-

उन्होंने अल्लाह तआला की क़द्र न जानी जैसा कि उसकी क़द्र का हक़ है।

रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

अगर तुम्हें अल्लाह तआला की मारिफ़त कमाहक़्क़हू हासिल होती तो तुम दरियाओं पर खुश्क क़दम चलते और तुम्हारी दुआओं से पहाड़ अपनी जगह से टल जाते।

मारिफ़ते इलाही की दो क़िस्में हैं एक इल्मी दूसरी हाली।

मारिफ़त के इक़साम : मारिफ़ते इलमी तो दुनिया व आख़ेरत की तमाम नेकियों की जड़ है। जो बंदे के लिये हमा वक़्त और हर हालत में तमाम चीज़ों से ज़्यादा बेहतर है।

मारिफ़ते इल्मी के दलायल : अल्लाह तआला फ़रमाता है-

हम ने जिन्न व इन्स को अपनी मारिफ़त ही के लिये पैदा किया है मगर

अक्सर लोग इस से नावाफ़िक़ और रूगरदां हैं।

लेनिक वह हज़रात जिन को अल्लाह तआला ने बरगुज़ीदा फ़रमाकर दुनियावी तारीकियों से महफ़ूज़ रखा और उनके दिलों को ज़िन्दा व ताबिंदा बनाया उनमें से एक हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाल की ख़बर देते हुए हक़ तआला ने फ़रमाया-

और हमने उनके लिये नूर मुक़र्रर किया जिसके साथ वह लोगों में चलते हैं यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ।

और अल्लाह तआला ने जिनके दिलों पर मुहर लगाई और दुनियावी तारीकियों में मुब्तला किया इनमें से एक अबू जहल के हाल की ख़बर देते हुए हक़ तआला ने फ़रमाया है-

कौन है इसकी मिस्ल जो तारीकियों में है जो कभी उससे निकलता ही नहीं यानी अबू जहल।

लिहाज़ा मारिफ़त की हक़ीक़त यह है कि दिल अल्लाह तआला के साथ ज़िन्दा हो और उसका बातिन मा सिवा अल्लाह से ख़ाली हो। और हर एक की क़द्र व मंज़िलत मारिफ़त और जिसे मारिफ़त नहीं वह बे क़ीमत है। इसलिये तमाम उलमा व फ़ुक़हा इल्म की सेहत और दुरुस्तगी को मारफ़ते इलाही के साथ मौसूम करते है और तमाम मशायख़े तरीक़त, हाल की सेहत और उसकी दुरुस्तगी को मारिफ़ते इलाही से ताबीर करते हैं। इसी बिना पर वह मारिफ़त को इल्म से अफ़ज़ल कहते हैं। क्योंकि सेहते हाल सेहते इल्म के बग़ैर मुमकिन नहीं और सेहते इल्म के लिये सेहते हाल लाज़मी है। मतलब यह है कि बंदा उस वक़्त तक आरिफ़ नहीं हो सकता जब तक कि आलिमे बहक़ न हो। अलबत्ता आलिम के लिये यह मुमकिन है कि वह आरिफ़ न हो। जो लोग इस मअ़ने और हक़ीक़त से नावाफ़िफ़ और बेख़र हैं ख़्वाह किसी तबक़ा से मुताल्लिक़ हों उनसे मुनाज़िरा करना बे फ़ायदा है। यही वह लोग हैं जो तरीक़त के मुन्किर हैं और तबक़ा-ए-सूफ़िया उनसे जुदा है।। इस इजमाल के बाद अब मैं इस मसले के असरार वाजेह करता हूं ताकि दोनों तबक़ों को फ़ायदा पहुंचे।

मारिफ़त में नज़रियाती इख़्तेलाफ़ : ऐ अज़ीज़! वाज़ेह हो कि मारिफ़ते इलाही और इसके इल्म की सेहत के मुताल्लिक़ लोगों में बहुत इख़्तेलाफ़ है। चुनांचे मोतज़ला कहते हैं कि मारिफ़त अक़ली है। आक़िल के सिवा इसकी मारिफ़त जायज़ नहीं यह क़ौल बातिल है इसलिये कि वह दीवाने जो दारुल

इस्लाम में हों उनके लिये हुक्मी मारिफ़त है। इसी तरह वह बच्चे जो आक़िल नहीं उनके लिये हुक्मी ईमान है। अगर हुक्मे मारिफ़त में अक़्ल शर्त होती तो जिन्हें अक़्ल नहीं वह मारिफ़त के हुक्म में न होते और काफ़िरों में चूंकि अक़्ल है तो उन पर कुफ़्र न होता और अगर मारिफ़त के लिये अक़्ले इल्लत होती तो हर आक़िलल को आरिफ़ कहा जाता और हर बे अक़्ल को जाहिल यह खुला मुकाबिरा है।

एक गरोह कहता है कि हक़ तआला की मारिफ़त की इल्लत, इस्तिदलाल है और जिसमें इस्तिदलाल की इस्तेअदादना हो उसके लिये यह जायज़ नहीं यह क़ौल भी इबलीस की मिसाल से बातिल ठहरता है इसलिये कि इबलीस ने बकसरत निशानियां और आयते इलाहिया देखीं मसलन जन्नत, दोज़ख, अर्श की कुरसी वग़ैरह लेकिन उसके लिये उनकी दीद भी मारफ़त की इल्लत न बनी और अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

अगर हम फ़रिश्तों को कुफ़्फ़ार के पास भेजते और मुर्दे उनसे कलाम करते और उनके सामने हर चीज़ को उठाते जब भी वह हरगिज़ ईमान लाने वाले न थे मगर जिसे अल्लाह चाहे।

अगर आयाते इलाहिया की दीद और उनका इस्तिदलाल मारिफ़ते हक़ की इल्लत होती तो अल्लाह तआला मारिफ़त की इल्लत इन्हें क़रार देता न कि अपनी मशीयत को।

अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक सेहते अक़्ल और रोइयते आयतो इलाहिया मारफ़त का सबब है न कि इसकी इल्लत। और यह याद रखना चाहिये कि मारफ़त की इल्लत, बजुज़ इनायते इलाही और उसकी मशीयत के कुछ नहीं है क्योंकि बगैर इनायते इलाही अक़्ल अंधी होती है क्योंकि अक़्ल बजाए ख़ुद जाहिल है। बकसरत उक़ला ने हक़ तआला की हक़ीक़त को न जाना। जबकि अक़्ल बजाए खुद जाहिल है तो बग़ैर इनायते इलाही वह अपने ग़ैर को किस तरह जानेगी? इसी तरह आयाते इलाही की रोइयत में तफ़क्कुर व इस्तिदलाल भी ख़ता है क्योंकि अहले हवा और मुलहिदों की जमाअत इस्तिदलाल ही करने वाले होते है। बई हमा वह इरफ़ान से महरूम रहते हैं। फिर यह कि जो इनायते इलाही से अहले इरफ़ान हैं उनकी तमाम हरकतें मारिफ़त की अलामत हैं और उनका इस्तिदलाल और उनका तर्क व तलब सब मुसल्लम है और सेहते मारिफ़त में तसलीम तलब से अफ़ज़ल नहीं है क्योंकि

तलब असल और बुनियाद है जिसका तर्क जायज़ नहीं है। और इन दोनों के लिये मारिफ़ते हक़ीक़त नहीं है लेकिन यह भी मलहूज़ रहना चाहिये कि हक़ीक़त में बंदे के दिल को खोलने वाला और उसकी रहनुमाई करने वाला हक़ तआला के सिवा कोई नहीं है। महज़ अक़्ल व दलायल हिदायत की कुदरत नहीं रखते और दलील उससे ज़्यादा वाज़ेह नहीं होती। हक़ तआला फ़रमाता है-

अगर इन्हें लौटायें तो यक़ीनन वह इसी तरफ़ पलटेंगे जिससे इन्हें रोका गया है।

मतलब यह है कि अगर काफ़िरों को क़ियामत के बाद दोबारा दुनिया में भेजा जाये तो फिर वह अपने इसी कुफ़्र में आलूदा हो जायेंगे जिससे इन्हें मना किया गया है।

हज़रत अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहहू से जिस वक़्त मारेफ़ते इलाही के बारे में दर्याफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया-

मैंने ख़ुदा को उसकी मदद से पहचाना और मा सिवा अल्लाह को उसी के नूर से जाना।

चूंकि अल्लाह तआला ने जिस्म को पैदा करके उसकी हयात को रूह के हवाले कर दिया। लेकिन दिल को पैदा करके उसकी हयात को अपने क़ब्ज़ा में रखा। ज़ाहिर है कि जब अक़्ल और आयात को जिस्म के ज़िन्दा करने की कुदरत नहीं दी तो मुहाल है कि वह दिल को ज़िन्दा कर सके। चुनांचे इरशादे हक़ तआला है कि-

जो शख़्स मुर्दा था उसे हमने ज़िन्दा किया। इस फ़रमान में हर क़िस्म की ज़िन्दगानी का अपने क़ब्ज़े में होना बयान फ़रमाया है फिर इरशाद होता है-

और हमने उसके लिये नूर मुक़र्रर किया जिसके साथ वह चलता है।

मतलब यह है कि ऐसे नूर का पैदा करने वाला जिसकी रौशनी में मुसलमान चलें वह मैं हूं। और यह भी फ़रमाया है कि-

क्या अल्लाह तआला ने इस्लाम के लिये जिसका सीना खोला तो वह अपने रब के नूर पर है। इस इरशाद में बताया गया है कि दिल की कुशादगी अल्लाह तआला के क़ब्ज़ए इख़्तेयार में है। इसी तरह इस की बंदिश भी इसी के क़ब्ज़े में है। दिल के क़ब्ज़ के सिलसिले में फ़रमाया है -

अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मोहर लगा दी है और उनकी

आंखों पर परदा है।

(ऐ सुनने वाले) इसकी पैरवी न करना जिसके दिल को हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया है।

जबकि दिल का क़ब्ज़ व बस्त और उसका ख़त्म व शरह अल्लाह तआला के क़ब्ज़ए इख़्तेयार में है तो महल है कि इसके सिवा किसी ग़ैर को रहनुमा बनाया जाये और अल्लाह तआला के सिवा जो कुछ है वह सब इल्लत और सबब है। हरगिज़ इल्लत व सबब बग़ैर मुसब्बब यानी ख़ुदा के राह नहीं दिखा सकता। क्योंकि हिजाब राहज़न होता है न कि राहबर? अल्लाह तआला यह भी फ़रमाता है कि-

लेकिन अल्लाह तआला ही है जिसने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसी ने तुम्हारे दिलों को इससे मुज़य्यन फ़रमाया।

इस इरशाद में हक़ तआला ने दिल की तज़ईन और मुहब्बत जागुज़ाँ करने की निसबत अपनी तरफ़ फ़रमाई है। तक़वा और ख़ुदा की मुहब्बत में क़ायम रहना जो कि ऐन मारिफ़त है इसी की जानिब से है और मुल्ज़िम को अपने इल्ज़ाम में इस हालत को अपने से जुदा करने या अपनी तरफ़ लाने का कोई इख़्तेयार हासिल नहीं है। लिहाज़ा जब तक अल्लाह तआला ख़ुद अपनी मारफ़त न कराए लोगों के नसीब में हरगिज़ उसकी मारिफ़त मुमकिन नहीं है मख़्लूक़ हुसूले मारिफ़ते इलाही में आजिज़ है-

हज़रत अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

अल्लाह तआला पर इसके सिवा कोई दलील व रहनुमा नहीं। इल्म तो ख़िदमत (इबादत) का तरीक़ा सीखने के लिये हासिल करते हैं।

मतलब यह कि किसी मख़्लूक़ को यह ताक़त नहीं है कि वह बंदों को ख़ुदा तक पहुंचा दे। इस्तिदलाल करने वाला, अबू तालिब से बढ़कर आक़िल न होगा और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा बुज़ुर्ग कोई दलील न होगी। जबकि अबू तालिब को सक़ावत पर इजरा का हुक्म था तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दलालत इन्हें फ़ायदा न पहुंचा सकी। इस्तिदलाल की ख़राबियों में से पहला दर्जा यह कि मुस्तदिल हक़ तआला की तौफ़ीक़ व इनायत से रु गरदां होता है क्योंकि बवक़्ते इस्तदलाल वग़ैरा ख़ुदा पर ग़ौर व फ़िक्र करता है। हालांकि मारफ़त की हक़ीक़त तो यह है कि वह ग़ैर ख़ुदा से रूगरदां हो और दलायल की जुस्तजू करने वालों की आदते

इस्तिदलाल के सिलसिले में यही है। और हक़ की मारिफ़त के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा जब मारिफ़ते इलाही बजुज़ दवामी हैरानी-ए-अक़्ल नहीं तो इनायते इलाही को अपनी तरफ़ मुतवज्जोह करना बंदे के लिये अपने इख़्तेयार में कैसे होगा? क्योंकि इस राह में मख़लूक़ के कसब व इख़्तेयार को कोई दख़ल है ही नहीं। और ख़ुदा के सिवा बंदे की दलालत करने वाला और कोई नहीं है। रहा शरहे सदर और कुशादगी-ए-क़लब का मामला, तो यह ग़ैबी ख़ज़ानों से मुताल्लिक़ है। इसलिये कि जो कुछ ख़ुदा के सिवा है वह सब हादिस है और अपने जैसों तक तो पहुंच सकता है लेकिन अपने पैदा करने वाले तक (ख़ुदा की इनायत के बग़ैर) नहीं पहुंच सकता। बावजूद यह कि इसका कबस व इख़्तेयार भी उसी का पैदा करदा है लेकिन जब वह किसी के तहत आ जाता है तो कसबे कासिब ग़ालिब हो जाता है और हासिल शुदा मग़लूब। लिहाज़ा इसमें इज़्ज़त नहीं कि अक़्ल इंसानी, फ़ेअल की दलालत से फ़ायल की हस्ती का इसबात करे। बल्कि इज़्ज़त व करामत इसमें है कि वह हक़ तआला के नूर से अपनी हस्ती की नफ़ी करे। और शख़्स को मारिफ़ते क़ौली हासिल है और दूसरे को मारिफ़ते हाली।

लेकिन वह गरोह जो अक़्ल को मारिफ़त की इल्लत जानता है इससे कहो कि तुम्हारे दिल में ऐन मारिफ़त से क्या चीज़ साबित होती है? क्योंकि जो कुछ अक़्ल साबित करती है मारिफ़त उसकी नफ़ी का इक़्तेज़ा करती है। मतलब यह कि दलालत अक़ली के ज़रिये दिल में जो ख़ुदा की सूरत बंधती है कि ख़ुदा ऐसा है उसकी हक़ीक़त उसके बर ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा अक़्ल को कहां क़ुदरत है कि इस्तिदलाल के ज़रिये ख़ुदा की मारिफ़त हासिल कर ले इसलिये कि अक़्ल व वहम दोनों हम जिन्स हैं जहां जिन्स हैं जहां साबित होती है वहां मारिफ़त की नफ़ी होती है। लिहाज़ा इस्तिदलाले अक़ली से तशबीह का इसबात होता है और उसकी नफ़ी से तातील। अक़्ल की रसाई इन्हीं दोनों क़ायदों तक है और यह दोनों मारिफ़त के लिये बेकार हैं। क्योंकि मुशब्बा और मुअत्तला मुवह्हिद नहीं होते अक़्ल की रसाई वहीं तक है जहां तक उसका इमकान है और जो कुछ उससे नमूदार होता है वह सब इमकान यानी हादिस व मख़लूक़ है।

अल्लाह तआला के दोस्तों के लिये इसके सिवा कोई चारा न था कि वह जुस्तजू व तलाश करें ला मुहाला वह ख़ुदा के हुज़ूर में हाज़िर होकर बग़ैर किसी इल्लत व सबब के आ खड़े हुए और अपने आराम में बे आराम होकर आह

व ज़ारी के साथ हाथ फैला दिये और अपने ज़ख़्मे दिल के लिये मरहम मांगने लगे। क्योंकि उनकी राह, अपनी कुदरत व तलब के अक़साम से नावाफ़िक़ थी तब कुदरते हक़ उस जगह उनकी ताक़त बनी और इस तरह वह उस तक रसाई पा गये और ग़ैबत की तकलीफ़ से निजात हासिल की मुहब्बत के बाग़ में जगह बनाकर आराम करने लगे और उनकी रूह में सुरूर पैदा हुआ। जब अक़्ल बे दिलों को फ़ायजुल मराम देखा तो उसने अपना तसर्रुफ़ ज़ाहिर करना चाहा मगर उसने दख़ल न पाया तो थक हारकर बैठ गयी और परेशान हो गयी। जब हैरत व परेशानी का इस्तीला हुआ तो अक़्ल माजूल हो गयी और जब अक़्ल माजूल हुई तो हक़ तआला बे ख़िदमत का लिबास अता करके फ़रमाया ए अक़्ल! जब तक तू बाखुद थी उस वक़्त तक अपने तसर्रुफ़ व असबाब के साथ महजूब थी। जब तेरे आलाते तसर्रुफ़ फ़ानी हो गये और तू तंहा रह गयी जैसे कि पहले थी तब तूने रसाई हासिल की इस तरह दिल को कुरबत और अक़्ल को ख़िदमत नसीब हुई। चूंकि अपनी मारिफ़त के अंदर मारिफ़त निहां थी जब अपनी मारिफ़त हो गयी तो अल्लाह तआला ने बंदे को अपना इरफ़ान अता करके मंज़िले इरफ़ान से रौशनास कराया ताकि बंदा इरफ़ान से मारिफ़ते इलाही को पहचाने न कि असबाब के ज़रिये। बल्कि इसकी शिनाख़्त उस वजूद के ज़रिये है जो उसे अता किया गया है। यहां तक कि आरिफ़ की अनानियत मुकम्मल तौर पर फ़ानी होकर उसका ज़िक्र बग़ैर निसयान के और उसका हाल बग़ैर तक़सीर के बन गया अब उसकी मारिफ़त हाल है न कि गुफ़्तार।

एक गरोह कहता है कि मारिफ़ते इलाही अलहामी है हालांकि यह भी मुहाल है इसलिये कि मारिफ़त के लिये सादिक़ व काज़िब हर तरह की दलीलें हो सकती हैं। और इलहाम वालों के लिये ख़ता व सवाब पर मोहतमल दलील नहीं होती। इसलिये कि एक कहेगा मुझे इलहाम हुआ है कि ख़ुदा मकान में है और दूसरा कहेगा कि मुझे इलहाम हुआ है कि इसके लिये मकान नहीं है। ला महाला इन दोनों मुख़्तलिफ़ दावों में एक ही हक़ पर हो सकता है हालांकि दोनों ही इलहाम के मुद्दई हैं यक़ीनन इसके फ़ैसला के लिये कोई ऐसी दलील दरकार होगी जिससे सिद्क़ व किज़्ब के दर्मियान फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाये और यह दोनों मुदई जान लें कि इलहाम हुक्मे बातिल है। यह क़ौल ब्रहमनों का है मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो इलहाम के मुद्दई हैं और इसमें बहुत ग़ुलू करते हैं और अपने हालात की

निसबत मरदाने पार साकी तरह करते हैं। हालांकि ऐसे लोग गुमराही पर हैं। इनकी बातें न सिर्फ़ मुसलमानों के ख़िलाफ़ हैं बल्कि काफ़िरों के अक़लमंदाना नज़रियात के भी ख़िलाफ़ हैं। इसलिये कि दस मुदअयाने इलहाम दस ही मुतनाकिज़ व मतख़ालिफ़ बातों का दावा करते हैं जो हुक्म में सबके सब बातिल होते हैं इन मुद्दईयाने इलहाम में से कोई एक भी हक़ पर नहीं होता।

अगर कोई यह कहे कि जो कुछ शरीअत के ख़िलाफ़ हो वह इलहाम नहीं होता तो हम जवाब देंगे कि तुम तो अपने असल व क़ायदे में ग़लती पर हो इसलिये कि शरीअत को अपने इल्हाम पर अपने क़यास करते हुए कहते हो कि शरीअत से हमारा इलहाम साबित है हालांकि मारिफ़ते इलाही शरई सबूती और हिदायती होती है न कि इलहामी और मारिफ़त में इलहाम का हुक्म बहमा वुजूह बातिल है।

एक गरोह कहता है कि मारिफ़ते हक़ ज़रूरी यानी बद यही है हालांकि यह क़ोल भी बातिल है इसलिये कि बंदे के लिये हर वह चीज़ जिसका उसे इल्म हो अगर बदी ही हो तो ज़रूरी है कि इसमें तमाम उक़ला मुश्तरिक व मुत्तहिद हों। मैंने उक़ला की एक जमाअत ऐसी देखी जो बदी ही होने का मुन्किर है और तशबीह व तातील को जायज़ समझती है। सहीह बात यही है कि ज़रूरी और बदी ही नहीं है एक वजह यह भी है कि अगर मारिफ़ते इलाही ज़रूरी व बदी ही होती तो उस पर तकलीफ़ जायज़ नहीं होती क्योंकि मुहाल है कि किसी ऐसी चीज़ की मारिफ़त के लिये जिसका इल्म बदी ही और ज़रूरी हो इस पर तकलीफ़ हो मसलन अपनी पहचान आसमान व ज़मीन दिन व रात और तकलीफ़ व राहत वग़ैरह कि यह सब बदी ही हैं और उनमें से किसी के वजूद के लिये आक़िल को शक व शुबह लाहक़ नहीं होता और न उसे उसकी हाजत होती है कि वह परेशान हो और इल्म हासिल करना चाहे तो भी हासिल न हो सके। अलबत्ता सूफ़ियों के एक गरोह ने जब अपने यक़ीन की सेहत व दुरुस्तगी पर ग़ौर किया तो कहने लगे कि हम उसे ज़रूरी व बदी ही जानते हैं। क्योंकि दिल में कोई शक व शुबह वाक़ेय नहीं है। उन्होंने यक़ीन का नाम ज़रूरी व बदी ही रख लिया। यह बात मअ़ने के लिहाज़ से दुरुस्त है लेकिन ताबीर व बयान के एतेबार से ग़लत है इसलिये कि ज़रूरी व बदी ही इल्म में सेहत व दुरुस्तगी की तख़सीस जायज़ नहीं होती है। और वह तमाम अक़्लों में मसावी होती है। और एक वजह यह भी है कि ज़रूरी व बद ही इल्म वह होता है जो ज़िन्दों के दिलों में बग़ैर सबब व दलील ज़ाहिर हो। लेकिन इल्मे इलाही और

मारफ़ते रब्बानी सबबी है।

हज़रत उस्ताज़ अबू अली दक़्क़ाक़ और शैख़ अबू सहल सअलूकी और उनके वालिद जो नीशापुर के इमाम व रईस थे। उनका नज़रिया यह है कि मारिफ़त की इब्तेदा इस्तिदलाल से है और उसकी इंतेहा ज़रूरत व बदाहत है।

अहले सुन्नत व जमाअत का एक क़ौल यह है कि जबकि जन्नत में इल्मे इलाही ज़रूरी व बदी ही हो जायेगा और यह जायज़ भी है तो यहां भी मुमकिन है कि वह ज़रूरी बदी ही हो जाये। नीज़ एक क़ौल यह है कि अंबियाए अलैहिमुस्सलाम जब अल्लाह तआला का कलाम सुनते हैं ख़्वाह वह बे वास्ता हों या फ़रिश्ता या वही के ज़रिये तो वह सब उसे ज़रूरी व बदी ही जानते हैं। और हम भी यह एतेक़ाद रखते हैं कि अहले जन्नत, बहिश्त में अल्लाह तआला को ज़रूरत व बदाहत से जानेंगे। चूंकि जन्नत तकलीफ़ का घर नहीं है और अंबिया अलैहिमुस्सलाम मामूनुल आक़िबत और कतई तौर पर महफ़ूज़ हैं। इनके लिये मारिफ़तो इलाही ज़रूरी व बदी ही है नीज़ इन्हें ख़ौफ़ और जुदाई का ख़तरा भी नहीं है ईमान व मारिफ़त की फ़ज़ीलत इसी वजह से है कि वह ग़ैब है। जब वह अयां हो जाये तो ईमान ख़बर बन जाये और उसके अयां होने के बाद इख़्तेयार ख़त्म हो जाये। उसूल शरअ मुज़तरब हो जाते हैं और रद्दत का हुक्म बातिल हो जाता है और बलअम इबलीस और बर सीसा की तकफ़ीर दुरुस्त नहीं रहती क्योंकि वह सब बा इत्तेफ़ाक़ अल्लाह तआला को पहचानते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने इबलीस के मरदूद व मरजूम होने के वक़्त की ख़बर देते हुए शैतान का क़ौल बयान किया कि-

अब तेरी इज़्ज़त की क़सम है मैं इन सबको ज़रूर बहकाऊंगा।

दर हक़ीक़त बात करना और कलाम सुनना मारिफ़त के मुक़तज़ियात में से है और आरिफ़ जब तक आरिफ़ रहे वह जुदाई के ख़तरे से महफ़ूज़ है और जब जुदाई हो जाये तो मारिफ़त ज़ायल हो जाती है। हालांकि इल्म बदी ही के ज़वाल की कोई सूरत मुमकिन नहीं।

यह मसला लोगों के दर्मियान ख़तरनाक है बस इसी क़दर शर्त है कि इतना जान लो जिससे आफ़त से छुटकारा मिल जाये क्योंकि बंदे को इल्म और हक़ तआला की मारिफ़त उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकती जब तक कि हक़ तआला अज़ली इल्म व हिदायत की तौफ़ीक़ अता न फ़रमाये।

अलबत्ता यह जायज़ है कि मारिफ़त में बंदे के यक़ीन में अहयानन कमी

व बेशी हो। लेकिन असल मारिफ़त में कमी व बेशी मुमकिन नहीं। क्योंकि मारिफ़त में ज़्यादती मोजिबे नुक़्सान है और कमी में भी।

मारिफ़ते इलाही में तक़लीद जायज़ नहीं है हक़ तआला को सिफ़ाते कमालिया के साथ पहचानना लाज़िम है और यह बात बजुज़ हुस्ने रियायत और ख़ालिस इनायते रब्बानी के सहीह नहीं हो सकती। तमाम अक़्ली दलायल हक़ तआला की मिल्के और उसके क़ब्ज़ए इख़्तेयार में हैं वह अगर चाहे तो अपने किसी एक फ़ेअल को इसके लिये दलील बना दे और उसी के ज़रिये अपनी राह दिखा दे और अगर वह चाहे तो अपने तमाम अफ़आल को इसके लिये हिजाब बना दे और वह ख़ुदा तक रसाई से महरूम रह जाये।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जहां मुसलमानों की एक जमाअत के लिये मारिफ़ते इलाही की दलील बने वहां नसारा के एक गरोह के लिये मारिफ़त के हिजाब बने। मुसलमानों ने इन्हें ख़ुदा का बंदा और रसूल माना। और नसारा ने इन्हें ख़ुदा का बेटा गुमान किया (मअज़ल्लाह) यही हाल असनाम और चांद और सूरज का है। किसी के लिये वह मारिफ़त की दलील हैं और कई इस से महरूम रहे। अगर दलील ही मारिफ़त की इल्लत होती तो चाहिये था कि हर मुस्तदिल आरिफ़ होता। हांलाकि यह खुला मुकाबरा है। अल्लाह तआला ही के इख़्तेयार में है कि वह किसी को बरगुज़ीदा बना कर उन चीज़ों को दलील मारिफ़त बना देता है ताकि इन ज़राया से वह ख़ुदा तक रसाई पायें और ख़ुदा को पहचानें। मालूम हुआ कि दलील ख़ुदा की मारिफ़त का सबब तो हो सकती है मगर इल्लत नहीं बन सकती और कोई सबब किसी सबब से मुसब्बब यानी ख़ुदा के लिये बेहतरीन नहीं होता। अल्लाह तआला मुसब्बब के बारे में इरशाद फ़रमाता है-

ऐ महबूब! आपकी हयात की क़सम! बेशक यह काफ़िर अपने नशे में बहक रहे हैं।

क्योंकि आरिफ़ के लिये सबब का इसबात कुफ़्र है और ग़ैर की तरफ़ तवज्जोह शिर्क है। जिसे ख़ुदा दलील से अंधा बनाये उसे कौन राह हिदायत दिखा सकता है। लिहाज़ा जब किसी के लिये लौहे महफ़ूज़ में ला (नहीं) लिखा हुआ है और हक़ तआला की मुरादे मालूम में किसी के नसीब में सक़ावत व बद नसीबी है तो इसके लिये दलील व इस्तिदलाल किस तरह मोजिबे हिदायत बन सकती? जिसने ग़ैर की तरफ़ तवज्जोह की उसकी मारिफ़त कुफ़्र है और

बंदे ख़ुदा के ग़ल्बा-ए-मुहब्बत में मुस्तग़रक़ और उसके मुतलाशी हैं उनके लिये ख़ुदा के सिवा और चीज़ें राह में रुकावट कैसे बन सकती हैं?

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम जब ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए तो दिन में कोई चीज़ न देखी हालांकि दिन में बकसरत दलायल और अजीब तर बराहीन मौजूद होते हैं। लेकिन जब रात हुई तो सितारों को देखा। अगर मारिफ़ते इलाही की इल्लत दलील होती तो दिन में ज़्यादा दलायल नज़रआते और इससे ज़्यादा अजीब निशानियां ज़ाहिर होतीं। लिहाज़ा अल्लाह तआला जिस तरह चाहता है बंदे को अपनी राह दिखाता है और उस पर मारिफ़त का दरवाज़ा खोल देता है ताकि ऐने मारिफ़त में इस वजह तक पहुंचे जहां ऐन मारिफ़त भी उसे ग़ैर नज़र आये और उसे मारिफ़त की सिफ़त आफ़त मालूम हो। क्योंकि मारिफ़त के साथ मारूफ़ यानी खुदा से वह महजूब होता है यहां तक कि उसे मारिफ़त की तहक़ीक़ उस दर्जा तक पहुंचा देती है कि मारिफ़त उसका दावा बन जाती है।

हज़रत जुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

ऐ अज़ीज़! तुम इससे बचो कि तुम (बग़ैर तहक़ीक़) मारिफ़त के मुद्दई बनो। क्योंकि- उरफ़ा तो अपनी मारिफ़त का दावा करते हैं लेकिन मैं ना वाक़फ़ियत का इक़रार करता हूं और यही मेरी मारिफ़त है।

इसलिये तुम्हें सज़ावार नहीं कि तुम मारिफ़ता का दावा करो क्योंकि इसमें तुम्हारी हलाकत है और तुम्हारा ताल्लुक़ इसी ख़ूबी के साथ होना चाहिये जिसमें तुम्हारी निजात हो इसलिये जिसे हक़ तआला का कश्फ़ व मुशाहिदा हासिल हो जाता है उसके लिये अपनी हसती वबाल बन जाती है और तमाम सिफ़तें आफ़त बन जाती हैं। और जो ख़ुदा का हो जाये और ख़ुदा उसका हो जाये उसके लिये कोई चीज़ ऐसी नहीं रहती जिसकी निसबत उस बंदे की तरफ़ करना दुरुस्त हो न इस दुनिया में न उस जहान में।

मारिफ़त की हक़ीक़त यह है कि हर चीज़ ख़ुदा की मिलकियत समझे। जब बंदा यह जान लेता है कि हर चीज़ ख़ुदा की मिलकियत है और उसी के तसर्रुफ़ में है तो फिर उसे किसी मख़लूक़ से कोई सरोकार नहीं रहता। हत्ता कि ख़ुद अपने से भी नहीं। वह अपने आपसे और तमाम मख़लूक़ से महजूब हो जाता है। उसका जवाब हर शय से नावाक़फ़ियत है जब यह भी फ़ना हो जाती है तो हिजाब भी परागंदा हो जाता है और दुनिया बमंज़िला उक़बा हो जाती है।

मारिफ़त में मशायख़ के रुमूज़ व लतायफ़

मारिफ़त के सिलसिले में मशायख़ के बकसरत रुमूज़ लतायफ़ हैं हुसूले फ़ायदा के लिये चंद रुमूज़ दर्ज किये जाते हैं-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि -

मारिफ़त यह है कि तुम किसी चीज़ से मुताज्जिब न हो। क्योंकि ताज्जुब अजब ऐसे फ़ेअल पर होता है जो बंदे की अपनी ताक़त से ज़्यादा हो। और जब अल्लाह तआला कमाल पर क़ादिर है तो आरिफ़ के लिये ख़ुदा के अफ़आल में हैरत व ताज्जुब का इज़हार करना मुहाल है।

अगर कहीं अजब की कोई सूरत मुमकिन हो सकती तो यह बात थी कि उसने एक मुट्ठी खाक को इस दर्जा तक पहुंचा दिया कि वह दुनिया पर हुकूमत करे एक क़तरा ख़ून को इस मर्तबा तक पहुंचाया कि वह मारिफ़ते इलाही और उसकी मुहब्बत व दोस्ती की बातें करने लगा और वह दीदारे इलाही और उसके कुर्ब व विसाल का ख़्वाहिशमंद हो गया है।

हज़रत जुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि -

मारिफ़त की हक़ीक़त हक़ तआला का असरार पर मुत्तलअ करना और अपनी मारिफ़त के अनवार से सरफ़राज़ फ़रमाना है।

मतलब यह है कि हक़ तआला अपनी इनायत से बंदे को अपने अनवार से आरास्ता करके तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ कर देता है। चुनांचे जब तक बंदे के दिल में राई के दाने के बराबर मख़लूक़ का असर रहता है उस वक़्त तक वह ग़ैबी असरार के मुशाहिदे से सरफ़राज़ नहीं करता और न उसके ज़ाहिर को मग़लूब करता है। जब वह बंदे को दिल से तमाम तर असरात निकाल देता है तब वह मुशाहिदात का मुआना कराता है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

हैरते दवाम ही तो मारिफ़त है।

क्योंकि हैरत दो क़िस्म की होती है एक हैरत हस्ती व वजूद में दूसरी हैरत कैफ़ियत में। हस्ती में हैरत को शिर्क है और कैफ़ियत में हैरत मारिफ़त है इसलिये कि आरिफ़ को उसकी हस्ती व वजूद में शक की कोई गुंजाईश और उसकी कैफ़ियत में अक़्ल को कोई दख़ल नहीं। इस जगह उसे वजूदे बारी तआला में यक़ीन और कैफ़ियत में हैरत हासिल हो जाती है इसी बिना पर किसी ने कहा है कि-

ऐ हैरतज़दों के रहनुमा! मेरी हैरत को और ज़्यादा कर।

इस क़ौल का मतलब यह है कि क़ायल ने पहले तो हक़ के वजूद की मारिफ़त और उसके औसाफ़ का कमाल साबित किया और इक़रार किया कि वही मक़सूदे व ख़ल्क़ और उनकी दुआओं का क़बूल करने वाला है और हैरत ज़दों की हैरत उसके सिवा नहीं है। इसके बाद क़ायल ने ज़्यादती-ए-हैरत की इस्तिदआ की और एतेराफ़ किया कि मतलूब की मारिफ़त में अक़्ल का कोई दख़ल नहीं वहां हैरत व सरगरदानी के सिवा इसके लिये कोई हिस्सा नहीं यह मआनी लतीफ़ हैं नीज़ इसका भी एहतेमाल हो सकता है कि हक़ तआला की हस्ती व वजूद की मारिफ़त अपनी हस्ती पर हैरत का इक़्तेज़ा कर ले। इसलिये कि बंदा जब हक़ तआला को पहचान लेता है और हर चीज़ को उसके क़ब्ज़े व इख़्तेयार में देखता है और यक़ीन कर लेता है कि उसका वजूद भी उसी से है और उसका अदम भी उसी से। तो उसकी कुदरत में सुकून व हरकत से मुतहय्यर होता है। क्योंकि जब कल का क़याम उसी से है तो मैं कौन हूं और क्या हूं? (हैरत ज़दा होकर रह जाता है) में मुस्तग़र्क़ होकर रह जाता है।

इसी मअ़ने में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

जिसने अपने आपको फ़ना से पहचान लिया यक़ीनन उसने हक़ तआला को बक़ा से पहचान लिया।

क्योंकि फ़ना से अक़्ल व सिफ़त बातिल होती है और जब चीज़ का ऐन अक़्ली न हो तो उसकी मारिफ़त में हैरत के सिवा कुछ मुमकिन नहीं।

हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मारिफ़त यह है कि तुम जान लो कि ख़ल्क़ की तमाम हरकत व सुकून हक़ तआला से है।

और किसी को उसकी मिलकियत में उसकी इजाज़त के बग़ैर तसर्रुफ़ का इख़्तेयार नहीं। ऐन भी उसी के ऐन से है। असर भी उसी के असर है और सिफ़त भी उसी की सिफ़त से और हरकत व सकून भी उसी की हरकत व सुकून से। क्योंकि जब तक हक़ तआला बंदे के वजूद में ताक़त और उसके दिल में इरादा पैदा न कर फ़रमाए बंदा कुछ भी नहीं कर सकता। बंदे के अफ़आल मजाज़ी हैं और मख़लूक़ के तमाम अफ़आल ख़ुदा के पैदा करदा हैं।

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रहमतुल्लाह अलैहि आरिफ़ की सिफ़त में

फ़रमाते हैं कि-

जिसे अल्लाह तआला की मारिफ़त हासिल हो गयी वह बात कम करेगा और उसकी हैरत दायमी होगी।

क्योंकि अल्फ़ाज़ का जामे उसे पहनाया जा सकता है जो तहते इबारत हो और उसूल में इबारत की एक हद है और मअबर चूंकि महदूद नहीं है तो इबारत की बुनियाद उस पर कैसे रखी जा सकती है? जब इबारत की एक हद है और मअबर यानी अल्लाह तआला ग़ैर महदूद है तो उसे इबारत की हद बंदी में कैसे लाया जा सकता है? और जब मक़सूद इबारत में न समा सके और बंदा इसमें आजिज़ व लाचार रह जाये तो बजुज़ दायमी हैरत के क्या चारहकार होता है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

यानी मारिफ़त की हक़ीक़त यह है कि मारिफ़ते इलाही से आजिज़ रहे।

क्योंकि हक़ तआला की हक़ीक़त से बंदा सिवाए इज्ज़ कोई निशान नहीं रखता। मुमकिन है कि बंदे को इसके इदराक में अपने से ज़्यादा दावा न हो। इसलिये कि इज्ज़ा उसकी तलब है और जब तक तालिब अपनी सिफ़त और असबाब पर कायम है उस वक़्त तक उस पर इज्ज़ का इतलाक़ दुरुस्त नहीं होता अलबत्ता जब वह असबाब और औसाफ़ से गुज़र जाता है तब उसे फ़ना हासिल होती है न कि इज्ज़।

मुद्दईयों के एक गरोह का ख़्याल है कि इस हालत में जबकि आदमियत की सिफ़त बरक़रार साबित हो और सेहते ख़िताब से मुकल्लफ़ हो और हक़ तआला की हुज्जत उस पर क़ायम हो, आजिज़ होने का नाम मारिफ़त है और हम आजिज़ होकर सबसे पीछे रह गये हैं। यह क़ौल गुमराही और ज़्यांकारी पर मबनी है। हम दर्याफ़्त करते हैं कि तुम किस चीज़ की तलब में आजिज़ हुए हो? हालांकि इज्ज़ की दो निशानियां हैं और वह दोनों तुम में नहीं हैं एक निशानी तलब के असबाब की फ़ना है और दूसरी निशानी इज़हारे तजल्ली है। जहां असबाब की फ़ना है वहां इबारात गुम होती हैं। अगर इज्ज़ की ताबीर, इबारत से करें तो इज्ज़ की इबारत बजुज़ इज्ज़ के न होगी और जहां इज़हारे तजल्ली है वहां निशान नहीं होता और तमीज़ की कोई सूरत नज़र नहीं आती हत्ता कि आजिज़ भी नहीं जानता कि वह आजिज़ है या यह कि वह इज्ज़ से मंसूब है जिसकी बिना पर उसे आजिज़ कहें, इसकी भी सूरत नहीं। क्योंकि अज्ज़ ग़ैर है और

ग़ैर की मारिफ़त का इसबात, मारिफ़त नहीं है। जब तक दिल में ग़ैर की जगह है या आरिफ़ को ग़ैर की ताबीर की कुदरत है उस वक़्त तक मारिफ़त दुरुस्त नहीं होती और जब तक आरिफ़ ग़ैर से किनारा न करे, उस वक़्त तक आरिफ़ आरिफ़ नहीं होता तो तुम्हारा यह कहना किसी तरह भी सही नहीं है।

हज़रत अबू हफ़्स हद्दाद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुझे जब से इरफ़ाने हक़ हुआ है उस वक़्त से मेरे दिल में किसी हक़ व बातिल का ख़तरा नहीं आया इसलिये कि जब तक लोगों से ताल्लुक़ और ख़्वाहिश रहे उस वक़्त तक वह दिल पर असर अंदाज़ होता है और दिल उस असर को लेकर नफ़्स के हवाला कर देता है और नफ़्स बातिल का मुक़ाम है। इसी तरह जब किसी की मुहब्बत दिल में हमेशा रहेगी तो वह भी दिल पर असर अंदाज़ होगी और उस असर को लेकर रूह के सुपुर्द कर देगा क्योंकि रूह हक़ और हक़ीक़त का मनबअ है और जब दिल में ग़ैर का दख़ल हो तो उसकी तरफ़ आरिफ़ का रुजूअ करना मारिफ़त की मनाफ़ी है। लिहाज़ा तमाम लोग मारिफ़त की दलील की तलब भी दिल से करते हैं और हिर्स व हवा की तलब भी दिल ही से है और जब इन्हें अपनी मुराद हासिल न हुई तो उन्होंने दिल की तरफ़ रुजू न किया और ग़ैरे हक़ से राहत न पाई और सिर्फ़ हक़ तआला को पाया और इसी से लौ लगाए रखी और जब निशान व दलील की ज़रूरत पेश आयी तो हक़ तआला की तरफ़ रुजू किया और दिल की तरफ़ रुजू न किया। यह फ़र्क़ है उन बंदों के दर्मियान जो दिल की तरफ़ रुजू होते हैं या जो हक़ तआला की तरफ़ रुजू होते हैं।

हज़रत अबू बकर वासती रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

जिसने अल्लाह को पहचान लिया वह हर एक से न सिर्फ़ जुदा हो गया बल्कि गूंगा और दिल बरदाश्ता भी हो गया।

मतलब यह कि जिसने उसे पहचान लिया उसने दिल से तमाम अग़यार को निकाल दिया और उसकी ताबीर में गूंगा बनकर अपने औसाफ़ से फ़ानी हो गया।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि-

तेरी हम्द व सना को मैं घेर नहीं सकता।

जब तक आप ग़ैबत में रहे आप अरब में सबसे ज़्यादा फ़सीह थे आप फ़रमाते हैं कि मैं अरब व अजम में सबसे ज़्यादा फ़सीह हूं। और जब आपको

ग़ैबत से हुज़ूर में भेजा गया तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ किये हुए कि मेरी ज़ुबान तेरी हम्द व सना के कमाल को घेरने की ताब व तवां नहीं रखती। किस तरह तेरी हम्द व सना करूं। क़ाल से बेक़ाल और हाल से बेहाल हूं तू वही है जो तू है मेरी अर्ज़ या तो मेरी वजह से होगी या आपकी वजह से। अगर अपनी वजह से कहूं तो महजूब होता हूं अगर तेरी वजह से कहूं तो तेरी कुरबत की तहक़ीक़ में अपने इख़्तेयार में मायूब होता हूं लिहाज़ा में कुछ अर्ज़ नहीं कर सकता।

हक़ तआला की तरफ़ से फ़रमान हुआ कि ऐ महबूब! अगर तुम कुछ नहीं कह सकते तो हम फ़रमाते हैं कि यानी ऐ महबूब तुम्हारी ज़िन्दगानी की क़सम! जब आप सना से साकित हो गये हैं तो मैं जहान की हर चीज़ को तुम्हारा क़ायम मुक़ाम बनाता हूं जो भी मेरी सना करेगा वह तुम्हारी तरफ़ से मेरी सना करेगा। गोया उन सबकी सना तुम्हारे हवाले होगी और तुम अपनी तरफ़ से मेरे हुज़ूर पेश करोगे।

दूसरा कश्फ़

तौहीद के बयान में

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि-

तुम्हारा माबूद एक ही है।

नीज़ फ़रमाया-

तुम फ़रमा दो कि अल्लाह अकेला है।

नीज़ फ़रमाया-

तुम दो माबूद न बनाओ बिला शुबह माबूद एक ही है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि -

तुम से पहले एक शख़्स गुज़रा है जिसकी कोई नेकी तौहीद के सिवा न थी उसने अपने घर वालों से कहा जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना फिर ख़ाकस्तर को ख़ूब बारीक करके तेज़ हवा के दिन आधा ख़ुश्की में और आधा दरिया में बहा देना। घर वालों ने ऐसा ही किया अल्लाह तआला ने हवा और पानी से फ़रमाया जो तुमने फैलाया है उन सबको इकट्ठा करो और मेरे हुज़ूर लाओ। जब ख़ुदा के हुज़ूर वह पेश हुआ तो हक़ तआला ने उससे फ़रमाया तुझे किस चीज़ ने अपने साथ ऐसा सुलूक करने पर आमादा किया। उसने अर्ज़

किया खुदाया! मुझे तेरी हया दामनगीर थी इसलिये मैंने अपनी जान पर ऐसा ज़ुल्म किया है चुनांचे अल्लाह ने उसे बख़्श दिया।

तौहीद की हक़ीक़त यह है कि हक़ तआला को अकेला जाने और उस पर सही इल्म रखे चूँकि अल्लाह तआला एक है वह बे मिस्ल, अपनी ज़ात व सिफ़ात में बे नज़ीर और अपने अफ़आल में ला शरीक है तौहीद के मानने वाले मुसलमानो ने अल्लाह तआला को इन ही ख़ूबियों के साथ जाना है और इस जानने को तौहीद की यकताई कहा है।

तौहीद के अक़साम : तौहीद की तीन क़िस्में हैं एक हक़ तआला की तौहीद इसी के लिये यानी खुद हक़ तआला का इल्म है कि वह अकेला है। दूसरी हक़ तआला की तौहीद, मख़लूक़ के लिये। यानी ख़ुदा का हुक्म कि बंदे तौहीद तसलीम करें। और उसने बंदों के दिल में तौहीद पैदा फ़रमाई। तीसरी मख़लूक़ की तौहीद, ख़ुदा के लिये यानी मख़लूक़ का जानना कि अल्लाह एक है। लिहाज़ा बंदा जब हक़ के साथ आरिफ़ होता है तो वह उसकी वहदानियत की हक़ीक़त मालूम कर सकता है।

इसबाते तौहीद : वाज़ेह रहना चाहिये कि अल्लाह तआला एक है वह न वसल को क़बूल करता है न फ़सल को, न उस पर दुई जायज़ है और न उसकी वहदानियत अददी है। जो किसी के साबित हो जाने पर दो हो जाये। और उसकी वहदानियत अद्द बन जाये। और न वह महदूद है कि उसके लिये जिहात और सिमतों का तहक़्क़ुक़ हो और न उसके लिये मकान है और न वह किसी मकान में है कि उसके लिये मकान के इसबात की ज़रूरत लाहक़ हो। इसलिये कि अगर वह मकान में मुतमक्किन होता तो मकान के लिये भी मकान की हाजत होती। इस तरह फ़ेअल, फ़ायिल और क़दीम व हादिस का हुक्म बातिल हो जाता है न वह अरजी है कि वह किसी जौहर का मोहताज होता कि अपने महल में बाक़ी रहे और न वह जौहर है क्योंकि उसका वजूद अपनी ज़ात के सिवा दुरुस्त ही नहीं और न वह तबई है कि वह मुबदा-ए-हरकत व सुकून हो। और न वह रूह है कि किसी जिस्म का मोहताज हो। न व जिस्मी है कि उसके अज्ज़ाए तरकीबी हों और न वह चीज़ों में कुव्वत व हाल है कि चीज़ों की हम जिन्स हो। न कोई चीज़ उसके साथ पेवस्त व पेवंद है कि वह चीज उसका जुज़्व हो। उसकी ज़ात व सिफ़ात हर ऐब व नक़्स से पाक और हर आफ़त से मुनज़्ज़ह है और न वह किसी के मानिंद है कि अपने मानिंद के साथ दो हो

जाये। और न कोई औलाद है कि जिसकी मिस्ल, असल की इक़्तेज़ा करे और न उसकी ज़ात व सिफ़ात पर तग़य्युर जायज़ है कि उसका वजूद उससे मुतग़य्यर हो। और मुतगय्युर के हुक्म में तग़य्युर की मानिंद हो।

वह उन सिफात कमालिया से मुत्तसिफ़ है जिनका इसबात तमाम अहले तौहीद मुसलमान बसीरत करते हैं। क्योंकि ख़ुदा ने उनसे अपनी सिफ़ात ख़ुद बयान फ़रमाई हैं और वह उन सिफ़ात से पाक है जिन को मुलहिदीन अपनी ख़्वाहिश से मुत्तसिफ़ क़रार देते हैं क्योंकि ख़ुदा ने उनसे अपनी सिफ़ात ख़ुद बयान नहीं कीं।

अल्लाह तआला की सिफ़ात में से हेई, अ़लीम, रऊफ़, रहीम, मुरीद, क़दीर, समीअ, बसीर, मुतकल्लिम और बाक़ी है। इसका इल्म इसका हाल नहीं है ओर उसकी क़ुदरत, उसमें सख़्ती नहीं है। उसकी शुनवाई और बसारत में तजद्दुद यानी बार बार पैदाइश नहीं है और उस का कलाम ऐसा है जिसमें न बाज़ीयत है न तजदीद। वह हमेशा अपनी सिफ़ात के साथ क़दीम है और तमाम मालूमात उसके इल्म से बाहर नहीं और किसी मौजूद को उसके इरादे से मफ़र की राह नहीं। वही करता है जो वह चाहता है और वही चाहता है जो उसकी मशीयत है मख़लूक़ को उसमें कोई बुजुर्गी नहीं। उसका हर हुक्म हक़ है। उसके दोस्तों को बजुज़ तसलीम के कोई चारा नहीं उसका हुक्म हतमी और क़तई है उसके दोस्तों को उसकी फ़रमां बरदारी के सिवा कोई चारा नहीं। हर ख़ैर व शर उसका मुक़द्दर किया हुआ है उसके सिवा किसी से उम्मीद व ख़ौफ़ रखना लाईक़ नहीं। उसके सिवा कोई नफ़ा व नुक़सान का पैदा करने वाला नहीं। उसका हर हुक्म हिकमत पर मबनी है। उसका पूरा होना ज़रूरी है हर एक को उसी से वसल और उसी तक रसाई चाहिये। अहले जन्नत के लिये उसका दीदार जायज़ है, वह तशबीह व हुज्जत से पाक है। उसकी हस्ती पर मुक़ाबला व मवाजह की कोई सूरत नहीं। दुनिया में उसके दोस्तों के लिये मुशाहिदा जायज़ है। इंकार करना शर्त नहीं। जो ख़ुदा को इस तरह जानता है अहले क़तईअत से नहीं जो उसके ख़िलाफ़ जाने उसके लिये दयानत नहीं असल मज़्मून में उसूली और वसूली बकसरत अक़्वाल हैं जिसे तवालत के ख़ौफ़ से मुख़्तसर करता हूं।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने इब्तेदाए उनवान में लिख दिया है कि तौहीद यह है कि किसी चीज़ के

वहदानियत पर हुक्म करना है और यह हुक्म इल्म के सिवा नहीं किया जा सकता लिहाज़ा अहले सुन्नत व जमाअत तहक़ीक़ के साथ वहदानियत को हुक्म देते हैं इसलिये कि उन्होंने खुदा की लतीफ़ सनअतों, अजीब व बदीअ फ़ेलों और बकसरत लतायफ़ को देखा है और उस पर ग़ौर व फ़िक्र किया है। उनका अज़ खुद होना मुहाल जाना। उन्होंने हर चीज़ के अंदर हदूस की अलामतों को मौजूद पाया। ला महाला कोई फ़ाइल ऐसा चाहे जो उनको अदम से वजूद में लाये। मतलब यह कि खुदा ही की वह ज़ात है जिसने इस जहान ज़मीन व आसमान, चांद व सूरज, खुश्की व तरी और पहाड़ व सहरा, को वजूद बख़्शा। और उसी ने उन सब को हरकत व सकून इल्म व नुत्क़ और मौत व हयात के साथ पेदा फ़रमाया। लिहाज़ा उन सब के लिये कोई बनाने वाला और पैदा करने वाला लाज़मी होना चाहिये और यह सब दो या तीन बनाने वालों से मुस्तगनी है। वही एक बनाने वाला, कामिल, क़ायम, क़ादिर, मुख़्तार और हर एक शरीक से बे नियाज़ है। जब कोई फ़ेअल एक फ़ाइल से मुकम्मल न हो तो मज़ीद फ़ाइलो की ज़रूरत होती है और वह दोनों एक दूसरे के शरीक होते हैं। ला महाला बिला शक व शुबह और इल्मुल यक़ीन से जानना चाहिये कि एक ही सानेअ और फ़ाइल है इस मसले में नूर व जुलमत के इसबात में हमसे सनवियों ने इख़्तेलाफ़ किया है। मजूसियों ने यज़दां (खालिके खैर) और अहर मन (ख़ालिके शर) के इसबात में इख़्तेलाफ़ किया है। नेचरियों ने तबअ व कुव्वत के इसबात के साथ इख़्तेलाफ़ किया है। नजूमियों ने सात सितारों के इसबात के साथ इख़्तेलाफ़ किया है। और फ़िरक़ए मोतज़ला ने तो बेशुमार ख़ालिक़ों और सानेओं के इसबात के साथ इख़्तेलाफ़ किया है मैंने उन सबकी रद्द के लिये मुख़्तसर मगर जामेअ व मुकम्मल दलील बयान कर दी है चूंकि यह किताब उन के बेहूदा अक़वाल लाने की नहीं है इसलिये तालिबे इल्म को किसी और किताब का मुताला करना चाहिये। अब मैं मशायख़ के उन रुमूज़ की तरफ़ मुतवज्जोह होता हूं जो तौहीद के सिलसिले में फ़रमाते हैं।

तौहीद के सिलसिले में मशायख़ के रुमूज़ व इशारात

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-
तौहीद यह है कि क़दीम को हादिस से जुदा जाने।

मतलब यह है कि मोमिन क़दीम को महले हवादिस और हवादिस को महले क़दीम न समझे और जाने कि हक़ तआला क़दीम है और ख़ुद मुहदिस और जो तुम्हारी जिन्स से मख़लूक़ है वह भी हादिस है और कोई मख़लूक़ उससे मुलहिक़ नहीं और न उसकी सिफ़त, तुम जैसी मख़लूक़ में शामिल है क्योंकि क़दीम हादिस का हम जिन्स नहीं है। इसलिये कि क़दीम का वजूद मुहदिसात के वजूद से पहले है। जबकि मुहदिसात के वजूद से पहले क़दीम था और मुहदिस का मोहताज न था तो बाद वजूदे मुहदिस भी वह उसका मोहताज न होगा यह क़ायदा उन लोगों के बर ख़िलाफ़ है जो अरवाह को क़दीम कहते हैं। उनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है जब कोई क़दीम को मुहदिस में नाज़िल कहता है या मुहद्दिस को क़दीम के साथ मुताल्लिक़ जानता है वह हक़ तआला की क़दामत और आलम के हुदूस पर दलील नहीं रखता। यही मज़हब दहरियों का है।

ख़ुलासा यह कि मुहदिसात की तमाम हरकतें, तौहीद के दलायल, हक़ तआला की कुदरत की गवाह और उसके क़दीम होने का इसबात करती हैं। लेकिन बंदा उसमें बहुत ज़्यादा ग़ाफ़िल है कि वह उसके ग़ैर से मुराद चाहता है और उसके ग़ैर के ज़िक्र से राहत पाता है। जब कोई तुम्हारे वजूद व अदम में उसका शरीक नहीं है तो ना मुमकिन है कि तुम्हारी कुरबियत और परवरिश में ख़ुदा के सिवा कोई और शरीक हो।

हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तौहीद में पहला क़दम तफ़रीद का फ़ना करना है।

इसलिये कि तफ़रीद का हुक्म यह है कि किसी को आफ़तों से जुदा कर दे। और तौहीद का हुक्म यह है कि ख़ुदा को हर चीज़ से अकेला जाने। तफ़रीद में ग़ैर का इसबात रवा था और उसके ग़ैर के लिये इसका इसबात दुरुस्त। लेकिन वहदानियत में ग़ैर का इसबात नारवा है और यह किसी ग़ैर के लिये साबित करना दुरुस्त नहीं। और न ऐसा समझना चाहिये कि तफ़रीद में इश्तेराक की ताबीर है और तौहीद में शिर्कत की नफ़ी। इसलिये तौहीद में पहला क़दम ही शरीक की नफ़ी, और रास्ता या मज़ाज का दूर करना है। क्योंकि रास्ता में मज़ाज का होना ऐसा है जैसे चिराग़ की रौशनी में रास्ता ढूंढा जाये।

हज़रत हिज़रमी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

यानी तौहीद में हमारे पांच उसूल हैं हदस का इरतिफ़ा, क़दम का इसबात,

तर्के औतान भाईयों से जुदाई और हर इल्म व जहल का भूल जाना।

लेकिन हद्स के इर्तफ़ा का मतलब! तौहीद की मुक़ारनत से मुहदिसात की नफ़ी करना हैं और ख़ुदा की मुक़द्दस ज़ात पर हवादिस को मुहाल जानना है। और इसबाते क़दम का मतलब अल्लाह तआला को हमेशा से मौजूद मानना है। इसकी तशरीह हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के क़ौल से की जा चुकी है। और तर्के औतान का मतलब! नफ़्स की उलफ़तों दिल की राहतों और तबीयत की क़रारगाहो से हिजरत करना यानी छोड़ना है। और मुरीदों के लिये दुनियावी रस्मों, बुलंद मुक़ामों, इज़्ज़त की हालतों और ऊंची मंज़िलतों से हिजरत करना है। और भाईयों से जुदाई का मतलब लोगों की सोहबत से किनारा कशी करना और सोहबते हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह होना है क्योंकि वह हर ख़तरा जो मुवहि्हद के दिल पर ग़ैर के अंदेशा से लाहक़ हो हिजाब व आफ़त है। और जितना दिल में ग़ैर का अंदेशा होगा उतना ही वह महजूब होगा। इसलिये कि तमाम उम्मतों का इजमा है कि तौहीद तमाम हिम्मतों का जमा करना है और ग़ैर के साथ आराम पाना हिम्मत का तफ़रक़ा है। और हर इल्म व जहल के भूल जाने का मतलब तौहीद में यह है कि मख़लूक़ का इल्म या तो ख़ूबी से होगा या कैफ़ियत से या जिन्स से या तबीयत से। मख़लूक़ जो इल्म भी हक़ तआला की तौहीद में साबित करेगी तौहीद उसकी नफ़ी करेगी और जो कुछ जहल से साबित करोगे वह अपने इल्म के बर ख़िलाफ़ होगा क्योंकि तौहीद में जहल है ही नहीं। और तौहीद के मुतहक़्क़क़ होने में इल्म तसव्वुफ़ की नफ़ी के बग़ैर दुरुस्त नहीं होगा। और इल्म व जहल तसर्रुफ़ के बग़ैर नहीं। एक बसीरत पर है और दूसरा ग़फ़लत पर।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत हिज़्रमी रहमतुल्लाह अलैहि की मजलिस में सो गया मैंने ख़्वाब में देखा कि आसमान से दो फ़रिश्ते ज़मीन पर आये हैं कुछ अर्सा मैं उनकी गुफ़्तगू सुनता रहा। एक ने दूसरे से कहा कि जो कुछ यह शख़्स कहता है तौहीद का इल्म है न कि ऐने तौहीद। जब मैं बेदार हुआ तो वह तौहीद पर बयान फ़रमा रहे थे उन्होंने मेरी तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया ऐ फ़लां! तौहीद का बयान इल्म के बग़ैर हो ही नहीं सकता।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

असल तो यह है कि जब हक़ तआला अपनी क़ुदरत की गुज़रगाह में अपनी तदबीर का तसर्रुफ़ उस पर जारी फ़रमाये तो वह ख़ुदा के सामने एक पुतला

बन जाये और दरियाए तौहीद में अपने इख़्तेयार व इरादा से ख़ाली हो जाये और अपने नफ़्स को फ़ना करके लोगों के बुलाने पर कान न धरे। ओर न उसकी तरफ़ इल्तेफात करे और महले ख़ैरियत में अपनी हिस व हरकत ख़त्म कर दे। और वहदानियत की मारिफ़त व हक़ीक़त के सबब वह हक़ के साथ क़ायम हो हक़ ने जो उसके लिये इरादा फ़रमाया है उसे क़बूल करे ताकि इस महल में बंदा का अख़ीर पहले की मानिंद हो जाये और वह ऐसा हो जाये कि जो कुछ है अपनी हस्ती से पहले है।

लिहाज़ा इस इरशाद का मतलब यह है कि मुवहि्हद को इख़्तेयारे हक़ में इख़्तेयार न रहे और उसकी वहदानियत में बंदा अपने आपको न देखे इस तरह कि महले क़ुरबत में बंदा का नफ़्स फ़ानी, हवास गुम, और ख़ुदा जैसा चाहे उस पर अपने अहकाम जारी करे। और बंदा अपने तसर्रुफ़ के फ़ना में ऐसा हो जायेगा गोया कि वह ज़र्रा है जैसा कि अज़ल में हालते तौहीद के अंदर था जहां कहने वाला भी हक़ तआला था और जवाब देने वाला भी हक़ तआला। और इस ज़र्रा का निशान भी वह ही, जिस बंदे की हालत इस तरह की हो जाये वह लोगों से राहत नहीं पाता। कि वह लोगों की पुकार को क़बूल करे। इसे किसी के साथ उन्स व मुहब्बत नहीं होती कि वह उनकी दावत को क़बूल करे। उस क़ौल का इशारा फ़नाए सिफ़त ओर मुशाहिदा-ए-जलाल के ग़लबा की हालत में सेहते तसलीम की तरफ़ है ताकि बंदा अपने औसाफ़ से फ़ानी होकर आला और जौहर लतीफ़ बन जाये। यहां तक कि अगर उसके जिगर में नेज़ा मारा जाये और वह आर पार हो जाये तो उसे ख़बर तक न हो। और अगर तलवार मारी जाए तो बे इख़्तेयारी में कट जाये। गोया हर हाल में सबसे फ़ानी और उसका वजूद मज़हरे असरारे इलाही हो जाये ताकि उसका कलाम हक़ का कलाम उसके फ़ेअल की निसबत हक़ तआला की तरफ़ और उसके सिफ़त का क़याम उसी के साथ हो जाये और सुबूते हुज्जत के लिये शरीअत का हुक्म तो उस पर बाक़ी हो मगर वह हर एक की रोइयत से फ़ानी हो।

यह शान और यह सिफ़त हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की थी कि शबे मेराज जब आपको मुक़ामे कुर्ब में पहुंचाया गया तो मुक़ाम का तो फ़ासला था लेकिन कुर्ब में फ़ासला न था और आप का हाल लोगों से दूर और उनके औहाम से मारवा था। यहां तक कि दुनिया ने आपको गुम किया और आप ख़ुद अपने से गुम हो गये। फ़नाए सिफ़त में बे सिफ़त होकर मुतहय्यर

हो गये ततीबे तबाय और एतेदाल मिज़ाज परागंदा हो गये। नफ़्स, दिल की जगह जान के दर्जे में जान सर के मर्तबे में, और सर कुर्ब की सिफ़त में पहुंचा गोया सब में से जुदा हो गये। चाहा कि वजूद छोड़ें, तशख़्ख़ुस खत्म करें लेकिन हक़ तआला की मुराद इक़ामते हुज्जत थी फ़रमान हुआ कि ऐ महबूब अपने हाल पर रहो! इस कलाम से कुव्वत पाई वह कुव्वत उसकी कुव्वत बनी और अपनी फ़ना से हक़ का वजूद ज़ाहिर हुआ। चुनांचे आप फ़रमाते हैं कि-

मैं तुम में से किसी की मानिंद नहीं मैं अपने रब के हुज़ूर रात गुज़ारता हूं वही मुझे खिलाता और पिलाता है।

बारगाहे ख़ुदावंदी में मेरा एक वक़्त ऐसा भी होता है जहां मेरे साथ मुक़र्रब फ़रिश्ता या किसी नबी मुरस्सिल की भी रसाई नहीं।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तौहीद यह है कि तुम एतेक़ाद रखो कि ज़ाते इलाही इल्म के साथ मौसूफ़ है बग़ैर इसके कि तुम अक़्ल से समझ सको या हवास से पा सको दुनिया में आंखें उसे देख नहीं सकतीं ज़ाते इलाही ईमानी हक़ायक़ के साथ बेहद व निहायत मौजूद है। हवास से पाने के सिवा आने जाने में मौजूद है और अपने मुल्क में अपनी सनअत व कुदरत से ज़ाहिर है वह किसी में हुलूल किया हुआ नहीं है। आख़िरत में उसकी मुल्क व कुदरत में ज़ाहिरी और बातनी तौर पर आंखें उसे देखेंगी। दुनिया में मखलूक़ उसकी ज़ात की हक़ीक़त की मारिफ़त से महजूब है। वह अजायब व आयात के इज़्हार के ज़रिये राह दिखाता है और दिल उसे पहचानते हैं। मख़लूक़ की अक़्ली कैफ़ियत के साथ उसका इदराक नहीं कर सकतीं और आख़िरत में मुसलमान उसे सर की आंखों से देखेंगे बग़ैर इसके कि उसकी ज़ात का अहाता करें या उसकी हद व ग़ायत का इदराक करें।

तौहीद में उसकी अलफ़ाज़ जामेअ हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

तौहीद के बयान में सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग व अशरफ़ कलाम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है। आप फ़रमाते हैं कि पाक है वह ज़ात जिसने मख़लूक़ को अपनी मारिफ़त की राह न दिखाई बजुज़ मारिफ़त में उनकी आजिज़ी के।

एक जहान इस कलाम से ग़लती में मुब्तला है वह गुमान करते हैं कि मारिफ़त में इज्ज, बे मारिफ़ती है। हालांकि यह मुहाल है इसलिये कि मौजूदगी की हालत

में इज्ज की शक्ल पैदा होती है और मादूम की सूरत में इज्ज़ की शक्ल ज़ाहिर नहीं होती। मसलन मुर्दे में ज़िन्दगी नहीं है बल्कि मौत में मौत से आजिज़ है। इसलिये कि इज्ज़ का नाम उसकी कुव्वत मुहाल जानती है। इसी तरह अंधा बीनाई से आजिज़ नहीं होता बल्कि ना बीनाई से आजिज़ होती है। इसी तरह लंगड़ा, खड़े होने से आजिज़ नहीं होता बल्कि बैठने की हालत में बैठने से आजिज़ होता है। यही हालत आरिफ़ का है कि वह मारिफ़त से आजिज़ नहीं होता चूंकि मारिफ़त तो मौजूद है और यह उसके लिये ज़रूरत व बद यही की मानिंद है। लिहाज़ा हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस क़ौल को इस पर महमूल करेंगे जैसा कि हज़रत अबू सहल की और उस्ताज़ अबू अली वक़ाक़ फ़रमाते हैं कि मारिफ़त इबतेदा में तो नज़री और कसबी होती है लेकिन इंतेहा में ज़रूरी व बदी ही बन जाती है। और इल्म ज़रूरी यह है कि उसका आलिम, उसके वजूद की हालत में उसे दूर करने या हासिल करने से आजिज़ हो। इस क़ौल के बमूजिब बंदे के दिल में तौहीद का होना, फ़ेअल हक़ होगा।

हज़रत शिवली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

तौहीद मुवहिद्द के लिये जमाल अहदियत से हिजाब है।

इसलिये कि वह तौहीद को बंदा का फ़ेअल कहते हैं। ला मुहाला बंदा का फ़ेअल मुशाहिदा-ए-इलाही के लिये इल्लत नहीं बन सकता। और जो चीज़ ऐन कश्फ़ में, कश्फ़ की इल्लत न हो वह हिजाब है हालाकि बंदा अपने तमाम औसाफ़ के साथ ग़ैर होता है इसलिये कि जब बंदा अपनी सिफ़त को हक़ जानेगा तो जिसकी यह सिफ़त है यानी वह मौसूफ़ भी हक़ होगा। क्योंकि मौसिफ़ की ही तो यह सिफ़त है उस वक़्त मुवहि्हद तौहीद और अहद, तीन वजूद क़ायम हो जायेंगे जो एक दूसरे की इल्लत होंगे। यह बात नसारा के अक़ीदा के मुताबिक़ सालिस सलासा के हू बहू बन जायेगी। और जब तक तालिब के लिये कोई सिफ़त भी तौहीद में फ़ना के माने रहेगी उस वक़्त तक वह उस सिफ़त में महजूब रहेगा और ख़ालिस मुवहि्हद न बन सकेगा। इसलिये को ख़ुदा के सिवा हर मौजूद बातिल है जब यह बात दुरुस्त है तो ऐसा तालिब जमाले हक़ के मुशाहिदे में सिफ़ते ग़ैर की तलब की वजह से बातिल होगा। यही तफ़सीरे कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह की है।

हिकायत : हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि कूफ़ा में जब हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि से मुलाक़ात करने गये,

तो हज़रत हुसैन बिन मंसूर ने उनसे दर्याफ़्त किया कि ऐ इब्राहीम! अब तक तुम्हारे हालात कहां और कैसे गुज़रे हैं? उन्होंने फ़रमाया अब तक मैं अपने तवक्कुल को दुरुसत करता रहा हूं। हज़रत हुसैन ने फ़रमाया-

ऐ इब्राहीम! अपने बातिन की आबादी ही में तुमने तो उम्र ज़ाया कर दी तौहीद में फना होने का ज़माना कब आयेगा।

ग़र्ज़ कि बयान तौहीद में मशायख़ के बकसरत अक़्वाल हैं। कोई ऐसी फ़ना कहता है जिसकी फ़ना पर मअय्यत दुरुस्त न हो और कोई कहता है कि अपनी फ़ना के बग़ैर सिफ़ते तौहीद दुरुस्त नहीं होती। हुसूले इल्म के लिये इस बात को जमा व तफ़रक़ा पर क़यास करना चाहिये।

हुजूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बंदे के लिये तौहीदे इलाही ऐसी मख़्फ़ी हक़ीक़त है जिसे बयान व इबारत से ज़ाहिर नहीं किया जा सकता। हत्ता कि अगर कोई इसके बयान का दावा करता है तो वह या वह गो है। क्योंकि बयान करने वला और उसकी इबारत दोनों ग़ैर हैं, और तौहीद में ग़ैर का इसबात शिर्क है। अगर ऐसा करता है तो यह उसकी बेहूदगी है क्योंकि मुवह्हिद, रब्बानी होता है न कि या वह गो और खिलाड़ी।

तीसरा कश्फ़

हिजाबे ईमान के बारे में

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ।

बकसरत इरशाद फ़रमाता है-

सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

ईमान यह है कि तुम अल्लाह उसके फ़रिश्ते और उसकी किताबों पर ईमान लाओ।

ईमान के लग़वी मअ़ने तसदीक़ यानी दिल से मानने के हैं। और शरीअत में इसबाते ईमान के लिये बकसरत अहकाम व अक़्वाल और बाहम इख़्तिलाफ़ मज़कूर है।

मोतज़ला तमाम ताअतों को ईमान का इल्म और उसका मामला कहते हैं उनका मज़हब यह है कि बंदा गुनाहे कबीरा के इर्तेकाब से ख़ारिज अज़ ईमान हो जाता है। ख़्वारिज का भी यही मज़हब है वह भी मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर

कहते हैं। और एक गरोह ईमान को कौले मुफ़रद कहता है। एक गरोह सिर्फ़ मारिफ़त को ईमान कहता है और अहले सुन्नत के अरबाबे कलाम की एक जमाअत मुतलक़ तसदीक़ को ईमान कहती है। मैंने इस बहस में एक मुस्तक़िल किताब अलाहदा लिखी है। यहां तो सिर्फ़ सूफ़िया के एतेक़ाद का इसबात मक़सूद है।

सूफ़िया का एतेक़ाद : जम्हूरे सूफ़िया के नज़दीक ईमान की दो क़िस्में हैं जिस तरह कि फ़ुक़हा के नज़दीक हैं। चुनांचे अहले यक़ीन की एक जमाअत का एतेक़ाद यह है कि क़ौल व अमल और तसदीक़ के मजमूआ का नाम ईमान है। इनमें हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़, बशर हाफ़ी, ख़ैरुन्नसाज, समनूनुल मुहिब, अबू हमज़ा बग़दादी और अबू मुहम्मद जरीरी रहमहुमुल्लाह के सिवा बकसरत मशायख़ हम ख़्याल हैं।

एक गरोह का यह एतेक़ाद है कि क़ौल और तसदीक़ का नाम ईमान है। इनमें हज़रत इब्राहीम बिन अदहम जुन्नून मिस्री, बा यज़ीद बुसतामी, अबू सुलेमान दुर्रानी, हारिस मुहासबी जुनैद बग़दादी, सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी, शफ़ीक़ बलख़ी, हातिम असम, और मुहम्मद बिन फ़ज़ल बलख़ी रहमहुमुल्लाह के सिवा बकसरत मशायख़ और फ़ुक़हाए उम्मत हैं। चुनांचे इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई इमाम अहमद बिन हंबल वग़ैरह पहले क़ौल के क़ायल हैं। और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा हसन बिन फ़ज़ल बलख़ी और इमामे आज़म के दीगर तलामिज़ा जैसे इमाम मुहम्मद बिन हसन, हज़रत दाऊद ताई इमाम अबू यूसुफ़ रहमहुमुल्लाह दूसरे क़ौल के क़ायल हैं। दर हक़ीक़त यह इख़्तेलाफ़ लफ़्ज़ी है वरना मअ़ने व मक़सूद में सब मुत्तफ़िक़ हैं।

ईमान की असल वफ़रअ : वाज़ेह रहना चाहिये कि अहले सुन्नत व जमाअत और अरबाबे तहक़ीक़ व मारिफ़त के दर्मियान इत्तेफ़ाक़ है कि ईमान में असल भी है और फ़रअ भी, असल ईमान, तसदीक़ क़लबी है और उसकी फ़रअ अवामिर व नवाही की बजा आवरी है। अहले अरब का उर्फ़ है कि वह किसी फ़रई बात को बतौर इस्तेआरा असल कहते हैं जैसे कि तमाम लुग़तों में शुआअ आफ़ताब को आफ़ताब कहा गया है। इसी लिहाज़ से वह गरोह ताअतों को ईमान कहता है क्योंकि बंदा ताअत के बग़ैर अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ नहीं रहता न महज़ तसदीक़ महफ़ूज़ रहने का इक़्तिज़ा है जब तक कि वह तसदीक़ के साथ अहकाम भी न बजा लाये। लिहाज़ा जिस की ताअतें ज़्यादा होंगी वह अज़ाबे इलाही से ज़्यादा महफ़ूज़ होगा। चूंकि तसदीक़ व क़ौल के साथ, ताअत

महफ़ूज़ रहने की इल्लत है। इसलिये इसको भी ईमान कह देते हैं।

एक गरोह का एतेक़ाद यह है कि अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहने की इल्लत मारिफ़त है न कि ताअत? अगरचे ताअत भी मौजूद हो। जब तक मारिफ़त न हो ताअत फ़ायदा नहीं पहुंचाती। लेकिन जब मारिफ़त मौजूद हो अगरचे ताअत मौजूद न हो तो नतीजा में वह निजात पायेगा। अगरचे यह बात मुसल्लम है कि निजात का हुक्म तहते मशीयते इलाही है कि अगर वह चाहे तो वह अपने फ़ज़्ल से दरगुज़र फ़रमाये या हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफ़ाअत से बख़्श दे या चाहे तो उसके जुर्म के मुताबिक़ सज़ा दे और दोज़ख़ में भेज दे इसके बाद बंदे को जन्नत में मुन्तक़िल कर दिया जाये। लिहाज़ा असहाबे मारिफ़त अगरचे मुजरिम हों बहुक्मे मारिफ़त वह हमेशा दोज़ख़ में न रहेंगे और सिर्फ़ अहले अमल जो बे मारिफ़त हैं जन्नत में नहीं आयेंगे इससे मालूम हुआ कि ताअत महफ़ूज़ रहने की इल्लत नहीं हो सकती। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

तुम में से कोई भी अपने अमल की वजह से हरगिज़ निजात नहीं पायेगा किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप भी नहीं? आपने फ़रमाया हां मैं भी नहीं लेकिन अल्लाह तआला ने अपन रहमत में मुझे ढांप लिया है।

लिहाज़ा बिला इख़्तेलाफ़े उम्मत, अज़रुए तहक़ीक़ ईमान मारिफ़त है और इक़रार अमल को बजा लाना है और जिसे ख़ुदा की मारिफ़त होगी उसको उसके किसी वस्फ़ की भी मारिफ़त होगी।

हक़ तआला के औसाफ़े हसना तीन क़िस्म के हैं जमाल, जलाल और कमाल। मख़लूक़ को इसके कमाल की गहराईयों तक रसाई नहीं बजुज़ इसके कि वह इसके कमाल का इसबात व एतेराफ़ कर ले। और इससे नक़्स व ऐब की नफ़ी करे। और जो जमाले हक़ का मारिफ़त में मशाहिदा करता है वह हमेशा दीद का मुश्ताक़ रहता है। जो जलाले हक़ का मुशाहिदा करता है वह हमेशा अपने औसाफ़ से मुतनफ़्फ़िर रहता है और उसका दिल महले हैबत में रहता है। लिहाज़ा शौक़, मुहब्बत की तासीर है और बशरी औसाफ़ से नफ़रत भी ऐसा ही है। इसलिये कि बशरी औसाफ़ के हिजाब का कश्फ़, ऐन मुहब्बत के बग़ैर नहीं हो सकता। इससे मालूम हुआ कि ईमान व मारिफ़त का नाम मुहब्बत है और अलामाते मुहब्बत, ताअत है। इसलिये कि जब दिल मुशाहिदे का महल है और आंखें दीद का मुक़ाम और जान जाये इबरत है। तो जिस्म और दिल

मुशाहेदा का मुक़ाम ठहरा। लिहाज़ा जिस्म के लिये सज़ावार यही है कि वह तारके अवामिर व नवाही न हो। और जिसका जिस्म तारिक हो उसे मारिफ़त की हवा तक नहीं लगती। आज कल यह ख़राबी बनावटी सूफ़ियों में ज़ाहिर है क्योंकि इन मुलहिदों ने जब औलिया-ए-हक़ के जमाल की ख़ूबियां देखीं और उनकी क़द्र व मंज़िलत को जाना तो वह अपने आपको इनका जैसा बताने लगे। और कहने लगे कि यह रंज व मुशक़्क़त तो उस वक़्त तक थी जब तक मारिफ़त न हो और जब मारिफ़त हासिल हो गयी तो जिस्म से ताअत की मुशक़्क़त जाती रहती है हालांकि यह ग़लत है। हम कहते हैं कि जब मारिफ़त हासिल हो गयी तो दिल शौक़ का महल बन गया। उस वक़्त फ़रमान की ताज़ीम और ज़्यादा हो जाती है न कि सिरे से ही मादूम? अगरचे उसे हम जायज़ जानते हैं कि फ़रमांबरदार उस दर्जा तक पहुंच जाता है कि उससे ताअत की मुशक़्क़त उठ जाती है और उसे बिल्कुल बार मालूम नहीं होता। और फ़रमान की बजा आवरी में उसे इतनी ज़यादा तौफ़ीक़ मिल जाती है कि लोग तो उसे मुशक़्क़त समझते हैं लेकिन वह उसे बे मुशक़्क़त अदा करता है। यह बात उस वक़्त हासिल होती है जब उसमें कमाले तड़प और बेक़रारी पैदा हो जाये।

एक गरोह का यह एतेक़ाद है कि ईमान कुल्लियतन हक़ तआला की तरफ़ से है और एक गरोह के नज़दीक कुल्लियतन बंदे की तरफ़ से है। यह इख़्तेलाफ़ मावराउन्नहर के लोगों में तूल पकड़ गया है लिहाज़ा जो लोग उसे कुल्लियतन हक़ की तरफ़ मंसूब करते हैं वह ख़ालिस जबरी हैं इसलिये कि बंदा को चाहिये कि वह इसके हुसूल में बेक़रार रहे। और जो लोग उसे कुल्लियतन बंदा की तरफ़ से कहते हैं वह ख़ालिस कदरी हैं। इसलिये कि बंदा आलामे इलाही के बग़ैर उसे जान ही नहीं सकता। हालांकि तौहीद की राह जबर व कदर के दर्मियान है यानी जबर से नीचे और कदर के ऊपर।

दर हक़ीक़त ईमान बंदे का फ़ेअल है जो हक़ तआला की हिदायत के साथ शामिल है क्योंकि जिसे ख़ुदा गुमराह करे उसे कोई हिदायत पर ला नहीं सकता। और जिसे ख़ुदा हिदायत पर लाये उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। अल्लाह तआला का इरशाद है-

जिसे अल्लाह हिदायत पर लाना चाहे तो सीना को इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे वह गुमराह करना चाहे तो उसके सीना को सख़्त और तंग कर देता है।

इस इरशाद के बमोजिब बंदा के लिये यही ज़ेबा है कि वह हिदायत की तौफ़ीक़ को हक़ तआला से और फ़ेअल ईमान को ख़ुद अपने से मंसूब करे।

अलामाते ईमान : ईमान की अलामतों में से यह है कि बंदा दिल से तौहीद का एतक़ाद रखे, आंखों को ममनूआत से बचाए, हक़ तआला की निशानियों और आयतों से इबरत हासिल करे, कानों से कलामे इलाही की समाअत करे, मेअदे को हराम चीज़ों से ख़ाली रखे, ज़ुबान से सच बोले और बदन को मनहियात से इस हद तक महफ़ूज़ रखे कि बातिन, ज़ाहिर से मुत्तहिद हो जाये। यह सब ईमान की अलामात हैं। इसी बिना पर एक गरोह ने मारिफ़ते ईमान में कमी व बेशी को जायज़ रखा। हालांकि सबका इत्तेफ़ाक़ है कि मारिफ़ते ईमान में कमी व बेशी जायज़ नहीं। क्योंकि अगर मारिफ़त में कमी व बेशी को माना जाये तो मारूफ़ में भी कमी व बेशी लाज़िम आती है जबकि मारूफ़ में कमी व बेशी जायज़ व मुमकिन ही नहीं तो मारिफ़त में भी जायज़ न होनी चाहिये इसकी वजह यह है कि मारिफ़त में नक़्स व कमी नहीं होती है। लिहाज़ा यही मुनासिब है कि फ़रअ और अमल में कमी बेशी न हो। अलबत्ता बिल इत्तेफ़ाक़ ताअत में कमी व बेशी जायज़ है और हशवियों के लिये जो इन दोनों तबक़ों से निसबत का दावा करते हैं यह मसला इनके लिये दुश्वार है क्योंकि हशवियों का एक गरोह ताअत को भी जुज़ वे ईमान कहता है। एक गरोह तो सिर्फ़ क़ौल ही को ईमान कहता है हालांकि यह दोनों बातें बे इंसाफ़ी की हैं।

गर्ज़ कि हक़ीक़त ईमान यह है कि बंदे के तमाम औसाफ़, तलबे हक़ में मुस्तग़रक़ हूं। और तमाम अहले ईमान को इस पर इत्तेफ़ाक़ करना चाहिये कि सुलताने मारिफ़त का ग़लबा, ना मरग़ूब औसाफ़ को मग़लूब कर देता है और जहां जहां ईमान हो वहां वहां से उससे इंकार के असबाब दूर हो जाते हैं जैसा कि मक़ूला है।

जब सुबह तुलूअ हो जाती है तो चिराग़ बेकार हो जाते हैं।

और दिन के लिये किसी दलील व बयान की हाजत नहीं होती। इसी के हम मअने किसी का यह मक़ूला भी है कि- *रोज़े रौशन रा दलीले नबाशद*

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

सलातीन जब किसी बस्ती पर ग़ालिब होकर दाख़िल होते हैं तो उसे वीरान कर देते हैं।

जब आरिफ़ के दिल में मारिफ़त की हक़ीक़त ग़ालिब होकर दाख़िल हो

जाती है तो ज़न व शक और इंकार की ताक़त फ़ना कर देती है। और सुल्ताने मारिफ़त (हक़ तआला) इसके हवास और ख़्वाहिशात को अपना गरवीदा बना लेता है। ताकि वह जो कुछ करे, देखे और जो कहे सब इसी के ज़ेरे फ़रमान हो।

हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि से लोगों ने दर्याफ़्त किया कि ईमान की हक़ीक़त क्या है? आपने फ़रमाया फ़िलहाल इसका जवाब नहीं दूंगा। इसलिये कि जो कुछ कहूंगा वह लफ़्ज़ व इबारत होंगे और मेरे लिये यह ज़रूरी है कि मैं मामला के साथ जवाब दूं। चूकि मैं मक्का मुकर्रमा जाने का इरादा रखता हूं इस ग़र्ज़ के लिये तुम भी मरे साथ चलो ताकि तुम उसका जवाब पा सको। रावी का कहना है कि मैंने वैसा ही किया जब मैं इनके साथ जंगल में पहुंचा तो हर रोज़ दो रोटी और दो गिलास पानी ग़ैब से नमूदार होते रहे जिसे एक मेरे आगे और एक अपने आगे रख लेते यहां तक कि उस जंगल में एक रोज़ एक बूढ़ा सवार आया जब उसने इनको देखा तो घोड़े से उतरकर मिज़ाज पुरसी की फिर कुछ देर बातें करके सवार होकर चला गया। मैंने अर्ज़ किया ऐ शेख़! यह बूढ़ा कौन था? उन्होंने फ़रमाया यह तुम्हारा सवाल का जवाब था। मैंने पूछा किस तरह? फ़रमाया वह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने मेरे साथ रहने की इजाज़त चाही मैंने मंजूर नहीं किया। मैंने कहा कि आपने क्यों इंकार फ़रमाया? उन्होंने जवाब दिया मुझे ख़तरा था कि इनकी सोहबत में मेरा एतेक़ाद हक़ तआला के सिवा इनके साथ न हो जाये। इसी तरह मेरा तवक्कुल बरबाद हो जाये। क्योंकि ईमान की हक़ीक़त तवक्कुल की हिफ़ाज़त है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

अल्लाह तआला ही पर तवक्कुल रखो अगर तुम साहबे ईमान हो।

हज़रत मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

ईमान यह है कि जो ग़ैब से उसके दिल पर इंकेशाफ़ हो उस पर यक़ीन रखे।

इसलिये ईमान ग़ैब के साथ है। और अल्लाह तआला सर की आंखों से ग़ायब है। जब तक माअ़ना में तक़वियत न हो बंदा का यक़ीन ज़ाहिर नहीं हो सकता। और यह अल्लाह तआला के मालूम कराने से हासिल होता है। जब आरिफ़ों का तार्रुफ़ करने वाला और आलिमों को मालूम कराने वाला अल्लाह तआला ही है और वही उनके दिलों में मारिफ़त व इल्म पैदा करता है तो इल्म

व मारिफ़त का इख़्तेयार बंदे के कसब से जाता रहा। लिहाज़ा जिसका दिल मारिफ़ते इलाही पर यक़ीन रखता है वह मोमिन है और हक़ तआला के साथ वासिल है। अहले बसीरत के लिये इस क़दर बयान काफ़ी है चूंकि इस किताब में जगह जगह मक़सूद की वज़ाहत की जा चुकी है अब असरारे मामलात के हिजाबात खोलता हूं।

चौथा कश्फ़

हिजाब नजासत से पाक होने के बयान में

ईमान के बाद सबसे पहला फ़र्ज़ तहारत है ख़ास कर नमाज़ की अदायगी के लिये तहारते बदनी यह है कि तमाम जिस्म को नजासत व जनाबत से पाक करे और शरीअत के इत्तेबा में तीन अंदामों को धोकर सर का मसह करे। अगर पानी मयस्सर न हो या मर्ज़ की ज़्यादती का अंदेशा हो तो तयम्मुम करे, इनके अहकाम सब को मालूम हैं।

वाज़ेह रहना चाहिये कि तहारत दो क़िस्म की है एक बातिनी तहारत, दूसरी ज़ाहिरी तहारत, चुनांचे ज़ाहिरी तहारत के बग़ैर नमाज़ दुरुस्त नहीं और बातिनी तहारत के बग़ैर मारिफ़त दुरुस्त नहीं है। बदनी तहारत के लिये मुतलक़ पानी का हाजत है जोकि नापाक या इस्तेमाल किया हुआ न हो। और दिल की तहारत के लिये ख़ालिस तौहीद के पानी की ज़रूरत है जोकि मख़लूत और परागंदा एतेक़ाद पर मुश्तमिल न हो। तरीक़त के मशायख़ ज़ाहिरी तौर पर हमेशा पाक व ताहिर होते हैं और बातिनी हालत में भी तौहीद के साथ पाक व मोतह्हर होते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी से इरशाद फ़रमाया-

हमेशा वुज़ू से रहो तुम्हें तुम्हारा मुहाफ़िज़ दोस्त रखेगा।

जो लोग ज़ाहिरी तहारत पर अमल पैरा रहते हैं फ़रिश्ते उनको दोस्त रखते हैं। और जिस का बातिन तौहीद से पाक व मोतहहर है अल्लाह तआला उनको दोस्त रखता है।

सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा अपनी दुआओं में यह कहा करते थे कि-

ऐ ख़ुदा मेरे दिल को बातिनी आलूदगियों से पाक रख।

और किसी क़िस्म की बातिनी आलूदगी आपके क़ल्बे अतहर तक नहीं

पहुंच सकी। अपनी बुजुर्गियों को देखना ग़ैर ख़ुदा का इसबात करना है, और ग़ैर का इसबात मुक़ामे तौहीद में निफ़ाक़ डालना है माना कि मुरीदाने बा सफ़ा अपने मशायख़ की करामतों और बुजुर्गियों को सुरमा-ए-सीरत बनाते हैं। लेकिन आख़िरकार उनके कमाल के मुक़ाम पर बहुत बड़ा हिजाब है इसलिये कि जो भी ग़ैर हुआ उसकी दीद आफ़त है।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं-

आरिफ़ों का निफ़ाक़, मुरीदों के इख़्लास से अफ़ज़ल है।

मतलब यह है कि जो मुरीद का मुक़ाम होता है वह कामिल का हिजाब है। मुरीद की हिम्मत यह होती है कि करामत हासिल करे और कामिल की यह हिम्मत होती है कि करामत देने वाले को पाये। ग़र्ज़ कि इसबाते करामत, अहले हक़ के लिये निफ़ाक़ नज़र आता है। क्योंकि इसकी दीद भी मुआइना-ए-ग़ैर है इसी तरह हक़ तआला के दोस्त जिसे आफ़त जानते हैं। इसे तमाम गुनाहगार मासीयत से निजात समझते हैं और गुनाहगारों के मआसी को गुमराह लोग निजात जानते हैं। क्योंकि अगर काफ़िर जानते हैं कि उनके गुनाह ख़ुदा को ना पसंद हैं जैसा कि गुनाहगार जानते तो वह कुफ़्र से निजात पाते और गुनाहगार जानते कि उनके तमाम मामलात महले इल्लत हैं यानी सक़ीम हैं जैसा कि महबूबाने ख़ुदा जानते हैं तो वह सब मआसी से निजात पाकर तमाम आफ़तों से पाक हो जाते। लिहाज़ा मुनासिब यही है कि ज़ाहिरी तहारत बातिनी तहारत के मुवाफ़िक़ हो। मतलब यह है कि जब हाथ धोए जायें तो चाहिये कि दिल से दुनिया की मुहब्बत धो डाल जाये। इसी तरह जब इस्तिंजा करे तो मुनासिब है कि जिस तरह ज़ाहिरी गंदगी को दूर किया जाये इसी तरह बातिन से भी ग़ैर ख़ुदा की मुहब्बत को दूर कर दिया जाये। जब मुंह में पानी लिया जायें तो मुनासिब है कि मुंह को ग़ैर की याद से पाक करे। जब नाक में पानी डाले तो सज़ावार है कि शहूतों को अपने ऊपर हराम गरदाने जब चेहरा धोए तो मुनासिब है कि तमाम उलफ़तों से यकदम किनाराकश हो जाये और हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह हो जाये और जब हाथों को धोए तो अपने नसीबों से दस्तकश हो जाये। और जब सर का मसह करे तो मुनासिब है कि अपने मामलात को हक़ तआला के सुपुर्द कर दे जब पांव धोए तो ज़ेबा है कि फ़रमाने इलाही के ख़िलाफ़ हर चीज़ पर क़ायम रहने से बचने की नीयत करे जब उस पर अमल करेगा तो उसे दोनों क़िस्म की तहारत हासिल हो जायेगी। इसलिये कि तमाम ज़ाहिरी

शाई उमूर बातिन के साथ हुए हैं यही ख़ासए ईमान है कि ज़ाहिर में ज़ुबान से इक़रार हो तो बातिन में उसकी तसदीक़ भी। नीयत का ताल्लुक़ दिल से है। शरीअत में ताअत के अहकाम जिस्मे ज़ाहिरी पर हैं। लिहाज़ा दिल की तहारत का तरीक़ा दुनिया की आफ़त में ग़ौर व फ़िक्र करना और यह देखना है कि दुनिया ग़द्दारी की जगह और महल्ल फ़ना है। दिल को इससे ख़ाली करे। यह कैफ़ियत कसरते मुजाहिदे के ज़रिये हासिल होती है और मुजाहिदे में अहम तरीन बात ज़ाहिरी आदाब की हिफ़ाज़त और हर हाल में उस पर मदावमत है।

हुज़ूर इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि मुझे हक़ तआला के हुक़ूक़ अदा करने के लिये दुनिया में अबदी उम्र की ज़रूरत है। यहां तक कि अगर सारी मख़लूक़ ख़ुदा को भूल जाये और दुनियावी नेमतों में मस्त हो जाए तो मैं अकेला व तंहा दुनिया की बलाओं में शरीअत के आदाब के तहफ़्फ़ुज़ में खड़ा हो जाऊं और हक़ तआला की याद में मुनहकम रहूं।

हज़रत अबू ताहिर हरमी मक्का मुकर्रमा में चालीस साल इस हाल में मुक़ीम रहे कि कभी रफ़अ हाजत न की। जब भी वह हुदूदे हरम से बाहर रफ़अ हाजत के लिये जाते ख़्याल आ जाता कि यह वह ज़मीन है जिसे हक़ तआला ने अपने साथ मंसूब फ़रमाया है इस्तेमाल शुदा पानी को भी उस जगह गिराना मकरूह समझा।

हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि का वाक़िया है कि रए की जामा मस्जिद में मर्ज़ इसहाल लाहक़ हुआ। दिन रात में उन्होंने साठ मर्तबा गुस्ल किया बिल आख़िर उनकी वफ़ात पानी ही में वाक़ेय हुई।

हज़रत अली रोदबारी रहमतुल्लाह अलैहि अर्सा तक वसवसए तहारत में मुब्तला रहे वह फ़रमाते हैं कि एक दिन दरिया में सुबह से ठहरा हुआ था। यहां तक कि सूरज निकल आया और मैं पानी ही में रहा। उस वक़्त दिल में रंज पैदा हुआ मैंने ख़ुदा से इल्तेजा की कि अल आफ़ियत, अल आफ़ियत दरिया से मुझे ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी कि आराम इल्म में है।

हज़रत अबू सुफ़ियान सूरी रहमतुल्लाह अलैहि ने बीमारी की हालत में एक नमाज़ के लिये साठ मर्तबा तहारत की। मर्ज़े मौत मे इंतिक़ाल के दिन ख़ुदा से दुआ मांगी कि ख़ुदा! मौत को हुक्म दे कि वह उस वक़्त आये जबकि मैं पाक व साफ़ होऊं।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा ने एक दिन मस्जिद में जाने के लिये तहारत

की। ग़ैब से आवाज़ आयी कि तुम ने ज़ाहिर को तो आरास्ता कर लिया बातिन की सफ़ाई कहां है? वह लौट आए और तमाम साज़ व सामान सदक़ा कर दिया और एक साल तक सिर्फ़ उसी क़द्र लिबास पहना जिससे नमाज़ जायज़ हो सके फिर जब हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह के पास वह हाज़िर हुए तो फ़रमाया ऐ अबू बकर! जो तहारत तुमने की है वह वहुत सूदमंद है। अल्लाह तआला तुम्हें इस तहारत पर हमेशा क़ायम रखे इसके बाद हज़रत शिबली आख़िर वक़्त तक कभी बे तहारत न रहे जब उनके इंतिक़ाल का वक़्त आया तो उनकी तहारत टूट गयी आपने अपने मुरीद की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि मुझे तहारत कराये। मुरीद ने इन्हें तहारत करायी लेकिन दाढ़ी में ख़िलाल करना वह भूल गया उस वक़्त उनमें कलाम करने की सकत न थी, मुरीद का हाथ पकड़ कर दाढ़ी की तरफ़ इशारा फ़रमाया फिर उसने दाढ़ी में ख़िलाल किया। आप फ़रमाया करते थे कि कभी मैंने तहारत का कोई अदब तर्क नहीं किया जब भी ऐसा हुआ मेरे बातिन पर नसीहत ज़ाहिर हो गयी।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जब कभी मेरे दिल पर दुनिया का अंदेशा गुज़रता मैं फ़ौरन वुज़ू कर लेता और जब आख़िरत का अंदेशा गुज़रता तो गुस्ल कर लेता क्योंकि दुनिया मुहदिस है इसका अंदेशा हदस है और आख़िरत महले ग़ैबत व आराम है इसका अंदेशा जनावत है लिहाज़ा हदस से वुज़ू और जनाबत से गुस्ल वाजिब हो जाता है।

हज़रत शिवली अलैहिर्रहमतुल्लाह एक दिन वुज़ू के बाद जब मस्जिद के दरवाज़े पर आये तो उनके दिल में आवाज़ आयी कि ऐ अबू बकर तुम ऐसी तहारत रखते हो और इस गुस्ताख़ी के साथ हमारे घर में दाख़िल होना चाहते हो जब यह सुना तो वापस लौटे फिर आवाज़ आयी कि हमारे दरवाज़े से हटकर किधर का इरादा है? यह सुनकर उनकी चीख़ निकल गयी, आवाज़ आयी हम पर ताना करते हो। वह अपनी जगह ख़ामोश खड़े हो गये। फिर आवाज़ आयी कि तुम हमारे सामने बला के तहम्मुल का दावा करते हो। उस वक़्त हज़रत शिबली ने पुकारा-

ऐ ख़ुदा! तेरी जानिब से तेरी ही तरफ़ फ़रियाद है।

तहारत की तहक़ीक़ में मशायख़ के बकसरत इरशादात हैं वह हमेशा मुरीदों को ज़ाहिर व बातिन की तहारत का हुक्म देते रहे हैं कि जब बारगाहे इलाही मे हाज़िर होने का इरादा करो तो ज़ाहिरी इबादत के लिये ज़ाहिरी तहारत करो

और जब बातिन में कुरबत का कसद करो तो बातिन की तहारत करो ज़ाहिरी तहारत पानी से है और बातिनी तहारत तौबा व रुजूअ के ज़रिये है। अब मैं तौबा और उसके मुताल्लिकात की तशरीह करता हूं।

तौबा और उसके मुताल्लिक़ात का बयान

वाज़ेह रहना चाहिये कि सालिकाने राहे हक़ का पहला मुक़ाम तौबा है जिस तरह तालिबाने इबादत के लिये पहला दर्जा तहारत है अल्लाह तआला का इरशाद है -

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुज़ूर में दिल से तौबा करो।

नीज़ इरशाद है-

ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के हुज़ूर में तौबा करो ताकि फ़लाह पाओ।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

अल्लाह के नज़दीक कोई चीज़ इससे ज्यादा पसंद नहीं कि जवान आदमी तौबा करे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उसका कोई गुनाह ही नहीं।

आपका यह भी इरशाद है कि-

अल्लाह तआला जब बंदा को महबूब बना लेता है तो उसे गुनाह कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाता।

किसी ने अर्ज़ किया तौबा की इल्लत क्या है? फ़रमाया नदामत! लेकिन यह जो फ़रमाया कि दोस्तों के लिये गुनाह नुक़सान रसां नहीं होता। तो इसका मतलब यह है कि गुनाह से बंदा काफ़िर नहीं होता। और न उसके ईमान में ख़लल होता है बशर्ते कि गुनाह, ईमान को ज़ाय न करे। ऐसी मासीयत का नुक़्सान जिसका अंजाम कार निजात है दर हक़ीक़त नुक़सान व ज़ियाअ नहीं है।

वाज़ेह रहना चाहिये कि लोग़त में तौबा के मअ़ने रुजू करने के हैं। चुनांचे कहा जाता है कि लिहाज़ा हक़ तआला की ममनूआत से बाज़ रहना इसलिये कि उसे ख़ुदा के हुक्म का ख़ौफ़ है। असल में यही तौबा की हक़ीक़त है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि नदामत व शर्मिन्दगी का नाम ही तौबा है यह ऐसा इरशाद है कि जिसमें तौबा के तमाम शरायत पिनहां हैं।

तौबा के शरायत : तौबा की तीन शर्तें हैं एक तो यह कि मुख़ालिफ़त

पर इज़हारे नदामत व अफ़सोस करे। दूसरे यह कि तर्के हालत में ज़िल्लत महसूस करे। तीसरे यह कि दोबारा गुनाह न करे। शरायत की यह तीनों बातें नदामत में मौजूद हैं। क्योंकि जब दिल में नदामत पैदा होती है तो पहली दोनों शर्ते और तीसरी शर्त इनके ज़िमन में पाई जाती हैं।

नदामत के भी तीन सबब हैं जिस तरह तौबा की तीन शर्तें हैं नदामत का पहला सबब यह है कि जब दिल पर सज़ा का ख़ौफ़, ग़ल्बा पाता है जब वह बुरे अफ़आल पर दिल आज़ुरदा होता है और नदामत पैदा होती है। दूसरा सबब यह है कि जब नेमत की ख़्वाहिश उसके दिल पर ग़ालिब हो जाये और वह जान ले कि बुरे फ़अल और नाफ़रमानी से वह हासिल नहीं हो सकती तो वह इससे पशेमान हो जाता है। और तीसरा सबब यह है कि इसके दिल में अल्लाह की शर्म व हया आ जाती है। और वह मुख़ालिफ़त पर पशेमान होता है। लिहाज़ा पहले को तायब दूसरे को मुनीब और तीसरे को अव्वाब कहते हैं। इसी तरह तौबा के भी तीन मुक़ाम हैं एक तौबा, दूसरी इनाबत और तीसरी अव्वाबत। लिहाज़ा तौबा अज़ाब के डर से, अनाबत हुसूले सवाब के लिये और अव्वाबत फ़रमान की रियायत से है। इसी वजह से तौबा आम मुसलमानों का मुक़ाम है जो गुनाह से पैदा होता है क्योंकि हक़ तआला फ़रमाता है-

जो ख़ुदा से बहालते ग़ैबूबत डरे और इनाबत वाला दिल लाये।

अव्वाबत, अंबिया व मुरसलीन का मुक़ाम है क्योंकि हक़ तआला फ़रमाता है-

कितना अच्छा बंदा है कि हर हाल में रुजू होता है।

ग़र्ज़ कि ताअत के साथ रुजू का नाम तौबा है। और मुहब्बत में सग़ायर से रुजू का नाम इनाबत है और अज़ ख़ुद ख़ुदा की तरफ़ रुजू का नाम अव्वाबत है यह उनके दर्मियान फ़र्क़ है जो फ़वाहिश से अवामिर की तरफ़ रुजू करे और वह जो मुहब्बत में हुज्जत और फ़ासिद अंदेशा से रुजू करे और जो अपनी ख़ूदी से हक़ तरफ़ रुजू करे।

तौबा की असल हक़ तआला का आगाह और ख़बरदार करना और ख़्वाबे गफ़लत से दिल को बेदार करना और अपने हाल की ग़ैबत को देखना है। जब बंदा अपने बुरे अफ़आल और क़बीह अफ़आल में ग़ौर व फ़िक्र करता है और उससे निजात की कोशिश करता है तो हक़ तआला उस पर तौबा के असबाब आसान फ़रमा देता है और उसे इसकी मासीयत की बुराई से निकाल कर अपनी

ताअत की शीरीनी में पहुंचा देता है।

अहले सुन्नत व जमाअत और मशायखे तरीक़त के नज़दीक जायज़ है कि बंदा किसी एक गुनाह से तो तौबा कर ले लेकिन वह किसी दूसरे गुनाह में मुब्तला हो जाये। इसके बावजूद हक़ तआला उस गुनाह से तौबा के बदले उसे सवाब अता फ़रमायेगा और मुमकिन है कि उस तौबा की बरकत से वह दूसरे गुनाह के इर्तकाब से भी बाज़ आ जाये। मसलन कोई शराबी व ज़ानी ज़िना से तो तौबा कर ले मगर शराब ख़ोरी पर मुसिर रहे तो उसकी तौबा दूसरे गुनाह के इर्तकाब के बावजूद दुरुस्त होगी। लेकिन मअतज़ला का वह गरोह जिसे कहशमी कहते हैं। इसका कौल है कि तौबा उस वक़्त तक सही नहीं हो सकती जब तक कि बंदा तमाम गुनाहों से तौबा न करे। यह नज़रिया मुहाल है इसलिये कि तमाम मआसी पर जो बंदा करे उसे उन सबकी वजह से अज़ाब होता है लेकिन जब बंदा मआसी की किसी एक क़िस्म को छोड़ देता है तो वह उस क़िस्म के मआसी के अज़ाब से महफ़ूज़ हो जाता है। ला मुहाला वह इससे तायब हुआ। इसी तरह अगर कोई बंदा बाज़ फ़रायज़ बजा लाता है और बाज़ को छोड़ देता है तो वह जितना करेगा ला मुहाला उसका उसे सवाब मिलेगा। और जितना नहीं करेगा उसकी उसे सज़ा मिलेगी।

और अगर किसी के पास मासीयत का आला ही नहीं है और न उसके असबाब मौजूद हैं फिर वह तौबा करता है तो वह तायब ही कहलायेगा। इसलिये कि तौबा का एक रुक्न नदामत है और इसे उस तौबा के ज़रिये गुज़श्ता पर नदामत हासिल है। फ़िलहाल गुनाह की उस जिन्स से किनाराकशी कर ली है और इरादा रखता है कि अगर वह आला मौजूद हो जाये और सबब भी मुहय्या हो जाये तो भी मैं हरगिज़ गुनाह का इर्तकाब न करूंगा।

तौबा के बारे में मशायख़ के इरशादात : हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि और एक जमाअत का मज़हब यह है कि तौबा यह है कि किये हुए गुनाहों को न भूलो और उसकी नदामत में हमेशा ग़र्क़ रहो अगरचे कितने ही ज़्यादा आमाले सालेहा हो जायें। इन पर गुरूर न करो इसलिये कि बुरे फ़ेअल पर शर्मिन्दगी, आमाले सालेहे पर मुक़द्दम है। ऐसा शख़्स कभी घमंड न करे और न गुनाह को फ़रामोश करे।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि और मशायख़ की एक जमाअत का मज़हब यह है कि तौबा यह है कि किये हुए गुनाह को भूल जाओ क्योंकि

तौबा करने वाला अहले मुहब्बत से होता है। और मुहब्बत वाला मुशाहिदे में होता है और मुशाहेदा में गुनाह की याद जुल्म है। क्योंकि वह कुछ अर्सा तो सकावत में रहा फिर कुछ अर्सा हालते वफ़ा में जफ़ा की याद में तड़पा। हालांकि वफ़ा में जफ़ा की याद, वफ़ा में हिजाब होता है और नाफरमानी से रुजू करना मुजाहिदा है और मुशाहदे से वाबस्ता होता है।

इस बयान की तफ़सील मज़हब सुहेलिया में देखनी चाहिये जो कि तायब को बखुद क़ायम कहते हैं और इसके गुनाह के फ़रामोश करने को गफ़लत समझते हैं और जो तायब को हक़ के साथ क़ायम कहते और इसके गुनाह को याद को शिर्क बताते हैं।

ग़र्ज़ कि तायब अगर अपनी सिफ़त में बाक़ी रहे तो उसके गुनाह की अक़्दा कुशाई नहीं हो सकती और अगर वह सिफ़त में फ़ानी है तो उसके लिये इसकी याद नहीं होती। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बहालते बक़ाए सिफ़त कहा मैंने तेरी तरफ़ रुजू किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहालते फ़नाए सिफ़त कहा मैं तेरी सना का अहाता नहीं कर सकता।

खुलासा यह कि मुक़ामे क़ुरबत में वहशत की याद वहशत होती है तायब के लिये ज़ेबा यही है कि वह अपनी खुदी को भी याद न करे। चह जायकि वह अपने गुनाहों को याद रखे। दर हक़ीक़त अपने गुनाह की याद भी उस मुक़ाम में गुनाह है क्योंकि यह महले एराज़ है जब गुनाह महल एराज़ है तो उसकी याद में महल एराज़ ही होगी। जैसे जुर्म की याद जुर्म है। इस तरह इसका भूल जाना भी जुर्म है क्योंकि ज़िक्र व निसयान दोनों का ताल्लुक़ तौबा से है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने बकसरत किताबें पढ़ी हैं किसी ने भी इतना फ़ायदा न दिया जितना इस शेर ने दिया है।

तर्जमा : जब मैंने कहा मैंने क्या गुनाह किया है तो जवाब देने वाले ने कहा-

तेरी ज़िन्दगी ही गुनाह है उसकी मौजूदगी में किसी और गुनाह के क़यास करने की ज़रूरत ही क्या है।

जबकि दोस्त की बारगाह में दोस्त का वजूद ही गुनाह है तो उसके वसफ़ की क्या क़द्र व क़ीमत होगी?

ग़र्ज़ कि तौबा ताइदे रब्बानी है और मआसी फ़ेअल जिस्मानी है जब दिल में नदामत पैदा हो जाये तो जिस्म में कोई सामान नहीं रहता जो दिल की नदामत को दूर कर सके, और जब उसकी नदामत इब्तेदाए फ़ेअल में तौबा को मानेअ

नहीं तो जब फ़ेअल की इंतेहा हो जाये तो उसकी वह कैसे मानेअ होगी?

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

बंदे ने अपने अफ़आल पर तौबा की तो अल्लाह तआला ने उसकी तौबा कबूल फ़रमाई वही तौबा कबूल करने वाला और मेहरबान है।

कुरआन करीम में उसके नज़ायर व शवाहिद बकसरत मौजूद हैं उनके बयान करने की हाजत नहीं।

तौबा किससे किसकी तरफ़ : तौबा की तीन क़िस्में हैं एक ख़ता से राहे सवाब की तरफ़। दूसरे दुरुस्तगी से मज़ीद दुरुस्तगी की तरफ़। तीसरे अपनी ख़ुदी से हक़ तआला की तरफ़। लेकिन ख़ता से राहे सवाब पर गामज़न होने के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

वह लोग जिन्होंने बुरे काम किये और अपनी जानों पर जुल्म किया तो उन्होंने ख़ुदा को याद करके अपने गुनाहों की मग़फ़िरत मांगी।

और वह जो दुरुस्तगी से मज़ीद दुरुस्तगी की तरफ़ रुजू है इसकी मिसाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसी है कि उन्होंने कहा मैं तेरी तरफ़ रुजू हूं और वह जो अपनी ख़ुदी से हक़ तआला की तरफ़ रुजू है उसकी मिसाल हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद है कि-

जब मेरे दिल पर हलका सा अबर आ जाता है तो उस वक़्त रोज़ाना सत्तर मर्तबा ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करता हूं।

इर्तकाबे ख़ता व मासियत ग़ायत दर्जा क़बीह फेअल है और ख़ता व मासियत से राहे सवाब की तरफ़ रुजू व तौबा उम्दा और पसंदीदा अमल है। यह आम लोगों की तौबा है, और उसका अमल ज़ाहिर है, और राहे सवाब पर गामज़न रहते हुए उसकी मौजूदा हालत पर तवक़्क़ुफ़, बाइसे हिजाब होता है। मौजूदा राहे सवाब से आगे के राहे सवाब की तरफ़ रुजू करना अहले हिम्मत के नज़दीक ग़ायत दर्जा अमले महमूद है। यह ख़ास बंदों की तौबा है और यह मुहाल है कि ख़्वास मासियत से तौबा न करें।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दिल में इस दुनिया के अंदर जब दीदारे इलाही की आरज़ू पैदा हुई तो उन्होंने उससे तौबा की। इसलिये कि दीदार की ख़्वाहिश अपने इख़्तेयार से थी और दोस्ती में इख़्तेयार आफ़त होती है और अपने इख़्तेयार की आफ़त को तर्क करना लोगों के लिये तर्क रोइयत और दर्जा-ए-मुहब्बत में अपनी ख़ुदी से हक़ की तरफ़ रुजू करने की सूरत में नमूदार

हुई। जैसा कि मुकामे आली पर वकूफ़ आफ़त है इससे तौबा करके इससे बुलंद तर मुक़ाम पर फ़ायज़ होते हैं इसी तरह मुक़ाम और अहवाल की दीद से भी तौबा की जाती है चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ामात हर आन तरक्क़ी पर रहे। जब किसी आली मुक़ाम पर पहुंचते तो उससे नीचे मुक़ाम के वकूफ़ पर इस्तिग़फ़ार किया करते थे। और उस मुक़ाम की दीद से तौबा बजा लाते थे।

बार बार इर्तेकाबे गुनाह का मसला : वाज़ेह रहना चाहिये कि जब बंदा अहद करे, कि आइंदा गुनाह न करेगा तो उसकी तौबा के लिये ताईदे रब्बानी शर्त नहीं है। अगर तायब पर फिर ऐसा वक़्त आ जाये कि अहद के बावजूद गुनाह सर ज़द हो तो दोबारा तौबा करना उसकी दुरुस्तगी के हुक्म में होगा। तरीक़त के मुबतदियों और तायबों से ऐसा हुआ है कि तौबा कर ली है फिर फ़साद लाहक़ हुआ और मासियत का इर्तेकाब हो गया। फिर जब ख़बरदार हुए तो उससे दोबारा तौबा की है। यहां तक कि एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि मैंने सत्तर बार तौबा की है और हर तौबा के बाद बराबर मासियत का सुदूर होता रहा है। इकहत्तरवीं मर्तबा तौबा के बाद इस्तिक़ामत मयस्सर आयी।

हज़रत अबू उमर ने हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि से बयान किया कि मैंने इब्तेदा में हज़रत अबू उस्मान हीरी रहमतुल्लाह अलैहि की मजलिस में तौबा की और उस पर कुछ अर्सा क़ायम रहा फिर मेरे दिल में मासियत की चाहत पैदा हुई और मैंने इर्तेकाब कर लिया और उस बुज़ुर्ग की सोहबत से रू गरदां हो गया। जब भी मैं उन्हें दूर से देखता तो मैं शर्मिन्दा होकर इधर उधर हो जाता कि उनकी नज़र मुझ पर न पड़े। इत्तेफ़ाक़ से मेरा उनका आमना सामना हो गया। उन्होंने फ़रमाया ऐ फ़रज़ंद! अपने दुश्मनों के साथ न रहा करो क्योंकि अभी तुम मासूम हो। इसलिये कि दुश्मन तुम्हारे ऐब को देखता है और जब तुम इन्हें ऐबदार नज़र आते हो तो वह खुश होते हैं। और जब तुम गुनाह से मासूम होते हो तो इन्हें रंज पहुंचता है। अगर तुम्हारी ख़्वाहिश यही है कि मासियत में मुब्तला रहो तो हमारे पास आया करो ताकि हम तुम्हारी मुसीबत व बला को दूर कर दिया करें और तुम्हारे दुश्मनों को खुश होने का मौक़ा न दें। हज़रत अबू उमर बयान करते हैं कि इसके बाद मेरा दिल गुनाह से सैर हो गया और सही तौबा नसीब हो गयी।

मैंने सुना है कि एक शख़्स ने गुनाहों से तौबा की। उसके बाद फिर उससे

गुनाह सरज़द हो गया जिससे वह बहुत शर्मसार हुआ। एक दिन उसने अपने दिल में कहा अगर अब मैं दोबारा तौबा करके राहे सवाब इख़्तेयार कर लूं तो मेरा हाल क्या होगा? हातिफ़ ने आवाज़ दी- तूने हमारी इताअत की हमने इसे क़बूल किया फिर तूने बेवफ़ाई की और हमें छोड़ दिया तो हमने तुझे मोहलत दी अब तू अगर तौबा करके हमारी तरफ़ आए तो हम फिर तुझे क़बूल कर लेंगे।

हज़रत जुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

अवाम की तौबा गुनाहों से और ख़्वास की तौबा गफ़लत से है।

क्योंकि अवाम से सिर्फ़ ज़ाहिर हाल पूछा जायेगा और ख़्वास से मामला की तहक़ीक़ की जायेगी अवाम के लिये ग़फ़लत नेमत और ख़्वास के लिये हिजाब है।

हज़रत अबू हफ़्स रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

बंदे को तौबा में दख़ल नहीं है इसलिये कि तौबा हक़ तआला की तरफ़ से है न कि बंदे की जानिब से।

इस क़ौल से लाज़िम आता है कि तौबा बंदे का अमल नहीं है बल्कि हक़ तआला की अता है यही जुनैदी मज़हब है।

हज़रत अबुल हसन बूशन्जा रहमतुल्लाह अलेहि फ़रमाते हैं कि तौबा यह है कि जब तुम गुनाह को याद करो तो उसकी याद में तुम्हें लज़्ज़त व सुरूर न मालूम हो तो ऐसी तौबा सहीह है इसलिये कि गुनाह याद या तो हसरत से होगी या इरादए ख़्वाहिश से। अगर कोई हसरत व नदामत से अपनी मासियत याद करता है तो वह तायब है और अगर इरादा व ख़्वाहिश से उसे याद करता है तो वह गुनाहगार है। क्योंकि इर्तेकाबे मासियत में इतनी आफ़त नहीं जितनी इसके इरादा ख़्वाहिश में है। इसकी वजह यह है कि इर्तेकाबे गुनाह कुछ लम्हा का होता है लेकिन इसका इरादा व ख़्वाहिश मुस्तक़िल और दायमी है जिसका जिस्म एक लम्हा के लिये गुनाह में रहे वह वैसा नहीं है बमुक़ाबला इसके जिस का दिल दिन रात उसकी सोहबत में रहे।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलेहि फ़रमाते हैं कि-

तौबा दो तरह की होती है एक तौबा इनाबत दूसरी तौबा इस्तेहया तौबए इनाबत यह है कि बंदा अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से तौबा करे। और तौबा इस्तेहया यह है कि बंदा हक़ तआला की फ़ज़ल व करम से हया करके तौबा करे।

लिहाज़ा ख़ौफ़े इलाही वाली तौबा, जलाले इलाही के कश्फ़ से है और [illegible]

ख़ौफ़ की आग से जलता है और दूसरा अजमाले इलाही में हया व शर्म के नूर से रौशन होता है। इन दोनों में से एक बहालते सुकर व दूसरा बहालते सुहव है अहले हया असहाबे सुकर और अहले ख़ौफ़ असहाबे सुहव से ताल्लुक़ रखते हैं।

पांचवां कश्फ़

हिजाब नमाज़ के बयान में

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ऐ मुसलमानो! नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है -

नमाज़ की हिफ़ाज़त करो और उन चीज़ों की जिनके तुम मालिक हो।

नमाज़ के मअ़ने बा एतबारे लुग़त, ज़िक्र व इनेक़याद के हैं और फ़ुक़हा के उर्फ़ व इस्तेलाह में मुक़र्ररा अहकाम के तहत मख़सूस इबादत है। जो बफ़रमाने इलाही नमाज़े पंजगाना है जिन्हें पांच वक़्तों में अदा किया जाता है। नमाज़ की फ़रज़ियत के लिये उसके वक़्त का पहले दाख़िल होना शर्त है। नमाज़ के शरायत में से एक शर्त तहारत है। जो ज़ाहिरी तौर पर नापाकी से और बातिनी तौर पर शहवत से पाक होना है। दूसरी शर्त लिबास की पाकी है ज़ाहिर तौर पर नजासत से और बातिन तौर पर इस तरह कि वह हलाल कमाई से हो। तीसरी शर्त जगह का पाक होना है ज़ाहिर तौर पर हवादिस व आफ़त से और बातिनी तौर पर फ़साद व मासियत से। चौथी शर्त इस्तिक़बाले क़िब्ला है ज़ाहिर तौर पर ख़ाना-ए-काबा की सिम्त और बातिनी तौर पर अर्शे मुअल्ला और उसका बातिन मुशाहिदए हक़ है। पांचवीं शर्त क़ियाम है ज़ाहिरी तौर पर खड़े होने की क़ुदरत और बातिनी तौर पर क़ुरबते इलाही के बाग़ में क़याम है। छटी शर्त दुख़ूले वक़्त है जो ज़ाहिरी तौर पर शरई अहकाम के मुताबिक़ और बातनी तौर पर हक़ीक़त के दर्जा में हमेशा क़ायम रहना है। और दाख़िली शरायत में से एक शर्त ख़ुलूसे नीयत के साथ बारगाहे हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह होना है और क़ियामे हैबत व फ़ना में तकबीर कहना, महले वसल में खड़ा होना, तर्तील व अज़मत के साथ किराअत करना ख़ुशूअ के साथ रुकू करना, तज़ल्लुल व आजिज़ी के साथ सज्दा करना, दिलजमई के साथ तशहुद पढ़ना, और फ़नाए सिफ़त के साथ सलाम फेरना।

हदीसे पाक में वारिद हुआ है कि-

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ते तो आपके बतन में ऐसा जोश उठता जैसे देग में जोश आता है।

अमीरुल मोमिनीन सैयदुना अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहहू जब नमाज़ का इरादा फ़रमाते तो उनके जिस्म पर लरज़ा तारी हो जाता और फ़रमाते कि उस अमानत के अदा करने का वक़्त आ गया जिसका बार ज़मीन व आसमान उठाने से आजिज़ रहे थे।

एक बुजुर्ग बयान करते हैं कि हज़रत हातिम असम से मैंने पूछा आप नमाज़ किस तरह अदा करते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि जब उसका वक़्त आता है तो एक ज़ाहिरी वुजू करता हूं दूसरा बातनी वुजू। ज़ाहिरी वुजू पानी से और बातिनी वुजू तौबा से। फिर जब मस्जिद में दाख़िल होता हूं तो मस्जिदे हराम के रूबरू दोनों अबरू के दर्मियान मुक़ामे इब्राहीम रखता हूं और अपनी दाहिनी जानिब जन्नत को और बायें जानिब दोज़ख़ को देखता हूं और ख़्याल करता हूं कि मेरे क़दम पुलसिरात हैं और मलकुल मौत मेरे पीछे खड़ा है। इस हाल में कमाले अज़मत के साथ तकबीर, हुरमत के साथ क़ियाम, हैबत के साथ किराअत, तवाज़ुअ के साथ रुकू, तज़र्रुअ के साथ सजदा हिल्म व वक़ार के साथ जल्सा और शुक्र व इत्मीनान के साथ सलाम फेरता हूं।

तरीक़त की नमाज़ : वाज़ेह रहना चाहिये कि शरीअत के मुताबिक़ नमाज़ ऐसी इबादत है जिसकी इब्तेदा व इंतेहा में मुरीदीन राहे हक़ पाते हैं और उनके मुक़ामात का कश्फ़ होता है। चुनांचे मुरीदों के लिये तहारत, तौबा का कायमुक़ाम, पैरवी का ताल्लुक़, क़िब्ला शनासी का कायम मुक़ाम, मुजाहिदा, नफ़्स पर क़ियाम क़ियाम का कायम मुक़ाम, ज़िक्रे इलाही की मुदावमत, किराअते कुरआन का क़ायम मुक़ामे, तवाज़ुअ रुकूअ का कायम मुक़ाम, मारिफ़ते नफ़्स, सजूद का कायम मुक़ाम, मुक़ाम अमन, तशहहुद का कायम मुक़ाम, दुनिया से अलाहदगी, सलाम का कायम मुक़ाम, और नमाज़ से बाहर आना मक़ामात की क़ैद से ख़ुलासी का क़ायम मुक़ाम है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अकल व शर्ब से फ़ारिग़ होते तो कमाले हैरत के मुक़ाम में शौक़ के तालिब होते और यकसू होकर ख़ास मशरब से इनहेमाक फ़रमाते उस वक़्त आप फ़रमाते ऐ बिलाल! नमाज़ की अज़ान देकर हमें ख़ुश करो।

इस बारे में मशायख़े तरीक़त के बकसरत इरशादात हैं और हर एक का ख़ास

मुक़ाम और दर्जा है चुनांचे एक जमाअत कहती है कि नमाज़ हुज़ूरे इलाही का ज़रिया है और एक जमाअत कहती है कि नमाज़ ग़ैबत नफ़्स का ज़रिया है। एक जमाअत कहती है कि जो ग़ायब रहता है वह नमाज़ में हाज़िर होता है। एक जमाअत कहती है कि जो हाज़िर होता है वह नमाज़ में ग़ायब हो जाता है। जिस तरह कि इस जहान में बहालते मुशाहिदा महव होता है। जो गरोह दीदारे इलाही में रहता है वह ग़ायब होकर हाज़िर रहता है और जो गरोह हाज़िर होते हैं ग़ायब हो जाते हैं।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि नमाज़ खुदा का हुक्म है वह ज़रियए ग़ैबत नहीं है। क्योंकि हुक्मे इलाही किसी चीज़ का ज़रिया नहीं होता इसलिये कि हुज़ूर की इल्लत ऐने हुज़ूर और ग़ैबत की इल्लत भी ग़ैबत है। और हुक्मे इलाही को किसी चीज़ के साथ सबबी ताल्लुक़ नहीं है। वजह यह है कि नमाज़ अगर हुज़ूर की इल्लत होती तो चाहिये था कि नमाज़ के सिवा हाज़िर न होता। और अगर ग़ैबत की इल्लत होती तो ग़ायब नमाज़ के तर्क से हाज़िर होता। हालांकि ग़ैबत व हुज़ूर के लिये नमाज़ की अदा या उसका तर्क वसीला और सबब नहीं है। नमाज़ फ़ी नफ़सिही एक ग़लबा है जो ग़ैबत या हुज़ूर पर मोकूफ़ नहीं है। लिहाज़ा साहिबाने मुजाहिदा और अहले इस्तेक़ामत बकसरत नमाज़ें पढ़ते और उसका हुक्म देते हैं। चुनांचे बाज़ बुज़ुर्गों ने अपने मुरीदों को दिन व रात में चार सौ रकआत तक का हुक्म दिया है ताकि उनका जिस्म इबादत का आदी बन जाये। और अहले इस्तेक़ामत भी कबूलियत हुज़ूर के शुकराना में बकसरत नमाज़ें पढ़ते हैं।

बाक़ी रहे साहिबाने अहवाल तो उनकी दो क़िसमें हैं कुछ वह हैं जिनकी नमाज़ें कमाले मशरब में जमा के क़ायम मुक़ाम हैं और इससे वह मंज़िले जमा पाते हैं और कुछ वह हैं जिनकी नमाज़ें इंक़ेता-ए-मुशर्रब में तफ़रक़ा के क़ायम मुक़ाम हैं और वह इससे मंज़िले तफ़रक़ा हासिल करते हैं जो हज़रात नमाज़ में मंज़िले जमा पाते हैं वह फ़रायज़ व सुनन के अलावा हमा वक़्त नमाज़ में मशगूल रहते हैं और उसकी कसरत करते हैं। और जो साहबाने तफ़रक़ा हैं वह फ़रायज़ व सुनन के सिवा दीगर नवाफ़िल में कम मशगूल होते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

नमाज़ में मेरी आंखों की ठंडक रखी गयी है।

मतलब यह है कि मेरी तमाम राहतें नमाज़ में हैं। इसलिये अहले इस्तेक़ामत

का मशरब नमाज़ें हैं उसकी सूरत यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब मेराज में ले जाया गया और मुकामे कुर्ब से सरफ़राज़ किया गया और आपके नफ़स को कै़दे दुनिया से आज़ाद कराया गया और इस दर्जा पर फ़ायज़ किया गया आपका नफ़्स, दिल के दर्जा में, और दिल रूह के दर्जा में और रूह सर के मुक़ाम में और सर मक़ामात में फ़ानी और मक़ामात को महव करके निशानों में बे निशान और मुजाहिदे से मुशाहिदा में ग़ायब करके मुआइना से मुआइना में इस तरह फ़ायज़ हुए कि आपकी बशरी सिफ़ात ख़त्म हो गयीं और नफ़्सानी मादा फ़ना होकर तबई कुव्वत भी बाक़ी न रही और शवाहिदे रब्बानी आपके इख़्तेयार में रू नुमा हुए और अपनी ख़ुदी से निकलकर मानी की पिंहनाईयों में पहुंचे और दायमी मुशाहिदा में मुस्तग़रक़ हो गये और असरारे शौक़ से बे इख़्तेयारी को इख़्तेयार करके अल्लाह तआला से मुनाजात की कि ऐ मेरे रब! मुझे बलाओं की जगह वापस न कर और तबअ व हवा की क़ैद में दोबारा न डाल। फ़रमाने इलाही हुआ ऐ महबूब! हमारा हुक्म ऐसा है कि हम तुम्हें दुनिया में वापस भेजें ताकि तुम्हारे ज़रिये शरीअत का क़ियाम हो और जो कुछ हमने तुम्हें यहां अता फ़रमाया है वहां भी मरहमत फ़रमायेंगे। चुनांचे जब आप दुनिया में तशरीफ़ लाए तो जब भी आपका दिल इस मुक़ामे मुअ़ल्ला का मुश्ताक़ होता तो फ़रमाते ऐ बिलाल! नमाज़ की अज़ान देकर हमें आराम पहुंचाओ। लिहाज़ा आपकी हर नमाज़ मेराज व कुरबत होती और हक़ तआला की मेहरबानियों को नमाज़ में देखते, आप की रूह तो नमाज़ में होती मगर आपका दिल नियाज़ में आपका बातिन राज़ में और आपका जिस्म गुदाज़ में होता। यहां तक कि आपकी आंखों की ठंडक नमाज़ बन गयी। आपका जिस्म मुल्के दुनिया में होता और आपकी रूह मलकूत में। आपका जिस्म इंसानी होता और आपकी जान, उन्स व मुहब्बत के मुक़ाम में।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुहिब्बे सादिक़ की पहचान यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है कि जब नमाज़ का वक़्त आये तो वह बंदे को उसकी अदायगी पर उभारे अगर बंदा सोता हो तो उसे बेदार कर दे। यह कैफ़ियत हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि में मोजूद थी क्योंकि वह अपने अहद के शैख़ थे जब नमाज़ का वक़्त आता वह सेहतमंद हो जाते और जब नमाज़ अदा कर चुकते तो फिर वही सुक़र की हालत तारी हो जाती।

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि-

नमाज़ पढ़ने वाला चार चीज़ों का मोहताज होता है। नफ़्स की फ़ना, तबअ का ख़ात्मा, बातिन की सफ़ाई और मुशाहिदा का कमाल।

क्योंकि मुसल्ली के लिये फ़नाए नफ़्स के बग़ैर चारा नहीं वह बजुज़ जमा के हिम्मत नहीं करता और जब हिम्मत मुजतमअ हो जाती है तो नफ़्स का इख़्तेयार जाता रहता है क्योंकि उसका वजूद तिफ़रक़ा से है। जो बयान जमअ के तहत नहीं और तबअ का ख़ात्मा इसबाते जलाले इलाही के बग़ैर नहीं होता। क्योंकि जलाले हक़ ग़ैर को ज़ायल कर देता है। बातिन की सफ़ाई मुहब्बत के तहत मुमकिन नहीं और कमाले मुशाहिदा बातिन की सफ़ाई के बग़ैर मुतसव्वर नहीं।

हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने ऊपर चार सौ रकअत फ़र्ज़ कर रखी थीं। इस क़द्र दर्जए कमाल रखते हुए इतनी मुशक़्क़त किस लिये है? उन्होंने फ़रमाया यह तमाम रंज व राहत तुम्हारी हालत का पता देता है हक़ तआला के कुछ दोस्त ऐसे हैं जिनकी सिफ़ात फ़ना हो चुकी है इन पर न रंज असर करता है और न राहत काहिली को रसीदगी का नाम न दो और न हिर्स का नाम तलब रखो।

एक बुजुर्ग बयान करते हैं कि मैं हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि की इक़्तेदा में नमाज़ पढ़ रहा था। जब उन्होंने तहरीमा के वक़्त अल्लाहु अक्बर कहा तो बेहोश होकर गिर पड़े गोया कि जिस्म में हिस व हरकत ही नहीं रही।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि जब बूढ़े हो गये तो उस बुढ़ापे में भी जवानी के किसी विर्द को न छोड़ा। लोगों ने अर्ज़ किया ऐ शैख़! अब आप बूढ़े हो गये कमज़ोर हो गये हैं इनमें से कुछ नवाफ़िल छोड़ दीजिये। उन्होंने फ़रमाया यही तो वह चीज़ें हैं जिनको इब्तेदा में करके इस मर्तबा को पाया है अब यह ना मुमकिन है कि इंतेहा पर पहंचकर इनसे दस्तबरदार हो जाऊं।

मशहूर है कि फ़रिश्ते हमेशा इबादत में रहते हैं इनका मशरब ताअत और उनकी गिज़ा इबादत है इसलिये कि वह रूहानी हैं और उनमें नफ़्स नहीं है बंदे के लिये ताअत से रोकने वाली चीज़ सिर्फ़ नफ़्स है। जितना भी बंदा नफ़्स को मग़लूब करेगा उतना ही इबादत की राह आसान हो जायेगी और जब नफ़्स फ़ना हो जायेगा तो बंदा की भी गिज़ा मशरब इबादत बन जायेगी। जिस तरह की फ़रिश्तों के लिये है बशर्ते कि फ़ना-ए-नफ़्स दुरुस्त हो।

हुज़ूर अब्दुल्लाह बिन मुबारक अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि मुझे वह औरत खूब याद है जिसे मैंने बचपन में देखा जो बहुत इबादत गुज़ार थी बहालते नमाज़ बिच्छू ने उस औरत के चालीस मर्तबा डंक मारा मगर उसकी हालत में ज़र्रा बराबर तग़य्युर न हुआ। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुई तो मैंने कहा ऐ अम्मा! उस बिच्छू ने को तुमने क्यों नहीं हटाया? उसने कहा ऐ फ़रज़ंद! तू अभी बच्चा है यह कैसे जायज़ था मैं अपने रब के काम में मशगूल थी अपना काम कैसे करती?

हज़रत अबुल ख़ैर अक़्तअ रहमतुल्लाह अलैहि के पांव में आकला था तबीबों ने मश्वरा दिया कि यह पांव कटवा देना चाहिये मगर वह राज़ी न हुए आपके मुरीदों ने तबीबों से कहा नमाज़ की हालत में इनका पांव काट दिया जाये क्योंकि उस वक़्त इन्हें अपनी ख़बर नहीं होती। चुनांचे ऐसा ही किया गया जब नमाज़ से फ़ारिग़ होकर देखा तो पांव को कटा हुआ पाया।

सैयदुना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में मरवी है कि जब आप रात को नमाज़ पढ़ते तो किराअत आहिस्ता करते और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बुलंद आवाज़ से किरअत करते थे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि ऐ अबू बकर तुम आहिस्ता क्यों पढ़ते हो? अर्ज़ किया जिससे मैं मुनाजात करता हूं वह सुनता है। ख्वाह आहिस्ता करूं या बुलंद। फिर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम क्यों बुलंद आवाज़ से पढ़ते हो? अर्ज़ किया मैं सोते हुओं को जगाता हूं और शैतान को भगाता हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ अबू बकर तुम कुछ बुलंद आवाज़ से पढ़ो और ऐ उमर! तुम कुछ आहिस्ता आवाज़ से अपनी अपनी आदत के बर ख़िलाफ़ पढ़ो। इसी बिना पर बाज़ मशायख़ फ़रायज़ को ज़ाहिर करके पढ़ते और नवाफ़िल को छुपाकर। इसमें उनकी मसलेहत यह होती है कि रिया व नमूद से पाक रहें। क्योंकि जब कोई रियाकार करता है और लोगों को अपनी तरफ़ खींचता है तो वह रियाकारी बन जाता है। मशायख़ फ़रमाते हैं कि हम अगरचे अपने मामलात को नहीं देखते मगर लोग तो देखते हैं। यह भी तो रियाकारी है। लेकिन मशायख़ की एक जमाअत फ़रायज़ और नवाफ़िल सबको ज़ाहिर करके पढ़ते हैं वह फ़रमाते हैं कि रिया बातिल है और ताअत हक़ है और यह मुहाल है कि बातिल की ख़ातिर हक़ को छिपाया जाये। लिहाज़ा रिया को दिल से निकाल देना चाहिये और जिस तरह जी चाहे इबादत करनी चाहिये।

मशायखे तरीक़त ने नमाज़ के हुकूक़ व आदाब की मुहाफ़िज़त फ़रमाई है और मुरीदों को इस फ़र्ज़ की अदाई का हुक्म दिया है। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने चालीस साल सियाहत की है लेकिन मेरी कोई नमाज़ जमाअत से ख़ाली नहीं है। और हर जुमा मैंने किसी न किसी शहर में गुज़ारा है।

नमाज़ के अहकाम मेरी हद व शुमार से बाहर हैं इसलिये नमाज़ की मुहब्बत के मक़ामात के साथ ही मुहब्बत के अहकाम पर भी रौशनी डालना ज़रूरी है।

मुहब्बत का बयान

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो भी हक़ तआला के दीन से फिर जाये तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को ले आयेगा जो ख़ुदा को महबूब रखेंगे और ख़ुदा उनको महबूब रखेगा।

नीज़ फ़रमाया-

कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को शरीक गर दानते और ख़ुदा की मुहब्बत के मानिंद उनसे मुहब्बत करते हैं लेकिन जो ईमान वाले हैं उनकी मुहब्बत अल्लाह तआला से बहुत है।

हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला का इरशाद यह है कि-

जिसने मेरे वली की अहानत की बिलाशुबह उसने मुझसे जंग करने की जसारत की और मैं किसी चीज़ में तरद्दुद नहीं करता जैसा कि मैं बंदे की जान क़ब्ज़ करने में तरद्दुद करता हूं बंदा मौत को मकरूह जानता है और मैं उसकी बदी को मकरूह जानता हूं हालांकि मौत उसके लिये लाबदी है और अदाए फ़र्ज़ बढ़कर कोई चीज़ प्यारी नहीं जो मेरे बंदे को मुझसे क़रीब करे। बंदा हमेशा अदाए नवाफ़िल के ज़रिये मेरी नज़दीकी चाहता है। यहां तक कि मैं उसे महबूब बना लेता हूं जब वह मेरा महबूब हो जाता है तो मैं उसके कान, आंख, हाथ पांव और ज़ुबान बन जाता हूं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो बंदा अल्लाह तआला के दीदार को महबूब रखता है वह भी उसकी मुलाक़ात को महबूब रखता है और जो अल्लाह के दीदार को मकरूह समझता है अल्लाह उसके मिलने को मकरूह रखता है।

नीज़ फ़रमाया जब ख़ुदा किसी बंदे को महबूब बना लेता है तो जिब्राईल

ज़मीन से फ़रमाता है ऐ जिब्राईल मैंने फ़लां बंदे को महबूब बना लिया है तुम भी उससे मुहब्बत करो चुनांचे जिब्राईल भी उसको महबूब समझने लगते हैं इसके बाद जिब्राईल आसमान वालों से कहते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़लां बंदे को महबूब बना लिया है। ऐ आसमान वालो! तुम भी उसे महबूब समझो। फिर वह ज़मीन वालों से फ़रमाते हैं तो ज़मीन वाले भी उसे महबूब समझने लगते हैं। वाज़ेह रहना चाहिये कि ख़ुदा की मुहब्बत बंदे के लिये और बंदे की मुहब्बत ख़ुदा के लिये ज़रूरी है किताब व सुन्नत और इजमअ उम्मत इस पर शाहिद व नातिक़ हैं।

अल्लाह तआला की एक सिफ़त यह भी है कि वह अपने दोस्तों को महबूब रखता है और महबूबाने ख़ुदा उसे दोस्त रखते हैं।

अहले लुग़त कहते हैं कि मुहब्बत हब्बा से माख़ूज़ है और हब्बा के मअ़ने तुख़्म के हैं जो ज़मीन पर गिरता है। लिहाज़ा हब्बा का नाम हुब रखा गया। चुनांचे असले हयात इसी में है जिस तरह अशजार व नबातात में है हब्ब यानी तुख़्म है जिस तरह मैदान में बीज को बिखेरा जाता है और मिट्टी में छिपाया जाता है फिर इस पर पानी बरसता है आबयारी की जाती है। सूरज चमकता है गर्म व सर्द मौसम गुज़रता है। लेकिन ज़माना के तग़य्युरात उसे नहीं बदलते जब वक़्त आता है तो वह तुख़्म उगता है। फल व फूल देता है, इसी तरह जब मुहब्बत का बीज दिल में जगह पकड़ता है तो उसे हुज़ूर व ग़ैबत बला व इब्तेला मशक़्क़त राहत व लज़्ज़त और फ़िराक़ विसाल कोई चीज़ नहीं बदल सकती। इसी मअ़ने में किसी का शेर है-

तर्जमा : ऐ वह ज़ात कि उसकी दीवानगी का मर्ज़ उसके आशिक़ की बीमारी के लिये तबीब है। मुहब्बत की बरक़रारी में मेरे नज़दीक तेरा हुज़ूर और ग़ैबत बराबर है।

नीज़ अहले लुग़त यह भी कहते हैं कि मुहब्बत, हुब से मुश्तक़ है और हुब वह दाना है जिसमें पानी बकसरत हो और ऊपर से वह ऐसा महफ़ूज़ हो कि बरसातों का पानी उसमें दाख़िल न हो सके। यही हाल मुहब्बत का है कि जब वह तालिब के दिल में जागुज़ीं हो जाता है तो उसका दिल उससे पुर हो जाता है फिर उस दिल में महबूब के कलाम के सिवा कोई जगह नहीं रहती। चुनांचे अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब ख़िलअत ख़ुल्लत से सरफ़राज़ फ़रमाया तो वह सिर्फ़ कलामे हक़ के होकर रह गये। यह जहान

और जहान वाले सब उनका हिजाब बन गये। और वह हक तआला की मुहब्बत में हिजाबात के दुश्मन हो गये अल्लाह तआला ने इनके हाल व क़ाल की हमें ख़बर देते हुए फ़रमाया है।

यह सब मेरे दुश्मन हैं बजुज़ रब्बुल आलमीन के।

हज़रत शिबली अलेहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

मुहब्बत इसी लिये नाम रखा गया है कि वह दिल से महबूब के मासिवा को मिटा दिया है।

एक मअ़ने यह भी बयान किये गये हैं कि हुब्ब उन चार लकड़ियों का नाम है जो बाहम जड़ी हुई हों। जिस पर आफ़ताबा रखा जाता है यानी तिपाई वग़ैरह। लिहाज़ा हुब्ब इसीलिये कहते हैं कि मुहब्बत करने वाला, महबूब की इज़्ज़त व ज़िल्लत, रंज व राहत, बला व मुशक्क़त और जफ़ा व वफ़ा को बर्दाश्त करता है और यह बातें इस पर गिरां नहीं गुज़रतीं। इसका वही काम होता है जो मज़कूरा तिपाई वग़ैरह का होता है। इसीकी मानिंद वह भी बोझ उठाता है लिहाज़ा मुहब्बत की ख़लक़त में ही महबूब के बोझ को उठाना है इसी मअ़ने में यह शेर है-

तर्जमा : अगर तू चाहे तो मुझ पर एहसान करे औरअ गर तू चाहे तो मुझे मना कर दे।

दोनों बातें तेरे करम से मंसूब हैं।

एक मअ़ने यह भी बयान किये गये हैं कि मुहब्बत, हबूब, से माख़ूज़ है जो हबा की जमा है और हब्बा वह दिल है जो लतायफ़ का मुक़ाम और उनके क़ियाम की जगह है। इसलिये मुहब्बत का नाम हुब्ब रखा गया यह तसमिया हाल बइस्मे महल है अहले अरब का रिवाज है कि चीज़ का नाम उसके मुक़ाम के मुवाफ़िक़ रख देते हैं।

यह भी कहा गया है कि हुबाब से माख़ुज़ है जिसके मअ़ने पानी के जोश के हैं और शदीद बारिश में पानी के जो बुलबुले उठते हैं इसी लिये मुहब्बत नाम रखा गया है।

दोस्त का दिल दोस्त के दीदार के इश्तेयाक़ में हमेशा मुज़तरिब रहता है जिस तरह अजसाम रूह की मुश्ताक़ हैं या जिस्म का क़ियाम रूह के साथ है इसी तरह दोस्ती का क़ियाम मुहब्बत के साथ है और मुहब्बत का क़ियाम महबूब के विसाल और उसकी रोइयत में है इसी मअ़ने में यह शेर है-

तर्जमा : जिस वक़्त लोगों ने ख़ुशी व राहत की तमन्ना की तो ऐ अज़ीज़! मैंने यह ख़्वाहिश की कि मैं तुझे हर काम से फ़ारिग़ कर दूं यानी तेरा सारा बोझ मैं ख़ुद उठा लूं।

यह भी कहते हैं कि हुब्ब ऐसा नाम है जो मुहब्बत की सफ़ाई के लिय वज़अ किया गया है इसलिये अहले अरब, इंसान की आंख की सफ़ेदी की सफ़ाई को हुब्बतुल इंसान कहते हैं। जिस तरह दिल के नुक्ता की सफ़ाई को हुब्बतुल क़लब कहते हैं। दिल का नुक्ता मुहब्बत की जगह और आंख की सफ़ेदी दीदार का मुक़ाम है। इसी मअ़ने में यह मकूला है कि दिल और आंख दोस्ती में मक़ारिन व मुत्तसिल हैं। और इसी मअ़ने में यह शेर है-

तर्जमा : दिल उस पर रश्क करता है कि आंख को लज़्ज़ते दीदार मिली। और आंख उस पर रश्क करती है कि दिल को लज़्ज़त फ़िक्र मिली।

इस्तेमाले मुहब्बत में उलमा के ख़्यालात : वाज़ेह रहना चाहिये कि इस्तेमाले मुहब्बत में उलमा के तीन ख़्याल हैं एक यह कि महबूब से ऐसी इरादत हो कि नफ़्स को क़तई चैन हासिल न हो और न दिल को तमन्ना व ख़्वाहिश और मीलान व उनसियत हो। इन मअ़नी का ताल्लुक़ ज़ाते कदीम अल्लाह तबारक व तआला पर जायज़ नहीं है यह तमाम ताल्लुक़ात सिर्फ़ मख़लूक़ ही के लिये हैं। और वही एक दूसरे के हम जिन्स हैं अल्लाह तआला इन मअ़नी से मुस्तग़नी और बरतर है।

दूसरा ख़्याल बमअ़नी अहसान है यह उस बंदे के साथ ख़ास है जिसे अल्लाह तआला बरगुज़ीदा करके विलायत के कमाल पर फ़ायज़ कर दे और उसे गोनागो अलताफ़ व इकराम से नवाज़े।

तीसरी सूरत बंदे पर ख़ूबी की तारीफ़ के मअ़ने में है। मुतकल्लेमीन की एक जमाअत कहती है कि कुरआन व हदीस में हक़ तआला की जिस मुहब्बत की ख़बर हमें दी गयी है वह तमाम समाई सिफ़ात से ताल्लुक़ रखते हैं। मसलन दीद, अस्तवी की कैफ़ियत वग़ैरह। अगर किताब व सुन्नत इन पर नातिक़ न होते तो उनका वजूद अज़रुए अक़्ल हक़ तआला के लिये मुहाल होता। लिहाज़ा हम उसी की शान के लायक़ मुहब्बत का इसबात करते हैं। मुतकल्लेमीन की इस वज़ाहत से मुराद यह है कि हक़ तआला के लिये इस लफ़्ज़ का अतलाक़ अज़रुए अक़्ल जायज़ नहीं जानते मुहब्बत के मअ़ने में अक़वाल उलेमा बयान करने के बाद उसकी हक़ीक़त का बयान शुरू करता हूं।

मुहब्बत की हक़ीक़त : वाज़ेह रहना चाहिये कि बंदे के लिये हक़ तआला की मुहब्बत का मतलब, उसकी तरफ़ से भलाई का इरादा है वह बंदे पर रहम फ़रमाता है और इरादे के नामों में से एक नाम मुहब्बत का भी है जैसे रज़ा, नाराज़गी रहमत और मेहरबानी वग़ैरह हैं। इन असमाए सिफ़ात को भी हक़ तआला के इरादा के सिवा पर महमूल न करना चाहिये। यह हक़ तआला की एक क़दीम सिफ़त है कि उसने अपने अफ़आल को उन औसाफ़ के साथ याद फ़रमाया है लिहाज़ा हुक्मे मुबालग़ा और इज़हारे फ़ेअल में बाज़ सिफ़त बाज़ से अख़स है।

ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत बंदों के हक़ में यह है कि उस पर नेमत की अरज़ानी फ़रमाए और दुनिया व आख़िरत में अज्र व सवाब अता फ़रमाकर मुक़ामे सज़ा से उसे महफ़ूज़ रखे और उसे इर्तकाब मआसी से बचाकर वक़ीअ अहवाल और मुक़ामात आलिया से सरफ़राज़ फ़रमाए। इसके बातिन को अग़यार के इलतेफ़ात से पाक व साफ़ करके अज़ला इनायात का मुस्तहिक़ बनाये। यहां तक कि बंदा हर एक से किनाराकश होकर ख़ालिस रज़ाए इलाही को मलहूज़ रखने लगे। हक़ तआला जब बंदे को इन मअ़ने में मख़सूस फ़रमा लेता है तो उसके इरादए तख़सीस का नाम मुहब्बत रख दिया जाता है यह मज़हब हज़रत हारिस मुहासबी, हज़रत जुनैद बग़दादी और दीगर मशायख़े इज़ाम का है। और फ़रीक़ैन के अक्सर फ़ुक़हा और मुतक़ल्लेमीन अहले सुन्नत का मज़हब भी यही है। लेकिन वह हज़रात जो यह कहते हैं कि हक़ तआला की मुहब्बत के मआनी सनाए जमील है। जो बंदे पर लाज़िम है उसकी सना उसका कलाम है उसका कलाम ग़ैरे मख़लूक़ है और ग़ैर मख़लूक़ को मख़लूक़ के साथ कैसे मिलाया जा सकता है।

वह हज़रात जो यह कहते हैं कि मुहब्बत के मअ़ने एहसान के हैं और हक़ तआला का एहसान इसका फ़ेअल है। मअ़ने के लिहाज़ से यह अक़वाल क़रीब क़रीब हैं और सबका हुक्म यकसां मौजूद है।

लेकिन बंदे की मुहब्बत अल्लाह तआला के लिये। तो यह एक ऐसी सिफ़त है जो फ़रमां बरदार मोमिन के दिल में ज़ाहिर होती है जिसके मअ़ने ताज़ीम व तकरीम भी हैं यहां तक कि वह महबूब की रज़ा को तलब करता और उसकी रोइयत की तलब में बेख़बर होकर उसकी क़ुरबत की आरज़ू में बेचैन हो जाता है और उसे उसके बग़ैर चैन व क़रार हासिल होते ही नहीं। इसकी आदत उसके

ज़िक्र के साथ हो जाती है। और वह ग़ैर की याद और ग़ैर के ज़िक्र से नफ़रत करने लगता है क्योंकि ग़ैर के साथ राहत हराम है और मुहिब्ब से सुकून व क़रार जाता रहता है वह तमाम तबई रग़बतों से जुदा होकर अपनी ख़्वाहिशात से किनारा कश हो जाता है वह ग़लबए मुहब्बत के साथ मुतवज्जोह होता है और ख़ुदा के हुक्म के आगे सर झुका देता है और उसे कमाले औसाफ़ के साथ पहचानने लगता है।

यह जायज़ नहीं है कि मख़लूक़ के साथ ख़ालिक़ की मुहब्बत, लोगों की बाहमी मुहब्बत की जिन्स से हो ताकि लोगों के मानिंद महबूब की मुहब्बत का इदराक और इहाता कर सकें। यह सिफ़्त तो जिस्मों की है। (और अल्लाह तआला जिस्म व जिस्मानियत से पाक है) लिहाज़ा महबूबाने ख़ुदा उसकी क़ुरबत के मारे हुए होते हैं न कि उसकी कैफ़ियत के तलबगार। इसलिये कि तालिब, फ़ी नफ़सिही मुहब्बत में क़ायम होते हैं और क़ुरबत के मारे हुए तो महबूब के साथ क़ायम होते हैं। जिस क़द्र वह महबूब होते हैं इतने ही मुहब्बत की रज़्मगाह में वह हलाक व मग़लूब होते हैं। इसलिये कि मुहदिस क़दीम के साथ उस वक़्त होता है जब क़दीम मुहदिस पर ग़लबा फ़रमाए। जो मुहब्बत की हक़ीक़त को पहचानता है उसे किसी क़िस्म का इवहाम और शुबह नहीं होता।

मुहब्बत की क़िस्में : मुहब्बत की दो क़िस्में हैं एक यह कि जिन्स की मुहब्बत दूसरे हम जिन्स के साथ हो ऐसी मुहब्बत मीलाने तबअ और नफ़्स परस्ती कहलाती है ऐसा तालिब, महबूब की ज़ात का आशिक़ और उस पर फ़रेफ़्ता होता है।

दूसरी क़िस्म यह कि एक जिन्स की मुहब्बत किसी ग़ैर जिन्स के साथ हो। ऐसी मुहब्बत अपने महबूब की किसी सिफ़्त पर सुकून व क़रार हासिल करना होता है ताकि वह इस ख़ूबी से राहत पाए। और उन्स हासिल करे। मसलन महबूब का कलाम सुनना या उसके दीदार का ख़्वाहां होना वग़ैरह वग़ैरह।

हक़ तआला से मुहब्बत रखने वाले हज़रात दो तरह के हैं। एक तो वह जिन्होंने अपने ऊपर हक़ तआला का इनाम व एहसान देखा और उसके देखने की वजह से मुनइम व मोहसिन की मुहब्बत के मुतक़ाज़ी हुए। दूसरे वह जो तमाम एहसानात व इनाम को ग़ल्बए मुहब्बत में मुक़ामे हिजाब तसव्वुर करते हैं और नेमतों पर नज़र करने की बजाए उनका तरीक़, नेमत देने वाले की तरफ़ होता है। यह मुक़ाम पहले के मुक़ाबले में बहुत अरफ़अ है।

मुहब्बत में मशायख़ का तरीक़ : मुहब्बत का मफ़हूम व मअ़ने, तमाम लोगों के दर्मियान मारूफ़ और तमाम ज़ुबानों में मश्हूर व मुसतअ़ल है और कोई साहबे अक़्ल व फ़हम उसकी कैफ़ियत को अपने ऊपर छिपा नहीं सकता। तरीक़त के मशायख़ में से हज़रत समनून अल मुहिब रहमतुल्लाह अलैहि तो मुहब्बत में ख़ास मज़हब व मशरब रखते हैं। इनका इरशाद है कि मुहब्बत तो राहे ख़ुदा की असास व बुनियाद है इसी पर तो तमाम अहवाल व मुक़ामात और मनाज़िल की बिना है और हर मंज़िल व महल्ल में ख़्वाह तालिब कहीं गामज़न हो उसका इससे ज़वाल मुमकिन है लेकिन हक़ तआ़ला की मुहब्बत के मुक़ाम में इसका ज़वाल मुमकिन नहीं। जब तक वह इस राह में मौजूद है किसी हाल में उससे ज़वाल जायज़ नहीं। इस मसले में तमाम मशायख़ उनके मज़हब की मवाफ़िक़त करते हैं लेकिन चूंकि यह नाम आम था और उन्होंने चाहा कि आम लोगों से इन मआ़नी को मख़्फ़ी रखा जाए इसलिये उन्होंने इसके मअ़ने के वजूद के तहक्कुक़ में यह नाम बदल दिया। चुनांचे किसी ने सफ़ाए मुहब्बत का नाम सफ़वत रखा है और मुहिब को सूफ़ी कहने लगे और किसी ने मुहिब के तर्के इख़्तेयार और महबूब के इसबाते इख़्तेयार का नाम फ़क्र रखा और मुहिब को फ़क़ीर कहने लगे। क्योंकि मुहब्बत का अदना दर्जा, मुवाफ़िक़त है और महबूब की मुवाफ़िक़त उसकी मुख़ालिफ़त की ज़द होती है। शुरू किताब में फ़क्र व सफ़वत के मअ़नी की वज़ाहत की जा चुकी है।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि -

ज़ाहिदों के नज़दीक मुहब्बत इजतेहाद से ज़्यादा ज़ाहिर है।

मुहब्बत के सिलसिला में यह मक़ूले आम ज़ुबाने ज़द हैं।

तौबा करने वालों के नज़दीक नाला व फ़ुग़ां से ज़्यादा ज़ाहिर है।

तुर्कों के नज़दीक शिकार बंद से ज़्यादा मश्हूर है।

हिंदुओं के नज़दीक महबूब व मुहिब का क़िस्सा ग़ज़नवी की क़ैद या उसकी मेहरबानी या उसकी सख़्ती से ज़्यादा ज़ाहिर है।

रूमियों के नज़दीक महबूब व मुहिब का क़िस्सा सलीब से ज़्यादा मश्हूर है।

अरब के हर क़बीला का अदब, मुहब्बत का क़िस्सा है।

जो ख़ुशी, रंज, अफ़सोस, जंग और ग़म से ज़्यादा प्यारा है।

इन मक़ूलों के बयान करने का मक़सद यह बताना है कि इंसानों में कोई

...ई ऐसा नहीं है जिसे हालते ग़ैबत में, मुहब्बत से वास्ता न पड़ा हो और उनके दिल मुहब्बत से ख़ाली रहे हों। ख़्वाह वह ख़ुशी में सरशार हों या शराब में बद मस्त या उसके ग़ल्बा में मख़मूर इंसान का दिल जोश और बेक़रारी से मुरक्किब है और अक़्ल का दरिया मुहब्बत की शराब है जो दिल के लिये इस तरह ज़रूरी है जिस तरह जिस्म के लिये खुराक। जो दिल मुहब्बत से ख़ाली हो वह दिल बरबाद व वीरान है। तकल्लुफ़ में मुहब्बत दूर करने या उसके हासिल करने की ताक़त नहीं है, मुहब्बत के लतायफ़ जो दिल पर वारिद होते हैं नफ़्स को उसकी कुछ ख़बर नहीं होती।

हज़रत अम्र व बिन उसमान मक्की रहमतुल्लाह अलैहि किताबे मुहब्बत में फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने कुलूब को उनके अजसाम से सात हज़ार साल पहले पैदा फ़रमाया और इन्हें अपने कुर्बे ख़ास में रखा। इसके बाद मुहब्बत के दर्जा में रखा। फिर उनके बातिन को उनके अजसाम से सात हज़ार साल पहले पैदा किया और इन्हें वसल के दर्जा में रखा और रोज़ाना तीन सौ साठ मर्तबा ज़ुहूरे जमाल से बातिन को तजल्ली बख़्शी और तीन सौ साठ मर्तबा नज़रे करामत डाली फिर मुहब्बत का कलिमा सुनाया और तीन सौ साठ मर्तबा दिलों पर उन्स व मुहब्बत के लतायफ़ ज़ाहिर किये यहां तक कि उन्होंने सारी कायनात पर नज़र डाली तो किसी मख़लूक़ को अपने से ज़्यादा साहबे करामत न पाया। इस बिना पर इनमें फख़्र व गुरूर पैदा हुआ उस वक़्त अल्लाह तआला ने इन सबका इम्तेहान लिया और बातिन को जिस्म में मुक़य्यद करके रूह को दिल में महबूस किया और दिल को जिस्म में रखा फिर अक़्ल को इनमें शामिल किया और अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजकर इन्हें हुक्म दिया। इसके बाद हर अपने मुक़ाम का मुतलाशी हुआ हक़ तआला ने इसे नमाज़ का हुक्म दिया ताकि जिस्म तो नमाज़ में हो और दिल मुहब्बते इलाही में और जान कुरबत का मुक़ाम हासिल और बातिन विसाले हक़ से सुकून व क़रार पाये।

ग़र्ज़ कि यह सब मुहब्बत की ताबीरात हैं न कि ऐने मुहब्बत इसलिये कि मुहब्बत हाल है और हाल को किसी सूरत अल्फ़ाज़ में बयान नहीं किया जा सकता। अगर सारा जहान मिलकर भी चाहे कि मुहब्बत को हासिल करे तो हासिल नहीं कर सकता। अगर सब मिलकर चाहें कि उसे अपने से दूर करें तो भी मुमकिन नहीं क्योंकि अतीया और मुहिबत रब्बी से मुताल्लिक है न कि कसब व इख़्तेयार से। इसी तरह अगर सारा जहान यह चाहे कि मुहब्बत इसमें

आ जाये तो यह भी मुमकिन नहीं है और अगर वह सब मिलकर चाहें कि उसे अपने महदूद कर दें तो वह यह भी नहीं कर सकते क्योंकि यह ख़ुदा का अम्र है और आदमी लाही यानी खिलंडरा है लाही इलाही का इदराक नहीं कर सकता।

इस्तेमाले इश्क़ पर मशायख़ के अक़्वाल : लफ़्ज़ इश्क़ के इस्तेमाल के सिलसिले में मशायख़ के बकसरत अक़्वाल हैं चुनांचे एक जमाअत का यह नज़रिया है कि बंदा को हक़ तआला का इश्क़ हो सकता है लेकिन हक़ तआला को किसी से इश्क़ हो यह समझना जायज़ नहीं है। यह जमाअत यह भी कहती है कि इश्क़ ऐसी सिफ़त है जो अपने महबूब से रोका गया हो। चूंकि बंदा को हक़ तआला से रोका गया है और हक़ तआला बंदे से रुका हुआ नहीं है इसलिये बंदा पर तो इश्क़ का इस्तेमाल जायज़ है लेकिन हक़ तआला के लिये इसका इस्तेमाल जायज़ नहीं है।

एक जमाअत का नज़रिया यह है कि बंदा का हक़ तआला पर आशिक़ होना भी जायज़ नहीं है इसलिये कि हद से बढ़ जाने का नाम इश्क़ है और हक़ तआला महदूद नहीं है।

सूफ़ियाए मुतआख़िरीन फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की ज़ात का इश्क़ दोनों जहान में दुरुस्त नहीं हो सकता अलबत्ता इदराके ज़ात का इश्क़ मुमकिन है मगर हक़ तआला की ज़ात मुदरक नहीं है लिहाज़ा उसकी किसी सिफ़त के साथ इश्क़ व मुहब्बत दुरुस्त हो सकता है उसकी ज़ात के साथ दुरुस्त नहीं हो सकता।

नीज़ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इश्क़, दीदार के बग़ैर हासिल नहीं होता अलबत्ता महज़ समाअत के ज़रिये मुहब्बत जायज़ हो सकती है। चूंकि इश्क़ का ताल्लुक़ नज़र से है और यह हक़ तआला पर मुमकिन नहीं क्योंकि दुनिया में किसी ने उसको नहीं देखा। जब हक़ तआला से यह बात ज़ाहिर होती तो हर एक उसका दावा करने लगता क्योंकि ख़िताब में सब बराबर हैं। चूंकि ज़ाते हक़ ग़ैर मुदरक व ग़ैर महसूस है तो इसके साथ इश्क़ करना कैसे दुरुस्त हो सकता है अलबत्ता हक़ तआला ने अपनी सिफ़ात व अफ़आल के साथ जब अपने औलिया पर एहसान व करम फ़रमाया तो बई वजह सिफ़ात के साथ मुहब्बत करना दुरुस्त हो जाता है। क्या तुमने नहीं देखा कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुहब्बत में उनके सदमए फ़िराक़ से वारफ़्ता

हो गये थे। जब उन्होंने उनकी क़मीसे मुबारक पाई तो उनके चश्म मुबारक में नूर आ गया और जब ज़ुलेख़ा को इश्क़े यूसुफ़ी ने मारा तो जब तक इन्हें उनका विसाल नसीब न हुआ आखें रौशन न हुईं, हालांकि यह अजीब मामला है कि एक यानी ज़ुलेख़ा ख़्वाहिशे नफ़्सानी की परवरिश करती है और दूसरा यानी हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम हर ख़्वाहिश को फ़ना कर देते हैं।

सूफ़िया की एक जमाअत का नज़रिया यह है कि चूंकि इश्क़ की कोई ज़िद नहीं है और हक़ तआला की भी कोई ज़िद नहीं है लिहाज़ा उसे ज़ेबा है कि उस पर यह जायज़ हो। इसी सिलसिले में बकसरत लतायफ़ हैं और वक़ायक़ हैं बख़ौफ़े लवालत इन्हें छोड़ता हूं।

तहक़ीक़े मुहब्बत में मशायख़ के रुमूज़ : मुहब्बत की तहक़ीक़ में मशायख़े तरीक़त ने बकसरत रुमूज़ व इशारात बयान किये हैं बतौर तबर्रुक चंद बयान करता हूं सबकी यहां गुंजाइश नहीं है।

हज़रत उस्ताज़ अबुल क़ासिम क़शीरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुहब्बत वह है कि वह अपनी तमाम सिफ़तों को महबूब की तलब और उसकी ज़ात के इस्तेबात में फ़ना कर दे।

मतलब यह है कि महबूब बाक़ी हो और मुहिब फ़ानी और महबूब की बक़ा के लिये मुहब्बत की ग़ैरत को उस हद तक नफ़ी करे कि मुहब्बत ही का तसर्रुफ़ रह जाये। और मुहब्बत के औसाफ़ की फ़ना, ज़ाते महबूब के इस बात के सिवा न रहे। चूंकि यह जायज़ ही नहीं है कि मुहिब अपने सिफ़ात के साथ क़ायम रहे। अगर वह अपनी सिफ़ात में क़ायम रहेगा तो जमाले महबूब से महरूम रहेगा। जबकि मुहिब यह जानता है कि उसकी ज़ात, जमाले महबूब से वाबस्ता है कि जब तक अपने सिफ़ात क़ायम हैं वह महबूब से महजूब रहेगा वह दोस्त व महबूब की मुहब्बत में अपना दुश्मन रहेगा।

मश्हूर है कि हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि जब दार पर चढ़ाए गये तो उनका आख़िरी कलाम यह था कि मुहिब के लिये यह कितना ख़ुशी का मुक़ाम है कि अपनी हस्ती को राहे मुहब्बत में फ़ना कर दे और नफ़्स का इख़्तेयार महबूब के पाने में सर्फ़ करके ख़ुद को फ़ना कर दे।

हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुहब्बत यह है कि अपने बहुत को थोड़ा जाने और महबूब के थोड़े को बहुत जाने।

बंदे के लिये यह मामला हक़ है इसलिये कि दुनिया में जिस क़दर नेमतें उसे दी गयी हैं हक़ तआला ने उनको थोड़ा फ़रमाया है चुनांचे हक़ तआला फ़रमाता है-

ऐ महबूब! तुम कह दो यह दुनियावी नेमतें तो थोड़ी हैं।

लेकिन क़लील ज़िन्दगी, क़लील जगह और क़लील सामान के साथ इनके क़लील ज़िक्रे इलाही को बहुत फ़रमाया है जैसा कि इरशाद है-

मर्द व औरत ख़ुदा का बहुत ज़िक्र करने वाले हैं।

हज़रत बायज़ीद के इरशाद का मतलब यह है कि लोग इस हक़ीक़त को जान लें कि हक़ीक़ी महबूब अल्लाह तआला ही है। यह सिफ़त ग़ैर के लिये मौज़ूं नहीं है। इसलिये कि हक़ तआला की तरफ़ से जितना भी बंदा को पहुंचे वह थोड़ा नहीं हो सकता और बंदे की तरफ़ से जितना भी उसकी तरफ़ जाए वह थोड़ा ही है।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुहब्बत यह है कि महबूब की ताअतों में ही हम आग़ोश रहे और उसकी मुख़ालिफ़तों से हमेशा बचता रहे क्योंकि दिल में जिस क़दर मुहब्बत ज़्यादा होगी, मुहब्बत का हुक्म, मुहिब के लिये इतना ही ज़्यादा आसान होगा। यह मुलहिदों के इस गरोह का रद्द है जो यह कहता है कि बंदा मुहब्बत में इस कमाल तक पहुंच जाता है कि उससे ताअतें उठ जाती हैं। हालांकि यह ख़ालिस ज़िनदीक़ी और बेदीनी है। यह ना मुमकिन है कि अक़्ल की दुरुस्तगी की हालत में बंदे से अहकामे मुकल्लफ़ा साक़ित हो जायें। वजह यह है कि उम्मते मुस्लेमा का इस पर इजमाअ है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत हरगिज़ मंसूख़ न होगी, और अक़्ल की दुरुस्तगी की हालत में जब किसी एक से भी ताअत के उठ जाने को जाना जायेगा तो सबसे उठ जाना भी जायज़ मुमकिन बन जायेगा। यह बात ख़ालिस बेदीनी की है अलबत्ता मग़लूबुल हाल या पागल दीवाने का हुक्म मुख़्तलिफ़ है। और इसका उज़्र जुदागाना है। अलबत्ता यह बात जायज़ है कि मुहब्बते इलाही में बंदा इस कमाल तक पहुंच जाये कि उसे ताअत की बजा आवर ही में तकल्लुफ़ व मुशक़्क़त मालूम न हो इसलिये कि हुक्म की कुलफ़त, हुक्म वाले से मुहब्बत रखने की मिक़दार के मुताबिक़ मालूम होती है इससे पहले जितनी ज़्यादा मुहब्बत होगी उतनी ही उसके अहकाम की बजा आवरी आसान होगी। यह मआनी हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाल में ज़ाहिर है कि हक़ तआला ने फ़रमाया ऐ महबूब! आपकी ज़िन्दगी की क़सम! आपने शबाना रोज़ इस कसरत से इबारत की कि तमाम मशाग़िल से दस्त कश हो गये और आपके क़दमे नाज़ वरम कर आए उस वक़्त अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

ऐ महबूब हमने यह कुरआन इसलिये नहीं उतारा कि आप मुशक्क़त में पड़ जायें।

यह सूरत भी मुमकिन है कि ताअत की बजा आवरी में बंदे से उसकी रोइयत उठा ली जाये और बंदा अपने अमल की कैफ़ियत न देख सके। चुनांचे हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि वसा औक़ात मेरे दिल पर एक अबर सा छा जाता है तो मैं उस वक़्त रोज़ाना सत्तर बार अपने रब से इस्तिग़फ़ार करता हूं। इसकी वजह यह होती है कि हुजूर अपने आमाल को खुद मुलाहज़ा न फ़रमाते और न उन पर हैरत व ताज्जुब का इज़हार करते बल्कि अम्रे हक़ की ताज़ीम की तरफ़ ही मुतवज्जोह होकर अर्ज़ करते कि ऐ रब्बुल मोमिनीन मेरे आमाल तेरे शायाने शान पूरे न हो सके।

हज़रत समनून मुहिब रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

महबूबाने खुदा तो दुनिया व आख़िरत की शराफ़त के साथ वासिल बहक़ हैं क्योंकि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आदमी उसके साथ रहेगा जिससे उसे ज़्यादा मुहब्बत है।

चूंकि वह हक़ तआला के साथ हैं इसलिये उन पर ख़ता का सुदूर मुहाल है लिहाज़ा उनकी दुनियावी शराफ़त यह है कि हक़ तआला उनके साथ है और उखरवी शराफ़त यह है कि वह हक़ तआला के साथ हैं।

हज़रत यहया बिन मअज़ राज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

हक़ीक़ी मुहब्बत न जुल्म से कम होती है और न नेकी व अता से बढ़ती है।

इसलिये कि यह दोनों मुहब्बत में सबब हैं और असबाब, ज़ाहिर वजूद के हाल में फ़ना होते हैं और मुहिब, महबूब के बला में खुश होता है। चूंकि राहे वफ़ा में जुल्म व वफ़ा दोनों बराबर हैं और जब मुहब्बत पैदा हो जाती है तो वफ़ा जफ़ा की मानिंद और जफ़ा वफ़ा की मानिंद बन जाती है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा को दीवानगी के इल्ज़ाम में शिफ़ाख़ाना में दाख़िल करके महबूब करके, कुछ लोग बगर्ज़े मुलाक़ात उनके पास गये आपने

उनसे पूछा तुम कौन हो? लोगों ने कहा हम आपसे मुहब्बत करने वाले हैं। यह सुनकर आपने पत्थर मारने के लिये उठाया लोग सब भाग खड़े हुए। उस वक्त आपने फ़रमाया अगर तुम मुझसे सच्ची मुहब्बत करने वाले होते तो मार के डर से न भागते। इसलिये कि मुहिब्बीन, महबूब की बला से भागा नहीं करते।

इस मअ़ने में बकसरत अक़्वाले मशायख़ हैं फ़िलहाल मैं इन ही पर इक्तेफ़ा करता हूं।

छठा कश्फ़े
हिजाब ज़कात के बयान में

अल्लाह तआला का इरशाद है -

नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।

इस हुक्म पर मुश्तमिल बकसरत आयात व अहादीस वारिद हैं और ईमान के फ़रायज़ व अहकाम में से एक ज़कात का वजूब है जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो जाये उस पर एराज़ हराम है। अलबत्ता तकमीले निसाब पर ज़कात वाजिब होती है मसलन जिसके पास दो सौ दिरहम हों तो यह कामिले निसाब है इस पर मालिकाना हैसियत से पांच दिरहम ज़कात वाजिब है। और बीस दीनार भी एक पूरा निसाब और कामिल नेमत है इस पर निस्फ़ दीनार ज़कात वाजिब है और पांच ऊंट भी पूरी नेमत है इस पर एक बकरी वाजिब है दीगर अहवाल की जक़ात का भी यही हाल व क़ायदा है।

जिस तरह माल की ज़कात वाजिब होती है इसी तरह मर्तबा की ज़कात भी वाजिब होती है क्योंकि वह भी एक पूरी नेमत होती है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

अल्लाह तआला ने तुम्हारे मर्तबा की ज़कात भी इसी तरह फ़र्ज़ की है जैसा कि तुम्हारे माल पर फ़र्ज़ की।

नीज़ इरशाद है-

ज़कात की हक़ीक़त : यक़ीनन हर चीज़ के लिये ज़कात है और घर की ज़कात मेहमान को ठहराना और उसकी मेहमान नवाज़ी करना है, ज़कात की हक़ीक़त, शुकरानाए नेमत है जो उसी जिन्स की नेमत के साथ अदा की जाये। चूंकि तंदरुस्ती एक बड़ी नेमत है लिहाज़ा हर अज़्व की ज़कात भी वाजिब है और उसकी अदाएगी यह है कि अपने तमाम आज़ा को इबादत में मशग़ूल रखा जाये और किसी खेल कूद में न लगाया जाये ताकि नेमत की ज़कात का हक़

अदा हो।

इसी तरह बातिनी नेमत की भी ज़कात वाजिब होती है चूंकि बातिनी नेमत बेहद व हिसाब है इसलिये इसकी हक़ीक़त का इहाता नहीं किया जा सकता। इसमें हर शख़्स के लिये अपने अंदाज़ा के मुताबिक़ इसकी ज़कात वाजिब है और वह ज़ाहिरी व बातिनी नेमतों का इरफ़ान है जब बंदा जान ले कि हक़ तआला की नेमतें उस पर बे अंदाज़ा हैं तो वह उसका शुक्र भी बे अंदाज़ा बजा लाये। इसलिये कि बे अंदाज़ा नेमतों की ज़कात के लिये बे अंदाज़ा शुक्र दरकार है।

अहले तरीक़त के नज़दीक ज़कात के तमाम क़िस्मों में सबसे ज़्यादा ग़ैर महमूद ज़कात दुनियावी नेमत की ज़कात है क्योंकि इसमें बुख़्ल का वजूद है। हालांकि इंसान के लिये बुख़्ल मज़मूम सिफ़त है क्या यह बुख़्ल का कमाल नहीं है कि दो सौ दिरहम कोई शख़्स साल भर तक क़ब्ज़ा में रखे और एक साल के बाद इसमें से पांच दिरहम ज़कात निकाले। हालांकि करीम व सख़ी का तरीक़ माल ख़र्च करना है न कि माल को जमा रखना। जब सख़ावत की आदत होगी तो ज़कात कहां से वाजिब होगी?

एक ज़ाहिरी आलिम ने बगर्ज़ तजरबा हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा से दर्याफ़्त किया कि कितनी मिक़दार पर ज़कात का वजूब है आपने फ़रमाया जब बख़ील के पास दो सौ दिरहम माल मौजूद हो तो तुम्हारे तरीक़ा में पांच दिरहम और हर बीस दीनार पर निस्फ़ दीनार ज़कात वाजिब है। लेकिन हमारी तरीक़त में किसी चीज़ को अपनी मिलकियत में न रखना वाजिब है ताकि ज़कात की मशग़ूलियत से बे नियाज़ रहे। उस आलिम ने पूछा इस मसले में आपका इमाम और रहनुमा कौन है? आपने फ़रमाया हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि उन्होंने जो मौजूद था सब दे दिया। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमने अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ा है? अर्ज़ किया अल्लाह व रसूल।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करमुल्लाह वजहू ने अपने एक क़सीदा में फ़रमाया है-

मुझ पर कभी ज़कात वाजिब न हुई है।

क्या सख़ियों पर भी ज़कात वाजिब होती है।

लिहाज़ा सख़ियों का माल ख़र्च होता रहता है वह माल में कंजूसी नहीं करते और न माल की बदौलत किसी से झगड़ा करते हैं क्योंकि उनकी मिलकियत

में कुछ रहता ही नहीं। अगर कोई शख़्स अपनी जहालत से यह कहे कि जब मेरे पास माल ही नहीं तो ज़कात के मसायल जानने की क्या हाजत? इसका यह कहना सहीह नहीं इसलिये कि तहसीले इल्म, फ़र्ज़े ऐन है और इल्म से ला तअल्लुक़ी का इज़हार कुफ़्र है। मौजूदा ज़माना के फ़ित्नों में से एक फ़ित्ना यह भी है कि मुद्दईयाने सलाह व फ़क्र जहालत में रहते हुए इल्म को छोड़ जाते हैं।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन सूफ़ियों की एक जमाअत को पढ़ा रहा था चूंकि वह लोग मुबतदी थे उनको मफ़हूम समझा रहा था एक जाहिल दर्मियान में दख़ल अंदाज़ हुआ। मैं उस वक़्त ऊंट की ज़कात के मसायल बयान कर रहा था और बिन्त लबून, बिन्त मख़ाज़ और हक्का के अहकाम समझा रहा था उस जाहिल मुरक्कब के दिल में यह बात तंगी का मोजिब बनी वह उठ खड़ा हुआ और मुझ से कहने लगा मेरे पास ऊंट नहीं हैं। बिन्त लबून का इल्म मेरे किस काम आयेगा? मैंने उससे कहा ऐ शख़्स! जिस तरह हमें ज़कात देने के लिये इल्म की हाजत है इसी तरह हमें ज़कात वसूल करने के लिये भी इल्म की ज़रूरत है। अगर कोई तुझे बिन्त लबून दे और तू उसे ले ले तो उस वक़्त भी यही कहेगा कि मुझे बिन्त लबून के इल्म की ज़रूरत नहीं। अगर किसी के पास माल न हो और माल के हुसूल की कोई सूरत न हो तो क्या इससे इल्म की फ़ज़ीलत जाती रहेगी?

ज़कात लेने में तरीक़त के मसायल

मशायख़े तरीक़त में कुछ हज़रात तो वह हैं जो ज़कात के लेने को गवारा करते हैं। और कुछ हज़रात वह हैं जो ज़कात लेने को ना पसंद करते हैं। जिन हज़रात का फ़क्र इख़्तेयारी होता है वह माले ज़कात नहीं लेते वह कहते हैं कि हम माल जमा नहीं करते कि हमें ज़कात देनी पड़ेगी और दुनियादारों से लेना भी गवारा नहीं करते कि इसमें उनका हाथ ऊंचा रहता है और हमारा हाथ नीचा। जिन हज़रात का फ़क्र इख़्तेयारी न हो बल्कि इज़्तरारी हो वह ज़कात ले लेते हैं। इसकी वजह यह नहीं कि उन्हें माले ज़कात की ज़रूरत है बल्कि इस बिना पर कि वह चाहते हैं कि अपने मुसलमान भाई की गर्दन से फ़रीज़ा उतर जाये। और जब उनकी नीयत यह हो तो इसमें उन्हीं का हाथ ऊंचा है न कि तवंगर का। अगर देने वाले का हाथ ऊंचा रहे ओर लेने वाले का नीचा तो इससे ख़ुदा के इरशादे गिरामी वह ज़कात लेते हैं का बुतलान लाज़िम आता है और यह भी ज़कात देने वाला ज़कात लेने वाले से अफ़ज़ल है और यह

ख़ालिस गुमराही है। ऊंचा हाथ वही है जो किसी चीज़ को वजूब के तौर पर मुसलमान भाई से ले ताकि उसकी गर्दन से उसका बोझ उतर जाये। यह दरवेश लोग दुनियावी आदमी नहीं हैं बल्कि उक़बाई हैं। अगर यह उक़बाई दरवेश दुनियादारों से न लें तो उनके ज़िम्मे फ़रीज़ा वाजिब रह जायेगा और जिसकी बिना पर क़ियामत में वह माख़ूज़ होंगे। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उक़बाई दरवेशों को बहुत कम ज़रूरियात के ज़रिये इम्तेहान में डाला ताकि दुनियादारों की गर्दनों से फ़र्ज़ का बोझ उतारें। ला मुहाला ऊंचा हाथ फुक़रा का ही हाथ है जो शरीअत के हक़ के मुवाफ़िक़ अपना हक़ लेता है। क्योंकि अल्लाह तआला का हक़ उस पर वाजिब था। अगर लेने वालों का हाथ नीचा होता जैसा कि हशवी लोग कहते हैं तो अंबिया का हाथ नीचा होता क्योंकि उन्होंने अल्लाह तआला का हक़ लोगों से वसूल किया है और लाज़िमन अख़राजात में उनको सर्फ़ फ़रमाते रहे हैं इसलिये उनका कहना ग़लत है कि लेने वाला हाथ नीचा है और देने वाला हाथ ऊंचा। तसव्वुफ़ में दोनों क़ायदे क़वी हैं।

जूद व सख़ा का बयान

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया -

सख़ी जन्नत से क़रीब और दोज़ख़ से दूर है और बख़ील दोज़ख़ से क़रीब और जन्नत से दूर है।

अहले इल्म के नज़दीक जूद व सख़ा के एक ही मअ़ने सिफ़ाते बशरी यह में हैं हक़ तआला को जव्वाद तो कह सकते हैं मगर सख़ी नहीं कह सकते। क्योंकि हक़ तआला के तमाम असमा व सिफ़ात तौक़ीफ़ी हैं। हक़ तआला ने अपने आपको जव्वाद तो फ़रमाया लेकिन सख़ी नहीं कहलवाया है और न किसी हदीस में ख़ुदा की सिफ़त सख़ीवारिद है इजमाए उम्मत और इत्तेफ़ाक़ अहले सुन्नत के नज़दीक भी यह जायज़ नहीं है कि बा एतेबारे अक़्ल व लुग़त, अल्लाह तआला को किसी नाम से पुकारा जाये। जब तक कि किताब व सुन्नत इस पर नातिक़ न हो। मसलन ख़ुदा के अस्माए हुस्ना में आलिम है बाइजमाए उम्मत उसे आलिम तो कह सकते हैं लेकिन आक़िल व फ़क़ीह नहीं कह सकते। अगरचे आलिम, आक़िल और फ़क़ीह के मअ़ने एक ही हैं। इसी तरह बर बिनाए तौक़ीफ़ ख़ुदा को जव्वाद तो कह सकते हैं लेकिन अदमे तौक़ीफ़ की बिना पर सख़ी का इस्तेमाल इसके लिये दुरुस्त नहीं।

बाज़ अहले इल्म ने जू दो सख़ा के दर्मियान मअ़ने में कुछ फ़र्क़ किया है वह कहते हैं कि सख़ी वह होता है जो बख़्शिश व अता में इम्तेयाज़ बरते यानी वह किसी ग़र्ज़ व सबब को मलहूज़ रखे। यह जूद का इब्तेदाई दर्जा है। लेकिन जूद का कामिल मर्तबा यह है कि वह किसी क़िस्म का इम्तेयाज़ न बरते और इसका फ़ेअ़ल बे सबब व बे ग़र्ज़ हो। यह दोनों हालत दो नबियों की हैं एक हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की दूसरी सैयदुना हबीबुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की। हदीस में वारिद है कि हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक खाना तनावुल न फ़रमाते थे जब तक कि कोई मेहमान मौजूद न होता। एक मर्तबा तीन दिन गुज़र गये कोई मेहमान न आया। इत्तेफ़ाक़ से एक काफ़िर का गुज़र आपके दरवाज़े के आगे से हुआ। आप ने उससे पूछा तू कौन है? उसने कहा मैं काफ़िर हूं। आपने फ़रमाया तू मेरी मेहमानी और इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लायक़ नहीं है। उसी वक़्त हक़ तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई कि ऐ ख़लील! जिसे मैंने सत्तर साल तक पाला तुमने उसे एक रोटी तक न दी।

अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल यह है कि जब हातिम ताई का बेटा आपकी बारगाह में आया तो आपने अपनी चादर मुबारक उसके नीचे बिछाई और फ़रमाया जब किसी क़ौम का इज़्ज़त वाला तुम्हारे पास आये तो तुम उसकी इज़्ज़त करो। मुक़ामे ग़ौर है कि एक नबी ने इम्तेयाज़ बरता और सख़ावत से हाथ खींचा और एक नबी ने इम्तेयाज़ बरता और अपनी शाने नुबूवत के इज़हार में काफ़िर के लिये चादर मुबारक बिछाई। अव्वल हज़रत इब्राहीम की सख़ावत का हाल था और दूसरा हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जूद का ज़िक्र पाक।

इस मअ़ने में सबसे उम्दा मज़हब यह है कि दिल में जो सबसे पहले ख़्याल आए उसकी पैरवी जूद है। और जब उस पर दूसरा ख़्याल ग़ालिब आ जाये तो वह बुख़्ल की अलामत है। मुहक़्क़ेक़ीन ने अव्वल ख़्याल को बहुत बुलंद जाना है क्योंकि पहला ख़्याल हक़ तआला की जानिब से है।

मुझे पता चला है कि नीशापुर में एक सौदागर था जो हमेशा अबू सईद की सोहबत में रहा करता था। एक रोज़ सौदागर से किसी दरवेश ने कुछ मांगा। उस सौदागर ने दिल में कहा कि मेरे पास एक दीनार है और एक टुकड़ा सोने का है। दिल का पहला ख़्याल यह कहता है कि इसे दीनार दे दिया जाये और दूसरा ख़्याल यह कहता है कि इसे सोने का टुकड़ा दे दिया जाये उस सौदागर

ने सोने का टुकड़ा दे दिया जब हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाह अलैहि के सामने इसका ज़िक्र आया तो उसने दर्याफ़्त किया कि क्या हक़ तआला से बहस करना जायज़ है? हज़रत शैख़ ने फ़रमाया तुमने बहस की है क्योंकि हक़ तआला ने तो हुक्म दिया कि दीनार दो मगर तुमने सोने का टुकड़ा दे दिया यह भी मुझे मालूम हुआ है कि हज़रत शैख़ अबू अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि एक मुरीद के घर तशरीफ़ लाये। मुरीद घर में मौजूद न था। उन्होंने फ़रमाया इसके घर का सामान बाज़ार में फ़रोख़्त कर दो। जब मुरीद घर आया तो वह इससे बहुत ख़ुश हुआ और शैख़ की ख़ुशनूदी की ख़ातिर कुछ न कहा। जब इसकी बीवी आयी और घर का यह हाल देखा तो उसने अंदर जाकर अपने कपड़े उतार दिये और कहने लगी कि यह भी तो घर के सामान में से है इसका भी वही हुक्म है। मर्द ने इस पर तंबीह करते हुए कहा कि यह सरासर तकल्लुफ़ व इख़्तेयार है, जो तूने किया है औरत ने कहा शैख़ ने जो कुछ किया वह उनका जूद था अब हमें अपने नफ़्स की मिलकियत में तसर्रुफ़ करना चाहिये ताकि हमारा जूद भी ज़ाहिर हो मर्द ने कहा ठीक है जबकि हमने ख़ुद को शैख़ के हवाला कर दिया है तो हम पर भी इनका इख़्तेयार इसी तरह है जैसा कि हमारा हमारे ऊपर था। यही हमारा ऐन जूद है।

इंसान की सिफ़त में जूद का वजूद तकल्लुफ़ व मजाज़ है लिहाज़ा मुरीद के लिये यह लाज़िम है कि वह हमेशा अपने नफ़्स की ताक़त को अल्लाह की मुताबित में सर्फ़ करे यही मज़हब हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि का है वह फ़रमाते हैं कि सूफ़ी वह है जिसका ख़ून माफ़ और उसकी मिलकियत मुबाह हो।

मैंने हज़रत शैख़ अबू मुस्लिम फ़ारसी रहमतुल्लाह अलैहि से सुना है कि उन्होंने फ़रमाया है कि एक मर्तबा मैं कुछ लोगों के साथ सफ़रे हिजाज़ में था। हलवान के नवाह में कर दूं हमारे सब कपड़े छीन गये। हमने भी उनसे कोई मज़ाहमत न की। हमने इसी में उनकी ख़ुशी समझी। लेकिन एक शख़्स हम में ऐसा था जो बेक़रारी का इज़हार कर रहा था। एक कुरदी ने तलवार सौंत कर उसे मार डालना चाहा। हम सबने उसकी सिफ़ारिश की। उस कुरदी ने कहा यह जायज़ नहीं है कि हम इस झूटे को ज़िन्दा छोड़ें यक़ीनन हमें इसे मार ही डालना चाहिये। हमने उसकी वजह पूछी तो उसने कहा कि यह सूफ़ी नहीं है यह औलिया की सोहबत में ख़्यानत करता है। ऐसे शख़्स को नापैद कर देना

ही बेहतर है। हमने पूछा यह इल्ज़ाम किस बिना पर रखते हो? उस कुर्दी ने कहा इसलिये कि सूफ़ियों का सब से कमतर दर्जा जूद है। यह शख़्स चंद फटे पुराने कपड़ों पर बे सबरी का इज़हार करता है यह कैसे सूफ़ी हो सकता है? जो अपने रुफ़क़ा से इस तरह झगड़ा करता है, हालांकि हम बरसों से यह काम कर रहे हैं तुम्हारा रास्ता रोक रहे हैं और तुम्हारे ताल्लुक़ात को मनक़तअ कर रहे हैं मगर तुम कभी रंजीदा ख़ातिर नहीं होते।

अहले इल्म बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक क़बीला की चरागाह से गुज़रे वहां एक हबशी गुलाम को बकरियां की रखवाली करते देखा। इसी असना में एक कुत्ता आया और उस गुलाम के आगे बैठ गया। उसने एक रोटी निकालकर कुत्ते के आगे डाल दी उसके बाद दूसरी फिर तीसरी। हज़रत अब्दुल्लाह ने यह हाल देखकर पूछा ऐ गुलाम तेरा खाना रोज़ाना कितना होता है? उसने कहा इतना ही जितना आपने देखा। फ़रमाया वह सब क्यों खिला दिया? यह सुनकर उसने कहा इसलिये कि यह जगह कुत्तों की तो है नहीं, मालूम होता है यह कहीं दूर से उम्मीद लेकर आता है मैंने अच्छा न जाना कि इसकी मेहनत को ज़ाया कर दूं। हज़रत अब्दुल्लाह को यह बात उसकी बहुत अच्छी मालूम हुई। उन्होंने इस गुलाम को और उसकी तमाम बकरियों को मअ चरागाह के ख़रीद लिया। और गुलाम को आज़ाद करके फ़रमाया यह सब बकरियां और यह चरागाह तुम्हें बख़्श दीं। गुलाम ने उनके लिये दुआ की और बकरियों को ख़ैरात करके चरागाह वक़्फ़ कर दी और ख़ुद वहां से चला गया।

एक शख़्स हज़रत इमाम हसन मुजतबा बिन हज़रत अली मुर्तज़ा रजियल्लाहु अन्हुमा के दरवाज़े पर आया और उसने अर्ज़ किया ऐ फ़रज़ंदे रसूल, मुझ पर चार सौ दिरहम क़र्ज़ हैं, हज़रत इमाम हसन ने हुक्म दिया कि इसे चार सौ दिरहम दे दिये जायें और ख़ुद रोते हुए अंदर तशरीफ़ ले गये तो लोगों ने पूछा ऐ फ़रज़ंदे रसूल! रोने की क्या वजह है? आपने फ़रमाया इसलिये रोता हूं कि मैंने उस शख़्स के हाल की जुस्तजू में कोताही की है यहां तक कि मैंने उसे सवाल की ज़िल्लत में डाल दिया।

हज़रत अबू सहल सअलूकी रहमतुल्लाह अलैहि कभी ख़ैरात किसी दरवेश के हाथ पर न रखते और जो चीज़ देनी होती उसे किसी के हाथ में न देते बल्कि ज़मीन पर रख देते ताकि वह उसे उठा ले। लोगों ने इसकी वजह पूछी तो

फ़रमाया इस तरह देने में वह ख़तरा नहीं रहता जो किसी मुसलमान के हाथ में देने से होता है मतलब यह है कि मेरा हाथ ऊंचा हो और उस मेहमान का हाथ नीचा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक वाक़िया है कि बादशाहे हब्श ने आपकी ख़िदमत में दो नाफ़ कस्तूरी के तोहफ़े में भेजे। आपने उन्हें एक बार ही पानी में घोल दिया और अपने और अपने सहाबा के ऊपर मल दिया।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया। आपने उसे दो पहाड़ के दर्मियान की वादी जो बकरियों से पुर थी अता फ़रमा दी। जब वह अपनी क़ौम में गया तो उस ने कहा ऐ लोगो! जाओ तुम सब मुसलमान हो जाओ क्योंकि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना ज़्यादा अता फ़रमाते हैं कि आप अपनी दरवेशी से भी नहीं डरते।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु यह भी बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अस्सी हज़ार दिरहम लाए गये आपने उन सबको एक चादर पर फैला दिया और जब तक उन सबको तक़सीम न फ़रमा दिया अपनी जगह से न उठे। हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहहु फ़रमाते हैं कि मैं देख रहा था कि आपके शिकम अतहर पर भूक की वजह से पत्थर बंधा हुआ था।

मैंने मुतअख़िरीन के एक दरवेश को देखा है कि एक बादशाह ने उसके पास तीन हज़ार दिरहम के बराबर ख़ालिस सोने के पतरे भेजे वह उन को लेकर हम्माम में गया वहां उन सबको तक़सीम करके चला आया। इससे पहले नूरी मज़हब के सिलसिले में ईसार के ज़िमन में इस क़िस्म की बकसरत बातें गुज़र चुकी हैं।

सातवां कश्फ़

हिजाब रोज़े के बयान में

अल्लाह तआला का इरशाद है-

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने मुझे ख़बर दी है कि हक़ तआला फ़रमाता है-

रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही उसकी जज़ा दूंगा। या मैं ही इसकी जज़ा हूंगा।

इसलिये कि रोज़ा बातिनी इबादत है जिसका ज़ाहिर से कोई ताल्लुक़ नहीं और किसी दूसरे को यह मालूम नहीं हो सकता कि यह रोज़ादार है। इस बिना पर उसकी जज़ा भी बेहद व हिसाब है।

उलेमा फ़रमाते हैं कि दुखूले जन्नत तो रहमत के तुफ़ैल में होगा और वहां दरजात इबादत के सदक़ा में और हमेशा रहना रोज़ेदार के लिये होगा क्योंकि हक़ तआला फ़रमाता है कि मैं ही इसकी जज़ा दूंगा।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

रोज़ा आधी तरीक़त है।

बकसरत मशायख़ को देखा है कि वह हमेशा रोज़ा रखते थे और बाज़ मशायख़ को देखा है कि वह सिर्फ़ माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखते थे। इनका यह अमल इसलिये था कि रमज़ान के रोज़े से सवाब हासिल हो और मासिवा दिनों में रोज़े न रख कर रियाकारी से महफ़ूज़ रहें। मैंने ऐसे मशायख़ को भी देखा है जिनको रोज़ादार होते हुए भी कोई न जानता था कि वह रोज़े से हैं।। अगर कोई खाना सामने ले आता तो खा भी लेते। (और नफ़्ल रोज़ा फ़तार कर लेते ताकि रोज़ादार होना मालूम न हो) यह तरीक़ सुन्नत के ज़्यादा मुवाफ़िक़ है क्योंकि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस में है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब एक दिन उनके यहां तशरीफ़ लाए तो दोनों ने अर्ज़ किया-

या रसूलल्लाह हमने आपके लिये गोश्त पकाया है हुज़ूर ने फ़रमाया मैंने आज रोज़े का इरादा किया था लेकिन लाओ मैं इसके बदले कल का रोज़ा रख लूंगा।

मैंने अहादीस में देखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अय्यामे बेज़ यानी चांद की तेरह, चौदह और पंद्रह तारीखों में और मुहर्रम के दस दिनों में रोज़े रखा करते थे और माहे रमज़ान और शाबान में भी रोज़े रखे थे। हदीस में यह भी वारिद हुआ है कि आप दाऊदी रोज़े रखा करते थे और उसे खैरुलसयाम फ़रमाया करते थे। दाऊदी रोज़ा यह है कि एक दिन रोज़ा रखे और दूसरे दिन इफ़तार करे।

एक मर्तबा शैख़ अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि के पास मैं गया तो एक तबाक़ हलवे का उनके पास रखा हुआ था और वह उससे तनावुल कर रहे थे मुझे इशारा करके फ़रमाया खाओ मैंने बचपन की आदत के मुताबिक़ कह दिया कि मैं रोज़े से हूं फ़रमाया क्यों रोज़ा रखते हो? मैंने कहा फ़लां बुज़ुर्ग की मुवाफ़िक़त में रोज़े रखता हूं। उन्होंने फ़रमाया कि यह बात दुरुस्त नहीं है कि किसी मख़लूक़ की कोई मख़लूक़ मुताबअत करे। मैंने इरादा किया कि रोज़ा इफ़तार कर लूं। उन्होंने फ़रमाया जब तुमने फ़लां बुज़ुर्ग की मुताबअत तर्क करने का इरादा किया है तो अब मेरी भी मुवाफ़िक़त न करो क्योंकि मैं भी एक मख़लूक़ हूं।

रोज़े की हक़ीक़त : रोज़े की हक़ीक़त रुकना है और पूरी तरीक़त इसमें पिनहां है रोज़े में अदना दर्जा भूके रहना है क्योंकि भूका रहना ज़मीन पर खुदा का तआम है भूके रहने को शरीअत और अक़्ल दोनों पसंद करते हैं।

हर मुसलमान आक़िल, बालिग़, तंदुरुस्त व मुक़ीम पर सिर्फ़ एक माह रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं जो रमज़ान का चांद देखने से शव्वाल का चांद देखने तक हैं। हर रोज़े के लिये नीयत दुरुस्त और अदायगी में सिद्क़ व इख़लास होना चाहिये।

रुके रहने के शरायत बहुत हैं। मसलन मेअदे को खाने पीने से रोके रखा और आंख को शहवानी नज़र, कान को ग़ीबत सुनने, जुबान को बेहूदा और फ़ित्ना अंगेज़ बातें करने और जिस्म को दुनियावी और मुख़ालफ़ते हुक्मे इलाही से रोके रखना रोज़ा है जब बंदा उन तमाम शरायत की पैरवी करेगा तब वह हक़ीक़तन रोज़ादार होगा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब रोज़ा रखे तो अपने कान, आंख, जुबान, हाथ और जिस्म के हर उज़्व का रोज़ा रखे बहुत से रोज़ेदार ऐसे हैं जिन का रोज़ा कुछ फ़ायदा मंद नहीं होता बजुज़ इसके कि वह भूके और प्यासे रहते हैं।

हुज़ूर सैयदुना दातागंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये। हुज़ूर ने फ़रमाया अपने हवास को क़ाबू में रखो। यह मुकम्मल मुजाहिदा है। इसलिये कि तमाम उलूम का हुसूल इन्हीं पांच दरवाज़ों से होता है देखने से, सूंघने से, चखने से, सुनने से और छूने से। यह पांचों हवास इल्म व अक़्ल के सिपहसालार हैं। अव्वल चार के लिये तो एक मख़सूस जगह है लेकिन पांचवां तमाम बदन के हिस्सा में फैला हुआ है। आंख जो देखने की जगह है वह रंग व बुशरे को देखती है और कान जो सुनने की जगह है वह ख़बर और आवाज़ों को सुनता है और ज़ुबान ज़ायक़ा और चखने का मुक़ाम है वह मज़ा और बे मज़ा को पहचानती है। नाक सूंघने का मुक़ाम है जो ख़ुश्बू का इदराक करती है और लमिस यानी छूने के लिये कोई मक़ाम ख़ास नहीं है बल्कि तमाम जिस्म में उसका इदराक फैला हुआ है। इंसान के तमाम आज़ा में नर्मी व गर्मी, सख़्ती व सर्दी का एहसास होता है। कोई इल्म ऐसा नहीं है जिसे इंसान मालूम करना चाहे मगर वह इन्हीं पांच दरवाज़ों से ही हासिल करता है बजुज़ बदी ही बातों और हक़ तआला के इलहाम के क्योंकि न इनमें आफ़त जायज़ है और न इनके लिये पांचों हवास की ज़रूरत है। इन पांचों हवास के लिये सफ़ाई और कदूरत दोनों सिफ़तें हैं। जिस तरह इल्म व अक़्ल और रूह के लिये कुदरत और दख़ल है इसी तरह नफ़्स व हवा के लिये भी है क्योंकि यह ताअत व मासियत और सआदत व शक़ावत के दर्मियान सबब आलह-ए-मुश्तरक है चुनांचे हक़ तआला की विलायत व इख़्तेयार समअ व बसर में यह है कि वह सच्ची बात सुने और देखें। इसी तरह नफ़्स व हवा की विलायत व इख़्तियार यह है कि वह झूटी बात सुनने और शहवानी नज़र से देखने की ख़्वास्तगार रहें और ज़ायक़ा व शाम्मा में विलायते हक़ यह है कि वह हुक्मे इलाही की मुवाफ़िक़त और सुन्नते मुस्तफ़वी की मुताबअत में कार फ़रमा हो। इसी तरह नफ़्स फ़रमाने हक़ की मुख़ालिफ़त और शरीअत से मुनाफ़रत का तलबगार रहे। इसलिये रोज़ेदार को लाज़िम है कि अपने हवासों को क़ाबू में रखे ताकि मुख़ालिफ़त के मुक़ाबला में मुवाफ़िक़त का ज़ुहूर हो और वह सहीह मअ़ने में रोज़ेदार हो वरना खाने पीने का रोज़ा तो बच्चे भी रख लेते हैं और बूढ़ी औरतें भी रखती हैं हालांकि रोज़ा का हक़ीक़ी मक़सद नफ़्सानी ख़्वाहिश और दुनियावी खेल कूद से बचना है क्योंकि हक़ तआला फ़रमाता है क्या हमने पैग़म्बरों के जिस्मों को ऐसा नहीं

बनाया कि वह खाना न खायें। और फ़रमाया क्या तुम यह गुमान करते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया? मतलब यह है कि हमने हर तबीयत को खाने का हाजतमंद बनाया और हर मख़लूक़ के लिये इसकी ख़ातिर हीला बहाना पैदा फ़रमाया। लिहाज़ा रुकना तो खेल कूद और हराम चीज़ों से चाहिये न कि हलाल चीज़ों के खाने से। मुझे हैरत तो उस शख़्स पर होती है जो कहता है कि मैं नफ़ली रोज़ा रखता हूं, हालांकि वह फ़रायज़ की अदायगी से ग़ाफ़िल है। चूंकि मासियत न करना फ़र्ज़ है और नफ़ली रोज़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के साथ मुत्तसिल और मुलहिक़ है लिहाज़ा जो शख़्स मासियत से बचता है वह हर हाल में रोज़ेदार है।

अरबावे इल्म बयान करते हैं कि हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि जिस रोज़ पैदा हुए तो वह रोज़े से थे और दिन दुनिया से रिहलत फ़रमाई उस दिन भी रोज़ेदार थे किसी ने पूछा यह किस तरह? बयान किया कि उनके पैदाईश का वक़्त सुबह सादिक़ था और शाम तक उन्होंने दूध न पिया और वह दुनिया से रुख़सत हुए तो वह रोज़े की हालत में थे। यह बात हज़रत अबू तलहा मालिकी रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान फ़रमाई।

सौमे विसाल का मसला : सौमे विसाल यानी मुसलसल और पे दरपे रोज़े रखने के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुमानेअत मरवी है क्योंकि आपने जब सौमे विसाल रखा तो सहाबा किराम ने भी आपकी मुवाफ़िक़त में रोज़े रखने शुरू कर दिये। हुजूर ने उनसे फ़रमाया तुम सौमे विसाल न रखो क्योंकि मैं तुम में से किसी की मानिंद नहीं हूं क्योंकि मैं तुम्हारे रब के हुजूर रात गुज़ारता हूं वह मुझे खिलाता और पिलाता है।

अरबावे मुजाहिदा फ़रमाते हैं कि आपकी यह मुमानेअत, शफ़क़्क़त व मेहरबानी के लिये है न कि नही व मुमानेअत या हराम बनाने के लिये। एक जमाअत यह कहती है कि सौमे विसाल सुन्नते क़ौली के ख़िलाफ़ है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि विसाल बज़ाते खुद ना मुमकिन व मुहाल है इसलिये कि दिन गुज़र जाये तो रात में रोज़ा नहीं होता और रात को रोज़े से मिलाए तो भी विसाल नहीं होता।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि की बाबत मंक़ूल है कि वह हर पंद्रह दिन के बाद एक मर्तबा खाना खाते और जब माहे रमज़ान आता तो ईदुल फ़ित्र तक कुछ न खाते इसके बावजूद रात में चार सौ

रकअत नमाज़ें पढ़ा करते थे। यह हाल, इंसान की इमकानी ताक़त से बाहर है बजुज़ मशरबे इलाही के ऐसा हो नहीं सकता उसी की ताईद से मुमकिन है और वही ताईदे इलाही उसकी गिज़ा बन जाती है किसी के लिये दुनियावी नेमत गिज़ा होती है और किसी के लिये ताईदे इलाही गिज़ा।

हज़रत शैख़ अबू नसर सिराज रहमतुल्लाह अलैहि जिनको ताऊसुल फुक़रा और कहा जाता है जब माहे रमज़ान आया तो बग़दाद पहुंचे और मस्जिदे शेअर नेज़िया में इक़ामत फ़रमाई तो उनको अलाहदा हुजरा दे दिया गया और दरवेशों की इमामत उनके सुपुर्द कर दी गयी। चुनांचे ईद तक उन्होंने उनकी इमामत फ़रमाई और तरावीह में पांच ख़त्मे कुरआन किये। हर रात ख़ादिम एक रोटी उनके हुजरे में आकर उन्हें दे जाता जब ईद का दिन आया और नमाज़ पढ़कर चले गये तो ख़ादिम ने हुजरे में नज़र डाली तो तीसों रोटियां यूं ही अपनी जगह मौजूद थीं।

हज़रत अली बिन बकार रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि वह हज़रत हफ़्स मसीसी को मैंने देखा कि वह माहे रमज़ान में पंद्रह दिन के अलावा कुछ न खाते थे।

हज़रत इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाह अलैहि की बाबत मरवी है कि वह माहे रमज़ान में अव्वल से आख़िर तक कुछ न खाते थे। हालांकि शदीद गर्मी का ज़माना था और रोज़ाना गंदुम की मज़दूरी को जाया करते थे। जितनी मज़दूरी मिलती थी वह सब दरवेशों में तक़सीम कर दिया करते थे और रात भर इबादत करते थे नमाज़ें पढ़ते यहां तक कि दिन निकल आता था वह लोगों के साथ उनकी नज़रों के सामने रहते थे लोग देखा करते थे कि वह न कुछ खाते हैं और न पीते हैं रात को सोते भी नहीं।

हज़रत शैख़ अबू अब्दुल्लाह ख़फ़ीफ़ रहमतुल्लाह अलैहि की बाबत मंकूल है कि जब वह दुनिया से रुख़सत हुए तो उन्होंने मुसलसल चालीस चिल्ले काटे थे।

मैंने जंगल में एक बूढ़े को देखा जो हमेशा हर साल दो चिल्ले काटता था और जब हज़रत अबू मुहम्मद ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैहि दुनिया से रुख़सत हुए तो मैं उनके पास मौजूद था उन्होंने अस्सी दिन तक कुछ नहीं खाया था और कोई नमाज़ बग़ैर जमाअत के नहीं पढ़ी थी। मुतअख़्ख़ेरीन के एक दरवेश ने अस्सी दिन रात कुछ न खाया और न कोई नमाज़ बग़ैर जमाअत के पढ़ी।

मरु की बस्ती में दो बुजुर्ग रहते थे एक का नाम मसऊद और दूसरे का नाम शैख़ बू अली स्याह था। लोग बयान करते हैं कि शैख़ मसऊद ने दूसरे बुजुर्ग के पास कहला भेजा कि यह दावे कब तक रहेंगे आओ हम चालीस दिन एक जगह बैठें और कुछ न खायें। उन्होंने जवाब में कहलवाया आओ हम रोज़ाना तीन मर्तबा खायें और चालीस दिन तक एक वुजू से रहें।

यह मसला अपनी जगह दुश्वार है। जाहिल लोग इससे ताल्लुक़ रख कर कहते हैं कि सौमे विसाल जायज़ है और अत्तिबा इसका सिरे से इंकार करते हैं। अब मैं इसकी मुकम्मल वज़ाहत करता हूं ताकि यह शबहात रफ़ा हो जायें और उसकी हक़ीक़त वाज़ेह हो जाये।

सौमे विसाल की वज़ाहत : सौमे विसाल रखना बग़ैर इसके कि किसी फ़रमाने इलाही में ख़लल वाक़ेय हो करामत है और करामत का महल ख़ास होता है न कि आम। फिर जिस का हुक्म आम न हो वह मामला हर जगह दुरुस्त नहीं होता। क्योंकि अगर करामत का इज़हार आम होता तो ईमान जबरी होता और आरिफ़ों के लिये मारिफ़त में सवाब न होता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि साहबे मोजिज़ा थे तो आपसे सौमे विसाल (बतौर मोजिज़ा) ज़ाहिर हुआ और अहले करामत के लिये करामत के इज़हार की मुमानेअत है और यह कि करामत में इख़फ़ा शर्त है जिस तरह मोजिज़ा के लिये इज़हार शर्त है। यह फ़र्क़ मोजिज़ा और करामत के दर्मियान वाज़ेह है लिहाज़ा हिदायत याफ़्ता के लिये इतनी ही वज़ाहत काफ़ी है।

चिल्ला कशी की असल : मशायख़े तरीक़त की चिल्लाकशी की असल, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाल से मुताल्लिक़ है क्योंकि बवक़्ते मुकालमा पहले चिल्लाकशी की और यह सहीह है कि मशायख़ जब चाहते हैं कि बातिन में रब्बुल इज़्ज़त से हम कलाम हों तो वह चालीस रोज़ भूके रहते हैं और जब तीस दिन गुज़र जाते हैं तो मिस्वाक करते हैं इसके बाद दस रोज़ मज़ीद गुज़ारते हैं। बिला शक व शुबह अल्लाह तआला इनके बातिन के साथ हम कलाम होता है इसलिये अंबिया अलेहिमुस्सलाम के लिये जो कुछ ज़ाहिर तौर पर जायज़ होता है वह सब औलिया पर बातिनी तौर पर जायज़ होता है। लिहाज़ा हक़ तआला के कलाम की समाअत, जब तक तबीयत अपने हाल पर है जायज़ नहीं होती। इसलिये चारों तबाए का चालीस दिन तक खाना पीना तर्क करके मग़लूब करते हैं ताकि लतायफ़े रूह और मुहब्बत की सफ़ाई के लिये

कामिल विलायत हासिल हो जाये। इसी मुवाफ़िक़त में भूके रहने और उसकी हक़ीक़त के बयान में कुछ वज़ाहत पेश करता हूं।

फ़ाक़ा कशी और उसके मुताल्लिक़ात का बयान

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि-

ज़रूर बिज़ ज़रूर हम तुम्हें कुछ खौफ़ और भूक और माल व जान और फलों की कमी से आज़मायेंगे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

अल्लाह तआला के नज़दीक भूके का शिकम, सत्तर आक़िल आबिदों से ज़्यादा महबूब है।

वाज़ेह रहना चाहिये कि भूका रहना, तमाम उम्मतों और मिल्लतों के नज़दीक क़ाबिले तारीफ़ है और बुज़ुर्गी की अलामत क्योंकि ज़ाहिरी लिहाज़ से भूके का दिल ज़्यादा तेज़ और उसकी तबीयत ज़्यादा पाकीज़ा और तंदरुस्त होती है ख़ास कर वह शख़्स जो ज़्यादा पानी तक न पिये और मुजाहिदे के ज़रिये तज़किया ए-नफ़्स करे इसलिये कि भूका का जिस्म मुतवाज़ेअ और दिल ख़ुशूअ वाला होता है क्योंकि भूक नफ़्सानी कुव्वत का फ़ना कर देती है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इरशाद है कि-

तुम अपने शिकमों को भूका, अपने जिगरों को प्यासा और अपने जिस्मों को ग़ैर आरास्ता रखो ताकि तुम्हारे दिल अल्लाह तआला को दुनिया में ज़ाहिर तौर पर देख सकें।

अगरचे भूक जिस्म के लिये बला है मगर दिल के लिये जिला है। और अपने जिस्मों को ग़ैर आरास्ता रखना बातिन के लिये बक़ा है। बातिन, बक़ा से हम किनार होकर जिस्म मुसफ़्फ़ा हो जाये और दिल पर नूर हो तो क्या नुक़्सान? शिकम सेर होकर खाने में कोई बला नहीं है। अगर इसमें बला होती तो जानवर शिकम होकर न खाते। मालूम हुआ कि शिकम सेर होकर खाना जानवरों का खाना है और भूका रहना जानों का ईलाज और यह कि भूक में बातिन की तामीर और शिकम सेरी में पेट की तामीर है, जो शख़्स बातिन की तामीर में कोशां रहता है वह हक़ तआला के लिये ख़ास होता है और अलायक़ दुनिया से यकसू हो जाता है। भला वह शख़्स उस शख़्स के कैसे बराबर हो सकता है जिसकी ज़िन्दगी बदन की तामीर और जिस्म व ख़्वाहिश की ख़िदमत में गुज़रती हो।

एक के लिये सारी दुनिया खाने के लिये चाहिये और दूसरे के लिये खाना इबादत के लिये। दोनों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

मुतक़द्देमीन खाते थे ताकि ज़िन्दा रहें और तुम ज़िन्दा रहते थे ताकि ख़ूब खाओ।

भूका रहना सिद्दीक़ों की गिज़ा, मुरीदों का मसलक और शयातीन की क़ैद है।

अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़दर के तहत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाना और कुर्बे इलाही से इनका दूर होना एक लुक़मा ही की वजह से था।

फ़ाक़ा कशी की हक़ीक़त : जो शख़्स भूक से बेक़रार हो दर हक़ीक़त वह भूका नहीं है इसलिये कि खाने वाले की तलब गिज़ा के साथ है। लिहाज़ा जिसका दर्जा भूक है वह ग़िज़ा न पाने की वजह से है न कि गिज़ा को छोड़ने की वजह से और जो शख़्स खाना मौजूद होते हुए न खाए और भूक की तकलीफ़ उठाए दर हक़ीक़त वही भूका है। और शैतान की क़ैद और नफ़्सानी ख़्वाहिश की बंदिश भूके रहने ही में है।

हज़रत कतानी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मुरीद की शर्त यह है कि उसमें तीन चीज़ें मौजूद हों। एक यह कि उसका सोना, ग़ल्बा के बग़ैर हो दूसरे यह कि उसका कलाम ज़रूरत के बग़ैर न हो। तीसरे यह कि उसका खाना इफ़ाक़ा के बग़ैर न हो।

बाज़ मशायख़ के नज़दीक कम से कम फ़ाक़ा दो दिन और दो रातों का होना चाहिये। और बाज़ के नज़दीक तीन शबाना रोज़ और बाज़ के नज़दीक एक हफ़्ता और बाज़ के नज़दीक एक चिल्ला का होता है। इसलिये कि मुहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक सच्ची भूक हर चालीस शबाना रोज़ के बाद एक मर्तबा होती है और यह ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी है इस दौरान जो बेचैनी व बेक़रारी ज़ाहिर होती है वह तबीयत की शरारत और उसका घमंड है अल्लाह तआला इससे महफ़ूज़ रखे क्योंकि अहले मारिफ़त की रगें, सरासर असरारे इलाही होती हैं और उनके क़ुलूब हक़ तआला की नज़रे करम की तरफ़ होते हैं। उनके सीनों में दिलों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और अक़्ल व हवा, बारगाहे इलाही में पज़ मुर्दा हो चुकी होती हैं। रूह अक़्ल की मदद करती है और नफ़्स हवा की। जिनकी तबीयतें कसरत गिज़ा से परवरिश पाती हैं उनका नफ़्स क़वी होता है

और ख़्वाहिश बढ़ती है और आज़ा में उसका ग़ल्बा ज़्यादा फैलता है और उस फैलाव से हर रग में क़िस्म क़िस्म के हिजाबात नमूदार होते हैं।

जब गिज़ा का तलबगार नफ़्स से हाथ खीचता है तो नफ़्स बहुत कमज़ोर हो जाता है और अक़्ल ज़्यादा क़वी हो जाती है और रगों से नफ़्सानी कुव्वतें मुज़महल हो जाती हैं और इसके असरार व बराहीन ज़्यादा ज़ाहिर होने लगते हैं और जब नफ़्स अपनी हरकतों से बेबस होता है तो इसके वजूद से नफ़्सानी ख़्वाहिश फ़ना हो जाती है। बातिल इरादे, इज़्हारे हक़ में गुम हो जाते हैं तो उस वक़्त मुरीद की हर मुराद पुरी हो जाती है।

हज़रत अबुल अब्बास क़स्साब रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरी ताअत व मासियत दो शक्लों में मुनक़सम है जब मैं खाता हूं तो मआसी का ख़मीर अपने में पाता हूं और जब इससे हाथ खींच लेता हूं तो तमाम ताअतों की बुनियाद अपने अंदर देखता हूं। भूके रहने का समरा मुशाहिदा है जिसका क़ायद व रहनुमा मुजाहिदा है। लिहाज़ा मुशाहिदे के साथ सेरी, मुजाहिदे के साथ भूके रहने से कहीं बेहतर है। क्योंकि मुशाहिदा जवां मर्दों की रज़्मगाह है और मुजाहिदा बच्चों का खेल। मुशाहिदा-ए-हक़ के साथ सेरी, लोगों के मुशाहिदे के साथ भूके रहने से बेहतर है। इस बहस में तवील गुफ़्तगू है तवालत के खौफ़ से इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं।

आठवां कश्फ़

हिजाब हज के बयान में

अल्लाह तआला का इरशाद है -

और अल्लाह के लिये लोगों पर बैतुल्लाह का हज फ़र्ज़ है जो वहां तक पहुंचने की इस्तेताअत रखें।

फ़रायज़े इस्लाम में से एक मुस्तक़िल फ़र्ज़ बैतुल्लाह का हज है जो बंदे पर अक़्ल व बलूग़ और इस्लाम के बाद सेहते कुदरत की हालत में फ़र्ज़ होता है। हज के अरकान मीक़ात से एहराम बांधना, अरफ़ात में ठहरना और ख़ाना कअबा की ज़ियारत व तवाफ़ वग़ैरह इस पर सबका इजमा है। सफ़ा व मरवा की सअई के रुक्न होने में इख़्तेलाफ़ है और बग़ैर एहराम के हरम के हुदूद में दाख़िल न होना चाहिये। हरम को इसलिये हरम कहा जाता है कि यह मुक़ाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम है और अमन व हुरमत की जगह है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो मक़ाम हैं एक मक़ाम आपके जिस्मे अक़दस का और दूसरा मक़ाम आपके क़लबे अनवर का। जिस्म का मक़ाम मक्का मुकर्रमा है और दिल का मक़ाम खिल्लत है लिहाज़ा जो शख़्स आपके जिस्म के मक़ाम की ज़ियारत का इरादा करे उस पर लाज़िम है कि वह तमाम लज़्ज़तों और शहवतों से मुंह मोड़ ले और वह महरम हो यानी उन चीज़ों को अपने ऊपर हराम किये हुए हो जिनको शरीअत ने बयान किया है। जिस्म पर कफ़न पहने, हलाल शिकार से हाथ खींच ले हवास के तमाम दरवाज़ों को बंद करे। इसके बाद अरफ़ात में हाज़िर हो। वहां से मुज़दलफ़ा, मशअरिल हराम जाए फिर वहां से संगरेज़े चुने फिर मक्का मुकर्रमा पहुंचकर तवाफ़ करे इसके बाद मना आकर तीन रोज़ क़ियाम करके जमरात पर संगरीज़े फेंके। वहां सर मुंडाए और कुरबानी देकर जैसे चाहे कपड़े पहने।

जब बंदा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दिल के मक़ाम, ख़िल्लत व दोस्ती का इरादा करे उस पर लाज़िम है कि वह तमाम लज़्ज़तों और रग़बतों से मुंह मोड़ कर तमाम राहतों को छोड़ दे। अग़यार के ज़िक्र से किनाराकश हो जाये क्योंकि दुनिया की तरफ़ इल्तेफ़ात करना ख़तरनाक है फिर मारिफ़त के अरफ़ात में ठहरे और वहां से मुहब्बत के मुज़दलफ़ा में आये वहां से हक़ सुबहाना के हरम के तवाफ़ के लिये सर को भेजे। और हिर्स व ख़्वाहिश और दिल के फ़ासिद इरादों संगरेज़ों को इस अमन व सलामती की मिना में फेंके और नफ़्स को मुजाहिदे के मक़ाम और उसकी तसखीरगाह में कुरबान करे ताकि मक़ाम ख़िल्लत हासिल हो। लिहाज़ा मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होना गोया दुश्मन और उसकी तलवार की ज़द से जाए अमन व अमान में आ जाना है और इस मुक़ामे ख़िल्लत में दाख़िल होना गोया क़तअइयत और इसके मुताल्लेक़ात से मामून व महफ़ूज़ रहना है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है-

हज करने वाले ख़ुदा के क़ासिद हैं वह जो मांगते हैं अल्लाह उन्हें अता फ़रमाता है और जो दुआ करते हैं अल्लाह उसे क़बूल करता है।

लेकिन जो मक़ामे ख़िल्लत का तालिब होता है वह सिर्फ़ पनाह चाहता है न कुछ मांगता है न कोई दुआ करता है बल्कि हालते तसलीम व रज़ा पर क़ायम रहता है जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किया कि-

जब ख़ुदा ने उनसे फ़रमाया कि सर झुकाओ तो अर्ज़ किया मैंने रब्बुल

आलमीन के हुजूर सरे तसलीम ख़म कर दिया।

जब हज़रत इब्राहीम मक़ामे ख़िल्लत पर फ़ायज़ हुए तो उन्होंने तमाम ताल्लुक़ात से मुंह मोड़कर दिल को ग़ैर से ख़ाली कर दिया। उस वक़्त अल्लाह ने चाहा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के जल्वे की बर सरे आम नुमाईश कर दे इसके लिये हक़ तआला ने नमरूद को मुक़र्रर किया उसने चाहा कि इनके और इनके घर वालों के दर्मियान तफ़रीक़ करा दे। चुनांचे नमरूद ने आग जलवाई, इबलीस ने आकर मिन्ज़नीक़ बनाकर दी और उसमें गाए की खाल को चिल्ला में सिया गया और इस चिल्ला में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बैठाया गया उस वक़्त जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और मिन्ज़नीक़ का चिल्ला पकड़कर अर्ज़ करने लगे क्या आपको मुझसे कोई हाजत है? हज़रत ख़लीलुल्लाह ने फ़रमाया हाजत तो है मगर तुमसे नहीं। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया फिर अल्लाह तआला ही से अर्ज़ कीजिये, फ़रमाया, अल्लाह तआला मेरी अर्ज़ से बे नियाज़ है वह मेरे हाल को जानता है। हज़रत ख़लीलुल्लाह के फ़रमाने का मतलब यह है कि मेरे लिये इतना ही काफ़ी है कि अल्लाह तआला जान ले कि मुझे उसी की राह में आग में डाला जा रहा है। मेरे हाल पर उसका इल्म, मेरे अर्ज़ व सवाल का मोहताज नहीं है।

हज़रत मुहम्मद बिन अलफ़ज़ल रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं उस शख़्स पर ताज्जुब करता हूं जो दुनिया में उसके घर को तलाश करता है वह अपने दिल के अंदर उसके मुशाहिदे की ख़्वाहिश क्यों नहीं करता? घर की तलब में मुमकिन है कि वह घर को पा जाये और मुमकिन है कि वह घर को न पा सके। हालांकि मुशाहिदा के तलब तो हर हाल में रहनी चाहिये, अगर उस पत्थर की इमारत की ज़्यारत, जिस पर साल में एक मर्तबा नज़र पड़ती है फ़र्ज़ कर दी गयी है तो वह दिल जिस पर शबाना रोज़ तीन सौ साठ मर्तबा नज़र पड़ती है उसकी ज़ियारत तो बदर्जा-ए-ऊला करनी चाहिये। बई हमा मुहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक मक्का के रास्ते में हर क़दम पर नेकी है और जब वह हरम में दाखिल हो जाता है तो हर क़दम के एवज़ एक ख़िलअत पाता है।

हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है। कि जिसे इबादत का अज्र व सवाब दूसरे दिन मिले तो उससे कह दे कि आज इबादत न करे। हालांकि इबादत व मुजाहिदे के हर सांस पर तो फ़िलहाल सवाब मिलता है। वह यह भी फ़रमाते हैं कि पहले हज में मैं ने ख़ाना कअबा के सिवा कुछ नहीं

देखा और दूसरी मर्तबा मैंने ख़ाना कअबा के साथ उसके मालिक को भी देखा लेकिन तीसरी मर्तबा मैं सिर्फ़ ख़ाना कअबा के मालिक ही को देख सका और ख़ाना कअबा नज़र नहीं आया।

ग़र्ज़ यह कि जो हरम में दाख़िल हो जाता है वह ताज़ीम का मुशाहिदा करता है और जिसे सारा जहान कुरबत की मेयाद, और मुहब्बत की ख़िलवतगाह नज़र न आये वह अभी मुहब्बत व दोस्ती की मंज़िल से बहुत दूर है। चूंकि जब बंदा मुशाहिदा में होता है तो उसके लिये सारा जहान हरम हो जाता है और जब बंदा महजूब हो तो उसके लिये हरम भी जहान में तारीक तर जगह मालूम होती है। सबसे तारीक घर वह है जो घर महबूब से ख़ाली हो।

लिहाज़ा मुक़ामे ख़िल्लअत में मुशाहिदे की क़ीमत अपने वजूद की फ़ना से मुताल्लिक़ है इसलिये कि अल्लाह तआला ने काबा की दीद को इसका सबब बनाया है न कि उसकी क़ीमत। बईं हमा मुसब्बब को हर सबब के साथ ताल्लुक़ रखना चाहिये क्योंकि किसी को पता नहीं कि इनायते इलाही किस मुक़ाम से उसकी तरफ़ तवज्जुह फ़रमाये। कहां से उसका ज़ुहूर को और तालिब की मुराद किस जगह से नमूदार हो। लिहाज़ा जवां मर्दों की मुराद क़तअ बियाबान और सहरानवर्दी से ही है। न कि ऐन हरम क्योंकि दोस्त के लिये तो महबूब के घर यानी हरम का देखना हराम है। बल्कि मुजाहिदे का मतलब यही है कि इसके हर शौक़ में बेक़रारी और बेचैनी हमेशा क़ायम रहे।

एक शख़्स हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के पास आया। आपने उससे पूछा कहां से आए हो? उसने कहा हज करके आया हूं। आपने फ़रमाया हज कर लिया? उसने कहा हां आपने फ़रमाया जब तुम अपने मकान से चले, वतन से कूच किया उस वक़्त क्या तुम ने गुनाहों से भी कूच कर लिया था? उसने कहा नहीं। फ़रमाया फिर तुमने कूच ही नहीं किया। इसके बाद फ़रमाया जब तुम घर से चले और हर मंज़िल में रात को क़ियाम किया तो क्या तुमने राहे हक़ का क़ियाम भी तय किया? उसने कहा नहीं। आपने फ़रमाया तुमने कोई मंज़िल तय नहीं की। फिर फ़रमाया जब तुमने मीक़ात से अहराम बांधा तो क्या बशरी सिफ़ात से जुदा हो गये थे। जैसे कि तुम कपड़ों से जुदा हुए थे? उसने कहा नहीं। फ़रमाया तो तुम महरम भी न हुए। फिर फ़रमाया जब तुमने अरफ़ात में वक़ूफ़ किया था तो क्या मुजाहिदे के कश्फ़ में भी वक़ूफ़ किया था? उसने कहा नहीं, फ़रमाया तुम्हें अरफ़ात का वक़ूफ़ भी मुयस्सर

न आया फिर फ़रमाया जब तुम मुज़दलफ़ा में उतरे थे और तुम्हारी मुराद बर आई थी तो क्या तुमने तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिशों को छोड़ दिया था? उसने कहा नहीं। फ़रमाया बस तो मुज़दलफ़ा का नुजूल भी हासिल न हुआ। फिर फ़रमाया जब तुमने ख़ाना कअबा का तवाफ़ किया था तो क्या तुमने अपने सर की आंखों से मुकामे तंज़ीहा में हक़ तआला के जमाल के लतायफ़ को भी देखा था। उसने कहा नहीं। फ़रमाया बस तो तवाफ़ भी हासिल नहीं हुआ। फिर फ़रमाया जब तुमने सफ़ा व मरवा के दर्मियान सअई की थी तो सफ़ा के मुक़ाम और मरवा के दर्जा का इदराक किया था? उसने कहा नही। फ़रमाया अभी सअई भी नसीब न हुई। फिर फ़रमाया जब मिना में आये थे तो क्या तुम्हारी हस्तियां तुमसे जुदा हो गयी थीं? उसने कहा नहीं। फ़रमाया अभी तुम मिना नहीं पहुंचे। फिर फ़रमाया जब कुरबान गाह में तुमने कुरबानी की थी उस वक़्त नफ़्सानी ख़्वाहिशों की भी तुमने कुरबानी की थी? उसने कहा नहीं फ़रमाया बस तो कुरबानी भी नहीं हुई। फिर फ़रमाया जब तुमने जमरात पर संगरेज़े फेंके थे उस वक्त तुम्हारे साथ जो नफ़सानी तमन्नाएं थीं क्या उन सबको भी फेंक दिया था उसने कहा नहीं। फ़रमाया तुमने संगरेज़े भी नहीं फेंके और हज भी नहीं किया। जाओ इन सिफ़ात के साथ फिर हज करो ताकि मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक रसाई हो।

मैंने सुना है कि एक बुज़ुर्ग ख़ाना कअबा के सामने बैठे हुए रो रहे थे और यह अशआर विर्दे ज़ुबान थे-

तरजमा : कुरबानी के दिन मैंने सुबह की जब कि सफ़ेद ऊंट कूच कर रहे थे और हदी ख़्वानों के साथ हुदी थी जो बुला रहे थे और जल्दी कर रहे थे।

और मैं सलमा के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त कर रहा था कि क्या कोई ख़बर देने वाला है जिसे मालूम हो कि कहां पर उतरना है।

यक़ीनन मेरा हज और मेरी कुरबानी और उमरा बरबाद हो गये। चूंकि मेरे लिये जुदाई में रुकावट है जो हज से मुझे रोके हुए है।

आइंदा साल दोबारा हज के लिये आऊंगा क्योंकि इसकी हक़ीक़त तो यह है कि यह ना मक़बूल हुआ।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैंने मौक़िफ़ में एक जवान को सर झुकाए खड़ा देखा तमाम लोग तो दुआयें मांग रहे थे मगर वह ख़ामोश खड़ा था। मैंने उससे कहा ऐ नौजवान तुम दुआ क्यों

नहीं मांगते और इज़हारे मुसर्रत क्यों नहीं करते? उसने कहा दहशत हो रही है कि जो वक़्त मैं रखता था वह मुझसे ज़ाया हो गया है अब मेरा मुंह दुआ मांगने के क़ाबिल नहीं रहा। मैंने इससे कहा कि तुम्हें दुआ मांगनी चाहिये थी मुमकिन है कि हक़ तआला इन लोगों के मजमा के तुफ़ैल तुम्हें तुम्हारी मुराद अता फ़रमा दे। वह बयान करते हैं कि उस नौजवान ने इरादा किया कि हाथ उठाकर दुआ मांगे मगर उसके मुंह से एक चीख़ निकली और गिर पड़ा और उसकी रूह परवाज़ कर गयी।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैंने एक जवान को मिना में बैठा देखा। सब लोग तो अपनी कुरबानियों में मशगूल थे मगर मैं इस फ़िक्र में था कि वह कौन है और क्या करता है? यहां तक कि उसने कहा कि ऐ ख़ुदा ! तमाम लोग तो जानवरों की कुरबानी दे रहे हैं लेकिन मैं चाहता हूं कि अपने नफ़्स की कुरबानी तेरे हुज़ूर पेश कर दूं, तू उसे क़बूल कर। यह कहकर नौजवान ने अंगुश्ते शहादत का इशारा अपने हलक़ूम पर किया और वह गिर पड़ा। जब मैंने क़रीब जाकर देखा तो वह फ़ौत हो चुका था।

वाज़ेह रहना चाहिये कि हज की दो क़िस्में हैं एक ग़ैबत में दूसरे हुज़ूर में चुनांचे मक्का का हज ग़ैबत में है और ऐसा ही है जैसा कि अपने घर में ग़ैबत में था। इसलिये कि एक ग़ैबत दूसरी ग़ीबत से बेहतर नहीं होती और जो अपने घर में हुज़ूर में हो वह वैसा ही है जेसा कि मक्का में हाज़िर है इसलिये कि कोई हुज़ूर दूसरे हुज़ूर से बेहतर नहीं और हज कश्फ़े मुजाहिदा के लिये एक मुजाहिदा है। और मुजाहिदा मुशाहिदा की इल्लत नहीं होता बल्कि इसका सबब होता है। मअ़ने की हक़ीक़त में, सबब कुछ ज़्यादा मोअस्सिर नहीं होता। लिहाज़ा हज का मक़सूद ख़ाना कअबा का दीदार नहीं है बल्कि कश्फ़ का मक़सूद मुशाहिदा है। अब मैं मुशाहिदा का उनवान क़ायम करके इसके मअ़ने को बयान करता हूं ताकि हुसूले मक़सद में आसानी हो।

मुशाहिदा का बयान :

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि -

अपने शिकमों को भूका रखो लालच को छोड़ दो जिस्मों की ज़ेबाईश न करो, ख़्वाहिशों को कम करो दिल व जिगर को प्यासा रखो, दुनिया से किनारा कशी करो ताकि तुम्हारे दिल अल्लाह का मुशाहिदा कर सकें।

नीज़ हदीसे जिब्राईल में इनके सवाल के जवाब में फ़रमाया-

तुम खुदा की इस तरह इबादत करो गोया तुम उसका मुशाहिदा कर रहे हो अगर ऐसा न करो तो यूं समझो कि वह तुम्हें देख रहा है।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई कि-

ऐ दाऊद तुम जानते हो कि मेरी मारिफ़त क्या है? अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया वह दिल की ज़िन्दगी है जो मेरे मुशाहिदे से पैदा होती है।

मशायखे तरीक़त के नज़दीक इबादत से मुराद चश्मे क़लब से मुशाहिदा करना है गोया वह बे कैफ़ व कम ख़लवत में चश्मे दिल से हक़ तआला का मुशाहिदा करते हैं।

हज़रत अबुल अब्बास बिन अता रहमतुल्लाह अलैहि करीमा की तफ़सीर में कहते हैं कि-

जिन्होंने मुजाहिदे में कहा हमारा रब अल्लाह है तो वह मुशाहिदे के फ़र्श पर इस्तेक़ामत रखते हैं।

मुशाहिदा की हक़ीक़त की दो सूरतें हैं एक सेहते यक़ीन दूसरा ऐसा ग़ल्बा-ए-मुहब्बत जिससे ऐसा दर्जा हासिल हो जाये कि मुकम्मल तौर पर दोस्त की हर बात में वही नज़र आये और उसके सिवा कुछ नज़र न आये।

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

मैं किसी चीज़ को नहीं देखता सिवाए इसके कि इसमें अल्लाह तआला का मुशाहिदा सेहते यक़ीन के साथ होता है।

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि-

मैंने खुदा के सिवा कुछ न देखा हर शई में पहले खुदा का जलवा ही नज़र आता है।

यह हालत उस मुशाहिदे की है जिनको मख़लूक़ में खुदा का जलवा नज़र आता है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि-

कोई चीज़ अल्लाह के सिवा मुझे नज़र नहीं आती यानी यह हालत ग़ल्बए मुहब्बत और मुशाहिदे के जोश की वजह से है।

मालूम हुआ कि कोई फ़ेअल को देखता है और इस फ़ेअल की दीद में बचश्मे सर फ़ाल को देखता है। और कोई बचश्मे सर फ़ेअल की रोइयत में फ़ाइल की मुहब्बत में ऐसा फ़ना होता है कि ऐ तमाम अशिया हत्ता कि अपने

वजूद में भी फ़ाइल ही नज़र आता है। लिहाज़ा यह पहला तरीक़ा इस्तिदलाल है और दूसरा तरीक़ा जज़्बाती है। मतलब यह है कि एक इस्तिदलाल करता है ताकि इसबाते दलायल से हक़ इस पर अयां हो जाये और दूसरा जज़्ब व शौक़ में मग़लूब और वारफ़ता होता है और उसे दलायल व हक़ायक़ हिजाब नज़र आते हैं।

इसलिये कि जो कुछ मारिफ़त रखता है वह ग़ैर से चैन नहीं पाता और जो मुहब्बत रखता है वह ग़ैर को नहीं देखता लिहाज़ा वह फ़ेअल पर झगड़ता नहीं कि वह झगड़ा लू बने और न उसके फ़ेअल व हुक्म पर एतेराज़ करता है कि वह मुतसर्रिफ़ बने।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल अलैहिस्सलाम के ज़रिये उनके मेराज की ख़बर हमें दी और फ़रमाया-

यानी अल्लाह तआला के दीदार के शौक़ की शिद्दत में आंख को किसी चीज़ की तरफ़ न फेरा।

ताकि जो लायक़ हो दिल के यक़ीन के साथ देखें। जब भी मुहिब अपनी आंख को मौजूदात के देखने से बंद करता है वह यक़ीनन अपने दिल में मौजूदात के ख़ालिक़ का मुशाहिदा करता है अल्लाह तआला फ़रमाता है-

बिलाशुबह उन्होंने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियां देखीं।

रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला फ़रमाता है-

ऐ महबूब! तुम मुसलमानों से फ़रमा दो कि वह अपनी आंखें बंद रखें। यानी सर की आंखों को शहवतों से और दिल की आंखों को मख़्लूक़ात की तरफ़ देखने से।

जो शख़्स चश्मे सर को मुजाहिदे के अंदर शहवत से बंद रखता है यक़ीनन वह बातिनी आंख से हक़ तआला का मुशाहिदा करता है।

जो कसरते इख़लास के साथ मुजाहिदा करता है वह मुशाहिदे में सबसे ज़्यादा सादिक़ होता है।

इसी बिना पर बातिनी मुशाहिदा ज़ाहिरी मुजाहिदा के साथ वाबस्ता है।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

जो शख़्स एक लम्हा के लिये भी हक़ तआला की तरफ़ से आंखें बंद रखता है तमाम उम्र वह हिदायत नहीं पाता।

इसलिये कि ग़ैर की तरफ़ इल्तेफ़ात ग़ैरे हक़ से ताल्लुक़ रखना हैं और जो

ग़ैर के साथ होता है वह हलाकत में पड़ जाता है। वईं वजह अहले मुशाहिदा की वही उम्र क़ाबिले शुमार होती है जो मुशाहिदे में सर्फ़ हो और जितनी उम्र गैबूबत में गुज़री वह उसे शुमार नहीं कर सकता। दर हक़ीक़त यह उनकी मौत का ज़माना है चुनांचे हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि से जब लोगों ने उम्र दर्याफ़्त की तो फ़रमाया चार साल। लोगों ने पूछा यह किस तरह? फ़रमाया गुज़श्ता ७० साल की उम्र हिजाब व ग़ैबत में गुज़री है और मैंने इसमें मुशाहिदा नहीं किया। सिर्फ़ चार साल हैं जिसमें मुशाहिदा किया है ज़मानाए हिजाब की उम्र क़ाबिले शुमार नहीं है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा अपनी दुआ में कहा करते कि-

ऐ ख़ुदा! जन्नत व दोज़ख़ को अपने ग़ैब के ख़ज़ानों में पोशीदा रख और उनकी याद लोगों के दिलों से फ़रामोश कर दे ताकि हम बग़ैर किसी वास्ता के ख़ालिस तेरी इबादत कर सकें।

जब तबीयत को हुसूले जन्नत का लालच होगा तो यक़ीनी तौर पर हर अक़्लमंद उसी के हुसूल के लिये इबादत करेगा और जिस दिल में मुहब्बत का हिस्सा न हो वह ग़ाफ़िल है यक़ीनन वह मुशाहिदे से हिजाब में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शबे मेराज के सिलसिले में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को ख़बर दी कि मैंने ख़ुदा को नहीं देखा और हज़रत इब्ने अब्बास रिवायत करते हैं कि आपने मुझे बताया कि मैंने ख़ुदा को देखा। लोग इस इख़्तेलाफ़ में पड़े हुए हैं लेकिन जिसने ग़ौर किया वह इस इख़्तेलाफ़ से निकल गया। चुनांचे जिससे यह फ़रमाया कि मैंने देखा उसने चश्मे बातिन से देखना मुराद लिया और जिससे यह फ़रमाया कि मैंने नहीं देखा उसने चश्म सर से देखना मुराद लिया क्योंकि इन दोनों में एक साहब बातिन है और दूसरा अहले ज़ाहिर। हर एक से इसके हालात के बमोजिब कलाम फ़रमाया। लिहाज़ा जब बातिनी आंख से देखा तो अगर सर की आंख का वास्ता न हो तो क्या मज़ायक़ा?

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अगर हक़ तआला मुझसे फ़रमाए कि मुझे देख, तो मैं अर्ज़ करूंगा कि मैं नहीं देखता क्योंकि आंख मुहब्बत में ग़ैर और बेगाना है और ग़ैरियत की ग़ैरत मुझे दीदार से बाज़ रखती है कि मैं दुनिया में उसे आंख के वास्ते से देखूं और आख़िरत में वास्ता का क्या करूंगा ख़ुदा ही हिदायत फ़रमाने वाला है।

यक़ीनन मैं तेरी तरफ़ नज़र उठाने में हसद करता हूं
और जब तेरी तरफ़ देखता हूं तो आंखों को बंद रखता हूं

क्योंकि महबूब को आंख से छुपाते हैं इसलिये कि आंख बेगाना और ग़ैर है। लोगों ने हज़रत शेख़ से दर्याफ़्त किया कि क्या आप चाहते हैं कि ख़ुदा का दीदार हो? फ़रमाया नहीं पूछा क्यों? फ़रमाया जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने चाहा तो उन्हें दीदार न हुआ। और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने न चाहा तो दीदार हुआ। लिहाज़ा हमारा चाहना दीदारे ख़ुदा वंदी में हमारे लिये बहुत बड़ा हिजाब है क्योंकि इरादा का वजूद, मुहब्बत के अंदर मुख़ालिफ़त होती है और मुख़ालिफ़त हिजाब है। और जब दुनिया में इरादा फ़ना हो जाता है तब मुशाहिदा हासिल होता है। और जब मुशाहिदा साबित व बर क़रार हो जाये तो दुनिया आख़िरत की मानिंद और आख़िरत दुनिया की मानिंद हो जाती है।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

अल्लाह तआला के कुछ बंदे ऐसे है कि अगर दुनिया व आख़िरत में वह अल्लाह तआला से एक लम्हा के लिये महजूब हो जायें तो वह मुरतद हो जायें।

मतलब यह कि अल्लाह तआला इनको दायमी मुशाहिदा में परवरिश फ़रमाता और अपनी मुहब्बत की हयात में इनको ज़िन्दा रखता है। ला महाला जब साहबे मुशाहिदा महजूब हो जाये तो वह मरदूदे बारगाहे इलाही हो जाता है।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन मिस्र के बाज़ार में जा रहा था मैंने देखा कि एक जवान को बच्चे पत्थर मार रहे थे मैंने बच्चों से पूछा तुम इससे क्या चाहते हो बच्चों ने कहा कि यह दीवाना है। मैंने पूछा तुमने इसके जुनून की क्या अलामत देखी है? बच्चों ने कहा यह कहता है कि मैं ख़ुदा को देखता हूं। इसके बाद मैं जवान की तरफ़ मुतवज्जुह हुआ इससे पूछा कि ऐ जवान क्या तुम यह कहते हो कि या यह बच्चे तुम पर इल्ज़ाम रखते हैं? जवान ने कहा यह इल्ज़ाम नहीं रख रहे हैं बल्कि मैं यही कहता हूं क्योंकि अगर एक लम्हा के लिये मैं हक़ को न देखूं और महजूब रहूं तो मैं इसकी बर्दाश्त नहीं रख सकता।

अलबत्ता इस मुक़ाम में बाज़ लोगों को अरबाबे मुशाहिदा के बारे में ग़लती लाहक़ हुई है वह यह गुमान रखते हैं कि दिलों की रोइयत और इनका मुशाहिदा दिल में कोई सूरत बनाती है जिसे ज़िक्र या फ़िक्र की हालत में वहम बर क़रार

व क़ायम रखती है। हालांकि यह तशबीह महज़ और खुली गुमराही है इसलिये कि हक़ तआला के लिये कोई अंदाज़ा नहीं है जिसका अंदाज़ा दिल के वहम को हो सके और हर अक़्ल इसकी कैफ़ियत से बाख़बर हो सके। जो चीज़ मोहूम होती है वह भी वहम के क़बील से है और जो चीज़ अक़्ल में समा सके वह भी अक़्ल की जिन्स से ताल्लुक़ रखती है हक़ तआला के लिये किसी जिन्स के लिय हम्म जिन्सी नहीं है। लताफ़त व कसाफ़त दोनों जिन्स के क़बील से हैं जो महल में एक दूसरे की ज़िद और एक दूसरे की जिन्स हैं। लिहाज़ा तौहीद के तहक्कुक़ में और क़दीम के पहलू में ज़िद जिन्स है क्योंकि तमाम अज़दाद मुहदिस व मख़लूक़ हैं और तमाम हवादिस यक जिन्स हैं।

दुनिया में मुशाहिदा आख़रत में दीदार के मानिंद है और जब तमाम अहले इल्म का इजमाअ और इत्तेफ़ाक़ है कि आख़िरत में दीदार जायज़ है तो ला महाला दुनिया में भी मुशाहिदा जायज़ है लिहाज़ा जो उक़बा में मुशाहिदा की ख़बर दे और जो दुनिया में मुशाहिदे की ख़बर दे उन दोनों के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं है। और जो इन दोनों मअ़ने की ख़बर देता है वह इजाज़त से ख़बर देता है न कि महज़ दावे से। यानी वह यह कहता है कि दीदार व मुशाहिदा दोनों जायज़ हैं लेकिन वह यह नहीं कहता कि मुझे दीदार हुआ है या अब यह हासिल नहीं है। इसलिये कि मुशाहिदा बातिन की सिफ़त है और ख़बर देना ज़ुबान की ताबीर है और जब ज़ुबान, बातिन की ख़बर दे तो यह इबारत होती है मुशाहिदा नहीं होता। बल्कि दावा होता है। इसलिये कि जिस चीज़ की हक़ीक़त अक़्लों में न समा सके उसे ज़ुबान कैसे ताबीर कर सकती है।

मुशाहिदा ज़ुबान की आजिज़ी के साथ क़ुलूब का हुज़ूर है।

इसके मअ़ने की ताबीर ज़ुबान को ख़ामोश रखना और बुलंद दर्जा रखना है। क्योंकि ख़ामोशी मुशाहिदा की अलामत है और गोयाई शहादत की निशानी और किसी चीज़ की शहादत देने और किसी चीज़ के मुशाहिदा करने में बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दर्जाए क़ुर्ब और मुक़ामे आला पर फ़ायज़ होकर जिसे हक़ तआला ने आपके लिये मख़सूस फ़रमाया था वहां कहा-

मैं तेरी सना को महदूद नहीं कर सकता। क्योंकि आप मुशाहिदे में थे और मुहब्बत व दोस्ती के दर्जा में मुशाहिदा कमाले यगानगत रखता है और यगानगी

की ताबीर करना बेगानगी और ग़ैरियत होती है उस वक़्त आपने कहा-

तू वही है जैसा कि तूने खुद अपनी सना फ़रमाई है। इस जगह तेरा फ़रमाया हुआ मेरा ही अर्ज़ करना है यानी तेरी सना करना मेरी सना है मैं अपनी ज़ुबान को इसके लायक़ नहीं समझता कि वह मेरी हालत को भी बयान करे और मैं बयान को भी इसका मुस्तहिक़ नहीं समझता कि वह मेरा हाल ज़ाहिर करे इसी मअ़ने में किसी कहने वाले ने कहा है-

जिसे मैं दोस्त रखता था मैंने उसकी तमन्ना की। फिर जब मैंने उसे देखा तो हैरत ज़दा होकर रह गया। और अपनी ज़ुबान और अपने किसी उज़्व का मालिक न रहा।

नवां कश्फ़े हिजाब

सोहबत और उसके आदाब व अहकाम के बयान में

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ यानी उनकी दुरुस्तगी करो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

हुस्ने अदब ईमान का हिस्सा है।

नीज़ फ़रमाया-

मेरे रब ने मुझे अदब सिखाया और बहुत अच्छा अदब मुझे सिखाया।

दीन व दुनिया के तमाम उमूर की शाइस्तगी, अदब से वाबस्ता है और हर क़िस्म के लोगों के मुक़ामात के लिये हर मुक़ाम के आदाब जुदागाना हैं। तमाम इंसान ख़्वाह वह काफ़िर हों या मुसलमान, मुलहिद हों या मुवहिहद सुन्नी हों या मुबतदअ सब का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि मामलात में हुस्ने अदब उम्दा चीज़ है और जहान में कोई रस्म व रिवाज, इस्तेमाले अदब के बग़ैर साबित नहीं हो सकती। लोगों में अदब ही मुरव्वत की हिफ़ाज़त है और दीन में सुन्नत की हिफ़ाज़त और दुनिया में इज़्ज़त व एहतेराम की हिफ़ाज़त भी इसी अदब से मुताल्लिक़ है क्योंकि तीनों एक दूसरे से मनसलिक हैं जिसमें मुरव्वत न होगी वह सुन्नत का मुत्तबेअ न होगा और जिसमें सुन्नत की हिफ़ाज़त न होगी उसमें इज़्ज़त व एहतेराम की रियायत भी न होगी।

मामलात यानी तरीक़त के सुलूक में हिफ़्ज़े अदब मतलूब की ताज़ीम से

हासिल होती है यानी दिलों में हक़ तआला और उसके मुग़ाइरत की अज़मत व इज़्ज़त हर तरीक़त में यह ताज़ीम तक़्वा से हासिल होती है और जो ताज़ीम की बे हुरमती करता है और मुशाहिदाए हक़ को पायमाल करता है तरीके तसव्वुफ़ में उसका कोई मुक़ाम नहीं है। सुकर व ग़ल्बा या किसी और हाल में होना, तालिब को अदब की हिफ़ाज़त से मना नहीं करता इसलिये कि अदब उनकी आदत है और आदत तबीयत की मानिंद होती है। हर जानदार से किसी हालत में तबाए की जुदाएगी का तसव्वुर नहीं किया जा सकता है जब तक कि उसकी ज़िन्दगी बरक़रार है इसका इफ़तेराक़ उससे मुहाल है। लिहाज़ा जब तक इंसान का तशख़्ख़ुस बरक़रार है हर हाल में अदब की पैरवी लाज़िम है। ख़्वाह तकल्लुफ़ से हो या बे तकल्लुफ़। जब उनका हाल सेहतमंदे में होता है तो वह बे तकल्लुफ़ आदाब की रिआयत बरतते हैं और जब उनका हाल सुकर व मदहोशी में होता है उस वक़्त हक़ तआला उन्हें अदब पर क़ायम रखता है ग़र्ज़ कि किसी हालत में भी दिल अदब से रूगरदां नहीं होता।

क्योंकि मुहब्बत बेहतरीन अदब है और हुस्ने अदब मुहब्बत करने वालों की ख़ूबू है।

अल्लाह तआला जिस पर जितनी करामत फ़रमाता है वह उसकी दलील होती है क्योंकि वह दीन के अदब की हिफ़ाज़त करता है। बख़िलाफ़ मुलहिदों के उस गरोह के खुदा उन पर लानत करे जो यह कहते हैं कि बंदा मुहब्बत में जब ग़ालिब हो जाता है तो हुक्मे मुताबअत उससे साक़ित हो जाता है। यह ख़ास बेदीनी है।

अदब की क़िस्में : अदब की तीन क़िस्में हैं एक अल्लाह तआला के साथ उसकी तौहीद में इस तरह पर कि जलवत व ख़लवत की हर हालत में खुद को उसकी बे हुरमती से बचाए और वह सुलूक बरते जो बादशाहों के हुज़ूर किया जाता है। सहीह हदीस में वारिद है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चहार ज़ानूं तश्रीफ़ फ़रमा थे कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर प्याम पहुंचाया-

शाने बंदगी के साथ जुलूस फ़रमायें।

आप अल्लाह के मुक़र्रब बंदे हैं उसकी बारगाह में उसकी शान के लायक़ जुलूस फ़रमायें।

मशायख़ बयान करते हैं कि हज़रत हारिस मुहासबी रहमतुल्लाह अलैहि

ने चालीस साल तक दिन रात के किसी हिस्सा में दीवार से टेक लगाकर कमर सीधी नहीं की और दो ज़ानूं के सिवा किसी और हालत में न बैठे। लोगों ने अर्ज़ किया आप इतनी तकलीफ़ व मुशक़्क़त क्यों बर्दाश्त करते हैं? फ़रमाया मुझे शर्म आती है कि मैं हक़ तआला के मुशाहिदे में इस तरह न बैठूं जिस तरह बंदा बैठता है।

सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुरासान के एक शहर मलन्द नामी में एक शख़्स को देखा जो बहुत मश्हूर था और लोग उसे मलन्द अदीब कहते थे वह बड़ा साहबे फ़ज़ीलत था उसने बीस साल क़दमों पर खड़े गुज़ार दिये सिवाए नमाज़ में तशहहुद के कभी न बैठा। मैंने उससे उसकी वजह दर्याफ़्त की तो उसने कहा अभी मुझे वह दर्जा हासिल नहीं हुआ है कि मैं मुशाहिदाए हक़ में बैठ सकूं।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि से किसी ने दर्याफ़्त किया आपने जो कुछ पाया है वह किस चीज़ की बदौलत पाया? फ़रमाया अल्लाह तआला के साथ हुस्ने सोहबत की वजह से। चुनांचे मैंने हक़ तआला के साथ उतना ही जलवत में अदब और हुस्ने सोहबत को मलहूज़ रखा है जितना ख़लवत में है। अहले जहान को चाहिये कि अपने माबूद के मुशाहेद में दअब की हिफ़ाज़त का सलीक़ा जुलेख़ा से सीखें। जिस वक़्त उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ खलवत व तंहाई की और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से अपनी ख़्वाहिश की तकमील की दरख़्वास्त की तो उसने पहले अपने बुत के चेहरे को किसी चीज़ से ढांप दिया था। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा यह क्या कर रही हो? उसने कहा अपने माबूद के चेहरे को छिपा रही हूं ताकि वह बेहुरमती में मुझे आपके साथ न देखे। क्योंकि यह शरायत अदब के ख़िलाफ़ है और जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम बाहम मिले और उन्हें जमाल यूसफ़ी से हम आग़ोश किया तो जुलेख़ा को जवान करके दीने हक़ की राह दिखाई तब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ौजियत में दिया। जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनकी तरफ़ क़सद फ़रमाया तो जुलेख़ा आपसे भागी। फ़रमाया ऐ जुलेख़ा क्या मैं तेरा दिलबर नहीं हूं? ग़ालिबन मेरी मुहब्बत तुम्हारे दिल से जाती रही है? जुलेख़ा ने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम! यह बात नहीं मुहब्बत अपनी जगह बरक़रार है बल्कि ज़्यादा है लेकिन मैंने हमेशा अपने माबूद की बारगाह के अदब को मलहूज़ रखा

उस दिन जबकि हमारे तुम्हारे दर्मियान ख़लवत हुई थी उस वक़्त मेरा माबूद एक बुत था जो क़तअन देख नहीं सकता था मगर उसके बावजूद उसकी बे नूर दो आंखें थीं उस पर मैने पर्दा डाल दिया था ताकि बे अदबी की तोहमत मुझसे उठ जाये अब मेरा माबूद ऐसा है जो दाना और बीना है जिसके लिये देखने का न हलक़ा है और न कोई आला। मगर मैं जिस हाल में भी हूं वह मुझे देखता है इसलिये मैं नहीं चाहती कि उसकी बारगाह में तर्के अदब का इल्ज़ाम मुझ पर आयद हो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शबे मेराज में ले जाया गया तो आपने हिफ़्ज़े अदब में कौनैन की तरफ़ नज़र नहीं उठाई यहां तक कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

न आंख झपकी और न बे राह हुई।

यानी दुनिया की तरफ़ नज़र करने में न आंख भटकी और न आख़िरत के देखने में आंख बे राह हुई।

अदब की दूसरी क़िस्म, मामलात में अपने साथ है। वह इस तरह कि हर हाल में अपने साथ मुरव्वत को मलहूज़ रखे। यहां तक कि लोगों की सोहबत हो या हक़ तआला की बारगाह की हाज़िरी ख़्वाह जलवत हो या ख़लवत किसी हाल में बे अदबी का इर्तेकाब न करे। उसकी सूरत यह है कि कम खाये ताकि तहारत गाह में ज़्यादा न जाना पड़े। तीसरी सूरत यह है कि किसी की शर्मगाह को न देखे हत्ता कि अपनी शर्म गाह भी मजबूरी के सिवा न देखे। क्योंकि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाह वजहहू के बारे में मंकूल है कि उन्होंने कभी अपने पोशीदा हिस्साए जिस्म को नहीं देखा किसी ने उसकी वजह दर्याफ़्त की तो फ़रमाया मैं शर्म करता हूं कि इस हिस्साए जिस्म को देखूं जिसकी जिन्स पर नज़र डालना हराम है।

अदब की तीसरी क़िस्म लोगों के साथ सोहबत करने में अदब का लिहाज़ रखना है सोहबत के आदाब में बेहतरीन अदब यह है कि सफ़र व हज़र हुस्ने मामला और सुन्नत की हिफ़ाज़त करे।

आदाब की यह तीनों क़िस्में एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकतीं अब मैं हत्तुल मक़दूर तरतीबवार आदाब को बयान करना चाहता हूं ताकि बआसानी समझ में आ सके।

आदाबे सोहबत : अल्लाह तआला फ़रमाता है-

जो ईमान लाए और अमले सालेह किये अल्लाह उनको महबूब बनाकर दोस्त बना लेगा। यानी उन्होंने अपने दिलों की हिफ़ाज़त की और अपने भाईयों के हुकूक को अदा किया और अपने मुक़ाबला में उनकी बुजुर्गी व शराफ़त को देखा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

हुस्ने रिआयत और हिफ़्ज़ मरातिब के सिलसिले में मुसलमान भाईयों की मुहब्बत को तीन चीज़ें पाकीज़ा बनाती हैं एक यह कि जब किसी से मुलाक़ात करो तो सलाम करो और दूसरे यह कि अपनी मजलिसों में उसके लिये जगह बनाओ तीसरे यह कि उसे अच्छे अलक़ाब के साथ याद करो।

अल्लाह तआला का इरशाद है कि-

तमाम मुसलमान एक दूंसरे के भाई हैं लिहाज़ा अपने भाईयों से सुलह व आशती रखो मतलब यह कि बाहम लुत्फ़ व मेहरबानी से पेश आओ किसी की दिल शिकनी न करो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

अपने भाई और ज़्यादा बनाओ और उनके हुकूक़ में हुस्ने सुलूक करके भाई बनाओ क्योंकि तुम्हारा रब हैयु व करीम है वह हया फ़रमाता है कि रोज़े क़ियामत बाहमी आदाब व मामलात की वजह से अपने बदे पर उसके भाईयों के दर्मियान अज़ाब फ़रमाये। लिहाज़ा यही मुनासिब है कि अपने भाई के साथ सोहबत लिवजहिल्लाह की जाये न कि नफ़्सानी ख़्वाहिश या क़िसी गर्ज़ व मफ़ाद की ख़ातिर, ताकि वह बंदा हिफ़्ज़े अदब की वजह से ममनून व मुतशक्किर हो।

हज़रत मालिक बिन दीनार ने अपने दामाद हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया-

ऐ मुग़ीरा जिस भाई या साथी की रफ़ाक़त तुम्हें दीनी फ़ायदा न पहुंचाए तुम इस जहान में उसकी सोहबत से बचो ताकि तुम महफ़ूज़ रहो।

इस नसीहत का मतलब यह है कि तुम्हारी सोहबत या तो अपने से बड़े और अच्छे के साथ होगी या अपने से कमतर के साथ। अगर अपने से बड़े और अच्छे की रफ़ाक़त इख़्तेयार करोगे तो इससे तुम्हें दीनी व दुनियावी फ़ायदा पहुंचेगा और अगर अपने से कमतर के साथ बैठोगे तो तुमसे उसे दीन का फ़ायदा पहुंचेगा क्योंकि अगर वह तुमसे कुछ हासिल करेगा तो वह दीनी फ़ायदा पहुंचाना होगा और जो तुम अपने बड़े से हासिल करोगे वह भी दीनी फ़ायदा हासिल करना होगा।

सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

कमाले परहेज़गारी यह है कि बे इल्म को इल्म सिखाये।

हज़रत यहया बिन मआज़ रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

यानी वह दोस्त बहुत बुरा है जिसको दुआ करने की वसीयत करनी पड़े क्योंकि एक लम्हा की सोहबत का हक़ यह है कि उसे हमेशा दुआए ख़ैर में याद रखा जाये और वह दोस्त बहुत बुरा है जिसकी सोहबत ख़ातिर तवाज़ुअ की मोहताज हो क्योंकि सोहबत का सरमाया ही यह है कि हमेशा बाहमी खुशी व मुसर्रत में गुज़रे। औरवह दोस्त बहुत बुरा है जिससे गुनाह की माफ़ी मांगने की ज़रूरत पेश आए इसलिये कि उज़्र ख़्वाही बेगानगी की अलामत है और सोहबत में ग़ैरियत और बेगानगी जुल्म है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

आदमी अपने दोस्त के दीन और उसके तौर व तरीक़ पर होता है लिहाज़ा ज़रूरी है कि वह देखे कि किससे दोस्ती रखता है?

अगर उसकी सोहबत नेकों के साथ है अगरचे वह खुद नेक न हो तो वह सोहबत नेक है। इसलिये कि नेक की सोहबत उसे नेक बना देगी और अगर उसकी सोहबत बुरों के साथ है अगरचे वह नेक है तो यह बुरा है क्योंकि वह उसकी बुराईयों पर राज़ी है और जो बुराईयों पर राज़ी हो अगरचे वह नेक हो बहरहाल बुरा है।

एक शख़्स दौराने तवाफ़ ख़ाना काबा में दुआ मांग रहा था कि ऐ खुदा मेरे भाईयों की इस्लाह फ़रमा। लोगों ने पूछा इस मुक़ाम में तुम अपने लिये दुआ क्यों नहीं मांगते भाईयों के लिये क्यों दुआ करते हो? उसने जवाब दिया मैं चूंकि उन्हीं भाईयों की तरफ़ वापस जाऊंगा अगर वह दुरुस्त हुए तो मैं भी उनके साथ दुरुस्त रहूंगा और वह अगर ख़राब हुए तो मैं भी उनके साथ खराब हो जाऊंगा। क्योंकि क़ायदा है कि अपनी दुरुस्तगी, मसलेहीन की दुरुस्तगी पर मौकूफ़ है लिहाज़ा मैं अपने भाईयों के लिये दुआ करता हूं ताकि मेरा मक़सूद इनसे हासिल हो जाये।

इस इरशाद व नसीहत की बुनियाद यह है कि नफ़्स की आदत है कि वह अपने साथियों से राहत पाता है और जिस क़िस्म के लोगों की सोहबत इख़्तेयार की जायेगी वह उन्हीं की ख़सलत व आदत इख़्तेयार कर लेता है इसलिये कि तमाम मामलात, इरादए हक़ और इरादए बातिल से मुरक्कब हैं। वह जिस इरादे

के मामलात के साथ सोहबत रखेगा उस पर उसी का ग़ल्बा होगा। क्योंकि अपनी इरादत दूसरे के इरादों पर मबनी है और तबअ व आदत पर उनकी सोहबत का बड़ा असर और ग़ल्बा है। यहां तक कि बाज़ नामी परिन्दा आदमी की सोहबत में सध जाता है, तूती आदमी के सिखाने से बोलने लगती है घोड़ा अपनी बहीमाना ख़सलत तर्क करके मुतीअ बन जाता है यह मिसालें बताती हैं कि सोहबत का कितना असर व ग़ल्बा होता है और किस तरह वह आदतों को बदल देती है यही हाल तमाम सोहबतों का है इसी बिना पर तमाम मशायख़ सबसे पहले सोहबत के हुकूक़ के ख्वाहां रहते हैं और अपने मुरीदों को भी इसी की तर्ग़ीब देते हैं। हत्ता कि इनके नज़दीक सोहबत के आदाब और उनकी मुराआत फ़र्ज़ का दर्जा रखती हैं। गुज़श्ता मशायख़ की कसीर जमाअत ने सोहबत के आदाब में मुफ़स्सल किताबें तहरीर फ़रमाई हैं चुनांचे हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि ने एक किताब मौसूमा ''तसहीहुल इरादत'' और हज़रत अहमद बिन खिज़्र विया बलख़ी अलैहिर्रहमा ने अर्रिआयत बिहुकूक़िल्लाह और हज़रत मुहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान आदाबुल मुरीदीन लिखी हैं। इनके अलावा हज़रत अबुल क़ासिम अल हकीम, हज़रत अबू बकर दराक़, हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी हज़रत अब्दुर्रहमान सलमा और हज़रत उस्ताज़ अबुल क़ासिम क़ुशीरी रहमहुमुल्लाह ने भी इस मौज़ू पर भरपूर किताबें लिखी हैं। यह तमाम मशायख़ अपने फ़न के इमाम गुज़रे हैं अब तमाम तालिबाने तरीक़त के लिये अक़सामे आदाब में मामलाते मशायख़ पर मुश्तमिल चंद उनवानात पेश करता हूं।

सोहबत के हुकूक़ : वाज़ेह रहना चाहिये कि मुरीदों के लिये सबसे अहम तरीन चीज़ सोहबत है क्योंकि सोहबत के हक़ की रिआयत करना अहम फ़र्ज़ है चूंकि मुरीदों के लिये इनफ़ेरादी और अलाहदगी की ज़िन्दगी गुज़ारना मोजिबे हलाकत है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

अकेले आदमी के साथ शैतान होता है और जब दो एक साथ होंगे तो दूर होगा।

अल्लाह तआला का इरशाद है -

तुम में जो तीन आदमी राज़ की बातें करते हैं उनमें चौथा हक़ तआला होता

लिहाज़ा मुरीद के लिये अकेले रहने से बढ़कर कोई आफ़त नहीं है।

सोहबते शैख़ से इनहेराफ़ का वबाल : हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के मुरीदों में से एक को यह ख़्याल गुज़रा कि मैं दर्जए कमाल को पहुंच गया हूं अब मेरे लिये अकेला रहना सोहबत से बेहतर है। चुनांचे वह गोशानशीन हो गया और मशायख़ की सोहबत छोड़ दी। एक रात उसने ख़्वाब देखा कि कुछ लोग एक ऊंट लेकर आये हैं। उन्होनें कहा कि रात तुम्हें जन्नत में गुज़ारनी चाहिये यह लोग उसे ऊंट पर सवार करके ले गये यहां तक कि ऐसी जगह ले गये जो अच्छी तरह नज़र आती है। वहां हसीन व ख़ूबसूरत चेहरों में नफीस तआम और पानी के चश्मे रवां थे। उसे सुबह तक वहां रखा। हालांकि यह सब मुरीद की ख़्वाब की हालत थी। जब सुबह बेदार हुआ तो अपने हुजरे में अपने आपको पाया। यह सिलसिला इसी तर रोज़ाना जारी रहा यहां तक कि बशरी गुरूर व रोऊनत ने ग़ल्बा पाया और उसके दिल में जवानी के घमंड ने अपना असर जमाया और उसकी जुबान पर दाव जारी हो गया और कहने लगा मेरी हालत इस कमाल तक पहुंच गयी है और मेरी रातें इस तरह बसर होती हैं लोगों ने उसकी खबर हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि को पहुंचाई आप उठे और उसके हुजरे में तशरीफ़ ले गये उसे इस हाल में पाया कि उसके सर में ख़्वाहिशें भरी हुई थीं और तकब्बुर से अकड़ा हुआ था। आपने उससे हाल दर्याफ़्त किया उसने सारा हाल बयान कर दिया हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया याद रख जब तू आज रात वहां पहुंचे तो तीन मर्तबा लाहौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ना। चुनांचे जब रात आयी और उसे हस्बे साबिक़ ले जाया गया चूंकि वह अपने दिल में हज़रत जुनैद बग़दादी का इंकारी था कामिल एतेक़ाद जाता रहा था कुछ अर्सा बाद महज़ तर्जबा के तौर पर उसने तीन मर्तबा लाहौल पढ़ा तो उसे ले जाने वाले तमाम लोग चीख़ मारकर भाग गये और ख़ुद को उसने नजासत और कूड़े करकट के ढेर पर पड़ा पाया। चारों तरफ़ मुरदार हड्डियां पड़ी हुई हैं उस वक़्त उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ दिल से तौबा की और हमेशा सोहबत में रहने लगा। मुरीद के लिये अकेले रहने से बढ़कर कोई आफ़त नहीं।

सोहबत के शरायत : मशायख़े तरीक़त की सोहबत की शर्त यह है कि हर एक को इनके दर्जा के मुताबिक़ पहचाने, बूढ़ों का अदब करे, हम जिन्सों के साथ उम्दा सुलूक से पेश आये और बच्चों के साथ शफ़क़त व मुहब्बत

का बर्ताव करे। बूढ़ों को बाप दादा की तरह समझे। हम जिन्सों को भाईयों की मानिंद और बच्चों को औलाद की मानिंद जाने। कीना, हसद और अदावत व दुश्मनी से इज्तेनाब करे और किसी की नसीहत में कोताही न करे। सोहबत में किसी की कोताही न करे और न एक दूसरे के क़ौल व फ़ेअल में कोताही करे इसलिये कि लिवजहिल्लाह सोहबत करने वाले पर लाज़िम है कि रफ़ीक़ के किसी क़ौल व फ़ेअल पर कबीदा और आजुरदा ख़ातिर न हो और उसे अपने से इसी बिना पर जुदा न करे।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने शैख़ुल मशायख़ हज़रत अबुल क़ासिम गरगानी रहमतुल्लाह अलैहि से दर्याफ़्त किया कि सोहबत की शर्त क्या है? उन्होंने फ़रमाया यह है कि सोहबत में अपनी ख़ुशी न चाहे क्योंकि सोहबत की सबसे बड़ी आफ़त यही है कि हर एक से अपनी ख़ुशी का ख़्वाहां होता है। ऐसे शख़्स के लिये सोहबत के मुक़ाबला में अकेला रहना बेहतर है। और जब वह अपनी ख़ुशी को तर्क कर दे तो फिर वह अपने मुसाहिब की ख़ुशियों का लिहाज़ रखे तब वह सोहबत में कामयाबी हासिल कर सकेगा।

एक दरवेश बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैं कूफ़ा से मक्का मुकर्रमा के इरादे से चला। रास्ते में हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि से मुलाक़ात हुई मैंने उनसे सोहबत में रहने की इजाज़त मांगी उन्होनें फ़रमाया सोहबत में एक अमीर होता है और दूसरा फ़रमा बरदार, तुम क्या मंज़ूर करते हो? मैंने अर्ज़ किया आप अमीर बनें और मैं फ़रमा बर्दार, उन्होंने फ़रमाया अगर फ़रमा बर्दार बनना पसंद करते हो तो मेरे किसी हुक्म से बाहर न होना मैंने कहा यही होगा जब हम मंज़िल पे पहुंचे तो उन्होंने फ़रमाया बैठ जाओ। मैं बैठ गया। उन्होंने कुंवें से पानी खींचा जो बहुत सर्द था फिर लकड़ियां जमा करके एक नशेबी जगह पर आग जलाई और मुझे गर्म किया मैं जिस काम का इरादा करता वह फ़रमाते बैठ जाओ फ़रमां बरदारी की शर्त को मलहूज़ रखो। जब रात हुई तो शदीद बारिश ने घेर लिया। उन्होंने अपनी गुदड़ी उतारकर कंधे पर डाल और रात भर मेरे सर पर साया किये खड़े रहे। मैं नदामत से पानी पानी हुआ जा रहा था मगर शर्त के मुताबिक़ कुछ नहीं कर सकता था। जब सुबह हुई तो मैंने कहा ऐ शैख़! आज मैं अमीर बनूंगा। उन्होंने फ़रमाया ठीक है। जब हम मंज़िल पर पहुंचे तो उन्होंने फिर वही ख़िदमत इख़्तेयार की। मैंने कहा अब

आप मेरे हुक्म से बाहर न हो जाइये फ़रमाया फ़रमान से वह शख़्स बाहर होता है जो अपने अमीर से अपनी ख़िदमत कराये। वह मक्का मुकर्रमा तक इसी तरह मेरे हम सफ़र रहे जब हम मक्का मुकर्रमा पहुंचे तो मैं शर्म के मारे भाग खड़ा हुआ यहां तक कि उन्होंने मुझे मिना में देखा फ़रमाया! ऐ फ़रज़ंद! तुम पर लाज़िम है कि दरवेशों के साथ ऐसी सोहबत करना जैसी कि मैंने तुम्हारे साथ की है।

हज़रत मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दस साल ख़िदमत की है। खुदा की क़सम! आपने कभी भी मुझसे उफ़ तक न फ़रमाया और न मेरे किसी काम पर यह फ़रमाया कि यह क्यों किया? और न किसी काम के न करने पर यह फ़रमाया यह क्यों नहीं किया?

हर दरवेश या तो मुक़ीम होगा या मुसाफ़िर। मशायख़े तरीक़त का मशरब यह है कि मुसाफ़िर दरवेश को चाहिये कि वह मुक़ीमों की ख़िदमत को अपने हक़ में अफ़ज़ल जाने। इसलिये मुसाफ़िर अपनी तक़दीर पर रवां दवां है और मुक़ीम हक़ तआला की ख़िदमत में बैठे हुए हैं क्योंकि मुसाफ़िरों में तलब की अलामत है और मुक़ीमों में पाने का इशारा। लिहाज़ा जिसने पाया वह बैठ गया। वह इससे अफ़ज़ल है जो अभी मुसाफ़िरत और तलब में है। इसी तरह मुक़ीमों पर फ़र्ज़ है कि वह मुसाफ़िरों को अपने से अफ़ज़ल जानें। इस लिये कि मुक़ीम साहबे अलायक़ हैं और मुसाफ़िर अलायक़ से जुदा और अकेले। वह राह तलब के मुसाफ़िर हैं और मुक़ीम दुनिया में हालते वक़ूफ़ में हैं। इसी तरह बुज़ुर्ग हज़रात को चाहिये कि जवानों को अपने पर फ़ौक़ियत दें क्योंकि जवान दुनिया में नौ वारिद हैं और उनके गुनाह बहुत कम हैं और जवानों पर यह लाज़िम है कि वह बुज़ुर्गों को अपने पर फ़ज़ीलत दें क्योंकि वह इबादत में उनसे पहले हैं और ख़िदमत इलाही में मुक़द्दम। जब यह सब एक दूसरे का इस तरह लिहाज़ व पास करेंगे तो यह सब निजात पा जायेंगे वरना हलाक हो जायेंगे।

आदाब की हक़ीक़त : आदाब की हक़ीक़त ख़साइले जमीला का जमअ करना है। अदीब को अदीब इसलिये कहा जाता है कि जो कुछ उस पर वारिद होता है वह सब नेक होता है।

जिसमें नेक ख़सलतें ज़्यादा हों अदीब हैं।

हालांकि उर्फ़ व आदत में अदीब वह शख़्स कहलाता है जो इल्मे लुग़त

और सर्फ़ न नहव के क़वायद का माहिर हो।

अदब के मअ़ने : तसव्वुफ़ के इल्म में अदब के मअ़ने यह हैं कि अदब के मअ़ने नेक आमाल पर क़ायम रहने के हैं मतलब यह है कि अल्लाह तआला के साथ ज़ाहिर व बातिन में बा अदब मामलात रखे। जब तुम ऐसे बन जाओगे तो अदीब कहलाओगे। चाहे गूंगे हो और अगर तुम न बने तो इसके बर ख़िलाफ़ होगे।

तरीक़त के मामलात में अल्फ़ाज़ व इबारत की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं होती और हर हाल में आक़िल से आलिम अफ़ज़ल व बुज़ुर्ग होता है।

किसी ने किसी बुज़ुर्ग से पूछा कि अदब की क्या शर्त है? उन्होंने फ़रमाया कि इसका जवाब इस गुफ़्तगू में मौजूद है जिसे मैंने सुना है। अदब यह है कि जो बात कहो वह क़ौले सादिक़ हो, जो मामला करो वह बरहक़ हो। क़ौले सादिक़ अगरचे सख़्त व दुरुश्त हो मगर मलीह होता है और हक़ मामला अगरचे दुश्वार हो मगर नेक होता है। लिहाज़ा जब बात करो तो तुम्हारी बात में सदाक़त हो, और ख़ामोश रहो तो तुम्हारी ख़ामोशी में भी हक़ व सदाक़त कार फ़रमा हो।

हज़रत शैख़ अबु नसर सिराज साहबे रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी किताब में आदाब का फ़र्क़ बयान फ़रमाया है अदब में लोगों के तीन तबक़े हैं, एक दुनियादार जो फ़साहत व बलाग़त, हिफ़्ज़े उलूम और बादशाहों के नाम और अदब के अशआर को अदब के नाम से मौसूम करते हैं। दूसरा तबक़ा अहले दीन का है जिन्होंने रियाज़ते नफ़्स, तादीबे आज़ा हिफ़्ज़े हुदूदे इलाही और तर्क शहवात का नाम अदब रखा है। और तीसरा तबक़ा अहले ख़ुसूसियत का है जो दिलों की तहारत बातिन का तज़किया असरार की मुराआत, अहद व पैमान का ईफ़ा वक़्त की हिफ़ाज़त, परागंदा ख़्यालात और मोहूम ख़तरात की तरफ़ क़िल्लते तवज्जोह, मुक़ामे तलब, औक़ाते हुज़ूर और मक़ामाते क़ुर्ब में हुस्ने अदब को मलहूज़ रखने को अदब कहते हैं। यह तारीफ़ जामा है और इसकी तफ़सील जगह ब जगह मौजूद है।

इक़ामत के आदाब : जब कोई दरवेश सफ़र के सिवा इक़ामत इख़्तेयार करे तो उसके अदब की शर्त यह है कि जब कोई मुसाफ़िर उसके पास पहुंचे तो वह ख़ुशी व एहतेराम के साथ पेश आये और इज़्ज़त व ताज़ीम से उसका ख़ैर मक़दम करे। गोया वह सैयदना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मोअज़्ज़िज़ मेहमानों का एक मेहमान है और उसके साथ वैसा ही सुलूक करे जैसा कि हज़रत

इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने मेहमान के साथ करते थे। घर में जो कुछ मौजूद होता मेहमान के रूबरू लाकर रख देते थे।

चुनांचे हक़ तआला फ़रमाता है कि–

वह एक फरबा बछड़ा तैयार करके लाये और मेहमान से इतना भी दर्याफ़्त न फ़रमाया कि कहां से आ रहे हो और कहां जा रहे हो और क्या नाम है? मेहमान के साथ उनका यह अदब और सलूक था उन्होंने मेहमान का आना भी हक़ तआला की तरफ़ से जाना और मेहामन की रवानगी भी हक़ तआला ही की तरफ़ समझी और उसका नाम भी बंदए हक़ ख़्याल किया।

इसके बाद दरवेश मुक़ीम यह देखे कि मेहमान ख़लवत को पसंद करता है या सोहबत को। अगर वह ख़लवत को पसंद करता है तो उसके लिये तंहाई कर दे और अगर वह सोहबत को पंसद करता है तो उन्स व मुहब्बत के साथ बे तकल्लुफ़ पेश आये और जब रात को बिस्तर पर आराम करने लेटे तो उसके हाथ पांव दबाए अगर वह ऐसा न करने दे और कहे कि इसकी आदत नहीं है तो उस पर ज़िद और इसरार न करे ताकि वह दिलगीर न हो सुबह के वक़्त हम्माम के लिये कहे ताकि गुस्ल करके साफ़ व सुथरा हो जाये और ज़रूरयाते सफ़ाई का ख़्याल रखे। किसी दूसरे को इसकी ख़िदमत करने का मौक़ा न दे। मुक़ीम के लिये लाज़िम है कि हुस्ने अक़ीदत के साथ उसकी ख़िदमत करे और उसे ख़ूब साफ़ व सुथरा बनाने की पूरी कोशिश करे। यहां तक कि उसकी कमर मले। हाथ पांव की मालिश करे। मेहमान नवाज़ी के यह आदाब हैं। अगर मुक़ीम इतनी इस्तेताअत रखता हो कि उसे नया कपड़ा पहना सके तो उसमें कोताही न करे। और अगर ऐसा न कर सके तो तकल्लुफ़ न बरते बल्कि उसी के लिबास को धोकर साफ़ सुथरा कर दे ताकि जब वह हम्माम से बाहर आये तो उसी लिबास को पहन ले। हम्माम से फ़ारिग़ होने के बाद अगर तीन दिन से ज़ियारत को गुज़रे हों तो उस शहर के बुजुर्ग, इमाम, या बुजुर्गों की जमाअत से मिलने का इश्तेयाक़ दिलाये और उससे कहे कि आओ हम उनकी ज़्यार को चलें। अगर वह आमादा हो तो हमराह जायें और अगर वह कहे कि मेरा दिल दिल नहीं चाहता तो इसरार न करे। क्योंकि बसा औक़ात ऐसा होता है कि तालिबाने हक़ का दिल अपने इख़्तेयार में नहीं होता। क्या तुमने नहीं देखा कि हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लह अलैहि से लोगों ने दरख़्वास्त की कि आप अपने सफ़र के अजायब व ग़रायब में से कोई बात बयान फ़रमायें तो उन्होंने फ़रमाया

सबसे अजीब बात यह है कि उसे हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने मुझसे साथ रहने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की मगर मैंने क़बूल न किया और मेरे दिल ने न चाहा कि हक़ तआला के सिवा मेरा दिल किसी और की कदर व मंज़िलत करे और मैं उसके अदब व एहतेराम की रिआयत में मशगूल हूं।

मुक़ीम के लिये यह जायज़ नहीं है कि मुसाफ़िर से पहले सलाम करे यही अहकाम उन दीनदारों के लिये भी हैं जो बीमार पुरसी, अयादत या ताज़ियत वग़ैरह के लिये जाया करते हैं और जिस मुक़ीम को मुसाफ़िरों से यह तमअ हो कि इनको वह अपनी गदाई का आला बनाये और अपने घर से दूसरे के घर ले जाये इसके लिये यही सज़ावार और बेहतर है कि वह मेहमानों की ख़िदमत न करे। क्योंकि वह इन्हें ज़लील करता है और उनके दिल को रंज पहुंचाता है।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे अपने सफ़रों में यही बात मेरे लिये सबसे बढ़कर तकलीफ़ दह साबित हुई कि जाहिल ख़ुद्दाम और नापाक मुक़ीम लोग कभी कभी एक घर से उठाकर दूसरे घर ले जाते थे। कभी किसी अमीर के घर कभी किसी दहक़ानी के घर। हालांकि मैं दिल में उससे मुतनफ़्फ़िर होता और उन्हें सख़्त व सुस्त कहता था लेकिन ज़ाहिर दारी में दरगुज़र और मुसामहत से काम लेता था और यह मुक़ीम लोग जो सुलूक मेरे साथ करते और बेढंगे तौर पर मेरी नज़र करते थे अगर मैं मुक़ीम होता हरगिज़ मुसाफ़िरों के साथ ऐसा न करता। बे अदबों की सोहबत का फ़ायदा इससे बढ़कर और नहीं हो सकता कि जो बात तुम्हें अच्छी मालूम न हो तो तुम अपने मामलात में हमेशाा उनसे इज्तेनाब करो।

फिर अगर मुसाफ़िर दरवेश ख़ुश हो और कुछ दिन रहना चाहे और दुनिया तलबी का इज़हार करे तो मुक़ीम के लिये इसके सिवा चारा नहीं कि वह हमेशा उसकी ज़रूरत के लिये उसे मुक़द्दम रखे और अगर यह मुसाफ़िर लालची और बे हिम्मत हो तो मुक़ीम को न चाहिये कि बे हिम्मती का मुज़ाहिरा करे और ना मुमकिन ज़रूरतों में इसका पैरो हो क्योंकि जिन लोगों ने दुनिया को छोड़ रखा है उनका तरीक़ा यह नहीं होता कि जब ज़रूरत हुई तो बाज़ार आ गये और लगे ज़रूरत जताने या अमरा के दरवाज़े पर पहुंच गये और लगे उनसे मदद मांगने। दुनिया से किनाराकशों का उनकी सोहबत से क्या इलाक़ा?

मशायख़े तरीक़त बयान करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि अपने मुरीदों को रियाज़त व मुजाहिदे की तालीम दे रहे

थे कि एक मुसाफिर आ गया आप उसकी ख़ातिर व मदारात में मशग़ूल हो गये और खाना लाकर उसके सामने रख दिया। मुसाफ़िर ने कहा इसके सिवा, फ़लां चीज़ की भी मुझे ज़रूरत है उन्होंने फ़रमाया तुझे बाज़ार जाना चाहिये था तो तू बाज़ारी शख़्स मालूम होता है मसाजिद व ख़ानक़ाह में रहने वाला शख़्स मालूम नहीं होता।

एक मर्तबा मैंने दमिश्क से दो दरवेशों के साथ हज़रत इब्नुल ओला रहमतुल्लाह अलैहि की ज़ियारत का क़सद किया वह मक्का मुकर्रमा के एक गांव में रहते थे। हमने आपस में तय किया कि हर एक अपनी आप बीती का कोई अहम वाक़िया याद करे ताकि वह बुजुर्ग हमारे बातिन की हमें ख़बर दें और हमारे इस वाक़िये की मुश्किलात को हल करें। चुनांचे मैंने दिल में ख़्याल जमाया कि मैं हज़रत हुसैन बिन मंसूर हल्लाज रहमतुल्लाह अलैहि के अशआर को हल कराऊंगा। दूसरे दरवेश ने यह ख़्याल जमाया कि मैं अपने मर्ज़े अज़ीम तुहाल के लिये इनसे दुआ कराऊंगा और तीसरे ने यह ख़्याल जमाया कि मैं साबूनी हलवे की दरख़्वास्त करूंगा। सोचते हुए जब हम सब उनके पास पहुंचे तो उन्होंने हज़रत हुसैन बिन मंसूर के अशआर के हल पहले लिखवा रखे थे वह मेरे सामने रख दिये और उस दरवेश के पेट पर दस्त मुबारक फेरा और उसकी तिल्ली जाती रही और तीसरे दरवेश से फ़रमाया चूंकि तुम साबूनी हलवे की ख़्वाहिश रखते हो जो कि अवाम की ग़िज़ा है हालांकि तुम औलिया के लिबास में मलबूस हो और औलिया का लिबास अवामी मुतालबे और ख़्वाहिश के साथ मुताबक़त नहीं रखता। लिहाज़ा तुम दोनों में से एक रुख़ इख़्तेयार कर लो।

ग़र्ज़ कि मुक़ीम को ऐसे मुसाफ़िर की मदारत लाज़िम नहीं जो हक़ तआला के हुक़ूक़ की रिआयत न करे और अपनी नफ़्सानी लज़्ज़तों को न छोड़े। जब तक कोई शख़्स अपनी लज़्ज़त पर क़ायम है मुहाल है कि कोई दूसरा शख़्स उसकी लज़्जतों को पूरा रकने में उसकी मुवाफ़िक़त करे। जब वह अपनी लज़्ज़तों को छोड़ देगा तब वह इस लायक़ होगा कि दूसरा उसकी लज़्ज़त को बर क़रार रखे ताकि दोनों अपने अपने हाल में राह पर क़ायम रहें और राहज़न न बनें।

अहादीस में मश्हूर वाक़िया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी और हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दर्मियान बिरादरी क़ायम फ़रमाई थी। यह दोनों असहाबे सुफ़्फ़ा

के सर करदा अफ़राद में से थे और बातिनी असरार के अइम्मा व रोअसा में से थे। एक दिन हज़रत सलमान फ़ारसी हज़रत अबू ज़र के घर वालों की मिज़ाज पुरसी के लिये आये तो घर वालों ने हज़रत सलमान से शिकायत की कि यह तुम्हारे भाई अबू ज़र, न दिन में कुछ खाते हैं और न रात में सोते हैं। हज़रत सलमान ने फ़रमाया कुछ खाने के लिये लाओ। जब लाया गया तो हज़रत अबू ज़र से कहा ऐ भाई! तुम्हें ज़ेबा यह है कि तुम मुवाफ़िक़त करो और मेरे साथ खाना खाओ क्योंकि तुम्हारा यह रोज़ा फ़र्ज़ तो है नहीं। हज़रत अबू ज़र ने उनके कहने पर उनके साथ खाना खाया। जब रात हुई तो कहा ऐ भाई! सोने में भी तुम को मेरा साथ देना चाहिये क्योंकि तुम्हारे ऊपर अपने जिस्म का भी हक़ है तुम्हारी बीवी का भी हक़ है और तुम्हारे रब का भी हक़ है। दूसरे दिन हज़रत अबू ज़र बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं भी तुम से वही कहता हूं जो कल सलमान ने तुम से कहा था कि-बेशक तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है।

हज़रत अबू ज़र ने जब अपनी लज़्ज़तों के छोड़ने पर इक़ामत फ़रमाई तो हज़रत सलमान ने इन्हें उनकी लज़्ज़तों पर क़ायम किया और उन्होंने उनकी ख़ातिर अपने हक़ से दर गुज़र किया। इसी असल व क़ायदे पर जो कुछ तुम करोगे सहीह व मुस्तहकम होगा।

मुझ पर एक ज़माना ऐसा गुज़रा है कि मैं मुल्क इराक़ में दुनियावी माल को जमा करने और उनको खर्च करने में ख़ूब असराफ़ करता था जिसकी वजह से मुझ पर क़र्ज़ का बार हुत ज़्यादा हो गया था। जिसे जो ज़रूरत पेश आती मेरे पास आ जाता और मैं उसकी ज़रूरतें पूरी करने में तकलीफ़ें उठाता था। उस ज़माने के एक बुज़ुर्ग ने मुझे लिखा कि ऐ फ़रज़ंद! ख़्याल रखना कि तुम्हारा दिल ख़ुदा से ग़ाफ़िल न हो जाये। अपने दिल को फ़ारिग़ रखना। तुम मशाग़िल में फंस गये हो लिहाज़ा अगर कोई दिल अपने से ज़्यादा अज़ीज़ पाओ तो जायज़ है कि उस दिल की फ़राग़त में अपने आपको मशगूल कर लो वरना इस काम और इस शग़ल से दस्तकश हो जाओ क्योंकि बंदगाने ख़ुदा की कफ़ालत ख़ुदा के ज़िम्मे है उसी लमहा मेरे दिल में इससे फ़राग़त का जज़्बा पैदा हो गया।

यह मुसाफ़िरों के बारे में मुक़ीमों के अहकाम थे जो इख़्तेसारन बयान कर दिये हैं।

मसाफ़रत के आदाब : जब कोई दरवेश इक़ामत छोड़कर सामान सफ़र

इख़्तेयार करे तो उसके अदब के अहकाम यह हैं कि उसका सफ़र खुदा के लिये हो न कि नफ़्सानी पैरवी में, जिस तरह ज़ाहिर में सफ़र इख़्तेयार किया है इसी तरह बातिन में भी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को तर्क कर दे। हमेशा बा वुज़ू रहे और अपने औराद व ज़ायफ़ को तर्क न करे। ज़ेबा यही है कि उसका सफ़र या तो अदाए हज के लिये हो या जिहाद बिल कुफ़्फ़ार के लिये, या किसी जगह की ज़ियारत या कहीं दीनी फ़वायद के हुसूल या तलबे इल्म या किसी बुज़ुर्ग या शैख़ की मुलाक़ात या किसी शैख़ के मज़ार की ज़ियारत के लिये हो। इनके सिवा अगर किसी और मक़सद से सफ़र होगा तो वह सफ़र में शुमारे न होगा।

सामाने सफ़र : सफ़र की हालत में गुदड़ी, जानमाज़, लोटा, जूतियां और असा ज़रूर रखना चाहिये ताकि गुदड़ी से सतर पोशी करे, मुसल्ले पर नमाज़ पढ़े, लोटे से तहारत व वुज़ू करे और असा से मुज़िर चीज़ों को दफ़ा करे। असा के फ़वायद और भी हैं और वुज़ू के बाद जूतियां पहनकर जानमाज़ तक आ सके। इनके सिवा सुन्नत की हिफ़ाज़त की ख़ातिर दीगर चीज़ें भी सफ़र में साथ रख सकता है मसलन कंघा, नाख़ुन तराश, सुरमादानी वग़ैरह और अगर इनके सिवा ऐसा सामान भी साथ रखे जो ज़ेब व ज़ीनत और आराईश से मुताल्लिक़ हो तो वह सोचे कि किस मुक़ाम में है अगर वह मंज़िले इरादत में है तो उसके लिये इनके सिवा सामान क़ैद, राह की बंदिश और मोजिबे हिजाब होंगी और अपने नफ़्स की रोऊनत के इज़्हार का मोजिब बनेगी और अगर वह मुक़ामे तमकीन व इस्तेक़ामत में से है तो उसके लिये यह सामान ही नहीं बल्कि हर चीज़ दुरुस्त होगी।

मैंने शैख़ अबू मुस्लिम फ़ारस बिन ग़ालिब फ़ारसी रहमतुल्लाह अलैहि से सुना है कि मैं एक दिन हज़रत शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर फ़ज़लुल्लाह बिन मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहि की ज़ियारत को हाज़िर हुआ तो उन्हें चार बालिश्त के तख़्ते पर सोता हुआ पाया और उनका पांव एक दूसरे पर रखा हुआ था वह उस वक़्त मिस्री चादर ओढ़े हुए थे और मैं ऐसा लिबास पहने हुए था जो मैला होकर चमड़े की मानिंद सख़्त हो गया था। जिस्म थकन से चूर चूर और मेहनत व मुशक्क़त और मुजाहिदे से पीला पड़ गया था। मेरे दिल में इनसे मुलाक़ात न करने का जज़्बा उभरा और दिल में ख़्याल गुज़रा कि एक दरवेश यह हैं जो इस तमतराक़ के साथ रहते हैं और एक मैं दरवेश हूं जो शिकस्ता हाली के साथ बसर कर रहा हूं यह इतने चैन व राहत में हैं और मैं इस मेहनत व मुशक्क़त

में हूं। वह बयान करते हैं कि वह बुज़ुर्ग मेरी बातिनी कैफ़ियत से बाख़बर हो गये और मेरी नख़वत को उन्होंने मुलाहज़ा फ़रमाये। मुझ से फ़रमाया! ऐ अबू मुस्लिम! तुमने कौन सी किताब में पढ़ा है कि अपने को देखने वाला दरवेश होता है? जब मैंने हर शय में जलवए इलाही को मुशाहिदा कर लिया तो उसी ने मुझे तख़्त पर बिठा दिया है और जब कि तुम ख़ुद अपने आपको देखने ही में अभी तक पड़े हुए हो तो उसने तुम्हें मेहनत व मुशक्क़त में डाल रखा है। मेरे मुक़द्दर में मुशाहिदा है और तुम्हारे मुक़द्दर में मुजाहिदा। यह दोनों मुक़ाम रास्ता के मुक़ामात में से हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इससे पाक और मुनज़्ज़ा है दरवेश वही है जिसका मुक़ाम फ़ना हो जाये और वह अहवाल से गुज़र जाये शैख़ अबू मुस्लिम फ़रमाते हैं कि यह सुनकर मेरे होश उड़ गये और सारा जहान मुझ पर तारीक हो गया। जब अपने आप में आया तो उनसे माज़रत ख़्वाही की और उन्होंने मुझे माफ़ फ़रमा दिया। इसके बाद मैंने अर्ज़ किया कि ऐ शैख़! मुझे वापसी की इजाज़त अता फ़रमाइये चूंकि आपके दीदार की ताबे मक़ावमत नहीं रखता। उन्होंने फ़रमाया। अबू मुस्लिम! तुमने ठीक कहा, इसके बाद उन्होंने मेरी हालत की तमसील में यह शेर पढ़ा-

तर्जमा : जो ख़बर मेरे कान सुन न सके उसे मेरी आंख ने सर बसरे ज़ाहिर देख लिया।

हर मुसाफ़िर पर लाज़िम है कि वह हमेशा सुन्नत की हिफ़ाज़त करे और जब वह किसी मुक़ीम के यहां पहुंचे तो एहतेराम के साथ उसके पास जाये। उसे सलाम करे फिर बायां क़दम जूती से निकाले क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते थे और जब जूती में पांव डाले तो पहले दाहिना पांव डाले इसके बाद दूसरा जब पांव धोए तो पहले दायां फिर बायां, और दो रकअत तहिय्यतुल वुज़ू के पढ़े इसके बाद दरवेशों के हुक़ूक़ की रिआयत की तरफ़ मुतवज्जोह हो।

ऐसा न चाहिये कि मुक़ीम की किसी हालत पर एतेराज़ करे या किसी के साथ ज़्यादती करे ख़्वाह मामलात से मुताल्लिक़ हो या गुफ़्तगू से अपने सफ़र की सख़्तियों को बयान न करे, न अपने इल्म को जताए और लोगों के सामने हिकायात व रिवायात बयान न करे क्योंकि यह बातें इज़हारे रोऊनत की मोजिब हैं और लाज़िम है कि जाहिलों की बातों को बर्दाश्त करने और लिवजाहिल्लाह उनकी ज़्यादतियों पर सब्र करे क्योंकि उनमें बड़ी बरकतें हैं अगर कोई मुक़ीम

या उनका ख़ादिम उसे कोई हुक्म दे उसे किसी को सलाम करने या कहीं की ज़ियारत करने को कहा जाए तो जहां तक मुमकिन हो इन्कार न करे। बईं दुनियादारी की मुरव्वत न हो।

बिरादराने तरीक़त के अफ़आल की हर मुमकिन तावील व उज़्र करे और दिल में अपनी किसी हाजत का रंज न आने दे और न मुक़ीमों को बादशाहों के दरवाज़े पर ले जाये। मुसाफ़िर व मुक़ीम हर हाजत और अपनी तमाम हालतों में रज़ाए इलाही का ख़्वाहां रहे और एक दूसरे के साथ हुस्ने अक़ीदत रखे। सबको बराबर जाने और पीठ पीछे किसी की ग़ीबत न करे क्योंकि तालिबाने हक़ के लिये फ़ुज़ूल बातें करना बुरा है और बुरी बात कहना तो बड़ी बदनसीबी है। मुहक़्क़िक़ीन फ़ैअल की शक्ल में फ़ाइल को देखते हैं। जब वह मख़लूक़ को बुरा कहेगा तो उससे ख़ालिक की बुराई लाज़िम आयेगी, अगरचे कोई बंदा ऐबदार, महजूब और बे मुशाहिदा ही क्यों न हो, फ़ेअल पर झगड़ना फ़ाइल पर झगड़ना होता है अगर इंसानी आंख लोगों पर पड़े तो वह सबसे दूर रहे और जाने कि सारी मख़लूक़ महजूर और मग़लूब व आजिज़ है कोई शख़्स मशीयते इलाही के बग़ैर कुछ नहीं कर सकता और जो कुछ वह करता है वह सब ख़ुदा का ही पैदा करदा है किसी मख़लूक़ को उसकी मिलकियत में तसर्रुफ़ करने का हक़ नहीं है किसी ज़ात पर ख़ुदा के सिवा किसी मख़लूक़ को मुतलक़ तग़य्युर व तबद्दुल की क़ुदरत नहीं है।

आदाबे ग़िज़ा : वाज़ेह रहना चाहिये कि इंसान को गिज़ा के बग़ैर गुज़ारा नहीं क्योंकि बदन का तक़व्वुम खाने पीने के बग़ैर ना मुमकिन है। लेकिन गिज़ा के इस्तेमाल की शर्त यह है कि इसमें मुबालग़ा न करे और न रात दिन खाने पीने की फ़िक्र में मशगूल रहे।

हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि-

जो पेट में दाख़िल करने की ही फ़िक्र में रहता है उसकी क़द्र व क़ीमत वह होती है जो उससे ख़ारिज होता है।

इसलिये सालिकाने राह हक़ के लिये बसयार ख़ोरी से बढ़कर कोई चीज़ नुक़सान रसां नहीं तफ़सील भूक के बाब में गुज़र चुकी है।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि से किसी ने पूछा आप भूके रहने की इतनी ज़्यादा तारीफ़ क्यों फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया इसलिये कि अगर फ़िरओन भूका रहता तो हरगिज़ मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं न कहता।

अगर क़ारून भूका रहता तो बाग़ी न होता और लोमड़ी चूंकि भूकी रहती है इसलिये हर एक उसकी तारीफ़ करता है जब पेट भर जाता है तो निफ़ाक़ पैदा होता है अल्लाह तआला काफ़िरों की हालत बयान करते हुए फ़रमाता है-

उन्हें छोड़ो जो खाते और ऐश करते हैं वह अपनी ख़्वाहिशों में मगन हैं अनक़रीब वह अपना अंजाम जान लेंगे।

नीज़ फ़रमाता है -

काफ़िर लोग ऐश करते और खाने पीने में ऐसे ही हैं जैसे जानवर खाते हैं उनका ठिकाना जहन्नम है।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक पेट भरकर हलाल गिज़ा खाने के मुक़ाबला में शराब से पेट को पुर करना ज़्यादा बेहतर है। लोगों ने पूछा यह कैसे? उन्होंने फ़रमाया इसलिये कि शराब से भरा पेट, अक़्ल की ताक़त सलब कर लेता है शहवत की आग बुझा देता है और वह बेहोश होकर उसकी ज़ुबान व हाथ से लोग महफ़ूज़ हो जाते हैं लेकिन जब पेट हलाल ग़िज़ा से पुर हो जाता है तो बेहूदा तमन्नाएं शहवत और नफ़्स अपने मुक़द्दर के हुसूल में सर उठाते हैं मशायख़े तरीक़त ने ऐसे ही लोगों के बारे में फ़रमाया है कि-

उनका खाना बीमारों की तरह उनकी नींद गहरी नींद वालों के मानिंद उनकी गुफ़्तगू बच्चों की चीख़ व पुकार के मानिंद होती है।

ग़िज़ा के शर्ते आदाब में से यह है कि तंहा न खाए और जो खाए दूसरों को भी इसमें शरीक बनाये। क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

सबसे ज़्यादा बुरा शख़्स वह है जो अकेला खाये। गुलाम को मारे और ख़ैरात से रोके रहे।

जब दस्तर ख़्वान पर बैठे तो ख़ामोश न बैठे और बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरू करे और कोई चीज़ इस तरह न रखे और न उठाए जिसे लोग ना पसंद करें, पहला लुक़मा नमकीन ग़िज़ा का ले और अपने साथियों का लिहाज़ व पास करे। ईसार व इंसाफ़ से काम ले।

सहल बिन अब्दुल्लाह से किसी ने आयते करीमा (अल्लाह तआला अदल व इंसाफ़ का हुक्म देता है) की तफ़सीर मालूम की तो उन्होंने बताया इंसाफ़ तो यह है कि अपने साथी को खाने में शरीक करे और एहसान यह है कि साथी

के खिलाने को खुद पर अफ़ज़ल जाने।

मेरे शैख़ व मुरशिद फ़रमाते हैं कि मैं उस मुद्दई पर ताज्जुब करता हूं जो कहता है कि मैं तारिके दुनिया हूं और हाल यह है कि वह खाने की फ़िक्र में रहता हो।

इसके बाद लाज़िम है कि दाहिने हाथ से लुक़मा ले और अपने लुक़मा के सिवा किसी की तरफ़ न देखे। खाने में पानी कम पिये और पानी उस वक़्त पिये जब सच्ची प्यास लगे और इतना पिये जिससे जिगर तर हो जाये और लुक़मा बहुत बड़ा न ले और उसे ख़ूब चबाये। खाने में जल्दी न करे क्योंकि इन बातों से बदहज़मी पैदा हो जाती है और सुन्नत के ख़िलाफ़ भी है और जब खाने से फ़ारिग़ हो जाये तो हम्द व शुक्र बजा लाये और हाथ धोए।

अगर जमाअत में दो या तीन या ज़्यादा अफ़राद को पोशीदा तौर पर किसी खास चीज़ पर मदऊ करें और छिपाकर खिलाना चाहें तो बाज़ मशायख़ फ़रमाते हैं कि यह हराम है और मुसाहिबों की ख़्यानत है यही वह लोग हैं जो अपने बेटों में आग भरते हैं और बाज़ मशायख़ फ़रमाते हैं कि जब सब उस पर मुत्तफ़िक़ हों तो यह जायज़ है और बाज़ कहते हैं कि अगर सिर्फ़ एक हो तो जायज़ है क्योंकि इसके लिये इंसाफ़ शर्त नहीं है क्योंकि इंसाफ़ की शर्त तो एक से ज़्यादा अफ़राद के दर्मियान है और जब अकेला हो तो उससे सोहबत के यह आदाब साकित हो जाते हैं और बंदा इसमें माख़ूज़ नहीं होता। इसमें मज़हब की सबसे बड़ी बुनियादी बात यह है कि किसी दरवेश की दावत को रद्द न करे और किसी दुनियादार की दावत को कबूल न करे और न उनके घर जाये और न उनसे कुछ मांगे। क्योंकि अहले तरीक़त के नज़दीक यह हिदायत है इसलिये कि दुनियादार, दुरवेश के लिये महरम है और वह इसका हमजिन्स नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि इंसान न तो सामान की कसतर की बिना पर दुनियादार बनता है और न सामान की क़िल्लत की बिना पर दरवेश। और जो फ़क्र का मुन्किर है वह दुनियादार है अगरचे वह मुज़तरब व बेक़रार हो। और जब किसी दावत में शरीक हो तो किसी चीज़ के खाने या न खाने में तकल्लुफ़ न बरते और वक़्त के मुताबिक़ रविश इख़्तेयार करे। जब साहबे दावत महरम हो तो उसे जायज़ है कि बचा हुआ खाना घर वालों के लिये उठा ले और अगर ना महरम हो तो बचा हुआ खाना घर में ले जाना जायज़ नहीं है लेकिन किसी हाल में पस खोरदा छोड़ना बेहतर नहीं है क्योंकि हज़रत सहल फ़रमाते

है कि पस ख़ोरदा बचाना ज़िल्लत व कमीनगी है।

चलने फिरने के आदाब : अल्लाह तआला फ़रमाता है रहमान के बंदे वह हैं जो ज़मीन पर तवाज़ो व इंकेसार से चलते हैं तालिबे हक़ पर लाज़िम है कि वह रफ़्तार में हमेशा इसका ख़्याल रखे कि जो वह क़दम उठाता है वह अपनी ताक़त से उठाता है या ख़ुदा की ताक़त से। अगर वह यह ख़्याल करे कि अपनी ताक़त से है तो इस्तिग़फ़ार करे और अगर इस पर यक़ीन हो कि ख़ुदा की दी हुई ताक़त से है तो उसे इस यक़ीन पर मज़ीद इज़ाफ़ा की कोशिश करनी चाहिये।

हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाह अलैहि का वाक़िया है कि एक दिन उन्होंने कोई दवा खाई लोगों ने अर्ज़ किया कि कुछ देर सेहन में तशरीफ़ रखें ताकि दवा का असर व फ़ायद ज़ाहिर हो आपने फ़रमाया ख़ुदा से हया करता हूं कि क़यामत के दिन वह मुझसे पूछेगा तूने अपने नफ़्स की खातिर चंद क़दम क्यों उठाए जैसा कि उसका इरशाद है उनके क़दम गवाही देंगे कि वह दुनिया में क्या करते थे?

दरवेश को लाज़िम है कि बेदारी में सर झुकाए मुराक़बा में रहे और किसी तरफ़ नज़र न उठाए। अगर रास्ता में कोई शख़्स इसके बराबर से गुज़रे तो बजुज़ अपने कपड़े बचाने के इसके पांव के नीचे न आये (क्योंकि वह उन कपड़ों से नमाज़ पढ़ता है) ख़ुद को बचाने की कोशिश न करे लेकिन अगर यह पता चल जाये कि वह शख़्स काफ़िर है या वह नजासत में आलूदा है तो अपने आपको इससे बचाना ज़रूरी है।

और जब जमाअत के साथ चले तो आगे बढ़ने की कोशिश न करे क्योंकि आगे बढ़कर चलना तकब्बुर की अलामत है बहुत पीछे रहने की भी कोशिश न करे क्योंकि इसमें तवाज़ो की ज़्यादती है चूंकि ज़्यादती तवाज़ो को देखना भी ऐन तकब्बुर।

खड़ावं और जूतियों को जहा तक हो सके ज़ाहिरी नजासत से बचाए ताकि अल्लाह तआला उसकी बरकत से रात में उसके कपड़ों को महफ़ूज़ रखे।

जब किसी जमाअत या किसी एक दरवेश के साथ जा रहा हो तो रास्ता में किसी और से बात करने के लिये उसे महवे इंतज़ार न छोड़ दे। रफ़्तार में मियाना रवी को मलहूज़ रखे न ज़्यादा आहिस्ता चले और न तेज़ दौड़कर। आहिस्ता चलना मतकब्बिरों की अलामत है क़दम पूरा रखे गर्ज़ कि हर तालिबे

हक़ की रफ़्तार ऐसी हो कि अगर कोई उससे पूछे कि कहां जा रहे हो तो वह कामिल दिल जमई के साथ कह सके कि मैं ख़ुदा की तरफ़ जा रहा हूं इसी ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई है। अगर इसका चलना ऐसा न हो तो यह इसके लिये मोजिबे वबाल होगा क्योंकि क़दमों की दुरुस्तगी ख़तरात से महफ़ूज़ रहने की निशानी हैं। जो इस दुरुस्तगी की फ़िक्र में रहता है हक़ तआला उसके क़दमों को उसके अंदेशा का पैरोकार बना देता है।

हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि यह फ़रमाते हैं कि बग़ैर मुराक़बा के दरवेश का चलना, गफ़लत की निशानी है क्योंकि वह जिस मुक़ाम पर होता है दो क़दम से मालूम हो जाता है यानी एक अपने नसीब पर क़दम रखता है और दूसरा फरमाने इलाही पर मतलब यह है कि वह एक मुक़ाम से क़दम उठाता है और दूसरे मुक़ाम पर क़दम रखता है गोया तालिब की रफ़्तार, मुसाफ़त को तय करने की अलामत है और कुर्बे हक़ मसाफ़त नहीं है। जब उसका कुर्ब मुसाफत नहीं तो तालिब को महले सकून में क़दमों के ज़रिय क़तअ मुसाफ़त के बग़ैर क्या किया चारह?

सफ़र व हज़र में सोने के आदाब : वाज़ेह रहना चाहिये कि मशायख़े तरीक़त का इस मअ़ने में बहुत इख़्तेलाफ़ है बईहमा हर गरोह के नज़दीक यह बात मुसल्लम है कि ग़ल्बए नींद के बग़ैर सोना न चाहिये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि नींद मौत की बहन है लिहाज़ा ज़िन्दगानी हक़ तआला की नेमत है और मौत बला। ला महाला बला के मुक़ाबला में नेमत अच्छी चीज़ है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि--

अल्लाह तआला ने अपनी इत्तेला में मुझसे फ़रमाया जो सोया वह ग़ाफ़िल हुआ और जो ग़ाफ़िल हुआ वह महजूब रहा।

एक गरोह के नज़दीक जायज़ है कि मुरीद बिल क़सद सोए और बजब्र नींद को लाए जबकि वह अहकामे इलाही को पूरा कर चुका हो। इसलिये कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

तीन शख़्सों से हुक्मे इलाही उठा लिया गया है एक सोने वाले से जबतक कि वह न जागे। दूसरे बच्चे से जब तक वह बालिग़ न हो, तीसरे दीवाने से जब तक कि उसे इफ़ाक़ा न हो।

मतलब यह है कि बंदा जब तक सोता रहता है बेदार होने तक क़लम तक़दीर

उठा रहता है और मख़लूक़ उसकी बुराई से महफ़ूज़ रहती है और उसके इख़्तेयारात मुअतल और उसका नफ़्स माजूल रहता और किरामन कातिबीन उसका नामए आमाल नहीं लिखते। उसकी ज़ुबान दावों, झूट और ग़ीबत से रुकी रहती है और उसका इरादा उजब व रिया से दूर रहता है यानी सोने वाला अपनी जान के नफ़ा व नुक़सान मौत व हयात और उठने का मालिक नहीं रहता। इसी बिना पर सैयदुना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि-

शैतान पर गुनाहगार के सोने से बढ़कर कोई चीज़ सख़्त नहीं। जब गुनाहगार सोता है तो वह कहता है कि कब यह उठेगा जो उठकर ख़ुदा की नाफ़रमानी करेगा।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि को हज़रत अली बिन सहल असफ़हानी से इस मसले में इख़्तेलाफ़ है। हज़रत अली बिन सहल ने हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि को एक लतीफ़ मअ़ने का ख़त लिखा। आपने उसे सुनकर इख़्तेलाफ़ फ़रमाया। हज़रत अली बिन सहल ने उस ख़त में अपना मक़सद इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया था कि नींद चूँकि ग़फ़लत व आराम का मोजिब है लिहाज़ा इससे बचना ज़रूरी है क्योंकि मुहिब को दिन रात में कभी नींद व आराम का होश नहीं होता। अगर वह सो जाए तो अपने मक़सूद से महरूम रह जाता है उसकी ज़िन्दगानी ग़ाफ़िल बन जाती है और हक़ तआला के मुशाहिदे से महरूम रह जाता है जैसा कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि तर्जमा : ऐ दाऊद! वह शख़्स मेरी मुहब्बत के दावे में झूटा है जिस पर रात का अंधेरा छा जाये और वह मुझसे ग़ाफ़िल होकर सो जाए और मेरी मुहब्बत को छोड़ दे। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि ने इस ख़त के जवाब में तहरीर फ़रमाया कि वाज़ेह रहना चाहिये कि हमारी बेदारी, राहे हक़ में हमारा मामला है और हमारी नींद हक़ ताआल का हम पर फ़ेअल है लिहाज़ा हमारी बे इख़्तेयारी की हालत में जो कुछ हम पर गुज़रता है वह सब हम पर हक़ तआला की तरफ़ से होता है। हमारी तरफ़ हमारा इख़्तेयार हक़ तआला के तहते तसर्रुफ़ में है। लिहाज़ा महबूबाने ख़ुदा पर नींद का ग़ल्बा, हक़ तआला का अता करदा है इस मसले का ताल्लुक़ सुहव व सुकर से है उस जगह यह बात वज़ाहत से की जा चुकी है। लेकिन यह बात हैरत की है कि हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि जोकि साहबे सुहव मर्दे ख़ुदा थे इस जगह उन्होंने सुकर की तक़वियत फ़रमाई। मुमकिन है कि आप

उस वक़्त मग़लूबुल हाल हों और उसी हालत में आपने यह तहरीर फ़रमाया हो और यह भी मुमकिन है कि आपका मसलक इसके बर ख़िलाफ़ हो क्योंकि नींद बनफ़सिही खुद सुहव है और बेदारी ऐन सुकर। इसलिये कि नींद आदमी की सिफ़तें है और जब तक आदमी अपनी सिफ़तें के साया में रहता है तो वह सुहव के साथ मंसूब होता है और न सोना हक़ तआला की सिफ़त है जब आदमी सिफ़ते हक़ के साया में होता है तो वह सुकर के साथ मंसूब होता है और मग़लूबुल हाल होता है।

मैंने मशायख़ की एक जमाअत देखी है जो नींद को बेदारी पर फ़ज़ीलत देती है और वह हज़रत जुनैद के मसलक की मुवाफ़िक़त करती है क्योंकि बकसरत औलिया, बुजुर्गाने दीन और अंबियाए इज़ाम अलैहिमुस्सलाम पर हमेशा नींद का ज़ुहूर होता था और हमारे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह का यह इरशाद बयान फ़रमाया है कि अल्लाह तआला उस बंदे पर इज़हारे ख़ुशनूदी फ़रमाता है जो बहालते सज्दा सो जाता है और अपने फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि मेरे बंदे की तरफ़ देखो उसकी रूह मुझसे हमराज़ है और उसका बदन इबादत के फ़र्श पर है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि-

तर्जमा : जो शख़्स बा वुज़ू सोए अल्लाह तआला उसकी रूह को इजाज़त फ़रमाता है कि वह अर्श का तवाफ़ करे और वहां अल्लाह तआला को सज्दा करे।

मैंने एक हिकायत तें देखा है कि हज़रत शाह शुजाअ करमानी रहमतुल्लाह अलैहि चालीस साल बेदार रहे। फिर जब एक रात सोए तो ख़्वाब में उन्हें हक़ तआला का दीदार हुआ। इसके बाद वह हमेशा इसी उम्मीद में सोते रहे इसी मअ़ने में कैस आमरी का यह शेर है-

तर्जमा : मैं बिलक़सद सोता हूं हालांकि मुझे नींद नहीं आती। शायद कि ख़्वाब में तेरे ख़्याल से मुलाक़ात हो जाये।

मशायख़ की एक जमाअत को मैंने देखा है कि वह बेदारी को ख़्वाब पर फ़ज़ीलत देते हैं और हज़रत अली बिन सहल की मुवाफ़िक़त करते हैं उनकी दलील यह है कि अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम को वही और औलिया किराम को करामतें बेदारी ही में होती हैं।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि-

अगर नींद अफ़ज़ल होती तो यक़ीनन जन्नत में भी सोना होता।

मतलब यह कि अगर नींद में कोई ख़ूबी होती तो जन्नत में जो मुक़ामे क़ुरबत है वहां नींद ज़रूर आती। चूंकि जन्नत में न हिजाब है न नींद इससे ज़ाहिर है कि नींद में हिजाब है।

अरबाबे लतायफ़ फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जब नींद आयी थी तो उनके बायें पहलू से हव्वा को पैदा फ़रमाया था और उनकी तमाम बलाओं का सर चश्मा यही हव्वा थीं, नीज़ फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया ऐ मेरे फ़रज़ंद मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैं तुम्हें ज़िब्ह कर रहा हूं तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ वालिदे माजिद यह अपने हबीब से सो जाने का बदला है। अगर आप न सोते तो आपको फ़रज़ंद के ज़िब्ह करने का हुक्म न दिया जाता। लिहाज़ा आपकी नींद आपको बे औलाद और मुझे बेजान बनाती है इसके सिवा बवक़्ते ज़िब्ह मेरी तकलीफ़ तो एक लम्हा के लिये होगी मगर बे औलाद होने की तकलीफ़ आपके लिये दायमी होगी।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा का वाक़िया है कि वह हर रात नमक के पानी से तर करके सलाई सामने रख लेते थे जब नींद का ग़ल्बा होता तो आंख में वह सलाई फेर लिया करते थे।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने एक बुज़ुर्ग को देखा कि जब वह फ़रायज़ की अदायगी से फ़ारिग़ होते तो सो जाते थे मैंने शैख़ अहमद समरक़ंदी को बुख़ारा में देखा कि वह एक साल तक रात भर नहीं सोए। दिन में कुछ देर सो जाते थे इसमें भी इससे रुजू इनका मक़सद था इसलिये कि जिसे ज़िन्दगी के मुक़ाबला में मौत ज़्यादा अज़ीज़ हो तो ज़ाहिर है कि उसे बेदारी के मुक़ाबला में नींद प्यारी होगी और जिसे मौत के मुक़ाबला में ज़िन्दगी अज़ीज़ हो उसके लिये ज़ेबा है कि वह नींद के मुक़ाबले में बेदारी को ज़्यादा अज़ीज़ रखे। लिहाज़ा जो तकलीफ़ से बेदार रहे उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं बल्कि क़द्र व क़ीमत तो उसकी है जो उसे बेदार रखे जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बरगुज़ीदा फ़रमाकर बुलंद मक़ामात पर फ़ायज़ फ़रमाया। आपने न नींद में तकल्लुफ़ फ़रमाया और न बेदारी में। अल्लाह तआला ने फ़रमाया रात को कम क़ियाम फ़रमाइये बल्कि आधी रात तक।

इसकी कोई क़दर व क़ीमत नहीं है जो नींद में तकल्लुफ़ करते और बेदारी की मशक्क़त उठाए। अल्लाह तआला ने असहाबे कहफ़ को बरगुज़ीदा फ़रमाया और इन्हें मुक़ामे आला पर पहुंचाया उनकी गर्दन कुफ़्र का लिबास उतारा वह न नींद का तकल्लुफ़ करते थे न बेदारी का यहां तक कि हक़ तआला ने उन पर ऐसी नींद तारी फ़रमाई कि उनके इख़्तेयार के बग़ैर अल्लाह तआला उनकी परवरिश फ़रमाता है जैसा कि इरशाद है-

तुम गुमान करते हो कि वह जाग रहे हैं हालांकि वह सोए हुए हैं और अल्लाह तआला उनको दाहिने और बायें पहलू बदलता है और वह ख़्वाब व बेदारी दोनों हालतों में बे इख़्तेयार हैं।

जब बंदा इस दर्जा पर फ़ायज़ हो जाये कि उसका इख़्तेयार जाता रहे और अपने खाने पीने से दस्त कश हो जाये और उसकी तमाम हिम्मतें ग़ैर से जुदा हो जायें फिर अगर वह सोए या जागे हर हाल में अज़ीज़ होता है। लिहाज़ा मुरीद के लिये नींद की शर्त यह है कि अपनी पहली नींद को अपनी उम्र की आख़िरी नींद जाने। गुनाहों से बचे और दुश्मनों को राज़ी करे। तहारत के साथ रहे दाहिने पहलू पर क़िब्ला रू होकर सोये। दुनियावी काम ठीक रखे नेमते इस्लाम का शुकर बजा लाये और अहद करे कि अगर बेदार हो तो फिर गुनाहों में मुब्तला न होगा। जो शख़्स अपनी बेदारी में कामों को दुरुस्त रखता है उसके लिये नींद हो या मौत दोनों में कोई ख़तरा नहीं है।

एक बुज़ुर्ग एक ऐसे इमाम के पास जाया करते थे जो मर्तबा व इज़्ज़ते नफ़्स की रोऊनत में मुब्तला था वह बुज़ुर्ग उससे कहते थे ऐ फ़लां शख़्स! तुझे मर जाना चाहिये इस कलिमा में उस इमाम का दिल रंजीदा हुआ करता था और कहा करता यह गरोह हमेशा मुझसे यही कहता रहता है कल मैं उसके कहने से पहले यह कलिमा उससे कहूंगा। चुनांचे जब फिर वह बुज़ुर्ग उसके पास आये तो उस इमाम ने कहा, तुम्हें मर जाना चाहिये। उस बुज़ुर्ग ने मुसल्ले को बिछाया सर को ज़मीन पर रखा और कहा मैं मरता हूं और उसी वक़्त उस बुज़ुर्ग की रूह परवाज़ कर गयी। इस वाक़िये में इमाम को यह तंबीह थी कि वह जान ले कि यह बुज़ुर्ग जो मर जाने को कहा करते थे ख़ुद भी मरने से।

मेरे शैख़ रहमतुल्लाह अलैहि अपने मुरीदों को इस की हिदायत फ़रमाया करते थे कि नींद के ग़ल्बा के वक़्त सोना चाहिये और जब बेदार हो जाये तो दोबारा सोना मुरीदों के लिये हराम है। चूंकि बंदे को नींद ग़फ़लत लाती है।

इस मअ़ने में बहस तवील है इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं।

सुकूत व कलाम के आदाब : अल्लाह तआला फ़रमाता है-

सबसे बेहतर कलाम यह है कि जो बंदा अल्लाह को पुकारे और नेक काम करे। नीज़ फ़रमाया नेक बात कहो और फ़रमाया कहो कि हम ईमान लाये।

वाज़ेह रहना चाहिये कि अल्लाह तआला ने बंदों को अच्छी बात कहने का हुक्म दिया है मसलन हक़ तआला की माबूदियत का इक़रार, उसकी हम्द व सना और मख़लूके ख़ुदा को दावत व तबलीग़ वग़ैरह गोयाई हक़ तआला की तरफ़ से बंदों के लिये बड़ी नेमत है। आदमी इस सिफ़त के ज़रिये दीगर मख़लूक़ से मुमताज़ होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है बनी आदम को हमने मुकर्रम बनाया। मुफ़स्सेरीन का एक क़ौल यह है कि इसके मअ़ने गोयाई अता फ़रमाने के हैं अगरचे गोयाई ख़ुदा की ज़ाहिरी नेमत है लेकिन उसकी आफ़त भी बहुत बड़ी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है -

तर्जमा : मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा खौफ़नाक चीज़ जुबान है मुझे इसी का ख़ौफ़ है। गुफ़तार, शराब की मानिंद है जिससे अक़्ल मख़मूर हो जाती है। आदमी जब शराबे कलाम में पड़ जाता है तो उससे निकलना दुश्वार हो जाता है अपने आपको इससे बचा नहीं सकता। चूंकि अहले तरीक़त को मालूम है कि गुफ़तार आफ़त है इसलिये वह इंतेहाई ज़रूरत के बग़ैर बात नहीं करते गोया वह इब्तेदा और इंतेहा में गुफ़तगू पर क़ाबू रखते हैं अगर सारी गुफ़तगू हक़ के लिये हो तो बात करते हैं वरना ख़ामोश रहते हैं। इनका पुख़्ता एतेक़ाद हो जाता है कि अल्लाह तआला भेदों को जानता है और उन लोगों को बहुत बुरा जानते हैं जो हक़ तआला को ऐसा नहीं जानते।

अल्लाह तआला का इरशाद है -

क्या यह काफ़िर लोग गुमान रखते हैं कि हम उनके भेदों को और खुफ़िया बातों को नहीं सुनते। हां हमारे फ़रिश्ते भी इनके पास सब कुछ लिख रहे हैं।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो ख़ामोश रहा उसने निजात पाई। लिहाज़ा ख़ामोशी में बहुत फ़ायदे हैं और इसमें बहुत फ़ुतूहात हैं और बोलने में बकसरत आफ़त।

मशायख़े तरीक़त की एक जमाअत बोलने पर सुकूत को अफ़ज़ल समझती है और एक जमाअत ख़ामोशी पर बोलने को तरजीह देती है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अलफ़ाज़ व

इबारात सरासर दुआवी हैं जिस वक्त माफ़ी का इसबात हो जाता है तो अल्फ़ाज़ व इबारात वाले दुआवी जाते रहते हैं। एक वक्त ऐसा भी आता है कि इंसान इख़्तेयारी हालत में सुकूते कलाम में माज़ूर हो जाता है। यानी बहालते बका खौफ़ की वजह से बावजूद बोलने पर क़ादिर होने के बोल नहीं सकता। इसका न बोलना, मारिफ़ते हक़ीक़त में कोई हर्ज पैदा नहीं करता। और किसी वक्त बंदा बे मअ़ने महज़ ख़ाली दावों में माजूर नहीं होता इसका हुक्म मुनाफ़िक़ों की मानिंद हो जाता है। लिहाज़ा बे मअ़ने दावा निफ़ाक़ है और बे दावा मअ़ने इख़्लास पर मबनी है क्योंकि जिस बंदे के लिये रास्ता खुल जाता है वह गुफ़्तार से बे नियाज़ हो जाता है। इसकी वजह यह है कि जिस मअ़ने की वह ख़बर देगा उसके अल्फ़ाज़ व इबारत सब ग़ैर होंगे और हक़ तआला बे नियाज़ है कि अहवाल की तावीर व तफ़सीर किसी ग़ैर के ज़रिये कराये। इसका ग़ैर इस लायक़ नहीं कि इसकी तरफ़ इल्तेफ़ात किया जाये। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी ताईद में फ़रमाते हैं कि जिसने हक़ तआला को दिल से पहचान लिया उसकी जुबान बयान से आजिज़ हो गयी क्योंकि इज़हारे बयान में हिजाब दिखाई देता है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा का वाक़िया है कि एक मर्तबा उन्होंने हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि की मजलिस में खड़े होकर नारा मारा या मुरादी और हक़ तआला की तरफ़ इशारा किया हज़रत जुनैद ने फ़रमाया ऐ अबू बकर अगर तुम्हारी मुराद हक़ है तो यह इशारा क्यों है क्योंकि वह इससे बे नियाज़ है और अगर तुम्हारी मुराद हक़ नहीं है तो तुमने ख़िलाफ़ क्यों किया। हक़ तआला तुम्हारे क़ौल के बमोजिब अलीम है हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा ने अपने कलाम पर तौबा व इस्तिग़फ़ार किया।

वह जमाअत जो बोलने को ख़ामोशी पर तरजीह देती है उनका कहना है कि हक़ तआला ने हमें अपने अहवाल के बयान का हुक्म दिया है क्योंकि दावा मअ़ने के साथ क़ायम है मसलन अगर कोई हक़ तआला की मारिफ़त अक़्ल व ख़िरद से हज़ार बरस तक रखे और कोई अमर माने भी न हो तो जब तक अपनी मारिफ़त का इक़रार जुबान से न करे उसका हुक्म काफ़िरों जैसा होगा। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को हम्द व सना और शुक्रे खुदा बजा लाने का हुक्म देता है उसने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया। अपने रब की नेमतों को अच्छी तरह बयान करो। हम्द व सना और बयान

नेमत बंदे का कलाम होता है लिहाज़ा हमारा ज़िक्र करना हुक्मे ख़ुदा की ताज़ीम और बजा आवरी के लिये है। अल्लाह तआला का हुक्म है कि मुझसे दुआ मांगो में कबूल करूंगा। नीज़ फ़रमाया में दुआ मांगने वाले की दुआ कबूल करता हूं जब वह मुझसे दुआ मांगे। इनके सिवा बे शुमार आयात इसकी दलील हैं।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि जिसको अपने हाल के बयान की कुदरत न हो वह बे हाल है इसलिये कि गोयाई का वक़्त भी तो एक वक़्ते विसाल होता है जैसा कि शायर कहता है कि-

तर्जमा : मेरी ज़ुबान से ज़्यादा वह फ़सीह मेरे हाल की ज़ुबान है और मेरे सवाल की तर्जमानी मेरी ख़ामोशी को रही है।

एक मर्तबा अबू बकर शिबली अलैहिर्रहमा बग़दाद से करख़ तशरीफ़ ले गये उन्होंने एक मुद्दई को यह कहते सुना कि ख़ामोशी बोलने से बेहतर है। इस पर हज़रत शिबली ने फ़रमाया तेरा ख़ामोश रहना तेरे बोलने से बेहतर है और मेरा बोलना मेरे ख़ामोश रहने से बेहतर है क्योंकि तेरा बोलना लगू है और तेरी ख़ामोशी ठठ्ठा और मेरा बोलना ख़ामोशी से इसलिये बेहतर है कि मेरी ख़ामोशी में हिल्म व बुर्दबारी और कलाम में इल्म व दानाई है।

कौले फ़ैसल : हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि कलाम दो तरह का होता है इसी तरह ख़ामोशी भी दो तरह की होती है। एक कलामे हक़ और एक कलामे बातिल। इसी तरह एक सुकूत मक़सूद व मुशाहिदा के हासिल होने के बाद और एक ग़फ़लत व हिजाब की हालत में हर शख़्स को गुफ़्तार व सकूत की हालत में अपने गरेबान में मुंह डालकर देखना चाहिये कि अगर इसका बोलना हक़ है तो इसका बोलना इसकी ख़ामोशी से बेहतर है और अगर इसका बोलना बातिल है तो उसकी ख़ामोशी उसके बोलने से बेहतर है और अगर हिजाब व गफ़लत की बिना पर हो तो भी बोलना ख़ामोशी से बेहतर है एक जहान इसके मअ़ने में हैरान व सरगरदां है।

कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपनी हवस में मअ़ने से ख़ाली अल्फ़ाज़ व इबारत को अपना रखा है और कहते फिरते हैं कि बोलना ख़ामोशी से अफ़्ज़ल है।

और कुछ लोग ऐसे हैं जो गहराई के मुक़ाबले में मीनारा तक को नहीं जानते और अपनी जहालत की वजह से ख़ामोश रहते हैं इनका कहना है कि ख़ामोशी बोलने से बेहतर है। यह दोनों गरोह एक दूसरे की मानिंद हैं किसे गोया कहें और किसे ख़ामोश? जो बोलता है या तो वह सहीह होगा या ग़लत और जो

बोला जाता है उसे ख़ता व ख़लल से बचाया जाता है। चुनांचे इबलीस ने कहा मैं आदम से बेहतर हूं (मआज़ल्लाह) और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से यह कहलवाया गया कि ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया।

लिहाज़ा मशायख़े तरीक़त अपनी गोयाई में इजाज़त याफ़्ता और बेक़रार हैं और अपनी ख़ामोशी में शर्म ज़दा और मजबूर हैं। जिसकी ख़ामोशी शर्म से हो और उसका कलाम दावा की ज़िन्दगी है। इनका कलाम दीदार से है और जो कलाम बग़ैर दीदार के हो वह मोजिब ज़िल्लत व रुसवाई है। ऐसे वक़्त न बोलना, बोलने से अफ़ज़ल है ताकि अपने आपे में रहें और जब ग़ायब हो जाते हैं तो लोग उनके क़ौल को जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि-

जिसके लिये ख़ामोशी सोना हो तो उसका कलाम दूसरों के लिये मज़हब होता है।

लिहाज़ा तालिबे हक़ पर लाज़िम है कि अगर उसकी फ़िक्र व ग़ौर बंदगी में हो तो ख़ामोश रहे ताकि उसकी ज़ुबान जब बोले तो रबूबियत के साथ बोले। और उसी की बात कहे और उसके अल्फ़ाज़ व इबारात मुरीदों के दिलों को मुतास्सिर कर सकें।

बात करने का अदब यह है कि बे हुक्म न बोले और इतना ही जवाब दे जो ज़रूरी हो ख़ामोशी का अदब यह है कि वह जाहिल न हो और न जहालत पर राज़ी हो गफ़लत में न रहे।

मुरीद पर लाज़िम है कि मशायख़ के कलाम में दख़ल न दे और न इसमें तसर्रुफ़ करे और सनसनी ख़ेज़ बातें न बयान करे। इस ज़ुबान को जिससे कलिमए शहादत पढ़ा और तौहीद का इक़रार किया है इसको ग़ीबत और झूठ से पाक व साफ़ रखे। मुसलमानों को रंज न पहुंचाये और दरवेशों को सिर्फ़ उनके नाम से पुकारे और जब तक कोई उनसे मालूम न करे ख़ुद कुछ न बोले। बात करने में पहल न करे और उस दरवेश पर ख़ामोशी लाज़िम है जो बातिल पर ख़ामोश न रह सके। गुफ़्तगू की शर्त यह है कि हक़ के सिवा दूसरी बात न करे। इसकी असल व फ़रअ और लतायफ़ बहुत हैं बख़ौफ़े तवालत इसी पर इक्तिफ़ा करता हूं।

सवाल के आदाब : अल्लाह तआला का इरशाद है लोगों से गिड़गिड़ाकर सवाल न करो। और जब कोई सवाल करे तो मना न करो।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला ने फ़रमाया सायल को न झिड़को। जहां तक मुमकिन हो ख़ुदा के सिवा किसी से सवाल न करो। इसलिये कि ग़ैरे ख़ुदा को सवाल का महल नहीं बनाया गया है। सवाल से ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़ इल्तेफ़ात पाया जाता है। जब बंदा ख़ुदा से रूगरदां होता है तो इसका क़वी अंदेशा होता है कि उसे महले एराज़ में न छोड़ दिया जाये।

किसी दुनियादार ने हज़रत राबेआ रहमतुल्लाह अलैहा से कहा ऐ राबिहा मुझसे मांगो मैं तुम्हें दूंगा। उन्होंने जवाब दिया ऐ शख़्स जबकि मैं दुनिया के पैदा करने वाले से हया करती हूं कि दुनिया इससे मांगूं, तो क्या अपने जैसे से मांगने में मुझे शर्म न आयेगी।

मंकूल है कि अबू मुस्लिम के ज़माने में किसी साहबे दावत ने एक दरवेश को बेगुनाह चोरी के इल्ज़ाम में पकड़वा दिया। चार रातें उसे क़ैदख़ाने में रहना पड़ा। एक रात अबू मुस्लिम ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा। आपने फ़रमाया ऐ अबू मुस्लिम! मुझे ख़ुदा ने तुम्हारे पास भेजा है कि उसके दोस्त को बे जुर्म क़ैदख़ाने में डलवा दिया है। जाओ उसे आज़ाद करो। अबू मुस्लिम ख़्वाब से बेदार हुए ओर नंगे सर और नंगे पांव क़ैदख़ाने में दौड़ते हुए गये हुक्म दिया कि क़ैदख़ाने का दरवाज़ा खोल दिया जाये और उस दरवेश को बाहर ले आये। उससे माफ़ी मांगी और कहा कोई हाजत हो तो बयान करो। दरवेश ने कहा ऐ अमीर! जिस ख़ुदा की शान यह हो कि वह आधी रात के वक़्त अबू मुस्लिम को बिस्तर से जगाकर भेजे और बला से निजात दिलाये क्या उसके बंदे के लिये ज़ेबा है कि वह दूसरों से सवाल करे? अबू मुस्लिम रोने लगे और दरवेश के सामने से हट गये।

एक जमाअत के नज़दीक दरवेश का सवाल करना जायज़ है क्योंकि हक़ तआला का इरशाद है कि लोगों से गिड़गिड़ाकर सवाल न करो इसमें इशारा है कि सवाल तो करो मगर गिड़गिड़ाव नहीं हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद सहाबा की ज़रूरियात पूरी करने के लिये साहबे हिम्मत को तरजीह दी है और हमें भी इरशाद फ़रमाया है कि-

अपनी ज़रूरतों के लिये ख़ूब सूरत चेहरा वालों से सवाल किया करो।

मशायखे तरीक़त फ़रमाते हैं कि तीन बातों के लिये सवाल जायज़ है एक यह कि दिल की फ़राग़त के लिये सवाल ज़रूरी है चुनांचे वह कहते हैं कि हम दो रोटियों की क़ीमत भी नहीं रखते और दिन रात इसका इंतज़ार करते हैं

और हमारी इज़्तेराबी व बेक़रारी की हालत में अल्लाह तआला से इसके सिवा कोई हाजत नहीं होती इसलिये कि खाने के इंतज़ार की मशगूलियत से बढ़कर और कोई मशगूलियत नहीं होती। इसी बिना पर जब हज़रत बा यज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने मुरीद शफ़ीक़ की बाबत दर्याफ़्त किया जबकि वह मुरीद ज़ियारत के लिये आया था। उसने बताया कि शफ़ीक़ का हाल यह है कि वह लोगों से किनाराकश हो गये हैं और तवक्कुल इख़्तेयार कर लिया है। हज़रत बा यज़ीद ने फ़रमाया जब तुम जाओ तो शफ़ीक़ से कहना कि देखो दो रोटी की ख़ातिर ख़ुदा को न आज़माना। जब भूके हो तो किसी हम जिन्स से दो रोटी मांग लेना और तवक्कुल के नाम को एक तरफ़ रख देना ताकि तुम्हारे विलायत का महल अपने मामला की बदबख़्ती से ज़मीन पर न आ जाये और तबाह व बर्बाद न हो जाये।

सवाल की दूसरी ग़र्ज़ यह है कि नफ़्स की रियाज़त के लिये सवाल किया जाये ताकि नफ़्स ज़लील व ख़्वार हो सके और रंजीदा होकर अपनी क़द्र व क़ीमत पहचाने कि दूसरों की नज़र में उसकी क्या मंज़िलत है और दोबारा तकब्बुर करके मुसीबत में न डाले।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि के पास जब हज़रत अबू बकर शिबली रहमतुल्लाह अलैहि आए तो हज़रत जुनैद ने फ़रमाया ऐ अबू बकर! तुम्हारे दिमाग़ में अभी तक यह घमंड है कि मैं खलीफ़ा के ख़ासुल ख़ास का फ़रज़ंद हूं और सामरा का अमीर हूं यह तुम्हारे काम न आयेगा जब तक कि तुम बाज़ार में जाकर हर एक के सामने दस्ते सवाल न फैलाओगे उस वक़्त तक अपनी क़द्र व क़ीमत न जान सकोगे। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। रोज़ाना बाज़ार में उनकी क़द्र व क़ीमत घटती गयी यहां तक कि छः साल में इस हाल को पहुंच गये कि इन्हें बाज़ार में किसी ने कुछ न दिया। उस वक़्त हज़रत जुनैद की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा हाल बयान किया। आपने फ़रमाया ऐ अबू बकर अब तुम अपनी क़द्र व क़ीमत को पहचानो कि लोगों की नज़र में तुम्हारी कोई क़ीमत नहीं है। लिहाज़ा तुम इन लोगों को दिल में जगह न दो और उनकी कुछ मंज़िलत न समझो। यह मअ़ने रियाज़त के लिये थे न कि कस्ब के लिये। कस्ब के तरीक़ पर सवाल किसी तरह हलाल नहीं है।

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मेरा एक रफ़ीक़ था, अल्लाह तआला ने उसे बुला लिया और दुनियावी नेमत से उखरवी नेमतों

में पहुंचा दिया। मैंने उसे ख़्वाब में देखा तो उससे पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या किया? उसने कहा मुझे बख़्श दिया है। मैंने पूछा किस बिना पर? उसने कहा अल्लाह तआला ने मुझे उठाकर फ़रमाया ऐ मेरे बंदे! तूने बख़ीलों और कमीनों की बड़ी अज़ीयतें बर्दाश्त की हैं तूने उनके आगे हाथ फैलाया फिर सब्र से काम लिया। इसलिये तुझे बख़्शता हूं।

सवाल की तीसरी ग़र्ज़ यह है कि अल्लाह तआला की हुरमत में लोगों से सवाल करे और तमाम दुनियावी अमवाल को खुदा ही का जाने और सारी मख़लूक़ को इसका वकील समझे और जो अपने नसीब की हो उसे खुदा के वकीलों से हासिल करे। सवाल तो लोगों से हो लेकिन नज़र हक़ तआला की तरफ़। जब बंदा खुद को ऐसा बना लेता है तो हुरमते इलाही में वकील से जो मांगता है वह ताअत में हक़ तआला से ज़्यादा क़रीब हो जाता है। लिहाज़ा ऐसों का ग़ैर से सवाल करना हक़ तआला से अपने हुज़ूर तवज्जुह की निशानी है न यह ग़ीबतहै और न हक़ तआला से रूगरदानी।

हज़रत ईसा बिन मआज़ रहमतुल्लाह अलैहि की एक लड़की थी। एक दिन लड़की ने अपनी मां से कहा मुझे फ़लां चीज़ खिलाईये। उसकी वालिदा ने कहा खुदा से मांगो। लड़की ने कहा मुझे शर्म आती है कि मैं अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश के लिये खुदा से सवाल करूं। तुम जो कुछ दोगी वह भी उसकी जानिब से होगा और वह मेरी तक़दीर का हिस्सा होगा।

सवाल के आदाब यह हैं कि अगर सवाल पूरा हो जाये तो उससे ज़्यादा की ख़्वाहिश न करनी चाहिये। लोगों को हक़ तआला के दर्मियान न देखे हक़ तआला ही की तरफ़ नज़र रखे। औरतों और बाज़ार वालों से सवाल न करे। अपना राज़ उसी से कहे जिस पर एतेमाद हो कि उसका माल हलाल है किसी पर ज़ाहिर न करे। जहां तक हो सके अपने नसीब पर सवाल न करे वह तो उसे पहुंचना ही है। सवाल करते वक़्त घर की आराईश को मलहूज़ न रखे और न उसे अपनी मिलकियत जाने बल्कि ज़रूरते वक़्त का तक़ाज़ा समझे। कल की फ़िक्र आज न करे ताकि दायमी हलाकत में न पड़े। हक़ तआला को अपनी गदाई का ज़रिया न बनाये और न ऐसी पारसाई जताए कि पारसाई की वजह से लोग ज़्यादा दें।

एक साहबे मर्तबा को मैंने देखा कि वह बियाबान से फ़ाक़ा ज़दा और सफ़र की सऊबतें उठाए हुए बाज़ारे कूफ़ा में पहुंचा। उसके हाथ में एक चिड़िया थी

और आवाज़ लगाता था कि मुझे इस चिड़िया की ख़ातिर कुछ दे दो। लोगों ने कहा ऐ शख़्स यह क्या कहते हो? उसने कहा यह मुहाल है कि मैं यह कहूं कि मुझे ख़ुदा की राह पर कुछ दे दो। दुनिया के लिये अदना चीज़ ही वसीला लाया जा सकता है। चूंकि दुनिया क़लील है। तवालत की वजह से इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं।

निकाह और मुजर्रद रहने के आदाब : अल्लाह तआला का इरशाद है- यानी बीवियां तुम्हारे लिबास हैं और तुम बीवियों के लिबास हो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

मुसलमानो! निकाह करो और औलाद की कसरत करो क्योंकि रोज़े क़ियामत तुम्हारे ज़रिये अपनी उम्मत की कसरत पर फ़ख़्र करूंगा अगरचे हमल का सुकूत ही क्यों न हो।

नीज़ फ़रमाया-

सबसे बड़ी बरकत वाली बीवी वह है जिसका बोझ कम हो और वह हसीन चेहरे वाली और इसमत की हिफ़ाज़त करनी वाली हो।

अहादीस सहीहा में वारिद है कि तमाम मर्द व औरत पर हर हाल में निकाह है। हर मर्द व औरत पर ख़ास है कि हराम से बचे और सुन्नत यह है कि जहां हो सके अयाल के हुक़ूक़ को पूरा करे।

मशायख़ की एक जमाअत फ़रमाती है कि शहवत को दूर करने और दिल की फ़राग़त हासिल करने के लिये निकाह करना चाहिये और एक जमाअत यह कहती है कि नसल को क़ायम रखने के लिये निकाह करना ज़रूरी है ताकि औलाद हो। अगर औलाद बाप के सामने फ़ौत हो जाये तो वह क़ियामत के दिन उसकी शिफ़ाअत करेगी और अगर औलाद के सामने बाप मर जाये तो औलाद उसकी मग़्फ़िरत के लिये दुआ करेगी।

हदीस में वारिद हुआ है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मे कुलसूम दुख़्तर सैयदा फ़ातिमा बिन्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्यामे निकाह उनके वालिद माजिद हज़रत अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहहू को दिया और उनसे दरख़्वास्त की हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया वह तो बहुत कम उम्र हैं और आप बहुत बुज़ुर्ग हैं, मेरी नीयत तो यह थी कि उसे अपने चचाज़ाद भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा को दूं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहलवाया कि ऐ अबुल हसन!

बड़ी उम्र की औरतें तो जहान में बहुत हैं मेरी मुराद उम्मे कुलसूम से दफ़अ शहवत नहीं है बल्कि इसबाते नसल है क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मैंने सुना है कि मरने के बाद हसब व नसब मुनक़तअ हो जाता है मगर मेरा हसब व नस्ब बाक़ी रहता है। एक रिवायत में है कि हर हसब व नस्ब मुनक़तअ हो जाता है मगर मेरा हसब व नस्ब बाक़ी रहता है। इस वक़्त सबब तो मुझे हासिल है मगर मैं चाहता हूं कि नस्ब भी हासिल हो जाये ताकि दोनों में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुताबिअ़त में मज़बूत हो जाऊं। उसके बाद हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी साहबज़ादी सैयदा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा को मुताबिअ़त को हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में दे दिया और उनसे हज़रत ज़ैद इब्ने उमर तवल्लुद हुए।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि-

चार वजहों की बिना पर औरतों से निकाह किया जाता है माल, हसब, हुस्न और दीन के लिये। लेकिन तुम पर लाज़िम है कि दीन वाली औरतों को पसंद करो क्योंकि मुसलमान होने के बाद सबसे बेहतर फ़ायदा जो हासिल हो सकता है वह मोमिना और मुवाफ़िक़त करने वाली बीवी है जिससे तुम्हारा दिल खुश हो जब तुम उसे देखो।

मर्दे मोमिन ऐसी ही बीवी से उन्स व राहत पाता है उसकी सोहबत से दीन को तक़वियत हासिल होती है और दोनों एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं। सबसे बड़ी वहशत तंहाई की है और सबसे बड़ी राहत सोहबत। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तंहाई का साथी शैतान होता है। हक़ीक़त यह है कि जब मर्द या औरत अकेले रहते हों तो उनके साथ शैतान होता है जो उनके दिल में शहवत को उभारता है और अमन व हुरमत के एतेबार से कोई सोहबत, निकाह करने से बेहतर नहीं है। अगर यक जेहती और मुवाफ़िक़त है तो उसमें ज़रा भी सख़्ती व मशग़ूलियत नहीं रहती और जब औरत में यक जेहती न हो और ग़ैर जिन्स से हो तो दरवेश को चाहिये कि पहले अपने दिल में ग़ौर करे औरत तंहाई की आफ़तों और निकाह के दर्मियान सोचे कि इन दोनों में से कौन सी आफ़त को आसानी से दूर कर सकता है फिर उसके मुताबिक़ अमल करे। क्योंकि मुजर्रद तंहा रहने में दो आफ़तें हैं एक तो सुन्नत का तर्क है दूसरे शहवत की परवरिश और हराम में मुब्तला होने का ख़तरा

भी है। इसी तरह ग़ैर जिन्स से निकाह करने में दो आफ़तें हैं एक ग़ैर ख़ुदा के साथ दिल की मशग़ूलियत दूसरे नफ़्सानी लज़्ज़त के लिये तन को मशग़ूल करना। इस मसले की असल, उज़लत व सोहबत यानी ख़लवत व जलवत के मसले की तरफ़ राजेअ है। जो शख़्स ख़ल्क़ की सोहबत चाहता है उसके लिये निकाह करना ज़रूरी है और जो ख़लवत व गोशा नशीनी का ख़्वाहां है उसे मुजर्रद रहना मुनासिब है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है देखो मुजर्रद लोग तुम पर सबक़त ले गये।

हज़रत हुसैन बिन अबी हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि- हल्के लोग निजात पा गये और बोझ वाले हलाक हो गये।

हज़रत इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं एक बुज़ुर्ग से मिलने एक बस्ती में गया जब मैं उनके घर पहुंचा तो उनका घर निहायत पाकीज़ा देखा जिस तरह औलिया का इबादत ख़ाना होता है और उस मकान में दो मेहरावें थीं, एक महराब के गोशा में वह बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे और दूसरी मेहराब में एक बूढ़ी औरत पाकीज़ा और रौशन चेहरे वाली बैठी हुई थी और यह दोनों कसरते इबादत में बूढ़े हो चुके थे। मेरे आने पर उन्होंने बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया तीन दिन उनके यहां रहा जब मैंने वापसी का इरादा किया तो मैंने उस बुज़ुर्ग से पूछा यह पाकदामन औरत आपकी कौन हैं? उन्होंने फ़रमाया यह एक रिश्ते से तो मेरी चचाज़ाद बहन हैं और दूसरे रिश्ते से यह मेरी बीवी। मैंने कहा इन तीन दिनों में मैंने तो आप दोनों में ग़ैरियत और बेगानगी देखी है? उन्होंने कहा ठीक है। पैंसठ साल गुज़र गये हैं इसी तरह रहते हुए मैंने अर्ज़ किया इसकी वजह बयान फ़रमाइये। उन्होंने जवाब दिया बात यह है कि हम बचपन में एक दूसरे पर आशिक़ हो गये थे। इसके वालिद ने इसे मुझे देना मंजूर न किया क्योंकि हमारी बाहमी मुहब्बत उसे मालूम हो गयी थी। एक अर्सा तक मुहब्बत की आग में हम दोनों जलते रहे। यहां तक कि उसका वालिद वफ़ात पा गया। मेरे वालिद उसके चचा थे उन्होंने मेरे साथ इसका निकाह कर दिया जब पहली रात हम दोनों यकजा हुए तो उसने मुझसे कहा जानते हो कि अल्लाह तआला ने हमें कैसी नेमत से सरफ़राज़ किया है कि हम दोनों एक हो गये उसने हमारे दिलों को नाखुश गवार इब्तेला व आफ़त से निजात दी। मैंने कहा ठीक कहती हो, उसने कहा फिर हमें आज की रात अपने आपको नफ़्सानी ख़्वाहिश से बाज़ रखना चाहिये चह जाए कि हम अपनी मुराद को पायमाल करें और

इस नेमत के शुक्रिया में हम दोनों को ख़ुदा की इबादत करनी चाहिये। मैंने कहा तुम ठीक कहती हो। दूसरी रात भी यही कहा और तीसरी रात मैंने कहा गुज़श्ता दो रातें तो मैंने तुम्हारे शुक्र में गुज़ारी हैं आज रात तुम मेरे शुक्र में इबादत करो। इस तरह हम पैंसठ साल गुज़ार चुके हैं और हमने एक दूसरे को छूना तो दर किनार कभी निगाह उठाकर भी नहीं देखा। सारी उम्र नेमते इलाही के शुकराने में गुज़ार दी।

मुआशरत के आदाब : जब दरवेश निकाह के ज़रिये सोहबत का क़सद करे तो लाज़िम है कि बीवी को हलाल रिज़्क़ मुहय्या करो और उसके महर को हलाल कमाई से अदा करे ताकि हक़ तआला के हुकूक़ और बीवी के हुकूक़ जो ख़ुदा ने फ़र्ज़ किये हैं उसके ज़िम्मे बाक़ी न रहें। लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ातिर उससे मशगूल न हो। जब फ़रायज़ अदा कर चुके तब उससे हम बिस्तर हो और अपनी मुराद उससे पूरी करे और हक़ तआला से दुआ मांगे कि ऐ ख़ुदा जहान की आबादी के लिये तूने आदम की सरिश्त में शहवत पैदा की और तुमने चाहा कि यह बाहम सोहबत करें। ऐ ख़ुदा मुझे उसकी सोहबत से दो चीज़ें अता फ़रमा। एक तो हिर्से हराम को हलाल से बदल दे दूसरे मुझे फ़रज़ंदे सालेह अता फ़रमा जो राज़ी बरज़ा और वली हो ऐसा फ़रज़ंद न अता फ़रमा जो मेरे दिल को तुझसे ग़ाफ़िल कर दे।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमतुल्लाह अलैहि का वाक़िया है कि उनके यहां एक फ़रज़ंद पैदा हुआ वह बचपन में अपनी मां से खाने के लिये जो चीज़ मांगता उसकी मां कहती ख़ुदा से मांग। वह बच्चा मेहराब में चला जाता सज्दा करता उसकी मां छिपाकर उसकी ख़्वाहिश पूरी कर देती बच्चे को मालूम न होता कि यह मां ने दिया है, यहां तक कि यह उसकी आदत बन गयी एक दिन बच्चा मदरसे से आया तो उसकी मां घर में मौजूद न थी। आदत के मुताबिक़ सर सज्दा में रख दिया। अल्लाह तआला ने जो उसकी ख़्वाहिश थी पूरी कर दी, मां जब आयी तो उसने पूछा ऐ बेटे यह चीज़ कहां से आयी? उसने कहा वहीं से जहां से रोज़ाना आती है।

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम, हज़रत मरयम के पास अगर गर्मी में तशरीफ़ लाते तो सर्दी के मेवे और अगर सर्दी में तशरीफ़ लाते तो गर्मी के मेवे उनके पास मौजूद पाते और हैरत से दर्याफ़्त करते कि यह कहां से आए हैं वह कहतीं यह मेरे रब ने भेजे हैं।

दरवेश के लिये ज़रूरी है कि सुन्नत की इत्तेबा के वक़्त दिल को दुनिया और शग़्ले हराम से दूर रखे क्योंकि दरवेश की हलाकत उसके दिल की ख़राबी में है जिस तरह कि तवंगर की ख़राबी घर और ख़ानदान की ख़राबी में मुज़मर है मालदार की ख़राबी का तो बदल मुमकिन है लेकिन दरवेश की ख़राबी का कोई बदल मुमकिन नहीं।

इस ज़माने में ऐसी बीवी मिलना नामुमकिन है जो हाजत से ज़्यादा और फ़ुज़ूल व महाल चीज़ों की तलब के बग़ैर अच्छी रफ़ीक़ए हयात साबित हो। इसी बिना पर मशायख़ की एक जमाअत मुजर्रद रहने को पसंद करती है इनका अमल इस हदीस पर है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आख़िर ज़माने में वह लोग सबसे बेहतर हैं जो ख़फ़ीफ़ुल हाज़ हों। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ख़फ़ीफ़ुल हाज़ क्या है? फ़रमाया वह लोग हैं जिन की न बीवी हो न बच्चे? नीज़ फ़रमाया देखो अकेले लोग तुम पर सबक़त ले गये।

मशायख़े तरीक़त का इस पर इजमअ है कि जिनके दिल आफ़त से ख़ाली हों और उनकी तबीयत शहवत व मअसी के इर्तेकाब के इरादे से पाक हो। उनका मुजर्रद रहना अफ़ज़ल व बेहतर है। और आम लोगों ने इर्तेकाब मआसी के लिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस हदीस को (मआज़ल्लाह) सनद बना लिया है कि तुम्हारी दुनिया की तीन चीज़ें मुझे पसंद व मरग़ूब हैं एक तो ख़ुश्बू, दूसरी बीवियां, तीसरी नमाज़ कि इसमें मेरी आंखों की ठंडक रखी गयी है।

मशायख़े तरीक़त फ़रमाते हैं कि जिसे औरत महबूब हो उसे निकाह करना अफ़ज़ल है लेकिन हम कहते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मेरे दो कसब हैं एक फ़क्र दूसरा जिहाद, लिहाज़ा इस हरफ़त व कसब से क्यों हाथ उठाया जाय? अगर औरत महबूब है तो यह उसकी हरफ़त है। अपनी इस हिस्र को कि औरत तुम्हें ज़्यादा महबूब है उसकी निसबत हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ क्यों मंसूब करते हो? यह मुहाल व बातिल है कि जो शख़्स पचास साल तक अपनी हिस्र का पैरो रहे और वह यह गुमान रखे कि यह सुन्नत की पैरवी है वह सख़्त ग़लती में मुब्तला है। ग़र्ज़ कि सबसे पहला फ़ित्ना जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में मुक़द्दर किया गया उसकी असल यही औरत है और दुनिया में सबसे पहले

जो फ़ित्ना ज़ाहिर हुआ उसका सबब भी यही औरत है। यानी हाबील व क़ाबील का फ़ित्ना और आज तक बल्कि जब तक भी अल्लाह तआला चाहे किसी को अज़ाब दे उनका सबब भी औरत ही है। गोया तमाम दीनी और दुनियावी फ़ित्नों की जड़ यही औरतें हैं। जैसा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मर्दों के लिये सबसे ज़्यादा नुक़्सान पहुंचाने वाला फ़ित्ना औरत से बढ़कर मैंने नहीं देखा। औरतों का फ़ितना जब ज़ाहिर में इस क़द्र है तो बातिन में कितना होगा।

हुज़ूर सैयुदना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि ग्यारह साल निकाह की आफ़त से खुदा ने महफूज़ रखने के बाद मेरी तक़दीर ने मुझे इस फ़ित्ना में मुब्तला कर दिया और बे देखे मेरा ज़ाहिर व बातिन एक परी सिफ़त का असीर बन गया। एक साल इसमें ऐसा ग़र्क़ रहा कि क़रीब था कि मेरा दीन तबाह हो जाये, यहां तक कि हक़ तआला ने अपने कमाले लुत्फ़ व करम से इसमत को मेरे नातवां दिल के इस्तिक़बाल के लिये भेजा और अपनी रहमत से मुझे निजात अता फ़रमाई।

अल हासिल तरीक़त की बुनियाद, मुजर्रद रहने पर है निकाह के बाद हाल दिगर गों हो जाता है। शहवत के लश्कर से बढ़कर कोई लश्कर ग़ारत गर नहीं है। मगर शहवत की आग को कोशिश करके बुझाना चाहिये इसलिये कि जो आफ़त भी इंसान में उभरती है उसके इज़ाला का ज़रिया भी इंसान में मौजूद होना चाहिये। कोई और इस आफ़त को दूर नहीं कर सकता।

शहवत का दूर होना दो चीज़ों से होता है एक यह कि तकलीफ़ के तहत उसे दूर किया जाये। दूसरा यह कि रियाज़त व मुजाहिदे के कसब से। लेकिन जो तहते तकल्लुफ़ है वह इंसान की ताक़त है कि वह भूका रहे और जो कसब व मुजाहिदे से बाहर है वह या तो बेचैन करने वाला ख़ौफ़ है या सच्ची मुहब्बत, जो आहिस्ता आहिस्ता पैदा होकर मुहिब के जिस्म के तमाम अज्ज़ा में सरायत कर जाती और ग़ालिब हो जाती है और तमाम हवास को इसके वस्फ़ से निकाल देती है और बंदे को मुकम्मल जुदा करके इससे बेहूदगी को फ़ना कर देती है।

हज़रत अहमद हम्माद सरख़सी जो मावरा में मेरे रफ़ीक़ थे और बरगुज़ीदा बंदे थे उनसे लोगों ने पूछा क्या आपको निकाह की ज़रूरत पेश आयी? फ़रमाया नहीं पूछा क्यों? फ़रमाया इसलिये कि मैं अपने अहवाल में या तो अपने से ग़ायब होता हूं या अपने से हाजिर जब ग़ायब होता हूं तो मुझे दोनों जहान की

कोई चीज़ याद नहीं रहती और जब हाज़िर होता हूं तो अपने नफ़्स पर ऐसा क़ाबू रखता हूं कि जब एक रोटी मिले तो वह समझता है कि हज़ार हूरें मिल गयीं। दिल की मशग़ूलियत बहुत बड़ा काम है जिस तरह चाहे उसे रखो।

मशायख़े तरीक़त का एक गरोह यह कहता है कि हम मुजर्रद रहने और निकाह करने में भी अपने इख़्तेयार को दख़ील नहीं होने देते। यहां तक कि पर्दए ग़ैब से तक़दीर का जो हुक्म भी ज़ाहिर हो सरे तसलीम ख़म कर देते हैं। अगर हमारी तक़दीर मुजर्रद रहने में है तो हम पारसाई की कोशिश करते हैं और अगर निकाह करने में है तो हम सुन्नत की पैरवी करते हैं। क्योंकि अगर हक़ तआला की हिफ़ाज़त शामिले हाल है तो बंदा का मुजर्रद रहना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मानिंद होगा कि उन्होंने जुलेख़ा के वरग़लाने पर बावजूद ताक़त व कुव्वत रखने के उससे मुंह फेर लिया। उस वक़्त भी अपने नफ़्स के उयूब देखने और नफ़्सानी ख़्वाहिश पर ग़ल्बा पाने में मसरूफ़ हो गये और जब निकाह करना तक़दीर में होता है तो वह हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के निकाह करने की मानिंद हो जाता है। चूंकि हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम को हक़ तआला पर कामिल भरोसा और एतेमाद था बीवी की मशग़ूलियत भी इन्हें मशग़ूल न कर सकी यहां तक कि हज़रत सारा ने जब रश्क का इज़हार किया और ग़ैरत पैदा हुई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत हाजरा को बे आब व गयाह बियाबान में छोड़कर ख़ुदा के हवाले कर दिया और ख़ुद उनसे रुख़ फेर लिया ताकि हक़ तआला अपनी सिफ़ात में जिस तरह चाहे उनकी परवरिश फ़रमाये। बंदे की हलाकत न निकाह करने में है और न मुजर्रद रहने में क्योंकि उसकी हलाकत तो अपने इख़्तेयार को क़ायम व बर क़रार रखने और नफ़्स की पैरवी करने में है।

आल व औलाद के आदाब : अहल व अयाल की मौजूदगी में शर्ते अदब यह है कि इसके किसी दर्द व दुख से ग़ाफ़िल न रहे और न अपना हाल ज़ाए और औक़ात परा गंदा होने दे। अपने अहल व अयाल के साथ शफ़क़त का बर्ताव करे और उन्हें हलाल रिज़्क़ मुहय्या करे और नफ़्क़ा की अदायगी में ज़ालिमों और जाबिर बादशाहों की रियायत न करे यहां तक कि अगर फ़रज़ंद से भी ऐसा इर्तेकाब हो तो उसका भी लिहाज़ करे।

हजरत अहमद बिन हरब नीशापुरी रहमतुल्लाह अलैहि एक दिन नीशापुर के उमरा व रुऊसा के साथ जो इन्हें सलाम करने आए थे तशरीफ़ फ़रमा थे

उनका एक बेटा शराब पिये हुए गाने वालियों के साथ झूमता हुआ गुज़र गया। जिसने भी उसे देखा उसका हाल मुतग़य्यर हो गया। हज़रत अहमद ने जब लोगों को देखा तो फ़रमाया तुम्हारा हाल क्यों मुतग़य्यर है उन्होंने कहा यह जवान इस बेबाकी के साथ आपके सामने से गुज़रा है जिससे परेशान हो गये उसने आपका भी लिहाज़ नहीं किया। आपने फ़रमाया वह मुतग़य्यर है, इसलिये कि एक रात हमने अपने और अपनी बीवी के लिये हमसाया से कोई चीज़ ली थी और हम दोनों ने उसे खाया था उसी रात हमबिस्तरी में उस जवान का इस्तक़रार हुआ था। फिर हम पर नींद का ग़ल्बा हुआ और सो गये उस रात हमारे औराद व वज़ाइफ़ भी न हो सके। हमने सुबह उस खाने की बाबत तफ़्तीश की तो हमसाया ने बताया जो चीज़ भेजी थी वह एक शादी का खाना था।

मुजर्रद रहने के आदाब : मुजर्रद रहने यानी ग़ैर शादी शुदा रहने के आदाब में शर्त यह है कि आंखों को ना शायिस्ता बातों से महफ़ूज़ रखे और न देखने के लायक़ चीज़ों को न देखे और नाजायज़ आवाज़ों को न सुने और ना मुनासिब बातों को न सोचे। शहवत की आग को फ़ाक़ा और भूक से बुझाए दिल को दुनिया और हवादिस की मशग़ूलियत से महफ़ूज़ रखे और नफ़्सानी ख़्वाहिश का नाम इल्म व अलहाम न रखे और शैतान के फ़रेबों की तावील न करे ताकि तरीक़त की राह में मक़बूल हो। सोहबत के मामलात के आदाब यह थे जिनको इख़्तेसार के साथ बयान कर दिया।

दसवां कश्फ़ हिजाब

मशायख़ के कलाम और उनके अल्फ़ाज़ व मआने के हक़ायक़ के बयान में

वाज़ेह रहना चाहिये कि अल्लाह तआला तुम्हें नेक बख़्त बनाये कि हर इल्म व हुनर और हर अहले मामला के लिये अपने असरार के इज़हार व बयान में ख़ास इशारात व कलिमात होते हैं और जिन्हें उनके सिवा कोई दूसरा समझ नहीं सकता। अल्फ़ाज़ व इबारात की इस्तलाह वज़अ करने से उनकी दो चीज़ें मुराद होती हैं एक यह कि बख़ूबी समझा जाए और मुश्किलात को आसान बनाया जाये ताकि फ़हम मुरीद के क़रीब हो जाये। दूसरे यह कि उन असरार को उन लोगों से छुपाया जाये जो साहबे इल्म नहीं हैं इसके दलायल व शवाहिद वाज़ेह हैं मसलन

अहले लुग़त की खास इस्तेलाहें और मख़सूस अल्फ़ाज़ और इबारात हैं।

इसी तरह अहले तरीक़त के भी अपने वज़अ कर्दा अल्फ़ाज़ व इबारात हैं जिससे अपना मतलब व मक़सूद ज़ाहिर करते हैं ताकि वह इल्मे तसव्वुफ़ में इनका इस्तेमाल करें और जिसे चाहें अपने मक़सूद की राह दिखायें और जिससे चाहें उसे छुपायें। लिहाज़ा इन में से बाज़ अल्फ़ाज़ व कलिमात की तश्रीह बयान करता हूं और इनमें जो फ़र्क़ व इम्तेयाज़ है उसकी वज़ाहत करता हूं ताकि समझने मे आसानी हो। इंशाअल्लाह तआला।

हाल, वक़्त और उनका फ़र्क़

अहले तरीक़ते मुसतलेहात में से एक हाल और एक वक़्त है इनके बयान के साथ इनका फ़र्क़ भी ज़ाहिर किया जायेगा। वक़्त अहले तरीक़त के दर्मियान बहुत मश्हूर लफ़्ज़ है और इसमें उनकी तवील बहसें हैं चूंकि मेरा मक़सूद तहक़ीक़ व इसबात है न कि तवालत इसलिये इख़्तिसार पर इक्तेफ़ा करता हूं।

वक़्त उसे कहते हैं कि बंदा उसके सबब अपने माज़ी व मुस्तक़बिल से फ़ारिग़ हो जाये। बंदा के दिल पर हक़ तआला की तरफ़ से जो वारदात तारी होते हैं उनके असरार को दिल में इस तरह महफ़ूज़ रखे जिस तरह कश्फ़ व मुजाहिदा में होता है। उस वक़्त उसके दिल में न तो पहले की कोई याद रहे और न आइंदा की फ़िक्र। इस हालत में किसी मख़लूक़ की इस पर दस्तरस नहीं रहती और न उसकी कोई याद बाक़ी रहती है कि माज़ी में इस पर क्या गुज़रा और मुस्तक़बिल में क्या होगा?

साहेबाने वक़्त कहते हैं कि हमारा इल्म, माज़ी व मुस्तक़बिल का इदराक नहीं कर सकता। हम तो उस वक़्त अल्लाह तआला के साथ खुश होते हैं क्योंकि हम अगर कल की फ़िक्र में मशग़ूल और दिल में आईंदा के अंदेशा को जगह दें तो हम वक़्त से महजूब हो जायेंगे हिजाब बहुत बड़ी परागंदगी और मोजिबे परेशानी है लिहाज़ा जिस चीज़ पर दस्तरस न हो इसका अंदेशा बातिल है।

हज़रत अबू सईद खराज़ी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अपने अज़ीज़ वक़्त को अज़ीज़ तरीन चीज़ों के सिवा किसी से मशग़ूल न करो और बंदे की अज़ीज़ तरीन चीज़ माज़ी व मुस्तक़बिल के दर्मियान वक़्त और हाल है इसी में मशग़ूल रहना चाहिये।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि-

अल्लाह तआला के हुज़ूर में मेरा एक वक़्त ऐसा होता है कि उस वक़्त

...दिल में अट्ठारह हज़ार आलम में से किसी का भी गुज़र मुमकिन नहीं। और न मेरी आंख में किसी की क़द्र व मंज़िलत होती है। इसी बिना पर शबे मेराज जबकि ज़मीन व आसमान के मुल्क की ज़ेब व ज़ीनत आपको पेश की गयी तो आपने किसी की तरफ़ इल्तेफ़ात न फ़रमाया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है- न आंख झपकी और न इधर उधर हुई। इसीलिये हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अज़ीज़ थे और अज़ीज़ को बजुज़ अज़ीज़ के किसी से शगल नहीं होता।

मांवहहिद के दो वक़्त होते हैं। एक गुम होने का दूसरा पाने का। एक विसाल का दूसरा फ़िराक़ का। दोनों हालतों में उसका वक़्त मग़लूब होता है क्योंकि वस्ल में उसका वस्ल हक़ तआला से है और फ़िराक़ में उसका फ़िराक़ भी हक़ तआला से है। बंदे का इख़्तेयार और उसका कसब दोनों वक़्त क़ायम नहीं रहता जिसके साथ बंदे की सिफ़त की जा सके। चूंकि बंदे का इख़्तेयार उसके हालात से जुदा कर दिया जाता है इसलिये वह जो कुछ करता है वक़्त की गुंजाइश के लिये होता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि बियाबान में एक दरवेश को देख जो कीकर के दरख़्त के नीचे सख़्त व दुश्वार जगह में बैठा हुआ था मैंने उससे कहा ऐ भाई! किस चीज़ ने तुम्हें यहां बिठाया है। यह जगह बड़ी सख़्त व दुश्वार है और यहां तुम बैठे हो? उसने कहा मेरा एक वक़्त इस जगह जाया हुआ है। मैं उसके ग़म में इस जगह बैठा हुआ हूं। मैंने पूछा कितने अर्से से यहां बैठे हुए हो उसने कहा बारह साल इसे गुज़र चुके हैं। अब मैं अपने शैख़ से इस्तिदआ करता हूं मेरे काम में मेरी मदद फ़रमायें ताकि अपने वक़्त अपनी मुराद को हासिल कर सकूं। हज़रत जुनैद बग़दादी फ़रमाते हैं कि मैं वहां से चल दिया। हज किया और उसके लिये दुआ की जो ख़ुदा ने क़बूल फ़रमाई और वह अपनी मुराद को पहुंच गया। जब वापस आया तो उस दरवेश को उस जगह बैठा पाया मैंने उससे कहा ऐ जवांमर्द अब जबकि तुमने अपना वक़्त पा लिया तो अब यहां क्यों बेठे हो? उसने कहा ऐ मेरे शैख़! यह वह जगह है जहां मुझे वहशत व परेशानी लाहक़ हुई थी और मेरा सरमाया गुम हुआ था और अब भी यही वह जगह है जहां से मेरा गुमशुदा सरमाया मुझे दोबरा मिला है। मैंने इस जगह को पकड़ लिया है। मुझे इस जगह से मुहब्बत हो गयी है। क्या अब मेरे लिये जायज़ होगा कि मैं इस जगह को छोड़ दूं, और किसी और

जगह चला जाऊं। मेरी तमन्ना है कि मर कर मेरी मिट्टी भी इसी जगह मिल जाये और क़यामत के दिन जब उठाया जाऊं तो मैं इसी जगह से उठूं। यह मेरे उन्स व मुहब्बत की जगह है।

हर इंसान अच्छे दोस्त को क़बूल करता है।

और इज़्ज़त वाली जगह को पसंद करता है।

जो चीज़ आदमी के कसब व इख़्तेयार में नहीं होती कि उसे बतकल्लुफ़ हासिल करे वह बाज़ार में फ़रोख़्त नहीं होती कि उसे जान के एवज़ हासिल कर सके और उसके हासिल करने या दूर करने की कुदरत भी न हो तो उसकी यह दोनों सूरतें रिआयत में बराबर होती हैं और उसके तहक्कुक़ में बंदा का इख़्तेयार बातिल होता है।

मशायख़े तरीक़त बयान करते हैं कि वक़्त काटने वाली तलवार है। चूंकि तलवार का काम काटना है। इसी तरह वक़्त का काम काटना हैं और वक़्त माज़ी व मुस्तक़बिल की जड़ों को काटता है और उसके ग़मों को मिटाता है। लिहाज़ा वक़्त की सोहबत ख़तरनाक है या तो वह हलाक कर देगा या मालिक बना देगा। अगर कोई शख़्स हज़ार बरस तक तलवार की ख़िदमत करे और अपने कांधों पर लटकाए फिरे लेकिन जब उसके काटने का वक़्त आयेगा तो तलवार न अपने ख़िदमतगुज़ार मालिकों को देखेगी न ग़ैर को। दोनों को यकसां काट देगी। क्योंकि इसका काम ही क़हर व ग़ल्बा है। उसके मालिक के उसे पसंद करने की वजह से उसका क़हर व ग़ल्बा जाता न रहेगा।

हाल : हाल, वक़्त पर एक आने वाली चीज़ है जो वक़्त को मुज़य्यन करती है जिस तरह रूह से जिस्म मुज़य्यन होता है ला मुहाला वकत हाल का मोहताज है क्योंकि वक़्त की पाकीज़गी हाल से होती है और उसका क़ियाम भी उसी से होता है। लिहाज़ा जब साहबे वक़्त साहबे हाल होता है तो उससे तग़य्युर जाता रहता है और वह अपने अहवाल में मुस्तहकम हो जाता है। क्योकि बग़ैर हाल के वक़्त का ज़वाल मुमकिन नहीं और जब उससे हाल मिल जाता है तो उसके तमाम अहवाल वक़्त बन जाते हैं उनके लिये वक़्त का नुज़ूल था चूंकि मुतमक्किन के ग़फ़लत जायज़ भी और साहबे गफ़लत पर अब हाल नाज़िल है और वक़्त चूंकि मुतमक्किन है इसलिये साहबे वक़्त पर ग़फ़लत जायज़ थी और अब साहबे हाल पर ग़फ़लत जायज़ नहीं है।

मशायख़े तरीक़त फ़रमाते हैं कि साहबे हाल की ज़ुबान अपने हाल के बयान

...त से साकित रहती है और इसका मामला इसके हाल के तहक्कुक़ व इसबात में गया होता है।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि हाल के बारे में पूछना मुहाल है इसलिये कि हाल का तग़य्युर ना मुमकिन है हाल होता ही वह है जहां हाल फ़ना हो जाये।

उस्ताद अबू अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि दुनिया व आख़िरत में ख़ुशी व ग़म वक़्त का नसीबा है और हाल ऐसा नहीं होता क्योंकि हाल ऐसी कैफ़ियत है जो हक़ तआला की जानिब से बंदे पर वारिद होती है और जब उसका वरूद होता है तो दिल से सब कुछ फ़ना हो जाता है। जैसे कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का हाल था वह साहबे वक़्त थे। एक वक़्त में तो बहालते फ़िराक़ आंखों की बीनाई जाती रही दूसरे वक़्त में बहालते विसाल बीनाई लौट आयी। कभी गिरया वज़ारी से ऐसे ज़ईफ़ व नातवां हुए कि बाल से बारीक हो गये और कभी विसाल से तंदुरुस्त व तवाना बन गये। कभी ख़ौफ़ज़दा हुए और कभी मुसर्रत व ख़ुशी पाई। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम साहबे हाल थे वह न फ़िराक़ से मग़मूम होते और न विसाल से मसरूर। चांद सितारे और सूरज उनके हाल की मदद करते थे और ख़ुद हर चीज़ के देखने से फ़ारिग़ थे जो नज़र आता उसमें हक़ तआला का जल्वा ही नज़र आता था। फ़रमाते थे कि मैं छुपने वालों को पसंद नहीं करता।

साहबे वक़्त के लिये कभी सारा जहान दोज़ख़ हो जाता है जबकि मुशाहिदा में ग़ैबत हो जाती है और दिल से हबीब का रूपोश हो जाना मोजिबे वहशत बन जाता है और कभी उसका दिल ख़ुशी व मुसर्रत में फूला नहीं समाता और सारा जहान मानिंदे जहालत बन जाता है। नेमतों में हर आन वह हक़ का मुशाहिदा करता है और वह नेमत उसके लिये तोहफ़ा और बशारत बन जाती है। फिर यह कि साहबे हाल के लिये हिजाब हो या कश्फ़ हो, नेमत हो या बिला सबब यकसां होता है क्योंकि वह हर मुक़ाम में साहबे हाल होता है। लिहाज़ा हाल मुराद की सिफ़त है और वक़्त मुरीद का दर्जा कोई फ़ी नफ़्सिही वक़्त की राहत में होता है और कोई हाल की मुसर्रत में ख़ुदा के साथ होता है। यह दोनों मज़िलों के दर्मियान फ़र्क़ व इम्तेयाज़ है।

मक़ाम व तमकीन और उनका फ़र्क़

मुक़ाम : तालिब का सिद्क़ नीयत और रियाज़त व मुजाहिदे के साथ हक़ तआला के हुक़ूक़ को अदा करने पर क़ायम रहने का नाम है। हर इरादए हक़ वाले का एक मुक़ाम होता है जो बवक़्ते तलब बारगाहे हक़ से इब्तेदा में इसके हुसूल का मोजिब बनता है। जब भी तालिब किसी मक़ाम को उबूर करेगा और पिछले मक़ाम को छोड़ेगा तो वह लाज़मी किसी एक मुक़ाम पर क़ायम होगा जो इसके वारदात का मक़ाम है मुरक्कब और अज़ क़िस्मे मख़लूक़ है वह सुलूक और मामला की क़िस्म से नहीं है। जैसा कि कुरआन करीम में आया है कि हम में से कोई नहीं मगर यह कि उसका कोई मक़ाम मोअय्यन है। जैसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का मक़ाम तौबा था और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का मक़ाम ज़ुहुद था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मक़ाम तसलीम व रज़ा था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मक़ाम इनाबत था। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का मक़ाम हुज़्न व मलाल था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मक़ाम उम्मीद व रजा था। हज़रत यहया अलैहिस्सलाम का मक़ाम ख़ौफ़ व खशीयत था और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ाम ज़िक्र था। हर एक को हर मक़ाम में ख़्वाह कितना ही उबूर हो बहर तौर उसका रुजू उसके अपने असली मक़ाम की ही तरफ़ होगा मैंने इसका तज़किरा मुहासबियों के मज़हब में बयान कर दिया है और हाल व मक़ाम का फ़र्क़ भी वाज़ेह कर चुका हूं।

राहे हक़ की क़िस्में : वाज़ेह रहना चाहिये कि राहे हक़ की तीन क़िस्में हैं एक मक़ाम दूसरा हाल तीसरा तमकीन। अल्लाह तआला ने तमाम नबियों को अपनी राह बताने के लिये भेजा ताकि वह मक़ामात के अहकामात बयान फ़रमायें। एक लाख चौबीस हज़ार (कम व बेश) अंबिया अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ लाए और वह इतने ही मक़ामात की तालीम के पैग़ाम बर थे। मगर हमारे आक़ा सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से हर साहबे मक़ाम के लिये एक हाल ज़ाहिर हुआ और हाल को मक़ाम से मिलाकर मख़लूक़ से उसका कसब व इख़्तेयार जुदा किया गया। यहां तक कि मख़लूक़ पर दीन को तमाम किया और नेमत को इंतेहा तक पहुंचाया गया। इरशादे हक़ है कि आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल करके अपनी तमाम नेमतें तुम पर ख़त्म कर दीं। इसके बाद अहले तमकीन के लिये क़रार का ज़ुहूर हुआ।

दर्जए तमकीन : मुहक्क़ेक़ीन का दर्जए कमाल के आला मंज़िल में इक़ामत गुज़ीं होने का नाम तमकीन है लिहाज़ा साहबाने मक़ामात के लिये मक़ामात से उबूर मुमकिन है लेकिन दर्जाए तमकीन से गुज़र जाना मुहाल है इसलिये कि मक़ाम मुबतदियों का दर्जा है। तमकीन मुनतहियों की इक़ामतगाह है। इब्तेदा से इंतेहा की तरफ़ जाना तो है लेकिन इंतेहा से गुज़रने की कोई सूरत नहीं क्योंकि मक़ामात मंज़िलों की राहें हैं और तमकीन बारगाहे कुद्स में बरक़रार होना है। महबूबाने ख़ुदा रास्ता में आरियतन होते हैं और मंज़िल में बेगाने। उनका बातिन बारगाहे कुद्स में होता है। और बारगाहे कुद्स में सबब वाला आफ़त होता है और वह ग़ैबत व इल्लत के औज़ार होते हैं। ज़मानाए जाहिलियत में शोअ़रा अपने ममदूहीन की तारीफ़ मामला से करते थे और जब तक कुछ अर्सा न गुज़र जाता शेर नहीं कहते थे।

चुनांचे जब कोई शायर ममदूह के हुज़ूर पहुंच जाता था तो तलवार सौंत कर सवारी के पांव काट डालता और तलवार को तोड़ देता था। इससे उनका मक़सद यह होता कि मुझे सवारी इसलिये दरकार थी कि इसके ज़रिये तेरे हुज़ूर तक पहुंचने के लिये मुसाफ़त तय करूं अब चूंकि पहुंच गया हूं तो सामाने सफ़र की क्या हाजत? सवारी को इसलिये हलाक कर दिया क्योंकि तेरे पास से मुझे जाना ही नहीं है और तलवार इसलिये तोड़ डाली कि तेरे हुज़ूर से जुदा होने का दिल में कोई अंदेशा नहीं है। फिर जब कुछ दिन गुज़र जाते तो शेअर पढ़ता था-

हक तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सिफ़त भी ऐसी ही बयान फ़रमाई कि जब वह मंज़िलें करके दुश्वार मक़ामात को उबूर करके महले तमकीन में पहुंचे और उनसे तमाम असबाबे तग़य्युर जुदा हो गये तो हक़ तआला ने फ़रमाया नअ़लें उतारो और अपना असा डाल दो क्योंकि यह सामाने सफ़र था। बारगाहे कुद्स में हुज़ूरी के बाद सफ़र का ख़तरा ही क्या? मुहब्बत की इब्तेदा तलब है और उसकी इंतेहा क़रार और सुकून पाना।

पानी जब तक नहर व दरिया में रहे जारी रहता है जब समुंद्र में पहुंच जाता है तो ठहर जाता है और जब पानी ठहर जाता है तो उसका मज़ा बदल जाता है क्योंकि जिसे पानी की ज़रूरत होती है वह समुंद्र की तरफ़ मायल नहीं होता। समुंद्र की तरफ़ वही जाता है जिसे मोतियों की तलाश होती है। इसलिये कि वह सांस को रोकता है और गुहर की तलब में पांव जोड़कर सर के बल समुंद्र की तह में गोता लगाता है। इसके बाद या तो वह बेहतरीन क़ीमती मोती लेकर

आता है या ग़र्क़े दरिया हो जाता है।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि तग़य्युर व तबद्दुल ख़त्म हो जाने का नाम तमक्कुन है। लफ़्ज़ तलवीन भी हाल व मक़ाम की मानिंद अहले तरीक़त की इस्तेलाह में एक लफ़्ज़ व इबारत है और मअ़ने में एक दूसरे के क़रीब। लेकिन इस जगह तलवीन के मअ़ने एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ बदलने के हैं इस मक़ूला का मतलब यह है कि मतमक्किन मुतरद्दिद नहीं होता और अपना सारा सामान लेकर बारगाहे क़ुद्स से वासिल हो जाता है। इसके दिल में न ग़ैर का अंदेशा बाक़ी रहता है और न इस पर कोई मामला गुज़रता है जिससे इसके ज़ाहिर के बदल जाने का इमकान हो और न कोई हाल गुज़रता है जिससे इसका बातिन मुतग़य्यर हो। चूंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मक़ामे तलव्वुन में थे। तूर पर जब जल्वए हक़ ने तजल्ली फ़रमाई तो उनके होश जाते रहे हक़ तआला ने फ़रमाया मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर ज़मीन पर आ रहे और हमारे आक़ा सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महले तमकीन में थे जब मक्का मुकर्रमा से क़ाब क़ोसैन तक ऐन तजल्ली में रहे तब भी आपका हाल एक रहा और किसी दूसरे हाल की तरफ़ मुतग़य्यर न हुए और यह दर्जा आला था।

महले तमकीन की क़िस्में : महले तमकीन की दो क़िस्में हैं एक यह कि उसकी निसबत शुहूदे हक़ के साथ हो और दूसरे यह कि उसकी निसबत अपने शुहूद के साथ हो। जिसकी निसबत अपने शहूद के साथ है वह बाक़ीउल सिफ्त होता है और जिसकी निसबत शहूदे हक़ के साथ हो वह फ़ानीउल सिफ्त होता है। फ़ानीउल सिफ्त के लिये महव, सुहव, महक़ लहक़ फ़ना व बक़ा और वजूद व अदम का इस्तेमाल दुरुस्त नहीं होता। इसलिये इन औसाफ़ के क़ियाम के लिये मौसूफ़ की ज़रूरत होती है। जब मौसूफ़ शहूदे हक़ में मुस्तग़रक़ होता है तो उससे वस्फ़ का क़ियाम साक़ित हो जाता है। और भी बकसरत लतायफ़ हैं मुख़्तसरन इतना ही काफ़ी है।

मुहाज़रा व मुकाशफ़ा और इनका फ़र्क़

वाज़ेह रहना चाहिये कि लफ़्ज़ मुहाज़रा का इस्तेमाल, हुज़ूरे क़लब पर बयाने लतायफ़ में होता है और लफ़्ज़ मुकाशफ़ा का इस्तेमाल, हुज़ूरे तहरीर पर जो दिल में ख़तरा अयां हो उस वक़्त होता है। गोया आयात के शवाहिद को मुहाज़रा और मुशाहिदात के शवाहिद को मुकाशफ़ा कहते हैं और मुहाज़रा की अलामत, आयात की दीद में हमेशा फ़िक्र मंद रहना है और मुकाशफ़ा की अलामत

...अज़मत की तह में हमेशा हैरत ज़दा रहना है। जो अफ़आल में फ़िक्रमंद हो और जो जलाल में हैरत ज़दा हो उनमें फ़र्क़ यह है कि एक ख़िलअत के हम ...अने होता है और दूसरा मुहब्बत के क़रीब। चुनांचे हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम ने जब मलकूत समावी पर नज़र डाली तो उसके वजूद की हक़ीक़त में ताम्मुल व तफ़क्कुर किया और उनका दिल उसमें हाज़िर हुआ तो फ़ेअल की दीद में फ़ाइल को देखा। यहां तक कि उनके हुजूर ने फ़ेअल को भी फ़ाइल की दलील बना दिया और कमाले मारिफ़त में गोया हुए यानी मैंने अपने चेहरे को उस ज़ात की तरफ़ यकसू होकर फेरता हूं जिसने ज़मीन व आसमान को पैदा किया है।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब मलकूते समावी की सैर कराई गयी तो आपने सारे आलम को देखने से आंखें बंद कर लीं। न फ़ेअल को देखा और न मख़लूक़ को हत्ता कि अपने आपको भी नहीं देखा सिर्फ़ फ़ाइल के मुकाशफ़ा में रहे। इसी तरह कश्फ़ में शौक़ पर शौक़ का इज़ाफ़ा हुआ और बेक़रारी पर बेक़रारी बढ़ी, दीदार की तलब हुई तो रुख़ की रोइयत न हुई। कुर्ब को चाहा तो कुरबत मुमकिन न हुई। वसल का इरादा किया तो विसाल की सूरत न बनी। क़लबे अतहर पर दोस्त की तंज़ीह व तक़दीस का जितना ज़्यादा ज़ुहूर होता उतना ही शौक़ पर शौक़ बढ़ता जाता, न एराज़ की ही राह थी न इक़बाल व तवज्जोह का इमकान यानी न हट सकते थे न सामने हो सकते थे मुतहय्यर होकर रह गये। क्योंकि जहां ख़िल्लत थी वहां हैरत कुफ़्र मालूम हुई और जहां मुहब्बत थी वहां वसल शिर्क नज़र आया। हैरत ही सरमाया बन के रह गयी। इसलिये कि मक़ामे ख़िल्लत में हैरत ज़दा होना इसके वजूद में होता है और यह शिर्क है और मक़ामे मुहब्बत में हैरतज़दा होना कैफ़ियत में होता है यह तौहीद का मक़ाम है। इसी वास्ते हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा कहा करते थे कि ऐ मुतहय्यरों के रहनुमा! मेरी हैरत को और ज़्यादा कर। क्योंकि मुशाहिदे में हैरत की ज़्यादती से दर्जा बुलंद होता है।

हज़रत अबू सईद ख़राज़ रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत इब्राहीम सईद अलवी के साथ दरिया के किनारे एक ख़ुदा के दोस्त को देखा तो उससे दर्याफ़्त किया कि हक़ की राह किस चीज़ में है? उन्होंनें कहा हक़ की दो राहें हैं एक अवाम की दूसरे ख़्वास की उन्होंने पूछा इसकी तशरीह फ़रमायें। कहा अवाम की राह वह है जिस पर तुम हो क्योंकि किसी इल्लत के साथ क़बूल करते हो और किसी इल्लत के सबब छोड़ते हो और ख़्वास की राह यह है कि न वह

मोअल्लल को देखते हैं न इल्लत को।

क़ब्ज़ व बस्त और उनका फ़र्क़

वाज़ेह रहना चाहिये कि क़ब्ज़ व बस्त अहवाल की दो हालतों का नाम है जो बंदे की ताक़त से बाहर है। वह न उसके आने पर क़ादिर है और न उसके जाने पर। अल्लाह तआला फ़रमाता है क़ब्ज़ व बस्त मेरे ही क़ब्ज़ा व इख़्तेयार में है।

क़ब्ज़ उस हाल का नाम है जो बहालते हिजाब दिल पर छाए और बस्त उस कैफ़ियत का नाम है जिसको दिल पर छाए हुए हिजाब का इर्तेफ़ाअ कहते हैं। यह दोनों हक़ हैं इनमें बंदे का इख़्तेयार नहीं है। आरिफ़ों के अहवाल में क़ब्ज़ ऐसा है जैसे कि मुरीदों के अहवाल में खौफ़ और अहले मारिफ़त के अहवाल में बस्त ऐसा है जैसे मुरीदों के अहवाल में रजा यानी उम्मीद। यह तारीफ़ उस गरोह के मुवाफ़िक़ जो इस तरह मअ़ने बयान करते हैं।

मशायख़े तरीक़त की एक जमाअत कहती है कि क़ब्ज़ का मर्तबा, बस्त के मर्तबा से ज़्यादा बुलंद है। उसकी वजह यह बताते हैं कि कुरआने करीम में क़ब्ज़ का ज़िक्र, बस्त से पहले आया है। दूसरे यह कि क़ब्ज़ में गुदाज़ और क़हर है और बस्त में नवाज़िश व मेहरबानी है। ला महाला बशरियत के औसाफ़ को फ़ना करना और नफ़्स को मग़लूब करना परवरिश व मेहरबानी से अफ़ज़ल है क्योंकि वह बहुत बड़ा हिजाब है।

और एक जमाअत यह कहती है कि बस्त का मर्तबा क़ब्ज़ के मर्तबे से बुलंद है इसलिये कि कुरआन करीम में क़ब्ज़ का पहले ज़िक्र आना बस्त की फ़ज़ीलत की अलामत है क्योंकि अहले अरब की आदत है कि उस चीज़ को पहले बयान करते हैं जो फ़ज़ीलत में बाद हो। जैसा कि इरशाद है-

यानी बाज़ बंदे जानों पर ज़ुल्म करते हैं और बाज़ बंदे मियाना रौ होते हैं और बाज़ बंदे हुक्मे इलाही से नेकियों में सबक़त ले जाते हैं।

नीज़ फ़रमाया-

अल्लाह तआला तौबा करने वालों को पसंद करता है और ख़ूब पाक व साफ़ रहने वालों को महबूब रखता है।

और फ़रमाया-

ऐ मरयम अपने रब की फ़रमांबरदारी करो और रुकूअ करने वालों के साथ सज्दा व रुकूअ करो।

नीज़ मशायखे तरीकत फ़रमाते हैं कि बस्त में सुरूर है और क़ब्ज़ में तकलीफ़ और आरिफ़ों का सुरूर, वस्ले मारिफ़त के बग़ैर नहीं होता और अपनी तकलीफ़ फ़स्ल के बग़ैर देखे नहीं, लिहाज़ा वस्ल में वकूफ़ फ़िराक़ के वकूफ़ से बेहतर है।

मेरे शैख़ व मुरशिद फ़रमाते हैं कि क़ब्ज़ व बस्त दोनों मअ़ने एक ही हैं क्योंकि यह दोनों हक़ तआला की तरफ़ से बंदे के शामिले हाल होते हैं क्योंकि जब उनके मअ़ने दिल पर असर करते हैं तो उस वक़्त बंदे का बातिन या तो मसरूर होता है और नफ़्स मग़लूब या फिर बातिन मग़लूब होता है और नफ़्स मसरूर। एक दिल से दिल के क़ब्ज़ में उसके नफ़्स की कुशादगी है और दूसरे से बातिन की कुशादगी में उसके नफ़्स का क़ब्ज़ है उसके सिवा जो बयान करता है वह अपने वक़्त को ज़ाए करता है।

हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि दिलों का क़ब्ज़, नफ़्सों की कुशादगी में है और दिलों की कुशादगी, नफ़्सों के क़ब्ज़ में है। लिहाज़ा क़ब्ज़ शुदा नफ़्स ख़लल से महफ़ूज़ है और बस्त शुदा बातिन ज़वाल से मज़बूत है इसलिये कि मुहब्बत में ग़ैरत बरी है और क़ब्ज़ में ग़ैरते इलाही की अलामत है मुहिब को मुहिब के साथ अताब करना शर्त है और बस्त मआतबत की अलामत है आसार में मरवी है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम तमाम उम्र रोते रहे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमेशा हंसते रहे।। क्योंकि हज़रत यहया क़ब्ज़ को क़बूल किये हुए थे और हज़रत ईसा बस्त को। जब एक दूसरे से मुलाक़ात करते तो हज़रत यहया कहते कि ऐ ईसा! आप क़तअय्यत यानी जुदायगी से महफ़ूज़ हैं और हज़रत ईसा फ़रमाते कि ऐ यहया तुम रहमत से मायूस हो, इसलिये कि तुम्हारा रोना न तो अज़ली हुक्म बदलता है और न मेरा हंसना क़ज़ाए इलाही को पलटता है लिहाज़ा न क़ब्ज़ है न बस्त। न रुकना है न मुहब्बत करना है न मिटना है न सुहव न लहक़ है न महक़ न इज्ज़ और न जहल सब अल्लाह की तरफ़ से है।

उन्स व हैबत और उनका फ़र्क़

वाज़ेह रहना चाहिये कि अल्लाह तआला तुम्हें सईद बनाये। हैबत व उन्स, सालिकाने राह हक़ के दो हाल का नाम है। जब हक़ तआला बंदे के दिल पर मुशाहिदाए जलाल से तजल्ली फ़रमाता है तो उस वक़्त उसके दिल पर हैबत तारी हो जाती है। फिर जब मुशाहिदाए जमाल से तजल्ली फ़रमाता है तो उसके

दिल पर मुहब्बत व उन्स का ग़ल्बा हो जाता है यहां तक कि अहले मुहब्बत उसके जलाल से हैरत ज़दा और अहले उन्स व मुहब्बत उसके जमाल से ख़ुशी में मगन हो जाते हैं। लिहाज़ा जो दिल जलाले इलाही की मुहब्बत की आग में जलते हैं और वह दिल जो उसके जमाल के नूर के मुशाहिदा में ताबां हैं उनके दर्मियान यह फ़र्क़ है।

मशायख़ की एक जमाअत फ़रमाती है कि हैबत आरिफ़ों का दर्जा है और उन्स मुरीदों का मुक़ाम इसलिये कि बारगाहे कुद्स की तंज़ीह और उसके क़दीम औसाफ़ में जितना कमाल हासिल होगा उतना ही उसके दिल पर हैबत का ग़ल्बा होगा और उन्स से उसकी तबीयत ज़्यादा दूर होगी क्योंकि उन्स हम जिन्सों से होता है और हक़ तआला से मुजानसत और मुशाकलत मुहाल है लिहाज़ा वहां उन्स की कोई सूरत मतसव्वर नहीं हो सकती इसी तरह हक़ तआला का मख़लूक़ से उन्स करना भी मुहाल है। अगर उन्स की कोई सूरत मुमकिन है तो उसके ज़िक्र और इसकी याद के साथ उन्स करना मुमकिन हो सकता है क्योंकि इसका ज़िक्र ग़ैर है और वह बंदे के सिफ़ात के क़बील से है। मुहब्बत में ग़ैरों के साथ आराम पाना झूट, इद्देआए महज़ और ख़ालिस गुमान है और हैबत अज़मत के मुशाहिदे की क़बील से है और अज़मत हक़ तआला की सिफ़त है। लिहाज़ा जिस बंदे का काम अपने फ़ेअल के साथ हो और जिस बंदे का काम अपने अफ़आल को फ़ना करके बक़ाए हक़ के साथ हो इसके और उसके दर्मियान बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि मैं अर्सा तक इस गुमान में रहा कि मुहब्बत में ख़ुश रहता हूं और मुशाहिदे इलाही से उन्स पाता हूं। अब मैंने जाना कि उन्स अपनी ही हम जिन्स से हो सकता है।

एक जमाअत यह कहती है कि हैबत, फ़िराक़ व अज़ाब का समरा है और उन्स रहमत व वस्ल का नतीजा है। इसी बिना पर दोस्तों के लिये लाज़िम है कि वह हैबत के अक़साम से महफ़ूज़ रहें और उन्स व मुहब्बत के क़रीब रहें। यक़ीनन उन्स, मुहब्बत का इक़्तेज़ा करती है जिस तरह मुहब्बत के लिये हम जिन्सी मुहाल है उसी तरह उन्स के लिये भी मुहाल है।

मेरे शैख़ व मुरशिद फ़रमाते हैं कि मैं उस शख़्स पर ताज्जुब करता हूं जो यह कहता है कि हक़ तआला के लिये उन्स मुमकिन नहीं। बावजूद यह कि उसका इरशाद है कि उसने फ़रमाया है– यह मेरे बंदे हैं ऐ मेरे बंदो आज न

तुम पर ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होगे ला महाला जब बंदा हक़ तआला के इस फ़ज़्ल को देखत है तो वह उससे मुहब्बत करता है और जब मुहब्बत करता है तो उन्स भी हासिल करता है क्योंकि दोस्त से हैबत, ग़ैरयत की अलामत है और उन्स यगानगत की निशानी है। आदमी की यह ख़सलत है कि वह नेमत अता करने वाले के साथ उन्स रखता है और हक़ तआला की नेमतें तो हम पर बेशुमार हैं उसी ने हमें अपनी मारिफ़त से नवाज़ा है फिर हम हैबत की बात किस तरह कर सकते हैं?

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि दोनों गरोह अपनी अपनी तारीफ़ में इख़्तेलाफ़ के बावजूद राहयाब और दुरुस्त हैं इसलिये कि हैबत का ग़ल्बा नफ़्स और उसकी ख़्वाहिश के साथ होता है और उस हैबत के ज़रिये अपने औसाफ़ बशरियत को फ़ना करने बातिन में उन्स को ग़ालिब करने और बातिन में मारिफ़त की परवरिश करने में मदद मिलती है और हक़ तआला की तजल्लीए जलाल से दोस्तों का नफ़्स फ़ना हो जाता है और तजल्लीए जमाल से उनका बातिन बाक़ी रहता है। लिहाज़ा जो अहले फ़ना हैं वह हैबत को मुक़द्दम कहते हैं और जो अरबाबे बक़ा हैं वह उन्स को फ़ज़ीलत देते हैं इससे क़ब्ल फ़ना व बक़ा की तशरीह की जा चुकी है।

क़हर व लुत्फ़ और उनका फ़र्क़

क़हर व लुत्फ़ यह दो लफ़्ज़ ऐसे हैं जिन से मशायख़े तरीक़त अपने अहवाल की तामीर करते हैं। क़हर से उनकी मुराद यह है कि हक़ तआला की ताईद से अपनी मुरादों को फ़ना करें और उसकी ख़्वाहिशों से नफ़्स को महफ़ूज़ रखें बग़ैर इसके कि इसमें उनका कोई मतलब हो और लुत्फ़ से उनकी मुराद यह है कि हक़ तआला की ताईद से बातिन को बाक़ी रखें और हमेशा मुशाहिदे में मशग़ूल रहें और दर्जए इस्तेक़ामत में हाल इंतेहा तक बरक़रार रहे।

एक जमाअत कहती है कि करामत व एज़ाज़ यह है कि हक़ तआला से मुराद हासिल कर ले। यह अहले लुत्फ़ हैं और एक गरोह यह कहता है कि करामत यह है कि हक़ तआला बंदे को अपनी मुराद और उसकी मुराद दोनों से बचाए रखे और उसे ना मुरादी के साथ मग़लूब करे। मसलन दरिया में जाए तो प्यास की हालत में दरिया खुश्क हो जाये।

बग़दाद में साहबे मर्तबा फुक़रा में से दो दरवेश थे। एक साहबे क़हर व

ग़ल्बा थे और दूसरे साहबे लुत्फ़ व करम। हमेशा एक दूसरे में नोक झोंक रहा करती थी। हर एक अपने हाल को बेहतर बताता था। एक कहता कि हक़ तआला का लुत्फ़ व करम बंदे पर बहुत बुजुर्ग शय है क्योंकि उसका इरशाद है कि- अल्लाह अपने बंदों पर मेहरबान है और दूसरा कहता है कि हक़ तआला का क़हर व ग़ल्बा बंदा पर बहुत ज़्यादा मुकम्मल शय है। चुनांचे वह फ़रमाता है अल्लाह अपने बंदों पर ग़ालिब हैं इन दोनों दरवेशों की नोक झोंक ने बहुत तूल पकड़ा। यहां तक कि एक वक़्त ऐसा आया कि साहबे लुत्फ़ दरवेश ने मक्का मुकर्रमा का क़सद किया वह बियाबान में ठहर गया और मक्का मुकर्रमा न पहुंच सका बरसों तक किसी को उसकी ख़बर तक न हुई। यहां तक कि एक शख़्स मक्का मुकर्रमा से बग़दाद आ रहा था उसने उस दरवेश को दरिया के किनारे देखा। दरवेश ने उससे कहा ऐ भाई! जब तुम इराक़ पहुंचो तो करख़ में मेरे फ़लां रफ़ीक़ से कहना कि अगर तुम चाहते हो तो इस मुशक़्क़त के बावजूद जंगल में बग़दाद के मुहल्ले करख़ की मानिंद उसके अजायबात को देखना चाहो तो आ जाओ। क्योंकि यह जंगल मेरे लिये हक़ तआला ने बग़दाद की मानिद बना दिया है। जब यह शख़्स करख़ पहुंचा तो उसके रफ़ीक़! को तलाश करके उसका पैग़ाम पहुंचाया। उसके जवाब में उसने कहा जब तुम फिर जाओ तो उस दरवेश से कहना कि इसमें कोई बुजुर्गी नहीं है कि मशक़्क़त के साथ जंगल को तुम्हारे लिये करख़ की मानिंद बना दिया गया है। यह इसलिये कि हुआ कि तुम दरगाहे इलाही से भाग न उठो बुजुर्गी तो यह है कि बग़दाद के मुहल्ला करख़ को उसकी नेमतों और उसके अजायब के बावजूद मुशक़्क़त के साथ किसी के लिये जंगल बना दिया जाये और वह इसमें ख़ुश व ख़ुर्रम रहे।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा अपनी मुनाजात में कहते हैं कि ऐ ख़ुदा अगर तू आसमान को मेरे गले का तौक़ और ज़मीन को मेरे पांव की जंजीर और आलम को मेरे ख़ून का प्यासा बना दे तब भी मैं तेरी बारगाह से न हटूंगा।

मेरे मुरशिद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि एक साल जंगल में औलिया का इज्तेमा हुआ। मेरे मुरशिद हज़रत हुसरी रहमतुल्लाह अलैहि मुझे अपने हमराह वहां ले गये। मैंने वहां एक जमाअत देखी जो तख़्त के नीचे थी और एक जमाअत देखी जो तख़्त पर बैठी थी। कोई उड़ता आ रहा था और कोई किसी तरीक़ से। मेरे मुरशिद ने किसी की तरफ़ इल्तेफ़ात न किया यहां तक कि एक जवान को मैंने देखा जिसकी जूतियां फटी हुई थीं और असा शिकस्ता

था। पांव निकम्मे, बदन झुलसा हुआ, जिस्म कमज़ोर, जब वह नमूदार हुआ तो हज़रत हुसरी रहमतुल्लाह अलैहि डरकर उसके पास पहुंचे और उसे बुलंद तर जगह पर बिठाया। फ़रमाते हैं कि यह देखकर मैं हैरत में पड़ गया उसके बाद मैंने शैख़ से दर्याफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमाया यह बंदा ऐसा साहबे वली है कि वह विलायत का ताबेअ नहीं है बल्कि विलायत उसके ताबेअ है वह करामतों की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता।

ग़र्ज़ कि जो कुछ हम अज़ ख़ुद इख़्तेयार करें वह हमारी बला होती है। मैं इसके सिवा कुछ नहीं चाहता कि हक़ तआला मुझे उस मंज़िल में उसकी आफ़त से महफ़ूज़ रखे और मेरे नफ़्स की बुराई से बचाये। अगर वह कहर व ग़ल्बा में रखे तो मैं लुत्फ़ व मेहरबानी की तमन्ना नहीं करूंगा और अगर लुत्फ़ व करामत में रखे तो मैं कहर व गल्बा का आरज़ूमंद न हूंगा हमें उसके इख़्तेयार करने में कोई इख़्तेयार नहीं है।

नफ़ी व इसबात और उनका फ़र्क़

मशायख़े तरीक़त ने ताईदे हक़ के साथ सिफ़ते बशरियत की महव को फ़ना व इसबात के नाम से ताबीर किया है। सिफ़ते बशरियत की फ़ना को नफ़ी से और ग़ल्बए हक़ीक़त के वजूद को इसबात कहा है। इसलिये कि महव कुल के मिट जाने को कहते हैं और कुल की नफ़ी बजुज़ सिफ़ात के, ज़ात पर मुमकिन नहीं है। क्योंकि जब तक बशरियत बाक़ी है उस वक़्त तक ज़ात से कुल की नफ़ी की कोई सूरत मुमकिन नहीं। लिहाज़ा ज़रूरी है कि मज़मूम सिफ़ात की नफ़ी, ख़सायले महमूदा के इसबात के साथ की जाये मतलब यह कि मअ़ने के असबात के लिय हक़ तआला से मैयत में, दावे की नफ़ी हो। क्योकि दावा करना, नफ़्स के गुरूर की क़िस्म से है जो इंसान की आम आदत है जब ग़ल्बए हक़ीक़त में औसाफ़ मग़लूब व मक़हूर हो जाते हैं उस वक़्त कहा जाता है कि सिफ़ात बशरियत की नफ़ी हक़ की बक़ा के इसबात के साथ होगी। क़ब्ल अज़ीं फ़क्र व सफ़वत और फ़ना व बक़ा के बाब में बहुत कुछ कहा जा चुका है फ़िलहाल इसी पर इक्तेफ़ा किया जाता है।

मशायख़े तरीक़त फ़रमाते हैं कि इसी नफ़ी से मुराद, हक़ तआला के इख़्तेयार के इसबात में, बंदे के इख़्तेयार की नफ़ी है। इसी बिना पर एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि हक़ तआला का इख़्तेयार उसके बंदे के लिये उसके अपने इल्म से बेहतर है। इससे जो बंदे को अपने नफ़्स के लिय ख़ुदा से ग़ाफ़िल रहकर

इख़्तेयार पाया जाये। इसलिये कि मुहब्बत में मुहिब के इख़्तेयार की नफ़ी, महबूब के इख़्तेयार के इसबात से वाबस्ता है यह बात मुसल्लम है।

एक दरवेश दरिया में ग़र्क़ हो रहा था किसने उससे कहा ऐ भाई! क्या तू चाहता है कि निकाल लिया जाये? उसने कहा नहीं। फिर उसने पूछा क्या चाहता है कि ग़र्क़ हो जाए? दरवेश ने कहा नहीं। उसने कहा अजीब बात है कि न तू हलाकत चाहता है न निजात। दरवेश ने कहा मुझे ऐसी निजात की हाजत नहीं जिसमें मेरा इख़्तेयार शामिल हो। मेरा इख़्तेयार तो वह है जो मेरे रब के इख़्तेयार में है।

मशायख़े तरीक़त फ़रमाते हैं कि मुहब्बत में कम से कम दर्जा अपने इख़्तेयार की नफ़ी है क्योंकि हक़ तआला का इख़्तेयार अज़ली है उसकी नफ़ी मुमकिन नहीं और बंदे का इख़्तेयार रियाज़ी है उसकी नफ़ी जायज़ है। लाज़िम है कि आरज़ी को पायमाल किया जाये ताकि अज़ली इख़्तेयार क़ायम व बाक़ी रहे। जिस तरह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब कोहे तूर पर मसरूर हुए तो अपने इख़्तेयार को बरक़रार रखते हुए हक़ तआला के दीदार की तमन्ना का इज़हार किया और खुदा से अर्ज़ किया ऐ रब! मुझे अपना जलवा दिखा। हक़ तआला ने फ़रमाया तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकोगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ ख़ुदा दीदार तो हक है और मैं इसका मुस्तहिक़ भी हूं फिर क्यों मना फ़रमाया जा रहा है? इरशाद हुआ कि दीदार हक़ है लेकिन मुहब्बत में अपना इख़्तेयार बाक़ी रखना बातिल है। इस मसले में गुफ़्तगू तो बहुत है मगर मेरा मक़सूद चूंकि इख़्तेसार है। बतौफ़ीक़े इलाही इस का मुख़्तसर तज़किरा जमा व तफ़रक़ा फ़ना व बक़ा और ग़ैबत व हुज़ूर में भी गुज़र चुका है यहां इसी पर इक्तेफ़ा किया जा रहा है।

मुसामरा व मुहादसा और उनका फ़र्क़

मुसामरा और महादसा के दोनों लफ़्ज़ का मिलाने तरीक़त के अहवाल की दो हालतें हैं मुहादसा की हक़ीक़त बातनी कैफ़ियत से मुताल्लिक़ है जहां ज़ुबान को ख़ामोश रखा जाता है। और मसामरा की हक़ीक़त, बातनी वारदात के छुपाने पर हमेशा ख़ुश रहना है। उनके तमाम ज़ाहिर मअ़ने यह हैं कि मसामरा एक वक़्त है जबकि बंदा रात में हक़ तआला के साथ हो और मुहादसा वक़्त है जो दिन में हक़ तआला के साथ हो। दिन के उस वक़्त में बंदा हक़ तआला

से ज़ाहिरी व बातनी सवाल व जवाब करता है। इसी बिना पर रात की मुनाजात को मसामरा और दिन की दुआओं को महादसा कहते हैं गोया दिन का हाल कश्फ़ पर मबनी है और रात का हाल ख़फ़ा पर और मुहब्बत में मसामरा महादसा से कामिल तर होता है। मसामरा का ताल्लुक हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाल से वाबस्ता है। जब हक़ तआला ने चाहा कि हुजूर को कुर्ब ख़ास से नवाज़े तो जिब्राईल को बुराक़ देकर आपके पास भेजा ताकि वह मक्का से क़ाब क़ौसैन तक ले जाये और हुजूर हक़ तआला से हमराज़ हों चुनांचे हुजूर ख़ुदा से हम कलाम हुए जब इंतेहा तक रसाई हुई तो आप की जुबान मुबारक ज़ुहूरे जलाले बारी में सुर्ख़ हो गयी और आप का दिल अज़मत की तह में मुतहय्यर हो गया। और आपका इल्म इदराक से रह गया। जुबान मुबारक इबारत से आजिज़ हो गयी। उस वक़्त अर्ज़ किया तेरी हम्द व सना करने से आजिज़ हूं।

महादसा का ताल्लुक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाल से है। जब चाहा कि इनका एक वक़्त हक़ तआला के साथ हो तो चालीस दिन वादाए इंतेज़ार के बाद दिन में कोहे तूर पर आये। ख़ुदा का कलाम सुना तो मसरूर हुए। दीदार की ख़्वाहिश की तो मुराद से रह गये और होश से जाते रहे। जब होश आया तो अर्ज़ किया तेरी तरफ़ रुजूअ होता हूं। ताकि फ़र्क़ हो जाए कि एक वह है जो आता है और एक वह है जो ले जाया जाता है। पाक है वह ज़ात जो रातों रात बंदे को ले गया। यह वह बंदा है जो ले जाया गया और वह वह बंदा है जो खुद आता है। इस बंदे के मुताल्लिक इरशाद है जब मूसा हमारी मुक़र्ररा जगहों में आये इसलिये रात दोस्तों की खलवत का वक़्त है और दिन बंदों की ख़िदमत करने का वक़्त। ला मुहाला जब बंदए महदूद हद से तजावुज़ कर जाता है तो उसे तंबीह की जाती है। फिर दोस्त व महबूब की कोई हद नहीं होती जिससे तजावुज़ मुमकिन हो और वह मुस्तहिके मलामत बने। महबूब जो भी कुछ करे मुहिब का पसंदीदा होता है।

इल्मुल यक़ीन, ऐनुल यक़ीन, हक़्क़ुल यक़ीन और इनका फ़र्क़

वाज़ेह रहना चाहिये कि बा एतेबारे उसूल, यह तीनों कलिमे इल्म से मुताल्लिक़ हैं जो अपने जानने के साथ हैं। और अपने जानने के बयान की सेहत

पर ग़ैर यक़ीनी इल्म, इल्म नहीं होता और जब इल्म हासिल हो जाता है तो उससे ग़ैब व ख़फ़ा मुरतफ़अ होकर मुशाहिदा-ए-ऐनी की मानिंद बन जाता है। इसलिये कि कल रोज़े क़यामत जब हर मुसलमान दीदारे बारी तआला से मुशर्रफ़ होगा तो वह भी उसी सिफ़त पर देखेगा जिस सिफ़त में आज जानता है। अगर वह दीद इसके ख़िलाफ़ होगी तो कल की रोइयत या तो सही न होगी या उसका इल्म दुरुस्त न होगा। हालांकि यह दोनों सिफ़तें तौहीद के मनाफ़ी हैं इसलिये कि मख़लूक़ को इसका इल्म जो आज हासिल है वह उसी की तरफ़ से दुरुस्त है कल उसकी रोइयत भी उसी की तरफ़ से दुरुस्त होगी। लिहाज़ा इल्मुल यक़ीन ऐनुल यक़ीन की मानिंद और हक़्क़ुल यक़ीन इल्मुल यक़ीन की मानिंद होगा। वह हज़रात जो ऐनुल यक़ीन के बारे में कहते हैं कि रोइयत में इल्म का इस्तग़राक़ होता है। यह मुहाल है इसलिये कि रोइयत हुसूले इल्म के लिये एक ज़रिया और आला है जैसे कि सुनना एक ज़रिया है। जबकि इल्म का इस्तग़राक़ सुनने में मुहाल है तो रोइयत में भी मुहाल है। लिहाज़ा अहले तरीक़त के नज़दीक इल्मुल यक़ीन से मुराद, दुनियावी मामलात में अवामिर व अहकाम का जानना है और ऐनुल यक़ीन से मुराद, जान की और दुनिया से कूच करने के वक़्त का इल्म है और हक़्क़ुल यक़ीन से मुराद जन्नत में रोइयत का कश्फ़ और उसके अहवाल के मुआयना की कैफ़ियत है। गोया इल्मुल यक़ीन उलेमा का दर्जा है कि वह अहकाम व अवामिर पर इस्तेक़ामत रखते हैं और ऐनुल यक़ीन आरिफ़ों का मक़ाम है कि वह मौत के लिये हमेशा तैयार रहते हैं और हक़्क़ुल यक़ीन महबूबाने ख़ुदा के फ़ना का मकाम है कि वह तमाम मौजूदात से किनाराकश हो जाते हैं। इल्मुल यक़ीन मुजाहिदे से होता है ऐनुल यक़ीन उन्स व मुहब्बत से और हक़्क़ुल यक़ीन मुशाहिदे से और यह कि एक आम है दूसरा ख़ास तीसरा ख़ासुल ख़ास।

इल्म व मारिफ़त और इनका फ़र्क़

उल्माए उसूल इल्म व मारिफ़त के दर्मियान फ़र्क़ नहीं करते और दोनों को एक ही कहते हैं मगर आरिफ़ कहना जायज़ नहीं है चूंकि इसके तमाम असमा तौफ़ीक़ी हैं। लेकिन मशायख़े तरीक़त ऐसे इल्म को जो मामला और हाल से मुताल्लिक़ हो और उसका आलिम अपने हाल को इससे ताबीर करे मारिफ़त कहते हैं और उसके जानने वाले को आरिफ़ और जो इल्म ऐसा हो जिसके सिर्फ़ मअ़ने ही हों और वह मामला से ख़ाली हो उसका नाम इल्म रखते हैं और उसके

जानने वाले को आलिम कहते हैं लिहाज़ा वह शख़्स जो किसी चीज़ के मअ़ने और उसकी हक़ीक़त का आलिम हो उसका नाम आरिफ़ रख गया है और वह शख़्स जो सिर्फ़ इबारत जानता हो और उसके मानवी हक़ीक़त से आशना हो उसका नाम आलिम रखा गया है। यह तबक़ा जब इन मायनों को अपने हम ज़माना लोगों पर बयान करता है तो उनका इस्तेख़फ़ाफ़ करता है उनको दानिशमंद बनाता है और अवाम को मुन्किर उनकी मुराद उनके हुसूले इल्म की बिना पर उनकी मुज़म्मत करना नहीं होती बल्कि उनकी मुराद मामला को तर्क करने की बुराई ज़ाहिर होती है।

इसलिये कि आलिम अपनी ज़ात के साथ क़ायम होता है और आरिफ़ अपने रब के साथ। मारिफ़त से हिजाब कश्फ़ के बयान में बहुत कुछ तशरीह की जा चुकी है इस जगह इतना ही काफ़ी है।

शरीअ़त व हक़ीक़त और उनका फ़र्क़

शरीअत व हक़ीक़त, मशायख़े तरीक़त के दो इस्तेलाही कलिमे हैं। जिनमें से एक ज़ाहिर हाल की सेहत को वाज़ेह करता है और दूसरा बातिन के हाल की इक़ामत को बयान करता है उनकी तारीफ़ में दो तबक़े ग़लती में मुब्तला हैं। एक उल्माए ज़ाहिर हैं जो कहते हैं कि हम उनमें फ़र्क़ नहीं करते क्योंकि शरीअत, ख़ुद हक़ीक़त है और हक़ीक़त ख़ुद शरीअत है। दूसरा तबक़ा मुलहिदों व बे दीनों का है जो हर एक का क़ियाम एक दूसरे के बग़ैर जानते हैं और कहते हैं कि जब हाल हक़ीक़त बन जाए तो शरीअत उठ जाती है। यह नज़रिया मुशब्बा, क़रामिता, मुशब्बआ और मुसान का हैं। शरीअत व हक़ीक़त के जुदा होने पर दलील यह देते हैं कि महज़ तसदीक़ जो बग़ैर इक़रार के हो उसे ईमानदार नहीं बनाती। और न सिर्फ़ इक़रार बग़ैर तसदीक़ के उसे मोमिन बनाता है। क़ौल व तसदीक़ के दर्मियान फ़र्क़ ज़ाहिर है लिहाज़ा हक़ीक़त इसी मअ़ने की ताबीर है जिस पर नस्ख़ जायज़ नहीं है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से बनाए आलम तक उसका हुक्म क़ायम व यकसां है। मसलन मारिफ़ते हक़, मामला में ख़ुलूस नीयत वग़ैरह और शरीअत इस मअ़ने की ताबीर है जिस पर नस्ख़ व तबदील जायज़ है मसलन अहकाम व अवामिर वग़ैरह। शरीअत बंदा का फ़ेअल है और हक़ीक़त के वजूद के बग़ैर मुहाल है और हक़ीक़त का क़ियाम, शरीअत की हिफ़ाज़त के बग़ैर भी मुहाल है। इसकी मिसाल उस शख़्स की मानिंद है जो रूह के साथ ज़िन्दा हो। जब रूह उससे जुदा हो जाती है तो वह शख़्स मुर्दा

हो जाता है और रूह जब तक रहती है तो उसकी क़द्र व क़ीमत एक दूसरे के साथ रहने तक है। इसी तरह शरीअत बग़ैर हक़ीक़त के रिया है। और हक़ीक़त बग़ैर शरीअत के निफ़ाक़। अल्लाह तआला फ़रमाता है जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की यक़ीनन हमने उनको अपना रास्ता दिखाया। मुजाहिदा शरीअत है और हिदायत उसकी हक़ीक़त। एक बंदा के ज़िम्मे ज़ाहिरी अहकाम की हिफ़ाज़त है दूसरे हक़ तआला की हिफ़ाज़त जो बंदे के बातिनी अहवाल से ताल्लुक़ रखती है लिहाज़ा शरीअत अज़ क़िस्मे कस्ब है और हक़ीक़त अज़ क़िस्मे अताए रब्बानी है।

आख़िरी नोअ, दीगर मुसलेहाते मशायख़ के बयान में

इस आख़िरी नोअ में इन कलिमात की तारीफ़ है जो मशायख़े तरीक़त के कलाम में बतौर इस्तेलाह व इस्तेआरा मुस्तअ़मल हैं जिनकी तफ़सील व शरह और अहकाम ज़्यादा दुश्वार हैं इख़्तेसार के साथ बयान किये जाते हैं-

अलहक़ : इससे मशायख़े तरीक़त की मुराद रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते अक़दस है इसलिये कि उसके असमा में से हक़ भी एक नाम है जैसा कि यक़ीनन अल्लाह वही हक़ है। **अलहक़ीक़ता** इससे मुराद वस्ले इलाही के महल में बंदे का क़ियाम है और महले तंज़ीह में बंदे के बातिन का वक़ूफ़ है। **अलख़तरात** इससे मुराद तरीक़त के वह अहकामात हैं जो दिल पर गुज़रते हैं। **अलवतनात :** इससे मुराद वह मअ़ने हैं जो मुतवत्तिन के बातिन में वारिद हों। **अलतमस** ऐन की ऐसी नफ़ी कि उसका असर भी न रहे। **अलरमस** ऐन की ऐसी नफ़ी कि दिल पर उसका असर रहे। **अलअलायक** ऐसे असबाब हैं जिनसे तालिब ताल्लुक़ रखने की वजह से मुराद व मक़सूद से रह जाये। **अलवसाइत** ऐसे असबाब हैं जिनसे तालिब ताल्लुक़ रखकर मक़सूद व मुराद को हासिल कर ले। **अलज़वाइद** दिल में अनवार की ज़्यादती। **अलफ़वाइद** अपने ज़रूरी असरार का इदराक करना। **अलमलजा** अपनी मुराद के हुसूल में दिल पर एतेमाद करना। **अलमंजा** महले आफ़त से दिल का निजात पा जाना। **अलकुल्लियता** पूरे तौर पर बशरी औसाफ़ में मुस्तग़रक़ होना। **अललवायह** इसबात मुराद और वारदात की नफ़ी। **अइलवामेअ** दिल पर नूर का ज़ुहूर, उसके फ़वायद के बाक़ी रहने के साथ। **अलतवाएअ** दिल पर मारिफ़त के। **अलतवालइअ :** दिल का नूरे मारिफ़त से रौशन होना। **अलतवारिक़** शब बेदारी में इबादत व मनाजात के दौरान दिल पर ख़ुशख़बरी या फ़ित्ना की हालत

...तारी होना। **अस्सिर्र :** मुहब्बत व दोस्ती के मामले को पौशीदा रखना। **अलनजवा** राज़ व नियाज़ के ज़रिये तकालीफ़ व मसायब से तहफ़्फ़ुज़ हासिल करना ताकि ग़ैर को ख़बर न हो। **अलइशारतः** बग़ैर अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये अपना मतलब इशारतन बयान करना। **अलईमा :** जाहिरी इशारा और अल्फ़ाज़ के बग़ैर किसी दूसरी कैफ़ियत के ज़रिया कुछ बताना। **अलवारिदः** मअ़ने का दिलनशीन होना। **अलइंतेबाह :** दिल का होशियार होना और ग़फ़लत से बेदार होना। **अलइश्तेबाह :** किसी चीज़ का हक़ व बातिल के दर्मियान इस तरह मख़लूत होना कि हक़ीक़त का इम्तेयाज़ न हो सके। **अलक़रार :** किसी तरद्दुद के बग़ैर मामला की हक़ीक़त पर सुकूने दिल और क़रारे क़ल्ब का हासिल होना। **अलइंज़आज :** राहे रास्त पर होने के बावजूद हालाते इज़्तेराब में होना।

मज़कूरा इस्तेलाहात का मतलब निहायत मुख़्तसर बयान किया गया है।

तौहीद की वज़ाहत के लिये अहले तरीक़त की इस्तेलाहात

यह इस्तेलाहात इज़हारे एतेक़ाद के लिये बग़ैर इस्तेआरा के इस्तेमाल होती हैं। **अलआलम** आलम का मतलब ख़ुदा के अलावा तमाम मौजूदात व मख़लूक़ात जिनकी तादाद अट्ठारह हज़ार और बाज़ रिवायात के मुताबिक़ पचास हज़ार है। फ़लसफ़ियों के नज़दीक आलम की दो क़िस्में बुनियादी हैं। (१) आलमे अलवी या आलमे बाला (२) आलमे सफ़ली या आलमे दुनिया। हक़ीक़त शनास कहते हैं कि अर्श से तहतुस्सिरा यानी तमाम मख़लूक़ एक ही आलम है दर असल एक नोइयत की मख़लूक़ के इज्तेमा का नाम आलम है जिस तरह कि अहले तरीक़त के हां एक आलमे अरवाह है और दूसरा आलिमे नफ़ूस, मगर इन दोनों के एक जगह जमा होने का नाम आलम नहीं जैसा कि फ़लासफ़ा कहते हैं बल्कि आलिम दुनिया में आलमे अरवाह अलग है और आलम अजसाम या नफ़ूस अलग।

अलया मुहद्दिस : जो अदम से वजूद में आया हो।

अलक़दीम : जो तमाम मौजूदात से पहले हमेशा से था अब भी है और आइंदा भी रहेगा ख़्वाह दीगर मौजूदात रहें या न रहें यह सिर्फ़ ज़ाते बारी तआला है जिसके सिवा कोई हस्ती क़दीम नहीं।

अलअज़ल : जो आग़ाज़ व इब्तेदा से मावरा हो।

अलअबद : जो अंजाम व इंतेहा से बे नियाज़ हो।

अलज़ात : असलियत, हक़ीक़त, हस्ती और वजूद का नाम ज़ात है।

अलसिफ़त :कोई ख़ूबी जो बज़ाते ख़ुद क़ायम न हो मसलन इल्म व हुस्न वग़ैरह।

अलइस्म : किसी चीज़ की असलियत या कैफ़ियत का तार्रुफ़ी कलिमा या इशारा।

अलतसमिया : ऐसा तार्रुफ़ जिसमें अज़्मत का पहलू पोशीदा हो या नाम रखना।

अलनफ़ी : किसी फ़ानी चीज़ का न होना वाज़ेह करना।

अलअसबात : हो सकने वाली चीज़ का वजूद या होना साबित करना।

अलशयाआन : ऐसी दो चीज़ें जिनका वजूद एक दूसरे की मौजूदगी में जायज़ हो।

अलज़दान : ऐसी चीज़ें जिनमें से एक का वजूद दूसरे की मौजूदगी में किसी एक हालत पर जायज़ न हो अलबत्त मुख़्तलिफ़ हालतों में दोनों का वजूद अलग अलग जायज़ हो।

अलग़ीदान : दो चीज़ों में से एक का वजूद दूसरी की फ़ऩा के लिये जायज़ होना।

अलजौहर : किसी चीज़ का मादा या असल जो बज़ाते ख़ुद क़ायम हो।

अलअर्ज़ : ऐसी सिफ़त या कैफ़ियत जो जौहर के साथ क़ायम हो।

अलजिस्म : ऐसा मुरक्कब जो मुख़्तलिफ़ अजज़ा से तैयार किया गया हो।

अलसवाल : असलियत या हक़ीक़त मालूम करना।

अलजवाब : मतलूबा मालूमात मुहय्या करना।

अलहुस्न : ऐसी कैफ़ियत जो मुताल्लेक़ा चीज़ के मुनासिब हो और अम्र हक़ के मुवाफ़िक़ हो।

अलक़बीह : ऐसी हालत जो मुताल्लेक़ा चीज़ से मुनासिबत न रखती हो और अम्रे इलाही के मुख़ालिफ़ हो।

अलसफ़ा : हक़ीक़ी मामला को छोड़ देना।

अलज़ुल्म : किसी चीज़ का मुनासिब इस्तेमाल न करना और उसे मौज़ूं

मक़ाम न देना।

अलअदल : हर मामला में मुनासिब और मौज़ूं रवैया इख़्तेयार करना जिसके ज़रिये हर चीज़ अपना सहीह मक़ाम हासिल करे।

अलमलक : जिसके क़ौल व फ़ेअल पर एतेराज़ न हो सके।

यह ऐसी इस्तेलाहात हैं जिनसे हक़ीक़त के तलबगारों को वाकिफ़ होना बड़ा ज़रूरी है।

इस्तेलाहाते तसव्वुफ़ की चौथी और आख़िरी क़िस्म

यह इस्तेलाहात अहले लुग़त के ज़ाहिरी मअ़ने से मुख़्तलिफ़ सिर्फ़ सूफ़िया के दर्मियान रायज हैं जिनकी वज़ाहत व तशरीह ज़रूरी है।

अलख़ातिर : दिल में ऐसे ख़्याल या वसवसा का आना जो किसी दूसरे ख़्याल या वसवसा के आने पर ज़ायल हो जाये और इस ख़्याल को दिल से निकालने पर क़ुदरत हासिल हो। ख़्यालात की आमद के वक़्त पहले ख़्याल को ख़ुदा की तरफ़ से समझकर अहले मामला अपना लेते हैं और ख़्याले अव्वल की पैरवी करते हैं।

मसलन हज़रत ख़ैरुन निसाज के मुताल्लिक़ रिवायत है कि उनके दिल में यह ख़्याल आया कि हज़रत जुनैद बग़दादी इनके दरवाज़े पर मौजूद हैं मगर उसे वहम वसवसा समझकर दिल से निकालना चाहा तो अदमे मौजूदगी का ख़्याल आया, उसे दूर करने की कोशिश की तो तीसरा ख़्याल पैदा हुआ कि बाहर ही चलकर देख लें चुनांचे आप बाहर निकले तो हज़रत जुनैद दरवाज़े पर मौजूद थे। उन्होंने फ़रमाया ऐ ख़ैर! अगर आप सुन्नते मशायख़ पर अमल करते हुए ख़्याले अव्वल की पैरवी करते तो मुझे इतनी देर इंतेज़ार न करना पड़ता। इस वाक़िया के मुताल्लिक़ मशायख़ ने यह सवाल पेदा किया कि अगर हज़रत ख़ैरुल निसाज के दिल में आने वाला पहला ख़्याल ही ख़ातिर था तो हज़रत जुनैद किस ख़्याल में दरवाज़ा पर खड़े हुए थे? इसका जवाब बुज़ुर्गों ने ख़ुद दिया है कि हज़रत जुनैद चूंकि हज़रत निसाज के पीर व मुरशिद थे लिहाज़ा इन्हें अपने मुरीद को राहे तरीक़त में ख़ातिर का मसला बताना था जो आपने बता दिया।

अलवाक़ेअ : वाक़ेअ़ से मुराद दिल में पैदा होने वाली वह कैफ़ियत जो

ख़ातिर के बिल अक्स हो यानी मुस्तकि़ल दिल नशीन होकर नाक़ाबिले ज़वाल हो और न उसे दूर करने पर कु़दरत हासिल हो चुनांचे एक मुहावरा है यानी मेरे दिल पर एक ख़्याल गुज़रा और वाकि़या या बात मेरे दिल में बैठ गयी।

ख़्यालात तो तमाम दिलों में आते हैं मगर वाकि़यात सिर्फ़ हक़ तआला के नूर से मामूर दिलो में वाक़ेय होते हैं इसी वजह से राहे हक़ में रुकावट पैदा होने का नाम कै़द है जिसे कहा जाता है कि एक वाकि़या ज़ाहिर हो गया यानी मुश्किल पैदा हो गयी। अहले लुग़त वाकि़या ऐसी मुश्किल को कहते हैं जो मसायल हल करने के सिलसिला में पेश आती है जब वह मसला हल हो जाये या उसका मुकम्मल जवाब मिल जाये तो कहा जाता है कि वाकि़या हल हो गया यानी मुश्किल ख़त्म हो गयी अहले तहक़ीक़ कहते हैं कि हल न होने वाला मामला वाकि़या होता है और अगर हल हो जाये तो वह ख़्याल (ख़ातिर) होता है वाकि़या नहीं क्योंकि अहले तहक़ीक़ किसी अज़ीम मामला ही में रुक सकते हैं छोटी छोटी और मामूली बातें तो वह इशारों से हल कर लेते हैं। ख़्याल तो ख़ुद बख़ुद बदलते रहते हैं इन्हें हल करने की चंदां ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

अलइख़्तेयार : अपने इख़्तेयार पर इख़्तेयारे मौला को तरजीह देकर राज़ी बरज़ा होना और ख़ैर व शर में जो ख़ुदा ने उनके लिये पंसद फ़रमाया उसे क़बूल करना। और यह राज़ी बरज़ा होना या इख़्तेयारे मौला को पसंद करना भी तो हक़ तआला के इख़्तेयार और मर्ज़ी से होता है इसमें भी ज़ाती इख़्तेयार की नफ़ी हो जाती हं। अगर इख़्तेयारे इलाही की बरतरी क़बूल न की जाती तो बंदा अपने इख़्तेयार को छोड़ना कब गवारा कर सकता था। हज़रत बा यज़ीद से पूछा गया कि अमीन कौन है? आपने फ़रमाया कि जिसे ज़ाती इख़्तेयार हासिल न हो और इख़्तेयारी मालिक को उसने क़बूल कर लिया हो। हज़रत जुनैद से रिवायत है कि आपने बुख़ार में दुआ फ़रमाई कि ख़ुदाया! मुझे सेहत अता फ़रमा। ज़मीर से आवाज़ आयी कि हमारे मुल्क में अपनी तदबीर इख़्तेयार करने वाला तू कौन होता है मैं अपने मुल्क के निज़ाम को तुझसे बेहतर जानता हूं राज़ी बरज़ार हो और अपने आपको साहबे इख़्तेयार ज़ाहिर न करो।

अलइम्तेहान : इससे मुराद औलियाए किराम के दिलों की आज़माईश है यह आज़माईश बज़रिये ख़ौफ़, ग़म, क़ब्ज़ और हैबत वग़ैरह की जाती है इम्तेहान के मुताल्लिक़ हक़ तआला ने यूं बयान फ़रमाया यानी यही वह लोग है जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वा (अता करने) के लिये इम्तेहान व

आज़माईश में डाला, ऐसे परहेज़गारों के लिये बख़्शिश और अज्रे अज़ीम है और यह दर्जा बहुत बुलंद है।

अलबला : बीमारियों और तकालीफ़ के ज़रिये औलिया के जिस्मों की आज़माईश जिसमें दिल भी शरीक होते हैं बला के ज़रिये जिस क़द्र मुसीबत और परेशानी बढ़ती है उसी क़द्र क़ुर्बे इलाही में इज़ाफ़ा होता है क्योंकि दुख दर्द औलिया का लिबास, बुज़ुर्गों का मसकन और अंबिया की लाज़मी सिफ़त है आपको याद होगा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम गरोहे अंबिया तमाम लोगों की निसबत आज़माईश में ज़्यादा मुब्तला होते हैं और मज़ीद यह फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा मुसीबत में अंबिया होते हैं फिर औलिया, फिर वह लोग जो ज़्यादा बुज़ुर्ग होते हैं फिर जो उनकी तरह बुज़ुर्ग हों मुख़्तसरन बला दर असल जिस्म और दिल की बयक वक़्त आज़माईश होती है जो ख़ुदा की तरफ़ से बंदाए मोमिन के लिये होती है और इम्तेहान सिर्फ़ दिले मोमिन की आज़माईश का नाम है। बला और आज़माईश मोमिन के लिये एक नेमत होती है जिसका ज़ाहिर तकलीफ़दह और असल मीठा फल होता ही मगर काफ़िर के लिये वबाले जिस्म व जान और ज़रियाए बदबख़्ती है जिससे छुटकारा मिलना मुश्किल है।

अलतहल्ली : किसी अच्छी क़ौम के अक़वाल को अपनाना जिससे अच्छाई पैदा हो तहल्ली कहलाता है जैसा कि अक़वाले ज़र्री जो मुख़्तलिफ़ क़ौमों के दाना और अक़्लमंदों ने बयान किये हैं सिर्फ़ तहल्ली से ईमान पैदा नहीं होता जैसा कि रहबरे आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यानी ईमान किसी तरह अच्छी क़ौम के अक़वाल क़बूल करने या उनकी तरह बनने की ख़्वाहिश का नाम नहीं बल्कि जो कुछ दिल में बैठ जाये और उसकी तसदीक़ अमल से हो जाये तो वह हक़ीक़त में ईमान कहलाता है। चुनांचे किसी गरोह की बग़ैर अमल के बातों में मुशाबहत करना तहल्ली है और यह तरीक़ा रुसवा कुन है क्योंकि असल काम अमल है और बे अमली की वजह से अहले तहक़ीक़ की नज़र में वह पहले ही से ज़लील होते हैं और उनकी हक़ीक़त वाज़ेह होती है।

अलतजल्ली : औलिया का दिल की आंख से अनवारे इलाही और ज़ाते हक़ का इस तरह मुशाहिदा करने के क़ाबिल होना कि वह चाहें तो देखें और न चाहें तो न देखें। तजल्ली के मुक़ाबला में रोइयत है जो सर की आंखों से

देखने का अमल है यह अहले जन्नत को हासिल होगा और वहां रोइयते हक़ लाज़मी होगी क्योंकि तजल्ली के लिये पर्दा जायज़ है और रोइयत के लिये नाजायज़ रोइयत बहर सूरत होती है ख़्वाह चाहें या न चाहें (जैसा कि आंख खोलने पर यह ना मुमकिन है कि कुछ न देखा जाये)।

अलतख़ली : कुर्बे इलाही में आड़ बनने वाली मसरूफ़ियात से किनारा कश हो जाना, इस सिलसिला की एक कड़ी दुनिया है और दूसरी आख़िरत इन दोनों से दस्तबरदार होकर तीसरी कड़ी ख़्वाहिशे नफ़्स की मुख़्तलिफ़ और लोगों से अलाहदगी इख़्तेयार करना और आख़री कड़ी दिल से दुनियावी, उखरवी नफ़्सानी और इंसानी वसवसों और अंदेशों को दूर करने का नाम तखली या तखलिया है।

अलशरूद : इसका मतलब आफ़तों, हिजाबों और बेक़रारी से निजात तलब करना है क्योंकि तालिबे हक़ पर जो मुसीबत आती है वह हिजाब से आती है, इस पर्दे और हिजाब को खोलने के लिये तदबीर, तजवीज़ और किसी अमल का नाम शरूद है जिसका नतीजा सुकूं है क्योंकि तालिबाने हक़ को शुरू में बेचैनी होती है और आख़िरकार इत्मीनान व सुकून।

अलक़सूद : मक़सद हासिल करने के लिये अज़्मे, समीम और सहीह इरादा करना। औलिया का क़सद व इरादा हरकत और सुकून के साथ मशरूत नहीं क्योंकि दोस्त दोस्ती के मामला में हर वक़्त पुर अज़्म होता है और यह आदत के ख़िलाफ़ है कि इंसान ख़्वाह मुतहर्रिक हो या साकिन बग़ैर किसी इरादा के हो क्योंकि अगर हरकत में है तो इरादा का इज़हार हरकत से होता है और अगर सुकून में हो तो उसका इरादा पोशीदा होता है और इसके आसार ज़ाहिर होते रहते हैं मगर औलियाए हक़ को यह मुक़ाम हासिल होता है कि उनकी हरकत व सुकूनत ही क़सद और इरादा का लबादा ओढ़ लेती है और तमाम सिफ़ात क़सद बन जाती हैं और जब मक़ामे मुहब्बत हासिल हो जाता है तो सरापा क़सद व इरादा बन जाते हैं।

अलइसतेनाअ : इससे मुराद अल्लाह तआला का मोमिन को तमाम मामलाते दुनियावी से मुबर्रा लज़्ज़ते इंसानी से आरी और ख़्वाहिशात व सिफ़ाते इंसानी से ख़ाली करके मुहज़्ज़ब बनाना है, इस तरीक़ा से वह होश व हवास की गिरफ़्त से आज़ाद होकर मा सिवा अल्लाह से बे नियाज़ हो जाता है यह इस्तेलाह गरोहे अंबिया से मुताल्लिक़ है। अलबत्ता बाज़ मशायख़ औलिया

को भी इसमें शामिल करते हैं।

अलउसतफ़ाअ : अल्लाह तआला का बंदा के दिल को ख़ास अपनी मारिफ़त के लिये मुन्तख़ब करना ताकि अपनी मारिफ़त की जला उसके दिल में भर दे। यह दर्जा अंबिया व औलिया के अलावा हर ख़ास व आम, फ़रमांबर्दार व नाफ़रमान सबके लिये आम है जैसा कि हक़ तआला ने फ़रमाया यानी हमने फिर उन लोगों को किताब दी जिन्हें हमने अपने बंदों में से मुन्तख़ब किया, चुनांचे इनमें से बाज़ तो अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले हैं और बाज़ मियाना रौ हैं और बाज़ नेक कामों में सबक़त करने वाले हैं।

अलतेलसताम : एक लतीफ़ आज़माईश के ज़रिये बंदा के इरादा को ज़ायल और फ़ना करके ग़ल्बए हक़ का बंदा पर मुसल्लत होकर दिल का इम्तेहान लेना। क़लबे मुमतहन आज़माया हुआ दिल और क़लबे मुसतलम (जड़ से उखाड़ा हुआ दिल) दोनों हम मअ़ने हैं अलबत्ता इम्तेहान की निसबत इस्तलाम ख़ास और लतीफ़ है।

अलरेन : दिल पर कुफ़्र व गुमराही का ऐसा पर्दा जो सिर्फ़ नूरे ईमान से दूर हो सकता है जैसा कि कुफ़्फ़ार के मुताल्लिक़ हक़ तआला ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं कि वह अपनी मर्ज़ी से कुफ़्र करते हैं बल्कि जो कुछ वह कुफ़्र व शिर्क किया करते थे (इसी की वजह से) उनके दिलों पर एक क़िस्म का ज़ंग यानी पर्दा पड़ गया है। बाज़ के नज़दीक रेन ऐसा हिजाब है जो किसी तरह ज़ायल नहीं होता बल्कि काफ़िरों का दिल इस्लाम क़बूल नहीं करता और अगर वह मुसलमान हो जाते हैं तो यह इल्मे इलाही में पहले ही होता है।

अलग़ैन : ग़ैन उस पर्दे को कहते हैं जो बज़रिये इस्तिगफ़ार ज़ायल हो जाता है उसकी दो क़िस्में हैं खफ़ीफ़ और ग़लीज़। हिजाबे ग़लीज़ ग़ाफ़िल और कबीरा गुनाह करने वालों के लिये होता है और ख़फ़ीफ़ हिजाब सबके लिये ख़्वाह वली हों या नबी जिसकी तरफ़ इशारए नबवी भी है कि कभी कभी मेरे दिल पर एक ख़फ़ीफ़ सा पर्दा छाने लगता है तो मैं उसकी मुदाफ़अत के लिये रोज़ाना सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूं चुनांचे खफ़ीफ़ पर्दा के लिये सिर्फ़ रुजूअइल्ल्लाह काफ़ी है और हिजाबे ग़लीज़ के लिये तौबा शर्त है तौबा के मअ़ना गुनाह से नेकी की तरफ़ लौटना हैं और रुजूअ का मतलब अपने इरादा व इख़्तेयार से दस्तबरदार होकर अपने आपको ख़ुदा के सुपुर्द करना है। नीज़ तौबा जुर्म से की जाती है और जुर्म आम बंदों का ख़ुदा की नाफ़रमानी है और ख़ास बंदों

यानी औलिया का अपने आपको समझना या देखना है। जो जुर्म से तौबा करता है उसे तायब कहते हैं, जो ग़ैरों से अलग होकर खुदा की तरफ़ लौटे उसे इनाबत कहते हैं और जो अपने वजूद से भी बे नियाज़ होकर राज़ी बरज़ा हो जाये उसे अव्वाब कहते हैं। इस सिलसिले की मुफ़स्सल तशरीह तौबा के बयान में कर दी गयी हैं।

अलतलबीस : किसी चीज़ को असलियत व हक़ीक़त के बरअक्स दिखाकर वहम में मुब्तला करना जैसा कि बयाने बारी तआला है जो कुछ वह हक़ व बातिल में मिलाकर मामला को पेचीदा करते हैं तो हमने भी इन्हें शुबह में डाल दिया। यह सिफ़त अल्लाह तआला के सिवा किसी और में नहीं हो सकती क्योंकि वह काफ़िर पर इनाम करके मोमिन ज़ाहिर करता है और मोमिन को नेमत से मालामाल करके उसे कुफ़्र करने का मौक़ा देता है। जब इनमें से कोई शख़्स उम्दा आदतों को बुरी सिफ़ात से तब्दील करके हक़ीक़त को छुपाता है तो कहते हैं कि वह तलबीस कर रहा है। इसके अलावा किसी और मअ़्ने में यह इस्तेलाह इस्तेमाल नहीं होती। निफ़ाक़ व रिया अगरचे बज़ाहिर तलबीस मालूम होते हैं मगर हैं नहीं क्योंकि तलबीस सिर्फ़ हक़ तआला के किसी फ़ेअल पर बोला जा सकता है।

अलशर्ब : इबादत व इताअत की मिठास, अज़मत व बुज़ुर्गी का मज़ा और उन्स व मुहब्बत की खुशी का नाम शर्ब है। लज़्ज़ते शर्ब के बग़ैर इंसान कोई काम नहीं कर सकता जिस तरह जिस्म के लिये पानी और गिज़ा में और रूह के लिये ज़िक्र व इबादत में लज़्ज़त है मगर यह दोनों उसी वक़्त काम करते हैं जब इन्हें लज़्ज़त हासिल होती है। मेरे शैख़ फ़रमाते हैं कि मुरीद और आरिफ़ बग़ैर शर्ब के मारिफ़त और इरादत से बेगाना होते हैं क्योंकि मुरीद के लिये शर्ब व लज़्ज़त हासिल होने से इरादत और तलबे हक़ की राह हमवार होती है और आरिफ़ को भी खुदा की मारिफ़त की लज़्ज़त हासिल हो तो वह आराम व सुकून महसूस करेगा जो मज़ीद तरक़्क़ी का सबब होता है।

अलज़ौक़ : ज़ौक़ भी शर्ब की तरह है अलबत्ता शर्ब सिर्फ़ आराम व राहत के लिये इस्तेमाल होता है और ज़ौक़ रंज व राहत दोनों सूरतों में मुस्तअमल है चुनांचे एक आरिफ़ ने कहा है कि मैंने हलावत व मुसीबत और अराम का मज़ा चखा यह दुरुस्त जुमले हैं बाद में शर्ब के मुताल्लिक़ कहते हैं कि शरबत (मैंने वस्ल या मुहब्बत का प्याला पिया) इस तरह की और भी मिसालें हैं बक़ौले

ख़ुदा यानी मज़े से खाओ ओर पियो और जब ज़ौक़ को इस्तेमाल किया तो फ़रमाया यानी ऐ मुअ़ज़्ज़ाज़ मुकर्रम आप चख लें दूसरी जगह फ़रमाया कि यानी ज़ौक़ की आग लगने का मज़ा चखो।

सूफ़िया व अहले तरीक़त के हां जो इस्तेलाहात रायज हैं इनका मुख़्तसरन तज़किरा कर दिया है अगर तफ़सील की जाती तो यह किताब तवील हो जाती।

ग्यारहवां कश्फ़ हिजाब

बसिलसिला समाअ़ और उसके अक़साम व अनवाअ

सुबूत सिमअ : ऐ अज़ीज़! ख़ुदा आपको सआदत मंद बनाये आपको मालूम होना चाहिये कि इल्म हासिल करने के पांच ज़राए हैं जिन्हें हवासे ख़मसा कहा जाता है, सुनना, देखना, चखना, सूंघना, छूना, इंसान हर क़िस्म का इल्म इनमें से किसी एक ज़रिया से हासिल कर लेता है मसलन आवाज़ों का इल्म कुव्वते समाअत से होता है, देखने की सलाहियत आंख में है, मीठे कड़वे का फ़र्क़ जुबान से होता है अच्छी बुरी बू का पता नाक से लगता है और किसी चीज़ की सख़्ती व नर्मी, गर्मी व सर्दी वग़ैरह कुव्वते हिस या लमस यानी छूने से मालूम होती है इनमें से कुव्वते हिस या लमस पूरे बदन में फैली हुई है और बाक़ी हवास या ज़राए ख़ास मक़ाम से मुताल्लिक़ हैं क्योंकि इंसान आंख के बग़ैर देख नहीं सकता, कान के अलावा सुन नहीं सकता जुबान और तालू के सिवा चख नहीं सकता और नाक न हो तो सूंघ नहीं सकता, किसी हद तक यह कहना जायज़ है कि हर एक हिस सारे जिस्म में फैली हुई (जिस तरह सांप देखने से पूरा जिस्म मोहतात हो जाता है और ख़ुश अलहानी सुनने से पूरा जिस्म लुत्फ़ अंदोज़ होता है) मगर मोतज़ला के नज़दीक हर एक हिस का ख़ास मक़ाम है ताहम कुव्वते हिस या लमस से उनकी तरदीद हो जाती है क्योंकि यह पूरे बदन में फैली हुई है। जिस तरह एक कुव्वत पूरे जिस्म में फैली हुई है तो दूसरी भी इसी तरह सारे जिस्म में फैली हुई हो सकती हैं जैसा कि इशारतन पहले ज़िक्र कर दिया गया है मगर यहां उसकी तफ़सील मतलूब नहीं सिर्फ़ तहक़ीक़ मक़सूद थी। कुव्वते समाअत के अलावा दीगर चार हवास यानी नादिराते आलम को देखना, ख़ुश्बू को सूंघना, उम्दा नेमतों को चखना और नर्म व गर्म को छूना अक़्ल के लिये रहनुमा बन सकते हैं और यह रहनुमाई ख़ुदा की तरफ़ से होती है क्योंकि इन हवास की बदौलत अक़्ल ने यह मालूम किया कि

मुशाहिदा करने से यह आलम हादिस मालूम होता है ख़ालिक़ कायनात पर क़दीम और ला मतनाही है जबकि आलम हादिस और मुतनाही है नीज़ ख़ालिक़ पूरी कायनात पर क़ादिर है और सब कायनात से ज़्यादा ताक़तवर है वह जिस्म व जान बनाने वाला है मगर कायनात की मिस्ल जिस्म व जान रखने वाला नहीं चुनांचे हर सू उसकी क़ुदरत जारी है जो चाहे सो करे, वही है जिसने रसूलों को सहीह और सच्ची हिदायात देकर कायनात की रहनुमाई के लिये भेजा। मगर इन रसूलों पर ईमान लाना उस वक़्त तक वाजिब नहीं होता जब तक हक़ तआला की मारिफ़त हासिल न हो और रसूल से शरअ व दीन से मुताल्लिक़ बातों को सुन न ले कि कौन कौन सी बात वाजिब (फ़र्ज़) है। यही वजह है कि अहले सुन्नत के नज़दीक सुनना देखने से ज़्यादा क़ाबिल तरजीह और फ़ज़ीलत वाला है। अगर कोई सतह बीन यह कहे कि सुनना तो सिर्फ़ ख़बर की हद तक है जबकि देखना दीदार और नज़ारा का सबब है। दीदारे इलाही कलामे इलाही सुनने से अफ़ज़ल है लिहाज़ा कुव्वते बसारत को समाअत पर अफ़ज़ल माना जाये तो उसका जवाब यह है कि हमें यह सुनकर ही तो मालूम हुआ कि जन्नत में दीदारे ख़ुदा नसीब होगा और अक़्ल के ज़रिये दीदार के जायज़ होने में जो हिजाब वाक़ेअ होता है वह भी कुव्वते समाअत को इस्तेमाल करने से दूर हो जाता है क्योंकि अक़्ल ने रसूल की ख़बर सुनने से तसलीम कर लिया कि दीदार नसीब होगा (वरना ज़ाहिरी तौर पर कोई दलील नहीं) और आंखों से हिजाब दूर हो जायेगा ताकि वह ख़ुदा को देख लें इस लिहाज़ से सुनना देखने से अफ़ज़ल है। अलावा अज़ीं अहकामे शरीअत का इनहेसार भी सुनने पर है क्योंकि सुनना न हो तो इसबात या नफ़ी नहीं हो सकती, अंबिया पैग़ामे हक़ सुनाते और लोग सुनकर क़बूल करते और उनके फ़रमां बरदार व जां निसार बन जाते, मोजिज़ा दिखाने के लिये भी उसकी हक़ीक़त बताई जाती है और लोग सुनकर हक़ीक़त देखने की तमन्ना करते। इन दलायल के बावजूद अगर कोई सुनने यानी समअ की फ़ज़ीलत से इंकार करता है तो असरारे शरीअत और हक़ायक़ का इंकार करता है और समअ़ के मामला में वह अ़मदन गफ़लत बरतता है और उसकी हक़ीक़त पोशीदा रखता है। अब मैं समाअ़ के मुताल्लिक़ अहकाम व उमूर को बयान करता हूं।

कुरआन मजीद का सुनना और उसके मुताल्लेक़ात

तमाम सुनी जाने वाली बातों से ज़्यादा अहम, दिल के लिये मुफ़ीद ज़ाहिर व बातिन के लिये बाइसे तरक़्क़ी और कानों के लिये लज़ीज़ कलामे इलाही है सब ईमानदारों को इसके सुनने का हुक्म दिया गया है और जिन्नों, इंसानों को बशमूल कुफ़्फ़ार कलामे इलाही सुनने का मुकल्लफ़ बनाया गया है। कुरआन के मोजिज़ात में से एक मोजिज़ा यह भी है कि तबीयत उसके सुनने और पढ़ने से बेचैन नहीं होती क्योंकि इसमें बहुत ज़्यादा रिक़्क़त मौजूद है हत्ता कि कुफ़्फ़ारे कुरैश रात को छिपकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ में किराअत व तिलावत शौक़ से सुनते थे और कुरआन की लताफ़त व रिक़्क़त पर हैरान होते थे जिनमें से मशहूर कुफ़्फ़ार यह हैं नज़र बिन हारिस जो सबसे ज़्यादा फ़सीह था, उक़बा बिन रबीअ जो बलाग़त का जादू रखता था और अबू जहल उमर बिन हश्शाम जो ख़िताबत और दलायल में माना हुआ शख़्स था नके अलावा और भी बहुत से लोग हैं।

एक रात हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तिलावत सुनकर उतबा बेहोश हो गया और बाद में अबू जहल को बताया कि यह इंसानी कलाम मालूम नहीं होता इंसानों और जिन्नों ने गरोह गरोह होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुरआन सुना और कहने लगे कि हमने अजीब कलाम पढ़ते हुए सुना (यह जुम्ला उन्होंने वापस जाकर अपने दूसरे जिन्नों को सुनाया) इसकी ख़बर भी हमें कुरआन ने दी और बताया कि यह कुरआन राहे रास्त और हिदायत की रहनुमाई करता है लिहाज़ा हम (सुनकर) उस पर ईमान लाए और आइंदा हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे चुनांचे कुरआन की नसीहत दूसरी तमाम नसीहतों से बेहतर, इसका हर लफ़्ज़ दूसरे तमाम अल्फ़ाज़ से वाज़ेह इसका हर हुक्म दूसरे अहकामात से लतीफ़, इसका रोकना दूसरी तमाम रुकावटों से ज़्यादा मुनासिब इसका वादा दीगर तमाम वादों से ज़्यादा दिलकश, इसकी डांट दूसरी तमाम डांटों से ज़्यादा जामेअ और जांगुदाज़, इसका हर क़िस्सा दूसरे तमाम क़िस्सों से ज़्यादा मोअस्सिर इसकी मिसालें दूसरी तमाम मिसालों से ज़्यादा सबक़ आमोज़ जिसकी वजह से हज़ारों जानें इस पर कुरबान हुई और हज़ारों दिल इसके गरवीदा हुए। (इसकी अजीब ख़ासियत है) कि दुनिया के इज़्ज़त वालों को ज़लील करता है और दुनिया ही के धुतकारे हुए ज़लीलों को बा इज़्ज़त बनाता है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम क़बूल करने से पहले

अपनी बहन और अपने बहनोई के मुसलमान होने की ख़बर को सुनकर तलवार सोंत कर सिलसिलए इस्लाम को ख़त्म करने चलते हैं मगर जब बहन के घर पहुंचकर कलामे इलाही में से सूरः ताहा के असर अंगेज़ अल्फ़ाज़ यानी यह कुरआन हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसलिये नहीं उतारा कि आप मुशक़्क़त व तकलीफ़ में पड़ जायें यह तो डरने वालों के लिये नसीहत और याद करने वालों के लिये नसीहत और यादे दहानी है और इसी तरह के दूसरे अल्फ़ाज़ सुने तो आपकी रूह को (कुफ़्र की तारीकी में) रौशनी नज़र आयी और आपका दिल कुरआन के लतीफ़ हक़ायक़ से मानूस हो गया, आप सुलह के तरीक़े ढूंढने लगे। लड़ाई का लिबास उतारकर मुख़ालिफ़त से मवाफ़िक़त की तरफ़ लौटे और इस्लाम क़बूल कर लिया। (यह सिर्फ़ सुनने, समाअ़ की बरकत थी) मशहूर है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समाने यह आयात पढ़ी गयीं यानी बिलाशुबह हमारे पास बेड़ियां और दोज़ख़ है और गले में अटकने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है तो आप पर ग़शी तारी हो गयी कहते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत उमर के सामने यह आयत पढ़ी बेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़ेअ़ होने वाला ही है जिसे कोई टालने वाला नहीं तो हज़रत उमर बेहोश हो गये और एक माह तक बीमार रहे एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हल्ज़ला के समाने यह आयत पढ़ी (उन कुफ़्फ़ार के लिये दोज़ख़ की आग बतौर बिछौना और ओढ़ना होगी) तो वह रोने लगे और इस क़दर साकित हो गये कि उनकी मौत का अंदेशा हुआ, बादहू आप उठ खड़े हुए तो लोगों ने कहा कि बैठ जाइये तो आपने फ़रमाया कि इस आयत की हैबत से मैं बैठ नहीं सकता। जब हज़रत जुनैद के सामने यह आयत पढ़ी गयी यानी ऐ ईमान वालो वह बात क्यों कहते हो जिसके मुताबिक़ तुम खुद अमल नहीं करते तो आपने फ़रमाया कि ऐ खुदा! अगर हम कुछ कहते हैं तो तेरे हुक्म से कहते हैं और अगर कोई अमल करते हैं तो तेरी तौफ़ीक़ से करते हैं ऐसी सूरत में हमारा क़ौल व फ़ेअल कहां रहा? हज़रत शिबली के मुताल्लिक़ मशहूर है जब आपके सामने यह आयत पढ़ी गयी यानी जब तू ग़ाफ़िल हो जाये तो ख़ुदा को याद किया कर तो आपने फ़रमाया कि ज़िक्र की शर्त भूल जाना है जबकि सारा आलम इसकी याद में महव है (मगर इंसान भूला ही रहता है यह कहकर आप बेहोश हो गये जब होश में आये तो कहा इस दिल पर ताज्जुब हुआ जो कलामे इलाही सुनकर अपनी जगह क़ायम रहे और

उस जान पर हैरानी है जो कलामे ख़ुदा सुनकर जिस्म से न निकले।

एक शैख़ फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा मैंने कलामे इलाही में से यह आयत पढ़ी (उस दिन से डरो जिस दिन तुम ख़ुदा की तरफ़ लौटाए जाओगे) तो हातिफ़ ने आवाज़ दी कि आहिस्ता पढ़ो इसकी हैबत से चार जिन्न फ़ौत हो गये। एक दरवेश ने बताया कि मैंने दस साल से नमाज़ में पढ़ने के अलावा न तो कुरआन ख़ुद पढ़ा और न दूसरों से सुना, लोगों ने पूछा क्यों? फ़रमाया कि इस अंदेशा से कि पढ़ने या सुनने से उस पर अमल करना ज़रूरी होगा और हुज्जत पूरी हो जायेगी। एक दफ़ा मैंने हज़रत शैख़ अबुल अब्बास शक़ानी को यह आयत पढ़ते हुए सुना यानी अल्लाह तआला ने एक ऐसे गुलाम की मिसाल दी है जो किसी दूसरे का ममलूक है और बज़ाते ख़ुद सिकी काम करने का मुख़्तार नहीं। तिलावत के साथ साथ आप रो रहे थे हत्ता कि मैंने इन्हें फ़ौत शुदा ख़्याल किया मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत यह क्या मामला है? उन्होंने जवाब दिया कि तक़रीबन ग्यारह साल से मैं सिर्फ़ यहां तक तिलावत करता हूं आगे पढ़ नहीं सकता और बढ़ नहीं सकता। मैंने हज़रत अबुल अब्बास से पूछा कि आप रोज़ाना कितना कुरआन पढ़ते हैं तो उन्होंने फ़रमाया कि आज से चौदह साल पहले तो एक रात दिन में दो कुरआन ख़त्म करता था मगर बाद में आज तक सिर्फ़ सूरः अनफ़ाल तक पहुंचा हूं। एक दफ़ा हज़रत अबुल अब्बास ने एक क़ारी से तिलावत करने को कहा तो उसने यह आयत पढ़ी। यानी ऐ अज़ीज़े मिस्र! हमें और हमारे अहल व अयाल को फ़ाक़ा की सख़्त तकलीफ़ है और हमारे पास सरमाया बहुत थोड़ा है आपने फ़रमाया और पढ़ तो क़ारी ने पढ़ा यानी कहने लगे अगर उसने चोरी की है तो इससे पहले उसके भाई ने भी चोरी की थी आपने फिर पढ़ने का हुक्म दिया तो उसने पढ़ा यानी आज के दिन तुम पर कोई मलामत नहीं ख़ुदा तुम्हें माफ़ फ़रमाये। इसके बाद हज़रत अबुल अब्बास ने यूं दुआ की कि ऐ ख़ुदा मैं जुल्म में बिरादराने यूसुफ़ से बढ़कर हूं और तू लुत्फ़ व करम में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बढ़कर है, मेरे साथ वह सुलूक कर जो हज़रत ने अपने ज़ालिम भाईयों के साथ किया।

इन तमाम बातों के बावजूद मुत्तक़ी व गुनाहगार तमाम मुसलमान कुरआन सुनने के लिये मुकल्लफ़ हैं जैसा कि हुक्मे हक़ तआला है यानी जिस वक़्त कुरआन पढ़ा जाये तो आप उसे सुनें और ख़ामोश रहें ताकि तुम पर रहमते हक़ का नुज़ूल हो इससे समाअ़ए कुरआन का बहर सूरत हुक्म है ख़्वाह क़ारी किसी

तरह पढ़ रहा हो। अलावा अज़ीं यानी मेरे उन बंदों को खुशख़बरी दे दीजिये जो कुरआन सुनने के बाद इस बेहतर कलाम की पैरवी करते हैं यानी इसके अहकाम पर अमल करते हैं। नीज़ फ़रमाया कई लोग ऐसे भी हैं कि जब उनके सामने खुदा का ज़िक्र किया जाये तो उनके दिल ख़ौफ़े इलाही से कांप उठते हैं और ऐसे लोग भी हैं जो ईमान लाए और उनके दिल खुदा के ज़िक्र से मुतमईन हो जाते हैं और हकीकत भी यह है कि खुदा के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है। इस तरह की बहुत सी आयात हैं जो इस हकीकत की ताईद करती हैं कि इसके बरअक्स उन लोगों की बदबख़्ती का ज़िक्र भी किया जो कुरआन सुनते हैं मगर उनके दिल मुतमईन नहीं होते बल्कि फ़रमाया अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर (बदबख़्ती) लगा दी और उनके कानों और उनकी आंखों पर पर्दे पड़े हुए हैं यानी काफ़िरों के तमाम वह ज़राए जिनसे हिदायत हासिल हो सकती थी बंद कर दिये गये और फ़रमाया कि कियामत में दोज़ख़ी कहेंगे कि अगर हम हक़ की बात को सुनते या उसको समझते तो हम दोज़ख़ में गिरफ़्तार न होते फ़रमाया इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो आपकी बातों को सुनते हैं हालांकि उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये हैं ताकि वह इस कलामे हक़ को समझ ही न सकें और उनके कानों में बहरापन रख दिया है फ़रमाया और उन लोगों की तरह न बनो जो जुबान से तो कहते हैं कि हमने सुन लिया और हकीकत यह है कि वह कुछ नहीं सुनते। उनके अलावा किताबे इलाही में बहुत सी आयात हैं जो समाअए कुरआन की हकीकत को वाज़ेह करती हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि आपने एक दफ़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से फ़रमाया कि तू मुझे कुछ पढ़कर कुरआन सुना, उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैं आपको पढ़कर सुनाऊं? हालांकि यह कुरआन आप पर नाज़िल हुआ है आपने फ़रमाया कि मैं दूसरों से कुरआन सुनना पसंद करता हूं। यह बात इसका वाज़ेह सुबूत है कि सुनने वाला क़ारी की निसबत ज़्यादा कामिल होता है क्योंकि पढ़ने वाला सोच समझ कर या बे सोचे समझे दोनों तरह पढ़ता है मगर सुनने वाला सोच समझकर सुनता है क्योंकि बोलने में किसी हद तक तकब्बुर पाया जाता है और सुनने में तवाज़े ज़ाहिर होती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सूरः हूद ने मुझे बूढ़ा कर दिया क्योंकि उसके आख़िर में यह आयत है यानी जिस तरह आप को हुक्म दिया गया उस पर साबित कदम रहिये। हकीकत यह है कि इंसान अमरे इलाही पर

क़ायम रहने से आजिज़ है क्योंकि बंदा तौफ़ीक़े हक़ के बग़ैर कुछ नहीं कर सकता चुनांचे जब आपको इस्तेक़ामत का हुक्म मिला तो आपने फ़रमाया कि यह कैसे मुमकिन होगा कि मैं अल्लाह तआला के अहकाम को पूरी तरह बजा लाऊं? दिली इज़्तेराब की वजह से आप कमज़ोर हो गये, रंज में इज़ाफ़ा होता गया हत्ता कि एक दिन खड़े होने के लिये ज़मीन पर हाथ टेक कर सहारा लिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया हज़रत यह क्या हाल है? आप तो अभी जवान और सेहतमंद हैं?. फ़रमाया सूरः हूद ने मुझे बूढ़ा बना दिया यानी इस्तेक़ामत के हुक्म से मेरी हिम्मत कमज़ोर हो गयी।

हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत है कि मै जुअफ़ाए मुहाजिरीन की जमाअत में बैठा था जो पर्दा पोशी के लिये एक दूसरे के मुआविन थे, क़ारी कुरआन पढ़ने लगा और रसूले ख़ुदा अचानक हमारे सरों पर आ खड़े हुए, क़ारी आप को देखकर ख़ामोश हो गया आपने सलाम के बाद पूछा कि तुम क्या कर रहे थे? हमने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन सुन रहे थे आपने फ़रमाया ख़ुदा का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किये हैं जिनके साथ बैठने के लिये मुझे हिदायत की गयी है। फिर आप हमारे दर्मियान घुल मिलकर बैठ गये आपने हाथ के इशारा से हलक़ा बांध कर बैठने का फ़रमाया जिसके बाद हमारे और रसूल के दर्मियान कोई ज़ाहिरी इम्तेयाज़ नहीं था गोया हम सब मुफ़लिस मुहाजिरीन थे। इसके बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि ऐ मुफ़लिस मुहाजिरो! क़ियामत में तुम्हें मुकम्मल कामयाबी की खुशखबरी है तुम जन्नत में अपने दौलत मंद भाईयों की निसबत आधे दिन पहले दाख़िल होगे और दिन की मिक़दार पांच सो साल है अगरचे इस रिवायत के अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ हैं मगर मतलब व मअ़ने में कोई फ़र्क़ नहीं।

रिवायत है कि ज़रार अब्ने अवी ऊफ़ी जो जलीलुल क़द्र सहाबी थे एक मर्तबा लोगों की इमामत फ़रमा रहे थे, आपने एक आयत पढ़ी जिसकी हैबत से आप फ़ौरन फ़ौत हो गये। हज़रत सालेह मरी ने एक बुज़ुर्ग ताबई अहू जहमी (अबू जबीर) के सामने एक आयते करीमा पढ़ी जिसकी जलालत से आप फ़ौत हो गये। हज़रत इब्राहीम फ़रमाते हैं कि मैंने कूफ़ा के नवाह में एक नेक सिफ़त औरत को नमाज़ पढ़ने के बाद बतौरे तबर्रुक सलाम किया तो उसने कुरआन पढ़ने और सुनाने की फ़रमाईश की मैंने कुरआनी आयात पढ़ी तो वह बेहोश होकर रिहलत कर गयीं। अहमद बिन अबुल जवारी रिवायत फ़रमाते हैं कि मैंने

एक शख़्स को जंगल में कुंए के किनारे खड़े देखा क़रीब हुआ तो उसने समाअ़ की ख़्वाहिश की ताकि वह बा आसानी जान दे सके तो मैंने अलहाम की मदद से यह आयत पढ़ी बिल शुबह जिन लोगों ने ख़ुदा को अपना रब कहा और साबित क़दम रहे उसने कहा कि अहमद! ख़ुदा की क़सम! आपने वही आयत तिलावत की जिसे मेरे सामने इस वक़्त फ़रिश्ते तिलावत कर रहे थे यह कहकर वह फौत हो गया। इस सिलसिले में बहुत सी रिवायात व हिकायात हैं अगर इनका ज़िक्र किया जाये तो किताब ज़ख़ीम हो जायेगी लिहाज़ा अब इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं।

शेअ़र का समाअ़ और मुताल्लेक़ात

मालूम होना चाहिये शेअर सुनना मुबाह है पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम ने अशआर पढ़े और सुने हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाशुबह बाज़ अशआर में हिकमत है। नीज़ फ़रमाया यानी हिकमत मोमिन की खोई हुई चीज़ है जहां मिले वह उसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है (कि हासिल कर ले) आप ने फ़रमाया (सबसे ज़्यादा सच्चा कलाम जो अहले अरब ने कहा वह लुबैद शायर का है) जिसने कहा कि-

सुनो! अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है और हर एक नेमत ज़रूर ज़वाल पज़ीर है।

उमर बिन अलशरीद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे शेअ़र पढ़ने को फ़रमाया और पूछा कि मुझे उमैया बिन अबुल सलत के कुछ अशआर याद हैं? और अगर हैं तो हमें सुनाओ मैंने एक सौ अशआर सुनाये जब मैं एक शेअ़र ख़त्म करता तो आप फ़रमाते कुछ और सुनाओ आपने फ़रमाया कि उमैया अपने अशआर में तो इस्लाम को तसलीम करता है इसके अलावा बहुत सी रिवायत हैं।

कुछ लोग अशआर सुनने को हराम कहते हैं और रात दिन ग़ीबत में मसरूफ़ रहते हैं और कुछ लोग हर क़िस्म के अशआर सुनने को हलाल कहते हैं और रात दिन ग़ज़ल में हुस्ने सूरत और ज़ुल्फ़ की तारीफ़ में लगे रहते हैं और सुनते रहते हैं दोनों फ़रीक़ एक दूसरे के ख़िलाफ़ दलायल देते हैं मगर मेरा मक़सद इनमें से न किसी की तरदीद है और न किसी की ताईद। लिहाज़ा मैंने इतने पर इक्तेफ़ा किया।

मशायख़ का तरीक़ा यह है कि वह फ़रमाने रसूल से इस्तेफ़ादा करते हैं

आपने फ़रमाया (शेअ़र एक ऐसा कलाम है कि जिसका अच्छा (हिस्सा) अच्छा और बुरा (हिस्सा) बुरा है) जिस बात का सुनना नसर में हलाल है मसलन हिकमत, नसायह, आयाते इलाही में इस्तेदलाल और हक़ के दलायल में ग़ौर करना वग़ैरह वग़ैरह तो इसका नज़्म में सुनना भी हलाल और जायज़ है। मुख़्तसर यह कि जिस तरह फ़ित्ना फैलाने वाले हुस्न पर नज़र डालना हराम है उसी तरह की नज़्म व नसर को भी सुनना हराम है अगर कोई शख़्स समाअ़ शेअर को मुतलक़ हलाल और जायज़ समझता है तो वह कुफ़्र व बे दीनी में मुब्तला है और जो शख़्स यह कहे कि मैं हुस्ने सूरत में हुस्ने ख़ुदा का जल्वा देखता हूं और तलबे हक़ करता हूं क्योंकि आंख और कान महले इबरत हैं और इल्म का ज़रिया हैं तो दूसरा शख़्स यह भी कह सकता है कि मैं छूता हूं और छूने से भी इबरत व नसीहत हासिल होती है। ऐसी सूरत में तो शरीअत का ज़ाहिर बिल्कुल बातिल हो जायेगा। हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यानी दोनों आंखें (ग़ैर महरम को देखने से) ज़िना करती हैं चुनांचे देखने, छूने से शरई हुक्म साक़ित हो जायेगा और यह ज़ाहिर गुमराही है जाहिल लोगों ने सूफ़िया को समाअ़ करते देखा तो यह समझा कि यह ख़्वाहिश से समाअ़ करते हैं हालांकि वह बे इख़्तेयार समाअ़ करते हैं जिससे यह नतीजा निकाला गया कि समाअ़ हलाल है और अगर हलाल न होता तो यह सूफ़ी लोग समाअ़ न करते। चुनांचे जुहला ने ज़ाहिर को इख़्तेयार करके बातिन और असल को छोड़ दिया (जो दर असल इस्लाहे नफ़्स का मक़सद था) हत्त कि ख़ुद भी हलाक हुए और अपने मुत्तबिईन के एक पूरे गरोह को भी बरबाद कर दिया। हालांकि यह ज़माना की बहुत बड़ी आफ़त है। अपनी जगह पर इसकी मुफ़स्सल तशरीह बयान की जायेगी।

ख़ुश अलहानी और तरन्नुम का समाअ़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि (कुरआन पढ़ने में अपनी आवाज़ों को संवारो) ख़ुदा तआला फ़रमाता है (वह पैदाईश में जो चाहता है ज़्यादा करता है मुफस्सेरीन के मुताबिक़ इससे मुराद बेहतर आवाज़ और तरन्नुम है नीज़ पैग़म्बर अलैहिस्लातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ सुनना चाहे वह हज़रत अबू मूसा अशअरी की आवाज़ सुने। अहादीस में है कि बहिश्त में जन्नतियों को भी समाअ़ हासिल

होगा। जिसका ज़रिया मुख़्तलिफ़ दरख़्तों से मुख़्तलिफ़ सुरीली आवाज़ें हैं जो जन्नत में निकलेंगी। मुख़्तलिफ़ आवाज़ों के सामने जो कैफ़ियत पैदा होती है तबीयत को इससे लज़्ज़त हासिल होती है इस क़िस्म का समाअ़ हैवानों और इंसानों में आम है इसलिये कि रूह एक लतीफ़ चीज़ है और आवाज़ में भी एक क़िस्म की लताफ़त है जब अरवाह इन आवाज़ों को सुनती हैं तो अपने हम जिन्सों की तरफ़ हो जाती हैं यह दर असल अत्तिबा का क़ौल है।

अहले इल्म मुहक्किक भी बहुत से दावे करते हैं और उन्होंने सुरीली आवाज़ों को बाहम मिलाने के लिये किताबें भी तसनीफ़ की हैं और लहान व तरन्नुम को बड़ी अहमियत दी है इनके नज़रियात की तरजमानी आज मज़ा मीर से भी होती है जो ख़्वाहिशे नफ़्स और बेहूदगी के लिये तैयार किये गये हैं जिनसे शैतान की पैरवी होती है। हत्ता कि वह कहते हैं कि एक दिन इसहाक़ मूसली एक बाग़ में गा रहे थे और एक बुलबुल भी नग़मा सराई कर रहा था वह इस्हाक़ की ख़ुशअलहानी सुनकर ख़ामोश हो गया और आख़िरकार गिरकर मर गया। इस क़िस्म की हिकायात बहुत हैं मगर मक़सद सिर्फ़ यह है कि ख़ुश अलहानी से हैवानात और इंसान दोनों लज़्ज़त हासिल करते हैं।

हज़रत इब्राहीम ख़्वास फ़रमाते हैं कि एक अरबी सरदार के हां पहुंचा तो एक हबशी गुलाम को बेड़ियों और ज़ंजीरों में क़ैद देखा जो ख़ेमा के दरवाज़े पर धूप में पड़ा हुआ था। मैंने अज़राहे शफ़क़त सिफ़ारिश का इरादा किया, अरब के दस्तूर के मुताबिक़ अमीर मेहमान के साथ खाना खाता है तो जब खाने का वक़्त आया मैंने अमीर के साथ खाना खाने से इंकार कर दिया जो अरबों के नज़दीक बहुत ना मुनासिब बात है कोई शख़्स मेहमान होते हुए खाना न खाए उन्होंने पूछा कि क्या वजह है? जबकि हम सब आपकी ख़िदमत के लिये हाज़िर हैं मैंने जवाब दिया कि सब कुछ सहीह है मगर उस गुलाम को मेरी ख़िदमत के लिये मुक़र्रर कर दें। अमीर ने कहा आप पहले इसका जुर्म मालूम कर लें फिर इसे छुड़ायें, तो मैंने पूछा, उसने कहा कि यह गुलाम जदी ख़्वां और ख़ुश अलहान है मैंने उसे ऊंट देकर अपनी ज़मीन से ग़ल्ला लाने को कहा इसने उन पर दोगुना बोझ डाल दिया और हुदी ख़्वानी से इनको मस्त करके दौड़ाता रहा हात्ता कि वह पहुंचने पर एक एक दो दो करके सब हलाक हो गये। हज़रत इब्राहीम फ़रमाते हैं कि मुझे सख़्त हैरानी हुई, मैंने कहा कि आप की शराफ़त के पेशे नज़र यह सब कुछ सच मानता हूं मगर दलील चाहिये उसी दौरान ऊंट

पानी पीने के लिये कुएं पर लाए गये अमीर ने शुतरबानों से पूछा कि ऊंट कितने दिन के प्यासे हैं? जवाब मिला तीन दिन से, फिर उसने गुलाम को हुदी ख़्वानी करने को कहा तो ऊंट पानी पीना भूलकर हुदी सुनने में मस्त और मगन हो गये और पानी को किसी ऊंट ने मुंह न लगाया। यहां तक कि अचानक एक एक करके सब भाग गये और जंगल में उसके बाद अमीर ने गुलाम को जंज़ीरों से रिहा करके मेरे सुपुर्द कर दिया।

यह हक़ीक़त है कि ऊंट और गधा गाना सुनने से मस्त हो जाते हैं मुल्क ख़ुरासान में तो शिकार का यह तरीक़ा है कि शिकारी तश्त बजाकर और गाकर हिरन को मस्त बना देते हैं और वह अपनी जगह पर खड़ा रह जाता है जिसे बा आसानी शिकार कर लिया जाता है। हिंदुस्तान में भी कहीं कहीं यही तरीक़ा है जिससे हिरन की आंखे तक बंद हो जाती हैं इसी तरह छोटे बच्चों को लोरी से नींद आ जाती है तबीब ऐसे बच्चों के मुताल्लिक़ बताते हैं कि वह बड़ा होकर अक़्लमंद होगा।

अजम के एक बादशाह की वफ़ात पर उसके दो साला बच्चे का मुआना भी हकीम बज़रजमहर की हिदायत के मुताबिक़ ख़ुश अलहानी और गाने से किया गया जिसकी वजह से वह बच्चा हरकत करने लगा और हाथ पांव मारने लगा तब बज़रजमहर ने कहा कि इस बच्चा से भलाई की उम्मीद की जा सकती है।

ग़र्ज़ कि ख़ुश अलहानी और सुरीली आवाज़ की तासीर अक़्लमंदों के नज़दीक इस क़दर मुसल्लम है जिसकी दलील की ज़रूरत नहीं इसके बर अक्स जो शख़्स सुरीली आवाज़ और ख़ुश अलहानी को बेकार समझता है और बे असर जानता है वह या तो झूट बोलता है और निफ़ाक इख़्तेयार करता है या वह हिस ही नहीं रखता जिससे वह इस्तेफ़ादा कर सके। वह इंसान और सूफ़ियों के तबक़ा से बाहर है। जो गरोह इससे रोकता है वह हुक्मे इलाही का पास करता है। फ़ुक़हा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अगर खेल कूद के असबाब न हों और समाअ़ से दिल में बदकारी का ख़्याल पैदा न हो तो इसका सुनना मुबाह है जिसके मुताल्लिक़ बहुत सी अहादीस हैं चुनांचे हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक लौंडी थी जो गा रही थी कि इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अंदर आने की इजाज़त तलब की जब उस लौंडी को उनके आने का इल्म हुआ तो वह ख़ामोश हो गयी और भाग गयी जब हज़रत उमर दाख़िल हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने तबस्सुम फ़रमाया हज़रत उमर ने आप से दर्याफ़्त फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! आप तबस्सुम क्यों फ़रमा रहे हैं? आप ने फ़रमाया कि हमारी एक लौंडी कुछ गा रही थी जब उसने तुम्हारी आवाज़ सुनी तो भाग गयी। हज़रत उमर ने अर्ज़ किया कि जब तक मैं वह बात न सुन लूं जो आप सुन रहे थे तो मैं यहां से नहीं टलूंगा। चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस लौंडी को बुलवाया तो वह गाने लगी और आप सुनते रहे। इस तरह बहुत से सहाबा से ऐसी ही रिवायात हैं शैख़ अब्दुर्रहमान सलमा ने इन सबको अपनी किताब ''अस्समाअ़'' में जमा कर दिया है और इनके जवाज़ का फ़ैसला दिया है मगर मशायख़ सूफ़िया की मुराद समाअ़ से अबाहत फ़िक़ही नहीं कि जिस पर अमल करना न करना दोनों बराबर हों बल्कि उनकी मुराद इससे वह अबाहत है जिससे आमाल में फ़वायद हासिल हों वैसे सिर्फ़ मबाह का ख़्याल करना और पैर्वी करना अवाम कल इंआ़म का काम है समझदार लोगों को ऐसे काम करने चाहियें जिनसे फ़वायद दारैन हासिल हों।

एक दफ़ा मरू में अइम्मा अहले हदीस में से एक मशहूर इमाम ने मुझसे कहा कि मैंने समाअ़ को मुबाह साबित करने के लिये एक किताब रखी है तो मैंने कहा कि दीन में एक बहुत बड़ी मुसीबत पैदा हो गयी क्योंकि इस तरह अपने एक लहव व लइब को जो तमाम बुराईयों की जड़ है हलाल कर दिया तो उन्होंने कहा अगर आप उसे हलाल नहीं समझते तो ख़ुद समाअ़ क्यों करते हैं मैंने जवाब दिया कि इसका हुक्म कई वजह पर है एक चीज़ पर कोई क़तई फ़ैसला नहीं करना चाहिये क्योंकि अगर इसकी तासीर दिल में बेहतर असर करती है तो यह हलाल है और अगर हराम की तरफ़ मायल होने का सबब है तो हराम है, अगर मुबाह असर है तो समाअ़ भी मबाह है। खुलासा यह है कि जिस चीज़ का ज़ाहिरी मामला फ़िस्क़ पर है और बातिनी तौर पर इसकी तासीर मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर है तो ऐसी चीज़ पर कोई एक हुक्म लगाना मुहाल और ना मुनासिब है।

समाअ़ के अहकाम

इख़्तेलाफ़े तबाअ के लिहाज़ से अहकामे समाअ़ भी मुख़्तलिफ़ हैं जिस तरह कि अज़ायम व इरादे मुख़्तलिफ़ होते हैं ऐसी सूरते हाल में किसी एक चीज़ पर एक हुक्म लगाना जुल्म है।

समाअ़ करने वाले दो क़िस्म के लोग हैं। एक फ़क़त मअ़ने को सुनने वाले,

दूसरे जो आवाज़ को सुनते हैं मअ़ने से कोई मतलब नहीं रखते। इन दोनों तरीक़ों में फ़वायद भी हैं और नुक़सानात भी। सुरीली आवाज़ों का सुनना ग़ल्बा मअ़ने की वजह से होता है जो फ़ितरते इंसानी में दाख़िल है। चुनांचे अगर मअ़ने हक़ हैं तो समाअ़ भी हक़ है और मअ़ने बातिल हैं तो समाअ़ भी बातिल है इस बिना पर जिस शख़्स की तबीयत में फ़साद होता है वह जो कुछ सुनता है वह सब फ़साद बन जाता है और यह सब मअ़ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की हिकायात में आते हैं कि जब ख़ुदा ने उनको ख़लीफ़ए कायनात बनाया तो ख़ुश अलहानी दी, आपके गले को साज़ बना दिया पहाड़ों को आपकी ख़ुश अलहानी का ज़रिया बना दिया, हत्ता कि वहशी जानवर, परिन्दे पहाड़ों और जंगलों को आपकी ख़ुश अलहानी सुनने के लिये जमा हो जाते, बहते हुए पानी रुक जाते, उड़ते हुए परिन्दे गिर पड़ते, आसार व रिवायात में है कि हज़रत दाऊद जिस जंगल में ख़ुश अलहानी करते वहां के जानवर एक माह तक कुछ न खाते, पीते, बच्चे दूध न मांगते और न रोते अक्सर लोग लहने दाऊदी की लज़्ज़त में फ़ौत हो जाते, हत्ता कि एक रिवायत के मुताबिक़ सात सौ जवान लौंडियां और बारह हज़ार बुड्ढे मर गये हक़ तआला ने हक़ीक़त पसंद और ख़्वाहिशे नफ़्स से समाअ़ करने वालों में इम्तेयाज़ कर दिया जिससे इबलीस का हरबा शुरू हो गया और वसवसा के ज़रिये बहकाने का प्रोग्राम बनाया। उसने अपने हरबों को इस्तेमाल करने की इजाज़त मांगी तो उसे मिल गयी इस बिना पर उसने बांसुरी और तंबूरे बनाये और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बिल मुक़ाबिल महफ़िले समाअ़ क़ायम की हत्ता कि हज़रत दाऊद के सुनने वाले दो जमाअ़तों में तक़सीम हो गये अहले सआदत हज़रत दाऊद के साथ और अहले शक़ावत शैतान के पैरो बन गये। अहले मअ़ने हज़रत दाऊद की ज़ाहिरी आवाज़ पर मायल न थे बल्कि हक़ीक़त पसंद थे क्योंकि वह सब हक़ शनास और हक़ बीन थे वह शैतान की महफ़िल को आज़माईश और मजलिसे दाऊदी को ज़रियाए हिदायत जानते थे हत्ता कि उन्होंने दोनों गरोहों के असल मामलात से मुंह मोड़कर हक़ तआला से रिश्ता जोड़ दिया। चुनांचे जिस शख़्स का हाल समाअ़ के मुताल्लिक़ ऐसा हो वह जो कुछ सुने हलाल है।

मुद्दइयों की एक जमाअत यह कहती है कि समाअ़ हक़ीक़त में जो कुछ है वह बज़ाहिर बर ख़िलाफ़ मालूम होता है हालांकि यह मुश्किल है क्योंकि विलायत का कमाल यह है कि हर चीज़ को उसकी असल के मुताबिक़ देखा

जाये ताकि मुशाहिदा सहीह हो अगर मामला इसके बर अक्स होगा तो मुशाहिदा मुकम्मल न होगा। जबकि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ऐ अल्लाह! हमें तमाम अशिया की हक़ीक़त ऐसी ही दिखा जिस सिफ़त पर वह असल में हैं। जब चीज़ों का मुशाहिदा सहीह वही है जो हक़ीक़त और असल को ज़ाहिर करे तो सहीह समाअ़ का मामला भी इसी तरह होना चाहिये कि सुनना वही मुनासिब होगा जो हक़ायक़ को वाज़ेह करे और जो लोग ज़ाहिरी आवाज़ और मज़ामीर पर ख़्वाहिश नफ़्स से फ़रेफ़्ता होते हैं वह दर असल ज़ाहिरी आवाज़ को सुनते हैं असल मतलब को नहीं सुन सकते। अगर वह समाअ़ की हक़ीक़त के मुताबिक़ सुनते तो वह समाअ़ की तमाम ख़राबियां से निजात पा जाते मगर उसके बर अक्स नुक़सान में इज़ाफ़ा होता है जिस तरह कि गुमराह लोगों ने क़ुरआन को सुना मगर उनकी गुमराही में इज़ाफ़ा सिर्फ़ इसी वजह से हुआ कि वह हक़ीक़ते कलाम को न समझ सके बल्कि सिर्फ़ ज़ाहिरी अलफ़ाज़ को सुन कर कहने लगे कि यह तो पुराने क़िस्से और मिसालें हैं जैसा कि नज़र बिन हारिस ने क़ुरआन को सुनकर कहा यानी यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं। अब्दुल्लाह बिन सअविन अबी सरह जो कातिब वही था उसने तो यहां तक कह दिया कि मैं भी ऐसा कलाम उतारूंगा जैसा अल्लाह ने उतारा है। पस वह ज़ाते बा बरकात बेहतर पैदा करने वाला है) एक गरोह ने दीदारे इलाही की नफ़ी में इस आयत को दलील बना लिया (उस ज़ात को आंखें नहीं देख सकतीं और वह आंखों को देख सकता है) एक गरोह ने मकान और हिज्जत साबित करने के लिये इस आयत से इस्तिदलाल किया (फिर अर्श पर वह अच्छी तरह से बैठ गया) एक गरोह ने इस आयत को दीदारे इलाही की दलील बना लिया (और आया तेरा रब और फ़रिश्ते सिफ़त दर सफ़ होकर) चूँकि इनके दिल महल गुमराही थे लिहाज़ा कलाम ने इन्हें कोई फ़ायदा न दिया। जब मोवहिद ने किसी शेअ़र को देखकर उसके कहने वाले ख़ालिक़ को देखा और उसके बातिन को आरास्ता करने वाले का मुताला किया तो बतौर इबरत उसके फ़ेअल को फ़ायल पर दलील बना लिया। गर्ज़ कि इस गुमराह गरोह ने कलामे हक़ सुनकर भी राहे हक़ न पाया और गरोहे सूफ़िया ने कलामे बातिल में समाअ़ के ज़रिये राहे हक़ तलाश कर ली। यह एक हक़ीक़त है जिसका इंकार खुला हुआ मकाबरा है।

समाअ़ के मुताल्लिक़ मशायख़ के अक़वाल

समाअ़ के मुताल्लिक़ मशायख़ के बहुत से अक़वाल हैं मगर यहां मुख़्तसरन लिखूंगा क्योंकि यह किताब इन सब कलिमात की मुतहम्मिल नहीं हो सकती। इंशाअल्लाह इन सबसे आपको मुकम्मल फ़ायदा होगा अलबत्ता तौफ़ीक़ अल्लाह के हाथ में है।

जुन्नून मिसरी फ़रमाते हैं कि समाअ़ हक़ का फ़ैज़ान है जो दिलों को हक़ की तरफ़ राग़िब करता है पस जिसने हकीक़ी माअनों में सुना उसने राहे हक़ को पा लिया और जिसने ख़्वाहिशे नफ़्सी से सुना वह बे दीन हो गया। इससे मुराद यह नहीं कि समाअ़ वसले हक़ का सबब होगा बल्कि सुनने वाले को चाहिये कि समाअ़ तलब हक़ के लिये सिर्फ़ आवाज़ की रंगीनी के लिये नहीं ताकि इसका दिल फ़ैज़ाने हक़ का महल बन जाये चुनांचे जब हक़ उसके दिल में दाख़िल होगा तो वह दिल को नेकी पर उभारेगा और जो सिमअ हक़ का ताबेअ होगा उसे मुशाहिदाए हक़ हासिल होगा और जो नफ़्स व ख़्वाहिश का ताबेअ होगा वह पर्दा में रहेगा और तावील से ताल्लुक़ पैदा करेगा। समाअ़ हक़ मुकाशफ़ए इलाही का सबब है और समाअ़ नफ़्स हिजाबे हक़ का ज़रिया जो ज़िंदीक़ी की तरफ़ राग़िब करता है, ज़ंदिक़ा फ़ारसी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जो मुअर्रब है फ़ारसी में इसके मअ़ने तावील करने के हैं इस वजह से वह अपनी किताब को ज़िन्द व पा ज़िन्द कहते हैं जब लुग़त वालों ने आतिश परस्तों का नाम रखना चाहा तो ज़िन्दीक़ रख दिया क्योंकि ज़िन्दीक़ यह कहते हैं कि जो कुछ मुसलमान कहते हैं इसकी तावील मुमकिन है। तंज़ील दयानत में दाख़िल करती है और तावील दयानत से बाहर निकालती है। आजकल के मिसरी शिया जो इनमे से कुछ बाकी हैं वही कहते हैं कि जो मजूसी कहते थे। चुनांचे ज़िन्दीक़ का नाम इनके लिये ख़ास हो गया है।

हज़रत जुन्नून मिसरी की मुराद यह है कि अहले तहकीक़ समाअ़ में तहक़ीक़ करने वाले होते हैं और अहले नफ़्स तावील करने वाले इस वजह से वह फ़िस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तला हो जाते हैं।

शिबली फरमाते हैं कि समाअ़ का ज़ाहिर फ़ित्ना है और बातिन इबरत जो अहले इशारा है और इशारात को पहचानता है इसके लिये समाअ़ इबरत हलाल है वरना तलबे फ़ित्ना है और मुसीबत का सामना करना है यानी जिसका दिल पूरी तरह क़ौले हक़ में महव नहीं उसके लिये समाअ़ महले आफ़त और

आज़माईश है।

अबू अली रूदबारी समाअ़ के मुताल्लिक़ एक सवाल का जवाब देते हुए यह फ़रमाते हैं कि (काश कि हम इस समाअ़ में तहक़ीक़ करने वाले होते हैं और अहले नफ़्स तावील करने से क़ासिर हैं जब किसी चीज़ का हक़ फ़ौत पा लेते) इसलिये कि आदमी हर चीज़ का हक़ को देखता है और जब अपनी तक़सीर को देखता है तो कहता है कि काश हम बिल्कुल छूट जाते।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं (भेदों के पैदा करने का नाम समाअ़ है जो दर असल बातिन में पोशीदा हैं ताकि इनके ज़रिये से हक़ तआला की बारगाह में हाज़िर रहें इसलिये कि असरार का पोशीदा रखना मुरीदों के लिये सख़्त क़ाबिले मलामत है और इनके सबसे बुरे सिफ़ात में से है क्योंकि गो दोस्त बज़ाहिर दोस्त से ग़ायब हो मगर दिल से हाज़िर होता है और जब ग़ैबत आ गयी तो दोस्ती ख़त्म हो जाती है।

मेरे शैख़ ने फ़रमाया कि (समाअ़ आजिज़ लोगों का सफ़रे ख़र्च है पस जो मंज़िल पर पहुंच गये इन्हें समाअ़ की हाजत नहीं) क्योंकि वसल की हालत में सुनने का हुक्म बाक़ी नहीं रहता इसलिये कि सुनना ख़बर का होता है और ख़बर ग़ायब के मुताल्लिक़ दी जाती है जब आंखों से मुशाहिदा हो गया तो सुनने का मामला ख़त्म हो जाता है।

हज़रत हुज़री फ़रमाते हैं तू इस समाअ़ को क्या करेगा जो मुनक़तअ हो जाये जब गाने वाला रुक जाता है तो उसका असर भी ख़त्म हो जाता है चुनांचे मुनासिब यह है कि समाअ़ मुत्तसिल हो जिसकी तासीर ख़त्म नहीं होती (यानी हर वक़्त ज़िक्रे हक़ की आवाज़ कानों में आती रहे) इस बात से यह पता चलता है कि हिम्मत मुजतमअ रहे मुनक़तअ न हो क्योंकि बंदा जब इस दर्जा पर पहुंच जाता है तो तमाम आलम जमादात व हैवानात इसका समअ करने वाले हो जाते हैं और यह दर्जा बहुत बड़ा है। अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है।

समाअ़ में सूफ़ियों का इख़्तेलाफ़

समाअ़ के मुताल्लिक़ मशायख़ व मुहक्क़ेक़ीन सूफ़िया के दर्मियान इख़्तेलाफ़ है एक गरोह समाअ़ का ग़ीबत का आला बताता है और यह दलील देता है कि मुशाहिदा में समाअ़ मुहाल है और दोस्त के दीदार के वक़्त सुनने से बे नियाज़ी हो जाती है क्योंकि समाअ़ ख़बर का होता है और ख़बर मुशाहिदा की हालत में दूरी, हिजाब और मशग़ूली होती है। पस समाअ़ मुबतदियों का

आला होता है ताकि ग़फ़लत की परागंदगियों से दिल को मुजतमअ कर सकें और जो पहले से मुजतमअ हो वह समाअ़ की वजह से परागंदा हो जाता है। एक गरोह समाअ़ को हाज़िरी का आला बताता है क्योंकि मुहब्बत कुल्ली फ़ना और महवियत को चाहती है जब तक मुहिब का कुल महबूब के कल में मुस्तग़रक़ न हो जाये वह मुहब्बत में नाक़िस होता है। पस जैसा कि दिल का हिस्सा वसल के मुक़ाम में मुहब्बत है और बातिन का मुशाहिदा रूह का वसल और जिस्म की ख़िदमत है इसी तरह ज़रूरी है कि कान का भी हिस्सा हो जैसा कि दीदार में आंख का हिस्सा है किसी शायर ने अपने हज़लिया अशआर में बसिलसिलए दोस्तीए शराब कहा है कि-

(ऐ दोस्त मुझे शराब पिला और मुझे कह दे कि यह शराब है और मुझे शराब मख़्फ़ी तौर पर न पिला जबकि ज़ाहिर पिलाना मुमकिन है।)

यानी ऐ दोस्त शराब इस सूरत में पिला कि मेरी आंख देख ले और हाथ छूले, जुबान चख ले, नाक सूंघ ले, मगर उस वक़्त कुव्वते सामेआ यानी कान महरूम रहेगा लिहाज़ा यह कह दे कि यह शराब है ताकि कान भी अपना हिस्सा पा ले। हत्ता कि मेरे तमाम हवास इससे मिल जायें और लज़्ज़तगीर हो जायें।

यह भी कहते हैं कि समाअ़ हुज़ूरी का आला है क्योंकि ग़ायब, होता है और मुन्किर भी, अंजान इसका अहले नहीं होता। समाअ़ की दो क़िस्में हैं १ बिल वास्ता। २ बिला वास्ता। जो किसी गवैये से सुना जाता है वह ग़ैबत का आला होता है और जो ख़ुदा की तरफ़ सुना जाता है वह हुज़ूरी का आला कहलाता है इसी बिना पर यह कहा गया है कि मख़लूक़ इस लायक़ नहीं कि उनकी कोई बात सुनी जाये या उनकी बात बयान की जाये सिवाए बुज़ुर्गान और ख़ास लोगों के किस से समाअ़ न किया जाये।

बसिलसिला समाअ़ सूफ़िया के मरातिब

सूफ़ियों में से हर एक का समाअ़ के मामला में एक ख़ास मक़ाम व मर्तबा है जिसके ज़रिये वह समाअ़ से लुत्फ़ अंदोज़ होता है जैसा कि तौबा करने वाले के लिये समाअ़, मुआविने तौबा होता है और इससे नदामत हासिल होती है, मुश्ताक़े दीदार के लिये सबब दीदार, यक़ीन करने वाले के लिये ताकीद, मुरीद के लिये तहक़ीक़ का ज़रिया, मुहिब के लिये ताल्लुक़ात मुनक़तअ करने का बाइस और फ़क़ीर के लिये समाअ़ मा सिवा अल्लाह से ना उम्मीद की बुनियाद बन जाता है। दर असल समाअ़ मिसले आफ़ताब है जो तमाम चीज़ों पर रौशनी

डालता है मगर इस रौशनी से इस्तेफ़ादा हर चीज़ अपनी अपनी सलाहियत व अहलियत के मुताबिक़ करती है। सूरज किसी को जिला देता है और किसी को जला देता है, किसी को नवाज़ता है तो किसी को भस्म कर देता है। समाअ़ के मुताल्लिक़ तीन फ़िरक़े हैं। १ मुबतदी। २ मुतवस्सित दर्जा और तीसरे नंबर पर कामिल हैं इनमें से हर एक का मुफ़स्सल तज़्किरा किया जायेगा ताकि हक़ीक़त अच्छी तरह समझ में आ जाये। इंशाअल्लाह तआला।

समाअ़ के मुताल्लिक़ मामलात

मालूम होना चाहिये कि समाअ़ फ़ैज़ाने हक़ है और इंसानी जिस्म की साख़्त व तरकीब मुतज़ाद अनासिर से हुई है इस वजह से मबतदी की तबीअ़त शुरू में ख़ुदा के मामलात में नहीं लगती मगर जब उमूरे इलाही और असरारे रब्बानी का सिलसिला जारी होता है तो तबीयत को सोज़ व गुदाज़ हासिल हो जाता है। इसी वजह से एक जमाअत समाअ़ से बेहोश हो जाती है और एक जमाअत हलाक हो जाती है और कोई शख़्स ऐसा नहीं होता जो हदे एतेदाल से न गुज़र जाये। यह हक़ीक़त है और हमारा मुशाहिदा है कि मुल्क रोम में लोगों ने इंनकलीवन नामी एक अजीब चीज़ तैयार की है जिसे यूनानी अजायब व ग़रायब के मजमूआ वाली चीज़ को कहते हैं। यह दर असल एक बाजा है, जहां हफ़्ता में दो दिन बीमारों को उनकी बीमारी के मुताबिक़ बजाकर सुनाया जाता है। इस तरह अगर किसी को मारना मक़सूद होता है तो उसे उस जगह पर ज़्यादा देर ठहराया जाता है ताकि वह साज़ सुनकर हलाक हो जाये। अगरचे मौत का वक़्त मोअय्यन है मगर उसके असबाब तो बरहक़ हैं अगरचे उस बाजा को तबीब सुनते है मगर उनको कुछ नहीं होता, क्योंकि वह इनकी तबीयत के बिल्कुल मवाफ़िक़ होता और मुबतदियों के तबीयत के मुख़ालिफ़ है।

मैंने हिंदुस्तान में एक ऐसा ज़हर देखा है जिसमें एक कीड़ा पैदा होता है जिसकी गिज़ा ही वह ज़हर है क्योंकि वह हमा तन ज़हर ही हो जाता है। तुरकिस्तान में इस्लामी सरहद पर वाक़ेय एक शहर में पहाड़ को आग लग गयी और वहां से नौशादर उबल रहा था उस आग में एक चूहा था जो बाहर निकला तो फ़ौरन मर गया। इन मिसालों से मुराद यह वाज़ेह करना है कि मुबतदियों की बेचैनी फ़ैजाने इलाही के वारिद होने की सूरत में इस वजह से होती है कि इनका जिस्म इसके बिल्कुल मुख़ालिफ़ होता है और इस हालत के मुतवातिर क़ायम रहने से मुबतदी को सुकून हासिल होने लगता है। जैसा कि जिब्राईल

अलैहिस्सलाम वही लेकर आये तो रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शुरू में इज़्तेराब हुआ मगर जब इंतेहा पर पहुंच गये तो जिब्राईल के ताख़ीर करने पर आप ग़मगीन हो जाते जिसके बहुत से शवाहिद मौजूद हैं। यह हिकायात बसिलसिला समाअ़ मुबतदियों के लिये दलील राह हैं और मनतहियों के लिये बाइसे आराम व सुकून।

मश्हूर है कि हज़रत जुनैद के एक मुरीद को समाअ़ में काफ़ी इज़्तेराब होता और दूसरे मुरीद उसे संभालते। जब उस चीज़ की शिकायत की गयी तो आपने मुरीद से फ़रमाया अगर आइंदा तूने समाअ़ में बे क़रारी का मुज़ाहिरा किया तो मैं तुझे हमनशीं नहीं होने दूंगा।

अबू मुहम्मद हरीरी फ़रमाते हैं कि उस शख़्स को मैंने समाअ़ की हालत में देखा तो उसके होंट बंद थे और हर बाल से बेक़रारी का चश्मा उबल रहा था एक दिन उसके होश व हवास मुअ़त्तल थे मगर हकीकत मालूम न हो सकी कि आया वह दौराने समाअ़ अच्छी हालत में था या मुरशिद की हुरमत उस पर ग़ालिब थी।

रिवायत है कि एक शख़्स ने समाअ़ में एक नारा मारा तो मुरशिद ने कहा कि ख़ामोश रह, उसने सर अपने ज़ानो पर रखा, जब लोगों ने देखा कि वह तो मर चुका था। शैख़ अबू मुस्लिम फ़ारस बिन ग़ालिब फ़ारसी से मैंने सुना है कि एक दुरवेश दौराने समाअ़ बहुत बेचैन हो जाता था, किसी शख़्स ने उसके सर पर हाथ रख कर कहा कि बैठ जाओ, वह बैठते ही फ़ौत हो गया। हज़रत दराज इब्ने अलक़रती के साथ दजला के किनारे बसरा और रमल्ला के दर्मियान जा रहे थे रास्ते में एक महल के नीचे पहुंचे तो देखा कि एक शख़्स छत पर बैठा हुआ सामने लौंडी से गाना सुन रहा है लौंडी यह शेअ़र पढ़ रही थी-

मैं तो तुझसे खुदा के लिये मुहब्बत करता था और उसके साथ तेरा हर रोज़ एक नये अंदाज़ और रंग में बदलना क्या भला मालूम होता है?

मैंने एक जवान को उस महल के नीचे गुदड़ी और लोटा लिये खड़ा देखा उसने कहा कि लौंडी तुझे खुदा की क़सम! यह शेअर दोबारा पढ़ क्योंकि मेरी ज़िन्दगी सिर्फ एक सांस रह गयी है और उसके सुनने से ख़त्म हो जायेगी। लौंडी ने जब दोबारा पढ़ा तो जवान ने नारा मारा और मर गया लौंडी के मालिक ने कहा तू आज़ाद है और खुद नीचे उतरकर जवान के कफ़न दफ़न की तैयारी करने लग गया सब बसरा वालों ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उसके बाद वह

आदमी खड़ा हुआ और कहा कि ऐ अहले बसरा! मैं फलां बिन फलां हूं मैंने सब मिलकियत राहे खुदा में वक्फ़ कर दी है और गुलामों को आज़ाद कर दिया है यह कहकर वह वहां से चला गया और किसी को इसका पता न चल सका। इस हिकायत से मतलब यह है कि मुरीद का समाअ़ के वक़्त ऐसा हाल होना चाहिये कि वह बदकारों को बदकारी से निजात दे जबकि आज गुमराहों का एक गरोह बदकारों के समाअ़ में हाज़िर होता है और कहता है कि हम हक़ की वजह से समाअ़ करते हैं फ़ासिक़ लोग उनके हम ख़्याल हो जाते हैं और समाअ़ के सिलसिला में फ़िस्क़ व फुजूल में ज़्यादा हरीस बन जाते हैं हत्ता कि वह खुद भी हलाक हो जाते हैं और अपने मुताल्लेक़ीन को भी तबाह कर देते हैं।

हज़रत जुनैद से लोगों ने पूछा कि अगर हम बतौरे इबरत गिरजा में चले जायें और सिर्फ़ काफ़िरों की ज़िल्लत का मुशाहिदा करें और इस्लाम की नेमत पर शुक्रिया करें तो क्या जायज़ है? आपने फ़रमाया अगर तुम गिरजा में इस अंदाज़ में जाओ कि जब बाहर निकलो तो कुछ काफ़िरों को मुसलमान बनाकर अपने साथ ले आओ तो जाओ वरना नहीं। पस इबादत ख़ाना वाला अगर शराब ख़ाना में चला जाये तो शराब ख़ाना भी उसका इबादत ख़ाना बन जाता है। एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं बग़दाद में एक बुजुर्ग के साथ जा रहा था एक गवैये की आवाज़ सुनी जो यह गा रहा था-

तरजमा : आरज़ू अगर हक़ है तो बेहतर आरज़ू है वरना हमने उस आरज़ू में एक ज़माना बसर कर लिया है जो गुज़र चुका है। उस दुरवेश ने नारा मारा और रिहलत कर गया।

ऐसा ही एक वाक़िया अबू अली रूदबारी बयान फ़रमाते हैं कि मैंने एक दुरवेश को गवैये की आवाज़ में मसरूफ़ देखा मैंने भी उस आवाज़ पर कान लगाए कि उसका गाना सुनों तो वह ग़मनाक आवाज़ में यह गा रहा था कि-

तरजमा : मैं फ़रूतनी से उस शख़्स की तरफ़ हाथ बढ़ाता हूं जो सुनने की सख़ावत करता है उस दरवेश ने नारा मारा और मर गया। एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्राहीम ख़्वास के साथ पहाड़ी रास्ते पर चल रहा था तो मैंने खुशी में आकर यह शेअ़र पढ़ा-

तरजमा : लोगों को यह तो सहीह तौर पर मालूम है कि मैं आशिक़ हूं मगर इन्हें यह इल्म नहीं कि मैं किसका आशिक़ हूं इंसान में तो कोई चीज़ अच्छी नहीं सिवाए उसकी अच्छी आवाज़ के।

मुझसे हज़रत इब्राहीम ख़्वास ने कहा कि दोबारा पढ़ो, मैंने दोबारा पढ़े तो आपने वजद की हालत में ज़मीन पर पांव मारे मैंने ग़ौर से देखा तो आपके क़दम पत्थर में इस तरह गड़े हुए जैसे कि मोम में हों पत्थर में नहीं आप बेहोश होकर गिर पड़े, जब होश मे आये तो फ़रमाया कि बाग़े बहिश्त में था लेकिन तूने नहीं देखा। इस क़िस्म की बहुत सी हिकायात हैं मगर यह किताब उन की मुतहम्मिल नहीं हो सकती मैंने बचश्म खुद एक दरवेश को आज़र बाईजान की पहाड़ियों में चलते हुए जल्दी जल्दी यह अशआर पढ़ते देखा जो साथ साथ आह व ज़ारी भी करता चला जा रहा था-

तर्जमा : ख़ुदा की क़सम! मुझ पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रा मगर तू मेरे दिल में और मेरे ख़्यालात में बसा हुआ होता है मैंने किसी मजलिस और क़ौम में तेरी बात के अलावा कोई और बात नहीं की, मैंने तेरा ज़िक्र ख़ुशी व ग़म की हालत में इस तरह किया है कि तेरी मुहब्बत मेरे हर सांस में मिली हुई होती है। मैंने प्यास की हालत में हमेशा इस तरह पानी पिया है कि प्याले में तेरा तसव्वुर व ख़्याल रहा अगर मैं आपके पास आने की ताक़त रखता तो मुंह और सर के बल चलकर तेरी ज़ियारत के लिये हाज़िरे ख़िदमत होता। इन अशआर के समाअ़ से इस दरवेश की हालत नाजुक हो गयी। थोड़ी देर पत्थर से पुश्त लगाकर सहारा लेते हुए बैठा और फ़ौत हो गया। ख़ुदा उस पर रहमत फ़रमाये।

हवस अंगेज़ अशआर के समाअ़ की कराहत

मशायख़ का एक गरोह क़सायद अशआर और ग़ना के साथ इस तरह पढ़ना कि हरूफ़ मख़ारिज की हुदूद से तजावुज़ कर जायें सुनना मकरूह समझता है यह गरोह न सिर्फ़ ख़ुद परहेज़ करता रहा है बल्कि अपने मुरीदों को भी मना करता रहा है जिसमें काफ़ी हद तक मुबालग़ा है। इनके चंद गरोह हैं और हर गरोह के नज़दीक एक ख़ास इल्लत है। एक गरोह समाअ़ के हराम होने के लिये कई रिवायतें पेश करता है इस सिलसिले में वह सलफ़े सालेहीन के पैरो कार हैं जैसा कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हज़रत हस्सान बिन साबित की लौंडी को गाने से डांटकर रोकना और तंबीह करना। हज़रत उमर का एक गाने वाले सहाबी को कोड़े लगाना हज़रत अली का हज़रत मुआविया पर इस वजह से एतेराज़ करना कि उनके पास गाने वाली लौंडियां थीं और हज़रत हसन को उस हब्शी औरत के देखने से मना करना जो गाने गा रही थी और फ़रमाया कि वह शैतान की सहेली है इस तरह की और बहुत

सी रिवायतें हैं नीज़ यह गरोह कहता है कि मौजूदा और गुज़रता ज़माना की तमाम उम्मते मुस्लेमा का इस पर इजमाअ़ है कि यह मकरूह है हत्ता कि एक गरोह तो उसे मुतलक़न हराम कहता है। इस मअ़ने में हज़रत अबुल हारिस रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि मैं समाअ़ का बहुत शौक़ीन था एक रात मेरे हुजरे में एक शख़्स आया उसने मुझसे कहा कि तालिबाने हक़ की एक जमाअत मुजतमअ हुई है और वह आपके दीदार की मुश्ताक़ है अगर आप क़दम रंजा फ़रमायें तो करम होगा। मैंने कहा चलो मैं आता हूं फिर मैं उसके पीछे चल दिया। वह मुझे ऐसे गरोह के पास ले गया जो हलक़ा बांधे बैठा था और उनका शेख़ उनके दर्मियान था उन सबने मेरी इ़ज़्ज़त की और मुमताज़ जगह पर मुझे बिठा दिया। उस शैख़ ने मुझसे कहा अगर इजाज़त हो तो कुछ अशआर सुनाऊं? मैंने इजाज़त दे दी। दो शख़्सों ने ख़ुश अलहानी के साथ हम आवाज़ होकर ऐसे अशआर गाए जो शायरों ने फ़िराक़ में कहे थे वह सब वजद में खड़े हो गये नारे और लतीफ़ इशारे करने लगे मैं उनके हाल पर हैरत ज़दा होकर रह गया और बड़ा महज़ूज़ हुआ यहां तक कि सुबह नमूदार हो गयी उस वक़्त उस शैख़ ने मुझसे कहा, ऐ शैख़! आपने मुझसे दर्याफ़्त न फ़रमाया कि मैं कौन हूं? और किस गरोह से ताल्लुक़ रखता हूं, मैने कहा तुम्हारी हशमत मुझे यह दर्याफ़्त करने में मानेअ रही। उसने कहा मैं अज़ाज़ील हूं जिसे अब इबलीस कहते हैं और यह सब मेरे फ़रज़ंद हैं इस जगह बैठने और गाने से मुझे दो फ़ायदे थे एक यह कि मैं ख़ुद जुदाई और फ़िराक़ की मुसीबत में मुब्तला हूं और नेमत के दिनों को याद करता हूं दूसरे यह कि मतक़ी लोगों को राहे रास्त से भटकाकर ग़लत रास्ता पर डालता हूं। फ़रमाते हैं कि इसके बाद मेरे दिल से समाअ़ का इरादा और उसका शौक़ जाता रहा।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत इमाम शैख़ अबुल अब्बास अशक़ानी रहमतुल्लाह अलैहि से सुना है वह फ़रमाते थे कि एक दिन ऐसे इज्तेमा में शरीक था जिसके कुछ समाअ़ में मशग़ूल थे और उनका सरदार उनके दर्मियान रक़्स कर रहा था और उनमें दौड़ता फिर रहा था। वह उससे महज़ूज़ हो रहे थे और कुछ लोग ऐसे थे जो इस अंदेशा के पेशे नज़र कि मुरीदीन इस बला व बेहूदगी में मुब्तला न हो जायें उनकी तक़लीद न करने लगें। मासीयत के किनारे पर खड़े होकर तौबा का दामन हाथ से न छोड़ दें उनकी नफ़सानी ख़्वाहिशात की तक़वियत का मोजिब न

बने हवस का इरादा उनकी सलाहियतों को फ़िस्ख़ न कर दे क्योंकि यह लोग समाअ़ नहीं कर रहे थे बल्कि फ़ित्ना व बला का सामान पेश कर रहे थे, इसलिये वह इन के साथ शरीक न थे।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि उन्होंने अपने एक मुरीद से इब्तदाए तौबा के वक़्त नसीहत फ़रमाई कि अगर दीन की सलामती और तौबा पर इस्तेक़ामत चाहते हो तो इस समाअ़ से दूर रहना जो सूफ़ी लोग सुनते हैं। न इनमें शरीक होना और न इनके साथ बेठना जब तक कि तुम जवान हो। जब तुम बूढ़े हो जाओ तो ऐसे फ़ेअल से बाज़ रहना जिससे लोग गुनाहगार होते हैं।

एक गरोह कहता है कि समाअ़ वालों के दो गरोह हैं एक लाही और दूसरा इलाही। लाही सरासर फ़ित्ना हैं वह ख़ुदा से नहीं डरते। दूसरा इलाही वह मुजाहिदा व रियाज़त में रहते और मख़लूक़ से किनाराकश होकर अपने आपको फ़ित्नों से बचाते हैं यह लोग ख़ुदा की हिफ़ाज़त में होते हैं। मगर हम न इस गरोह से हैं और न उस गरोह से, हमारे लिये यही बेहतर है कि हम उसे छोड़ दें और ऐसी बातों में मशगूल होना जो हमारे वक़्त के मुवाफ़िक़ हो ज़्यादा बेहतर है।

एक गरोह यह कहता है कि जब अवाम के लिये समाअ़ में फ़ित्ना है और हमारे सुनने से लोगों के एतेक़ाद में तज़बज़ुब वाक़ेअ होता है और हमारे दर्जे से लोग ग़ाफ़िल व महजूब हैं और वह हमारी वजह से गुनाह में मुबतला होते हैं तो हमें लाज़िम है कि हम अवाम पर शफ़क़त करें और ख़ास लोगों को नसीहत करें कि दूसरों की ख़ातिर वह इससे बाज़ रहें यह तरीक़ा अच्छा है।

एक गरोह यह कहता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इस्लाम के नेक ख़सायल में से यह है कि लायानी और बेकार चीज़ों को छोड़ दे। लिहाज़ा हम ऐसी चीज़ों से हाथ उठाते हैं और उससे दूर हैं क्योंकि लायानी चीज़ो में मशगूल होने से वक़्त ज़ाए होता है। हालांकि दोस्तों के नज़दीक इनका अपना वक़्त बड़ा अज़ीज़ होता है उसे ज़ाया न करना चाहिये।

ख़ास लोगों का एक गरोह कहता है कि समाअ़ ख़बर है और उसकी लज़्ज़त मुराद को पाना है यह बच्चों का काम है क्योंकि मुशाहिदे में ख़बर की कोई हैसियत नहीं है। इसलिये मुशाहिदे से ही ताल्लुक़ रखना चाहिये। लिहाज़ा समाअ़ के अहकाम यह हैं जिसे मैंने इख़्तेसार से बयान कर दिया है अब मशायख़ के वज्द, वजूद और तवाजुद को बयान करता हूं।

वज्द, वजूद और तवाजुद के मरातिब

वाज़ेह रहना चाहिये कि वज्द वजूद, दोनों मसद हैं वज्द के मअ़ने अंदोह व ग़म और वजूद के मअ़ने पाने के हैं। जब दोनों के फ़ायल एक हो तो बजुज़ मसदर के फ़र्क़ के और कोई फ़र्क़ नहीं बाक़ी रहता। जैसा कि कहा जाता है, वज्द, यजद वजूद और वजदाना और जैसे वज्द, यजद, वजदा जिसके मअ़ने अंदोहगीं के हैं।

नीज़ जब तवंगरी के मअ़ने में होगा तो वज्द, यजद, जदत, मुस्तअमल होगा और गुस्सा के मअ़ने में होगा तो वज्द, यजद मौजदता मुस्तअमल होगा। यह बस मसादिर हैं न कि अफ़आल व मुश्तक़ात और अहले तरीक़त के नज़दीक वज्द और वजूद से उन दो हालतों का इसबात है जो समाअ़ में ज़ाहिर होते हैं। एक ग़म व अंदोह और दूसरा हुसूल मुराद की कामयाबी की हालत का इज़हार करता है। ग़म व अंदोह की हक़ीक़त, महबूब का गुम होना और मुराद का न पाना है और हुसूले मुराद की हक़ीक़त मुराद का पाना है। हुज़्न व वज्द के दर्मियान फ़र्क़ यह है कि हुज़्न इस ग़म को कहते हैं कि जो अपने नसीब में हो और वज्द इस ग़म कहते हैं जो मुहब्बत के तरीक़ा पर दूसरों के नसीब में हो। यह तमाम तगय्युरात तालिब की सिफ़त हैं हक़ तगय्युर पज़ीर नहीं होता। और वज्द की कैफ़ियत लफ़्ज़ व इबारत में बयान नहीं की जाती क्योंकि वह मअ़ना में ग़म व अलम है और ग़म व अलम की कैफ़ियत लिखी नहीं जा सकती।

वज्द एक बातिनी कैफ़ियत है जो तालिब व मतलूब के दर्मियान होती है क्योंकि कश्फ़ में बातिनी हालत का बयान और उसके वजूद की कैफ़ियत व किमिय्यत का निशान व इशारा सही नहीं हो सकता इसलिये कि मुशाहिदा में यक गोना ख़ुशी है और ख़ुशी तलब से हासिल नहीं होती है और वजूद एक तलब है जो महबूब से मुहिब को मिलती है और उसकी हक़ीक़त का इज़हार व इशारा मुमकिन है। मेरे नज़दीक वज्द, दिल को ग़म व अलम पहुंचने का नाम है ख़्वाह वह ख़ुशी से हो या ग़म से तकलीफ़ से हो या राहत से और वजूद दिली ग़म का आला है। इससे मुराद सच्ची मुहब्बत है। वाजिद की सिफ़त बहालते जोश और शौक़ हरकत होगी या बहालते कश्फ़, मुशाहिदा की हालत के मुवाफ़िक़ सुकून होगी।

लेकिन आह व फुगान करने, गिरया व ज़ारी करने, गुस्सा करने राहत पाने, तकलीफ़ उठाने और ख़ुश होने की सूरत में मशायख़े तरीक़त का इख़्तेलाफ़

है कि आया वज्द मुकम्मल होता है या वजूद? मशायख़ फ़रमाते हैं कि वजूद मुरीदों की सिफ़त है और वज्द आरिफ़ों की तौसीफ़। चूंकि आरिफ़ों का दर्जा मुरीदों से बुलंद होता है इसलिये ज़रूरी है कि इनकी सिफ़त भी इनसे बुलंद तर और कामिल तर हो। जो चीज़ हासिल होने और पाने के तहत आती है वह मुदरक होती है मौसूफ़ व सिफ़्त एक ही जिन्स के होते हैं और यह कि इदराक जिद का इक़्तेज़ा करती है और हक़ तआला बेहद है लिहाज़ा बंदा का पाना बजुज़ मशरब व अमल के न होगा और जिसने न पाया हो वह तलबगार होता है, और इसमें तलब मनक़तअ होती है। और वह इसकी तलब से आजिज़ होता है और वजदान हक़ की हक़ीक़त होती है।

एक गरोह यह कहता है वज्द मुरीदों की सोज़िश है और वजूद मुहिब्बों का तोहफ़ा। मुरीदों से मुहिब्बों के दर्जे की बुलंदी मुक़तज़ी है कि तलब की सोज़िश से तोहफ़ा मुकम्मल और ज़्यादा आराम देह है उसकी वज़ाहत इस हिकायत में है कि-

एक दिन हज़रत शिबली रहमतुल्लाह अलैहि अपने हाल के जोश में हज़रत जुनैद बग़दादी के पास आये उन्होंने उनको ग़मगीन देखा तो अर्ज़ किया कि ऐ शैख़! क्या बात है? हज़रत जुनैद ने फ़रमाया जिसने चाहा पा लिया। हज़रत शिबली ने अर्ज़ किया नहीं बल्कि जिनसे पाया वह तालिब हुआ।

इसके मअ़ने में मशायख़ फ़रमाते हैं कि एक ने वज्द का पता दिया दूसरे ने वजूद का इशारा किया मगर मेरे नज़दीक हज़रत जुनैद का क़ौल मोतबर है इसलिये कि बंदा जब जान लेता है कि उसका माबूद उसकी जिन्स का नहीं है तो उसका ग़म तवील हो जाता है इस किताब में इस बहस का तज़किरा इससे पहले भी किया जा चुका है।

मशायख़े तरीक़त का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि ग़ल्बए वज्द से ग़ल्बाए इल्म अक़वा होता है क्योंकि जब कुव्वत वज्द के ग़ल्बा को होती है तो वाजिद ख़तर के महल में होता है और जब कुव्वत इल्म के ग़ल्बा को होती है तो आलिम अमन के महल में होता है।

खुलासए कलाम यह है कि तालिबे हक़ हर हाल में इल्म व शरीअत का फ़रमां बरदार है क्योंकि जब वज्द से मग़लूब हो जाता है तो उससे ख़िताब उठ जाता है और जब ख़िताब उठ जाता है तो सवाब व अताब उठ जाता है। जब सवाब व अत्ताब उठ जाये तो इज़्ज़त व ज़िल्लत भी उठ जाती है। उस वक़्त उसका हुक्म दीवानों और पगाल जैसा होता है न कि औलिया और मुक़र्रबीन

जैसा? जब बंदे के ग़ल्बए हाल पर इल्म का ग़ल्बा हो तो बंदा अवामिर व नवाही की पनाहगाह में होता है और इज्ज़त के महल में मुकीम और वह हमेशा साहबे शुक्र होता है और जब ग़ल्बाए इल्म पर हाल का ग़ल्बा ग़ालिब हो तो बंदा हुदूद से ख़ारिज होकर अपने नफ़्स के महल में ख़िताब से महरूम हो जाता है। उस वक़्त या तो माजूर होगा या मग़रूर। बिऐनिही यही मअने हज़रत जुनैद के क़ौल के हैं इसलिये कि दो ही रास्ते हैं एक इल्म से दूसरे अमल से। और जो अमल के बग़ैर हो अगरचे बेहतर हो मगर वह जहल व नफ़्स है और वह इल्म पर जो अमल के बग़ैर हो बहर तौर मोजिबे इज्ज़त व शर्फ़। इसी बिना पर हज़रत बा यज़ीद रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि अहले हिम्मत का कुफ़्र आरज़ू रखने वाले इस्लाम से बुजुर्ग तर है मतलब यह है कि अहले हिम्मत पर कुफ़्र की कोई सूरत नहीं बनती अगर ग़ौर किया जाये तो इस हिम्मत जो कुफ़्र के साथ हो आरज़ू वाले ईमानदार से ज़्यादा कामिल होता है।

हज़रत जुनैद ने हज़रत शिबली के बारे में फ़रमाया शिबली मस्त है अगर वह मस्त मस्ती से इफ़ाक़ा पा जायें तो ऐसे डराने वाले हों कि कोई भी उनसे फ़ायदा हासिल न कर सके।

एक मर्तबा हज़रत जुनैद, हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन और हज़रत अबुल अब्बास बिन अता रहमतुल्लाह अलैहिम एक जगह जमा थे क़व्वाल ने चंद अशआ़र गाये दोनों बाहम वज्द करने लगे और हज़रत जुनैद साकिन बैठे रहे। वह कहने लगे ऐ शैख़! इस समाअ़ में आपका कोई हिस्सा नहीं है? हज़रत जुनैद ने अल्लाह तआला का यह क़ौल पढ़ा- यानी तुम उनको जामिद व साकिन ख़्याल करते हो हालांकि वह गुज़रने वाले बादलों की मानिंद गुज़र जाते हैं।

बहालते वज्द, तवाजुद तकल्लुफ़ है तवाजुद यह है कि हक़ के इनाम व शवाहिद का दिल पर पेश करना और वस्ल व आवाज़ की फिक्र करना यह काम जवांमर्दों का है।

एक गरोह इस में महज़ रस्मों का पाबंद बना हुआ है जो ज़ाहिरी हरकतों की तक़लीद करता बाक़ायदा रक़्स करता और उनके इशारों की नक़्ल उतारता है यह हराम महज़ है। एक गरोह मुहक्क़िक़ व साबित क़दम है इसमें महज़ मुराद, मशायख़ के दर्जात और उनके अहवाल की तलब है न कि ख़ाली रस्मों की तक़लीद और हरकतों की पैरवी, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने जिस क़ौम की मुशाबेहत की वह उन्हीं में से है। और यह

भी इरशाद है कि जब तुम कुरआन पढ़ो तो रोओ फिर अगर रो न सको तो रोने की शक्ल बना लो। यह हदीस मुबारक तवाजुद की अबाहत पर शाहिद व नातिक़ है। इसलिये एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं हज़ार मील झूटे क़दम चलता हूं ताकि इनमें से कोई एक क़दम तो सच्चा हो जाये।

रक़्स : वाज़ेह हो कि शरीअत व तरीक़त दोनों में रक़्स की कोई असल नहीं है और तमाम उक़ला का इत्तेफ़ाक़ है कि लहव और खेल है ख़्वाह बकोशिश हो ख़्वाह बेहूदगी से हो लग़्व व बातिल है। कोई एक बुज़ुर्ग भी उसे पसंद नहीं करता न उसमें किसी ने ग़लू किया है। इस बारे में अहले हशव का हर क़दम या सबूत जो भी है वह सब बुतलान पर मबनी होगा। मसलन अगर वह यह कहें कि वज्द की हरकतें और अहले तवाजुद के मामलात रक़्स की मानिंद होते हैं यह बातिल है बेहूदा लोगों का एक गरोह इसमें उनकी तक़लीद करता और ग़लू बरतता है। उन्होंने उसे अपना मज़हब बना लिया है मैंने आम लोगों को देखा है कि वह यह ख़्याल करते हैं कि मज़हबे तसव्वुफ़ उसके सिवा है ही नहीं जिसे वह इख़्तेयार किये हुए हैं और एक गरोह तो असलियत ही का मुन्किर हो गया है। अलग़र्ज़ रक़्स, शरअन और अक़लन तमाम लोगों के लिये बुरा है और यह मुहाल है कि बुज़ुर्ग लोग ऐसा करें। अलबत्ता जब अहले दिल में कोई सुबकी या ख़िफ़्फ़त नमूदार होती है और बातिन पर उसका ग़ल्बा होता है और दिक़्क़त में तक़वियत पैदा हो जाती है तो हाल अपना इज़्तेराब ज़ाहिर करता है उस वक़्त तर्बियत व रुसूम और बाक़ायदगी मफ़कूद हो जाती है ऐसे इज़्तेराब में जो कैफ़ियत नज़र आती है न तो वह रक़्स है न पांव की झंकार और न इसमें तबअ की परवरिश बल्कि यह इज़्तेराब तो ऐसा होता है कि जान को घुला देता है। यह बात सरासर बयईद है कि इस इज़्तेराब को रक़्स कह दिया जाये। हालांकि इज़्तेराब ऐसा हाल है जिसे जुबान व गुफ़्तार में नहीं लाया जा सकता। जिसने इस का मज़ा न चखा वह ज़ाहिरी अतवार को नहीं जान सकता।

बहरहाल नौ उम्रों को देखना और उनसे सोहबत करना मना है और उसे जायज़ रखने वाला काफ़िर है। इस सिलसिले में जो भी दलील दी जाये वह बतालत व जहालत का सुबूत है। मैंने जाहिलों के एक गरोह को देखा है वह अहले तरीक़त पर ऐसी ही तोहमत धरते हैं फिर इनका इंकार करते हैं, और एक गरोह ऐसा भी देखा है जिसने उसे अपना मशरब बना लिया है। तमाम मशायख़ ने उसे आफ़त जाना है यह असर हुलूलियों ने बाक़ी रखा है अल्लाह तआला उन पर लानत बरसाये।

कपड़े फाड़ना : वाज़ेह रहना चाहिये कि कपड़े फाड़ना सूफ़ियाए किराम के दर्मियान मश्हूर आदत है बड़े बड़े इज्तेमा में जिसमें मशायख किबार मौजूद होते सूफ़ियों ने कपड़े फाड़े हैं। मैंने उलमा के गरोह को देखा है जो उसके मुन्किर हैं और कहते हैं कि दुरुस्त कपड़े को फाड़ना ना जायज़ है, और यह मुहाल है कि किसी फ़साद से जिससे उनकी मुराद इस्लाह हो उसे दुरुस्त कहा जाये। तमाम लोग दुरुस्त कपड़े को फाड़ते और काटते हैं फिर उसे सीते हैं। मसलन आस्तीन, दामन, चोली वग़ैरह हर एक को काट काट कर सीते और दुरुस्त करते हैं। इसमें कोई फ़र्क़ नहीं कि कोई कपड़े को १०० टुकड़े करे फिर इन्हें सिये और कोई पांच टुकड़े करे और सिये। बावजूद यह कि हर वह टुकड़ा जिसे फाड़ता गया उसे सी दिया जाये। इससे एक मोमिन के दिल की राहत है इससे जो गुदड़ी तैयार होती है वह इनकी ज़रूरत को पूरा करती है। अगरचे तरीक़त में कपड़ा फाड़ने की कोई वजह नहीं है। अलबत्ता बहालते समाअ़, दुरुस्त कपड़ा नहीं फाड़ना चाहिये क्योंकि असराफ़ के सिवा कुछ भी नहीं है लेकिन अगर सामेअ पर ऐसा ग़ल्बा तारी हो जाये जिससे ख़िताब उठ जाये तो वह बे ख़बर और माज़ूर है जब किसी का यह हाल हो जाये और कोई उसकी वजह से कपड़े फाड़े उसको जायज़ है। अहले तरीक़त के कपड़े फाड़ने के सिलसिला में तीन क़िस्म के लोग हैं एक वह जो दरवेश ख़ुद अपने कपड़े फाड़े यह बहालते समाअ़, ग़ल्बए हाल के हुक्म में होगा दूसरे वह लोग जो मुरशिद व मुक़्तदा के हुक्म से कपड़े फाड़ें, मसलन कोई इस्तिग़फ़ार व तौबा की हालत में किसी जुर्म के सबब कपड़े फाड़े और वज्द व सुकर की हालत में कपड़े फाड़े इनमें सबसे मुश्किल तर वह कपड़े फाड़ना है जो समाअ़ में करते हैं, यह दो क़िस्म के लोग हैं। एक मजरूह व जख़्मी दूसरे सहीह व दुरुस्त मजरूह की दो शर्तें हैं। या कपड़े को सीकर उसे दे दें या किसी और दरवेश को दे दें। या तबर्रुक के तौर पर फाड़कर तक़सीम कर दें लेकिन जब कपड़ा दुरुस्त हो तो यह देखना चाहिये कि कपड़ा फाड़ने वाले या उतारकर फेंक देने वाले सामेअ व दरवेश की क्या मुराद है। अगर क़व्वाल को देना मुराद है तो उसे दे दिया जाये और अगर मुराद जमाअत को देना है तो इन्हें दे दिया जाये और अगर कोई मुराद ज़ाहिर न हो तो बल्कि यूं ही उतारकर फेंक दिया है तो मुरशिद के हुक्म के मुताबिक़ अमल किया जाये अगर वह जमाअत को देने का हुक्म दे तो फाड़कर उनमें तक़सीम कर दिया जाये। अगर किसी दरवेश या क़व्वाल को देने का हुक्म दे तो उसे दे दिया जाये। लेकिन अगर क़व्वाल को देना मारूफ़ हो तो दरवेश या

असहाब के मुराद की मुवाफ़िक़त शर्त नहीं है। लेकिन अगर इनफ़ाक़ मक़सूद हो तो फिर दरवेश का कपड़ा क़व्वाल को न दें क्योंकि यह ना अहले को देना होगा और जो कपड़ा और दरवेश ने या तो हालते इख़्तेयार में दिया होगा या हालते इज़्तेरार में। इसमें दूसरों की मुवाफ़िक़त की कोई शर्त नहीं है और अगर जमाअत के इरादे से कपड़े को आहदा किया या किसी मुराद के बग़ैर तो इस सूरत में मुराद की मुवाफ़िक़त शर्त है। और जब जमाअत कपड़ा फेंकने में मुत्तफ़िक़ हो तो मुरशिद को लाज़िम नहीं कि वह दरवेशों के कपड़े क़व्वालों को दे। लेकिन यह जायज़ है कि कोई मुहिब अपनी तरफ़ से कोई चीज़ क़व्वाल पर कुरबान कर दे और उनके कपड़े दरवेशों को लौटा दे या फाड़कर सबको तक़सीम कर दे। अगर कपड़ा मग़लूबी की हालत में गिर पड़ा है तो उसमें मशायख़ का इख़्तेलाफ़ है। अक्सर के नज़दीक इस हदीस की मुवाफ़िक़त में क़व्वाल को दे दिया जाये कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने क़त्ल किया वही मक़तूल के सामान का हक़दार है। अगर क़व्वाल को न दें तो तरीक़त के हुक्म से बाहर निकलता है एक गरोह यह कहता है और यह बात मेरे नज़दीक भी महमूद है क्योंकि बाज़ फ़ुक़हा का यही मशरब है कि मक़तूल का सामान बादशाह की इजाज़त के बग़ैर क़ातिल को न दिया जाये यही हुक्म तरीक़त में मुरशिद का है कि बग़ैर मुरशिद के हुक्म के वह कपड़ा क़व्वाल को न दें। अगर मुरशिद चाहे कि क़व्वाल को न दिया जाये और किसी को दे दिया जाये तो कोई हर्ज नहीं है।

आदाबे समाअ़

वाज़ेह रहना चाहिये कि आदाबे समाअ़ में शर्त यह है कि जब तक ज़रूरत न हो समाअ़ न करे और उसे अपनी आदत न बनायें। लेकिन कभी कभी समाअ़ करें ताकि उसकी आदत दिल से न जाये। लाज़िम है कि बवक़्ते समाअ़ कोई मुरशिद उस मजलिस में मौजूद हो और यह कि मक़ामे समाअ़, अवाम से ख़ाली हो और यह कि क़व्वाल साहबे इज़्ज़त हों और दिल मशाग़िल से ख़ाली तबीयत लहव व खेल से नफ़रत करने वाली हो तो यह शर्त है तकल्लुफ़ को उठा दिया जाये और जब तक समाअ़ की कुव्वत ज़ाहिर न हो न सुने। इसमें मुबालग़ा शर्त नहीं है। और जब समाअ़ की कुव्वत ज़ाहिर हो तो यह शर्त नहीं है कि इसमें कुव्वत को अपने से दूर करे बल्कि जैसा इक़्तेज़ा हो वैसा करे। अगर वह हिलाए तो हिले और अगर साकिन रखे तो साकिन रहे। तबई कुव्वत और वज्द की

सोज़िश के दर्मियान फ़र्क़ महसूस करे। समाअ़ पर लाज़िम है कि इसमें इतनी कुव्वते दीद हो कि वारिदे हक़ को क़बूल कर सके और इसका हक़ अदा कर सके और जब वारिदे हक़ का ग़ल्बा दिल पर ज़ाहिर हो तो उसे बतकल्लुफ़ अपने से दूर न करे। जब सामेअ की कुव्वते बर्दाश्त जाती रहे तो बेतकल्लुफ़ जज़्ब न करे और लाज़िम है कि बहालते हरकत किसी से मदद की तवक्को न रखे अगर कोई मदद करे तो मना भी न करे और उसकी मुराद और उसकी नीयत को न आज़माये। क्योंकि इस में आज़माने वाले को बहुत परेशानी और बे बरकती का सामना करना पड़ता है किसी के समाअ़ में दख़ल न दें और उसका वक़्त परागंदा न करे। न इसके हालात में तसर्रुफ़ करे। लाज़िम है अगर क़व्वाल अच्छा कलाम सुनाए तो उससे यह न कहे कि तुमने अच्छा कलाम सुनाया और अगर नापसंदीदा हो तो बुरा भी न कहे और अगर ऐसा नामौज़ों शेअ़र हो जिससे तबीयत को नगवारी हो तो यह न कहे कि अच्छा कहो और दिल में उससे गुस्सा न करे। उसे दर्मियान में न देखे बल्कि सब हवालए हक़ कर दें। और दुरुस्त होकर सुने। अगर किसी गरोह को हालते समाअ़ में देखे और उसे इससे फ़ायदा न हो तो यह शर्त नहीं है कि अपने सुहव के सबब उनके सुकर का इंकार करे। लाज़िम है कि अपने वक़्त के साथ आराम से रहे इससे इनको फ़ायदा होगा। साहबे वक़्त की इज़्जत करे ताकि इसकी बरकतें उसे भी पहुंचें।

हुज़ूर सैयदुना दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं उसे ज़्यादा महबूब रखता हूं कि मुबतदियों को समाअ़ की इजाज़त न दें ताकि उनकी तबीयत में यकसूई रहे क्योंकि परागंदगी में बड़े ख़तरे और बड़ी आफ़तें हैं। इसलिये कि छतों और ऊंची जगहों से औरतें बहालते समाअ़ उनको देखती हैं इसी सबब से सामेईन को शदीद हिजाबात का सामना करना पड़ता है।

लाज़िम है कि नाख़ेर लड़कों को भी दर्मियान में न बिठायें और ऐसा कभी न होने दें।

अब मैं उन जाहिल सूफ़ियों से जिन्होंने इन बातों को अपना मज़हब बना रखा है और सदाक़त को दर्मियान से हटा दिया है ख़ुदा से इस्तिगफ़ार करता हूं क्योंकि इस क़िस्म की आफ़तें हम जिन्सों से मुझ पर गुज़र चुकी हैं और हक़ तआला से तौफ़ीक़ व मदद का ख़्वास्तगार हूं ताकि मेरा ज़ाहिर व बातिन हर क़िस्म की आफ़तों से महफ़ूज़ रहे। मैं इस किताब के पढ़ने वालों को वसीयत करता हूं कि इस किताब के अहकाम और उनके हुक़ूक़ की रिआयत मलहूज़ रखें।

–गुलाम मोईनुद्दीन नईमी अशरफ़ी